श्री दि० जैन कुन्थु विजय ग्रन्थ माला समिति–पुष्प नं० १

Gandhi Jain Karyalay
MANDSAUR (M.P.)

लघु विद्यानुवाद

(यंत्र, मंत्र, तंत्र विद्या का एक मात्र सन्दर्भ ग्रंथ)

संग्रहकर्ता :

श्री १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज

श्री १०५ गणनी आर्यिका श्री विजयमती माताजी
विदुषी रत्न, सम्यक्ज्ञान शिरोमणि, सिद्धान्त विशारद

शान्ति कुमार गंगवाल
प्रकाशन संयोजक

लल्लूलाल जैन गोधा
प्रबन्ध सम्पादक

●

प्रकाशक :

कुन्थु विजय ग्रन्थ माला समिति

कार्यालय : १६३६, घी वालों का रास्ता,
कसेरों की गली, जौहरी बाजार,
जयपुर—३०२००३ (राजस्थान)

मंत्र
यंत्र
तंत्र
ग्रंथ
संग्रहकर्ता

श्री १००८ भगवान पार्श्वनाथ
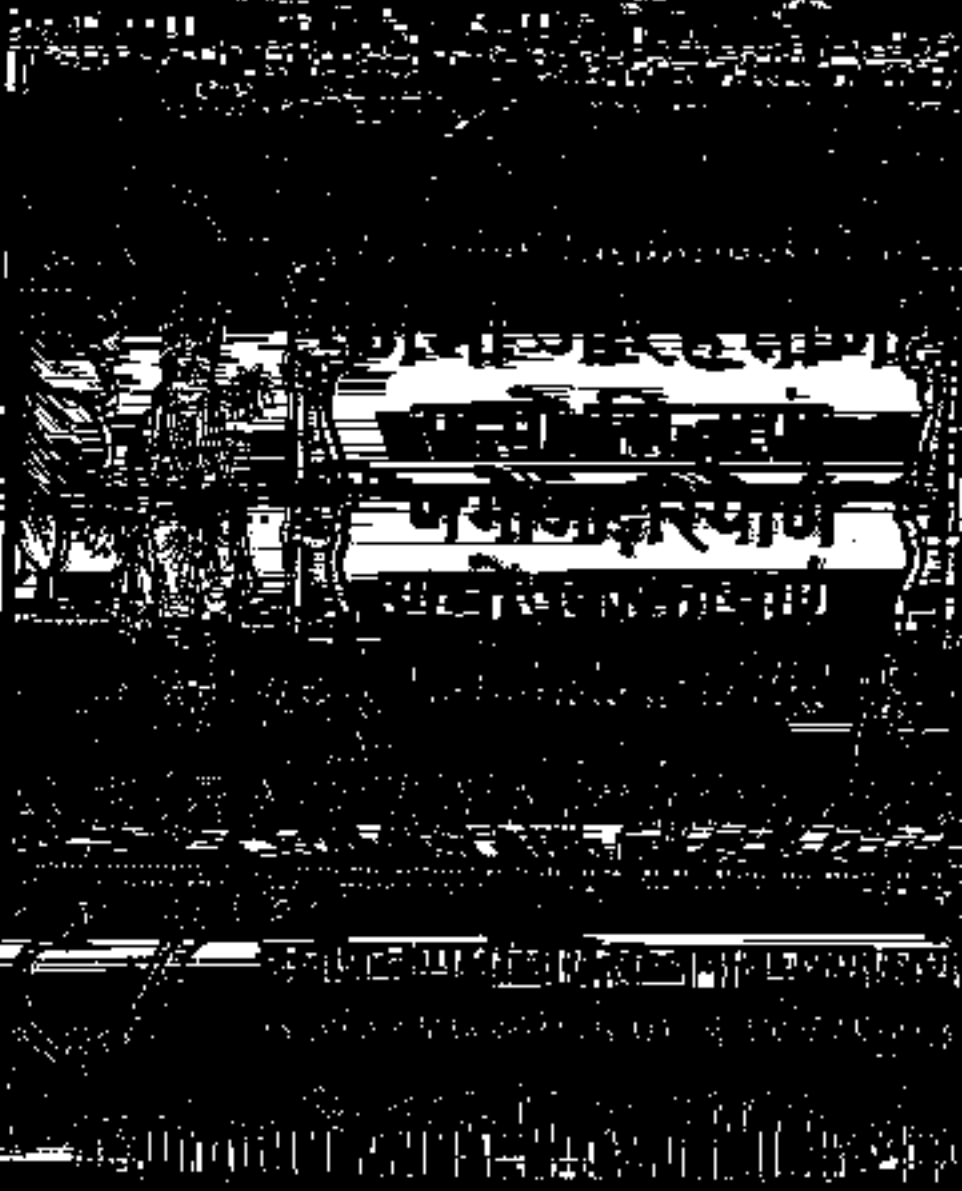
श्री धरणेन्द्र   श्री पद्मावती देवी

श्री बाहुबली स्वामी

श्रवण बेल गोला (मैसूर) में ५७ फुट ऊंची विशाल प्रतिमा

विश्व का आकर्षण एवं आठवाँ आश्चर्य

शुभाशीर्वाद एवं शुभ-कामनाएँ—

निमित्त ज्ञान शिरोमणी
श्री १०८ आचार्य विमलसागरजी महाराज

"श्री लघु विद्यानुवाद" नामक ग्रन्थ श्री १०८ आचार्य कुन्थु सागरजी ने संकलन कर समाज के प्राणीमात्र को श्री १०८ श्री मन्त्रवादी विद्यानन्दजी की अक्कीवाट की कृति को संभाल कर लिखा है, वह समाज की निधि है। द्वादशांग का एक अंग है, जो लौकिक कार्य के साथ-साथ पारलौकिक, धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान का कारण बने।

श्री १०८ आचार्य विमलसागर

श्री १०८ उपाध्याय मुनि
श्री भरतसागरजी महाराज

अनादिकाल से मानव जीवन विभिन्न शक्तियों के आधार पर टिका हुआ है। शारीरिक, मानसिक, मांत्रिक, तांत्रिक यांत्रिक और आध्यात्मिक आदि सभी शक्तियों की अपनी-अपनी विभिन्न सत्ता है। शारीरिक, मानसिक शक्ति के आधार पर यदि यह मानव अपने सांसारिक जीवन को सुन्दर, उत्तम बना सकता है, तो मांत्रिक, तांत्रिक एवं यांत्रिक शक्ति के आधार पर यह स्व और पर का उपकार कर जीवन में नई शक्ति का संचार कर सकता है। इन सब में महान शक्ति की दायिनी, अक्षुण्ण शाश्वत सुख की दायिनी आध्यात्मिक शक्ति है।

भारतीय इतिहास की खोज करने पर ज्ञात होता है, कि भारत के श्रमण महर्षियों ने जीवन में सभी शक्तियों को पूर्ण स्थान दिया है। मांत्रिक, तांत्रिक, यांत्रिक शक्तियों को जहां आज का युग झूठा, मिथ्या एवं पाखण्ड नाम से पुकारता है, वहाँ कुन्द कुन्दादि जैसे महान् अध्यात्म योगियों ने मांत्रिक शक्ति के बल पर "दिगम्बर धर्म को आदि धर्म घोषित करवाकर" श्रमण परम्परा की, श्रमण संस्कृति की रक्षा की है।

मन्त्र विद्या, तन्त्र विद्या, यन्त्र विद्या झूठ या मिथ्या नहीं हैं। मिथ्या है तो हमारा श्रद्धान है। पहले उसी मन्त्र से शीघ्र कार्य की सिद्धि देखी जाती थी, परन्तु आज तुरन्त या शीघ्रता से मन्त्र सिद्धि नहीं पायी जाती है, इसका दोष हम मन्त्रों को देते हैं, परन्तु क्या मन्त्र, तन्त्र गलत है; नहीं, मन्त्र भी गलत नहीं है, तन्त्र भी गलत नहीं है, गलत हैं, तो हम हैं और हमारा श्रद्धान है।

वर्तमान समय में श्री १०८ आचार्य कुन्थुसागर जी महाराज ने लुप्त हुई इस मन्त्र, तन्त्र विद्या को पुनः जीवन्त बनाने के लिए बहुत उत्तम प्रयास कर "लघु विद्यानुवाद" नामक पुस्तक का सृजन किया है। मेरी यही शुभ कामना है कि यह पुस्तक हम भूले मानवों को अपनी भूली हुई शक्तियों का स्मरण कराकर सही मार्ग प्रशस्त करने में पूर्ण सफल एवं सक्षम सिद्ध होगी। और ग्रन्थ प्रकाशन में जो श्री शान्तिकुमार जी गंगवाल आदि कार्य कर्त्ता हैं उन सभी को हमारा आशीर्वाद है।

उपाध्याय मुनि श्री भरतसागर

क्षुल्लक श्री १०५ सिद्धसागर जी महाराज

परम पूज्य श्री १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थु सागरजी महाराज ने 'लघुविद्यानुवाद' का संकलित करवा के व स्वतः परिश्रम द्वारा तैयार करके तथा आमुख (भूमिका) लिखकर इस ग्रन्थ को सपादन के योग्य बनाया है। उक्त ग्रन्थ श्री परम पूज्य १०८ आचार्यवर्य महावीर कीर्ति यन्त्र, तन्त्र, मन्त्रादि संग्रह अपर नाम लघु विद्यानुवाद का मैंने अवलोकन किया है। यह ग्रन्थ समाज के लिये अनिषिद्ध विषयों में बहुत उपयोगी रहेगा। महाराज को मैं सभक्ति सादर त्रिवार नमोऽस्तु निवेदन करता हूँ, तथा ग्रन्थ प्रकाशन में तत्पर कार्यरत परम जिनभक्त परायण संगीतज्ञ कपूरचन्दजी पाण्ड्या, शांतिकुमारजी गंगवाल व अन्य इनके सहयोगी सज्जनवर्ग शुभाशीर्वाद के पात्र हैं। प्रेस कापी आदिक कार्यों में इनको पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

क्षु० सिद्धसागर

मोजमाबाद,
जयपुर (राजस्थान)

श्री १०८ आचार्य गणधर कुंथु सागर जी महाराज

का

—: आशीर्वादात्मक मंगल वचन :—

श्री १००८ भगवान अरहंत देव के शासन में द्वादशांग रूप जिनवाणी कही है और द्वादशांग को धारण करने वाले भगवान महावीर की आचार्य परम्परा में आने वाले अन्तिम श्रुत केवलि आचार्य भद्र बाहु हुये। वे आचार्य अष्टांग निमित्त ज्ञान के ज्ञाता थे। उसके बाद स्मरण शक्ति के कम हो जाने पर द्वादशांग रूप श्रुत ज्ञान को धारण करने वाले कम हो गये। यहां तक कि कम होते २ धरषेणाचार्य को अंग रूप का ज्ञान का कुछ अंश का ज्ञान था। उनकी महान् कृपा से आज जो श्रुत ज्ञान दृष्टि गोचर हो रहा है वह उन्हीं की कृपा दृष्टि है। ग्यारह अंग चौदह पूर्व रूप श्रुत ज्ञान है। तदन्तर्गत जिनागम में विद्यानुवाद दशम पूर्व है। वह विद्यानुवाद पूर्व अनेक यन्त्र मन्त्रों रूप महासागर से भरा हुआ है। जिसको पार करने में समर्थ केवली, श्रुत केवली ही होते है। उस

विद्यानुवाद पूर्व में अनेक प्रकार की विद्यायें हैं, वह १२०० सौ लघु विद्या, ७०० महा विद्याओं से भरा हुआ है। नाना प्रकार के चमत्कारों से अलंकृत है। ऐसे विद्यानुवाद का वीतरागी निर्ग्रन्थ साधु राज मात्र श्रुत ज्ञान प्राप्ति के अर्थ एकाग्रता से इन्द्रिय विजयी होकर अध्ययन करते हैं। अध्ययन करने मात्र से नाना प्रकार की विद्यायें सम्मुख आकर खड़ी हो जाती है। साधु राज से कहने लगती है, हमारे लिये क्या आज्ञा है? "साधु भी सन्मुख हुई विद्याओं को कह देते हैं कि तुमसे हमारा कोई प्रयोजन नहीं है। ऐसे वीतरागी साधु ही विद्यानुवाद रूप समुद्र को पार करते हैं निस्पृही होकर। उनका मात्र उद्देश्य वस्तु स्वभाव की प्राप्ति का रहता है और जो शुभोपयोग में ज्यादातर रहते हैं और शुद्धोपयोग में कम रहते हैं वे भी विशेष धर्म प्रभाव नार्थ धार्मिक विद्याओं से काम लेते हैं। अन्यथा कभी भी उन विद्याओं

की तरफ दृष्टिपात भी नहीं करते। इस हुंडा वसर्पिणी पंचम काल में उस महान् सागर रूप विद्यानुवाद का लोप हो गया। क्योंकि वीतरागी साधुओं की दृष्टि वीतरागता की ओर रही और ये वीतरागता में बाधक हैं। इसलिये केवली प्रणीत विद्यानुवाद प्रायः नष्ट हो गया। आज समाज में हस्त लिखित विद्यानुवाद की प्रतियां दृष्टि गोचर हैं। वे भी इस काल के लोगों के लिए महान् हैं। मुस्लिम काल में एवं अन्य आततायीयों के काल में हमारे जैन गृहस्थाचार्य भट्टारकों ने उस महान सागर रूप विद्यानुवाद के अंश रूप पाठकों को बचाया और उनमें विद्यायें सिद्ध सिद्ध कर जैन धर्म का रक्षण किया। आज विद्यानुवाद की जो भी प्रतियां उपलब्ध है वे जगह जगह अशुद्ध एवं जीर्ण हो गई हैं। वर्तमान साधु समाज व भट्टारक समाज में कोई ऐसा नहीं [illegible] की भावनाओं में

[illegible]

लिये यह हस्तावलंबन के समान है। यह ग्रन्थ लोगों को मिथ्यात्व से बच
व विधि पूर्वक यन्त्रों मन्त्रों तन्त्रों का आश्रय लेगा उसके मनवांछित लौकि
होगी। आज कल वर्तमान शास्त्र भण्डारों में मिलने वाले विद्यानुवाद की
रूप ग्रन्थ संग्रहित किया है वह तो पूर्वाचार्य श्री मल्लिषेणाचार्य कृत है।
लघु सागर को हम जैसे मंद बुद्धि तैरने को समर्थ नहीं है। इसलिये सरल
वाद बनाया है। मैं आशा करता हूं कि हमारा जैन समाज इससे लाभान्वित
परिश्रम कार्यकारी होगा। इस विद्यानुवाद में वर्णित शान्ति कर्म, पौष्टिक क
र्षण कर्म, स्तम्भन कर्म विद्वेषण कर्म, उच्चाटन कर्म के मन्त्र यन्त्र तन
जगह अशुद्ध द्रव्यों का प्रयोग भी आया है। लेकिन क्या करे यह मन्त्र शास
अपनी ओर से इस ग्रन्थ में कुछ नहीं लिखा है जिस प्रकार हमको वर्णन
उल्लेख करना पड़ा है। हमारा अपना कोई स्वतन्त्र भाव नहीं है। इस
तन्त्र यन्त्र है वे हमारे गुरु विश्व वंदनीय जैनाचार्य अध्यात्म योगी समा
आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज के कई गुट के कापियो में संग्रहित कि
और भी अनेक पूर्व हस्तलिखित मन्त्र शास्त्रों से संकलन किया
सोनागिरी की देन है। सोनागिरी पर्वत पर नं० २५ जिनालय

क, परन्तु ऐसा होना
एवं कुछ प्रकार के
जायेगा जो श्रद्धापूर्वक
किक कार्यों की सिद्धी
प्रतियों का लघु अंश
इस विद्यानुवाद रूप
भाषा से लघु विद्यानु-
होगा। तभी हमारा
कर्म, वंश्य कर्म आक-
त्र दिये हैं। अनेक
त्र है। इसमें मैंने
मिला उन सबका
ग्रन्थ में जो भी मन्त्र
धि सम्राट श्री १०८
ये हैं। इसके अलावा
है जो सिद्ध क्षेत्र
श्री मल्लीनाथ प्रभु के

चरणों के सानिध्य में बैठ कर संग्रह किया है। इस प्रकार का ग्रन्थ जैन परम्परा में आज तक प्रकाशित नहीं हुआ है। हस्तलिखित तो पाया जाता है किन्तु वो भी प्रक्षेप रूप में है इस एक ही ग्रन्थ में गागर में सागर भरने कहावत रूप प्रयास किया है। मुझे ग्रन्थ के संग्रह करने में बहुत परिश्रम करना पड़ा है। लेकिन मुझे पदस्थ ध्यान का अपूर्व लाभ हुआ। पदस्थ ध्यान मन्त्रों की ध्यान साधना से होता है और इसमें मन एकाग्र होता है। मन की एकाग्रता से कर्म निर्जरा होती है। यह भी भगवान की वाणी है। विद्याधर मनुष्य नित्य ही इन मन्त्रों का ध्यान व साधना करते हैं।

प्रस्तुत मन्त्र शास्त्र में मारण उच्चाटन आदि हानि पहुंचाने वाली क्रियाएं भी वर्णित है उन क्रियाओं में साधक किसी भी प्रकार हाथ न लगावे। हमारा वितराग धर्म अहिंसा मयी है। जो मारण कर्म उच्चाटन कर्म दूसरों को हानि पहुंचाने की क्रिया करता हैं। वह महान् पातकी कहलाता है, और सबसे अधिक हिंसा के दोष का भागी होता है।

वीतराग धर्म या (हम) संग्रहकर्ता किसी भी प्रकार से इन क्रियाओं में साधक को प्रवेश करने की आज्ञा नहीं देते। शान्ति कर्म पौष्टिक कर्म या दूसरों को हानि पहुंचाने रूप क्रियाओं में प्रवेश करने रूप भाव भी करेगा तो वह वीतराग धर्म के नष्ट करने रूप पाप का अधिकारी होगा। महान् हिंसक होगा। हाँ इन क्रियाओं में कब प्रवेश करे, जबकि कहीं सच्चे देव शास्त्र गुरु पर उपसर्ग आया हो अथवा कोई धर्म संकट आया हो, किसी सती की रक्षा करना हो। धर्मात्मा के प्राण संकट में हो। तब इन क्रियाओं को शुद्ध सम्यग्दृष्टि श्रावक है वेही, करे। इस शास्त्र में जो मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र है उनको मिथ्यादृष्टियों के हाथ में न दे। जो भी ऐसा करेगा उसे बाल हत्या का पाप लगेगा। हमने इस शास्त्र का संग्रह मात्र जैन समाज के हितार्थ किया है। कहीं कहीं मन्त्रों की विधि समझ में नहीं आने के कारण ज्यों की त्यों लिख दी है और लगभग सभी जगह मन्त्रों की विधि बुद्धि के अनुसार स्पष्ट की है। इस ग्रन्थ को संग्रहित करने में मंत्रों की विधि लिखने में किसी प्रकार की त्रुटि रही हो तो उसे विशेष मंत्र शास्त्र के जानने वाले शुद्ध करे हमने तो अपने अल्प ज्ञानानुसार शुद्ध कर संग्रह किया है।

इस ग्रन्थ के कार्य में हर समय १०८ आचार्य सन्मार्ग दिवाकर विमलसागरजी महाराज का आशीर्वाद रहा है और श्री गणनी १०५ आर्यिका सिद्धान्त विशारद सम्यक ज्ञानशिरोमणि विजय मती माताजी का ग्रन्थ संग्रह में कार्य पूर्ण सहयोग व दिग्दर्शन रहा है। माताजी को मेरा पूर्ण आशीर्वाद है।

विभिन्न मुद्राओं के नाम व लक्षण के साथ चित्र व २४ यक्ष यक्षणियों के चित्र भी दिये हैं। चित्रकार श्री गोतम जी गोधा लशकर वालों ने चित्रों का चित्रण करके ग्रन्थ के एक अंग की पूर्ति की है उनको भी हमारा आशीर्वाद है कि उनकी चित्रकला उत्तरोत्तर वृद्धि गत हो और धर्म प्रभावना करे। इस ग्रन्थ की प्रेस कापी करने में दर्शना कुमारी पाटनी भोपाल, महावीर कुमार, आशा कुमारी जैन दतिया, हीरामणी जयपुर ने सहायता की है, उनको भी हमारा आशीर्वाद है।

ग्रन्थ प्रकाशन कार्य में कार्य रत्त धर्म स्नेही संगीताचार्य श्री शान्ति कुमार जी गंगवाल, श्री लल्लू लालजी गोधा, हीरा लाल जी सेठी, मोतीलाल जी हाड़ा, कपूरचन्द जी पाण्ड्या, सुशीलकुमार गंगवाल, प्रदीपकुमार गंगवाल श्रीमती कनक प्रभा जी हाड़ा, श्रीमती मैमदेवी गंगवाल, श्री रमेश चन्द जी जैन को हमारा पूर्ण आशीर्वाद है। ऐसा ही धर्म कार्य आप लोग सदैव करते रहे।

१०८ आचार्य गणधर
कुंथुसागर

आचार्य महावीर कीर्ति का जीवन परिचय

समाधि सम्राट श्री १०८ आचार्य महावीर कीर्ति का जन्म वैशाख बदि ६ वि० सं० १६६७ में फिरोजाबाद में हुआ था। पिता का नाम रतनलाल जी माता का नाम बूंदादेवी था। आपने २० वर्ष की अवस्था में गिगासन अजमेर में श्री १०८ चन्द्रसागर जी से सप्तम प्रतिमा ग्रहण की थी। सम्बत् १६६५ में मेवाड़ के टोंका टोका स्थान पर आचार्य श्री १०८ वीरसागर जी से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की थी। ३२ वर्ष की अवस्था में उदगांव (दक्षिण) में श्री १०८ आचार्य आदीसागर जी सांगली (महाराष्ट्र) के द्वारा नग्न दिगम्बर मुद्रा धारण की थी। अपने दीक्षा गुरु आदीसागर जी के स्वर्गारोहण के पश्चात् शेडवाल (कर्नाटक) में एक लाख जन समुदाय के उपस्थिति में आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया था।

आप अनेक विषयों तथा भाषाओं के उच्च कोटि के विद्वान थे। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं के साथ ही गुजराती, कन्नड़ी, मराठी आदि प्रान्तीय भाषाओं का भी अध्ययन कर १८ भाषाओं के ज्ञाता हो गये थे। आपकी यह विशेषता थी कि जिस प्रदेश में आपका विहार हो जाता था उसी प्रदेश की भाषा में प्रवचन होता था।

आचार्य श्री ने जैन धर्म तथा संस्कृति की प्रभावना के लिये प्रायः सम्पूर्ण भारत में विहार किया था। दक्षिण भारत में अनेक वर्षों तक विहार करने के बाद उत्तर भारत के मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, बंगाल, बिहार आदि अनेक प्रमुख स्थानों में आपका विहार तथा चातुर्मास हुये। आपके चातुर्मास अधिकतर सिद्ध क्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों पर ही होते थे।

विहार के समय आपके ऊपर अनेक घातक हमले हुए। घोर उपसर्ग और शारीरिक पीड़ा भी कई बार सहन करनी पड़ी। किन्तु आपने समस्त उपद्रवों को बड़ी ही शांति और संयम के साथ सहन किया तथा अपने कर्त्तव्य से रंचमात्र भी विचलित नहीं हुए। आप जैसे आचार्य तेजस्वी निर्भीक वक्ता अध्यात्मवेत्ता, मन्त्र, तन्त्र के ज्ञाता आत्मजयी पर दुःख कातर, स्वपर हितकारी, धर्म के प्रति अटूट श्रद्धावान देखने में कम ही आये हैं। इसी कारण आप अत्यधिक लोक प्रिय हुए। आपके द्वारा १६ मुनि, ६ आर्यिका, ७ क्षुल्लक, ५ क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की गई। इसके अलावा ८ लोगों को ब्रह्मचारी व ४ को ब्रह्मचारिणी व्रत दिये तथा १ से ७ प्रतिमा तक के अनेक श्रावक श्राविकाओं को व्रती बनाया गया।

आपके प्रमुख शिष्यों में वर्तमान में १०८ आचार्य श्री विमल सागर जी, १०८ आचार्य श्री सन्मति सागर जी, १०८ एलाचार्य श्री विद्यानन्द जी, १०८ आचार्य श्री संभव सागर जी, १०८ आचार्य गणधर कुन्थुसागर जी व श्री गणनी १०५ आर्यिका विदुषी रत्न, सिद्धान्त विशारद, विजयमती माताजी शामिल हैं, जिनके द्वारा सारे देश में धर्म का प्रचार होते हुए, प्राणी मात्र इन गुरुओं के सानिध्य को पाकर मुक्ति मार्ग पर बढ़ रहे हैं।
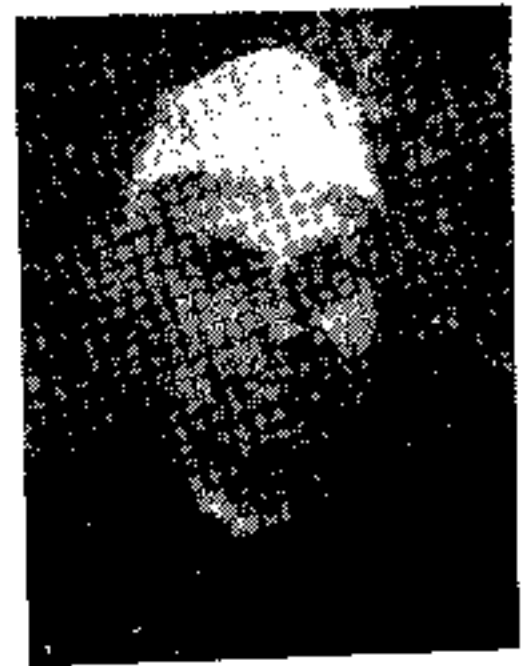
❖ प्रस्तावना ❖

प्रस्तुत ग्रन्थ आचार्य प्रवर समाधि सम्राट, उग्र तपस्वी, मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र क्रिया के पारगामी श्री १०८ महावीर कीर्ति जी महाराज के प्रखर शिष्य तपोनिधि प्रशांत मूर्ति आचार्य गणधर श्री १०८ कुन्थुसागर जी महाराज व श्री गणनी, सिद्धान्त विशारद, सम्यक-ज्ञान शिरोमणि विजयमती माता जी ने अपने गुरु वर्य आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी एवं प्राचीन गुटको में से बड़े परिश्रम से संचित कर लिखा है।

यन्त्र मन्त्र, तन्त्र विद्यानुवाद के अंग हैं। इनका महत्व आज के भौतिक युग में भी उतना ही है, जितना पूर्व युगों में रहा है, लेकिन आज कल के युग में इन महान प्रयोगों के जानकार नहीं हैं, और न इनके साधनों की प्रक्रिया से ही परिचित हैं। इसीलिये न इनके प्रति उनकी आस्था जागृत होती है, और न बिना आस्था व अध्य व्यवसाय के किसी कार्य की सिद्धि होती है। फलस्वरूप अज्ञानता प्रमाद के कारण उन मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रों के स्वरूप जो फल स्वछेय सिद्धियां होती भी नहीं हो पाती है। विषय का ज्ञान नहीं होने से लोग फिर इन मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र को ही गलत बताने लगते हैं।

मन्त्रों की साधना के लिए चाहे वह कोई मन्त्र हो, नव प्रकार की शुद्धियाँ आवश्यक हैं। इसके साथ ही मन्त्र के प्रति साधक की पूर्ण आस्था होना परमावश्क है। इसके बिना साधना की सिद्धि सम्भव नहीं है। नव शुद्धियां—(१) द्रव्य शुद्धि (२) क्षेत्र शुद्धि (३) काल शुद्धि (४) भाव शुद्धि (५) आसन शुद्धि (६) विनय शुद्धि (७) मन शुद्धि (८) वचन शुद्धि (९) काय शुद्धि होती है। साधक को माला (जो तीन तरह की होती है) कमल जाप्य, हस्तांगुली माला जाप्य, वस्त्र आसन और दिशा बोध भी होना आवश्यक है। किस साधना के लिए कैसे वस्त्र हो, कैसा आसन हो, कैसी मुद्रा हो और किस दिशा की ओर मुख करे, इन सब बातों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है।

साधक को अपनी शुद्धि करने के लिए सकलीकरण, निर्विघ्नता के लिए संरक्षीकरण भी करना पड़ता है। इसके बिना साधना में अनेक विघ्न आ जाते हैं, और इससे इष्ट सिद्धि नहीं हो पाती है। मन्त्रों द्वारा आत्म शान्ती जागृत की जाती है। मन्त्र की व्युत्पत्ति ही ऐसी है, मन्त्र शब्द मन धातु से ष्टन् प्रत्यय लगाने से बनता है। मन्यते आत्म देशोनन्

रति मन्त्र अर्थात् जिससे आत्मा का आदेश जाना जावे उसे मन्त्र कहते हैं। तन्त्र उन मन्त्रों की प्रक्रिया है और यन्त्रों का आकार अर्थात् मन्त्रों की आकृतियां सम्पूर्ण द्वादशांग जिन-वाणी को सुरक्षित रखने के चार्ट है, जिनके देखने मात्र से तत्सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता है। इन यन्त्रों का सीधा सम्बन्ध मन्त्रों और सिद्धियों से है। विधि श्रद्धा और विवेक के साथ इनकी साधना करने से सिद्धियाँ निश्चित रूप से प्राप्त हो जाती है। संग्राहक आचार्य श्री व माता जी ने इन सब बातों का इस ग्रंथ में संग्रह समन्वित किया है और उन्होंने इसे पांच खंडो में विभाजित किया है।

साधकों का लक्ष्य मन्त्रो की साधना प्रारम्भ करने से पूर्व, सकलीकरण, संरक्षीकरण और साधना करने की मुद्रायें, विधियां, विविध सिद्धियों के लिये मन्त्रो का विधि सहित विवेचन यन्त्रों के आकार, चौबीस भगवान के यक्ष यक्षणियों के (चित्र सहित) वर्णन व आयुर्वेद का विषय विवेचन इन खन्डो में किया गया है। इस तरह यह ग्रन्थ यन्त्र- मन्त्र और तन्त्रों का विशेष विवेचना करने वाला एक महान् और अपूर्व ग्रन्थ (लघु विद्यानुवाद) बन गया है। इसके संग्रह करने में पूज्य श्री १०८ आचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज व श्री १०५ आर्यिका विजयमती माता जी ने अथक श्रम करके लुप्त एवं गुप्त विद्या को प्रकाश में लाये हैं, उसके लिये सम्पूर्ण मानव समाज आपका उपकृत व आभारी रहेगा और यावच्चन्द्र दिवाकर आपका नाम अमर रहेगा।

इस ग्रन्थ को प्रकाशन कराने में धर्मोत्साही गुरु भक्त संगीताचार्य श्री शान्तिकुमार जी गंगवाल, प्रकाशन संयोजक एवं धर्म प्रेमी श्री लल्लूलाल जी जैन गोधा (सम्पादक जयपुर जैन डायरेक्टरी) जो कि इस ग्रन्थ के प्रबन्ध सम्पादक हैं व इनके सहयोगी कार्यकर्ताओं को मैं धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि इन्हीं लोगों के सहयोग व प्रेरणा से इतना बड़ा कार्य इतनी जल्दी सम्भव हो सका है। कुन्थु विजय ग्रन्थ माला समिति के सभी सदस्यों का मैं अभिनन्दन करता हूँ कि जिनके प्रयास से ही समिति का प्रथम प्रकाशन ही इतना प्रभावक प्रकाशित हुआ है कि जिसका प्रकाश देश के सभी क्षेत्रों में दूर-दूर तक फैलेगा और चिरकाल तक रहेगा।

मुझे प्रकाशन संयोजक श्री शान्तिकुमार जी गंगवाल ने बतलाया कि पंडित जी ऐसे महान ग्रन्थ के प्रकाशन का कार्य करने की न हम में शक्ति थी और न क्षमता, मगर फिर भी प्रकाशित हो रहा है, आश्चर्य है ? मैंने कहा कि इसमे आश्चर्य की कोई बात नहीं है, आपको सभी बड़े आचार्यों के आशीर्वाद के साथ साथ श्री १०८ आचार्य गणधर कुन्थुसागर जी महाराज व श्री गणनी १०५ आर्यिका विदुषी रत्न सम्यक्ज्ञान शिरोमणि, सिद्धान्त विशारद्, विजयमती माता जी का पूर्ण आशीर्वाद है और साथ ही साधुओं के प्रति अटूट भक्ति ही कार्य कर रही है, भक्ति में अपूर्व शक्ति है।

समाज रत्न पं० राजकुमार शास्त्री,
साहित्य तीर्थ, आयुर्वेदाचार्य
निवाई (टौंक) राजस्थान
संचालक—अखिल विश्व जैन मिशन

लघु विद्यानुवाद

इस खण्ड में

(पृष्ठ १ से २४ तक)

- मंगला चरण
  मन्त्र साधन करने वाले के लक्षण — १
- अथ सकलीकरणम् — २
- मन्त्र साधन की विधि, मन्त्र जाप करने की विधि का कोष्टक — ६
- अंगुलियों के नाम — ८
- आसन विधान — ११
- अंगुली विधान, माला विधान — १२
- मन्त्र शास्त्र में अकडम चक्र का प्रयोग — १३
- अकडम चक्र — १४
- मन्त्र साधन मुहूर्त का कोष्टक, मन्त्र साधन होगा या नहीं, उसको देखने की विधि, मन्त्र जपने के लिए आसन — १५
- मन्त्र शास्त्र में मुद्राओं की विधि — १६
- मन्त्र जाप के लिये विभिन्न मुद्राओं के २१ चित्र — १६
- मन्त्र जाप के लिये मंडलों का ध्यान, मंडलों का नक्शा — २४

ग्रन्थ--प्रशस्ति

आचार्य श्री शत-अठ "महावीर कीरति" हुये महान् ।
परम्परा में 'विमल' गुरु हैं, जैन जगत की शान ।।
इनके महा तपस्वी शिष्य हैं, आचार्य मुनि श्री कुन्थु ।
कठिन साधना से जिनकी, प्रस्तुत यह अद्‌भुत ग्रन्थ ।।
श्रेष्ठ तपस्विनी माताजी श्री विजय मतीजी साथ ।
ग्रन्थराज की तैयारी में, धन्य बटाया हाथ ।।
सिद्ध क्षेत्र सोनागिरी पर यह, सिद्ध हुआ है काज ।
गुरु बाहुबल से बाहूबली को है अर्पित आज ।।
लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ का नाम दिया है सुन्दर ।
अद्‌भुत ग्रन्थ बना गुणकारी, उपकारी और हितकर ।।
गोधा लल्लूलाल और श्री शान्तिकुमार गंगवाल ।
संपादन, संयोजन कीना, धन्य हैं दोनों लाल ।।
यन्त्र मन्त्र और तंत्र है विद्या क्या, और क्या उपयोग ।
ग्रन्थ में इस पर सुन्दर चित्रण, पढ़े कटे सब रोग ।।
और भी उपयोगी सामग्री, चित्र, भरे हैं इसमें ।
जीवन सुन्दर जीने का है, 'राज' भरा है जिनमें ।।
सम्वत् दो हजार सैंतीस में, फागुन माह महान् ।
अभिषेक बाहुबली महा मस्तक का, सुन्दर अवसर जान ।।
कर्नाटक की धन्य धरा पर, लाखों लोग है आये ।
इस अवसर पर ग्रन्थ राज को गुरु जग सम्मुख लाये ।।

रचयिता – (राजमल जैन, जयपुर)

Gandhi Jain Karyalay
MANSAUR (M.P.)

मंगला चरण

वृषभादि जिनान् वन्दे, भव्य पंकज प्रफुल्लकान् ।
गौतमादिगणाधीशान्, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनान् ॥ १ ॥
वन्दित्वा कुंदकुंदादीन्, महावीर कीर्ति तथा ।
लघुविद्यां प्रवक्षामि पूर्वाचार्या नुरूपतः ॥ २ ॥

लघुविद्यानुवाद

अर्थ : मोक्ष लक्ष्मी के घर है ऐसे प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लगाकर अन्तिम तीर्थंकर महावीर स्वामी पर्यंत चतुर्विशति तीर्थंकर प्रभु को नमस्कार करता हूँ।

भव्य रूपी कमलों को प्रफुल्लित करने वाले, गौतमादि गण नायकों को नमस्कार करता हूँ। आचार्य परम्परा में आने वाले कुन्दकुन्दादिक आचार्य देव हैं, उनको नमस्कार करता हूँ और मेरे गुरुदेव श्री महावीर कीर्ति जी महाराज हैं उनको नमस्कार करके लघु- [illegible]

[illegible]

[illegible] विकथालापः ।
देव्यर्चनानुरक्तो जिनपद भक्तो [illegible] ॥

[illegible] कामदेव को जीता है, और जिसके क्रोधादि कषायें शान्त हैं, जो विकथाओं [illegible] वाला है, देवियों की पूजा करने में जिसका चित्त अनुरक्त है, और जिनेन्द्र प्रभु [illegible] कमलों की भक्ति करने वाला है, वह मन्त्री हो सकता है यानी मन्त्र साधन करने [illegible] सकता है।

मंत्राराधन शूरः पाप विदूरो गुणेन गम्भीरः ।
मौनी महाभिमानी मन्त्री स्यादीदृशः पुरुषः ॥

जो मन्त्राराधना करने में शूरवीर है, पाप क्रियाओं से दूर रहने वाला है, गुणों में [illegible] मौनी है, महान् स्वाभिमानी है, ऐसा पुरुष ही मन्त्रवादि हो सकता है।

गुरुजन हितोपदेशो गततन्द्रो निद्रयापरित्यक्ताः ।
परिमित भोजनशीलः स स्यादाराधको मंत्राः ॥

[illegible] न दूर रह[illegible] के चरण [illegible] वाला हो [illegible] गम्भीर है

जिसने गुरुजनों से उपदेश को प्राप्त किया है, तन्द्रा जिसकी खत्म हो चुकी है और जिसने निद्रा लेना छोड़ दिया है, जो परिमित भोजन करने वाला है, वही मन्त्रों का आराधक हो सकता है।

निर्जित विषय कषायोधर्मामृत जनित हर्षगत कायः।
गुरुतर गुण सम्पूर्णः समवेदाराधको देव्याः (मन्त्राः)॥

जिसने सम्पूर्ण विषय कषायों को जीत लिया है, धर्मामृत का सेवन करने से जिसकी काय हर्षयुक्त है, उत्तम गुणों से संयुक्त है, ऐसा पुरुष ही मन्त्राराधना कर सकता है।

शुचिः प्रसन्नोगुरुदेव भक्तो दृढ़ व्रतः सत्य दया समेतः।
दक्षः पटुबीज पदावधारी मन्त्री भवेदीदृश एवलोके॥
एते गुणायस्य न सन्ति पुंसः क्वचित् कदाचिन्न भवेत् स मन्त्री।
करोति चेद्दर्प वशात् स जाप्यं प्राप्नोत्यनर्थंफणिशेखरात्॥

जिसका बाह्य और अभ्यन्तर से चित्त शुद्ध है, प्रसन्न है, देव शास्त्र गुरु का भक्त है, व्रतों को दृढ़ता से पालन करने वाला है, सत्य बोलने वाला है, दया से युक्त है, चतुर है, मन्त्रों के बीज रूप पदों को धारण करने वाला है ऐसा व्यक्ति ही लोक में मन्त्राराधना कर सकता है।

उपरोक्त गुणों से जो पुरुष युक्त नहीं है, वह मन्त्र साधन का अधिकारी किसी भी हालत में नहीं होता है। अगर अभिमान से संयुक्त होकर मन्त्र साधना कोई करता है तो वह मन्त्रों के अधिष्ठाता देवों के द्वारा अनर्थ को प्राप्त होता है। ऐसी श्री मल्लिषेणाचार्य की आज्ञा है।

अथ सकलीकरणम्

दृष्टे मृष्टे भुवि न्यस्ते, सन्निविष्टः सु विष्टरे।
समीपस्थापना द्रव्यो, मौनमार्कमिकं दधे॥

ॐ क्ष्वीं भूः शुद्धयतु स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्मं ठं आसन निक्षिपामि स्वाहा। ॐ ह्रीं ह्रां ह्रां णिसिहि णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा। ॐ ह्रीं मौन स्थिताय मौनव्रतं गृह्णामि स्वाहा।

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धि करोमि स्वाहा।

इस मन्त्र से हाथ में पानी लेकर सर्व पूजा के बर्तनों की शुद्धि करे, पश्चात्

ओ३म् ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्त तीर्थ जलेन शुद्ध पात्रे निक्षिप्त पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा ।

सर्व पूजा द्रव्यों का शोधन करे। पश्चात्—

मैं अग्नि मण्डल में पर्यङ्कासन से बैठा हुआ हूँ और मेरे चारों ओर हवा से प्रज्वलित अग्नि से यह सप्त धातुमय शरीर जल रहा है, ऐसा चिंतवन करें। पश्चात्—

ॐ ॐ ॐ रं रं रं झ्रौं झ्रौं झ्रौं अ सि आ उ सा दर्भासने उपवेशनं करोमि स्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर दर्भ के आसन पर बैठे। पश्चात्—

ॐ ह्रीं ओं क्रों दर्भैराच्छादनं करोमि स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अर्हं भगवतो जिनभास्करस्य बोधसहस्त्र किरणैर्ममनोकर्मेंधनद्रव्यं शोषयामि घे घे स्वाहा । नोकर्म शोषणम् ।

यह पढ़ कर ऐसी विचार करे कि मेरे कर्म शोषण हो रहे हैं। पश्चात्—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ ॐ ॐ रं रं र ह्म्ल्व्यूं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल संदह संदह कर्ममलंदह दह दुखं पच पच पापं हन हन हूं फट् घे घे स्वाहा । इति कर्म दहन ध्यानम् ।

इस को पढ़ कर विचार करे कि हमारे सर्व कर्म जल गये हैं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनप्रभंजन मम कर्मभस्म विधूननं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को पढ़ कर विचार करे कि कर्म जल कर उनकी राख उड़ गई है। इति भस्मापसरणम् ।

ॐ पंच महामुद्राग्न्यस्तगुर्वमृताक्षरैः ।।
क्षरत्सुधौघैः सिंचामि सुधा मंत्रेण मूर्धनि ।।

अब यहाँ पर पंच गुरु मुद्रा बनाकर और उसको मस्तक पर उल्टा रखकर अमृत बीज मंत्र से अपनी शुद्धि करे। निम्नलिखित अमृत मंत्र से हाथ में लिये हुए जल को मंत्रित कर अपने शिर पर डाले—

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रीं द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा मम सर्वाङ्ग शुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। इति अमृत प्लावनम् ।

शून्याक्षरादि गुरु पंच पदान्कनीय ।
स्याद्यंगुली त्रितयपर्वसु चाग्र भागे ।।
अंगुष्ठ तर्जनीकया क्रमशः कराभ्याम् ।
विन्यस्य हस्तयुगलं मुकुली करोमि ।।

यहाँ पर दोनों हाथों को मिलाकर मुकुलित करे अर्थात् हाथ जोड़े और हाथ जोड़े जोड़े ही निम्नलिखित मंत्र के अनुसार अङ्गन्यास (अङ्ग रक्षण) करे अर्थात् जिस स्थान का नाम आया है उस स्थान का स्पर्श करे ।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं स्वाहा । ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा ।
ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं स्वाहा । ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा ।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा । (करन्यास मंत्रः)
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः वं मं हं सं तं पं अ सि आ उ सा स्वाहा ।
(हस्त द्वय मुकुलीकरण मंत्रः)

अर्हं नाथस्य मंत्र हृदय सर सिजे सिद्ध मंत्रं ललाटे ।
प्राच्यामाचार्य मंत्रं पुनर्वटुवदे पाठकाचार्य मंत्रं ।।
वामे साधो स्तुतिं मे शिरसि पुनरिमानं स योनीभिदेशे ।
पार्श्वाभ्यां पंच शून्यैः सह कवच शिरोऽङ्गन्यास रक्षा करोमि ।।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (हृदय कवचं)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (मुखम)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (दक्षिणांगं)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (पृष्ठांगम्)
ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (वामांगं)
ॐ ह्रां णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (ललाट भागं)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (उर्ध्वभाग)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (शिरो दक्षिण भागं)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (शिरो अपर भागं)
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (शिरो वाम भागं)
ॐ ह्रां णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (दक्षिण कुक्षं)
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं रक्ष रक्ष स्वाहा । (वाम कुक्षं)
ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं रक्ष रक्ष स्वाहा (नाभि प्रदेशं)
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं रक्ष रक्ष स्वाहा (दक्षिण पार्श्वं)
ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं रक्ष रक्ष स्वाहा (वाम पार्श्वं)

इति अङ्गन्यास

विन्यस्य करतर्जन्यां, पंच ब्रह्म पदावलि।
बध्नामि स्वात्मरक्षायै, कूट शून्याक्षरैर्दिशः ॥

नीचे लिखे मंत्रों से दिशा बंधन करे।

ॐ क्षां ह्रां पूर्वे। ॐ क्षीं ह्रीं अग्नौ। ॐ क्षीं ह्रीं दक्षिणे। ॐ क्षें ह्रें नैऋते। ॐ क्षैं ह्रैं पश्चिमे। ॐ क्षों ह्रों वायव्ये। ॐ क्षौं ह्रौं उत्तरे। ॐ क्षं ह्रं ईशाने। ॐ क्षः ह्रः भूतले। ॐ क्षीं ह्रीं उर्द्धे। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त दिग्बंधनं करोमि स्वाहा।

ऊपर लिखे मंत्रों से क्रम क्रम पूर्वक एक-एक दिशा में तर्जनी अंगुली घुमावे। तर्जनी अंगुली पर अ सि आ उ सा केशर से लिखे, दाएं हाथ की तर्जनी पर लिखना चाहिए।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं अर्हद्भ्यो नमः।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धेभ्यो नमः।

परमात्म ध्यान मंत्र का यहाँ ध्यान करें।

जिनेन्द्र पादार्चित सिद्ध शेषया।
सिद्धार्थ दर्वायव चंदनाक्षतान् ॥
उपासकानामपि मूर्ध्नि निक्षिपन्।
करोमि रक्षां मम शान्ति का नाम् ॥

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से पुष्प या पीली सरसों को ७ बार मंत्रित करे और सर्व दिशा में फेंके। तथा मंत्र बोलते हुए सब दिशाओं में ताली बजावे व तीन बार चुटकी बजावे।

सिद्धार्थानभिमंत्रितान्सह्या वैरादाय यज्ञ क्षितौ।
स्वां विद्यामभिरक्षणाय, जगतां शांत्यै सतां श्रेयसे ॥
सर्वासु प्रचुरान् दिशासु, पर विद्याछेदनार्थं।
किराम्यर्हत्याग विधि, प्रसिद्ध कलि कुंडाख्येन मंत्रेण च ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलि कुंड स्वामिन् स्फां स्फीं स्फूं स्फें स्फैं स्फों स्फौं स्फं स्फः हूं क्ष्रूं फट् इतीन् घातय घातय विघ्नान् स्फोटय स्फोटय। पर विद्यां छिन्द छिन्द आत्म विद्यां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र से जौ और सरसों मंत्रित कर दाहिनी दिशा में डालें।

इत्थं सर्वत्र सकलीकरणं यथाव।
रस सदैव सकलीकरणं यथाव।

रसं भाक्ष्यतिमशेष मलंघ्य शक्तिः ।
भूतो रागादि विष किल्विष दुःख मुग्रं ।
निर्जित्य निश्चय सुखान्यनु भूयतेऽसौ ।।

।। इति सकलीकरणं ।।

मन्त्र साधन की विधि

।। १ ।। जो पुरुष मन्त्र साधन के लिए जिस किसी स्थान में जावे, प्रथम उस क्षेत्र के रक्षक देव से प्रार्थना करे कि मैं इस स्थान में, इतने काल तक ठहरूँगा, तब तक के लिए आज्ञा प्रदान करो, और किसी प्रकार का उपसर्ग होवे तो निवारियो—क्योंकि, हमारे जैन मुनि भी जब कहीं किसी स्थान में जाकर ठहरते हैं तो उसके रक्षक देव को कहते हैं कि इतने दिन तक तेरे स्थान में ठहरेंगे तू क्षमा भाव रखियो। इस वास्ते गृहस्थियों को अवश्य ही उपरोक्तानुसार रक्षक देव से आज्ञा लेनी चाहिये ।

।। २ ।। जब मन्त्र साधन करने के वास्ते जावो तब जहाँ तक हो ऐसे स्थान में मन्त्र सिद्ध करो जहाँ मनुष्यों का गमनागमन न हो जैसे अपने जैन तीर्थ, मांगी तुङ्गीजी, सिद्ध वर कूट, रेवा नदी के तट पर या सोनागिरीजी या और जो अपने जैन तीर्थ एकान्त स्थान में हैं, या बगीचों के मकानों में, पहाड़ों में तथा नदी के किनारे पर या निर्जन स्थान में, ऐसे स्थानों में मन्त्र सिद्ध करने को जाना चाहिये। जब उस स्थान में प्रवेश करो, वहाँ ठहरो तो मन, वचन, काय से उस स्थान का जो रक्षक देव या यक्ष आदि है उसका योग्य विनय मुख से यह उच्चारण करे कि हे इस स्थान के रक्षक देव मैं, अपने इस कार्य की सिद्धि के वास्ते तेरे स्थान में रहने के लिये आया हूँ तेरी रक्षा का आश्रय लिया है, इतने दिनों तक मैं तेरे स्थान में रहने के लिये आया हूँ, तेरी रक्षा का आश्रय लिया है, इतने दिनों तक निवास के लिये आज्ञा प्रदान कीजिये । अगर मेरे ऊपर किसी तरह का संकट, उपद्रव या भय आवे तो उसे निवारण कीजिये ।

।। ३ ।। जब मन्त्र साधन करने जाओ तो एक नौकर साथ ले जाओ, जो रसोई की वस्तु लाकर, रसोई बनाकर तुमको भोजन करा दिया करे। तुम्हारा धोती-दुपट्टा धो दिया करे, जब तुम मन्त्र साधन करने बैठो, तब तुम्हारे सामान की चौकसी रखे ।

।। ४ ।। जो मन्त्र साधन करना हो पहले विधि पूर्वक जितना-जितना हर दिन जप सके उतना हर दिन जप कर सवा लाख पूरा कर मन्त्र साधना करे, फिर जहाँ काम पड़े उसका जाप जितना कर सके १०८ बार या २१ बार या जैसा मन्त्र में लिखा हो, उतनी बार जपने से कार्य सिद्ध होवे। मन्त्र शुद्ध अवस्था में जपे। शुद्ध भोजन खाये। और मन्त्र में जिस शब्द के दो-दो का अंक हो उस शब्द का दो बार उच्चारण करे ।

मन्त्र जाप करने की विधि का कोष्टक

१	शान्ति कर्म	पौष्टिक कर्म	वश्य कर्म	आकर्षण कर्म	स्तम्भन कर्म	मारण कर्म	विद्वेषण कर्म	उच्चाटन कर्म
२	पश्चिम वरुण दिशा	नैऋत्य दिशा	कुबेर दिशा	दक्षिण यम दिशा	पूर्वाभिमुख	ईशानदिक्	आग्नेय दिक्	वायव्य दिक्
३	अर्द्ध रात्रि	प्रभात काल	पूर्वान्ह काल	पूर्वान्ह काल	पूर्वान्ह काल	सन्ध्या काल	मध्यान्ह काल	अपरान्ह काल
४	ज्ञान मुद्रा	ज्ञान मुद्रा	सरोज मुद्रा	अंकुश मुद्रा	शंख मुद्रा	वज्र मुद्रा	प्रवाल मुद्रा (पल्लव)	प्रवाल मुद्रा (पल्लव)
५	पर्यङ्कासन	पंकजासन	स्वस्तिकासन	दण्डासन	वज्रासन	भद्रासन	कुर्कुटासन	कुर्कुटासन
६	स्वाहा पल्लव	स्वधापल्लव	वषट् पल्लव	वौषट् पल्लव	ठ ठ पल्लव	घे घे पल्लव	हूँ पल्लव	फट् पल्लव
७	श्वेत वस्त्र	श्वेत वस्त्र	अरुण पुष्प	उदयार्क वस्त्र	पीत वस्त्र	कृष्ण वस्त्र	धूम्र वस्त्र	धूम्र वस्त्र
८	श्वेत पुष्प	श्वेत पुष्प	रक्त वर्ण	अरुण पुष्प	पीत पुष्प	कृष्ण पुष्प	धूम्र पुष्प	धूम्र पुष्प
९	श्वेत वर्ण	श्वेत वर्ण	रक्त वस्त्र	उदयार्क वर्ण	पीत वर्ण	कृष्ण वर्ण	धूम्र वर्ण	धूम्र वर्ण
१०	पूरक योग	पूरक योग	पूरक योग	पूरक योग	कुम्भक योग	रेचक योग	रेचक योग	रेचक योग
११	दीपन आदि नाम	दीपन आदि नाम	सम्पुट आदि मध्य नाम	ग्रन्थन वरुणां तरित नाम	विदर्भाक्षर मध्य नाम	रोधन आदि मध्य नाम	पल्लवांत नाम	पल्लवान्त नाम
१२	स्फाटिक मणि	मुक्ता मणि	प्रवाल मणि	प्रवाल मणि	स्वर्ण मणि	पुत्रजीवा मणि	पुत्रजीवा मणि	पुत्रजीवा मणि
१३	मध्यमांगुली	मध्यमांगुली	अनामिका	कनिष्टका	कनिष्टका	तर्जन्यंगुली	तर्जन्यंगुली	तर्जन्यंगुली
१४	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त	वाम हस्त	वाम हस्त	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त	दक्षिण हस्त
१५	वाम वायु	वाम वायु	वाम वायु	वाम वायु	दक्षिण वायु	दक्षिण वायु	दक्षिण वायु	दक्षिण वायु
१६	शरद ऋतु	हेमन्त ऋतु	वसन्त ऋतु	वसन्त ऋतु	वसन्त ऋतु	शिशिर ऋतु	ग्रीष्म ऋतु	प्रावृट् ऋतु
१७	जल मण्डल मध्य	जल मण्डल	जल मण्डल	अग्नि मण्डल	पृथ्वी मण्डल	वायु मण्डल	वायु मण्डल	वायु मण्डल
१८	अर्द्ध रात्रि	प्रभात काल	पूर्वान्ह काल	पूर्वान्ह काल	पूर्वान्ह काल	संध्या काल	मध्यान्ह काल	अपरान्ह काल

नोट :—प्रत्येक दिन में २॥ घड़ी २॥ घड़ी क्रमशः छहों ऋतु समझना ।

॥ ५ ॥ जब मन्त्र जपने बैठे, पहले रक्षा–मन्त्र सकलीकरण कर अपनी रक्षा कर लिया करे, ताकि कोई उपद्रव अपने जाप्य में विघ्न न डाल सके। अगर रक्षा–मन्त्र जप कर मन्त्र जपने बैठे तो साँप, बिच्छू, भेड़िया, रीछ, शेर, बकरा उसके बदन को न छू सके—दूर ही रुके। मन्त्र पूर्ण होने पर जो देव-देवी साँप वगैरह बनकर उसको डराने आवे तो जो रक्षा मन्त्र जप कर जाप करने बैठे उनके अंग को वह छू नहीं सके—सामने से ही डरा सके। जब मन्त्र पूर्ण होने को आवे तब देव पूर्ण देवी विक्रिया से साँप वगैरह डराने आवे तो डरे नहीं। चाहे प्राण जावे तो डरे नहीं तो मन्त्र सिद्ध होय! मनोकामना पूर्ण होय। यदि बिना मन्त्र रक्षा के [रक्षा–मन्त्र के] जपने बैठे तो पागल हो जावे। इस वास्ते पहले रक्षा–मन्त्र जप कर, पश्चात् दूसरा मन्त्र जपना चाहिये।

॥ ६ ॥ मन्त्र जहाँ तक हो सके ग्रीष्म ऋतु में करना चाहिये ताकि धोती दुपट्टा में सर्दी न लगे। मन्त्र सिद्ध करने में धोती दुपट्टा दो ही कपड़े रक्खे। वे कपड़े शुद्ध हों, उनको पहने हुये पाखाने नहीं जावे, खाना नहीं खावे, पेशाब नहीं जावे, सोवे नहीं, जब जप कर चुके तो उन्हें अलग उतार कर रख देवे, दूसरे वस्त्र पहन लिया करे, यह वस्त्र नित्य हर दिन स्नान कर बदन पोंछ कर पहना करे। यह वस्त्र सूत के पवित्र वस्तु के हों। ऊन, रेशम वगैरह अपवित्र वस्तु के न हों। स्त्री सेवन न करे। गृह कार्य छोड़कर एकान्त में मन्त्र जप सिद्ध करे।

॥ ७ ॥ मन्त्र में जिस रंग की माला लिखी हो उसी रंग का आसन यानि बिस्तर आदि। धोती दुपट्टा भी उसी रंग का हो तो और भी श्रेष्ठ है, यदि माला उसी रंग की न होवे तो सूत की माला उस रंग की रंग लेवे। जब मन्त्र जपने बैठे तो इतनी बातों का ध्यान रखे।

॥ ८ ॥ पहले सब काम ठीक करके मन्त्र जपे।

॥ ९ ॥ आसन सबसे अच्छा डाभ का लिखा है, या सफेद या पीला या लाल—जैसा जिस मन्त्र में चाहिये वैसा बिछावे।

॥१०॥ ओढ़ने की धोती–दुपट्टा सफेद उम्दा हो या जिस रंग का जिस मन्त्र में चाहिये। वैसा हो।

॥११॥ शरीर की शुद्धि करके परिणाम ठीक करके धीरे–धीरे तसल्ली के साथ जाप्य करे, अक्षर शुद्ध पढ़े।

॥१२॥ मन्त्र पद्मासन में बैठकर जपे। जिस प्रकार हमारी बैठी हुई प्रतिमाओं का आसन होता है, बाँया हाथ गोद में रखकर दाहिने हाथ में जपे। जो मन्त्र बायें हाथ में जपना लिखा हो तो वहाँ दाहिना हाथ (गोद) में रखकर बायें हाथ में जपे।

॥१३॥ जहाँ स्वाहा लिखा हो वहाँ धूप के साथ जपे यानि धूप आगे रखे।

॥१४॥ जहाँ दीपक लिखा हो, वहाँ घी का दीपक आगे जलाना चाहिये।

॥१५॥ जिस-जिस अँगुली से जाप्य लिखा हो उसी अँगुली और अँगूठे से जाप्य जपे। अँगुलियों के नाम आगे लिखें हैं—

अँगुलियों के नाम :—

अँगूठे को अँगुष्ठ कहते हैं।

अँगूठे के साथ की अंगुली को तर्जनी कहते हैं।

तीसरी बीच की अँगुली को मध्यमा कहते हैं।

चौथी यानि मध्यमा के पास की अँगुली को [अँगुष्ठ से चौथी को] अनामिका कहते हैं।

पाँचवी सबसे छोटी अँगुली को कनिष्ठा कहते हैं।

अंगुष्ठेन तु मोक्षार्थं धर्मार्थं तर्जनी भवेत्।
मध्यमा शान्तिकं ज्ञेया सिद्धिला मायऽनामिका ॥१॥

जाप्य विधि में मोक्ष तथा धर्म के वास्ते अँगुष्ठ के साथ तर्जनी से, शान्ति के लिये मध्यमा तथा सिद्धि के लिये अनामिका अंगुली से जाप्य करे।

कनिष्ठा सर्व सिद्धार्थं एतत् स्याज्जाप्य लक्षणाम्।
असंख्यातं च यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥२॥

कनिष्ठा सर्व सिद्धि के वास्ते श्रेष्ठ है, ये जाप के लक्षण जाने बिना मर्यादा किया हुआ सब जाप्य निष्फल होता है अर्थात् किसी मन्त्र का २१ बार जाप्य लिखा है तो वहाँ २१ से कम या अधिक जाप्य नहीं करना, ऐसा करने से वह निष्फल होता है। मन्त्र सिद्ध नहीं होता।

अंगुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलंघने।
व्यग्रचित्तेन यज्जप्तं तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥३॥

अंगुली के अग्र भाग से जो जाप किये जायें तथा माला के ऊपर जो तीन दाने मेरू के हैं, उनको उल्लंघन करके जो जाप्य किया जाय तथा व्याकुल चित्त से जो जाप्य किया जाय वह सब निष्फल होता है।

माला सुपंचवर्णानां सुमाना सर्व कार्यदा।
स्तम्भने दुष्टसंत्रासे जपेत् प्रस्तरकर्कशान् ॥४॥

सब कार्यों में पाँचों वर्णों के फूलों की माला श्रेष्ठ है, परन्तु दुष्टों को डराने में तथा स्तम्भन करने व कीलने में कठोर (सख्त) वस्तु के मणियों की माला से जाप्य करें।

धर्मार्थी काममोक्षार्थी जपेद् वै पुत्र जीविकाम्। (स्त्रजम्)
शान्तये पुत्र लाभाय जपे दुत्तममालिकाम् ॥५॥

मन्त्र साधन करने वाला धर्म के लिये तथा काम और मोक्ष के लिये तथा शान्ति के लिये और पुत्र प्राप्ति के वास्ते मोती आदि की उत्तम माला से जाप्य करें। शान्ति से यह तात्पर्य है कि जैसे रोगी आदि के लिये रोग की शान्ति करना या देवी वगैरह किसी का उपद्रव हो उसकी शान्ति करना। अन्य कामों में जीवापोता की माला से जाप्य करें।

शान्ति अर्द्ध रात्रि वारुणि दिक् ज्ञानमुद्रापंकजासन।
मौक्तिकमालिका स्वच्छे श्वेते पू० चं० श्रां० ॥६॥ स्वरे

शान्ति के प्रयोग में मन्त्र जाप्य करने वाला आधी रात के समय पश्चिम दिशा की ओर मुख करके ज्ञान–मुद्रा सहित कमलासन युक्त मोतियों की माला से स्वच्छ श्वेत बाएं योग पूरक चं० श्रां० का उच्चारण करता हुआ जाप्य करें।

स्तम्भनं पूर्वाह्णे वज्रासने पूर्वदिक् शंभुमुद्रा।
स्वर्णमणिमालिका पीताम्बर वर्ण ठः ठः ॥७॥

स्तम्भन [रोकना तथा कीलना] के प्रयोग में पूर्वाह्ण अर्थात् दुपहर से पहले काल में वज्रासनयुक्त पूर्व दिशा की तरफ मुख करके स्वर्ण के मणियों की माला से पीले रंग के वस्त्र पहने हुये ठः ठः पल्लव उच्चारण करता हुआ जाप्य करें।

शत्रूच्चाटने च रुद्राक्षा विद्वेषारिष्टजंप्नजा।
स्फाटिकी सूत्रजामाला मोक्षार्थानां (र्थीनां) तु निर्मला ॥८॥

दुश्मन का उच्चाटन करने के लिये रुद्राक्ष की माला, वैर में जिया पोते की माला, मोक्षाभिलाषियों को स्फटिक मणि की तथा सूत्र की माला श्रेष्ठ है।

उच्चाटनं वायव्यदिक् अपराह्णकाल कुक्कुटासन।
प्रवालमालिका धूम्रा च फटित् तर्ज न्यगुष्ठयोगेन ॥९॥

उच्चाटन इसके प्रयोग में वायव्य कोण [पश्चिम और उत्तर के बीच में] की तरफ मुख करके अपराह्ण [दुपहर के बाद] में कुक्कुटासनयुक्त मूंगे की माला से धुंवे के रंग व फट् पल्लव लगाकर अँगूठा और तर्जनी से जाप करे।

वशीकरणे पूर्वाह्णे स्वस्तिकासन उत्तरदिक् कमलमुद्रा।
विद्रुममालिका जपा कुसुम वर्ण वषट् ॥१०॥

वशीकरण अर्थात् वश में करना। अपने अधीन करना। इसके प्रयोग में पूर्वाह्न, दोपहर के पहले काल में स्वस्तिकासन युक्त उत्तर दिशा की तरफ मुख करके कमल मुद्रा सहित मूँगे की माला से जपे। कुसुमवर्ण वषट्पल्लव उच्चारण करता हुआ जाप्य करें।

आसन डाव रक्त वर्ण यन्त्रोद्धार! रक्त पुष्प वाम हस्तने डाब के आसन पर बैठ कर लाल कपड़े सहित यन्त्रोद्धार ....लाल फूल रखता हुआ बायें हाथ से जाप्य करे।

आकृष्टि पूर्वाह्न दण्डासनं अंकुश मुद्रा दक्षिणदिक्।
प्रवालमाला उदयार्कवर्ण वौषट् स्फुट अंगुष्ठमध्यमाभ्यंतु ॥

आकृष्टि—बुलाना इसके प्रयोग में पूर्वाह्न (दोपहर से पहले) काल में दण्डासनयुक्त अंकुश मुद्रा-सहित दक्षिण दिशा की तरफ मुख करके मूँगे की माला से उदयार्कवर्ण .... वौषट उच्चारण करता हुआ अंगूठे और बीच की अंगुली से जाप्य करें।

निषिद्धसन्ध्यासमय भद्र पीठासन ईशानदिक् वज्रमुद्रा।
जीवापोतामालिका धूम्र बहुभ कनिष्ठांगुष्ठयोगेन ॥

निषिद्ध कर्म या मारण कर्म समय में भद्र पीठासन युक्त ईशान [उत्तर और पूर्व दिशा के बीच] की तरफ मुख करके वज्र-मुद्रा युक्त जीवापोता माला से धूप खेता हुआ या होम करता हुआ अंगूठे और कनिष्ठा से जाप करे।

नोट :—जो बगैर रक्षा-मन्त्र जप के मन्त्र साधन करते हैं अक्सर व्यन्तरों से डराये जाकर अधबीच में मन्त्र साधन छोड़ देने से पागल हो जाते हैं इसलिये जब कोई मन्त्र सिद्ध करने बैठे तो मन्त्र जपना आरम्भ करने से पूर्व इनमें से कोई रक्षा-मन्त्र जरूर जप लेना चाहिये। इससे मन्त्र साधन करने में कोई उपद्रव नहीं हो सकेगा और कोई व्यन्तर वगैरह रूप बदल कर ध्यान में विघ्न नहीं डाल सकेगा। कुण्डली के अन्दर आ नहीं सकेगा।

इन मन्त्रों का जाप्य भगवान की वेदी के सामने करना चाहिए या देव स्थान में जाप्य करना चाहिये या घर में एकान्त स्थान में जाप्य करे। किन्तु घर में होम और पुण्याहवाचन करके णमोकार मन्त्र का चित्र और जिनेन्द्र भगवान का चित्र, दीप और धूपदानी समक्ष रख कर, आसन पर बैठकर और शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करे। उस स्थान पर बच्चों आदि का उपद्रव या शोर नहीं होना चाहिए। मन्त्र की जाप्य अत्यन्त शुद्ध, भक्ति के साथ करनी चाहिए। मन्त्र में किसी प्रकार की आकुलता, चिन्ता, दुःख, शोक आदि भावनाएँ नहीं रहनी चाहिए। जाप्य करते समय मन को स्थिर रखना चाहिए पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके जाप्य देनी चाहिए। जाप्य में बैठने से पहले समय की मर्यादा कर लेनी चाहिए। पद्मासन से बैठना चाहिए, मौन रखना चाहिए। जितने दिन जाप्य कर, उतने दिन एकाशन, किसी रस का त्याग, वस्त्र आदि का परिमाण करे। जमीन, चटाई या तख्ते पर सोवें, जाप्य समाप्त होने

तक ब्रह्मचर्य व्रत रखें मन्त्र की जाप्य पुष्य हस्त और मल आदि शुभ नक्षत्रों में आरम्भ करना चाहिये। सुबह दोपहर और शाम को जाप्य करें। सुबह ५ बजे उठकर स्नानादि से निवृत होकर शुद्ध वस्त्र पहन कर जाप्य दे। श्वेत वस्त्र पहने। यदि घर में जाप्य करनी हो तो भगवान का दर्शन-पूजन करने के पश्चात् करनी चाहिए। दोपहर को शुद्ध वस्त्र पहनकर तथा सध्या को मन्दिर में दर्शन करने के पश्चात् शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करें।

जाप्य तीन प्रकार का होता है

मानसिक, वाचनिक (उपांशुक) और कायिक।

मानसिक जाप : मन में मन्त्र का जप करना यह कार्य सिद्धि के लिए होना है।

वाचनिक जाप :-- उच्च स्वर में मन्त्र पढ़ना, यह पुत्र प्राप्ति के लिए होता है।

कायनिक जाप : – बिना बोले मन्त्र पढ़ना, जिसमें होठ हिलते रहें। यह धन प्राप्ति के लिए होता है या किया जाता है।

इन तीनों जाप्यों में मानसिक जाप्य श्रेष्ठ है और उंगलियों पर या माला द्वारा करना चाहिये। माला चाहे सूत की हो या स्फटिक, सोना, चाँदी या मोती आदि की हो सकती है।

विश्व शान्ति के लिए आठ करोड़ आठ लाख आठ हजार आठ सौ आठ जाप करे। कम से कम सात लाख जाप करे। यह जाप नियमबद्ध होकर निरन्तर करें, सूतक पातक में भी छोड़ नहीं। विश्व शान्ति जाप के लिए दिनों का प्रमाण कर लेना चाहिए।

पुत्र प्राप्ति, नवग्रह शान्ति, रोग-निवारण आदि कार्यों के लिए एक लाख जाप करे। आत्मिक शान्ति के लिए सदा जाप करे। दिनों का कोई नियम नहीं है. स्त्रियों को रजस्वला होने पर भी जाप करते रहना चाहिए, स्नान करने के पश्चात् मन्त्र का जाप्य मन में करे, जोर से नहीं बोलें और माला भी काम में न ले।

जप पूर्ण होने पर भगवान का अभिषेक करके यथा शक्ति दान पुण्य करें।

आसन-विधान

बाँस की चटाई पर बैठकर जाप करने से दरिद्र हो जाता है, पाषाण पर बैठकर जाप करने से व्याधि पीड़ित हो जाता है। भूमि पर जाप्य करने से दुःख प्राप्त होता है, पट्टे पर बैठकर जाप करने से दुर्भाग्य प्राप्त होता है, घास की चटाई पर बैठकर जाप करने से अपयश प्राप्त होता है, पत्तों के आसन् पर बैठकर जाप करने से भ्रम हो जाता है, कथरी पर बैठकर जाप करने से मन चंचल होता है, चमड़े पर बैठकर जाप करने से ज्ञान नष्ट हो जाता है, कंबल पर बैठकर जाप करने से [illegible]

[illegible]

करने से हर्ष बढ़ता है। ध्यान में लाल रंग के वस्त्र श्रेष्ठ हैं। सर्व धर्म कार्य सिद्ध करने के लिए दर्भासन (डाब का आसन) उत्तम है।

गृहे जपफलं प्रोक्तं वने शत गुणं भवेत्।
पुण्यारामे तथारण्ये सहस्र गुणितं मतम्।
पर्वते दश सहस्रं च नद्यां लक्ष मुदाहृतम्।
कोटि देवालये प्राहुरनन्तं जिन सन्निधौ ॥

अर्थात् घर में जो जाप का फल होता है उससे सौ गुना फल वन में जाप करने से होता है। पुण्य क्षेत्र तथा जंगल में जाप करने से हजार गुणा फल होता है। पर्वत पर जाप करने से दस हजार गुणा, नदी के किनारे जाप करने से एक लाख गुणा, देवालय (मन्दिर) में जाप करने से करोड़ गुणा और भगवान के समीप जाप करने से अनन्त गुणा फल मिलता है।

अंगुली-विधान

अंगुष्ठ जपो मोक्षाय, उपचारे तु तर्जनी
मध्यमा धन सौख्याय, शान्त्यर्थं तु अनामिका।
कनिष्ठा सर्व सिद्धि दा तर्जनी शत्रु नाशाय।
इत्यपि पाठान्तरोऽस्ति हि।

मोक्ष के लिए अंगुठे से जाप करें, उपचार (व्यवहार) के लिए तर्जनी से, धन और सुख के लिये मध्यमा अंगुलि से, शान्ति के लिए अनामिका से और सब कार्यों की सिद्धि के लिए कनिष्ठा से जाप करें। पाठान्तर से कहीं शत्रु नाश के लिए तर्जनी अंगुली से जाप करें।

माला-विधान

दुष्ट या व्यंतर देवों के उपद्रव दूर करने, स्तम्भन विधि के लिए, रोग शान्ति के लिए या पुत्र प्राप्ति के लिये मोती की माला या कमल बीज माला से जाप करने चाहिये। शत्रु उच्चाटन के लिए रुद्राक्ष की माला, सर्व कर्म के लिए या सर्व कार्य की सिद्धि के लिए पंच वर्ण के पुष्पों से जाप करने चाहिये। हाथ की अंगुलियों पर जाप करने से दस गुना फल मिलता आँवले की माला पर जाप करने से सहस्र गुना फल मिलता है। लौंग की माला से पाँच हजार गुणा, स्फटिक की माला पर दस हजार गुणा, मोतियों की माला पर लाख गुणा, कमल बीज पर दस लाख गुणा, सोने की माला पर जाप करने से करोड़ गुणा फल मिलता है। माला के साथ भाव शुद्धि विशेष होनी चाहिये।

मन्त्र शास्त्र में अकडम चक्र का प्रयोग

अथ अ क ड म चक्र प्रयोग—नाम पुरुष के नाम के पहले अक्षर से मन्त्र के नाम अक्षर तक गिनना। मन्त्र सिद्ध असिद्ध देखें।

अर्थ :—पुरुष के नामाक्षर तक गिणाई पहले सिद्ध, बिजई साध्य, तीजई सु सिद्ध, चउ अरि शत्रुता इणी।

अनुक्रम से बारह स्थान कूं जो बारह कोठे हैं उनमें गिनकर शुभ अशुभ सिद्ध असिद्ध देखो। १–५–९ कोठा के अक्षर आवें तो देर से सिद्ध, २–६–१० कोठा के अक्षर सिद्ध हों या न भी हों, ३–७–११ कोठा के अक्षर जल्दी सिद्ध हों, ४–८–१२ कोठा के अक्षर शत्रुता कार्य न हो।

५ ८ ५ ८ ३ ४१ ७ ६ ७ ६ ४ १ १
पंच धाठा पचई आठार तिन्ह चोरिका सत्व छकठा सतई छंकाई चऊ रिक्का एकेम
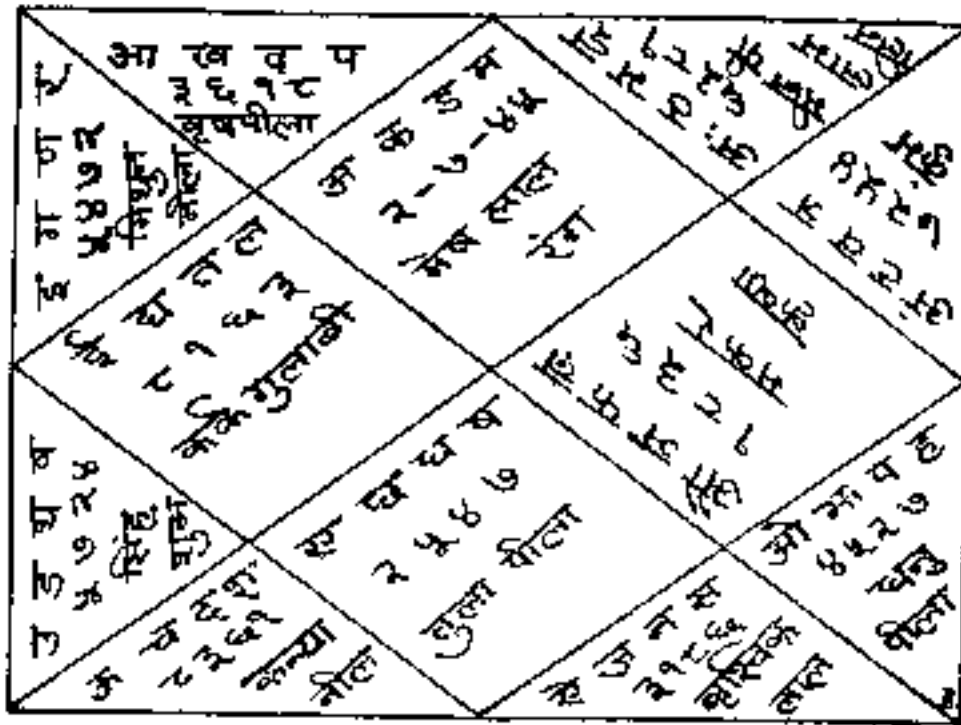
पुरुषः द्वाभ्यां स्त्री शून्ये नपुंसकः एकेन् जीवाः द्वाभ्यां धातुः शून्येन मूलः ३ एकेन लाभः द्वाभ्यां न लाभः शून्येन हानि ४ एकेन आकाशः द्वाभ्यां पातालः शून्येन मत्यु लोकः ॥

॥ इति ॥

एक-एक कोठा में ४-४ अक्षर १८ अङ्क हैं। १२ कोठे १२ राशि रंग का विवरण है।

अकडम चक्रम्
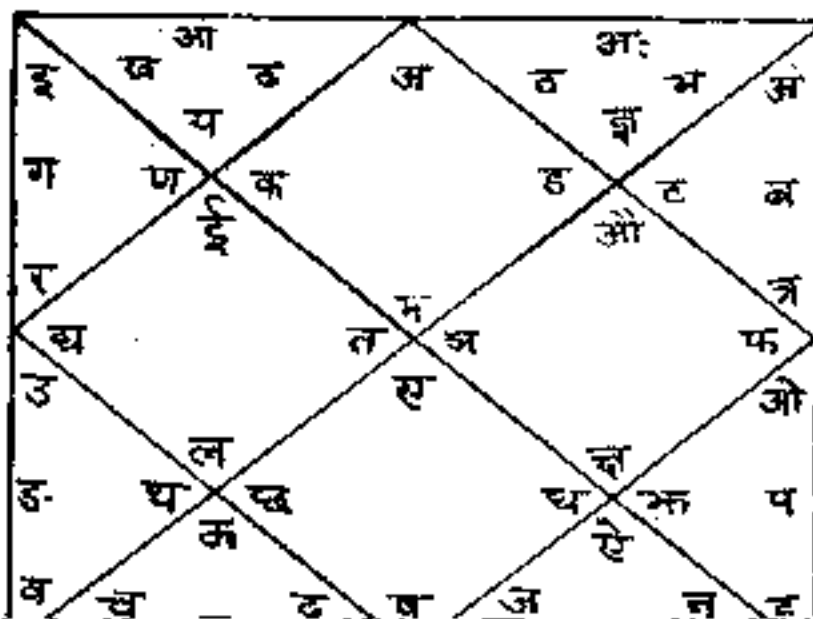
कोई पाठ मन्त्र किसी व्यक्ति को फलप्रद होगा कि नहीं यह जानने के लिए उस मन्त्र या पाठ का नाम का पहला अक्षर और व्यक्ति के नाम के पहले अक्षर का इस चक्र में नीचे लिखे शब्द बोलकर मिलान करने पर मालूम हो जायेगा कि पहले व्यक्ति के नाम से कार्य के नाम के पहले अक्षर को गिनना तो मालूम होगा। फिर ...

मन्त्र साधन मुहूर्त्त का कोष्टक

नक्षत्र	उत्तफा० ह० अश्वि० श्र० वि० मृ०
वार	र० सो० बु० गु० शु०
तिथि	२।३।५।७।१०।११।१३।१५

इस कोष्टक को देखकर, पचाङ्ग से मिलान कर मन्त्र साधन करने का मुहूर्त्त देख लेना चाहिये, तब मन्त्र साधना की ओर अग्रसर हो, नहीं तो सफलता नहीं मिलेगी।

॥ ० ॥

मन्त्र सिद्ध होगा या नहीं उसको देखने की विधि

जिस मन्त्र की साधना करना हो उस मन्त्र के अक्षरों को ३ से गुणा करे, फिर अपने नाम के अक्षरों को और मिला देवें, उस संख्या में १२ का भाग देवें, शेष जो रहे, उसका फल निम्नानुसार जानें :—

५—९ बाकी बचे तो मन्त्र सिद्ध होगा।

६—१० बचे तो देर से सिद्ध होगा।

७—११ बचे तो अच्छा होगा।

८—१२ बचें तो सिद्ध नहीं होगा।

कोई मन्त्र अगर अपने नाम से मिलाने पर ऋणी या धनी आता हो, तो उस मन्त्र के आदि में ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं इनमें से कोई भी बीज मन्त्र के साथ जोड़ देने पर मन्त्र अवश्य सिद्ध हो जायगा।

॥ ॥

मन्त्र जपने के लिये आसन

पर्यंकासन : इसे सुखासन भी कहते हैं। दोनों जंघाओं के नीचे का भाग पाँव के ऊपर करके बैठे यानि पालथी मार कर बैठें और दाहिना व बायां हाथ नाभि कमल के पास ध्यान मुद्रा में रखें।

वीरासन :—दाहिना पैर बाँयी जंघा पर व बायाँ पैर दाहिनी जंघा पर रख कर स्थिरता से बैठें।

वज्रासन :– वीरासन की मुद्रा में पीठ की तरफ से लेकर दाहिने पैर का अंगूठा दाहिने हाथ से और बांये पैर का अंगूठा बांये हाथ से पकड़े तो वज्रासन होता है।

पद्मासन : दायाँ पैर बांयी जंघा पर रखे और बायाँ पैर दाँयी जंघा पर, एड़ियाँ परस्पर मिली हों, दोनों घुटने जमीन से स्पर्श न करे तो पद्मासन होता है।

भद्रासन :— पुरुष चिह्न के आगे पांव के दोनों तलुये मिलाकर उनके ऊपर दोनों हाथ की अंगुली परस्पर एक के साथ एक करने के बाद दोनों अंगुलियाँ ठीक तरह से दीखती रहे इस प्रकार हाथ जोड़कर बैठना भद्रासन है।

दण्डासन :— जिस आसन में बैठने से अंगुलियाँ, गुल्फ व जंघा भूमि से स्पर्श करे, इस प्रकार पाँवों को लम्बे कर बैठना दण्डासन कहा जाता है।

उत्किटिकासन :– गुदा और ऐड़ी के संयोग से दृढ़ता पूर्वक बैठे तो उत्किटिकासन कहा जाता है।

गो दोहिकासन :— गाय दुहने को बैठते हैं, उस तरह बैठना, ध्यान करना गो–दोहिकासन है।

कायोत्सर्गासन :— खड़े–खड़े दोनों भुजाओं को लम्बी कर घुटने की तरफ बढ़ाना या बैठे–बैठे काया की अपेक्षा नहीं रख कर ध्यान करना कायोत्सर्गासन कहलाता है।

मन्त्र शास्त्र में मुद्राओं की विधि

(१) वाम हस्तस्योपरिदक्षिणकरं कृत्वा कनिष्ठिकांगुष्ठाभ्यां मणिबंधं वेष्ट्य शेषांगुलिनां विस्फारित वज्रमुद्रा। [चित्र सं० १]

(२) पद्माकारौ कृत्वा मध्ये अंगुष्ठौ कर्णिकाकारौ विन्यसेदिति 'पद्ममुद्रा'। [चित्र सं० ५]

(३) वामहस्ततले दक्षिण हस्तमूलं निवेश्य कर शाखा विरलीकृत्य प्रसारयेदिति 'चक्रमुद्रा' [चित्र सं० ७]

(४) उत्तानहस्तद्वयेन वेणीबंध विधाया गुष्ठाभ्यां कनिष्ठ तर्जनीभ्यां मध्ये संगृह्य अनामिके समीकुर्यात्तामिति 'परमेष्ठीमुद्रा'।

(५) यद्वा करांगुली अर्द्धीकृत्य मध्यमा मध्ये कुर्यादिति 'द्वितीया परमेष्ठी मुद्रा'। [चित्र सं० २०]

(६) उत्तानो किंचिदा कुंचित कर शाखौ पाणी विधाया धारये दिति 'अञ्जुलि मुद्रा'। अथवा पल्लव मुद्रा'। [चित्र सं० ६]

(७) परस्पराभिमुखौ ग्रथितांगुलिकौ करौ कृत्वा तर्जनीभ्यामनामिके गृहीत्वा मध्यमे प्रसार्य तन्मध्ये अंगुष्ठ द्वयं निक्षिपेत् इति (सौभाग्य मुद्रा) सौभाग्य मुद्रा ॥ ७ ॥

(८) किंचिद्गर्भितौ हस्तौ समौ विधाय ललाट देशे योजनेन मुक्तामुक्ति मुद्रा ।

(९) मिथपराङ्मुखौ करौ संयोज्यांगुली विदूर्म्यात्मि सम्मुख कर द्वयपरावर्तनेन 'मुद्गर मुद्रा' ।

(१०) वामकर सहितांगुलि हृदयाग्रे निवेश्य दक्षिण मुष्टियद्ध तर्जनीमूर्द्धी कुर्यादिति तर्जनी मुद्रा ॥१०॥

(११) अंगुलीर्भिकं सरलीकृत्य तर्जन्यं गुष्ठौमीलयित्वा हृदयाग्रे धार्येदिति प्रवचन मुद्रा ।

(१२) अन्योन्य ग्रंथितांगुलिषु कनिष्ठानामिकयो मध्यमा तर्जन्योश्च संयोजनेन गोस्तनाकार-धेनुमुद्रा । [चित्र सं० २१]

(१३) हस्त तलिकोपरि हस्तलिका कार्याइति आसन मुद्रा ।

(१४) दक्षिणांगुष्ठेन तर्जनीमध्यमे समाक्रम्यपुनर्मध्यमा मोक्षणेन नाराचमुद्रा ॥

(१५) करस्थापनेन जनमुद्रा ।

(१६) वामहस्तपृष्ठोपरि दक्षिण हस्त तले निवेशने अंगुष्ठ द्वयं चालनेन 'मीन मुद्रा' ।

(१७) दक्षिणहस्तस्य तर्जनी प्रसार्यं मध्यमा ईषद्वक्रीकरणे अंकुस मुद्रा । [चित्र सं० ६]

(१८) बद्धमुष्टयो: करयो: संलग्न सं मुखांगुष्ठयो हृदय मुद्रा । [चित्र सं० १३]

(१९) तावेवमुष्टी समीकृत्वोर्द्धांगुष्ठ: शिरसिविन्यस्येदिति 'शिरोमुद्रा' ।

(२०) मुष्टिबद्ध विधाय कनिष्ठमंगुष्ठप्रसारयेत् इति 'शिखामुद्रा' ।

(२१) पूर्ववत् मुष्टि बध्वा तर्जन्यो प्रसारयेदिति 'कवचमुद्रा' ।

(२२) कनिष्ठा मंगुष्ठेन संपीड्यशेषांगुली प्रसारयेदिति 'क्षरमुद्रा' ।

(२३) तत्रदक्षिण करेण मुष्टि बध्वा तर्जनी मध्यमे प्रसारयेत् इति 'अस्त्र मुद्रा' ।

(२४) हृदयादीनां विन्यास मुद्रा प्रसारितोन्मुखाभ्यां हस्ताभ्यां पादांगुलि तलान्मस्तकस्पर्शा-न्महामुद्रा' ।

(२५) हस्ताभ्यामंजुलिं कृत्वा नाभिकामूलं पर्वांगुष्ठ संयोजनेन 'आवाहिनी मुद्रा' ।

(२६) इयमेवाधोमुखी 'स्थापनी मुद्रा' । [चित्र सं० ११]

(२७) संलग्नमुष्ट्युच्छ्रितांगुष्ठौ करौ 'सन्निधानी मुद्रा' । [चित्र सं० १२]

(२८) तामेवंगुष्ठौ 'निष्ठुरा मुद्रा' एतास्तिस्र 'अवगाहनादि मुद्रा' ।

(२९) अन्योन्यग्रथितांगुलीषु कनिष्ठानामिकयोर्मध्यमा तर्जन्यो विस्तारित तर्जन्या वामहस्त तलचालनेन वासनी नेत्रास्त्रयो 'पूज्यमुद्रा' ।

(३०) अंगुष्ठे तर्जनी संयोज्य शेषांगुली: प्रसारणेन 'पाशमुद्रा' । [चित्र सं० ३]

(३१) स्वंहस्तोर्द्धांगुली वामहस्त मूले तस्यैवांगुष्ठं तिर्यग् विधाय तर्जनी चालनेन 'ध्वजमुद्रा'।

(३२) दक्षिण हस्तमुत्तानं विधायाधः कर शाखा प्रसारयेदिति 'वरमुद्रा'।

(३३) वामहस्तेन मुष्टिं बध्वा कनिष्ठिकां प्रसार्य शेषांगुली अंगुष्ठेन पीडयेदिति 'शंखमुद्रा'।

(३४) परस्पराभिमुख हस्ताभ्यां वेणीबंधं विधाय मध्यमे प्रसार्य संयोज्य च शेषांगुलीभि-र्मुष्टिं विधाय 'शक्ति मुद्रा'।

(३५) हस्तद्वयेनांगुष्ठ तर्जनीभ्यांवलके विधायपरस्परांतः प्रवेशनेन् 'शृंखला मुद्रा'।

(३६) मस्तकोपरीहस्तद्वयेन शिखराकारः कुड्मलः क्रियतेस एव मंदरमेरु मुद्रा (पंचमेरु मुद्रा) [चित्र सं० ४]

(३७) वामहस्तमुष्टेरुपरि दक्षिणमुष्टिं कृत्वागात्रेणसहकिञ्चिदुन्नामयेदिति 'गदा मुद्रा'।

(३८) अधोमुख वामहस्ताङ्गुलीर्घण्टाकाराः प्रसार्यदक्षिणेनमुष्टिं बध्वा तर्जनी मूर्ध्वां कृत्वा वामहस्ततलेनियोज्यघण्टावच्चालने न 'घण्टा मुद्रा'।

(३९) उन्नतपृष्ठ हस्ताभ्यां संपुटं कृत्वा कनिष्ठिकेनिष्कास्ययोजयेदिति 'कमण्डलु मुद्रा'।

(४०) पताकावत् हस्तं प्रसार्य अङ्गुष्ठयोजनेन् 'परशु मुद्रा'।

(४१) ऊर्ध्वदण्डौ करौ कृत्वापद्मवत् करशाखाः प्रसारयेदिति 'वृक्ष मुद्रा।

(४२) दक्षिण हस्तं संहतांगुलिमुन्नमय्य सर्पफणावत् किञ्चिदाकुञ्चयेदिति 'सर्पमुद्रा'

(४३) दक्षिणकरेणमुष्टिं बध्वा तर्जनी मध्यमे प्रसारयेदिति खड्गमुद्रा।

(४४) हस्ताभ्यां संपुटं विधायांगुलीः पद्मवद्विकास्य मध्यमे परस्पर संयोज्यातन्मूललग्नांगुष्ठौ कारयेदिति 'ज्वलनमुद्रा'

(४५) बद्धमुष्टेर्दक्षिण करस्यमध्यमांगुष्ठ तर्जन्यास्तन्मूलात्क्रमेण प्रसारयेदिति 'दण्ड मुद्रा'।
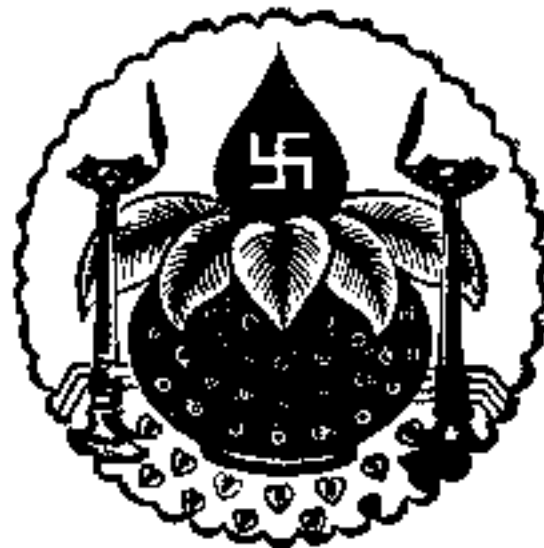
वज्र मुद्रा (चित्र सं० १)

शङ्ख मुद्रा (चित्र सं० २)

पाश मुद्रा (चित्र सं० ३)

पंचमेरु मुद्रा (चित्र सं० ४)

सरोज मुद्रा (चित्र सं० ५)

अंकुश मुद्रा (चित्र सं० ६)

चक्र मुद्रा (चित्र सं० ७)

(चित्र सं० ८)

आवाहन मुद्रा सुखासन (पल्लव मुद्र

स्थंभन मुद्रा (शंख मुद्रा) द्वितीय (चित्र सं० १०)

स्थापन मुद्रा सुखासन (चित्र सं० ११)
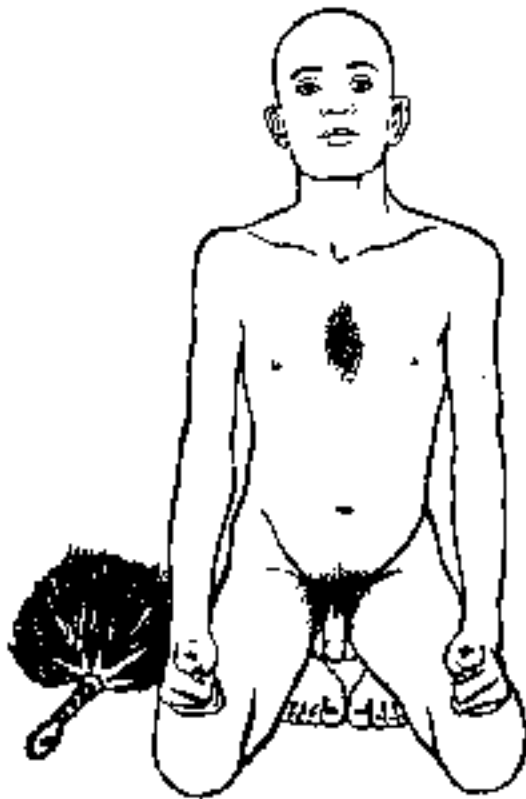
असंनीधिकरण मुद्रा (चित्र सं० १२)

हृदयमुद्रा (चित्र सं० १३)

द्वितीय अंकुश मुद्रा सुखासन उल्टा (चित्र सं० १४)

और भी अन्य मुद्रा (चित्र सं० १५)
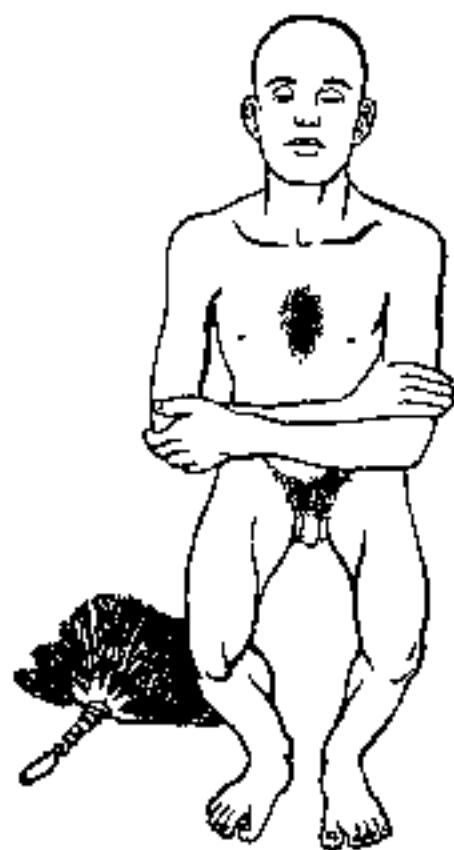
ज्ञानमुद्रा (चित्र सं० १६)

(चित्र सं० १७)

अस्त्र मुद्रा, सिद्धासुखासन (चित्र सं० १८)
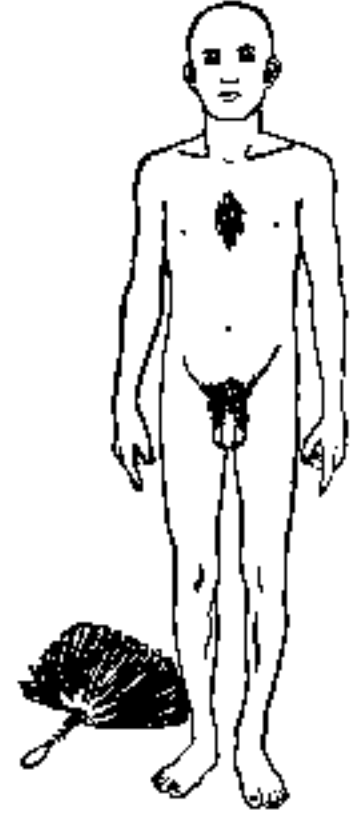
कायोत्सर्ग, अस्त्र मुद्रा (चित्र सं० १९)

परमेष्ठी मुद्रा (पंचगुरुमुद्रा) (चित्र सं. २०)

(धेनु) सुरभि मुद्रा, गोस्थानाकार मुद्रा (चित्र सं. २१)

मंत्र जाप के लिये मंडलों का ध्यान
मंडलों का नक्शा
नाभि मंडल
चन्द्र प्रभाऽनाहत
वरूण मंडल
पृथ्वी मंडल
आकाश मंडल
वायु मंडल
पद्म प्रभाऽनाहत
जल मंडल
जल मंडल
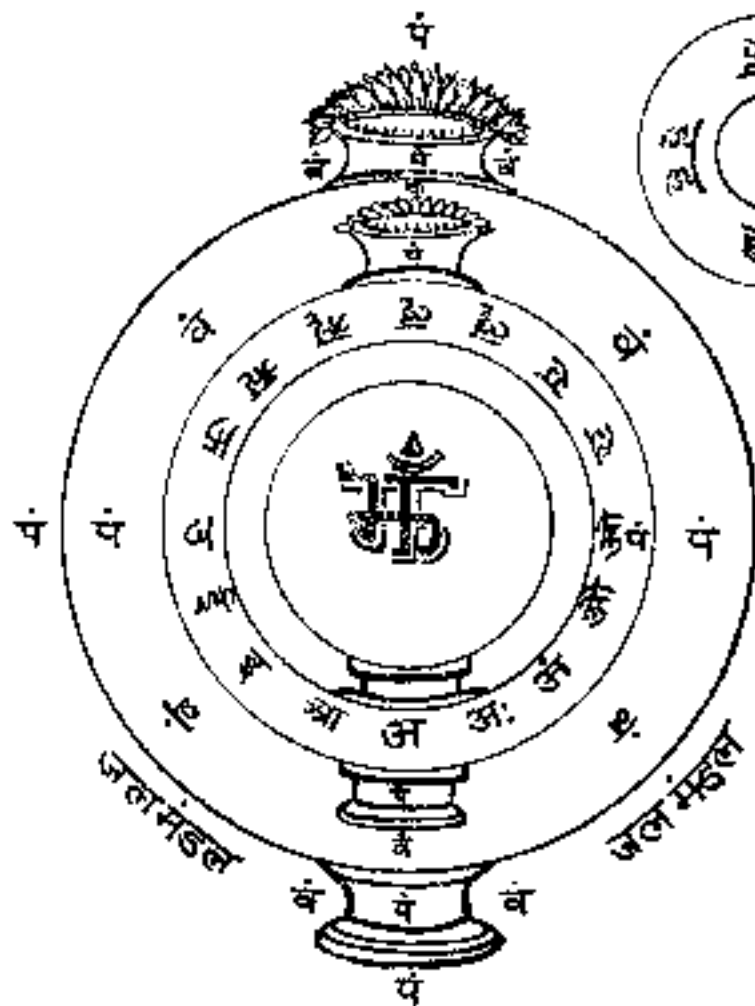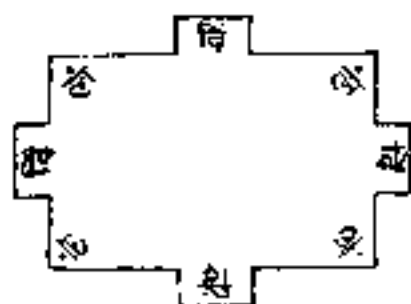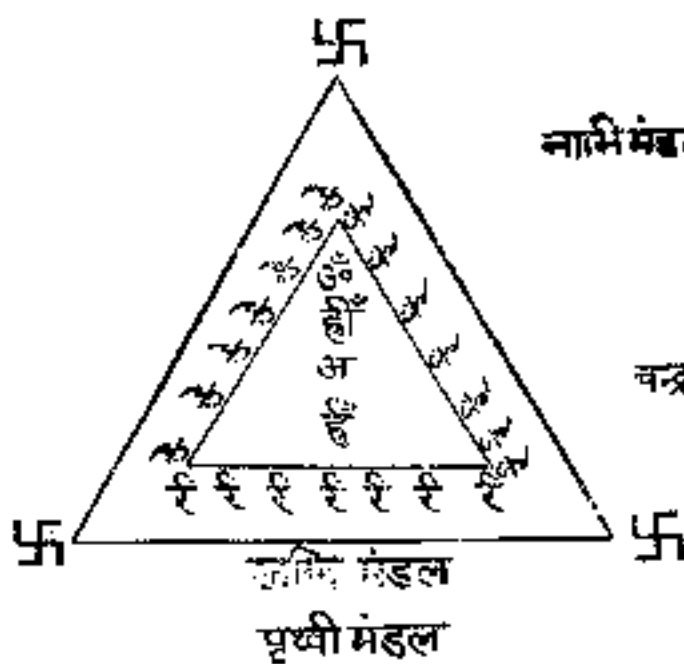
लघु विद्यानुवाद
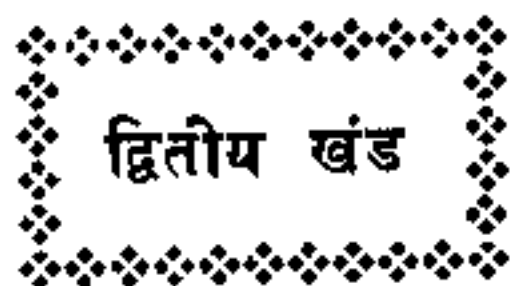
(पृष्ठ २५ से २४७)

इस खण्ड में

- स्वर और व्यंजनों के स्वरूप — २५
- स्वरों और व्यंजनों की शक्ति — ३२
- मन्त्र निर्माण के लिये बीजाक्षरों की आवश्यकता एवं उत्पत्ति — ३७
- ध्वनि (उच्चार) के वर्ण, मन्त्र शास्त्रानुसार, बीजाक्षरों का वर्णन — ३८
- बीजाक्षर मन्त्र — ४१
- रक्षा मन्त्र ,रोग एवं बन्दीखाना निवारण मन्त्र — ४५
- अग्नि निवारण मन्त्र — ४६
- चोर, बैरी निवारण मन्त्र, चोर नाशन मंत्र दुश्मन तथा भूत निवारण मंत्र — ५०
- वाद जीतन मंत्र, विद्या प्राप्ति मंत्र, परदेश लाभ मन्त्र शुभा शुभ कहन मंत्र, (बागबल मंत्र) — ५१
- मन चिन्ता द्रव्य प्राप्ति मन्त्र, सर्व सिद्धि मंत्र — ५२
- आत्म रक्षा महा सकलीकरण मंत्र तथा सर्व कार्य साधक मंत्र — ५६
- जाप्य मंत्र, — ५८
- सूर्य मंत्र का खुलासा
- शांति मंत्र, सर्व शांति मंत्र — ६०
- **विभिन्न रोगों व कष्टों के निवारण हेतु ५०८ मंत्र विधि सहित** — ६३
- भूत तंत्र विधान ४० मन्त्र विधि सहित — १४६
- कुरंगिनी गारुडी विद्या १२ मन्त्र विधि सहित — १५८
- शारदा दंडक विभिन्न १२० मन्त्र विधि सहित — १६१
- सहदेवी कल्प मन्त्र विधि सहित — १८३
- लोमस्य कल्प ३२ मन्त्र विधि सहित — १८४
- गर्भ स्थंभन मन्त्र ४६ ,, ,, ,, — १८६

- अष्ट गंध श्लोक ८ मंत्र विधि सहित — १६५
- सर्व शान्ति कर मंत्रोऽयम, गोरोचन कल्प ११ मन्त्र विधि सहित — १६७
- नारी केल कल्प १८ मन्त्र विधि सहित — १६९
- मणि भद्रादि क्षेत्रपालों के ३ मंत्र विधि सहित — २०३
- अन्नोत्पादन ४५ मन्त्र विधि सहित — २०४
- कलश भ्रामण मंत्र विधि — २११
- पद्मावती सिद्धि २७ मंत्र विधि सहित — २१२
- जीवन मरण विचार ४० मंत्र विधि सहित — २१७
- पुत्रोत्पत्ति के लिए मंत्र, अथ बृहद शान्ति मंत्र — २१९
- पद्मावती म[illegible] मंत्र — २२६
- पद्मावती माला मंत्र लघु, पद्मावती माला मन्त्र बृहत — २२७
- श्री ज्वाला मालिनीदेवी माला मंत्र — २२९
- सरस्वती मंत्र — २३२
- शान्ति मन्त्र लघु–शान्ति मंत्र ,नव ग्रह जाप्य — २३३
- वर्द्धमान मंत्र — २३६
- जिनेन्द्र पंच कल्याणक के समय प्रतिमा के कान में देने वाला सूर्य मन्त्र — २३६
- प्रत्येक शासन देव सूर्य मंत्र — २३७
- पद्मावती प्रतिष्ठा वा यक्षिणी प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र धरणेन्द्र अथवा यक्ष प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र — २३७
- गणधर वलय से सम्बन्धित ऋद्धि मन्त्र व फल — २३८
- अण्डकोष वृद्धि व खाख बिलाई मन्त्र — २४४
- मस्सा नाशक मंत्र, व्रणहर मन्त्र वाला (नहरवा) का मन्त्र, घाव की पीड़ा का मन्त्र — २४५
- कर्ण पिशाचिनी देवी एवं क्लीं बीज मन्त्र — २४६
- वाक् सिद्धि मन्त्र, दाद का मन्त्र — २४७
- भजन, श्री १०८ आचार्य गणधर कुन्थुसागरजी। आरती १०५ गणनी आर्यिका विजयमती माताजी — २४८

अथ: द्वितीय मन्त्राधिकार

स्वर और व्यंजनों के स्वरूप

अ :—वृत्तासन, हाथी का वाहन, सुवर्ण के समान वर्ण, कुंकुम गंध, लवण का स्वाद, जम्बूद्वीप में विस्तीर्ण, चार मुख वाला, अष्ट भुजा वाला, काली आँख वाला, जटा मुकुट से सहित, सितवर्ण, मोतियों के आभरण वाला अत्यन्त बलवान, गम्भीर, पुल्लिग, ऐसा 'अ' कार का लक्षण है।

आ :—पद्मासन, गज, व्याल, वाहन, सितवर्ण, शंख, चक्र-कमंडल, अंकुश का आयुध है, दो मुख वाला, आठ हाथ वाला, सर्प का भूषण है, जिसको शोभनादि महाद्युति को धारण करने वाला, तीस हजार योजन, विस्तार वाला, स्त्रीलिंग है, जिसका ऐसा 'आ' कार का लक्षण है।

इ :—कछुवे का वाहन, चतुरानन, सुवर्ण जैसा वर्ण, वज्र का आयुध वाला, एक योजन विस्तार वाला, द्विगुणा उत्सेध वाला, कषायला स्वाद वाला, वज्र, वैडूर्य वर्ण के अलंकार को धारण करने वाला, मन्द स्वर वाला, और नपुंसक लिंग वाला, और क्षत्रिय है। ये 'इ' कार का लक्षण है।

ई :—कुवलय का आसन, वराह का वाहन, मन्द गमन करने वाला, अमृत रस का स्वाद वाला, सुगन्धित, दो भुजा वाला, फल और कमल का आयुध वाला, श्वेत वर्ण वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणा उत्सेध वाला, दिव्य शक्ति का धारण करने वाला, स्त्रीलिंग वाला। 'ई' कार का लक्षण है।

उ :—त्रिकोणा आसन वाला, कौंच वाहन, (   ) दो भुजा वाला, मूसल गदा के आयुध वाला, धुआँ के वर्ण वाला, कठोर, कड़वा स्वाद वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणीत उत्सेध वाला, कठोर, वश्याकर्षण वाला ऐसा 'उ' कार का लक्षण है।

ऊ :—त्रिकोण आसन वाला, ऊँट का वाहन वाला, लाल वर्ण वाला, कषायला रस वाला, निष्ठुर गंध से सहित, दो भुजा वाला, फल और शूल के आयुध को धारण करने वाला, नपुंसक लिंग वाला, सौ योजन विस्तार वाला है, ऐसा 'ऊ' कार का लक्षण है।

ऋ :—ऊँट के समान ऊँट के वर्ण वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित ऊँट के मुख का स्वाद वाला, नाग का आभरण वाला, सर्व विघ्न मय। ऐसा 'ऋ' कार का लक्षण है।

ऋ :—पद्मासन मयूर का वाहन वाला, कपिल वर्ण वाला, चार भुजा वाला, सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला, मल्ल (चमेली) के गंध जैसा मधुर स्वाद वाला, सुवर्ण के आभरण को धारण करने वाला, नपुंसक लिंग वाला। ऐसा 'ऋ' का लक्षण है।

लृ :—घोड़े का स्वभाव वाला, घोड़े जैसे स्वर वाला, घोड़े के समान रस वाला सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणि आयाम वाला, शूर का वाहन वाला, चार भुजा वाला, मूसल, अकुंस कमल, कोदण्ड, आयुध वाला, कुवलय का आसन वाला, नाग का आभरण वाला, सर्वविघ्नकारि नपुंसक लिंग वाला। ऐसा 'लृ' कार का स्वरूप है।

लॄ :—मौलि (मुकुट) मुक्ताओं से सहित और यज्ञोपवित धारण किये हुये, कुण्डला भरण सहित, दो भुजाओं वाला (कमल की माला से सहित) कमल कुंत (माला) का आयुध से सहित, मल्लिका के गन्ध वाला, पचास योजन विस्तार वाला, द्विगुणा आयाम वाला, नपुंसक, क्षत्रिय, उच्चाटन करने वाला। ऐसा 'लॄ' कार का लक्षण है।

ए :—जटा–मुकुट को धारण करने वाला, मोतियों के आभरण वाला यज्ञोपवित पहने हुये, चार भुजा वाला, शंख, चक्र, फरसा, कमल के आयुध सहित, दिव्य स्वाद से सहित, सुगन्धित से युक्त, सर्व प्रिय शुभ लक्षण से सहित, वृत्तासन को धारण करने वाला, और नपुंसक है। इस प्रकार 'ए' का लक्षण हुआ।

ऐ :—त्रिकोणासन से सहित, गरुड़ वाहन, दो भुजाओं वाला, त्रिशूल, गदा का आयुध वाला, अग्नि के समान वर्ण वाला, निष्ठुर, गन्ध से सहित, क्षीर के स्वाद वाला, घर्घर स्वर वाला, दस योजन विस्तार वाला, द्विगुणित लम्बावश्य आकर्षण शक्ति वाला। ऐसा 'ऐ' कार का लक्षण है।

ओ :—बैल का वाहन, तपाया हुआ सोना के समान वर्ण वाला, सर्वायुध से सम्पन्न, लोकालोक में व्याप्त, महाशक्ति का धारक, तीन नेत्र वाला, बारह हजार विस्तार वाला, पद्मासन वाला, महाप्रभु, सर्वदेवताओं से पूज्य, सर्व मन्त्र का साधन, सर्व लोक से पूजित, सर्व शान्ति करने वाला, सभी को पालन या नाश करने में समर्थ, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि से सहित, यजमान, आकाश, सूर्य, चन्द्रादि के समान कार्य करने वाला, सम्पूर्ण आभरणों से भूषित, दिव्य स्वाद वाला, सुगन्धित, सबों का रक्षण करने वाला, शुभ देह से संयुक्त, स्थावर जंगम आश्रय से सहित, सर्व जीव दया से संयुक्त (परम अव्ययं) पांच अक्षर से गर्भित। ऐसा 'ओ' कार का लक्षण है।

औ :—वृत्तासन वाला, कोक (चकवा) वाहन, कुंकुम गन्ध से संयुक्त पीले वर्ण वाला, चार भुजा वाला, वज्र, पाश के आयुध वाला, कषायला स्वाद वाला, श्वेत माल्यादि लेपन से सहित, स्तम्भन शक्ति युक्त सौ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला। ऐसा 'औ' कार का लक्षण है :

अं :—पद्मासन, सितवर्ण, निलोत्पल (नीला कमल) गन्ध से संयुक्त कौस्तुभ के

के आभरण से सहित, दो भुजाओं वाला, कमल, पास के आयुध वाला, शुभ गन्ध से संयुक्त यज्ञोपवित को धारण करने वाला, प्रसन्न बुद्धि वाला, मधुर स्वाद वाला, सौ योजन विस्तार वाला, दो गुणित आयाम है जिसका ऐसा 'अं' कार का लक्षण है।

अः :—त्रिकोण आसन वाला, पीले वस्त्र वाला, कुंकुम के समान गन्ध वाला, धूम्र वर्ण वाला, कठोर स्वर वाला, निष्ठुर दृष्टि वाला, खारा स्वाद से संयुक्त, दो भुजाओं वाला शूल का आयुध धारण करने वाला, निष्ठुर गति वाला, अशोभन आकृति वाला, नपुंसक शुभ कर्म है कार्य जिसका। ऐसा 'अः' कार का लक्षण है।

क :—चतुरस्रासन, चतुरादत गजवाहनं, पीले वर्णो का सुगन्ध माल्यादि लेपन सहित स्थिर गति वाला, प्रसन्न दृष्टि वाला, दो भुजा वाला, वज्र मूसल के आयुध सहित, जटा-मुकुट धारी सर्वाभरण से भूषित, हजार योजन विस्तार वाला, दस हजार योजन का उत्सेध पुल्लिग, क्षत्रिय, इन्द्रादि देवता का स्तम्भन करने वाला, शान्तिक, पौष्टिक वश्याकर्षण कर्म का नाश करने वाला। ऐसा 'क' कार का लक्षण है।

ख :—पिंगल वाहन, मयूर के कण्ठ के समान वर्ण वाला, दो भुजा वाला, तोमर, शक्ति के आयुध से सहित, सुन्दर यज्ञोपवित को धारण करने वाला, सुस्वर वाला, तीस योजन विस्तार वाला, आकाश में गमन करने वाला, क्षत्रिय, सुगन्ध माल्यादि लेपन से सहित, आग्नेय पुराक्रंदन, चिन्तित मनोरथ की सिद्धि करने वाला, अणिमादि दैवतं, पुल्लिग। ऐसा 'ख' कार का लक्षण है।

ग :—हंस का वाहन, पद्मासन माणिक्या भरण से सहित, इंगिल्नीक वर्ण वाला, श्वेत वस्त्र वाला, सुगन्ध माल्यादि लेपन से सहित, कुंकुम चन्दनादिक है प्रिय जिसको क्षत्रिय, पुल्लिग, सर्व शान्ति करने वाला, सौ योजन विस्तार वाला, सर्वाभरण भूषित दो भुजा से सहित, फल और पास को धारण करने वाला, यक्षादि देवता, अमृत स्वाद वाला, प्रसन्न दृष्टि वाला। ऐसा 'ग' कार का लक्षण है।

घ :—ऊँट का वाहन, उल्लू का आसन, दो भुजा, वज्र, गदा, आयुध, धूम्र वर्ण, हजार योजन विस्तीर्ण हंस के समान स्वर वाला, कठोर, गन्ध वाला, खारा स्वाद वाला, महाबलवान, उच्चाटन, छेदन, मोहन, स्तम्भनकारी, पंचासत योजन विस्तिर्ण, नपुंसक, रौद्र शक्ति वाला, क्षत्रियं, सर्व शान्तिकर महावीर्य को धारण करने वाले देवता। ऐसा 'घ' कार का लक्षण है।

ङ :—सर्पाशिन, दुष्ट स्वर वाला, दुर्दृष्टि, दुर्गन्ध, दुराचारी, कोटी योजन विस्तिर्ण हजार योजन उत्सेध, शाकुन को करने वाला, रात्रि प्रियं, छः भुजा वाला, मूशल, गदा, शक्ति मुष्टि, भुशुंडि, परसा के आयुध को धारण करने वाला, नपुंसक यमादि दैवतं। ऐसा 'ङ' कार का लक्षण है।

च :—शोभन, हंस वाहन, शुक्ल वर्ण, सौ करोड़ हजार योजन विस्तार वाला, वज्र

वैडूर्य मुक्ता भरण भूषित, चार भुजा वाला, शुभ चक्र फल, कमल के आयुध वाला, जटा मुकुट धारी, सुस्वर वाला, सुमन प्रिय ब्रह्माणि यक्षादि दैवत को प्राप्त। ऐसा 'च' कार का लक्षण है।

छ :—मगर का वाहन, पद्मासन, महाघण्टा के समान वाला, उगते हुये सूर्य के समान प्रभाव वाला, हजार योजन विस्तार वाला, आकर्षणादि रौद्र कर्म के करने वाला, सुमन के समान सुगन्ध वाला, काले वर्ण का, दिव्य आभरण से सहित चार भुजा वाला, चक्र, वज्र, शक्ति, गदा के आयुध से सहित सर्व कार्य की सिद्धि करने वाला गरुड़ देवता। ऐसा 'छ' कार का लक्षण है।

ज :—शूद्र, पुल्लिग, चार भुजा वाला, परसु, पाश, कमल, वज्र के धारण करने वाला, अमृत का स्वाद वाला, जटा मुकुटधारी मौक्तिक वज्राभरण भूषित व श्याकर्षण शक्ति वाला, सत्यवादी, सुगन्ध प्रिय, सौदल कमल के समान वारुणादिदेव के समान। ऐसा 'ज' कार का लक्षण है।

झ :—पुरुष, वैश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, के समान वश्याकर्षण करने वाला कुबेरादि दैवत दो भुजाओं वाला, शंख, चक्र के आयुध को धारण करने वाला मौक्तिक वज्राभरण भूषित सत्यवादी, पीला वर्ण का, पद्मासन, सुगन्धि अमृत स्वादु। ऐसा 'झ' कार का लक्षण है।

ञ :—कौवा के वाहन वाला, गन्धवान, काष्टासन वाला, काला वर्ण वाला दूत कर्म है, कार्य जिसका नपुंसक सौ योजन विस्तिर्ण, चार भुजा वाला, त्रिशूल परसु के आयुधों के धारण करने वाला, निष्ठुर और गदा को धारण करने वाला महाक्रूर स्वर वाला, सर्व जीवों को भय पैदा करने वाला, शीघ्र गति वाला, व्यभिचार कर्म से संयुक्त, क्षार (खार) स्वाद वाला, शीघ्र गमन के स्वभाव वाला रौद्र दृष्टियम् दैवतं। ऐसा 'ञ' कार का लक्षण है।

ट :—वृत्तासन, कबूतर के वाहन वाला, कपिल वर्ण वाला, दो भुजा वाला, वज्र, गदा, मन्द गति वाला, लवण के समान स्वाद वाला, शीतल स्वाद वाला, व्याल यज्ञोपवित को धारण करने वाला, चन्द्र दैवतं। ऐसा 'ट' कार का लक्षण है।

ठ :—चतुर स्रासनं गज वाहन वाला, शंख के समान दो भुजा वाला, वज्र, गदा के आयुध को धारण करने वाला, जम्बूद्वीप प्रमाण, अमृत स्वाद वाला, पुल्लिग, रक्षा, स्तम्भन, मोहन, कार्य के सिद्ध करने वाला, सर्वाभरण भूषित, क्षत्रिय दैवतं। ऐसा 'ठ' कार का लक्षण है।

ड :—चतुर स्रासन, शंख के समान, जम्बू द्वीप प्रमाण, क्षीरामृत स्वाद वाला, पुल्लिग, दो भुजा वाला, वज्र पद्म के आयुध को धारण करने वाला, रक्षा, स्तम्भन, मोहनकारी, कर्पूर गन्ध वाला, सर्वाभरण भूषित है। केला के स्वाद वाला, शुभ स्वर वाला, कुबेर दैवतं। ऐसा 'ड' कार का लक्षण है।

ढ :—चतुरस्रासन, मोहन के समान, जम्बू द्वीप प्रमाण, पुल्लिग, आठ भुजा वाला, पशु, पाश, वज्र, मूसल, भिदपाल, मुद्गर, चाप, हल, नाराचायुध को धारण करने वाला, सुस्वादं, सुस्वर, सिंह नाद के समान महाध्वनि करने वाला, लाल वर्ण वाला, ऊपर मुख वाला, दुष्ट निग्रह शिष्ट परिपालन करने वाला, सौ योजन विस्तार वाला, हजार योजन आवृत्त वाला, तदर्द्ध परिणाहं जटा मुकुट को धारण करने वाला, सुगन्ध से संयुक्त, निश्वास वाला, किन्नर ज्योतिष के द्वारा पूजित, महोत्सवयुक्त, कालाग्नि शक्ति, वश्याकर्षण, निमिषार्द्ध साधन, विकलांग, अग्नि दैवतं। ऐसा 'ढ' कार का लक्षण है।

ण :—त्रिकोणासन, व्याघ्र वाहन, सौ हजार योजन आयाम, पचास हजार योजन विस्तार वाला, छः भुजा वाला, शक्ति तोमर, भुशुंडि, भिदपाल, पशु त्रिशूल के आयुधको धारण करने वाला, कठोर गन्ध से सहित, श्राप या अनुग्रह करने में समर्थ, काले वर्ण का, रौद्र दृष्टि, खारा स्वाद वाला, नपुंसक, वायु दैवतं। ऐसा 'ण' कार का लक्षण है।

त :—पद्मासन, हाथी वाहन, शौर्य ही जिसका आभरण है, सौ योजन विस्तार वाला, पचास योजन आयाम, चम्पा के गन्ध वाला, चार भुजा वाला, पशु, पाश, पद्म, शंख के आयुध वाला, पुल्लिग, चन्द्रादि देवता से पूजित, मधुर स्वाद वाला, सुगन्ध प्रिय। ऐसा 'त' कार का लक्षण है।

थ :—बैल का वाहन, आठ भुजा वाला, शक्ति तोमर, पशु, धनुष, पाश, चक्र, गदा, दण्ड आयुध वाला, काला वर्ण वाला, काला वस्त्र वाला, जटा मुकुटधारी, करोड़ योजन आयाम आधा करोड़ विस्तार वाला, क्रूर दृष्टि वाला, कठोर स्वर वाला, गन्ध वाला, धतूरा के रस का प्रिय, सर्व का मार्थ साधनं अग्नि दैवतं। ऐसा 'थ' कार की शक्ति व लक्षण है।

द :—भैंस का वाहन, काला वर्ण, तीन मुख वाला, छः भुजा वाला, गदा, मूसल, त्रिशूल, भुशुंडि, वज्र, तोमर का आयुध वाला, करोड़ योजन आयाम वाला, आधा करोड़ योजन विस्तिर्ण, दिगम्बर (नग्न) लोहा के आभरण वाला, उर्द्ध दृष्टि, सर्प का यज्ञोपवित-धारी, निष्ठुर ध्वनि है जिसकी मकरन्द मुम्मोक्षणं, मन्त्र साधन में विशेष, यम देवता से पूजित काला रंग वाला, नपुंसक। ऐसा 'द' कार का लक्षण है।

ध :—पुल्लिग, कषायला वर्ण वाला, तीन नेत्र वाला, चतुरायुत योजन, विस्तीर्ण, रौद्र कार्य करने वाला, छः भुजा वाला, चक्र, पाश, गदा, भुशुंडि, मूसल, वज्र, शरासन का आयुध धारण करने वाला, काला वर्ण, काला सर्प का यज्ञोपवित धारण करने वाला, जटा मुकुटधारी, हुँकार का महाशब्द करने वाला, मशहूर, कठोर, धूम्र प्रिय, रौद्र दृष्टि, नैऋत्य देव से पूजित। ऐसा 'ध' कार का लक्षण है।

न :—काला वर्ण का, नपुसंक, त्रिशूल, मुद्गर के आयुध वाला, द्विभुजा युक्त, उर्द्ध केश से व्याप्त, चर्मधारी, रौद्र दृष्टि वाला, कठोर स्वाद वाला, काला सर्प का प्रिय, कौए के समान स्वर वाला, सौ योजन उत्सेध वाला, पचास योजन आयाम वाला, निर्यास, गुग्गल, तिल,

तेल के धूप का प्रिय, दुर्जन प्रिय, रौद्र कर्म का धारण करने वाला, यमादि देव से पूजित। ऐसा 'न' कार का लक्षण है।

प :—असित वर्ण, पुंल्लिग, जाति पुष्प के गन्ध का प्रिय, दस सिर वाला, बीस हाथ वाला, अनेक आयुधों के धारण करने वाली भुजा से युक्त करोड़ योजन विस्तार वाला, द्विगुणित आयाम वाला, मन्त्र, कोटि योजन शक्ति का धारी, गरुड़ वाहन वाला, कमल का आसन, सर्वाभरण भूषित, सर्प का यज्ञोपवित धारी, सर्व देवता से पूजित, सर्व देवात्मक, सर्व दुष्टों का विनाशक, (मलयानिल) चन्द्रादि देवता से पूजित। ऐसा 'प' कार का लक्षण है।

फ :—बिजली के समान तेज वाला, पुंल्लिग, पद्मासन, सिंह वाहन, दस करोड़ योजन आयाम वाला, पाँच करोड़ योजन का विस्तार वाला, दो भुजा वाला, पशु, चक्र के आयुध वाला, केतकी के गन्ध का प्रिय, सिद्ध विद्याधर से पुजित, मधुर स्वाद वाला, व्याधि विष, दुष्ट, ग्रह विनाशन, सर्व महारति, महादिव्य शक्ति, शान्तिकर, ऐशान्य देव से पूजित। ऐसा 'फ' कार का लक्षण है।

ब :—इ मिलि का भं, दस करोड़ योजन का उत्सेध, उसका आधा विस्तार, मुक्ति का भरण धारण करने वाला, जनेव धारी, दिव्या भूषित, आठ भुजा वाला, शंख, चक्र, गदा, मूसल, कोंडकण, शरासन, तोमर आयुध को धारण करने वाला, हंस वाहन वाला, कुवलयासन का धारी, बैर फल का स्वादी, घन स्वर वाला, चम्पा के गन्ध वाला, वश्याकृष्टि प्रसंग प्रिय, कुबेर देव से पूजित। ऐसा 'ब' कार का लक्षण है।

भ :—नपुंसक, दस हजार योजन उत्सेध, पाँच हजार योजन विस्तीर्ण, (विस्तार वाला), निष्ठुर मन वाला, कठोर, रुक्ष, स्वाद प्रिय, शीघ्र गति गमन प्रिय, ऊपर मुख वाला, तीन नेत्र वाला, चार भुजा वाला, चक्र, शूल, गदा, शक्ति के आयुधों को धारण करने वाला, त्रिकोणासन वाला, व्याघ्र वाहन, लोहिताक्ष, तीक्ष्ण, उर्द्ध केश वाला, विकृत रूप वाला, रौद्र कांति, अर्द्ध खिले हुये नेत्र, शरण सिद्धि कर, नैऋत्य देव से पूजित। ऐसा 'भ' कार का लक्षण है।

म :— उगते हुये सूर्य के समान प्रभा, अनन्त योजन प्रभा शक्ति, सर्व व्यापि, अनन्त मुख, अनन्त हाथ, भूमि, आकाश, सागर, पर्यन्त दृष्टि, सर्व कार्य साधक, अमरी करण दीपन सर्व गन्ध माल्यान् लेपन से सहित, धूप चरु का क्षत प्रियं, सर्व देवता रहस्य कारणं, प्रलयाग्नि शिखि कांति से युक्त, सर्व का नायक, पद्मासन, अग्नि देवता से पूजित। ऐसा 'म' कार का लक्षण हुआ।

य :—नपुंसक, भूमि, आकाश, दिशा विशेष वाला, सर्व व्यापि, अरूपी, शीघ्र, मन्द गति युक्त, प्रमोद से युक्त, व्यभिचार कर्म प्रिय, सर्व देवता, अग्नि, प्रलयाग्नि, तीव्र ज्योति, सर्व विकल्प वाला, अनन्त मुख, अनन्त भुजा, सर्व गर्भ करता, सर्व लोक प्रिय, हरिण वाहन, वृत्तासन, अंजन के समान वर्ण वाला, महामधुर ध्वनि से युक्त वायव्य देवता से पूजित। ऐसा 'य' कार का लक्षण है।

र :—नपुंसक, सर्व व्यापि, द्वादश सूर्य के समान प्रभा, ज्वालामाल, करोड़ योजन द्युति, सर्व लोक के कर्त्ता, सर्व होम प्रिय, रौद्र शक्ति, स्त्री णाम पंच सायक, पर विद्या का छेदन करने वाला, आत्म कर्म साधन वाला, स्तम्भन, मोहन कर्म का कर्त्ता, जम्बू द्वीप में विस्तीर्ण, भैंस का वाहन, त्रिकोणासन, अग्नि देवता से पूजित। ऐसा 'र' कार का लक्षण है।

ल :— पीला वर्ण, चार हाथ वाला, वज्र, शक्र, शूल, गदा के आयुधों को धारण करने वाला, हाथी का वाहन वाला, स्तम्भन मोहन का कर्त्ता, जम्बू द्वीप में विस्तीर्ण, मंद गति प्रिय, महात्मा, लोकालोक में पूजित, सर्व जीव धारी, चतुरस्त्रासन, पृथ्वी का जय करने वाला, इन्द्रदेव के द्वारा पूजित। ऐसा 'ल' कार का लक्षण है।

व :— श्वेत वर्ण बिन्दु से सहित, मधुर क्षार रस का प्रिय, विकल्प से नपुंसक, मगर का वाहन, पद्मासन, वश्याकर्षण, निर्विष शान्ति करण वरुणादि से पूजित। ऐसा 'व' कार का लक्षण है।

श :— लाल वर्ण दस हजार योजन विस्तीर्ण पांच हजार योजन आयाम, चंदन गंध, मधुर स्वाद, मधुरस प्रिय, चकवा का रूढ़, कुवलयासन, चार भुजा, शंख, चक्र, फल कमल, का आयुध धारी, प्रसन्न दृष्टि, सुभानस, सुगन्ध, धूप प्रिय, लाल वर्ण के हार से शोभिता भरण, जटा मुकुटधारी, वश्या कर्षण, शांतिक, पौष्टिक कर्त्ता, उगते हुए सूर्य के समान, चन्द्रादि देव से पूजित। ऐसा 'श' कार का लक्षण है।

ष :—पुल्लिग, मयूर शिखा के समान वर्ण, दो भुजा, फण, चक्र का आयुध वाला, प्रसन्न दृष्टि, एक लाख योजन विस्तिर्ण, पचास हजार योजन आयाम, अम्लरस प्रिय, शीतल गंध, कछुओं का आसन कछुओं पर बैठा हुआ प्रिय दृष्टि वाला, सर्वाभरण भूषित, स्तंभन, मोहनकारी, इन्द्रादि देवता से पूजित, ऐसा 'ष' कार का लक्षण है।

स :—पुल्लिग, शुक्ल वर्ण, चार भुजा, वज्र, शंख, चक्र, गदा का धारी, एक लाख योजन विस्तीर्ण, मधुर स्वर, मौक्तिक वज्र, वैडूर्य आदि के भूषण से सहित, सुगन्धित माल्यनुलेपन से सहित, सित वस्त्रप्रिय, सर्व कर्म का कर्त्ता, सर्व मंत्र गण से पूजित महा मुकुटधारी, वश्याकर्षण का कर्त्ता, प्रसन्न दृष्टि, हँसवाहन, कुबेर देव से पूजित। ऐसा 'स' कार का लक्षण है।

ह :— नंपुसक सर्व व्यापी, सितवर्ण, सितगंध प्रिय, सित माल्यानुलेपन से सहित, सितांबर प्रिय, सर्व कर्म का कर्त्ता, सर्व मंत्रो का अग्रणी, सर्व देवता से पूजित, महाद्युति से सहित, अचिंत्य गति, मन स्थायी, विजय को प्राप्त, चिंतित मनोरथ विकल्प से रहित, सर्व देव महा कुष्टित्व अतीत अनागत वर्तमान त्रैलोक्य काल दर्शक, सर्वाश्रयादि देवता से पूजित, महाद्युतिमान, ऐसा 'ह' कार का लक्षण है।

क्ष :—पुल्लिग, पीले वर्ण का, जंबुद्वीप ध्याय ध्येय, संख्यात द्वीप समुद्र में व्यापक एक

मुख, मरुत गांभीर्य, आठ भुजा वाला, वज्र पाश, मूशल, भुशंडि, भिंडि, पाल, गदा, शंख, चक्र आयुध धारी, हाथी का वाहन वाला, चतुरस्त्रासन, सर्वाभरण भूषित, जटा मुकुटधारी, सर्व लोक में पूजित, स्तंभन कर्म का कर्त्ता, सुगन्ध माल्य प्रिय, सर्व रक्षाकर, सर्वप्रिय काल ज्ञान में माहेश्वर, सकल मन्त्र प्रिय, रुद्राग्नि देवता से पूजित। ऐसा 'क्ष' कार का लक्षण है।

———

स्वरों और व्यंजनों की शक्ति

मंत्र पाठ

"णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व–साहूणं ॥"

विश्लेषण :

ण् + अ + म् + ओ + अ + र् + इ + ह् + अ + म् + त् + आ + ण् + अ + म्। ण् + अ + म् + ओ + स् + इ + द् + ध् + आ + ण् + अ + म्। ण् + अ + म् + ओ + आ + य् + अ + र् + इ + य् + आ + ण + अ + म्। ण + अ + म् + ओ + उ + व् + अ + ज् + झ् + आ + य् + आ + ण् + अ + म्। ण् + अ + म् + ओ + ल् + आ + ए + स् + अ + व् + व् + अ + स् + आ + ह् + ऊ + ण् + अ + म्।

इस विश्लेषण में से स्वरों को पृथक् किया तो—

अ + ओ + अ + इ + अं + आ + अं + अ + ओ + इ + आ + अं + अ + ओ + आ + अ + इ + आ + अं + अ + ओ + उ + अ + आ + आ + अं + अ + ओ + ओ + ए + अ + अ + आ + ऊ + अं।

(रेखांकित युग्मों के नीचे: औ, अः, ए, ई)

पुनरुक्त स्वरों को निकाल देने के पश्चात् रेखांकित स्वरों को ग्रहण किया तो—
अ आ इ ई उ ऊ [र्] ऋ ॠ [ल्] ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
व्यञ्जन :

ण् + म् + र् + ह् + त + ण् + ण् + म् + स् + द् + ध् + ण् + ण् + म् + य् + र् + य् + ण् + ण् + म् + व् + ज् + झ् + य् + ण् + ण् + म् + ल् + स् + व् + व् + स् + ह + ण्।
(नीचे: घ)

पुनरुक्त व्यंजनों को निकालने के पश्चात्—

ण् + म् + र् + ह + ध् + स् + य् + र् + ल् + व् + ज् + घ् + ह्।

ध्वनि सिद्धान्त के आधार पर वर्गाक्षर वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है।

अतः घ् = कवर्ग, झ् = चवर्ग, ण = टवर्ग, ध् = तवर्ग, म् = पवर्ग, य, र, ल, व, स = श, ष, स, ह।

अत: इस महामन्त्र की समस्त मातृका ध्वनियाँ निम्न प्रकार हुई। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ऋ ऌ ॡ, ए ऐ ओ औ अं अ: क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ्, ट् ठ् ड् ढ ण्, त् थ् द् ध् न्, प् फ् ब् भ् म्, य र् ल् व् श ष् स् ह् !

उपर्युक्त ध्वनियाँ ही मातृका कहलाती है। जयसेन प्रतिष्ठा पाठ में बतलाया गया है–

अकारादिक्षकारान्ता वर्णा प्रोक्तास्तु मातृकाः ।
सृष्टिन्यास स्थितिन्यास-संहृतिन्यासतस्त्रिधाः ॥३७६॥

अर्थात् –अकार से लेकर क्षकार [क+ष+अ] पर्यन्त मातृका वर्ण कहलाते हैं।

इनका तीन प्रकार का क्रम है।—सृष्टि क्रम, स्थिति क्रम और संहार क्रम।

णमोकार मंत्र में मातृका ध्वनियों का तीनों प्रकार का क्रम सन्निविष्ट है। इसी कारण यह मंत्र आत्म कल्याण के साथ लौकिक अभ्युदयों को देने वाला है। अष्ट कर्मों के विनाश करने की भूमिका इसी मन्त्र के द्वारा उत्पन्न की जा सकती है। संहार क्रम कर्म विनाश को प्रगट करता है। तथा सृष्टि क्रम और स्थिति क्रम आत्मानुभूति के साथ लौकिक अभ्युदयों की प्राप्ति में भी सहायक है। इस मन्त्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमें मातृका ध्वनियों के तीनों प्रकार के मन्त्रों की उत्पत्ति हुई है। बीजाक्षरों की निष्पत्ति के सम्बन्ध में बताया गया है "हलो बीजानि चोक्तानि स्वरा: शक्तय ईरिता:" ॥३७७॥ अर्थात् ककार से लेकर हकार पर्यन्त व्यंजन बीजसंज्ञक है और अकारादि स्वर शक्तिरूप है। मन्त्र बीजों की निष्पत्ति बीज और शक्ति के संयोग से होती है।

सारस्वत बीज, माया, बीज, भुवनेश्वरी बीज, पृथिवी बीज, अग्नि बीज, प्रणव बीज मारुत बीज, जल बीज, आकाश बीज, आदि की उत्पत्ति उक्त हल् और अचों के संयोग से हुई है। यों तो बीजाक्षरों का अर्थ बीज कोश एवं बीज व्याकरण द्वारा ही ज्ञात किया जाता है परन्तु यहां पर सामान्य जानकारी के लिए ध्वनियों की शक्ति पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

अ—अव्यय, व्यापक, आत्मा के एकत्व का सूचक, शुद्ध-बुद्ध, ज्ञान रूप शक्ति द्योतक, प्रणव बीज का जनक।

आ – अव्यय शक्ति और बुद्धि का परिचायक, सारस्वत बीज का जनक, माया बीज के साथ कीर्ति धन और आशा का पूरक।

इ—गत्यर्थक, लक्ष्मी प्राप्ति का साधक, कोमल कार्य साधक, कठोर कर्मों का बाधक व ह्रीं बीज का जनक।

ई—अमृत बीज का मूल कार्य साधक, अल्पशक्ति द्योतक, ज्ञान वर्धक, स्तम्भक, मोहक, जृम्भक।

उ—उच्चाटन बीजों का मूल, शक्तिशाली, श्वास, नलिका द्वारा जोर का धक्का देने पर मारक।

ऊ—उच्चाटक और मोहक बीजों का मूल, विशेष शक्ति का परिचायक, कार्य ध्वंस के लिए शक्ति दायक।

ऋ—ऋद्धि बीज, सिद्धि दायक, शुभ कार्य सम्बन्धी बीजों का मूल, कार्य सिद्धि का सूचक।

लृ—सत्य का संचारक, वाणी का ध्वंसक, लक्ष्मी बीज की उत्पत्ति का कारण, आत्म सिद्धि में कारण।

ए–निश्चल पूर्ण, गति सूचक, अरिष्ट निवारण बीजों का सूचक, पोषक और संवर्द्धक।

ऐ—उदात्त, उच्च स्वर का प्रयोग करने पर वशीकरण बीजों का जनक, पोषक और संवर्धक, जल बीज की उत्पत्ति का कारण, सिद्धि प्रद कार्यों का उत्पादक बीज, शासन देवताओं का आव्हान न करने में सहायक, क्लिष्ट और कठोर कार्यों के लिए प्रयुक्त बीजों का मूल, ऋण विद्युत का उत्पादक।

ओ—अनुदात्त—निम्न स्वर की अवस्था में माया बीज का उत्पादक, लक्ष्मी और श्री का पोषक, उदात्त, उच्च स्वर की अवस्था में कठोर कार्यों का उत्पादक बीज, कार्य साधक निर्जरा का हेतु, रमणीय पदार्थों के प्राप्ति के लिए आयुक्त होने वाले बीजों में अग्रणी, अनुस्वरान्त बीजों का सहयोगी।

औ—मारण और उच्चारण सम्बन्धी बीजों में प्रधान, शीघ्र कार्य साधक निरपेक्षी अनेक बीजों का मूल।

अं—स्वतन्त्र शक्ति रहित कर्माभाव के लिए प्रयुक्त ध्यान मन्त्रों में प्रमुख शून्य या अभाव का सूचक, आकाश बीजों का जनक, अनेक मृदुल शान्तियों का उद्घाटक, लक्ष्मी बीजों का मूल।

अः—शान्ति बीजों में प्रधान निरपेक्षा अवस्था में कार्य असाधक सहयोगी का अपेक्षक।

क—शान्ति बीज, प्रभावशाली सुखोत्पादक, सम्मान प्राप्ति की कामना का पूरक, काम बीज का जनक।

ख—आकाश बीज, अभाव कार्यों की सिद्धि के लिए कल्पवृक्ष, उच्चाटन बीजों का जनक।

ग—पृथक करने वाले कार्यों का साधक, प्रणव और माया बीज के साथ कार्य सहायक।

घ—स्तम्भक बीज, स्तम्भन कार्यों का साधक, विघ्न विघातक, मारण और मोहक बीजों का जनक।

ङ—शत्रु का विध्वसंक, स्वर मातृका बीजों के सहयोगानुसार फलोत्पादक विध्वसंक बीज जनक ।

च—अंगहीन खण्ड शक्ति द्योतक स्वर मातृका बीजों के अनुसार फलोत्पादक-उच्चाटन बीज का जनक ।

छ—छाया सूचक, माया बीज का सहयोगी बन्धनकारक, आप बीज का जनक, शक्ति का विध्वंसक, पर मृदु कार्यों का साधक ।

ज—नूतन कार्यों का साधक, आधि व्याधि विनाशक, शक्ति का संचारक, श्री बीजों का जनक ।

झ—स्तम्भक और मोहक, बीजों का जनक, कार्य साधक, साधना का अवरोध माया बीज का जनक ।

ट—बह्नि बीज, आग्नेय कार्यों का प्रसारक और निस्तारक, अग्नि तत्व युक्त विध्वंसक कार्यों का साधक ।

ठ—अशुभ सूचक बीजों का जनक, क्लिष्ट और कठोर कार्यों का साधक, मृदुल कार्यों का विनाशक, रोदन कर्त्ता, अशान्ति का जनक साक्षेप होने पर द्विगुणित शक्ति का विनाशक, वह्नि बीज ।

ड—शासन देवताओं की शक्ति का प्रस्फोटक, निकृष्ट कार्यों की सिद्धि के लिए अमोघ संयोग से पञ्चतत्वरूप बीजों का जनक, निकृष्ट आचार-विचार द्वारा साफल्योत्पादक अचेतन क्रिया साधक ।

ढ—निश्चल माया बीज का जनक, मारण बीजों में प्रधान, शान्ति का विरोधी, शान्ति वर्धक ।

ण—शान्ति सूचक, आकाश बीजों में प्रधान, ध्वंसक बीजों का जनक, शक्ति का स्फोटक ।

त—आकर्षक बीज, शक्ति का आविष्कारक, कार्य साधक, सारस्वत बीज के साथ सर्व सिद्धिदायक ।

थ—मंगल साधक, लक्ष्मी बीजों का सहयोगी, स्वर मातृकाओं के साथ मिलने पर मोहक ।

द—कर्म नाश के लिए प्रधान बीज आत्म शक्ति का प्रस्फोटक वशीकरण बीजों का जनक ।

ध—श्रीं और क्लीं बीजों का सहायक, सहयोगी के समान फलदाता, माया बीजों का जनक ।

न—आत्म सिद्धि का सूचक—जल तत्व का स्रष्टा, मृदुतर कार्यों का साधक, हितैषी आत्म नियन्ता ।

प—परमात्मा का दर्शक जलत्व के प्राधान्य से युक्त समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए ग्राह्य ।

फ—वायु और जल तत्व युक्त महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ग्राह्य स्वर और रेफ युक्त होने पर विध्वंसक, विघ्न विघातक, 'फट्' की ध्वनि से युक्त होने पर उच्चाटक कठोर कार्य साधक ।

ब—अनुस्वार युक्त होने पर समस्त प्रकार के विघ्नों का विघातक और निरोधक, सिद्धि सूचक ।

भ—साधक विशेषतः मारण और उच्चाटन के लिए उपयोगी, सात्विक कार्यों का निरोधक, परिणत कार्यों का तत्काल साधक, साधना में नाना प्रकार से विघ्नोत्पादक, कल्याण से दूर, कटु मधु वर्णों से मिश्रित होने पर अनेक प्रकार के कार्यों का साधक, लक्ष्मी बीजों का विरोधी ।

म—सिद्धि दायक, लौकिक और पारलौकिक सिद्धियों का प्रदाता सन्तान की प्राप्ति में सहायक ।

य—शान्ति का साधक, सात्विक साधना की सिद्धि का कारण, महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए उपयोगी, मित्र प्राप्ति या किसी अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए अत्यन्त उपयोगी ध्यान का साधक ।

र—अग्नि बीज, कार्य साधक समस्त प्रधान बीजों का जनक, शक्ति का प्रस्फोटक और वर्द्धक ।

ल—लक्ष्मी प्राप्ति में सहयोग श्री बीजों का निकटत, सहयोगी और सगोत्री कल्याण सूचक ।

व—सिद्धि दायक आकर्षक ह, र और अनुस्वार के संयोग से चमत्कारों का उत्पादक, सारस्वत बीज, भूत–पिशाच–शाकिनी बाधा का विनाशक, रोगहर्ता लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिए अनुस्वार मातृका सहयोगापेक्षी, मंगल साधक, विपत्तियों का रोधक और स्तम्भक ।

श—निरर्थक सामान्य बीजों का जनक या हेतु उपेक्षा धर्म युक्त शान्ति का पोषक ।

ष—आव्हान बीजों का जनक, सिद्धि दायक, अग्नि स्तम्भक, जल स्तम्भक, सापेक्ष ध्वनि ग्राहक, सहयोग द्वारा विलक्षण कार्य साधक, आत्मोन्नति से शून्य, रुद्र बीज का जनक, भयंकर और बीभत्स कार्य के लिए प्रयुक्त होने पर साधक ।

स—सर्व समीहित साधक, सभी प्रकार के बीजों में प्रयोग योग्य शान्ति के लिए परम आवश्यक, पौष्टिक कार्यों के लिए परम उपयोगी, ज्ञानावरणीय–दर्शनावरणीय आदि कर्मों का विनाशक, क्लीं बीज का सहयोगी, काम बीज का उत्पादक आत्म सूचक और दर्शक ।

ह– शान्ति पौष्टिक और माङ्गलिक कार्यों का उत्पादक, साधन के लिए परमोपयोगी स्वतन्त्र और सहयोगापेक्षी, लक्ष्मी की उत्पत्ति में साधक, सन्तान प्राप्ति के लिए अनुस्वार युक्त होने पर जाप में सहायक, आकाश तत्व युक्त कर्म नाशक सभी प्रकार के बीजों का जनक।

मन्त्र निर्माण के लिये निम्नांकित बीजाक्षरों की आवश्यकता

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रः ह्रा ह्सः क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं द्रः क्ष्वीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रं फट्। वषट्। संवौषट्। घे घे। ठः ठः खः ह्म्ल्व्र्यूँ श्रं त्रं यं क्ष्ं तं थं पं आदि बीजाक्षर होते है।

बीजाक्षरों की उत्पत्ति

बीजाक्षरों की उत्पत्ति णमोकार मन्त्र से ही हुई है। कारण सर्व मातृका ध्वनि इसी मन्त्र से उदभूत है। इन सब मे प्रधान "ॐ" बीज है। यह आत्म वाचक है, मूल भूत है। इसको तेजो बीज, काम बीज और भाव बीज मानते हैं। प्रणव वाचक पंच परमेष्ठी वाचक होने से 'ॐ' समस्त मन्त्रों का सार तत्व है।

श्री………………कीर्त्ति वाचक
ह्रीं ……………कल्याण
श्रीं………………शान्ति
ह्रं………………मंगल
ॐ………………सुख
ह्रं………………विद्वेष रोष वाचक

प्रौं प्रीं……………स्तम्भन
क्लीं………………लक्ष्मी प्राप्ति वाचक
सर्व तीर्थंकरों के नाम…… " ……मंगलवाचक
क्ष्वीं………………योग

यक्ष–यक्षणियों के नाम………कीर्त्ति और प्रीति वाचक।

मन्त्र शास्त्र के बीजों का विवेचन करने पर आचार्य ने उनके रूपों का निरूपण करते हुये बताया है कि—

अ आ ऋ ह श य क ख ग घ ङ	यह वर्ण वायु संज्ञक है।
इ ई ऋ च छ ज झ ञ क्ष र य	यह वर्ण अग्नि तत्व संज्ञक है।
लृ व ल उ ऊ त ट द ड ण	यह वर्ण पृथ्वी तत्व संज्ञक है।
ए ऐ थ ध ठ ढ ष न स	यह वर्ण जल तत्व संज्ञक है।
ओ औ अं अः प फ ब भ म	यह वर्ण आकाश तत्व संज्ञक है।

वर्ण के लिंग

अ उ ऊ ऐ ओ औ अं, क ख ग घ, ट ठ ड ढ, त थ, प फ ब, ज झ, य स ष ल क्ष—इन वर्णों का लिंग पुल्लिग है। (संज्ञक है)

आ ई च छ ल व ·················इन वर्णों का लिंग स्त्री लिंग है। (संज्ञक है)

इ ऋ ॠ ऌ ॡ ए अः ध भ म र ह द ज ण ङ न, इनका नपुंसक लिंग है।

ध्वनि (उच्चार) के वर्ण, मन्त्र शास्त्रानुसार

स्वर और ऊष्म ध्वनि	ब्राह्मण वर्ण संज्ञक
अन्तस्थ और क वर्ग ध्वनि	क्षत्रिय वर्ण संज्ञक
च वर्ग और प वर्ग ध्वनि	वैश्य वर्ण संज्ञक
ट वर्ग त वर्ग ध्वनि	शूद्र वर्ण संज्ञक
वश्य आकर्षण और उच्चाटन में	हूं का प्रयोग
मारण में	फट् का प्रयोग
स्तम्भन, विद्वेषण और मोहन में	नमः का प्रयोग
शान्ति और पौष्टिक में	वषट् का प्रयोग

मन्त्र के आखिर में 'स्वाहा' शब्द रहता है। यह शब्द पाप नाशक, मङ्गलकारक तथा आत्मा की आन्तरिक शान्ति दृढ़ करने वाला है। मन्त्र को शक्तिशाली करने वाले अन्तिम ध्वनि में।

स्वाहा—स्त्रीलिंग
वषट्, फट्, स्वधा—पुल्लिग
नमः नपुंसक लिंग

} उन वर्णों के इस प्रकार लिंग माने गये हैं।

बीजाक्षरों का वर्णन

ॐ, प्रणव, ध्रुवं ब्रह्मबीजं, तेजोबीजं, वा ॐ तेजोबीजं,

ऐं—वाग्भव बीजं, हं—गगन बीजं,

लं—काम बीजं,
क्रीं—शक्ति बीजं,
हं सः—विषापहार बीजं,
क्ष्वीं—पृथ्वी बीजं,
स्वा—वायु बीजं,
हा—आकाश बीजं,
ह्रीं—माया बीजं,
क्रौं—अंकुश बीजं,
जं—पाश बीजं,
फट्—विसर्जन बीजम्, चालनं बीजम्,
वौषट् पूजा-ग्रहणं—आकर्षणं बीजम्,
संवौषट्—आमन्त्रणं बीजम्,
ब्लूं—द्रावणं,
क्लूं—आकर्षणं,
ग्लौं—स्तंभनं,
ह्रीं—महाशक्ति,
वषट्—आह्वाननम्,
रं—जलनम्,
क्ष्वीं—विषापहार बीजम्,
उ—चन्द्र बीजम्
घे घे—ग्रहण बीजम्,
वं विद्यो—विद्वेषणं बीजम्,
ट्रीं ट्रीं क्लीं ब्लूं सः=रोष बीजम् वा पंच बाणीद्र,
स्वाहा—शांतिकं मोहकं वा—
स्वधा—पौष्टिकं मोहकं वा
नम—शोधन बीजम्

ह्रूँ—ज्ञान बीजं,
य—विसर्जन बीजं उच्चारणं,
पं—वायु बीजं,
जुं—विद्वेषण बीजं,
ह्वीं—अमृत बीजं,
क्ष्वीं—भोग बीजं,
ह्रीं—ऋद्धि सिद्धि बीजं,
ह्रां—सर्व शान्ति बीजम्,
ह्रीं—सर्व शान्ति बीजम्,
ह्रूँ—सर्व शान्ति बीजम्,
ह्रौं—सर्व शान्ति बीजम्,
ह्रः—सर्व शान्ति बीजम्,
हे—दण्ड बीजम्,
ख—स्वादन बीजम्,
क्रौं—महाशक्ति बीजम्,
हल्व्यूं—पिंड बीजम्,
ह्रूं—मंगल सुख बीजम्,
श्रीं—कीर्ति बीजम्, वा कल्याण बीजम्
क्लीं—धन बीजम्, कुबेर बीजम्,
तीर्थङ्कर नामाक्षर—शांति, मांगल्य, कल्याण व विघ्नविनाशक बीजम्,
अ—आकाश या धान्य बीजम्
आ—सुख बीजम् तेजो बीजम्
ई—गुण बीजम् तेजो बीजम्
वा उ—वाय बीजम्

क्षां क्षीं क्षुं क्षें क्षैं क्षौं क्षौं क्षं क्षः—रक्षा, सर्व कल्याण, अथवा सर्व शुद्धि बीज है।

तं—थं—दं— कालुष्य नाशकं, मङ्गल वर्धकं, सुख कारकं मङ्गल

वं ··· ··········द्रवण बीजम् ।

यं·········· ··· ····रक्षा बीजम् ।

मं··················मङ्गल बीजम् ।

क्षं·················शक्ति बीजम् ।

सं·················शोधन बीजम् ।

मन्त्र सिद्धि के लिये जैन शास्त्रों में ४ प्रकार के आसन कहे गये हैं—

(१) श्मशान पीठ ।

(२) शव पीठ ।

(३) अरण्य पीठ ।

(४) श्यामा पीठ ।

णमोकार मन्त्र में से ही बीजाक्षरों की उत्पत्ति हुई है । जैसे—

(ॐ) समस्त णमोकार मन्त्रों से

(ह्रीं) की उत्पत्ति णमोकार मन्त्र के प्रथम चरण से—

श्रीं	,,	,,	,,	,,	द्वितीय चरण से
क्षीं क्ष्वीं	,,	,,	,,	,,	प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से
क्लीं	,,	,,	,,	,,	प्रथम पाद में से प्रतिपादित
द्रां द्रीं	,,	,,	,,	,,	चतुर्थ और पंचम चरण से
हं	,,	,,	,,	,,	प्रथम चरण से
हँ	,,	,,	,,	,,	बीज है तीर्थङ्करों के यक्षिणी द्वारा अत्यन्त शक्तिशाली और सकल मन्त्रों में व्याप्त है ।
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः			,,	,,	प्रथम धरणी से उत्पन्न हुए हैं ।
क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः			,,	,,	प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण से उत्पन्न हुये हैं ।

बीजाक्षर मन्त्र

(१) ॐ :—इसे 'प्रणव' नाम से ही प्रसिद्धि है। अरिहन्त अशरीर (सिद्ध) आचार्य, उपाध्याय, मुनि (साधु) इनके पहले अक्षर लेकर सन्ध्यक्षर ॐ बना है। यह परमेष्ठीवाचक हैं।

(२) ह्रँ :—यह मन्त्र राज, मन्त्राधिप, इस नाम से प्रसिद्ध है। सब तत्वों का नायक बीजाक्षर तत्व है। इसे कोई बुद्धि तत्व, कोई हरि, कोई ब्रह्म, महेश्वर या शिव तत्व या कोई सार्व, सर्वव्यापी या ईशान तत्व इत्यादि अनेक नामों से पुकारता है। इसे 'व्योम बीज' भी कहते हैं।

(३) ह्रीं :—मन्त्र का नाम 'माया वर्ण', माया बीज और शक्ति बीज ही कहते हैं।

(४) क्ष्वीं :—मन्त्र का नाम सकल सिद्ध विद्या या महा विद्या है, इसे 'अमृत बीज' ही कहते हैं।

(५) श्रीं :—मन्त्र का नाम छिन्न मस्तक महावीज है। इसे 'लक्ष्मी बीज' ही कहते हैं।

(६) क्लीं :—मन्त्र का नाम काम बीज है।

(७) ऐं :—मन्त्र का नाम 'काम बीज' और 'विद्या बीज' ही है।

(८) 'अ' :

(९) क्ष्वीं :—मन्त्र का नाम क्षिति बीज है।

(१०) स्वा :—मन्त्र का नाम वायु बीज है।

(११) "ह्रां" (१२) 'ह्रूं' (१३) 'ह्रौं' (१४) 'ह्रः'

(१५) 'क्लं' (१६) 'क्रौं' (१७) 'श्री' (१८) 'श्रू'

(१९) 'क्षां' (२०) 'क्षीं' (२१) 'क्षं' (२२) 'क्षः'

युग्माक्षरी

(१) अर्हं (२) सिद्ध (३) ॐ ह्रीं (४) आ, सा

त्रयाक्षरी

(१) अर्हंत (२) ॐ अर्हं (३) ॐ सिद्ध

चतुराक्षरी

(१) अरहंत या अरिहंत (२) ॐ सिद्धेभ्यः (३) असिसाहु

पंचाक्षरी

(१) असि आउसा (२) ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः (३) अर्हंत सिद्ध

(४) णमो सिद्धाणं (५) नमो सिद्धेभ्य: (६) नमो अर्हते
(७) नमो अर्हद्भ्य: (८) ॐ आचार्येभ्य:

षडक्षरी मन्त्र

(१) अरहंत सिद्ध (२) नमो अरहते (३) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र:
(४) ॐ नमो अर्हते (५) ॐ नमो अर्हद्भ्य: (६) ह्रीं ॐ ॐ ह्रीं हं स:
(७) ॐ नम: सिद्धेभ्य (८) अरहंत सिसा

सप्ताक्षरी

(१) णमो अरहंताणं (२) ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नम:
(३) णमो आयरियाणं (४) णमो उवज्झायाणं
(५) नमो उपाध्यायेभ्य: (६) नम: सर्व सिद्धेभ्य:
(७) ॐ श्रीं जिनाय नम:

अष्टाक्षरी

(१) ॐ णमो अरहंताणं (२) ॐ णमो आइरियाणं
(३) ॐ नमो उपाध्यायेभ्य: (४) ॐ णमो उवज्झायाणं

नवाक्षरी

(१) णमो लोए सव्वसाहूणं (२) अरहंत सिद्धेभ्यो नम:

दशाक्षरी

(१) ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं (२) ॐ अरहंत सिद्धेभ्यो नम:

एकादशाक्षरी

(१) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: असिआउसा
(२) ॐ श्रीं अरहंत सिद्धेभ्यो नम:

द्वादशाक्षरी

(१) ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: असि आउसा नम:
(२) ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: असि आउसा स्वाहा
(३) अर्हं सिद्ध सयोग केवलि स्वाहा

त्रयोदशाक्षरी मन्त्र

(१) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा नम:

(२) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा स्वाहा

(३) ॐ अर्हं सिद्ध केवलि सयोग स्वाहा

चतुर्दशाक्षरी

(१) ॐ ह्रीं स्वर्हं नमो नमोऽर्हंताणं ह्रीं नमः

(२) श्रीमद् वृषभादि वर्धमानां तेभ्यो नमः

पंचदशाक्षरी

(१) ॐ श्रीमद् वृषभादि वर्धमानान्तेभ्यो नमः।

षोडाक्षरी

(१) अर्हं सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यों नमः।

द्राविंशत्यक्षरी

(१) ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हंसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

त्रयोविंशत्यक्षरी

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि–आ–उसा अर्हं सर्व सर्व शान्ति कुरु: कुरु स्वाहा।

पंचविंशत्यक्षरी

ॐ जोग्गे मग्गे तच्चे भूदे भव्वे भविस्से अक्खे पक्खे जिण परिस्से स्वाहा।

एकत्रिंशत्यक्षरी

ॐ सम्यकदर्शनाय नमः सम्यकज्ञानाय नमः सम्यकचारित्राय नमः सम्यक् तपसे नमः।

सत्ताईस अक्षरी मन्त्र ऋषि मण्डल

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः ९ बीजाक्षर

असि आउसा सम्यकदर्शन ज्ञान चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः १८ शुद्धाक्षर
२७

णमोकार मन्त्र

(१) पंच त्रिशंत्यक्षरी ३५ श्री णमोकार मन्त्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥ १ ॥

एक सप्तत्यक्षरी ७१

(१) ॐ अर्हन्मुख कमलवासिनि पापात्मभयंकरि श्रुत ज्ञान ज्वाला सहस्त्र – प्रज्वलिते सरस्वति ममपापं हन हन दह दह क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरवर धवले अमृत सम्भवे वं वं हूं हूं स्वाहा ।

षट् सप्तत्यक्षरी ७६

१ ॐ नमो अर्हन्ते केवलिने परमयोगिने अनंत शुद्धी परिणाम । विस्फुरु दुरु शुक्लध्यानाग्नि निर्दग्धं कर्म बीजाय प्राप्तानंत-चतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय मंगलाय वरदाय, अष्टादश-दोषरहिताय स्वाहा ।

२४ शत सप्त विंशत्यक्षरी १२७

चत्तारि मंगलं, अरहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहु लोगुत्तमा केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरहन्ते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ।

इस प्रकार मंत्र है जिसके यथाविध जपने से इह परलोक सुख की प्राप्ति आत्म सिद्धि कार्य सिद्धि के लिए उपयुक्त है ।

केवलि विद्या :—

ॐ ह्रीं अर्हणमो अरिहंताणं ह्रीं नमः ।। व
ॐ णमो अरिहंताणं श्रीमद्वृषभादि वर्धमानान्तिमेभ्यो नमः ।।
या श्रीमद्वृषभादि वर्धमानान्तिमेभ्यो नमः ।।

विविधपिशाची विद्या :—

ॐ णमो अरिहंताणं ॐ ।। **इति कर्ण पिशाची ।।**
ॐ णमो आयरियाणं ।। **शकुन पिशाची ।।**
ॐ णमो सिद्धाणं ।। **इति सर्व कर्म पिशाची ।।**

फलम् :—इति भेदोऽङ्ग पठनो द्युक्त मानसो (सश्च) मुनेः ।।
सिद्धान्त -- ज्ञानं जायते गणितादिषु ।।

वज्र पञ्जरम् :—ॐ हृदि । ह्रीं मुखे । 'णमो' नाभौ ।

'अरि' वामे । 'हंता' वामे । दक्षिणे पं ताहं शिरासि । ॐ दक्षिणे बाहौ । ह्रीं वामे बाहौ । णमो कवंत्तम । सिद्धाणं, अरनाय फट् स्वाहा ।।

फलम् :—विपरीत कार्येऽङ्ग न्यासः शोभन कार्ये वज्र पञ्जर स्मरेत तेन रक्षा ।

अपराजित विद्या : ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रीं फट् स्वाहा ।।

फलम् : – इत्येषोऽनादि सिद्धोऽयं मंत्र – स्याच्चित्तचित्रकृत इत्येषा पंचाङ्गी विद्याध्याता कर्म क्षयं कुरुते ।।

परमेष्ठी बीज मंत्र :—ॐ तत्कथमिति चेत अरिहंता, असरीरा आयरिया तह उवज्झाया मुणिणो पढमक्ख (र) णिप्पण्णो (ण्णो) ॐ कारोयं पञ्च परमेष्ठी ।। **अकसेवो** [ ] **इति** जैनेन्द्र सूत्रेण अ + अ इत्यस्य दीर्घः अ आ पुनरपि दीर्घ उ तस्य पररूप गुणे कृते ओमिति जाते पुनरपि मोदर्व चन्द्रः [ॐ] इति सुत्रेणानुसारेणाऽनुस्वारे **सति सिद्ध** पञ्चाङ्ग मंत्र निष्पद्यते ।।

प्रथम रक्षा मन्त्र :—ॐ **णमो** अरहंताणं शिखायाम् ।

यह पढ़कर सारी चोटी के ऊपर दाहिना हाथ फेरे ।

ॐ णमो सिद्धाणं—मुखावरणे ।

यह पढ़कर सारे मुख पर हाथ **फेरे ।**

ॐ णमो **आयरियाणं—**अङ्ग रक्षा ।

यह पढ़कर सारे अंग पर हाथ फेरे ।

ॐ णमो उवज्झायाणं –आयुधं

यह पढ़कर **सामने** हाथ से जैसे कोई किसी को तलवार दिखावे, ऐसे दिखावे ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूण – मौर्वी ।

यह पढ़कर अपने नीचे **जमीन पर हाथ** लगाकर और जरा हिलकर जो आसन बिछा हुआ है, उसके इधर-उधर यह ख्याल करे कि मैं वज्र शिला पर बैठा हूँ, नीचे से बाधा नहीं हो सकती ।

सव्वपावप्पणासणो—वज्रमय प्राकाराश्चतुर्दिक्षु ।

यह पढ़कर **अपने** चारो तरफ अंगुली से कुण्डल सा खींचे यह ख्याल कर ले कि **यह मेरे** चारो और **वज्रमय** कोट है ।

मंगलाणं च सव्वेसिं—शिखादि सर्वतः प्रखातिका ।

यह पढ़कर **यह** खयाल करे कि कोट के परे खाई है ।

पढमंहवई मंगलं – प्राकारोपरि वज्रमय टंकाणिकम् ।

इति महा रक्षा—**सर्वोपद्रवविद्राविणी** ।

यह पढ़कर वह जो चारों तरफ कुण्डली खीचकर वज्रमय कोट रचा है उसके ऊपर चारों तरफ चुटकी बजावे । इसका मतलब है कि जो उपद्रव करने वाले हैं वे सब चले जावें । मैं वज्रमयी कोट के अन्दर व वज्रशिला पर बैठा हूँ । इस रक्षा मन्त्र के जपने से जाप

करते हुए के ध्यान में सांप, शेर, बिच्छू, व्यन्तर, देव, देवी आदि कोई भी विघ्न नहीं कर सकते। मन्त्र सिद्ध करने के समय जो देव-देवी डरावना रूप धारण कर आवेगा तो भी उस वज्रमयी कोट के अन्दर नहीं आ सकेगा। अगर शेर वगैरह पास से गुजरेगा तो भी आप तो उसे देख सकेंगे किन्तु वह जप करने वाले को मायामय वज्र कोट की ओर होने से नहीं देख सकेगा, जपने वाले को अगर कोई तीर-तलवार वगैरह से घात करेगा तो उस स्थान का रक्षक देव उसको वहीं कील देगा। वह इस रक्षा मन्त्र को जपने वाले का घात नहीं कर सकेगा। अनेक मुनि श्रावकों के घातक इस रक्षामन्त्र के स्मरण से कीले हैं, और उनकी रक्षा हुई है।

नोट—जो बगैर रक्षा मन्त्र से मन्त्र सिद्ध करने बैठते हैं वे या तो व्यन्तरों आदि की विक्रिया से डर कर मन्त्र जपना छोड़ देते हैं या पागल हो जाते हैं। इसलिए मन्त्र साधन करने से पहले रक्षा मन्त्र जप लेना चाहिए। इस मन्त्र से हाथ फेरने की क्रिया सिर्फ गृहस्थ के वास्ते है। मुनि के तो मन से ही संकल्प होता है।

द्वितीय रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं ह्रां हृदयं रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा

ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा

ॐ णमो आयरियाणं ह्रूं शिखां रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रैं एहि एहि भगवति वज्रकवच वज्रिणि रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः क्षिप्रं साधय साधय वज्रहस्ते शूलिनि, दुष्टान् रक्ष रक्ष हुँ फट् स्वाहा।

जब कभी अचानक कहीं अपने ऊपर उपद्रव आ जाए, खाते पीते सफर में जाते, सोते बैठते तो फौरन इस मन्त्र का स्मरण करे, यह मन्त्र बार बार पढ़ना शुरू करे। सब उपद्रव नष्ट हो जावे, उपसर्ग दूर हो, खतरे से जान माल बचे।

तृतीय रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। ऐसो पंच णमोकारो सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलम ॐ ह्रूं फट स्वाहा।

चतुर्थ रक्षा मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं नाभौ—यह पद नाभि में धारिए

ॐ णमो सिद्धाणं हृदि—यह पद हृदय में धारिए

ॐ णमो आयरियाणं कण्ठे—यह पद कण्ठ में धारिए

ॐ णमो उवज्झायाणं मुखे—यह पद मुख में धारिए

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं मस्तके यह पद मस्तक में धारिए

सर्वांगे मां रक्ष रक्ष मातंगिनि स्वाहा ।

यह भी रक्षा मन्त्र है । जो अङ्ग जिसके सम्मुख लिखा है, वह मन्त्र का चरण पढ़कर उस अङ्ग का मन में चिन्तवन करे जैसे वह उस में रखा हो ऐसा समझें। यह मन्त्र इस प्रकार १०८ बार पढ़े, रक्षा होगी ।

रोग निवारण मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ णमो भगवदि सुयदे वयाणबार संग एव यण । जणणीयें सरऊ

ॐ णमो भगवदिए सुय देव याए सव्व सुए मयाएणीय सर स्सइए सव्व वाइणि सव्ण वणे ।

सदु ए सव्ववाइणि सवणवणो ।

ॐ अवतर अवतर देवी मम शरीरं प्रविश पुछं तस्स पविस सव्व जणमय हरीये :

अरहंत सिरिए परमे सरीए स्वाहा ।

यह मन्त्र १०८ बार लिखकर रोगी के हाथ में रखें, सर्व रोग जाँए ।

मस्तक का दर्द दूर करने का मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्भायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ णमो णाणाय, ॐ णमो दंसणाय, ॐ णमो चरिताय, ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवश्यंकरी ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—एक कटोरी में जल लेकर यह मन्त्र उस जल पर पढ़कर, उस जल को जिसके मस्तक में पीड़ा हो, आंधाशीशी हो उसे पिलावे तो उसके मस्तक के सर्व रोग जायें ।

ताप निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ।

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं ।

ॐ ह्रीँ णमो सिद्धाणं ।

ॐ ह्रीँ णमो अरहंताणं ।

जब यह मन्त्र पढ़े, पाँचवें चरण के अन्त में "ऐं ह्रीँ" पढ़ता जावे, एक सफेद शुद्ध चद्दर लेकर उसके एक कौने पर यह मन्त्र पढ़ता जावे और गाँठ देने की तरह कोणे को मोड़ता जावे, १०८ बार उस कोणे पर मन्त्र पढ़कर उसमें गाँठ देवे, वह चद्दर रोगी को उढ़ा देवे। गाँठ शिर की तरफ रहे, रोगी का बुखार उतरे। जिसको दूसरे या चोथे दिन बुखार आता है। इससे हर प्रकार का बुखार चला जाता है। जब तक बुखार न उतरे, रोगी इस चद्दर को ओढ़े रहे।

बन्दीखाना निवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं ज्म्ल्व्यूँ नमः ।

ॐ णमो सिद्धाणं झ्म्ल्व्यूँ नमः ।

ॐ णमो आयरियाणं स्म्ल्व्यूँ नमः ।

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्म्ल्व्यूँ नमः ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं, क्ष्म्ल्व्यूँ नमः ।

(यहाँ नाम लेकर) अमुकस्य बन्दिमोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—यह प्रयोग है—जिस किसी का कोई कुटुम्बी या रिश्तेदार या मित्र जेल हवालात में

बन्दीखाना निवारण द्वितीय मन्त्र

णंहूसावबूसएलो मोण ।

णंयाक्षाज्यउ मोण ।

णंयारिइक्षा मोण ।

णंद्धासि मोण ।

णंताहंरअ मोण ।

विधि :—चौथ, चौदस या शनिश्चर को धूल की चुटकी लेकर मन्त्र पढ़ता हुआ तीन बार फूँक मारकर जिस पर डाले सो वश में होय। यह मन्त्र नवकार मन्त्र के ३५ अक्षर उल्टे लिखने से बनता है, जब समय मिले, और जितनी देर तक इस मन्त्र का जाप करे। नित्य सात दिन तथा ग्यारह दिन तथा इक्कीस दिन तक जपे, अगर हो सके तो इसका सवा लक्ष जाप करे। इससे अधिक जितने हो सके करे, तो तुरन्त ही बन्दी छूट जावे। कैद में हो वह तो यह मन्त्र जपे, और इसके हितपरिवारी अदालत में मुकदमा की अपील वगैरह करे तो तुरन्त छूटे।

मछली बचावन बन्दीखाना निवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ।

हुलु हुलु कुलु कुलु चुलु चुलु मुलु मुलु स्वाहा ॥

विधि :—यह मन्त्र दो कार्यों की सिद्धि में आता है :—

१—यह मन्त्र कंकरी के ऊपर पढ़कर मुँह से फूँक देता जावे। इस प्रकार इक्कीस बार पढ़कर फिर उस कङ्कर को किसी हिकमत से जाल पर मारे, जो मछली पकड़ रहा हो तो उसके जाल में एक भी मछली न फँसे, सब बचें।

२—यह मन्त्र जितनी देर तक जप सके प्रतिदिन जपे, सवा लक्ष संख्या पूर्ण होने पर बल्कि उससे पहले ही बन्दी, बन्दीखाने से छूटे। अगर मुमकिन हो सके तो मन्त्र जपते समय धूप जलाकर आगे रखे, मन्त्र का फल तुरन्त हो, बन्दीखाने से तुरन्त छूटे।

अग्नि निवारण मन्त्र

ॐ अर्हं असि आ उ सा णमो अरहंताणं नमः ।

विधि :—एक लोटे में पवित्र शुद्ध जल लेकर उसमें से हाथ की चुल्लू में जल लेकर यह मन्त्र इक्कीस बार पढ़े। जहाँ अग्नि लग गई हो उस स्थान पर इस जल का छींटा दे। पहले जो चुल्लू में जल है जिस पर इक्कीस बार मन्त्र पढ़ा है, उसकी लकीर खींचें, उस लकीर से आगे अग्नि नहीं बढ़े और अग्नि शान्त हो जाये। इस मन्त्र को १०८ बार अपने मन में जपे तो एक उपवास का फल प्राप्त हो।

चोर, बैरी निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़कर चारों दिशा में फूँक दो, तुरन्त चोर, बैरी नाशे (अर्थात् जिस दिशा में चोर, बैरी हो उस दिशा में फूँक दीजे यानि यह मन्त्र पढ़ता जावे और उस तरफ फूँक देता जावे तो तुरन्त चोर, बैरी भागे ।

नोट :—पहले इस मन्त्र का सवा लक्ष जप करे और इसे सिद्ध करे, फिर जरूरत पर थोड़ा स्मरण करने में कार्य सिद्ध होगा । किन्तु पहले थोड़ा भी नियम से जपकर जरूर सिद्ध करले, जिससे जरूरत पड़ने पर फौरन काम आवे ।

चोर नाशन मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं धणु धणु महाधणु महाधणु स्वाहा ।

विधि :—यह मन्त्र पहले सवा लक्ष जप कर सिद्ध करे, बाद पर मन्त्र के अक्षरों को पढ़ता जावे और उन अक्षरों को अपने ललाट पर बतौर लिखने के हरफ-ब-हरफ खयाल करता जावे और मन्त्र जपता जावे, तो तुरन्त चोर भाग जावे अथवा मन्त्र को बांये हाथ में लिखकर, मुट्ठी बाँधकर ऐसा खयाल करे कि, मेरे बायें हाथ में धनुष है और मन्त्र जपता जावे तो चोर तुरन्त भाग जावे ।

दुश्मन तथा भूत निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं अ-सि-आ-उ-सा सर्व दुष्टान् स्तम्भय-स्तम्भय मोहय-मोहय अन्धय-अन्धय मूकवत्कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः ।

इस मन्त्र की दो क्रिया हैं :—

१—यदि किसी के ऊपर दुश्मन हमला करने आवे तो तुरन्त उसके मुकाबले को जावे । यह मन्त्र १०८ वार मुट्ठी बाँध कर जप करता जावे, दुश्मन भागे ।

२ - यदि किसी बालक या स्त्री को कोई भूत-पिशाच, चुड़ैल, डायन सतावे तो यह मन्त्र १०८ वार मुट्ठी बाँध कर पढ़कर उसे झाड़े । सुबह-शाम दोनों समय झाड़ा करे तो भूतादिक जावे, बालक स्त्री अच्छे हो जावें ।

नोट :- इस मन्त्र के नीचे के चरण में,—ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः में दुष्टान् के स्थान पर दुश्मन का नाम जानता हो तो ले या भूतादिक कहे ।

वाद-जीतन मन्त्र

ॐ ह्रूं सः ॐ अर्हं ऐं श्रीं अ-सि-आ उ सा नमः ।

विधि :—पहले यह मन्त्र पढ़कर एक लक्ष तथा सवा लक्ष जप सिद्ध कर लेवे, फिर जहाँ वाद-विवाद में जाना हो वहाँ यह मन्त्र इक्कीस बार पढ़ कर जावे तो वाद-विवाद में आप जीते, जय पावे ।

विद्या-प्राप्ति, वाद जीतन मन्त्र

ॐ ह्रीं अ-सि-आ-उ-सा नमो अर्हं वद वद वाग् वादिनी सत्य वादिनि वद वद मम वक्त्रे व्यक्तः वाचयाह्रीं सत्यं—ब्रूहि सत्यं ब्रूहि सत्यं वद सत्यं वद अस्खलित प्रचारं सदैव मनुजा सुरसदसि ह्रीं अर्हं अ-सि-आ-उ-सा नमः ।

विधि :—यह मन्त्र एक लक्ष बार जपे तो सर्व विद्या आवे, और जहाँ वाद-विवाद करना पड़ जावे, तो वहाँ वाद के झगड़े में बोल ऊपर होय, जीत पावे ।

परदेश लाभ मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो भगवइए चन्दायईएसतट्ठाए गिरे मोर मोर हुलु हुलु चुलु चुलु मयूर वाहिनिए स्वाहा ।

विधि :— जब किसी परदेश में रोजगार के वास्ते धन प्राप्ति के लिए जावे तो पहले श्री पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा के सामने यह मन्त्र दस हजार जपे । फिर श्रेष्ठ मुहूर्त में गमन करे । जिस दिन, जिस समय गमन करने लगे, इस मन्त्र को १०८ बार जपे । जब उस नगर में पहुँचे तो यह मन्त्र १०८ बार जपे । जिस नगर में जावे, रोजगार करे, लाभ हो । महान् धन मिले ।

नोट : जिस नगर में रोजगार के लिये जावे, वहाँ मंगलवार के दिन प्रवेश न करे । मंगल वार के दिन प्रवेश करे तो हानि हो । घर की पूँजी खोकर, कर्जदार हो, दिवाला निकाले, काम बन्द हो ।

शुभाशुभ कहन मन्त्र, वाग्बल मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वीं स्वाहा ।

विधि :—किसी मुकदमे में या फिर किसी फिकर में या अन्देशे में या बीमारी में, रात में सारे मस्तक पर चन्दन लगाकर, चन्दन सूख जाने के बाद १०८ बार यह मन्त्र पढ़कर सो जावे । जैसा कुछ होनहार होगा, स्वप्न द्वारा मालूम होगा । बृहस्पतिवार से ११००० जाप करे ।

मन-चिन्ता कार्य-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ-सि-आ-उ-सा-नमः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से मन–चिन्ता कार्य सिद्ध होय। अर्थात् जब यह मन्त्र जपे आगे धूप जला कर रखले। जिस कार्य की सिद्धि के वास्ते जपे, मन में उसे रखे कि अमुक कार्य की सिद्धि के वास्ते यह मन्त्र जपता हूँ। यदि कोई इस मन्त्र का सवा लक्ष जाप करे तो मन–चिन्ते कार्य होय, सब कार्य की सिद्धि होवे।

द्रव्य-प्राप्ति मन्त्र

अरहंत, सिद्ध, आइरिय, उवज्झं, सव्वसाहूणं।

विधि :—इस मन्त्र का सवा लाख जप विधि पूर्वक करे तो द्रव्य प्राप्ति हो।

लक्ष्मी-प्राप्ति, वशकरण, रोग निवारण मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का जप करने से लक्ष्मी बढ़े (वृद्धि को प्राप्त हो) लोक में यश हो, सर्व प्रकार के रोग जायें।

नोट :—सवा लक्ष जप विधि पूर्वक जपने से कार्य पूर्ण सिद्ध होता है, फिर जिस मर्यादा मे जपेगा, उतनी मदद देगा।

सर्व-सिद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

विधि :—इस महा मन्त्र का सवा लक्ष जप करने से सर्व कार्य सिद्धि होती है।

द्रव्य-लाभ, सर्व सिद्धि दायक मन्त्र

ॐ अरहंताणं, सिद्धाणं आयरियाणं उवज्झायाणं साहूणं मम रिद्धि वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—स्नान करने के पश्चात् पवित्र होकर प्रभात, मध्यान्ह, अपरान्ह, तीनों समय इस मन्त्र का जाप करे, द्रव्य लाभ हो, सर्व सिद्धि हो।

नोट :—२१ दिन तक तीनों समय के सामायिक के वक्त निर्भय होकर दो–दो घड़ी जाप्य करे।

पुत्र-सम्पदा प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रौं असि आउसा चुलु चुलु हुलु हुलु मुलु मुलु इच्छियं मे कुरु कुरु स्वाहा। त्रिभुवन स्वामिनो विद्या।

विधि :—जब यह मन्त्र जपने बैठे तो आगे धूप जला कर रख लेवे और यह मन्त्र २४ हजार फूलों पर, एक फूल पर एक मन्त्र जपता जावे। इस प्रकार पूरा जपे। घर में पुत्र की प्राप्ति हो और वंश चले।

नोट :—धन, दौलत, स्त्री, पुत्र, मकान सर्व सम्पदा की प्राप्ति इस मन्त्र के जाप से होवे।

राजा तथा हाकिम वशीकरण मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं। ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं। ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं। ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं। अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु। वषट्

विधि :—जब किसी राजा या हाकिम या बड़े आदमी को अपने वश में करना हो तो, याने अमुक मेरे पर किसी तरह मेहरबान हो तो शिर पर पगड़ी या दुपट्टा जो बाँधता है यह मन्त्र २१ बार पढ़ कर उसके पल्ले में गाँठ देवे। जब मन्त्र पढ़ना शुरू करे, जब पल्ला हाथ में लेवे। २१ बार यह मन्त्र पढ़कर गाँठ देवे और शिर पर उस वस्त्र को बाँध कर उसके पास आवे तो वह मेहरबानी करें, मित्र हो। जब मन्त्र पढ़े अमुक की जगह उसका नाम लेवे। राजा प्रजा सर्व वश्यम्।

वशीकरण (मन्त्र)

ॐ णमो अरहंताणं। अरे (आरि) अर (अरि) णिमोहिणी अमुकं मोहय-मोहय स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से चावल तथा फूल पर मन्त्र पढ़कर जिसके शिर पर रखे वह वश में हो। १०८ बार स्मरण करने से लाभ होता है।

सर्प भय निवारण मन्त्र

ॐ अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत जयि अर्हं नमः।

विधि :—यह मन्त्र नित्य प्रति टंक ३ गुणीजे। बार १०८ दिवाली दिन गुणीजे। जीवन पर्यन्त सर्प भय न हो।

दुष्ट निवारण मन्त्र

ॐ अर्हं अमुकं दुष्टं साधय साधय अ सि आ उ सा नमः ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ दिन तक जपे, १०८ बार शत्रु ऊपर पढ़े, क्षय होय ।

लक्ष्मी लाभ करावन मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रूं णमो अरहंताणं ह्रूं नमः ।

विधि :—१०८ बार पढ़े, लक्ष्मी लाभ हो ।

रोगापहार मन्त्र

ॐ णमो सव्वो सहि पत्ताणं ।

ॐ णमो खेलो सहि पत्ताणं ।

ॐ णमो सल्लो सहि पत्ताणं ।

ॐ णमो सव्वोसहि पत्ताणं ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं क्लौं अर्हं नमः ।

विधि :— १०८ बार पढ़े, सर्व रोग जाय ।

व्रणादिक नाशन मन्त्र

ॐ णमो जिणाणं जावियाणं । पूसोणि अं (अ) एस (ऐ) णं (ण) वणं (सव्ववाराणवणं) मा पच्चत्तु मां फुट् (य उ ध उ मा फुट्) ॐ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—राख पढ़कर व्रणादिक पर लगावे, समाप्ति हो ।

आकाश गमन मन्त्र

ॐ णमो आगासगमणिज्जो स्वाहा ।

विधि :—२५० दिन अलूणा भोजन कांजी सेती करीजे । २४६ बार मन्त्र पढ़ वस्त्र के ऊपर याद करे । आकाश गमन होय ।

आकाश गमन द्वितीय मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ।

Gandhi Jain Karyalay
MANDSAUR (M.P.)

ॐ णमो भगवीय सु प्रदेवयानवर संगसवयन जननीयन जननी यस्य स्सइ ये सर्वबाईने प्रवतर प्रवतर देखिम शरीरं पवित्ररतं जनम पहुरये अर्हन्तशरीरं स्वाहा ।

विधि :—ये मन्त्र १०८ बार खड़ी मन्त्री हाथ में राखिजे ये को देखिजे ।

व्यापार लाभ व जयदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविधेयं अर्हं नमः ।

विधि :—यह मन्त्र दिन मे तीन बार जपिये । १०८ बार जपे तो व्यापार में लाभ हो सर्वत्र जय पावे ।

भय नाशक मन्त्र

ॐ णमो सिद्धाणं पंचेणं ।

विधि :—यह मन्त्र १०८ बार दिवाली के दिन जपिये, जीवे जगतां इस थकीं भय टले ।

सर्व रोग नाशक मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्लौं क्लौं अर्हं नमः ।

विधि :—यह मन्त्र त्रिकाल बार १०८ बार जपे, सर्व रोग जाय ।

विरोधकारक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा अनाहत विजे ह्रीं हुं असं कथित्र्यं खं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—यह मन्त्र सात दिन १०८ बार जपे मसान के अङ्गारे की राख घोलकर कौवे के पङ्ख से भोज–पत्र पर लिखे । जिसका नाम लिखे वह मेरे विरोध उपजे ।

सर्व सिद्धि व जयदायक मन्त्र

ॐ अरहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय सव्वसाहू, सव्व धम्मति त्थयराणं ॐ णमो भगवईए सुयदेवयाये शांति देवयाणं सर्व पवयणं देवयाणं दसाणं दिसा पालाणं पंचलोग पालाणं । ॐ ह्रीं अरहन्त देवं नमः । (श्री सर्व जुमोहं कुरु कुरु स्वाहा) पाठन्तरे ।

विधि :—यह मन्त्र १०८ बार जपे उत्तम स्थान में । सर्व सिद्धि और जयदायक है । सात बार मन्त्र पढ़कर कपड़े में गाँठ देने से चोर भय नहीं होता, सर्प भय भी नहीं होता ।

आत्म-रक्षा महासकलीकरण मन्त्र

पढ़मं हवइ मंगलं व्रजमइ शिलामस्तकोपरि णमो अरहंताणं अंगुष्ठयोः णमो सिद्धाणं तर्जन्योः णमो आयरियाणं मध्यमयोः णमो उवज्झायाणं अनामिकयोः णमो लोएसव्वसाहूणं कनिष्ठकयोः ऐसो पंच णमोयारो व्रजमइ प्राकारं, सव्वपावप्पणासणो जलभृतखातिका, मंगलाणं च सव्वेसिं खादिरांगार-पूर्ण-खातिका ।

॥ इति आत्मनिश्चन्तये महासकलीकरणम् ॥

आकाश गमन कारक मन्त्र

ॐ आदि ह्रीं ह्रीन पंचबीजपदैर्युतं सर्व सिद्धये नमः ।

विधि :— पुष्प या फल से एक लाख जाप वृक्षे क्षीरं कृत्वा तणी—बद्धं तं आरूढोऽग्नि कुण्डे होमयेत् । येका थातेन पादास्फोटयते खे गमनम् ।

सर्व कार्य साधक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा स्वाहा ।

विधि व फल :—यह सर्व कार्य सिद्ध करने वाला मन्त्र है ।

अरहंत सिद्ध आयरिय उवज्झाय साहू ।

विधि : षोडशाक्षर विद्याया: जाप्य २०० चतुर्थ फलम् ।

रक्षा मन्त्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं पादौ रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कटिं रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ब्रह्माण्ड रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं ऐसो पंच णमोयारो शिखा रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो आसणं रक्ष रक्ष ।

ॐ ह्रीं मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं हवइ मंगलं आत्म चक्षु पर चक्षुं रक्ष रक्ष रक्ष रक्षामन्त्रोयम् ।

चोर दिखाई न देने अर्थात् चोर भय नाशन मन्त्र

ॐ णमो अरिहंताणं आभिरणी मोहणी मोहय मोहय स्वाहा ।

विधि :—२१ बार स्मरण करे, गाँव में प्रवेश करते हुए। अभिमन्त्र 'क्षीर द्रव्यो हन्यते लाभाः' रास्ते में जाते हुए इस मन्त्र का स्मरण करने से चोर का दर्शन भी नहीं होता ।

वांछितार्थ फल सिद्धि कारक मन्त्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमः । (महामन्त्र)

अ सि आ उ सा नमः । (मूल मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हते उत्पत उत्पत स्वाहा । (त्रिभुवन स्वामिनि)

विधि : स्मरण करने से वांछितार्थ सिद्ध होता है ।

नवग्रह अरिष्ट निवारक जाप्य

सुर्य मंगल—ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ।

चन्द्रमा-शुक्र—ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं ।

बुध-बृहस्पति—ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ।

शनि-राहु-केतु—ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ।

प्रत्येक ग्रह की शान्ति के लिए उपरोक्त मंत्र के दस हजार जाप करने चाहिए और सर्व ग्रहों की शान्ति के लिए ॐ ह्री बीजाक्षर पहले लगाकर पंच नमस्कार मंत्र के दस हजार जाप करने चाहिए।

एते पंचपरमेष्ठी महामन्त्र प्रयोगाः ॐ नमो अरिहउ भग वउ बाहुबलिस्स पण्हसवणस्स मलेणिम्मल नाणपयासेणि ॐ णमो सव्वं भासइ अरिहासव्वं भासइ केवलि एएणं सव्ववयणेण सव्व सव्व होउ में स्वाहा । आत्मानं शुचि कृत्य बाहु युग्मं सम्पूज्य कायोत्सर्गेण शुभाशुभं वक्ति । इति

ॐ णमो अरहंताणं ह्रां स्वाहा ।

ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं स्वाहा ।

ॐ णमो आयरियाणं ह्रूं स्वाहा ।

ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रौं स्वाहा ।

ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः स्वाहा ।

विधि :—सुगन्धित फूलों से १०८ बार जप कर लाल कपड़े से फोड़ा-फुन्सी पर घेरा देने से तथा गले में पहनने से फोड़ा न पक कर बैठ जाता है ।

ॐ वार सुवरे अ-सि-आ-उ-सा नमः

विधि :—त्रिकाल १०८ बार जपने से विभव करता है ।

जाप्य-मंत्र

आवश्यक नोट :—माला के ऊपर जो तीन दाने होते हैं, सबमे अन्तिम जो इन तीनों में से है उससे जप आरम्भ करो । जपते हुए अन्दर चले जाओ । जब सारे १०८ जप कर चुको तब उन आखिर के तीन दानों को माला के अन्त में भी जपते हुए उसी आखिर के दाने पर आओ : जिससे माला जपनी शुरू की थी । यह एक माला हुई । इन तीनों दानों के बारे में किसी आचार्य का मत ऐसा भी है कि ये तीन दाने रत्नत्रय के सूचक है इसलिए इन तीनों दानों पर सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राय नमः ऐसा मन्त्र पढ़कर माला समाप्त (पूर्ण) करनी चाहिए ।

प्रथम मन्त्र—ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ।

दूसरा मन्त्र—अरहंत, सिद्ध, आयरिया, उवज्झाया, साहू ।

तीसरा मन्त्र - अरहन्त, सिद्ध ।

चौथा मन्त्र– ॐ ह्रीं अ–सि–आ–उ–सा ।

पांचवा मन्त्र --ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

छठा मन्त्र—ॐ ह्रीं ।

सातवा मन्त्र—ॐ ।

अनादि निधन मन्त्र--ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ।

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।

चत्तारि सरणं पव्वजामि—अरहंते सरणं पव्वजामि, सिद्धे सरणं पव्वजामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वजामि । ह्रीं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

———

१०८ जाप्यम्

ॐ भूः ॐ सत्यः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ।

ॐ भूर्भुवः स्वः अ–सि–आ–उ–सा नमः मम ऋद्धिं वृद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा । ॐ नमो अर्हद्भ्यः स्वाहा, ॐ सिद्धेभ्यः स्वाहा, ॐ सूरभ्यः स्वाहाः । ॐ पाठकेभ्यः स्वाहा । ॐ सर्व साधूभ्यः स्वाहा । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौ ह्रः अ--सि-आ-उ-सा नमः स्वाहा । मम सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा । अरहंत प्रमाणं समं करोमि स्वाहा ।

ॐ णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रौ शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा (नमः) ॐ ह्रीं श्रीं अ-सि-आ-उ-सा अनाहत विद्यायै णमो अरहंताणं ह्रीं नमः ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

ॐ ह्रीं अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधूभ्यः नमः ।

ॐ ह्रां ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार पढ़कर छाती को छीटे देवे ।

ॐ ह्रीं अर्हं नमः । या ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः ।

सर्व मंत्र का खुलासा

किसी काम के लिये ८००० जाप करने से फौरन काम होता है खासकर कैद वगैरह के मामले में अजमाया हुआ है ।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहिपत्ताणं ।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिप्पो सहिपत्ताणं ।

विधि :—दोनों में से कोई एक ऋद्धि रोज जपे । सर्व कार्य सिद्ध हो ।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं क्रौं ह्रीं णमो अरहंताणं नमः ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रति चक्रे, फट् विफट् विचक्राय भ्रौं भ्रौं स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र की नित्य १ माला जपे तो दलाली ज्यादा होवे धन ज्यादा होवे । राज द्वारे जो जावे तो दुश्मन झूठा पड़े, पुत्र की प्राप्ति होवे । बदन में ताकत आवे, विजय हो,

परिवार बढ़े, बुद्धि बढ़े, सौभाग्य बढ़े, जहाँ जावे वहाँ आदर सम्मान पावे। मूंठ करे तो भी नजदीक न आवे, जाप करे जितने बार धूप खेवे, पद्मासन होकर करना। नासाग्र दृष्टि लगाकर जाप करना चाहिये।

शांति मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं, केवलिपण्णतो धम्मो, सरणं पव्वजामि ह्रीं शांति कुरु कुरु स्वाहा। श्रीं अर्हं नमः।

(१) बिजौरा या नारीयल १०८ बार इस मंत्र से मंत्र कर ७२ दिनों तक वन्ध्या को खिलावे तो पुत्र हो।

(२) नये कपड़े, मंत्र से मंत्रितकर रोगी को पहनावे तो दोष ज्वर जाय।

ॐ सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यो सिद्धिदायकेभ्यो नमः।

विधि :—जाप १०८ अष्टमी चतुर्दशी को पढ़कर धूप देना।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, णमो अरहंताणं णमो आचार्याणं णमो उवज्झायाणं, णमो साहूणं, णमो धर्मेभ्यो नमः। ॐ ह्रीं णमो अर्हन्ताणं आरे अभिनि मोहनी मोह्य मोह्य स्वाहा।

विधि :—नित्य १०८ जपे। ग्राम प्रवेशे कांकर ७ मंत्र २१ क्षीर वृक्ष हन्यते लाभो भवति। प्रथम मंत्र जप दीप धूप से सिद्ध करना, पीछे अपने काम में लगना चाहिये।

सर्व शांति मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ-सि-आ-उ-सा सर्व शांति तुष्टि पुष्टि कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं नमः। क्लीं सर्वारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :— १०८ बार जाप गुरुवार से आरम्भ करे पूर्व दिशा को मुख करके बैठे। धूप से प्रारम्भ कर ११,००० जाप करे।

मंत्र :—ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा ह्रीं नमः।

विधि :— इस मन्त्र का त्रिकाल १०८-१०८ बार जाइ के फूलों से जप करे तो सर्व प्रकार की अर्थ सिद्धि को देता है।

मंत्र :—ॐ क्लीं ह्रीं ह्रैं ऐं ह्रीं (ह्रौं ?) ह्रः अपराजितायै नमः।

विधि :—इस मंत्र का ३ लक्ष्य जाप विधि पूर्वक करने से सिद्ध होता है इस मन्त्र के प्रभाव से साधक जो भी भोगोपभोग चीजों की इच्छा करता है वह सब साधक को प्राप्त होता है। स्त्री आदिक तो अपना होश ही भूलकर साधक के पीछे पीछे चलती है।

मंत्र :—ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीं ।

विधि :—इस मन्त्र का १ लाख बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र का दस दिन तक प्रयत्न पूर्वक आराधना करने से स्त्री, पुरुष, राजा आदिक वश में होते हैं। पथभ्रष्ट होने वाला मनुष्य दस दिन तक प्रतिदिन १-१ हजार जप करे तो जल्दी से ही पद की प्राप्ति पुनः होती है।

मंत्र :—ॐ श्रां ह्रां क्ष्वीं ॐ ह्रीं ।

विधि :—चन्द्रग्रहण या सूर्य ग्रहण में या दीवाली के दिन इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए साधक को देवे। इस मन्त्र को शुद्धता से ब्रह्मचर्य पूर्वक ६ महीने तक प्रतिदिन एक हजार (१ हजार) बार जाप करने वाले को ये मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के प्रभाव से साधक को राजा, उन्मत्त हाथी, घोड़ा, सर्व जगत के प्राणी वश में होते हैं। सर्व कार्य की सिद्धि होती है।

मंत्र :—ॐ ह्रीं श्रीं कलि कुण्डदण्डाय ह्रीं नमः ।

विधि :—पार्श्व प्रभ की मूर्ति के सामने सोने की कटोरी में १२००० (१२ हजार) जाइ के फूल से इस मन्त्र का जप करे, मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद मनोवांछित कार्यों की सिद्धि होती है मन्त्र के प्रभाव से भूत, पिशाच, राक्षस, डाकिनी शाकिणी इत्यादिक सामने ही नहीं आते बाधा देने की तो अलग बात रही। मन्त्र के प्रभाव से युद्ध, सर्प, चौर, अग्नि, पानी, सिंह, हाथी इत्यादि बाधा नहीं पहुँचा सकते हैं। मन्त्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होवे, वंध्या गर्भ धारण करे, जिसकी सन्तान होते ही मरती होवे तो जीने लगे, कीर्ति की प्राप्ति, लक्ष्मी की प्राप्ति, राज्य, सौभाग्य की प्राप्ति होती है देवांगनाएं सेवा [illegible]

मंत्र :—[illegible]

विधि :—[illegible]

मंत्र :—[illegible]

विधि :—इस मन्त्र का विधिपूर्वक जाइ के फूलों से १२००० (१२ हजार) जप तीन दिन में करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए स्वयं शुद्ध होकर विलेपन लगाकर सफेद वस्त्र पहनकर, अम्बिका देवी की मूर्ति को स्नान कराकर पंचामृत से पूजा करें, फिर देवीजी के सामने बैठकर भक्ति पूर्वक उपवास करके मन्त्र सिद्ध करे तो तीन दिन में मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। फिर मन्त्र के प्रभाव से भूत, भविष्यत्

वर्तमान की बात को देव कान में आकर कहेगा, याने जो पूछोगे वही कान में आकर कहेगा।

मंत्र :—ॐ ह्रीं ला ह्रा प लक्ष्मी हंसः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का दस हजार जाप जाइ के फूलों से करने से और दशांस होम करने से मंत्र सिद्ध हो जायेगा। मंत्र के प्रभाव से स्थावर या जंगम विष की शक्ति का नाश होता है।

मंत्र :—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं कलि कुण्ड नाथाय सौं ह्रीं नमः।

विधि :—इस मन्त्र का ६ महीने तक एकासन पूर्वक १०८ बार जाप करे तो सो योजन तक के पदार्थ का ज्ञान होता है। उसके बारे में भूत, भविष्यत् वर्तमान का हाल मालूम पड़ता है, इस मन्त्र का कलिकुंड यंत्र के सामने बैठकर जाइ के पुष्पों से १ लाख बार जाप करे और दशांस होम करे, मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

विशेष :—पांच वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक इस विद्या की जो आराधना करता है उसको प्रतिदिन विद्या के द्वारा १ पल भर सोना नित्य ही प्राप्त होता है। किन्तु नित्य ही जितना सोना मिले उतना खर्च कर देना चाहिए। अगर खर्च करके सचय करोगे तो विद्या का महत्व घट जावेगा।

मंत्र :—ॐ हुँ २ हें २ कूँ त्रूँ ट्रूँ तूँ पूँ यूँ शूँ ह्रौं ह्र (भ्रौं हूँ) फट्

विधि :—इस मन्त्र का एक लाख जाप करने से कार्य सिद्ध होता है। इस मन्त्र के प्रभाव से राज दरबार में, कचेरी में, वाद विवाद में, उपदेश के समय, पर विद्या का छेदन करने में, वशीकरण में, विद्वेषणादि कर्मों में, धर्म प्रभावना के कार्यों में अति उत्तम कार्य करने वाला है।

पद्मावती प्रत्यक्ष मंत्र : २ ॐ आं क्रों ह्रीं एँ क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै नमः।

विधि :—सवा लाख जाप करने से प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं या साढ़े बारह हजार जप करने से स्वप्न में दर्शन होते हैं।

सरस्वती मंत्र : ३—"ॐ ऐं श्रीं क्लीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं सरस्वत्यै नमः।"

विधि :—ब्राह्म मूहूर्त में रोज ५ माला जपने से बुद्धिमान होय। ॐ ज्रौं ज्रौं शुद्ध बुद्धि प्रदेहि श्रुत-देवी-भर्हतं तुभ्यं नमः।

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र : ४—"ॐ ह्रीं श्री क्लीं ठें। ॐ घंटा कर्ण महावीर लक्ष्मी पुरय पुरय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—धन तेरस को ४० माला, चौदस को ४२ और दीवाली के दिन ४३ माला उत्तर दिशा मुख, लाल माला से, लाल वस्त्र पहन कर करे, लक्ष्मी की प्राप्ति होय।

श्री मणिभद्र क्षेत्रपाल का मंत्र : ५—ॐ नमो भगवते मणिभद्राय क्षेत्र पालाय कृष्ण रुपाय चतुर्भुजाय जिन शासन भक्ताय नव नाग सहस्त्र बालाय किन्नर किं पुरुष गंधर्व,

राक्षस, भूत प्रेत, पिशाच सर्व शाकिनी मां निग्रह् कुरु कुरु स्वाहा मां रक्ष रक्ष स्वाहा:
क्षेत्र पालनो मंत्र : ६—ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षौं क्षः क्षेत्र पालायनमः ।

विधि :—साढ़े बारह् हजार जाप करना ।

फौजदारी दीवानी दावा ग्रादि निवारण मंत्र :—६

मूल मन्त्र :—ॐ ऋषभाय नमः ॥

विधि :—श्री आदीश्वर भगवान के समक्ष स्तोत १०८ वार प्रतिदिन जाप करना । साढ़े बारह हजार जाप करे मूल मन्त्र का ।

चक्रेश्वरी देवी का मन्त्र : १—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : सोते समय ५ माला जपना चाहिये ।

मंत्र २—ॐ नमो चक्रेश्वरी चिन्तित कार्य कारिणी मम स्वप्ने शुभाशुभं कथय २ दर्शय दर्शय स्वाहा ।

विधि :—शुभ योग, चन्द्रमा, तिथि वार से शुरु कर साढ़े बारह हजार जाप करे । स्वप्न में शुभा शुभ मालूम पड़ेगा ।

चर्तुविंशति महाविद्या

णमो अरिहंताणम्, णमो सिद्धाणं, णमो अइरियाणम् ।
णमो उवज्झायाणम्, णमो लोए सव्व साहूणम् ॥

विधि :- यह अनाधि मूल मन्त्र है । इस मन्त्र से भव्य जीव संसार समुन्द्र से पार हो जाता है और लोकिक सर्व कार्य की सिद्धि होती है । यदि मन, वचन, काय को शुद्ध करके त्रिकाल जपे ।

ॐ नमो भगवओ अरहऊ ऋष भस्स आइतित्थ यरस्स जलंतं ग (च्छं) तं चक्कं सव्वत्थ अपराजिय, आयाविणि ऊहणि, थंभाणी, जंभाणी, हिली-हिली धारिणी भंडाणं, भोइयाणं, अहीणं, दाढीणं, सिंगीणं, नहीणं, वाराणं, चारियाणं, जक्खाणं, ररक्खसाणं, भूयाणं, पिसायाणं, मुहबंधणं, चक्खु बंधणं, गइ बंधणं करेमी स्वाहाः ।

विधि :—इस विद्या से २१ बार धूल याने मिट्टी को मन्त्रित करके दशों दिशा में फेंक देने से मार्ग में किसी प्रकार का भय नहीं रहता है । संघ का रक्षण होता है । कुल का रक्षण होता है । गण का रक्षण होता है । आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधुओं का और

सर्व साध्वियों का रक्षण होता है। इससे सर्व प्रकार का उपसर्ग दूर होता है। मन्त्र पढ़ता जाय और मन्त्रित धूली को फेंकता जाय।

ॐ नमो भगवऊ अरहऊ अजिय जिणस्स सिज्झऊ मे, भगवइ महइ महाविद्या अजिए अपराजिए अनिहय महाबले लोग सारे ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस विद्या का उपवास पूर्वक ८०० बार जाप्य करे तो दारिद्र का नाश, व्याधियों का नाश, पुत्र की प्राप्ति, यश की प्राप्ति, पुण्य की प्राप्ति, सौभाग्य की प्राप्ति, दम्पत्ति वर्ग में प्रीति की प्राप्ति होती है।

ॐ नमो भगवऊ संभवस्स अपराजियस्स सिरस्याउवज्झऊ में भगवऊ महइ महाविद्या संभवे महासंभवे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—चतुर्थ स्थान याने दो उपवास करके जपे साढ़े बारह हजार मन्त्र, फिर इस मन्त्र से भोजन अथवा पानी अथवा अर्क अथवा पुष्प या फल को अट्ठसयं (आठ सौ बार) मन्त्रित करके जिसको दिया जायगा वह वशी हो जायगा।

ॐ नमो भगवऊ अभिनंदणस्य सिझष्यऊ मे भगवइ महइ महाविद्या-नंदणे अभिनन्दणे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—दो उपवास करके फिर पानी को अट्ठसयं (आठ सौ बार) जाप मन्त्रित करके जिसका मुख मन्त्रित पानी से धुलाया जायगा वह वशी हो जायगा।

ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सुमइस्स सिझष्यऊ में भगवई महइ महाविद्या समणे सुमण से सोमण से ठः ठः ठः स्वाहाः।

विधि :—दो उपवास करके अट्ठसयं (आठ सौ बार) मन्त्र अरहंत प्रभु के सामने कोई भी कार्य के लिये अथवा दुकान की वस्तुओं के लिए जाप करके सो जावे तो भूत, भविष्यत, वर्तमान में क्या होने वाला है, जो भी कुछ मन में है, सबका स्वप्न में मालूम पड़ेगा, सर्व कार्य सिद्धि होगी।

ॐ नमो भगवऊ अरहऊ पउमप्पहस्स सिज्झष्याउ में भगवई महइ महाविद्या, पउमे, महापउमे, पउमुत्तरे पउमसिरि, ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को भी अट्ठसयं (आठ सौ बार मन्त्र) दो उपवास करके करने वाले मनुष्य के सर्वजन इष्ट हो जाते हैं याने सर्व लोगों का प्रिय हो जाता है।

ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सुपासस्स सिज्झष्यउ में भगवइ महइ महाविद्या, पस्से, सुपस्से, अइपस्से, सुहपस्से ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से अपने शरीर को मन्त्रीत करने सो जावे तो स्वप्न में शुभाशुभ का ज्ञान हो। मार्ग चलते समय स्मरण करने से सर्प, व्याघ्र, चौर, आदिक का भय नहीं रहता है।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवऊ अरहऊ, चंदप्पहस्स सिज्झव्यऊ में भगवइ महइ महाविद्या चंदे चंदप्र में अइप्पहे महप्पहे ठः ठः ठः स्वाहा।**

विधि :—दो उपवास करके इस मन्त्र को आठ सौ बार जाप करके पानी सात बार मंत्रीत करके उस पानी से जिसका मुँह धुलाया जायगा वह सर्वजन का इष्ट हो जायगा अथवा पानी को २१ बार मंत्रीत कर स्त्री या पुरुष को देने से चन्द्र के समान सर्व-जन का इष्ट होता है।

मन्त्र : **ॐ नमो भगवऊ अरहऊ पुष्पदंतस्स सिज्झव्यउ में भगवइ महइ महा-विद्या पुपक, महापुपके, पुपफसुइ ठः ठः ठः स्वाहा।**

विधि :—इस मन्त्र को दो उपवास करके आठ सौ बार मंत्र जपे फिर इस मन्त्र से फल को अथवा पुष्प को २७ बार मंत्रीत कर जिसको दिया जाय वह वश में हो जाता है।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सियलजिणस्स सिज्झव्यउ में भगवइ महइ महाविद्या सीयले२ पसीयले पसंति निव्वुए निव्वाणे निव्वुएरिा नमो भवति ठः ठः ठः स्वाहा।**

विधि :—इस मंत्र को दो उपवास करके २१ बार पानी मंत्रीत करके आँख के रोग पर या शिरोरोग, पर आधा शिशी रोग पर, फौड़ा फुन्सी के रोग पर परीक्रमा रूप मंत्रीत पानी को छीड़के तो रोग अच्छा हो जाता है।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवऊ अरहऊ सिद्ध सस्स सिज्झव्याउ में भगवइ महइ महा विद्या सिज्जसे २ सेयं करे महासेयं करे पभं करे सुप्पभं करे ठः स्वाहा।**

विधि :—इस मन्त्र को उपवास पूर्वक रात्रि में पुष्पों से आठ सो जाप करे। भूतेष्टायां रात्रौ सर जो वलि कर्म (साष्टशत) जापम्। कुर्यान्मोक्ष्यं चबहिः स स्वस्थ श्चन्द्रराशिविद्या, उपद्रवं जगलं चाउदिसे सुगहेयव्वं सुद्धवलि कम्मं कायव्वं तवाहियं च चउदिसि परिक्ख कम्म कायव्वेतऊ सुहं होइ।

मन्त्र : —**ॐ नमो भगवऊ अरहऊ वासुपुज्यस्स सिज्झव्याऊ मे भगवइ महइ महा-विद्या वासुपुज्ये २ महापुज्ये रुहे ठः स्वाहा।**

विधि :—इस मन्त्र को उपवास पूर्वक आठ सो बार जप करके सो जावे फिर जो स्वप्न में शुभा-शुभ दोखेगा, वह सब सत्य होगा। जं किंचि अप्पण ट्ठाए पर ट्ठाएवा नाउकामेणं

खेमंवा भयंवा नासंवा डमरंवा मारिवां दुभिक्खंवा, सासयंवा, असासयंवा जयंवा अजयरंवा पडिलेहिऊ कामेण अप्पाणं सत्त वारं परिजवेऊण सोयव्वं जं जंपासइ सुमिणे तस्स फलं तारिसं होइ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ विमलस्स सिज्झाउ में भगवइ महइ महा- विद्या अमले २ विमले कमले निम्मले ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—सप्ताभि मन्त्रित सुमैः प्रतिमां सं पूज्य तिष्ठति स्व कुते। तत्रस्थ पश्यति यः सत्यार्थः स इति विमलजिन विद्या।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अणंत जिणस्स सिज्झाउ मे भगवइ महइ महाविद्या अणंत केवलणाणे अणंत पद्मवनाणे अणंते गमे अणंत केवल दंसणे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—शास्त्रारम्भे जपत्वा साष्टशतं शयत एषयत्स्वप्ने। पश्यति तत्सर्वं मिदं तथैव तदनन्त जिनविद्या।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ धम्म जिणस्स सिज्झाउ में भगवइ महइ महाविद्या धम्मे सधम्मे धम्मे चारिणी धम्म धम्मे उवए स धम्मे ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—शिष्याचार्यार्थं कार्योत्सर्गे जपन्ति मां विद्यां। पश्यति शृणोति यदशी तत्सत्यं सर्वमेव पचदर्शी।। कार्यारंभेशिष्य श्रवणो विद्याभि मन्त्रितोऽष्ट शतम्। कार्यस्य पारदर्शी, विशेषतोऽप्य नशन ग्राही।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ संतिजिणस्स सिज्झाउ में भगवइ महइ महा- विजा संति संति पसंति उवसंति सव्वापावं एस मेहि स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र का आठ सौ बार जाप कर धूप गंध पुष्पादिक को मंत्रीत करके धूप देने से, ग्राम, नगर, देश, पट्टण में अथवा स्त्रीओं में वा पुरुषों में वा पशुओं में का, मारि रोग नष्ट हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ कुंथुस्स सिज्झाउ मे भगवइ महइ महाविद्या कुंथुडे कुंथे कुंथुमइ ठः ठः ठः ॐ कुंथेश्वर कुंथे स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र से धूलि को सात बार मंत्रित कर जहाँ डाल देवे वहाँ के सर्वज्वर सर्व रोग नष्ट हो जाते हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ अरस्स सिज्झाउ में भगवइ महइ महाविद्या अरणि आरिणी अरणिस्स पणियले ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—राजकुलं, देवकुलं वा देवा गन्तु मिच्छतां विधाम् । परि जप्यपय: गेयं वक्त्रं वाऽभ्यज्य गंध तैलेन । बद्ध्वा शिरसि शिखां वा सिद्धार्थान् वा स्वनिवसन प्रांते । गंन्तव्यं, यत्रेष्टं सुभग स्तत्रेति चन्द्रगज विद्या ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ मल्लिस्स सिज्झध्यउ में भगवइ महइ महाविद्या मल्लीसु मल्लो जय मल्लिपाड मल्लि ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से वस्त्र माला अलंकारादिक मंत्रीत करके जिसको दिया जावेगा वह वश में हो जायगा ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ मुणिसुव्यस्स सिज्झध्यउ मे भगवइ महइ महा-विजा सुव्वए अणुव्वए महव्वए च एमइ ठः स्वाहा ।

विधि :—व्याघ्र, चित्रक, सिंहादेः कस्य चिन्मांस भक्षिणः । दग्धवा मांसं च कोशिवा तद्रक्षा क्षिताङ्गुलिः । यस्यनाम्ना जपेद् विद्यामिमामष्टोत्तरं शतम् । सहस्त्रं वास वश्यः स्यादिति सुव्रत विद्या ।।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ नमिस्स सिज्झध्यउ में भगवइ महइ महाविद्या अरे रहावत्त आवत्ते वतेरिट्ठनेमि स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से सात बार फल पुष्प वा अलंकारादि मंत्रीत करके जिसको दिया जाय वह वश में हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ अरिट्ठनेमीस्स सिज्झध्यउ में भगवइ महइ महा-विजा अरेरहावत्ते आवत्ते वत्रे रिट्ठनेमि स्वाहा ।

विधि :—हयं, गजं रथं नावं साष्टशताभि मंत्रितम् । आरोहेद् वाहनंवश्यं वैरी वा वशगो भवेत् ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ पासस्स सिज्झध्यउ में भगवइ महइ महाविजा उग्रे महाउग्रे उग्रजसे पासे सुपासे एस्स माणि स्वाहा ।

विधि :—देश पुरग्रामादे : कोष्ठागारस्थ धूप बलि कर्म । कार्यं शिवं च सत्जां शांति, वंद्धुधनमपधनस्य । द्विपदं चतुष्पदं वाड भिमन्त्रणाद् वश्यमथधनं निहितम् । सुप्रापयुधि विजयः स्वार्थं कृतिः पार्श्वं विधेयं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ महइ महावीर वर्द्धमाण सामिस्स सिज्झप्यसउ में भगवइ महवइ महाविज्या वीरे २ महावीरे सेण वीरे जयंते अजिए अपराजिए अणिहए स्वाहा ।

विधि :—सुवासान नया जप्तान् शिष्य मूर्ध्नि गुरुः क्षिपेत् । स्वकार्य पारगः स स्यादपाविघ्न मिहान्तिमा ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ वद्धु माणाय सुर असुर तिलोय पूजिताय वेगे महावेगे निव्ंवरे निरालंवणे विटि २ कुटि २ मुदरे पविसामि कुहि २ उदरेतेपे खिसिस्सामि अंतरिऊ भवामि मामेपावया ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—पथियुद्धे द्युते वा स्मरणाद पराजितोऽथ चौराणाम् । व्याघ्रादीनां भीतौ मुष्टेर्बंधे भवति शांतिः ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ उसहस्स चरमवद्धं माणस्स काल संदीवस्सप, हु समणस्स, विभ्भां पुरोसस्स, सव्वपावाणं हिंसा, बंधंक रिआ जे अठ्ठे सच्चे भूए भविस्से से अठ्ठे इह दीसउ स्वाहा सवेसु उं स्वाहा । कारो कायव्वो च उथेण साहणं कायव्वं सव्वासि पंचमंगल नमुक्कारं करिता तऊ सव्वाऊ विभाऊ ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ इमं विभ्भां पउंभामि ।

विधि :—सामे विजाए सिघ्घऊ वार ३ बार जाप्यः जं जस्सतित्थयरस्य जम्म नखतं तमिचेवतम तवं कायव्व सव्वाऊ अठ्ठसय जापेणं ।

विधि :—ये चतुर्विशंति विद्या है इन विद्याओं का करने वाला गर्व से रहित होना चाहिए । शान्त चित्त होना चाहिए । ये चौबीस तीर्थंकर के मंत्र तीर्थंकर प्रभू के जो जन्म नक्षत्र हो उस रोज से उसी तीर्थंकर के मन्त्र जाप करना चाहिये कौनसा दिन जिस तीर्थंकर का जन्म नक्षत्र है ये अन्यत्र देखकर कार्य करे ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं द्रः द्रावय २ हूँ फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल को १०८ बार मंत्रीत करके देने से सुख से प्रसव होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमः ।

विधि :—विधि पूर्वक सवा लाख जाप करके एक माला नित्य फेरने से सर्व कार्य सिद्धि होती है । सर्व रोग शांत होते हैं । लक्ष्मी की प्राप्ति होती है इस मंत्र को एकाक्षरी विद्या कहते है । सात लक्ष जप करने से महान विद्यावान होता है ।

मन्त्र :—ॐ अंबिविख महाविसेण विष्णु चक्रेण हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से चूर्ण २१ बार मंत्रीत करके (सखांनिकयोष्टि किकके कर्त्तव्ये) तो आँख रोग शांत होता है ।

मन्त्र :—ॐ कालि २ महाकालि रौद्री पिंगल लोचनी सुलेन रौद्रोपशाभ्यंते उं ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सात बार (घरट्ट पुट लूहण) वस्त्र में बांधकर डोरे से, बामी आँख दुखे तो दक्षिण की तरफ बाँधे और दक्षिण की तरफ आँख दुखे तो बामी की तरफ बांधे, तो आँख की पीड़ा शांत होती है।

मन्त्र :—ॐ शांते शांते शांति प्रदे, जगत् जीवहित शांति करे, ॐ ह्रीं भगवति शांते मम शांति कुरु २ शिवं कुरु कुरु, निरुपद्रव कुरु कुरु सर्वभय प्रशमय २, ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रः शांते स्वाहा।

विधि :—स्मरण मात्र से शांति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ वद्ध माणस्स वीरे वीरे महावीरे सेणवीरे जयंते अपराजिए स्वाहा।

विधि : उपाध्यायों के वाचन समय का मन्त्र है, परम्परागत है। प्रातः अवश्य ही २१ बार या १०८ बार स्मरण करना चाहिये, फिर भोजन करना चाहिये। इस मन्त्र के प्रभाव से सौभाग्य की प्राप्ति, आपत्ति का नाश, राजा से पूज्यता की प्राप्ति, लक्ष्मी की प्राप्ति, दीर्घायु, शाकिनी रक्षा, सुगति। (स्याद्वांतरे चेन्न करोति तदोपवासोहड: शक्त्यु गुरु पोवादण्ड: जावभी वं कालावधि अक्षर २७ मन्त्रेसति—मंत्रो न कथ्याप्यग्रे कथनीय: गुरु प्रशादात् सर्व सफलं भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीया महाणसस्स तर तर ॐ अक्खीण महाणस स्वाहा ॐ क्षीं क्षः क्षः क्षः यः यः यः लः हुं फट् स्वाहा।

विधि :—अनेन वा साक्षता अभिमन्त्रय गृहादौ प्रक्षिप्ता दोषोनुपमंयंति (इस मन्त्र से अक्षत मन्त्रीत कर घर के अन्दर फेंक देवे तो सर्व दोष नाश हो जाते हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ अरहऊ संतिजिणस्स सिज्झव्यउ मे भगवइ महाविद्या संति संति पसंति उवसंति सव्वपावं पसमेउ तउसव्व सत्ताणं द्वपय चउप्पयाणं संति देशेगामागर नगर पट्टणखेडेवा पुरिसाणं इत्थीणं नपुंसगाणो वा स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से धूप १००८ बार मन्त्रीत करके घर में अथवा देवदत्त के सामने उस धूप को खेने से भूत प्रेत डमर मारी रोगों की शान्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो अणाइ निहणे तित्थयर पगासिए गणहरेहिं अणुमन्निए द्वादशांग चतुर्दश पूर्व धारिणी श्रुतिदेवते सरस्वति अवतर अवतर सत्यवादिनि हुं फट् स्वाहा।

मन्त्र :—ॐ चंद्र परिश्रम परिश्रम स्वाहा ।

विधि :—हस्त प्रमाणं शरं ग्रहीत्वा रंघणि ताडयेत दिन २१ यावत ततो रंघणिर्नश्यति । हस्त प्रमाण शर (बाण) को लेकर इस मन्त्र से २१ दिन तक रंघणि वायु का ताडन करने से रंघणिवायु नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्लीं श्रीं क्षीं अवतर अवतर स्वाहा ।
(सहस्रं जाप्यः पूर्व १०८ गुणेते स्वप्ने शुभाशुभं कथयंति ।)

विधि :—इस मन्त्र को १००८ बार जाप करके, फिर सोने के समय १०८ बार जाप करके सो जावे तो स्वप्न में शुभाशुभ मालूम होता है ।

मन्त्र :—ॐ अंगे फुमंगे फुअंगे मंगे फु स्वाहा (बार २१ जलमभि मंत्र्यपिवेत् शुलं नाशयति ।)

विधि :—इस मन्त्र से जल २१ बार मन्त्रित करके उस जल को पी जावे तो शूल रोग नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्लीं कृष्ण वाससे सुध्म सिंहवाह ने सहस्त्र वदने महाबले प्रत्यंगिरे सर्वसैन्य कर्म विध्वंसिनी परमंत्र छेदनी सर्वदेवाणाणी सर्वदेवाणाणी वंधि वाधि निकृंतय निकृंतय ज्वालाजिह्वे कराल चक्रे ॐ ह्लीं प्रत्यंगिरे स्वाहा स्वाहा स्वाहा शेषाणंद देयकेरी आज्ञाफुरइ ४ घट फेरण मंत्र ।

विधि :—इस मन्त्र की विधि नहीं है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अष्टादश-वृश्चिकाणां विषं, हर हर, आं क्रूं ह्लां स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़ता जाय और बिच्छू काटे हुए स्थान पर भाड़ा देता जाय तो बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ शिवरि फुट् स्वाहाः ।

विधि :—स्वबाकुं प्रमार्जयेत दष्टस्य विषं मुत्तरति ।

मन्त्र :—ॐ खुलु मुलु स्वाहाः ।

विधि :—वृश्चिक विद्धं आत्मनः प्रदक्षणी कारयेत ।

मन्त्र :—ॐ कखं फुट् स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र की विधि नहीं है ।

मन्त्र :—ॐ कालो महाकाली वज्रकाली हनशुलं श्री त्रिशुलेन स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कर्ण (कान) का दर्द नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ मोचनी मोचय मोक्षणि मोक्षय जीवं वरदे स्वाहा ।

ॐ तारणि तारणि तारय मोचनि मोचय मोक्षणि मोक्षय जीवं वरदे स्वाहा ।

विधि :- वार ७ विच्छू (खजुरा) डंक अभिमंभ्य: विषं उतरति ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयस्य आवटुक दारुकविवटुक दारुकविवटु विवटु विवटु दारुक स्वाहा । १२ कटो० के० मं० नमः क्षिप्रगामिनि कुरु कुरु विमले विमले स्वाहा ।

विधि :—इन मन्त्रों से पानी मन्त्रीत करके जिसके नाम से पीवे, वह मनुष्य वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ अरपचन धीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार तीनों संध्याओं में स्मरण करने से महान् बुद्धिमान हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं वद वद वाग्वादिनि ह्रीं नमः ।

विधि :- इस मन्त्र का १ लाख जाप करने से मनुष्य को काव्य रचना करने की योग्यता प्राप्त होती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः ।

विधि :- देव भद्र नित्यं स्मरणीयं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः ।

विधि :- तीन दिन में १२ हजार जाप करके १ माला नित्य फेरे तो कवि होता है ।

मन्त्र :—ॐ कृष्ण विलेपनाय स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार नित्य ही स्मरण करने से स्वप्न में अतीत अनागत वर्तमान का हाल मालूम पड़ता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय क्षल क्षल प्रज्वल प्रज्वल हूं हूं महाग्नि स्तंभय स्तंभय हूं फुट् स्वाहा । अग्नि स्तम्भन मन्त्रः ।

विधि :—इस मन्त्र से ७ बार कंजिकं (कांजी) मन्त्रीत कर दीपक के सामने क्षेपन करने से दीपक बन्द हो जायगा । और शरीर में लगा हुआ ताप शान्त हो जायगा ।

मन्त्र :—ऐं ह्रीं सर्वभय विद्रावणि भयार्यैः नमः।

विधि :—इस मंत्र का स्मरण करके मार्ग में चले तो किसी प्रकार का भय नहीं होगा।

मन्त्र :—ॐ [illegible]।

विधि :—[illegible]

मन्त्र :—ॐ [illegible] स्वाहा।

विधि :—[illegible]

मन्त्र :—ॐ [illegible] स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को १२ हजार विधि पूर्वक जाप करके १०८ बार नित्य [illegible] के समान वाक्य होते हैं।

मन्त्र :—ॐ क्ष्रूं क्ष्रूवः श्वेत ज्वालिनी स्वाहा।

विधि :—अग्नि उतारक मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ चिली चिली स्वाहा।

विधि :— सर्पोच्चाटन मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी क्लीं नमो ॐ अमृते [illegible] पट् पट् प्लावय प्लावय ॐ हंसः।

विधि :—अग्नि उतारण मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय अमले विमले वर कमले स्वाहा।

(वार २१ तैलमभि मंत्र्य दापयेत् विशल्याभवति गुर्विणी

विधि :—इस मन्त्र से तेल २१ बार मन्त्रित कर गर्भिणी स्त्री को देने [illegible] छूट जायगी।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ चंदप्पहस्ससिध्यउ मे भगवइ महइ [illegible] चंदे चंदप्पभे सुप्पभे अइप्पभे महाप्पभे ठः ठः स्वाहा। (ला[illegible]

विधि: —इस मन्त्र का नित्य ही १०८ बार स्मरण करने से लाभ होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्ः क्ष्रूं क्ष्रूं ह्ः। (शिरोर्त्ति मन्त्र)

विधि : इस मन्त्र से मस्तक को मन्त्रित करने से सिर का दर्द मिटता है।

मन्त्र :—ॐ भूधर भूधर स्वाहा। (खजूरा मन्त्र)

विधि :—इस मन्त्र को पढ़ता जावे और नीम की डाली से झाड़ा दे तो बिच्छू का जहर नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ पद्मे महापद्मे अग्निं विध्यापय विध्यापय स्वाहा ।

(अग्नि स्तम्भन मन्त्र)

ॐ नमो भगवते पार्श्वचंद्राय गोरी गंधारी सर्व संकरी स्वाहाः ।

विधि :—(मुखाभि मंत्रेण १०८ बार अदियता) ।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं मम सर्व दुष्टजनं वशी कुरु कुरु स्वाहा ।

(समरंड मरंमारि रोगं सोगं उवद्दवं सयलं घोरं चोरं पसमेउ सुविहि संघस्स संति जणो वार २१ शांतये स्मरणीया)

विधि :—युद्ध में मरने के समय में अथवा रोग, शोक, उपद्रव, सकल घोर चोरों के पास में पहुँच जाने पर अथवा चतुर्विद्य संघ की शांति के लिये शांत चित्त से २१ बार स्मरण करना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ ए हुं सुउग्रइ सुरोए जिब्मंति तिमिर संघायां अणलिए वयणा सुद्धाए गंतरमापुणो एहि हुं फुट् स्वाहा । (एकान्तर ज्वर विद्या) ।

विधि :—इस मन्त्र से एकान्तर ज्वर वाले को झाड़ा देने से ज्वर दूर हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्लीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये येनकेन चिन्मश्रोपरि पापं चिंतितं कृतं कारितं अनुमतं वातत्पापं तस्यवै मस्त के निपत्तउ मम शांति कुरु कुरु पुष्टिं कुरु शरीर रक्षां कुरु कुरु ह्लीं प्रत्यंगिरे स्वाहा । ॐ नमो कृष्णस्य मातंगस्य चिरि अहि अहि अहिणि स्वाहा । (अंगुल्याग्रचले भूतं नाशयति)

विधि :—(इस मंत्र की विधि उपलब्ध नहीं हो सकी है) ।

मन्त्र :—ॐ चलमाउ एया चिटि चिटि स्वाहा । (कलवाणि मन्त्र)

विधि :—(इस मंत्र की विधि उपलब्ध नहीं हो सकी है) ।

मन्त्र :—ॐ विमिचि भस्मकरी स्वाहा । (विशुचिका मन्त्र)

विधि :—इस मन्त्र से खुजली दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ चन्द्रमौलि सुर्यमिलि कुरु कुरु स्वहा ।

विधि :—इस मन्त्र से झाड़ा अथवा पानी मन्त्रित कर देता जावे तो दृष्टि दोष दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो धम्मस्स नमो संतिस्स नमो अजियस्स इलि मिलि स्वाहा ।

(श्रव श्रुति मन्त्र)

विधि :—अनेन मंत्रेण चक्षुः कर्णोच्चाभिवास्य आत्मविषये परविषये च एकांत स्थीतो यत् श्रृणोति तत्सत्यं भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूंलां जिनचंद्राचार्य नाम गृहणेण अष्टोत्तर शतव्याधीः क्षयं यां तु स्वाहा । (रोग क्षय मन्त्रः अरथण कंडकं क्रियते ।)

विधि :—इस मन्त्र से पानी से मन्त्रीत करके देने से १०८ व्याधी नाश को प्राप्त होती है, पानी १०८ बार मन्त्रित करना चाहिये । जब तक रोग न जाय तब तक मन्त्रित पानी देवे ।

मन्त्र :—ॐ क्षः क्षः । (कर्णरोगोपशनम मन्त्र)

विधि : – विधि नहीं है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः । (अग्नि स्तंभन मन्त्र)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमः श्रीं नमः ह्रौं नमः स्वाहा ।

विधि :—अनेन मंत्रेण कांगुणि (माल कांगणी) अक्षीता श्चणका अभिमंत्र्यंते ततो गुडेन धूपयति गुडे नैव संवेष्ट्य भंक्षते विद्या प्रभवति । इस मन्त्र से मालकांगुणी और चना मन्त्रित उन चना और कांगुनी को गुड़ की धूप लगावे फिर चना और कांगुनी को गुड़ से वेष्टित करके खावे तो बहुत विद्या आती है । ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते आदित्याय असिमसि लुप्तोसि स्वाहा ।
(अर्कोतारण मन्त्र)

विधि :—इस मन्त्र की विधि उपलब्ध नहीं हो सकी है ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय मणिभद्राय महायक्ष से नापतये ॐ कलि कलि स्वाहा ।

विधि :—अनेन दंतकाष्टं सप्त कुत्वोऽभि मंत्र्य प्रत्युषे भक्षयेत् अयाचितं भोजनं लभते । दंतवन के (दातुन) सात टुकड़े करके इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके प्रातः खावे याने दातुन करे तो अनमांगे भोजन मिलता है । याने भोजन के लिये याचना नहीं करनी पड़ती है ।

मन्त्र :—निरु मुनि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से झाड़ा देने से दांत की वेदना शांत होती है ।

मन्त्र :—निकउरि स्वाहा । (विश्रुचिका मंत्र)

विधि :—इस मंत्र से राख (भस्म) मंत्रीत करके खुजली पर लगाने से खुजली रोग शांत होता है ।

मन्त्र :—ॐ अजिते अपराजिते किलि २ स्वाहा ।

विधि :—ऐषा विद्या वैर, व्याघ्र, दंष्ट्रिणां बधं करोति कंकरिकां सप्ताभिमंत्रतां कृत्वा दिक्षु विदीक्षु क्षिपेत् । इस मंत्र से कंकरियों को ७ बार या २१ बार मंत्रीत करके दिशा विदिशाओं में फेंकने से वैर, व्याघ्र, दांत वाले जीवों को बंद कर देता है । याने इनका उपद्रव नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे ममस्वस्ति शांति कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—यह मंत्र सिर्फ स्मरण करने से सर्व प्रकार की शांति होती है ।

मन्त्र :—इदंते प्रज्वालितं वज्रं सर्व ज्वर विनाशनं अनेन अमुकस्य ज्वरं चूर्णयामि यदि अद्यागिन कुर्वसो ।

विधि : इस मंत्र से जल को २१ बार मंत्रीत करके पिलाने से ज्वर का नाश होता है

मन्त्र :—धुणसि चंचुलीलवं कुली पर विद्या फट् स्वाहा हूँ फट् स्वाहा ।

विधि : इस मंत्र का स्मरण करने से पर विद्या का स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र का स्मरण करने से सर्व कार्य सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—ॐ हंसः शिव हंसः हं हं हं सः पारिरेहंसः अ (क्षि) चिछ नामेण मंतु असुणं तहं पटि जइ सुणइ तो कोडउ मरइ अहन सु सत्त वासाइं निघिसो होइ ॐ जांगुलि के स्वाहाः ।

विधि —इस मंत्र से बालु २१ बार मंत्रीत करके सांप की बामी अथवा सांप के बिल देवे तो सांप बिल छोड़ कर भाग जायेगा ।

मन्त्र :—ऐं क्लीं ह्सौः रक्त पद्मावति नमः सर्व मम वशीं कुरु-२ स्वाहा मलूं ललूं नगर लोकूराजा सर्व मम वशीं कुरु-२ स्वाहा ।

विधि :— इस मंत्र से लाल कनेर के पुष्प २१ बार मंत्रीत करके नगर के प्रवेश के सम राजा के सम्मुख अथवा प्रजा के सम्मुख डाले तो राजा प्रजा नगरवासी स होते हैं ।

मंत्रः—ऐं क्ली ह्सौः कुडलिनी नमः ।

विधि : इस मंत्र का त्रिकाल १०८ बार जपने से कुभाग्य भी सौभाग्य हो जाता है ।

मंत्र :—पनरस सयता वसाणं दिखु दितस्स गोयम मुनिस्स उवगरणं बहु बेइ धणऊ धन्नाण सव्वाणं ॐ नमो सिद्ध चामुंडे अजिते अपराजिते किल कलेश्वरी हूं फट् स्वाहा या फुं फट् स्वाहा : इत्यस्य स्थाने स्फुट् विकट करी ठः ठः स्वाहा ऐसा भी होता है ।

विधि : इस मंत्र का स्मरण करने से मार्ग का श्रम दूर होता है ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवते क्रोध रुद्राय हन २ दह २ पच २ हहः स्वलक्रेण अमुकस्य गृहं नाशय स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से डोरा को २१ बार मंत्रीत करके ५ गांठ लगावे फिर उस डोरे को हाथ में बांधे तो सर्व उपद्रव नाश हो जाते हैं ।

मंत्र :—ॐ आं क्रों प्रों ह्रीं सर्व पुरजनं राजानं क्षोभय-क्षोभय आनय-आनय ममपादयोः पातय पातय आकर्षिणी स्वाहा ॐ नमो सिद्ध चामुंडे अजिते अपराजिते किली २ रक्ष २ ठः ३ स्वाहा ॐ नमो पार्श्वनाथाय ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्भायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ नमो णाणाय ॐ नमो दंसणाय ॐ नमो चरिताय ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवंशकरी ॐ ह्रीं स्वाहा जइतः ।

मंत्रः —ॐ व्रजसेणाय महाविद्याय देव लोकाउ आगयाय मईयति उं इंव जालु दिशि वंधं विदिशि बंधं आया संबंधं पायालं बंधं सर्व विशाउ वंधं पंथे दुप्पय वंधं, पंथे वंधं चउप्पयं घोरं आसोविसं वंधं, जाव गंथी न छुटइ ताव ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—वार ७ जपित्वा विरहिनं ग्रंथी बध्वा वामदिशि कुर्यात तांचल धुनिस्पादी वर्जयेत् ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवऊ वर्द्धमाणस्स जस्सेयं चक्कं जलंतं गच्छइ संयलं महिमंडलं पयासंतं लोयाणं भूयाणं भूवणाणं जूए वारणे वारायं गणे वा जंभणे थंभणे मोहणे सव्वसत्ताणं अपराजिऊ भवामि स्वाहा । ॐ नमो ओहिजिणाणं नमो परमोहिजिणाणं नमो खेलोसहि जिणाणं णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्राय श्री पद्मावति सहिताय ॐ मांरक्ष २ महाबल स्वाहा । ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय शिरोमणि विद्रावकाय स्वाहा ।

विधि :—पुरुषस्य दक्षिणेन स्त्रियावामेन बाहुनीया शिरोसि मंत्रः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पांचाली २ जो इमं विजं कंठे धरिइ सो जाव जीवं अहिणा नड सिभइति स्वाहा। वार २१ गुण सुप्पते

मन्त्र :—ॐ चंडे फुः।

विधि :—इस मंत्र को २१ बार पढ़कर फूक देने से बिच्छु का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—आदित्यरथ वेगेन वासुदेव बलेनच गुरूड पंक्षिनिपात्रेन भूभ्यां गछ २ महाबलः ॐ उनीलउ कविलउ भमरू पंखालउ रत्तउ बिछिउ अनंतरि कालउ एउ मंत्रु जो मणि अवधारइ सो बिंछिउ डंक उत्तारइ।

विधि :—इस मंत्र रूपमणि को जो जो धारण करता है। याने स्मरण करता है वह बिच्छू के डंक के जहर को उतार देता है।

मन्त्र :—ॐ जः जः २ कविसी गाइ तणइच्छाणि तिणिउप्पन्नी बिंछिणि पंचता हांलगिउ अठारह गोत्र बिंछिणि भणइनिसुणिहो बिंछिय विसुपायाल हुं हुं तउ आवइ जिम चडंतु तिम पडंतु छइ पायालि अभिय नव २ कुंड सो अभिउमइ मंत्रिहिं आणिउं डंकह दीधउं तइं विसु जाणिउ ॐ जः जः ३।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़कर झाडा देने से बिच्छु का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—मइदिट्ठी कल्पालिणी श्री उभयिणी मडा चोरंती ब्रह्माधी चिलवंती तासुपसा इं मइं शिवव ह्रीवलबंति त्रिभुवणु वसिकरउ।

विधि :—विधान रक्षा मन्त्रः। यहाँ अभिप्राय कुछ समझ में नहीं आया है।

मन्त्र :—काला चोला पहिरणो वामइ हथि कपालु हउं शिव भवणहनि सरी को मम चंपइ वारु वालो कपाली ॐ फूट् स्वाहा। (र. वि. मंत्र)

मन्त्र :—वंधस्स मुख करणो वासर जावं सहस्स जावेण ह्रिलि २ बिझाण तहारिउ वल दप्पं पणासेउ स्वाहा।

विधि :—कृष्ण चतुर्दशी को उपवास करके शुद्ध होकर रात्री में इस मन्त्र का १००० जप करके सिद्ध कर ले, फिर १०८ बार प्रतिदिन जपने से शीघ्र ही बंधन को प्राप्त हुए मनु का छुटकारा होता है तुरन्त ही बंधि मोक्ष होता है।

मन्त्र :—ॐ विधुजिह्वे ज्वालामुखी ज्वालिनी ज्वल २ प्रज्वल २ धग धग धूमांध कारिणि देवी पुरक्षोभं कुरु कुरु मम मन श्चिततिं मंत्रार्थं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र को कपूर चंदनादि से थाली में लिखकर सफेद पुष्प अक्षतादि (मोक्ष पूर्व) से १००० पहले जाप करे फिर नित्य प्रति स्मरण मात्र से सर्व कार्य सिद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लौं कलिकुंड स्वामिन् सिद्धिं श्रियं जगद्वश मानय स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र को कपूर चंदन केशरादि से पाटा के ऊपर लिखकर २१ दिन में प्रतिदिन १०८ बार अनशनादि तप पूर्वक जाप करे आदर पूर्वक आराधना करे फिर निश्चित रूप से अभिष्ट सिद्धि होगी। यह मंत्र चितामणी है।

मन्त्र :—ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्सौं देवि पद्मे मे सर्व जगद्वशं कुरु सर्व विघ्नान् नाशय २ पुरक्षोभं कुरु कुरु ह्रीं संवौषट्।

विधि :—इस मंत्र को लाल कनेर के फूलों से १२००० हजार जाप करे फिर चने के बराबर मधु मिश्रित गुगुल की गोली १२००० हजार बनाकर होम करने से मंत्र सिद्ध हो जायगा। इस मंत्र के प्रभाव से राजादिक वश में होते हैं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं [illegible] पद्मावति [illegible] क्षोभय क्षोभय राजानं क्षोभय क्षोभय मंत्रीणं क्षोभय क्षोभय हूं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र को भी लाल कनेर के फूलों से और लाल रंग में रंगे हुए चावल से १२००० हजार जाप करके मंत्र को सिद्ध करे। यह मंत्र भी वशीकरण मंत्र है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पिशाच रुद्राय कुरु ३ यः भंज भंज हर हर दह दह पच पच गृहन गृहन् माचिरं कुरु कुरु रुद्रो आज्ञापयाति स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र से गुगुल, हिंगु सर्षप (सरसों) सांप की केचुलि इन सब को मिलाकर मंत्र से १०८ बार या २१ बार मंत्रीत करे फिर रोगी के सामने इन चीजों की धूणी देवे तो तत्क्षण शाकिन्यादि दुष्ट व्यंतरादि, रोगी को छोड़कर भाग जाते हैं और रोगी निरोगी हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ इटिमिटि भस्सं करि स्वाहा।

विधि :- इस मंत्र से पानी १०८ बार मंत्रीत करके पिलाने से पेट का दर्द शांत होता है।

मन्त्र :—ॐ सिद्धिः चटकि वाउ पटकी फ़ुटइ फ़ूं जु न बंधइ रकुन बहइ बाट घाट ठः ठः स्वाहा। त्रिम्मादेवी चंडिका लिशिखरु लोही फूकु सुकि जाइ हरो हरः देवी कामाक्षा की आज्ञा फुरं जइ इहिं पिडिरहइ पीडा करहिं।

विधि:—इस मंत्र को अरणी कंडों की राख को १०८ बार मंत्रीत कर आँख पर लगाने से आँख की पीड़ा शांत होती है।

मन्त्र :—समुद्र समुद्र मांहि दीपु दीप माहिं धनाढयु जी दाढ़ की ऊउखाउ दाढ़ कीडउ नरथाहिल अमुक तणइ पापी लीजउ ।

विधि :– इस मंत्र से ७ बार या २१ बार (उंजने) मंत्रीत करने से दाढ़ पीड़ा दूर होती है ।

मंत्र :—ॐ उतुंग तोरण सर्प कुंडली गतुरी महादेवुन्हाइ कसणउ हलि जाइ वलिछीनउ मूसलिछीनउ कारवबिलाइ छीनउ ऊगमुखी पाठ मुखीछीनउ थावरउछीनउ कालहोडीछीनउ वराहीछीनउ वाठसीछीनउ गडुछीनउ गुव-मुछीनउ चउरासी दोषछीनउ अठ्ठासीसय व्यछीनउ छीनो-छीनी भीनो-भीनी महादेव की आज्ञा ।

विधि :—अरणी कंडे की राख को मंत्रीत करके उस भस्म को ३ या ५–या ७ दिन फोड़े के ऊपर बांधने से दुष्ट स्फोटिकादिक का नाश होता है ।

मंत्र :—आवइ हणवंतु गाजंउ गुड डंउ बाजामोगरिउ आछा कांब रखंउ हाथमोडउ पायमोंडउ चउथि काटइ चउथि उतारइ रक्त श्रुल मुख श्रुल सवे श्रुल समेटि घालिवा पुप्रंचइ हणुमंत की शक्तिः ।

विधि :– इस मंत्र से पानी २१ बार मंत्रीत करके पिलाने से और शूल प्रदेश में लगाने से अजीर्ण विशूचिका शूलादि की शांति होती है । स्त्री के प्रसव काल में इस मंत्र से मंत्रीत पानी पिलाने से तत्क्षण प्रसव होता है ।

मंत्र :—एडा पिंगला सुख मिना जडा बीया नाडी रामु गनु सेतु बंधि सुख बंधि मुखा खाइ बंधि नव मास थंभू दशमइ मुक्ति स्तंभू ३ ।

विधि : - इस मंत्र से कन्या कत्रित सुत्र को स्त्री के बराबर नाप कर ले फिर ९ नो लड़ करके २१ बार मंत्रीत करके उस डोरे को स्त्री की कमर में बांधे तो गर्भ का स्तंभन होता है और नो मास की पूर्ति हो जाने पर कमर में बंधा डोरा को खोल देने से तुरन्त प्रसव हो जाता है ।

मंत्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रांको चक्र वेगेन घटं भ्रामय-भ्रामय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः जः जः ॐ चक्रवेगेन घटो भ्रामय भ्रामय स्वाहा ॐ भ्रकुटि मुखी स्वाहा ॐ हिमल वंर्ज स्वाहा ।

विधि :– घट भ्रामण मंत्र –

मंत्र :—ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्र वेगेण शंख वेगेन घटं भ्रामय भ्रामय स्वाहा हो ही होरी सणरीसो अदमदपुरी सोडग मएवर्याइउ दिउ दक्षिण दिशा

हागी लगा महादेवी किली २ शब्दं जंकार रूपीं अदमद चक्रि छिन्नो २ मडाशिनि छिन्नि २ कंचोडती छिन्नि २ अदमद सामिणि छिन्नो हो ही होरी सणरी सो पर पुरुष दिवायर भंजइ मुव्रयसयाइं तिहिं बारि हिंयइं संताई कंपइं बहुविह सायरत्ते कम्मइं परिहरहुं रायकं पावंती चिगि चिगाइं कंवोडी डाइणि फाडइ सिहोहो होरी सणरीसोविष नासणि हर चक्रि छिन्नी सुदरशणि।

विधि :—इस मंत्र से गुगल मंत्रीत करके धूप देने से जो भी बाधा होगी वह प्रकट होगी। अगर भूत की बाधा होगी तो आग में मन्त्रीत गुगल को डालने से कड़वी बदबू आयेगी, चमड़े की गंध आवे तो शाकिनी बाधा, धुसरभि की गंध से योगिनी बाधा।

मंत्र :—ॐ नमो भगवइ कालि २ मरुलि काक चंडालि ठः ठः।

विधि :—इस मंत्र को ७ बार मंत्रीत (जाप) करके गोबर से मंडल करे।

मंत्र :—ॐ नमो ब्रह्मदेवश्वराय अरे हरहि मरि पुंडरि ठः ठः।

विधि :—इस मंत्र को १०८ बार जप कर (शाल्योदन सत्कामधु घृत) मिश्रित करके पींड ३ स्थापन करे फिर प्रथम डंभ : द्वितिये मृदु तृतीये अंगारा : कल्पभीया : प्रथमे काक पाते शोघ्रं वर्षति द्वितीय पक्षेण तृतीये न वर्षति।

मंत्र :—ॐ ब्रह्मणि विश्वाय काक चंडालि स्वाहा। (काकाह्वान मन्त्रः)

मंत्र :—काम रूपी विपइ संताडावइ परवइ अछइ कोकिलउ भइखु अजिउ सुकोकिलउ भइखु पहिरइ पाऊचडइ हांसि चडइ कंहा जाइ श्री उजेणी नगरी जाइ उजेणी नगरीछइ गंध याम सणुता हुंछइ सिद्धवटु सिद्धवट हे द्विवल इछइ चिहाचिहां वाडइ मडउं महाहाथि छइ कपालु कपालियंतु यंत्रि मन्त्रु मन्त्रि कामतुं कामइं नामतुं नामइ ऐं क्लीं शिर धूणय २ कटिकंपय२ नाभि चालय चालय दोषतणा आठ इ महादेवी तणें वाणे हणि हणि खिलि खिलि मारि मारि भांजि २ वायु प्रचंडु वीरु कोकिल उभइर सु जः जः लुः लुः।

विधि :—इस मंत्र को सात बार जपने से दोष नहीं (प्रभवति) प्रकट होगा।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु पिशुन चक्षु २ डाकिनि चक्षु २ साकिनी चक्षु सर्वलोक चक्षु माता चक्षु पिता चक्षु अमुकस्य चक्षु दह दह पच पच हन हन हूं फट् स्वाहाः।

विधि :—यह मन्त्र २१ जपे (कलवाणी मन्त्र)।

मन्त्र :—ॐ चिकिचि णि स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से भस्म (राख) को २१ बार मन्त्रीत करके चारों दिशाओं में फेंकने से मशका नश्यन्ति।

मन्त्र :—ॐ ठों ठों मालंगे स्वाहा।

विधि :— इस मन्त्र से सरसों २१ बार मन्त्रीत करके डालने से चूहे नष्ट हो जाते हैं।

मन्त्र :—ॐ स्वाहा।

विधि:— इस मन्त्र से कन्या के हाथ का सूत कता हुआ ७ बार मन्त्रीत करके खटिया के बांध देने से खटमल नष्ट हो जाते हैं।

मन्त्र :—ॐ हुर हुर भमर चक्षु स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रीत करके २१ बार, फिर खावे तो दांत के कीड़े नाश होते हैं।

मन्त्र :—ॐ क्ल्व्यूं क्लीं क्लें शिनि सर्व दुष्ट दुरित निवारिणि हूं फट् स्वाहा। ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृत वाहिनी अमृतं श्रावय २ सं सं ह्लं ह्लं क्लीं २ ब्लुं २ द्रां द्रीं दुष्टान द्रावय २ मम शांति कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु दुःखमपनय २ श्री शांतिनाथ चक्रेन अमृत वर्षिणी स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार जपे। (कलवाणी मन्त्र)

मन्त्र :—ॐ समरि समरि सिद्धी समरी आतुरि आतुरि पूरि पूरि नाग वासिणि तं अत्थि वासिणी आकासु बंध पातालु बंधु दिशि बंधु अवदिशि बंधु डाकिणि बंध शाकिणि बंध बंध बंधेण लंकादही तेण हणु एण लोहेन।

विधि :— इस मन्त्र को २१ बार जपने से सर्व उपद्रव शान्त होते हैं। (कलावानी कुते)

मन्त्र :—ॐ हिमवंत स्योत्तरे पार्श्वे कंठ कटी नाम राक्षसी तस्यानूपुर शब्देन मकुणा नश्यंतु ठः ठः स्वाहा।

विधि :— इस मन्त्र से कीड़ा-कीड़ी नाश होते हैं।

मन्त्र :—युधिष्ठर उवाचेत्पधिकंच असे वते कार्य सिद्धे विसवंतो अजोन भाहु किलिकिनिपातेसु गुदिनिपातेसु वातहरिसेसु पीत्त हरीसेसु सिलेसम हरिसेसु

ब्राह्मणो चत्वारो गाथा भणंती कालो महाकाली लिपिसिपि शारदा भयं पंथे।

विधि :—अर्श उपशम मन्त्रः हरिश स्थानेषु श्र्लोषारणे सति श्र्लोषशम मन्त्रः।

मन्त्र :—आउभूत जीव आकाशे स्थानं नास्ति ॐ असि आउसा ॐ नमः (श्रैयामन्त्र)

मन्त्र :—ऐं क्लीं ह्सौं (योनी, नाभि, हृदय, स्थाने वामा नां वश्यं ललाट मुख वक्षसि नृणां वश्यं)

मन्त्र :—ॐ नमो चामुडा फट्टे फट्टेश्वरी।

विधि :—अनेनतं लं, मुट्ठी, च वार ७ प्रदक्षिणा वर्त ७ वामा वर्त्त चाभि मंत्र्यत्तत स्तेलेन टिलककं करणीयं मुठयां चूर्ण कृत्वान नस्युदेया।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं अंबिके आं क्रों द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः ह्मक्लीं नमः ॐ ह्रीं ह्ः श्रीं स्वाहा ॐ ह्रूं मम सर्वदुष्ट जनंवशो कुरु कुरु स्वाहा ॐ नमो भगवत्ते रिषभाय हनि हनि ले।

विधि :—इस मन्त्र को प्रातः १०८ बार स्मरण करने से सुन्यतादि सर्व रोग शांत होते हैं।

मन्त्र :—ॐ सां सूं सें सः वृश्चिक विषं हर हर सः।

विधि :—अनेन बार २१ खटिकायामभि मंत्रितायां वृश्चिकं उतरति।

विधि :—इस मन्त्र से खटिया को २१ बार मन्त्रित करने से बिच्छु का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ ऋषभाय हनि हनि हना हनि स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार या १०८ बार जपने से कषायेन्द्रिय का उपशम होता है, विशेष तो निद्रा, तन्द्रा का नाश करने वाला है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंडे २ अमुकस्य आपात्त रक्षणे अप्रतिहत चक्रे ॐ ह्रीं वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणे वीरे जयंते अपराजिए हूं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं महाविद्ये आर्हसि भागवति पारमेश्वरी शांते प्रशांते सर्व-क्षुद्रोपशमेनि सर्वभयं सर्वरोगं सर्वक्षुद्रोपद्रवं सर्ववेला ज्वलं प्रणाशय २ उपशमय २ सर्व संघस्य अमुकस्य वा स्वाहा ॐ नमो भगवऊ संतिस्स सिध्यउ में भगवइ महाविद्या संत्ति संत्ति पंसत्ति पंसत्ति उवसंत्ति सव्वपाव-पसमेउ सव्वसंत्ताणं दुपय चउप्पयाणं संति देश गामा नगर नगर पट्टण खेडेवा रोगियाणं पुरिसाणं इत्थीणं न पुंसयाणं अट्ठसयाभि मंतिएणं धूप पुष्प गंध माला ल कारेणं संति। कायव्वा निरुवसग्गं हवइ ३।

विधि :– ऐते स्त्रिभिरपिवासा जलं च प्रत्येक मष्टोत्तर शतं वारान् अभिमंत्र्याः यदा स्वरफल्गुकं भवति तदा प्रत्येकं बार २१ अभिमंत्र्यः हस्तवाहनं च।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय वज्र स्फोटनाय वज्र वज्र एकाह्निक रक्ष रक्ष द्व्याह्निकं रक्ष रक्ष त्र्याह्निकं रक्ष रक्ष चातुर्थिकं रक्ष रक्ष वात ज्वरं पित्त ज्वरं श्लेष्म ज्वरं संन्निपात्र ज्वरं हर हर आत्म चक्षु परचक्षु भूत-चक्षु पिशाच्च चक्षु शाकिनि चक्षु डाकिनी चक्षु माता चक्षु पिता चक्षु ठठारिच्च मारि व रुडिकल्लालि वेसिणि, छीपिणि, वाणिणि, खत्रिणि, बंभणि, सु नारिं सर्वेषां दृष्टि बंधि बंधि गति बंधि २ ऊडोसिणि, पाडोसिणि, घरवासिणि, वृद्धियुवाणि, शाकिणिनां हन हन दह दह ताडय ताडय भंजय भंजय मुखं स्तंभय २ इलि मिलि ते पार्श्वनाथाय स्वाहा।

विधि :—अनेन प्रत्येकं गुणणा पूर्व पंचसप्तवा ग्रन्थयो वध्यन्ते।

मन्त्र :—ॐ क्षु।

विधि :—इस मन्त्र से माथे का रोग दुखना शान्त होता है।

मन्त्र: —ॐ ह्रीं चंद्रमुखि दुष्ट व्यंतर रोगं ह्रीं नाशय नाशय स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से २१ बार अक्षत (तन्दूल) श्वेत मंत्रीत करे दुष्ट व्यंतर कृत रोग शांत होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते सुग्रिवाय कपिल पिंगल जटाय मुकुट सहस्र योजनाय आकर्षणाय सर्वशाकिनिनां विध्वंशनाय सर्वभूत विध्वंशनाय हणि २ दहि दहि पचि पचि छेदि छेदि दारि दारि मारि२ भक्षि भक्षि शोषि शोषि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि स्वर्गि इंदु पाताली वासुगि अट्ठ कोडि भूतावलि जोहि जोहि मोहि मोहि उच्चाटि उच्चाटि स्तिंभि स्तिंभि बंधि बंधि हूं फट् स्वाहा।

विधि :—७ बार स्मरण करने से भ्राशान प्रभवति।

मन्त्र :—ॐ अंगे वंगे चिर चंडालिनी स्वाहा।

विधि :—अनेन बार ७ अभिमंत्रीतयो गोमूत्र घृष्टया गुटिकाया चक्षु रंजने वेलोय शाम्यति।

मन्त्रः—ॐ सोखाऊ साऊ छिन्नउं तडाकु छिन्नउं पडडाकु छिन्नउं गद होडी फोडी छिन्नउं रक्त फोडि छिन्नउं रक्तफोडि कउणि उपाइ देवी नारायणि उपाइछिन्नउं

भिन्नउं अर्जुन कइवाणि नार सिंह कइ मंत्री म्हारइ हाथि शरीर विसइ नाथि चउसट्ठि सह दोष नाथि बावन्नसइ लोंट नाथि आणि आणि कट्टि कट्टि सोखाम्हारउ बुतउं कीजइ काटि फोडी पासिधरजइ अइसउ सोखा तुंबलि वंतउ लायउ लग्गइछदुवियउ छदु इ फूटउफदु उ घाइ लग्गइ वायुसोखाचेट की शक्तिए एमंत्रेन जाहि अस्मेन लहुइउ हंसा ठाउउ उच्चरइ संमुद्रहतीरि पंखपसारइविसुहुडइ अइं अहभरइ शरीरुउ सर्वदिसपसरु हंस समुजीव परिवसइ विद्रूनास्ति विसुज फोडी छिन्नउं काली फोडी छिन्नउं कविलि फोडि छिन्नउं लोही फोडि छिन्नउं राती फोडी छिन्नउं लुय छिन्नउं पाणि-यलुय छिन्नउं ॐ सुकवण सुकु ॐ हत्तइ संकरु मच्छइ बह्मा टोपइ उट्ठु उट्ठु वइसु वइसु सुकइ करइ कूडि सिरी नाइं गयउ देउ जय जया विजया जेण तेण पंथेण कट्टि धल्लिर्वरिवेडा जइन कट्टि घल्ल इंत महादेव की भार संकल तूपडइ फोडी वेश्वानर तोडी नीस्वरिहि किनीस्वार हू कि वेश्वानरि प्रज्वालउं वज्र स्वावियउं मूलि जिस्व धूलि छलि छिदि छम्मि कालु रुद्र अग्नि उप्पुड हुइ जइ इवु पिडिरह इज फोडी सिवनास्तिविसु ।

विधि :—अनेन मंत्रेण लूतादि फोडी वार ७/२१ (उंजिता श्रुप्यति) मंत्रीत करने से लूता-दिक से होने वाले फोड़े-फुन्सी शांत होते हैं ।

मन्त्र :—ह्रूं क्षे रक्षे खः स्त्रीक्षे ह्रूं फट् ।

विधि —लक्ष जाप्यान् मोक्षः ।

मन्त्र :—ॐ इति तिटि स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार भणित्वा त्रिकालं हस्त बाहनं कार्य कारव बिलाइ पीडा नाशयति ।

मन्त्र :—लूण लूणा गरिहि उप्पन्नउं जोगिणिहिउपायउ जाहि गलिनि उरला-चिकलिजमण्यु देखिन सवकइ सुवामिय पातालि ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार मन्त्रीत करके जिसके नाम से खावे वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ अरहंत सिद्ध सयोगि केवलि स्वाहा । ॐ आइच्चु सोमु मंगल बुद्ध गुरु सुक्को शनि छरो राहु केतु सव्वे विगहा हरंतु ममविग्घरोग चयं ॐ ह्रीं अच्चुप्ते मम श्रियं कुरु कुरु स्वाहा आहिय सराहिया हः म्हः यः यों हु वः ऊहः ।

विधि :—इस मन्त्र से धूली (मिट्टी) को ५ या ७ बार मन्त्रीत करके, दुष्ट के सामने डालने से दुष्ट उपशम हो जाता है और वश में हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रः ह्रः हंसः सः सः हंसः षषः हंसः रः रः हंस झः झः हंसः जागु हंसः ह्रः ह्रः।

विधि :—अनेन ऊंजनेन कल्पानीये च कालदष्टो जिवति एते स प्रत्ययाः।

मन्त्र :—ॐ भगमालिनी भगवते ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा।

विधि :—वस्त्र, पुष्प, पान आदिक मन्त्रील कर देवे तो वश में होता है।

मन्त्र :—ॐ जंभे थंभे दुट्ठमंथं भय मोहय स्वाहा।

विधि :—वासाधूपो जलंवा २१ बार अभिमन्त्र्यते।

मन्त्र :—ॐ आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु शाकिनी चक्षु डाकिनी चक्षु पिसुन चक्षु सर्व चक्षु ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से झाड़ा देने से नजर लगने वाले का दृष्टि दोष दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ दीट्ठि विसुअ ढीट्ठि विसुथावर विसु जंगम दिसु विसु विसु उपविसु उपविसु गुरु की आज्ञा परमगुरु की आज्ञा स्फुरउ आज्ञा स्फुरत्तर आज्ञा तीव्र आज्ञा तीव्रतर आज्ञा खर आज्ञा खरतर आज्ञा श्री का जल नाथ देव की आज्ञा स्फरउ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से दृष्टि दोष उतारा जाता है।

मन्त्र :—पार्श्वोपर्वउ त्रिशुलधारी शुल भंजइ शुल फोडइ तासुलाय जय।

विधि :—इस मन्त्र से पेट पीड़ा का नाश होता है।

मन्त्र :—हिमवंतस्यात्तरे पार्श्वे अश्वकर्णो महाद्रुमः तत्रेव शूला उत्पन्ना तत्रैव प्रलयं गता।

विधि : शूल नाशन मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ पंचात्मा्थ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार मन्त्रीत करके, ज्वर ग्रस्त रोगी की चोटी में गांठ देने से ज्वर बन्धन को प्राप्त होता है।

मन्त्र :—ॐ हुं मुञ्च स्वाहा ।

विधि : – इस मन्त्र से शाकिनी दोष से रक्षा होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय सर्व भूत वशं कराय किन्नर किंपुरुष गरुड गंधर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच शाकिनी डाकिनीनां आवेशय आवेशय कट्टय कट्टय घुर्मय घुर्मय पात्रय पात्रय शीघ्रं शीघ्रं ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः फट् ५ यः ५ वज्र तुंडोमहाकायैं वैश्व ज्वलित लोचन गजदंड निपातेन् चन्द्रहास खङ्गेन भूम्यांगच्छ महाज्वर स्वाहा । (ज्वर वाहन क० मन्त्रः)

मन्त्र :—ॐ नमो अप्रति चक्रे महाबले महावीर्ये अप्रतिहत शासने ज्वाला मालोद्भ्रान्त चक्रेश्वरे ए ह्रं हि चक्रेश्वरी भगवति कुल कुल प्रविश प्रविश ह्रीं आविश आविश ह्रीं हन हन महाभूत ज्वरार्ति नाशिनी एकाहिक द्वाहिक त्राहिक चातुर्थिक ब्रह्मराक्षस ताल अपस्मार उन्माद ग्रहान् अपहर अपहर ह्रीं शिरोमुंच २ ललाटं मुंच मुंच भूजं मुंच २ उदर मुंच २ नाभिमुंच २ कटि मुंच २ जंघां मुंच २ भूमिं गच्छ २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेन ज्वरिणि हस्तं भ्रामयित्वा ज्वर प्रमाणात्रि गुण कुमारीसूत्र दवरक अमु बार २१ जपन वेला ज्वरे ग्रन्थि सात एकांत रादौ २ दत्वा स्त्रीणां वामे बाहौ पुरुषस्य दक्षिणे बंधयेत् प्रथमं दवर करय कुंकुम धूप पूजा कियते ।

मन्त्र :—ॐ यः क्षः स्वाहा कुमारी सूत्रस्य नवतं तवः पुरुषमानेन गृहीत्वाऽनेनाभि मंत्र्यस गुडां गुटिकां कृत्वा भक्षयेत् घृतं वा अनेन बार १०८ अभिमंत्र्य-पिवेत् बालको नश्यति ।

मन्त्र :—काच माचि केघ्यिटि स्वाहा ।

विधि :—अणेन चणका वर्णोपलानि वा सूइ वाडभि मंत्र्यते कामल वातं नाशयनि ।

मन्त्र :—ॐ श्री ठः ठः (हिडु की मन्त्र :)

मन्त्र :—ॐ सोय ज्वर उण्ण ज्वर वेल ज्वरवाय ज्वरपमूह रोगे व उवसमेउ संतित्तिथयरो कुणउ आरोग्गं स्वाहा । (वार २१ स्मरणीया)

विधि :—इस मंत्र को २१ बार जाप करने से हर प्रकार के ज्वर नाश होते हैं।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रं्लांजिनदत्ताचार्य मंत्रेण अष्टोत्तर शत व्याधि क्षयं यांतु ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र से कन्या कत्रीत सुत्र को ७ वड करके १०८ या ७ या २१ मंत्रीत करके डोरे में ७ गांठ लगावें फिर ज्वर पीडा ग्रसीत व्यक्ति के हाथ में या कमर में बांधने से ज्वर गड गुमडादि सर्व दोष नाश को प्राप्त होते हैं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड स्वामिन् अ सि आ उ साय नमः।

विधि :—इस मंत्र से कुमारी कत्रीत सूत्र को १०८ मंत्रीत करके और डोरे में ६ गांठ लगावे और कमर में बांधे तो गर्भ रक्षा भी होता है और गर्भ मोचन भी होता है। ध्यान रखे कि गर्भ रक्षा के लिये डोरा मंत्रीत करना हो तो मंत्र के साथ २ गर्भ रक्ष २ बोले और गर्भ मोचन करना हो तो गर्भ मोचय २ मंत्र के साथ बोले तो कार्य हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं ॐ णमो उवज्झायाण ॐणमो सव्वसाहूणं एय पंचणमोक्कारो चउबीसमण्यउ आयरिय परं परागय चंदसेण खमासमणाणं अत्थेणं सुत्तेणं वाड़ीणं वत्तीणं जरक्खाणं रक्खसाणं पिसायाणं चोराणं मुख बंधाणं दिट्ठी बंधाणं पहारं करोमि ह्रौं ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र से पानी मंत्रीत करके उस पानी को दिशोदिशा में फेंकने से दृष्टि दोष शांत होता है।

मन्त्र :—ॐ उजेणि पाटणि को कासु नामवाडहिउ रक्तवाउ छिदउ ताउ छिदउ सूधउली छिदउ फोडि छिदउ फोसली छिदउ दृष्टि छिदउ शोफु छिदउ ग्रंथि छिदउ २ अनादि वचननेन छिदउ रामण चक्रेण छिदं छिदं भिद भिद ठः ठः शिरोत्तौ शिरोति छिदउ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को बोलता जाय और हाथ से छुरी पकड़ कर उस छुरी के अग्र भाग को छेदानुकार से घुमावे तो माथे का रोग, फोड़े, फुन्सी का रोग शान्त होता है, किन्तु छुरी को फोड़े के ऊपर घुमाना पड़ेगा।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय सप्तफण विभूषिताय अपराजिताए ॐ भ्रम २ रम, वज्र वज्र आकट्ट आकट्ट अमुकस्य सर्वग्रहान् सर्व

ज्वरान् सर्व भूतान् सर्व लूतान सर्व वातान् सर्वोपद्रवान् समस्त वैडाकिन्यो हन हन त्राशय त्राशय क्षोभय क्षोभय विज्ञापय विज्ञापय श्री पार्श्वनाथो आज्ञापयति ।

विधि :—अनेन बार ७/७ गुण्या ग्रन्थि दीयन्ते अयं मन्त्र खटिकया प्रथमं नव सरावे नेह्य: द्वितीय शरावे चाम विछिन्न खटिकया एवं विधं ठ कारत्रयं लिखित्वान्नं शरावं अधोमुखं उपरि निवेश्य कुमारी सूत्रेण द्वयमपि वेष्टयित्वा सु विधानेन मंचकाधो धरणीयं धूपादिना पूजनीयं नैवद्यं च दातव्यं सर्वरोग निवृतिः ।

मन्त्र :—**ॐ श्रीं ह्रीं रक्तं रक्तं स्वरा इदं कटोरकं भ्रामय भ्रामय स्वाहा ।**

विधि :—श्रावक गृहानीत भस्मना बार ७ परिमार्जयित्वा मंडले स्थाप्यत्ते पूजादिकं विधियते ।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवतेन कृताय व्याघ्र चर्म परिर्वासित शरीराय यो यो या जपेयो भवति सोऽस्मिन्पात्रे प्रवेशय प्रवेशय सर सर प्रसर प्रसर चल चल चालय चालय भ्रम भ्रम भ्रामय भ्रामय यत्र स्थाने द्रव्यं स्थापितं तत्र तत्र गच्छ गच्छ स्वाहा ।**

मन्त्र :—**रागाइरिउ जई णं जए जिणाणं नमो महं होउ एयं ऊहि जिणाणं परमोहीणं पितंपित्तहा एव मणं त्तोहीणं णंताणं तोहि ज्जयजिणाणं नमो सामन्न केवलिणं भवा भव थाणते सित्तहा सित्तहा उग्रतव चरण चारीण मेवमितो नमो मंह होउ चउ दस दस पुव्वीणं नमो तहिक्कार संगंमि ।**

विधि :—सव्वेसि ए ए सि एवं किच्चा ग्रहं नमुक्कारं जभियं विज्जं पउंजेसामे विद्यापसि ज्जिज्जा ।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवऊ बाहुबलि स्सेहपगह सवणिस्सं ॐ वग्गुं वग्गुं निवग्गु मग्गंगयस्स सया सोमेविय सोमण सेम हम हुरे जिन वरे नमं सामि इरिकालि पिरिकाली सिरिकाली तह महाकाली किरियाए हिरियाएय संग एतिविह कलियंविरए सुहुमाहप्पे सव्वे सांहले साहुणो वंदे ॐ किरि किरि कालिं पिरि २ कालिं चसिरि २ सकालिं हिरि हिरि कालिपयं पिय सरिध सरे आयरिय कालिं न किरिमेरिं पिरिमेरिं सिरि मेरिं**

सरिय ह्रीहिरि मैरिं आर्यरियमेरिपय मपि साहंते सूरिणो सरिमो ६ इयमंत पय समेया थुणिया सिरिमाण देव सूरीहि जिणसिद्ध सूरि पमुहा दितुथुण ताएण सिद्धिपयं ॥१०॥

मन्त्र :—ॐ नमो गायमस्ससिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीणं महाणिसस्स पत्तं पूरय पूरय स्वाहाः । ॐ दिट्ठी मखा विलट्टी श्री उज्जेणीमउ चरंती ब्रह्मधीय वलवंती तासु पसाइं अम्ह सिद्धि लद्धि बलं त्रिभुवनं वशीकरं (आत्मरक्षा मन्त्र) उच्चिट्ठीवर प्रसादात् सर्व सिद्धी तरकणा होइ शांतिदेव की आज्ञा फुरइ ।

मन्त्र :—ॐ एकवर्ती सीसवर्ती पंच ब्राह्मण पंचदेव गरुडनी कंचुली पहिरइ मनुनि धंतु बालु बालिहिं विछिय हवालह नदी प्रवेसु हाथ रक्खउ पागरक्खउ बलिशंकर जीउ राखउ नारसिहणउ बंधु पडइ श्री स्वामिनीणी आज्ञा फुरइ ।

विधि :— वज्र तारावर प्रसादात् सर्वसिद्धि तरक्कणा होइ शान्ति देवतणी आज्ञा फुरइ ।

मन्त्र :—कालीनागिणी मुहिवसइ को विस कटउ रवाइ अंगि अंगि अम्हहरू बसइ कोसंमुहउ न ठाइ ।

विधि :— इस मंत्र को ३ बार पढ़कर अपने वस्त्र के अन्तिम छोर पर बायें हाथ से गाँठ लगावे तो मार्ग में किसी प्रकार का भय नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्षीण महाणसस्स तर २ ॐ अक्खीण महाणसस्स स्वाहा ।

विधि :—स्मरण मात्र से ही लाभ करता है ।

मन्त्र :—ॐ अट्ठे मट्ठे चोर घट्ठे सर्व दुष्ट भक्षी मोहीनी स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र से पत्थरों को मन्त्रीत करके दशों दिशाओं में फेंकने से चोरों का भय नहीं होता है ।

मन्त्र :—आइवंसे चाइ वंसे अच्चग्गलियं पच्चग्गलियं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को स्मरण करने से मार्ग में भय नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ धनु धनु महाधणु २ कट्टि ज्जंतंसयं न देइ आरोपित गुणं ।

विधि :—धनुमार्गे लिखित्वा एनं मत्रं मध्येविन्यस्य वामपादेनाहत्य गच्छेत् चोर भयं न भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं गरुड ह्रीं हंस सर्व सर्प जातीनां मुख बंधं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार स्मरण करने से १ वर्ष तक साँप नहीं काट सकता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सर्वग्रहाः सोम सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहित्ताः सानु ग्रहा में भवंतु ॐ ह्रीं असि आउसा स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का स्मरण करने से प्रतिकूल ग्रह भी अनुकूल हो जाते हैं ।

मन्त्र :—इन्द्रस्स वज्रेण विष्णु चक्रशतेन च काका सकुठारेण अमुकस्य कंठान् छिव छिद भिद भिद हुं फट् स्वाहा । (कांठा मन्त्रः)

मन्त्र :—ॐ क्षंध्यं अरुणोदय अमुकस्य सूर्यावर्तं नाशय नाशय ।

विधि :—कालातिलराती करडिदर्भरक्त चन्दन फूलः २१ सूर्यावर्त नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ फों फां वो भों मों क्षों यों फट् स्वाहा ।

विधि :—लूतागर्दभादीनां डाकिनीनां भूतपिशाचानां सर्वग्रहाणां तथा ज्वर निवर्त्तको मन्त्रः ।

मन्त्र :—हिमवंतस्योत्तरे पार्श्वे सरधानामयक्षिणी । तस्मान्नूपुरशब्देन विशल्या भवति गुर्विणी ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जल मन्त्रीत करके गर्भिणी को पिलाने से प्रसुति सुख से हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्र ह्रः लूह लूह लक्ष्मी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चना को मन्त्रीत करके खिलाने से कामल रोग नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सवराय इलिमिलि स्वाहा । (शिरोर्ति मन्त्रः)

मण्त्र :—ॐ ह्रीं क्षीं क्लीं आवेशय स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण सर्व विषये हस्त भ्रामण । इस मन्त्र को पढ़ता जाय और रोगी पर हाथ फेरता जाय तो सर्व प्रकार के विष दूर होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्षः उर्द्ध मुखी छिद छिद भिद भिद स्वाहा । (कलवाणी मन्त्रः) ।

मन्त्र :—डुंगर उप्परिरि सिमुयउ सो अप्पुत्रु यराउ तसु कारणि मइ पाणिउ दिन्नउ फिहउ सूरिय वाउ ।

विधि :—इस मन्त्र से सूर्यवात दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ क्षों क्षौं क्षौं हः।

विधि :—इस मन्त्र से सिर दुखना ठीक होता है।

मन्त्र :—ॐ वः ॐ सः ॐ ठः स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र से मक्खियां उपद्रव नहीं होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो नमस्त्रित्तये ऊंदर ऊंदर हुर हुर कर कर चर चर भूवि देसि देसि दास पुरलु ठः ठः अनगार से वितेकुर्वरसंहर संहर सर्व भूत निवारिणी क्लीं म्लीं क्लीं उत्तालि कालि कालि स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से अपस्मार रोग दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ वज्र दंडो महाकाय वज्रपाणि महाबलः तेन वज्र दंडेन् भूमिं गच्छ महाज्वरे ॐ नमो धर्माय ॐ नमो संघाय ॐ नमो बुद्धाय ॐ मनं मनं एकाहिक द्वाहिकः त्र्याहिक चातुर्थिक वेलाज्वर वातिक पैत्तिक श्लेष्मिकः। संन्निपातिक सर्व ज्वरान् अमुकस्य ज्वरं बंधामि ठः ठः।

विधि : इस मन्त्र से फल व पानी मन्त्रीत कर खिलाने से बुखार दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ हिमवंतस्योत्तरे पार्श्वे कपिलो नाम वृश्चिकः तस्य लांगुल प्रभावेन भूम्यांपतउ महाविष।

विधि :—इस मन्त्र से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ क्ष्वीं श्रीं प्रदक्षिणे स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षः।

विधि :—इस मन्त्र से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रों ठः ठः ठः अष्टादश वृश्चिकाणां जातिं छिंद छिंद भिंद भिंद स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र से झाडा देने पर बिच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ अमृत मालिनीं ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—ॐ खुर-खुर्दन हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—२१ बार फेरा चउसद्धिदातव्याः ।

मन्त्र :—ॐ क्षिय पक्षियः ३ निर्विषी करणं स्वाहा ।

विधि :– इस मन्त्र से बिच्छू का जहर उत्तर जाता है

मन्त्र :—ॐ हृदये ठः ।

विधि :—इस मन्त्र का ललाट पर ध्यान करने से बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ आगिं संकरू पाच्छी संकरू चालि संकरू हउ सिउ सिउ संकरू जइरे बीछिय अचल सिचल बलसि चंडिकादेवी पूजपाइ टालसि वृश्चिक खी भरिवि खप्परू रूहिर मदमांस कर कुकरू डोरिय उडक्कस हुने उरूगही रउतहि चडि मोरिलु नीसरइ जोगिणी नयणाणां वुत खिखिणि खिरत्त पालुखिणि खखीछिय खः खः ।

विधि :—इस मन्त्र से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय अमुकस्य कंठकं छिद छिद भिद भिद ठः ठः स्वाहा । यह कंठक् मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार पढ़े ।

मन्त्र :—ॐ विसुंधरी ठः ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार हस्त वाहनं श्वान विषोत्तार मन्त्रौ ।

मन्त्र :—ॐ विश्वरूप महातेजरुः २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से अक्कं विष दूर होता है ।

मन्त्र :—आदिउ आवितपुतु अर्कं जट मउडधरु लयउ मुष्टिह घउयष्टि रेजः ।

विधि :—इस मंत्र से अक्कं विष दूर होता है ।

मन्त्र :—हिमवंत नाम पर्वतो तिणिहालिउ हलु खेडइ सुराहिका पुत्र तसु पाणिउ देसु उल्लहि सिज्जमइं सुज्जावत्तउ ।

विधि :—अनेन बार ७ उंजनमपि क्रियते ।

मन्त्र :—गंग वहंती को धरइ कोतहि मत्तउहथि मइ वइ संदरू थांभिय उमहु परमेसरु हथि ता ती सीयली ठः ठः ।

विधि :—इस मंत्र से अग्नि स्तभन (भवति) होती है।

मन्त्र :—कुंतिकरो पांच पुत्र पंचहि चउहि केदारी तिण्हु तँडतह महिपडइ लोहिहि पडइ ऊ सारु तातीसीयली ठः ठः ।

विधि :—इस मंत्र से दिव्य अग्नि भी शांत होती है।

मन्त्र :—लइ **मविया वामह (थ) छम्मि कहिया जाहि दव दंतिए मवीय ऋद सएणं भाणिय भार सहस्सेण वंधोहि वसवविस पडिय मचडिय ॐ ठः ठः स्वाहा ।**

विधि :—अनेन वार २१ कुसरणी अभिमंत्र्यते।

मन्त्र :—हिमवंतस्योत्तरे पारे रोहिणी नाम राक्षसी तस्यानाम ग्रहणेन वलिरोगं छिदामि पणरोगं छिदामि ।

विधि :—गल रोहिणी मंत्र।

मन्त्र :—ॐ कंद मूले वारण गुण वाणधणुह चडावगु ह चडावगु निक्कवाय सर जावन छिप्पइराव ।

विधि :—यह सरवायु मंत्रः। (इस मंत्र से धनुर्वात ठीक होता है)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लौं कलिकुंड दंड स्वामिन् सिद्धि जगद्वशं आनय आनय स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को प्रातः अवश्यमेव २१ या १०८ बार स्मरण करके भोजन करे तो इस मंत्र के प्रभाव से सौभाग्य की प्राप्ति आपदा का नाश राजा से पूजित लक्ष्मी का लाभ, दीर्घायुः शाकिनी रक्षा सुगति की प्राप्ति। यदि जाप करते हुए छूट जाय तो उसका प्रायश्चित,एक उपवास करना चाहिए। अगर उपवास करने की शक्ति न हो तो जैसी शक्ति हो उस मुताबिक प्रायश्चित अवश्य करना चाहिए और फिर जपना प्रारम्भ करे। जीवन भर इस मंत्र का स्मरण करे और गोप्य रक्खे किसी को बतावे 'नहीं' तो देव गुरु के प्रसाद से सर्व कार्य स्वयं सफल हो जायेंगे। और सुगति की प्राप्ति होगी।

मन्त्र :—ॐ रक्ते विरक्ते स्वाहाः ।

विधि :—(छेति उतारण मंत्र)

मन्त्र :—ॐ रक्ते विरक्ते तखाते हूं फट् स्वाहा। (लावणोत्तारण मंत्रः)

मन्त्र :—ॐ(प) क्षिपस्वाहायः हुं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से दुष्ट वर्ण शान्त होते हैं।

मन्त्र :—ॐ वंक्षः स्वाहा (गड मन्त्रः)

मन्त्र :—नीलीपालिलि कविलउ वडुयउ कालउजंबुचउ विहुभांडु पृथ्वी तण इपाणी लीजिसिजइ गिडिसि पावसि ठः स्वाहा।

विधि :—अनेन वार २१ गंडोऽभिमंत्र्यते एतदभिमंत्रितेन भस्मनाऽक्षि भ्रक्ष्यते।

मन्त्र :—ॐ उदितो भगवान् सूर्योपमाक्ष वृक्ष के तने आदित्यस्य प्रसादेन अमुकस्यार्द्ध भेटकं नाशय नाशय स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र को कुंकुंसों से लिखकर कान पर बांधने से आधा शिशी सिर की पीड़ा दूर होती है।

मन्त्र :—ॐ चिगि श्रां इं चिगि स्वाहा।

विधि :—अनेन मंत्रेण दर्भु, सुइ, जीवरए इ हाथि लेवा इ जइ डावइ हाथि संरावु करोटी बाध्रियते सूइ पुणपाणी माहि घाली जइ खाट हेट्टिऽधरी जइ कामल-वाउ फीटइ गडियउ दीसइ।

मन्त्र :—ॐ रां रीं रुं रौं रं स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से कामल वात (उच्यते) नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ इटिल मिटिल रिटिल कामलं नाशय नाशय अमुकस्य ह्रीं अप्रतिहते स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से चना, कड़वा तैल, नमक, अजवाइन, मिर्च, सब चीज साथ में लेकर २१ बार मन्त्रीत करके खिलाने से कामल-बात नाश होता है।

मन्त्र :—हिमवंत उत्तरे पार्श्वे पर्वतो गंध मादने सरसा नाम यक्षिणी तस्याने उर सद्दे ण विशल्या भवति गुर्विणी।

विधि :—इस मन्त्र से तेल २१ बार मन्त्रीत कर शरीर पर तथा मल स्थान पर लगाने से गर्भिणी सुख से प्रसूति करती है।

मन्त्र :—ॐ क्रां श्रां ह्रीं सों नमो सुग्रीवाय परम सिद्धि कराय सर्व डाकिनी गृहीतस्य ।

विधि :—पाटे पर यंत्र लिखकर अन्दर नाम लिखे, फिर सरसों, उड़द, नमक से ताड़न करे तो डाकिनी आदि से आक्रंदीत हुआ रोगी का रोग नाश होता है। इस प्रकार का यंत्र बनावें—
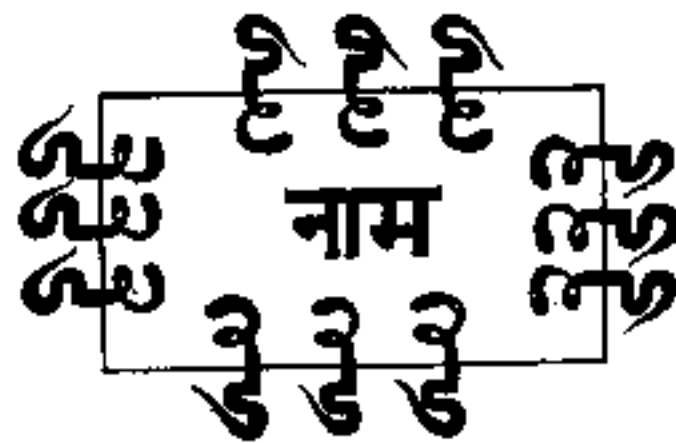
मन्त्र :—ॐ ह्रीं वासाबित्ये ह्रीं क्लीं स्वाहा ।

विधि :—सर्व मूली उन्मूल्यन मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्षीं ३ क्षः ३ लः ३ यः ३ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेन वासा अक्षत रक्षा वार २१ अभिमन्त्र्य चतुर्दिशु गृहादौ क्षिप्यंते सर्व दोषा उपशाम्यंति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अप्रति चक्रेश्वरी नखाग्रह शिखाग्रह रक्षं रक्षं हुंफट् स्वाहा ।

विधि :—कलवाणी मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ दसा देवी केरउ आडउ अणंत देवी केरउ आडउ ॐ विद्ध विद्धेण विजाहरी विजा ।

विधि :—गो घृतेन हस्ते चोपडयित्वाविद्वगडोपरि हस्तो मन्त्रं भणित्वा वार २१ भ्राम्यते ततो विद्ध उपशाम्यति, यदा एतो अताणिन निवर्त्तते तदा गोमय पुत्तलकम धो मुखम व लंब्य श्रुलाभि विध्यते ततो निवर्त्तते ।

मन्त्र :—ॐ उरगं उरगां सप्त फोडिउ नीसरइ रत्त वइमांसि रांधिणि । छिन्नउ सवाउ हायुसरीरि वाहयेत् ।

विधि :—अनेन उ'जित्तारांधिणि रूपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ प्रांजलि महातेजे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को गौरोचन से भोजपत्र पर लिखकर मस्तक पर धारण करने से जुँआ में जीत होती है ।

मन्त्र :—द्रोण पर्वतं यथा बद्धं शीतार्थं राघवेण उतं तथा बंधयिष्यामि अमुकस्य गर्भं मापत उमा विशीर्यउ स्वाहा । ॐ तन्नथाधर धारिणी गर्भ रक्षिणी आकाश मात्र के हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—लाल डोरा को इस मन्त्र से २१ बार जपकर २१ गाँठ देवे, फिर गर्भिणी के कमर में बांध देने से गर्भ पतन नहीं होता है, किन्तु नौ मास पूरे होने पर उस डोरे को खोल देना चाहिए ।

मन्त्र :—ॐ पद्मपादोव ह्रौं ह्रां ह्रः फट् जिह्वा बंधय बंधय सर्वसर्वे व समानय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से वच मन्त्रीत करके मुँह में रखने से सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्ता वते हुंफट् स्वाहा ।

विधि :—कन्या कत्रीत सूत्र गांठ देकर लाल कनेर के फूलों से १०८ बार मन्त्रीत करके स्त्री के कमर में बांधने से रक्त प्रवाह नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ अमृतं वरे वर वर प्रवर विशुद्धे हुं फट् स्वाहा । ॐ अमृत विलोकिनि गर्भ संरक्षिणि आकर्षिणि हुं हुं फुट् स्वाहा । ॐ विमले जयवरे अमृते हुं हुं फुट् स्वाहा । ॐ भर भर संभर सं इन्द्रियबल विशोधिनि हुं हुं फुट् स्वाहा । ॐ मणि धरि वज्रिणी महाऽतिसरे हुं हुं फुट् फुट् स्वाहा ।

विधि :—इस पाँच मन्त्रों को चन्दन, कस्तूरी, कुंकुम अलकुक के रस से भोजपत्र पर लिखकर इस विद्या का जाप करे, फिर गले में बांधे या हाथ में बांधने से शाकिनी, प्रेत, राक्षसी वा अन्य का किया हुआ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र प्रयोगादि का नाश होता है । विशेष क्या कहें, विष भक्षण भी किया हो तो भी उस विष का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ काली रौद्री कपाल पिंडिनी मोरा दुरित्त निवारिणी राजा बंधउ

शक्तिका बंधउ नील कंठ कंठेहि बंधउ जिह्वादेवी सरस्वती बंधउ चक्षुर्भ्या पार्वती बांधउ सिद्धिर्मम गुरु प्रसादेन ।

विधि :—इस मन्त्र का सदैव स्मरण करना चाहिए। क्षुद्रोपद्रव का नाश होता है, विशेष पंडितों की सभा में स्मरण करे, चोरों का भय हो तो स्मरण करे, या राजद्वारे स्मरण करे ।

मन्त्र :—रंघणिरंध वाइ विसलित्ती देवीतिण त्तिणि तिसु लिभित्ती उट्ठी उवहिली जाइव्यडत्ति जावन संकरू आवइ अप्पि ।

विधि :—गोवर की गुहली का करे, और एक स्वयं दूसरी गुहली का कि जिसको रंघणी होती है उसको करके अक्षत से मन्त्रोच्चारण पूर्वक ताडन करे तो रंघणी अच्छी हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ घंटा कर्णो महावीरः सर्व व्याधि विनाशकः विस्फोटक भयं प्राप्तं मां रक्ष रक्ष महाबल यत्र त्वं तिष्ट से देव लिखो तो विशदा क्षरैः तत्र दोषान्नुपशामि सर्वज्ञ वचने यथाः ।

विधि :—इस मन्त्र से कन्या कत्रीत सूत्र में ७ गांठ लगावे, मन्त्र को २१ बार पढ़े, फिर उस डोरे को कमर में बांधने से निगडादय उपशम होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं धनधान्य करि महाविद्ये अवतर मम गृहे धनधान्यं कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—२१ बार स्मरणीया ।

मंत्र :—सुर्वण मउडु रक्त आंखि नील चंचु स्वेत वर्णु शरीरिजउमाथइ अनंत पुलकुविहुकाने कुंडल तक्षकु शंख चूडु बाहुर रवइ वासुकिकंकोलु विहं पाए नेउल शंखद्वय पाय हे दिठ अरकत्रुयोनि ब्रह्मपुत्र खत्रु चरसि अखअुजिनवर सिजज्ञाकारिजाइ विसुखर का खारिहिखाइ विसुलल्ताकारिः लेइ विमूलिहि किलिहि हँस किलिहिलि हि हँस जसु चंदुठा इसोविसुखय हजाइ लोहिउ समप्पियउ तासु मइं जीवि उ समप्पियउ आदित्य कालिज्जसमप्पियउ कालागणी रुद्र फोफस अरि रे उट्ठी २ ।

विधि :—अनेन । बार २१ अपरान्हे दिन ७ डाभिउं जित्ता दुष्ट फोड़ी का बलु पीहउ चरहलु रोंध्रण्यादिक मुपशाम्यति गृहलिकद्वाय मध्येवा स्वं पादादिकं ध्रियते ।

मंत्र :—ॐ वीरिणो विवात पिसापि इटि २ हस मंस भक्षणे दास हरए व्याधि चूरणंह दुगत मांसगत तेज गत गलगंड गंड माला कुरु हुंटिया रोगो रुधिर हरो गुह्य कुंभ करणो

पंचमो नास्ति कलिंग प्रिये वात हरस्यां अधो मुखी देवी नव शिर-धरे छत्री हरिय भद्ठ धरिय उसव्वसभावाइ खीलउ परमथि-आपणी पर मुद्र दी धी जंग वाउ भमर वाउ हदु वाउ रक्त वाउ रांघणि सव्ववाउ सिद्धिहि जाउ ।

विधि :—इस मन्त्र से प्रत्येक प्रकार के बाल रोग ठीक होते हैं। मंत्र पढ़ते जाये और झाड़ा देते जाये ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावति सहिताय किं नर किं पुरुषाय गरुड गंधर्व महोरग यक्षराक्षस भूत पिशाच शाकिनीनां सर्वमूल व्याधि विनाशाय काला दुष्ट विनाशाय वज्र सकल भेदनाय वज्र मुष्टि सं चूर्णनाय महावीर्य पराक्रमाय सर्व मन्त्र रक्षंकराय सर्वभूत वंश कराय ॐ हन २ दह २ पच २ छिन्नय २ भिन्नय २ मुन्चय २ धरणेन्द्र पद्मावति स्वाहा ॐ नमो भगवते हनुमताय कपिल पिंगल लोचनाय वज्रांगमुष्टि उद्दीपन लंकापुरी दहन वालि सुग्रीव अंजण कुक्षि भूषण आकाश दोषं बंधि २ पाताल दोषं बंधि २ मुद्गल दोषं बांधि एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक नित्य ज्वर वात ज्वर धातु ज्वर प्रेत ज्वर श्लेष्म ज्वर सर्व ज्वरान् सर्वदह २ सर्वहन २ ह्रीं स्वाहा कोइलउ कंट प्रलउ पुञ्जित्तउ फुल्ल वंवालु आपणी शक्ति आंगलो खेलावइ हीमवेतालु चल्लावइ एक जाति चालि छन्न चालि प्रकट चालि जर उस्रोडि स्रीउ स्रोडि चउरासी दोष कोइलउ हणउ वापुशक्ति कोइलावी रत्तणी ३ ।

विधि :—एभिस्त्रिभिर्मंत्रैः प्रत्येकं कलपानीये कृते पायित्ते सर्व दोषा उपशाम्यंसि, एकैकेन वार ७ अभिमंत्र्यतया खटिकया नव शरावे, ठ, कारे लिखिते ऊसीसाघोतं च निद्रा समा-

याति ॐ संयुक्तं नमस्कार पद पंचकं लिखित्वा चिष्टिका वद्धा नवर क्षति मातृकां नमस्कार वाचकं लिखित्वा तच्चिष्टि काउ छीर्ष के धृताराश्रो सुप्तस्य सर्वोप द्रवान्नाशयति । इस मन्त्र के विधि का भाव विशेष समझ में नहीं आता है ।
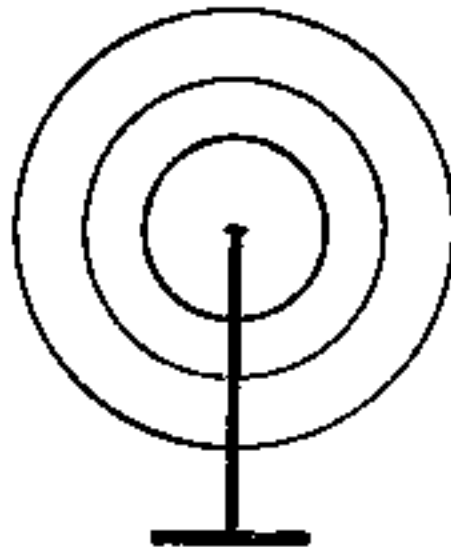
मन्त्र : ॐ खत्रिउ काला कुट विस वज्जउ सुद्रिका सद्ध लिउ बलउ वाय ससउ हरियालउ चलउ चारि विस चारि उवसउ अट्ठारह जाति फोडी २ जानिविसी होइ शनेश्वर वारिउ हु जाय उरेविस खपनि का जाती पींगला पूत माह मासि अंधारी चउदसिरे वति नक्षत्र धारउ जन्मु भयउ मूंठि हयउ दीठि तोलियउ खाउं अतोलियउ खाउं पल खाउ पलसउ खाउं भार खाउं भारसउ खाउं अदीठउ खाउं हउं खाउं लुहुन खाइ कउणुखाइ श्री गरुडा मडैवु खाउं जरे विस फूटि होइ माटी त्रेत्रीस कोडि देवता खाधउं वाटि तिहु त्रिभुवन शिव नास्ति विसु ठः ठः श्री नील कंठ की आज्ञा सोषाराउल की आज्ञा शिव शक्ति नास्ति वि सुजरे बिस जः जः ।

विधि :—त्रिसत्रिभुवनि हि नास्ति विसू ।

मन्त्र :—ॐ नमो पास पत्ताय भस्म जटाय श्मशान रचिताय वग्घ चम्म पहिरणाय चलु-२ रे चालु २ रे डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत पिशाच छलु छिद्र जाणु बिनाणु गुप्तु प्रकटु चउरासी यंत्र चूरि २ चउरासी मन्त्र चूरि २ पराई मुद्रा चूरि २ आपणी मुद्रा प्रकट करि धाराइ भांजि घालि आपु श्री महादेव तणी आज्ञा बांधि भीडि आक्रसि सवंइ दोष जिकवणइ आधि गुप्त प्रकटति सवइ बांधि आणिघालि महारा पाग हेठि २ दीहउ शेस नी-सउ अद बद व पुरी सौ दग मग चरितउ उट्ठियद विखणादिसि हिम देव लिलि २ शब्दई जंकार रूपिहि अदवद वकई छिदि मडा सिणि छिदि अहमद साविणि छिदि नवाडंती छिदि २ ही हउरीस निरीसउ परपोरिसि दिवाकरू भुंजसि गुंध सामिति वार नइ पसंता कंपइ व हुव वसायर ते कंचापरिहरिगय की पात्ती चग भगउदी कनमीडउ डाइणि कोडिशि होरी सणतं विसनासण हरि छंदि सुदरि सणि । ॐ नमो अग्निमंत राजाय कुछितबिटैं बनाय अनंत शक्ति सहिताय अष्ट कुल पर्वत बांधि आहार भाव वनस्पती बांधि नव कुल नाग बांधि सात समुद्रि बांधि अट्ठासी सहस्त्र रिषि बांधि नवानवइ कोडियक्ष बांधि बिष्णु रुद्र बांधि नव कोटि देव बांधि छप्पन्न कोटि चाउडा बांधि अट्ठारह पवणि बांधि छत्तिस राजकुली बांधि मालिणि बांधि कल्वालिणि बांधि तेलणी बांधि ब्राह्मणि बांधि सर्वइ दोष बांधि जिकवण दोष आधि गुप्त प्रकटति सर्व दोष बांधि भीडि आक्रसि आणि घालि महारा पाग हेठि बडइ वेगि वायु २ अरि मन्त्र यं वायण की शक्ति बांधि २ भिडि २ आक्रसि २ बड वेगि बांधि २ ।

विधि :—इस मंत्र से पानी मंत्रीत करके देने से अथवा झाडा देने से सर्व प्रकार के दोष चाहे व्यंतर डाकिनी शाकिनि राक्षस भूत प्रेतादि कृत हो चाहे दृष्टि दोष हो चाहे परकृत यंत्र मंत्रादि हो सर्व प्रकार के दोष इस महा मंत्र से शांत होते हैं ।

मन्त्र :—आय मानंन सेज आइत्त मान पहिरणउं हुंकारइ आवइ जकारइ जाइजः २ ।

विधि :—स्नात्र काराप्य अक्षतै स्ताम्यते गुगुलं दीयते तृतीय ज्वरं नाश्यति ।

मन्त्र :—जदुहुल जशनि बेसिय ॐ उप्पाइया सिरत्ति जउं हण बंति कलि काउ किउच तिन दुक्कातत्ति कालु काले महाकाले ।

विधि :—एक श्वास में सात बार अथवा तीन श्वासमें इक्कीस बार हाथ पर सिर धरे तो सिर का दर्द शांत होता है ।

मंत्र :—ॐ नमो सुग्रीव सया कल विग्रुल जाटयागण गंधर्व जरकर कस बेताल भूत प्रेत पिशाच डाइणि सिर सूल पेट सूल आकाश पाताल कन्यका ॐ नमो पार्श्वनाथाय जस्सेयं चक्कं फुरंतंगच्छइ तेण चक्केण जंदुट्ठ दुट्ठ विसं चउरासी वायाउछत्तीसं सूताय सत्तावीसं अंध गडाइं अट्ठावीसं फुल्लियाऊ छिदी २ भिदि २ सुदरिसण चक्केण चंद्र हास खड्गेन इन्द्र बज्रेण हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—दर्भेण गड्वाउ उजितो बार २१ निवर्त्तते क उपवासं कृत्वा संध्यायांपयश्च पीत्वा प्रभाते कृष्ण चनकान् भक्षयित्वा मुष्टि प्रमाण कृष्णजक्त जटां षष्टिक तंदुलकेन पिष्टाय: पिबति नस्य प्रभारि निवर्त्तते ।

मन्त्र :—सोहुया कारणी पहुया बालिरेऊँ पजारे जरालं किलो अइ हणुया नाउं हर संगर की अगन्या श्री महादेव भराडा की अगन्या देव गुरु की अगन्या जरो जरालंकि ।

विधि :—डोरा को दश वड करके उस में दश गांठ लगावे मन्त्र १०८ बार पढ़े । मन्त्र पढ़ता जावे और डोरे में गांठ लगाता जावे । उस डोरे को गले में या हाथ में बांधने से वेला ज्वर, एकांतर ज्वर, द्वयांतर ज्वर, त्रयंतर ज्वर का नाश होता है । इसी प्रकार गुगुल को भी मन्त्रीत कर जलाने से सर्व ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ सिद्धि ॐ शंकरू महादेव देंहि सिद्ध तेल ।

विधि :—इस मन्त्र से काच तेल अभिमन्त्रित (नरयया) करके सूंघे तो सर्व प्रकार के सिर दर्द नष्ट होते हैं । और इस तेल से गुमडा, फोडा, घाव, अग्निदाह इत्यादिक अच्छे होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ सद्यवाम अघोर ईसान तत् वक्त्रः ।

विधि :—इस मन्त्र को एक श्वास में ३ बार जपने से माथे का दर्द शांत होता है । और बिच्छू का जहर उतर जाता है ।

विशेष :—अनेननि: श्वासेन बार मेकं विधिना, एवं बार त्रय जपित्ते शिरोत्ति वृश्चिक मुतरति कालुंवरी चूर्ण म० ८ पल द्वय क्वाथपलिका मध्ये अधा घाडा बावची बीज चूर्ण अंगुली प्रक्षिप्तं पीते सरिशप तेले अभ्यंगेद भूत श्वेत कर्क टीनि वर्त्तयति, टंकण

क्षारस्य वासित जलेण लेपे सर्वमपि साई निवर्त्तयनि, सुवर्ण माक्षिकं केलरस पली हरियाल मणसिल गन्धक निबु या रस पलि अभ्यंगेनद भूत निवृत्तिः।

मन्त्र :—ॐ हां आं क्रों क्षां ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं पद्मावती नमः।

विधि :—इस मन्त्र को सफेद पुष्पों से १००८ दस दिन तक जपे तो सर्व सिद्धि करने वाला होता है।

मन्त्र :—ॐ रक्त जट्ट रक्त रक्त मुकुट धारिणि परवेध संहारिणी उदलवेधवंती सल्लुहणि विसल्लुचूरी फदु पूर्वहि आचार्य की आज्ञा ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का जप करने से परविद्या का छेदन होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को ३ दिन में १०८ पुष्पों से श्री पार्श्वनाथ भगवान के सामने जप करे तो सर्व सम्पदादिक होती है। तीनों दिन १०८-१०८ पुष्प होने चाहिये।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय हिली हिली मिलि मिलि चिली चिली किली किली ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः क्रौं क्रौं क्रौं यां यां हंस हंस हूं फट् स्वाहा।

विधि :—सर्व ज्वर नाशन मन्त्रः ज्वरानंतरं देव कुल दर्शनायाह्।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं श्रीं ह्रीं नमः ॐ तक्षकाय नमः उत्कट विकट दाढ़ा रुद्रा कराय नमः हन हन दहि दहि पचि पचि सर्व ग्रहाणां बंधि बंधि भूतानां राशि राशि ज्वालि ज्वालि प्रज्वालि प्रज्वालि शोषि शोषि भक्षि भक्षि यः यः ज्वलि ज्वलि प्रज्वलि प्रज्वलि वायु वीरु ॐ नीलासुया कंता आया का हु जाणइ आयु जाणइ आपद्रे ट्ठि परद्रे ट्ठि माय बाप केरी द्रे ट्ठि आडासी पाडासी की द्रे ट्ठि नाहु केरी द्रे ट्ठि शिहरीउ मूलु अजीर्ण व्याधि हणुमंत तणी लातभस माते हो जिउ ॐ वीर हनोवंता अतुल बल पराक्रमा सर्वव्याधि छिनि छिनि भिनि भिनि नाशय नाशय नाशय नाशय त्रोटय त्रोटय स्फोटय स्फोटय बांधय बांधय बंधइ बंधेण लंकादहि तेण हणूएण हूं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जपने से व्याधि बंध होती है।

मन्त्र :—हन हन दह दह पच पच मथ मथ त्रास सागी सत्वधारे वछ नाग नारो बोल घिमोर उपांग आवहु पुत आवहु सुणहु विचारहु हछि

हिलइ विसु दिट्ठि हिमाखइ कवि सवी सवावीस उपवीस चइ वारि भार घिस माटी करउं संज्ञा ही नास्ति विसनाश य य क्षोभय क्षोभय विक्षोभय विक्षोभय मावलाशय २ ।

विधि :—इस मन्त्र को ऊपर वाले मन्त्र के साथ जोड़कर पूरा मन्त्र ७ बार जपने से विष उतर जाता है ।

मन्त्र :—शूल महेश्वर जइ द्वारि पर्वत्ते माला चारि समुद्र माहिं लु लंघि हंस भस्म अधूली सिरि गंभारी परतु स लखुण पर जीवउ जिया स्वहि कुमारीकं मकरेइ हंसु विनय पूतु गुरुडु सवास सहस्त्र भार परविसुनि बद्धउं ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जपने से विष बंधन को प्राप्त होता है अथवा नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लौं सर्व ज्वरो नाशय नाशय सर्व प्रेत नाशिनी ॐ ह्रीं ठः भस्वं करि फट् स्वाहा ।

विधि :—इस महामन्त्र को जपने से अथवा २१ बार पानी मन्त्रीत कर पिलाने से पेट दर्द, अजीर्ण आदिक नष्ट होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं वाताभिर्भक्षितोयेन पीतोयेन महोदधिः समेपीतं च भुक्तं च अग स्तिर्जर यिष्यति ह्रीं ॐ कारे प्रथमं रूपं निराकारे प्रसूतं शिवशक्ति समं रूपं विन्न काल भैरव कालउ गोरउ क्षेत्रपालु जक्ख बइज नाथु कलि सुग्रीव करी आज्ञा फूर इ जाहो महाज्वर २ जाल जलंतो देवी पद्मावण वेगिव हृति देवि सहुर मारि पइट्ठी देवी इ नकुविसुइ नववीस विस वावीस मं वाघ विसुत हमहु बद्धी सिद्धि गंठिलं कहु हुंतउ नीसरइ गडयडं तु गाजं तुटं जाहो महाज्वर २ ।

विधि : नाग वल्ली पत्रंपरि जप्य क्षरि तस्यदेयं कर्णे वा दृष्ट प्रत्ययः ।

मन्त्र :—ॐ नमो भेलि विखए गिन्हामिम दिया सव्व दुट्ठ आमदिया सव्व मुहमह लविखया स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार १० कंकर को मन्त्रीत करके दशों दिशाओं में फेंकने से मार्ग में चोरादिक का भय नहीं होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतिजिनः शांतिकरः श्री सर्वसंघ शांति विदध्यात् अर्हं स्वाहा ॐ ह्रीं शांते शांतये स्वाहा ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये ।

विधि :—बार १०८ दिन ७ यस्य कार्मणादि दोषैः संस्मारणीयः ततोयेन दोषः कृतः स्यात्तस्यैव पतति राजप्रशाद वैरिश्मः तत्रास्ति यदि तो नस्यात्त् परं प्रत्यंगिरादि यंत्रायतः कार्यः हिंगु भाग १ बचा भाग २ पिप्पली भाग ३ सूंठि भाग ४ यवानी भाग ५ हरीतकी भाग ६ चित्रिक भाग ७ उपलोठ भाग ८ एत च्चूर्ण प्रात रुथा योष्णोदकेन २१ पेयं कास, श्वास, क्षय रोग, मन्दाग्नि दोष प्रशमः कार्मणं चैत दौषः धात् प्रशमति ।

मन्त्र :—**रे कालिया निष्य खिल्लउं सहता लुया ठः ठः । (ये कीलणी मन्त्र हैं)।**

मन्त्र :—**रे कालिया जिष्य मुक्की सहत्तालुयायः यः स्वाहा।(ये कीलणी मन्त्र है)।**

मन्त्र :—**ॐ त्रं त्रां श्रीं हा हंसः वं हं सः क्षं हंः सः हा हं सः स्थावर जंगम विष नाशिनी निर्जरण हंस निर्वाण हंस अहं हंस जुं ।**

विधि :—जल अभिमंत्रयपाय येद् यदि जीर्यते तदा जीवति अन्यथा मृत्युः ।

मन्त्र :—**ॐ हंसः नील हंसः महा हंसः ॐ पक्षि महापक्षि सर्प्पस्य मुखं बंध गति बंधं ॐ वं सं क्षं ठः । इस मन्त्र से सर्प का ग्रहण होता है ।**

मन्त्र :—**ॐ क्रों प्रों नृं ठः ।**

विधि :—इस मन्त्र से बीच्छु और सांप का जहर बंध जाता है। वृश्चिक सर्प विषयेकंडक बंधः ।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवते ऋषभाय जं नमति मोनमति रोदन मति स्वाहा ।**

विधि :—इस मन्त्र से बच सात, मन्त्रीत करके खावे तो महा बुद्धिमान, निरोगी होता है ।

मन्त्र :—**ॐ श्रीं ह्रीं कीर्तिमुख मंदिरे स्वाहा ।**

विधि :—इस मन्त्र को उपदेश देने के समय में प्रथम स्मरण करे तो श्रोतागण आकर्षण होते हैं ।

मन्त्र :—**ॐ यः रः लः त्यज दूरतः स्वाहा ।**

विधि :—इस मन्त्र का प्रातः नित्य ही १०८ बार स्मरण करने से कार्मणादि दोष नाश होते हैं ।

मन्त्र :—**ॐ नमो अरिहंते (उत्पति) स्वाहा । बाहुबलि चत्तारि सरणं पवज्जामी**

इत्यादि । ॐ नमो अरहंताणं ॐ नमो सिद्धाणं ॐ णमो आइरियाणं ॐ नमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ।

विधि : इस मन्त्र का स्मरण करने से स्वप्न में शुभाशुभ मालूम होता है और दुस्वप्नों का नाश होता है ।

मन्त्र :—इति पिसो भगवान अरिहं सम्म संबुद्धो विज्जावरण संपन्नो सुगतो लोक विद्व अनुत्तरो पुरुष दमसारथी शास्तादेवानां च मानुषाणं च बुद्धो भगवाजयधम्मा हेतु प्रभवा तेसां तथागतो अवचेतसांयो निरोधो एवं वादी मह समणो ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार जपकर दुपट्टे में गांठ लगाकर ओड लेने पर किसी भी प्रकार के शस्त्रों का घाव नहीं लग सकता, रण में सर्व शस्त्रों का निवारण होता है । इस मन्त्र के स्मरण मात्र से जीव बन्धन मुक्त हो जाता है । चोर भय, नदी में डूबने का भय, राज भय, सिंह व्याघ्र सर्पादि सर्व उपद्रव का निवारण होता है । यह मन्त्र पठित सिद्ध है, इस का फल प्रत्यक्ष होता है ।

मन्त्रः—ॐ अरिट्ठ नेमि बंधेण बंधामि पर हष्टि बंधामि चौराणं भूयाणं शाकिणीणं डाकिणीणं महारोगाणं दृष्टि वक्षु अंचलाणं तेसि सव्वेसिं समणं बंधामिगइ बंधासि हुं हुं फट् स्वाहा ॐ ह्रीं सव्व अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उवज्झायाणं साहुणं मम ऋद्धि वृद्धि सर्व समोहतं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का प्रातः और शाम को उभय काल में बत्तीस २ बार स्मरण करना चाहिये ।

मन्त्र :—णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं इत्यादि । ॐ नमो भगवइएसुयदेवयाए सव्व सुय मयाए सरस्सईए सव्व वाइणि सुवन्न वन्ने ॐ अरदेवी मम शरीरं पविस्स पुछंतयस्स मुहंपविस्स सव्वं गमण हरीए अरहंत सिरीए स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का प्रातः १०८ बार जप करने से महाबुद्धिमान होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं मम अमुकं वशी कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार स्मरण करने से इच्छित व्यक्ति वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ अश्वुप्ते मम् सर्व भयं सर्व रोगं उपशामय २ ह्रीं स्वाहा अर्हं स्वस्ति लंकातः महाराजाधिराज समस्त कौणाधिपतिः अमुक शरीरस्थं अमुक ज्वरं समादिशतिय थारे रे दुष्ट अमुक ज्वरं त्वयापत्रिका दर्शनादेव शीघ्र मागतव्यं अथ नाग छसित दाते सिर श्चंद्रहासखड्गेन कर्तयिष्यामि हुं फट्ः मा भणिष्यसि यन्नाख्यात्तं ।

विधि :—इस मन्त्र को कागज पर लिखकर, रोगी के हाथ में उस कागज को बांधने से बेला ज्वरादि भाग जाते हैं।

मन्त्र :—ॐ हर हर हुं हः दूतां श्रुकि पृष्ठ कस्य प्रश्नादिकां ।

विधि : –प्रकुमितवात्तन्नोऽनेनमंत्रेण वार १०८ जपित्वा पुनरापिगीयते वृद्धौ वृद्धिः शुभं च लाभादि पृच्छायां हानौथ हानिर शुभं च ।

मन्त्र :—ॐ ब्राह्माणी २ अहो कहो बलिकंठकाः खबिलाई लेऊ लेऊ हिव आहो ।

विधि : –अनेन वार ३२ हस्तस्य स्पर्श विज्ञानेन बलि कांठा काख बिलाइउप शाम्यंति दृष्ट प्रत्ययोयं ।

मन्त्र :—ॐ लावण लाइ वाधि थण लउ काख बिलाइ अर्जुन कइ बाणी छीन उती ह्ल इ अर्जुन भामि जाइ बिलाइ ।

विधि : अष्टोत्तर शत वेलं रक्षामभि मंत्र्य दीयते ।

मन्त्र :—ॐ समुंद्र अवगाहिनी भृगु चंडालिनी नव लुन जलु हुं फट् स्वाहा । कु ५ कुआइ २ नु ५ नुआइ २ ए ६ जः ३ तक्षकाय नमः ।

विधि :—देव पूजा पूर्वक जल, इस मन्त्र से मन्त्रीत करके देने से डंक का विष उतर जाता है। शिख्या दिक्षा एकांत ज्वर, तृतीय ज्वर, भूत, शाकिनी का निग्रह होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीस्फां सिद्धिः गणनाम विधेयं ।

विधि : इस मन्त्र को एरंड के पत्ते पर लिखकर रास्ते में उस पत्ते को फेंक देने से शाकिन्यादि मार्ग से हट जाते हैं। इस मन्त्र को नींव के पत्ते पर लिखकर, उस पत्ते को पानी में फेंक देने से शाकिन्यादि जलं तरंति स प्रत्ययोऽयं ।

मन्त्र :—ॐ कल्व्र्यूं ॐ मल्व्र्यूं ॐ लम्ल्व्र्यूं ॐ ड्म्ल्व्र्यूं ॐ हल्व्र्यूं ॐ सम्ल्व्र्यूं ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं ॐ रम्ल्व्र्यूं ॐ खम्ल्व्र्यूं ।

विधि :—इन नव कुटाक्षर को मंडल पर लिखकर पूजा करने वाले व्यक्ति की प्रत्यक्ष रूप से शाकिन्यादि आकर सेवा करते हैं। और सब दुष्टादिक उपशमता को प्राप्त होते हैं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ सफेद पुष्पों से ३ दिन तक जप करने से श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा के सामने, तो सर्व सम्पत्तिवान होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गोयमस्स गण हरिस्स अक्षीण महाण सस्स सव्वाणं व छा थाणं सव्वाणं पत्ताणं सव्वाणं वथूणं ॐ अक्खिण महाणसिया लद्धिहवउ मे २ स्वाहा।

विधि :— प्रातः उपयोग वेलाया विहरण वेलायां चेतन वेलायां च स्मरणीय वार २१ मंत्रभिमंत्रणीयं देयं वस्तु अभिमंत्र्य दातव्यं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ला ह्वा प्लक्ष्मीं स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार स्मरण करने से स्वप्न में शुभा शुभ प्रकट करता है।

मन्त्र :—ॐ अरण भद्रे नदी-चारे स्वाहा।

विधि :—गांव व नगर में प्रवेश करते समय मिट्टी को सात बार मंत्रीत करके फेंकने से गाँव में मांगे बिगर भोजन की प्राप्ति होती है। याने भोजन के लिए याचना नहीं करनी पड़ती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति वागेश्वरी अन्नपूर्णे ठः।

विधि :—इस मन्त्र को नगर में प्रवेश करते समय २१ बार जपे तो भोजनादिक का लाभ हो।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रों क्लीं ब्लूं जंभे जंभे मोहे वषट्।

विधि :—इस मन्त्र का हाथ से जाप करने पर सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमः।

विधि :—अनेन मन्त्रेण शीतलि का दोष हस्तो वाहनीय स्ताग्नि वृत्ति र्भवति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ॐ अ आवि सोषागर्जति गडडं तिमेघ जिम धड हडंति मडा मसाण मखंतु ईणइं छंवइतुए परि चल्लइं फाटइ फूटइ धमाह लप्रइ भूत प्रेत भीडउ मारइ नव ग्रह तुट्ठा चालइ वाप वीर श्री परमेश्वरा एकल्ल वीर अहुट्ठ कोडि रूप फोडि निकहइ

एक रूप मेल्हि उजेणि महि कालि गगन खाली भूत पंचास बांधि चेडउ बांधि चेटकु बांधि एकंतर बांधि वंतरउ बांधि त्रेयतरउ बांधि चालंतउ दोषु चरडकइ काटि ।

विधि :—इस मन्त्र से कन्या कत्रित सुत्र में ३ गाँठ लगाकर उन तीनों गांठ के मध्य में (कोलिया पुट) डाले फिर उस डोरे को हाथ में बांधे तो एकांतरादि ज्वर का नाश होता है। प्रत्यक्ष बात है।

मन्त्र :—यं रं लं वं क्षः ।

विधि :—वलि कृष्ण कंबल दव रक्तेनअनेन वार २१ जपित्वा वंधयेत वलियाति ।

मन्त्र :—ॐ तारे तु तारे वारे २ दुर्गा दुसारय २ भां हुं सर्व दुःख विमोचिनी दुर्गोत्तारीणी महायोगेश्वरी ह्रीं नमोस्तुते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः सरसुं सः हर हुं हः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार स्मरण करने से सर्व शांति होती है। सर्व उपद्रव का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ पासनाहस्सथं भेउ सःवाउ ईं ईं ऊजिणा एभा इह अभि भवंतु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार जाप करने से, इति, का उपशम होता है। जिस क्षेत्र में इस मन्त्र से भस्म और अक्षत १०८ मन्त्रीत करके फेंकने से और इस मन्त्र को भोज पत्र पत्र लिखकर खंभे पर बांधने से किसी प्रकार की इति नहीं होती है।

मन्त्र :—ॐ नमों शिवाय ॐ नमो चंड गरुडाय क्लीं स्वाहा श्री गरुड़ो आज्ञा पयति स्वाहा विष्णुं क्लीं २ मिलि २ हर २ हरि २ फुरु २ मूषकान् निवारय निवारय स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र से सरसों मन्त्रीत कर डालने से चूहे नहीं रहते हैं।

मन्त्र :—ॐ प्रसन्न तारे प्रसन्ने प्रसन्न कारिणि ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का जाप करने से शांति मिलती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ब्रह्म शांते श्री मदंघि के श्री सिद्धाय के श्री अछुप्ते श्री सर्व देवता मम् वांछितान् कुर्वन्तु सर्व विघ्नाश्निशंतु सर्व दुष्टान् वारयंतु ह्रीं अर्हं श्री स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र को १०८ बार जपने से प्रतिवादि की जिह्वा का स्थंभन होता है ।

मन्त्र :—ॐ जहि हुंधरणि सरजिइत्तछ हु धरी सरत्ति जाहुण वंत किल किय उगइ न आवाईत्ति ॐ फट स्वाहा । एकल्ल सुंदरि हेलिविसु संवर्ग सुन्दरि हरहि विषु न दृष्टि विसु न अदृष्टि विसु मन्त्र कइ जं जंकार इति निसाणक शब्द त्रिभुवने नास्ति विसु ।

विधि :—मयण हल मूल काष्टं बार ७ जपित्वा निशानं च बार ७ जपित्वा निसाणं काष्टे ना हन्यते यत्र २ शब्दः श्रूयते तत्र २ स्थावर विषं न प्रभवति ।

मन्त्र :—अस्ति तिउडि मइ चलति पत्ती ठी बहरी काल मेघ मइ आवत दीठ्ठि दाडिम हुल्ली सब्ब कहा जग हिल्ली मोर तु आशु तोरतु भरकु मइ दी एह उत्तइ लीयउ तु हु आगइ पाड कहि जन जाइ आदि तउ अंत इवीन्हनु आथ बतइ लइ बात कहि वायु काल मेघ बहिरी की शक्ति अ ल ल ल ल ल ।

विधि : - काच शरावे पूतलकं श्मसाने कोइलेन लिखीत्वा बार ७ पुष्पं जपित्वा २ सप्तपुष्प
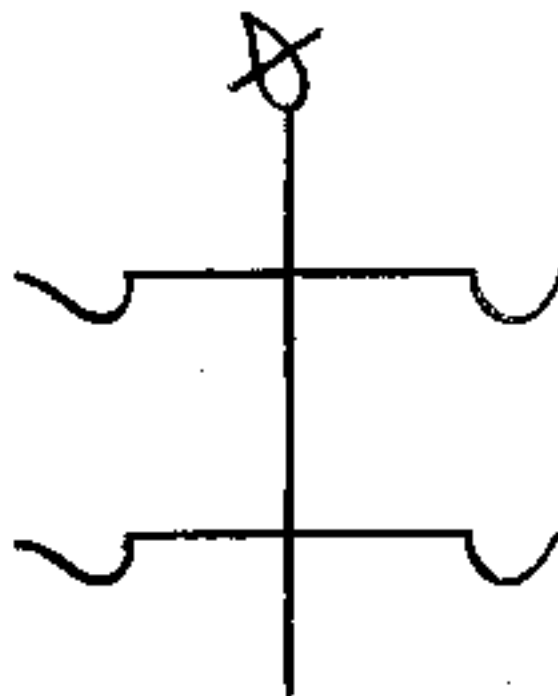
या वतुज्यते गुगुल गुलिका चउ दाह्यते दिन ७ यावत् रात्रौ विधानं एवं जाति पुष्पाणि ग्राह्याणि ततोयन्नाम्ना जप्यते स कष्टो भवति । पानीयस्थाने यं शरावे क्षिप्ते सुस्थो भवति । परं प्राकप्रार्थ्यते जतु हंतु स्वामिनि मेल्हा वतु तदामोच्यः अन्यो मोचयितु न शक्यं ।

मन्त्र :—हिमगिरि पर्वतु त हाथि तु पवणु उच्छलियउ कवणु ऊछालइ हणवंतु ऊछा लइ नींव की लकड़ी डालइ हिमगिरि पर्वति लेपाडइर चोरक्खु चार रक्खु ए बोल जतु प्रमाण न करहीऽउ ईश्वर पार्वती पूज ढालहि ठ रे ठ : २ ।

विधि :—नींव की लकड़ी हाथ में पकड़ कर रोगी के माथे पर ३ बार घुमावे और मन्त्र पढ़ते जाये तो असणी पार्श्व बार वेत् । नंदी मध्ये पूर्वोक्त वर्द्धमान विद्यांत्रि रुच्चरन् शिरसि पूर्वाभि मन्त्रित वासान्निक्षिप्त ततस्त च्छिरसि ह्रीं कारं त्रिवलयितं श्रौं कारांतं विन्यस्य तदुपरि गुरु स्व हस्तं कृत्वा ह्रीं कार मेक विंशति वारान् ध्यायति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं रक्षां श्रीं चौं र्हीं ह्रीं र्हाईं र्हूं भगवति भट्टारि के महा पराक्रम बले महाशक्ते क्षां क्षीं क्षूं मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

विधि :—इस महा मन्त्र को प्रभात समय में २१ बार नित्य जपने से सर्व प्रकार के रोग नष्ट होते हैं । श्रेयस्कर होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं नमि ऊण पास विसहर वसह जिण फुलिंग ह्रीं नमः । (इति मूल मंत्र)

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलि कुंड स्वामिनि अप्रति चक्रे जये विजये अजिते अपराजिते नंभे ।

विधि :—उपदेश के समय जप कर उपदेश करने से श्रोताजन आकर्षयति अगर सामने पर चक्र भी आ रहा है तो भी इस मन्त्र का ३ दिन तक जप करने से पर चक्र भाग जायेगा, दुष्ट जन का स्थंभन करता है और मनुष्यों को वश में करता है । (स्मृतो मास ६ निरन्तर वार १०८ स्मर्यते तत ऊर्द्ध वार २१ चिंतांग्रेण ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय नमः ॐ ह्रीं सर्व विद्याभ्यो नमः ॐ ठः ३ ।

विधि : इस मन्त्र को ६ महीने तक निरन्तर १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है । फिर ७ या २१ बार जपने से सर्प जाति का भय नहीं होता है । पजुसग्ण पारणा के पड्ड पुजियइ-पछ आगइ वार १०८ स्मर्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पंचाली २ जोइ मंथिज्जं कंठे धारइ सो जावज्जीवं अहिणानड सज्जइत्ति स्वाहा ।

विधि :—वार २१ गुणियित्वा सुप्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रो चामुंडे वज्रपाणे हुं फट् ठः ठः ।

विधि :—गुप्ति मोक्ष विषये मासु १ सहस्त्र उभय संध्यं गुणनीयः ग्रह विग्रहा दोच ।

मन्त्र :—ॐ सरल विषान् सिरकती नाशय नाशय अर्द्ध शिरोतौं सिरकती स्थाने अर्द्ध सिरशरिर ः

विधि :—आदित्य शुक्र वारयोरिमं अर्द्धवट्टिकायां लिखित्वा कुमारी सूत्रेण वेष्टयित्वा पत्रका क्षर संयुक्त मर्द्ध श्रुनोदीयते अन्यदर्द्ध शिरोर्तिमान् भक्षयति ।

मन्त्र :—ॐ इलवियक्ष ॐ सिलवियक्ष ।

विधि :—इस मन्त्र से लोहे की कील ७ बार मन्त्रित करके पूर्वाभिमुख लकड़ी के खंभे में ठोके, स्वयं पश्चमाभिमुखेन् दाढ़ रोगिणः सकाशात् कीलिका खोटनं च आनाय्यते स्तोकं निक्षिप्य पुनर्वार ७ जपित्वा निक्षिप्यते पुनर्वार ७ सकलानिक्षिप्यतें तत्पार्श्वा-द्वस्तु १ परिहार्यते । इस प्रकार करने से दाढ़ पीड़ा नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ ठ्ठठः ॐ ह्लं क्ष्ूं जंभे ॐ ह्लं क्ष्ूं स्तंभे ॐ ह्लं क्ष्ूं अंधे ॐ ह्लं क्ष्ूं मोहे ।

विधि :—इस मन्त्र को कपड़े पर लिखकर धारण करना चाहिये । (इसंवहि का पट्ट लिखित्वा पार्श्वधार्य्य) ।

नाश होता है ।

(इसकी विधि उपलब्ध नहीं हो सकी है ।)

ॐ नमो भगवतो पार्श्व चंद्राय गौरी गांधारी सर्ववशंकरी स्वाहा ।

ॐ नमो सुमति मुख मंडये स्वाहा ।

संध्यापृथक बार १०८ मुखभामिमंथ्य वाम हस्तेनवादा दी गम्यते ।

ॐ ह्रीं अच्छुप्ते मम श्रियं कुरु कुरु स्वाहा ह्रीं मम दुष्ट वातादि रोगान् सर्वोपद्रवान बृहतो नु भावात् ठः ३ मक्षिका कुंसिका गुरुपादुके अमृतं भयं ठः ३ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को ३ बार जपकर भोजन करने के लिये बैठने से मक्खीयाँ नहीं आती हैं। और सर्व प्रकार के वात रोग नष्ट होते हैं।

मन्त्र :—ॐ एहि नंदे महानंदे पंथे खेमं भविस्सइ पंथे दुपयं बंधे पंथे बंधे चउपयं घोरं आसीविसं बंधे जाव गंठो न छुटइ स्वाहा। ॐ नमो भगवऊ पार्श्वनाथाय ह्रयं धरणेन्द्राय सप्तफण बिभूषिताय सर्व वातं सर्व लूतं सर्व दुष्टं सर्व विषं सर्व ज्वरं नाशय २ त्रासय २ छिद २ भिद २ हूं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से पानी २१ बार मन्त्रीत करके देने से दृष्टि ज्वरादिक शांत होते हैं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं विजय महाविजये सर्व दुष्ट प्रणाशिनी महांत मुख भंजनि ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कुरु २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार जपे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ज्वीं लाह्वापलक्ष्मीं चल २ चालय२ स्वाहा।

विधि :—कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां वा उपोषितेन् सहस्र १००८ जाप्य: —ततःसाधिते सर्वं स्वप्ने कथयति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं बाहुबलि प्रलंब बाहु बलिगिरि २ महागिरि २ धीरबाहुबले स्वाहा। ॐ बाहुबलि प्रचंड बाहुबलि क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः उर्द्ध भुजं कुरु२ सत्यं ब्रूहिर स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को कायोत्सर्ग १०८ जाप्य:।

मन्त्र :—ॐ क्रौं ह्रां ह्रीं ह्रें नमः।

विधि :—बार ३३ जाप्ये राजकुले तेज आगच्छति।

मन्त्र :—ॐ स्वैरिणी २ स्वाहा।

विधि :—पूंगीफलादिकं बार १०८ जपित्वायस्य दीयत्ते स वश्यो भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं अरेअरणि म्हारिणि मोहिणी २ मोहय२ स्वाहा।

विधि :—जिन आयतन में इस मन्त्र को १०८ बार जपे फिर फलादिक को ७ बार मन्त्रीत कर जिसको दिया जाय वह वश में हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ मातंग राजाय त्रिलि २ मिलि मितक्ली अमुकस्य रक्तं स्तंभय २ स्वाहा ।

विधि :—शुक्ल (सफेद) रंग के डोरे को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करे, फिर उस डोरे को बांधे तो स्त्रियों का रक्त श्राव बंध होता है ।

मन्त्र :—करुणी वरुणी हुइय हिणिरात मुहि रातपूठी पारे अछउ श्रीघोडी भेडु उतार उपहर मलाउभतु संचारउ जहिवहर उतेही पहरिसंसारउ ।

विधि :—वार २१ वालग्रस्थभ्य स्वस्य हस्त वाहनं घोडा हस्त वाहनं मन्त्रः । मानुषस्यापि रक्तं निष्कासिते हस्तो वाह्यते ।

मन्त्र :—वज्रवंडो महादंडः वज्रकामल लोचनः वज्र हस्त निपातेन भूमौगछ महाज्वरः एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक नश्यंतु त्रिभिः ।

विधि :—एष मन्त्रो वहुकरि तृणेन चूना रसेन् नाडा वल्लीदले लिखित्वा यस्य ज्वर आगच्छति तस्यं पार्श्वाह क्षापनीयं ज्वरं नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं फे नमः ।

विधि :—लक्ष जापेन बंधनात्मुच्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां कोदंड स्वामिनि मम वंदि मोक्षं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—रोज सवेरे दोनों समय दक्षिण की तरफ मुख करके रौद्र भाव से १०८ बार इस मन्त्र को जपे तो बन्दि–मोक्ष ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्म नंदेश्वर हूं ।

विधि : इस मन्त्र को १०८ बार जपने से पाप से मुक्ति मिलती है। ५०० बार जपने से वह विशेष रूप, १००० जप से अपमृत्यु नालयति, २००० जप से सौभाग्यं करोति, रात–दिन में ध्यान करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। (वृद्धि होती है) और १ लाख जाप करने से बन्दि मोक्ष, सर्व प्रकार का दारिद्र नाश होता है।

मन्त्र :—उद्घीच गधगंती प्रज्वलंती हणइ भाल गुरुपदेशी नामार्ज्जनपार्या ।

विधि :— ध्यायंती सिद्धिः स्तंभयति घात वात अग्नि दग्वलावणा दौपिठ्ठादिना उंजनं कलपानीयं सर्वगुप शमयति दृष्ट प्रत्ययः ।

मन्त्र :—ॐ वीर नारसिंहाय प्रचंड बालग्रह भंजनाय सर्वदोष प्रहरणाय ॐ ह्रीं अम्ल व लूं श्रीं स्फीं ोटय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र से दुष्टवातादि उंजनं ।

मन्त्र :—लइंद्रेण कृतं द्वारं इन्द्रेण भ्रकुटी कृतं भंजती इः कपाटा नि गर्भं मुंच सशोणितं हुलु हुलु मुंच स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तेल २१ बार मन्त्रीत करके पेट के ऊपर मालिश करे, और पानी मन्त्रीत करके पिलाने से सुख से प्रसव होता है ।

मन्त्र :—ॐ धनु २ महाधनु २ सर्वधनु धीरी पद्मावती सर्वदुष्ट निर्दल स्तंभनीनि मोहनी सर्वासु नामिराजा धीनामि सर्वासुनामि राजाधि नामि आउ बंधउ दृष्टि बंधउ मुख स्तंभउ ॐ किरि २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को दक्षिण हस्त से धनुष—बाण चलाने की मुद्रा से जपना, सर्व प्रकार से दुष्ट जनों के मुख का स्तम्भन करने वाला वह सर्व उपद्रव दूर करता है ।

मन्त्र :—ॐ गगनधर मट्ठो सयलि संसारि आंवट्ठो धरि ध्यानु ध्यायउ जुमग्रउ सुपावउ आपणो भक्ति गुरु की शक्ति धरपुर पाटण खोभतु राजा प्रजाखोभंतु डाइणि कुकुरु खोभंतुवादी कुवादी खोभंतु आपणी शक्ति गुरु की शक्ति उं ठः ३ ।

विधि :—इस मन्त्र से मिट्टी को मन्त्रीत करके माथे पर रखने से या पास में रखने से सर्व जन वश होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्र् ह्रां ह्रीं ह्र् ह्रः महादुष्ट लूता दुष्ट फोडी व्रण ॐ ह्रां ह्रीं सर्व नाशय २ पुलि तव्रक्षेन् छिन भिन्न २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल २१ या १०८ बार मन्त्रीत करके लगाने से और राख (भस्म) मन्त्रीत करके लगाने से सर्व प्रकार का गड गुमड फुंसी आदि शांत होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ सिद्धि ॐ संकर महादेव देहि सिद्धि ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल १०८ बार मन्त्रीत करके गंडमाल उपर लगाने से गंडमाल अच्छा होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहक भगवऊ मुखरोगान् कंठरोगान् जिह्वा रोगान् तालु रोगान् दंत रोगान् ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रः सर्व रोगान् निवर्त्तय २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी मन्त्रीत करके कुल्ला करने से सर्व प्रकार के मुख रोग शांत होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ डाऊ चेडा उल्मन मोखी आसन बीर कउसहि योगिणि छिंद २ भिंद २ ईसर कइत्रि सूलीहण थंत कह खड्गि छिन्न २ हुं फट् स्वाहा।

विधि : वार २१ उंजनेन कर्ण मूलादि उपशाम्यति।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं सेयउ घोडउ ब्राह्मणी कउ घोडउल कारे लागइ जकारे जाइ भूत बांधि प्रेत बांधि राक्षस बांधि मेक्षस बांधि डाकिनि बांधि शाकिनी बांधि डाउ बांधि थपालउ बांधि लहुडउ गरुडु वडउ गरुडु आसनि भेदु २ सुबांधिकसु बांधि सकसु बांधि सकसु बांधि जइनें केरउ कुलउ करहि परिग्रह स चकु भीडी धरि मारि बापु प्रचंड वीर नार स्यंध वीर की शक्ति धरी मारि बापु पूत प्रचंड सोह।

विधि :—इस मन्त्र को धूप से मन्त्रीत करके जलाने से और रोगी पर हाथ फेरने से भूतादि उपशमति।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंताणं नमो सिद्धाणं नमो अणंत जिणाणं सिद्धयोग धाराणं सव्वेसि विज्जाहर पुत्ताणं कयंजली इमं विज्जारायं पउंजामि इमामे विज्जापसिध्यउ आर कालि बालकालि पुंस छररेउ आवतवो चढि स्वाहा।

विधि : पृथ्वी पर सात कंकरं लेकर इस मन्त्र से २१ बार या १०८ बार मन्त्रीत कर बिकने वाली दूकान की चीजों पर डाल देने से शीघ्र ही उस सामान की बिक्री हो जाती है

मन्त्र :—ॐ अरहऊ नमो भगवऊ महइ महावर्द्धमाण सामिस्सपणय सुरासुर से हर वियलिय कुसु मुच्चिय कमस्स जस्स वर धम्म चक्कं दिणय रबिं वं व भासुर छांय तें एण पज्जलं तं गच्छइ पुरऊ जिणिंदस्स २ आयसं पायालं सयलं महि मंडलं पयासं तं मिच्छ मोह तिमिरं हरेइति एहं पिलोयाणं सयलं भिविते लुक्के चिंतिय सित्तो करेइ सत्ताणं रक्खं रक्खस डाइणि पिसाय गह जक्ख भूयाणं लहइ विवाए वाए ववहारे भावउ सरं तोउ जुएय रणेरायं गणेय विजयं विसुद्धप्पा।

विधि :- इस वर्द्धमान विद्या स्तोत का पाठ करने वाले के रोग शोक आपदा शांत होती है।

मन्त्र :—ॐ महादंडेन मारय २ स्फोटय २ आवेशय २ शीघ्र भंज २ चूरि २ स्फोटि २ इंद्र ज्वरं एकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं वेला ज्वरं

सम ज्वरं दुष्ट ज्वरं विनाशय २ सर्व दुष्टानाशय २ ॐ ७ र ७ ह्रो स्वाहा २ य : ३ ।

विधि :—इस मन्त्र को अष्टमी अथवा चतुर्दशि को उपवास करके १०८ बार जपने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है । और यह मन्त्र सब कार्य के लिए काम देता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रा ह्रीं ह्रौं ह्रः ।

विधि :—इस मन्त्र से डोरा रंगीन बड करके २१ बार मन्त्रीत करके हाथ में बांधने से तृतीय ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा । (सर्व कर्म करा मंत्र)

विधि :—विशेषतः शाकिनी गृहीतस्य सर्षपान् गृहीत्वा शाकिन्या कर्पयेत् । एकैकं सर्षपं सप्ताभिमन्त्रीतं कृत्वा जलभृत कटोरक मध्ये क्षिपेत् ये तरंति ते शाकिन्यः समेन शाकिन्यः विगमेण भूत अथ न तदा भूत शाकिनो मध्याद् एकोपि ना अनेन मन्त्रेण सप्ताभि मन्त्रीत कृत्वा उत्पलं ताडयेत् यथा २ ताडयेत् तथा २ आक्रंदंति । एतेन् चोवरं सप्ताभि मंत्रितं कृत्वा उद्धी कृत्य स्फोटयेत् रुपिण्यो नश्यंति अनेन् मन्त्रेण युग्मंगृहीत्वा सप्ताभि मन्त्रीता क्रित्वा उद्धीकृत्य स्फोटयेत् रुपिण्यो नश्यंति । अनेन मन्त्रेण अजा लिंडि नामे काकी विध्यात् शाकिन्या गृहीतस्य खद्गाधः शराव संपुट धारयेत् शाकिन्या नश्यंति रक्षा बंधयेत् ।

मन्त्र :—ॐ क्रां क्रीं क्रौं क्षः हः रः फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सरसों लेकर पढ़ता जावे और रोगी के ऊपर सरसों डालता जावे तो भूतादिक रोगी को छोड़कर निश्चित ही भाग जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ चन्द्र मौलि सूर्य मौलि स्वाहा ।

विधि : -इस मन्त्र से डोरे को २१ बार मन्त्रीत करके जिसकी आँख (चक्षु) दुःखती हो उस मनुष्य के कान में उस डोरे को बांधने से चक्षु रोग पीड़ा नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आर्या व लोकिते स्वराय पद्मे फुः पद्म वदने फुः पद्म लोचने स्वाहा ।

विधि :—भस्म वार २१ जपित्वा तिलकं क्रियतेततो दृष्टि दोषो निवर्तते हस्तवाहनं च । इस मन्त्र से भस्म २१ बार जप कर तिलक करने से दृष्टी दोष याने नजर लगी हो तो ठीक हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अम्र कुष्मांडिनी कनक प्रभेसिंह मस्तक समारुडे अवतर २ अमोघ वागेश्वरी सत्यवादिनी सत्यं कथय २ ॐ ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—मासमेकं दशमी मारभ्य १०८ जपित्वा पंचमी दशम्यांविशेषतः तपः कार्य यामिन्यद्धि अविचलेन बार ७ जाप्य ।

अयं यंत्र लेखन विधि : -वसन्तु १ ग्रीष्मु २ प्रावृट ३ शरद ४ हेमन्तु ५ शिशिर ६ एक दिन मध्ये षट् रितवो भवंति दश २ घटिकाः प्रत्येकं ऋतु प्रमाणं अहोरात्रि मध्ये षट् भवंति घटिकाः ६० आदित्योदयात् वसंत ऋतु घटिकाः १० तत्राकर्षणं १ ग्रीष्मे, द्वेषण २ प्रावृटे, अपरान्हे उच्चाटणं ३ लिखे सर्वत्र योज्यं शिशिरे मारणं लिखेत् ४ शरदे शांतिकं लिखेत् ५ हेमंते पौष्टिकं लिखेत् ६ पन्नगाधिप शेखरा विपुलारुणां कुजविष्ट रांकुकुटोरग वाहनां अरुण प्रभां कलला ननांम्य त्रिकां वरदां कुशायतप शादिव्यं फलांकितांचितयेत् पद्मावती जपतां सतां फलदायिनी दिनकाल मुद्रासन पल्लवानां भेदं परित्ताय जपेत्समंत्री न चान्यथा सिध्यति तस्यमंत्रः। कुर्वन् सदा तिष्ठति जाप्य होमं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं महाविद्ये आर्हंति भगवति परमेश्वरी शांते प्रशांते सर्वक्षुद्रोप शामिनि सर्व भयं सर्व रोगं सर्वं क्षुद्रोपद्रवं सर्वं वेला ज्वरं प्रणाशाय २ उपशमय २ अमुकस्य स्वाहा ।

विधि :—बार ७४ ऽ १०८ अनेन मंत्रेण दवरकं वस्त्रादिमभिमंत्र्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं चंद्र वदनी माहेश्वरी चंडिका भूतप्रेत पिशाच विद्रापय २ वज्रदंडेन महेश्वर त्रिशूलेनदी वीर खड्गेन चूरय २ पात्र प्रवेशे २ ॐ छां छीं छूं छः फट् स्वाहा ।

विधि :—प्रथम १०८ बार इस मन्त्र का जाप्य करे, फिर डोरा को २१ बार मन्त्रीत करके बांध देने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ अतिशनैश्चराय ।

विधि :—इस मन्त्र का जाप करने से शनि की पीड़ा दूर होती है ।

मन्त्र :—लोहु खाहु लोहु पीयउ लोह ही वरु दितु चंदसुर राजा अनुनाहो कोइ राजा ।

विधि :—इस मन्त्र से फोड़े को ७ बार मन्त्रीत करने से फोड़ा (घाव) अच्छा होता है।

मन्त्र :—ॐ लक्ष्मीं आगछ २ ह्रीं नमः अरे ॐ नमः सोधा महाप्रचंड वीर भूतान् हन २ शाकिनी हन २ मुंच २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से जाप करे तो सर्व दोष की शान्ति होती है ।

मन्त्र :—वहु पाणी ए पुर पट्टणमण्यि आणि एण वाउ पुनु तुह मछइ कामलु चडियउ सोने पोंछिलेउ छाडिउ १ उडु का मल संवपालु भणइ उडु का मल संखु पालु भणइ ।

विधि :—रविवारे शोभने दिने (गोस नाड़) शब्द सरकपाड़लेत्वा खंडि का १०८ एकैक बार भणित्वा कुमारी सुत्र दवर केण सप्त वड़ेन ग्रंथि दातव्यः कंठे प्रक्षिप्तामाला यथा २ वर्द्धयते तथा २ कामल उपशाम्यति ।

मन्त्र :—ॐ रां रीं रुं रः स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र से तीन दिन तक २१--२१ बार मन्त्र पढ़ता जावे और कामलवात रोगी पर हाथ फेरता जाय तो कामल वात नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ क्षों ३ हः स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को जपता जावे और सिर पर हाथ फेरता जावे तो सिर का दर्द दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ग्रां हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को १०८ बार पढ़ें और रोगी पर हाथ फेरे तो शाकिन्यादि दोष शांत होते हैं । चाउ लोद केन सहवांस जडापीषयित्वा पातव्या सुखेन् प्रसुते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रः श्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को वासी मुख नाभि मंत्रीत करे तो—

मन्त्र :—जे चल्ल चल्लइ घाउ घल्लइ अष्ट कुल नाग पूजा पाए टालइं भोपरिभो कुमारी काला सांपहवाढ़ निवारी खील तुं वाट घाटजहिं तउ आयउ खीलउं माय वा पूर्जाहितुहु जायउ खीलउं धरणि अनु आकासु मरसिरे विषहर जइकाटि सिसासु ।

विधि : —सर्प खिलण मंत्र —अनेन् मंत्रेण वात विजये दवर को ग्रंथि ९ सप्तो कृत्वा दीयते पर अष्टकुल नागस्थाने चउरासी बाय इति पदपठि तव्यं । जेथउ तेथउ ठरे स सर्प कीलन मंत्र ।

मन्त्र :—ॐ नमोहणु हणइ वज्रदंडेण वेदुप्रजालिगोपाला शाकिनी चेडउ डाउसो ना समउ भेदु बहत्तरि साडा एहिरा गुगुल लीधउं हाथी पहुता सी वलि पासि गिरि टालइ भीम टालइ राहुउ चडुं टालइ जमरातणी

पुजखडडहडंत पाडइ हिडव गंट्ठि मोर गंट्ठेण वाप हणु वीरणी शक्ति फुरइ सयं जरु त्रेता ज्वरु वेला ज्वरु एकांत्तरऊ हणुवीरणी शक्ति फूरइ ।

विधि :—इस मंत्र से डोरा मंत्रीत करके बांधने से ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ह्रू भू ।

विधि : -इस मंत्र को भयानक स्थान में स्मरण किया करे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं मायांगे सरस्वस्यै नमः ।

विधि : बोध सारस्वत मंत्रः। चंद्रा ननां स्वरां भोधी वाङ्मयी च सरस्वंती ह्लं च्चंद्र मंडल गंताध्याये त्सारस्वतं महत् ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः श्री वीस पारा उल केरी आज्ञा श्री घंट्टा कर्णकेरी आज्ञा फुरइ ।

विधि : --उसरणी वात मंत्र ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित्तपिंगलाय लघु २ हुलु २ चिलु २ ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—कसुंभल रक्तपूत्रं स्त्री प्रमाणां कृत्वा शिरसउपरी अंगुल ४ कृत्वा अनेन मंत्रेणभि। मंथ्य व धीयात् वा मपादज व्यंगुलि कार्या गर्भो न रक्षति पानीय चलुक ३ अभि मंथ्य दीयते गर्भो न क्षरति ।

मन्त्र :—ॐ तद्यथा गर्भधर धारिणी गर्भरक्षिणि आकाश मात्रीके हुं फट् स्वाहा ।

विधि : इस मंत्र से लाल डोरे को २१ बार मंत्रीत करके स्त्री के कमर में बाँधने से रक्त स्त्राव रुक जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित पिंगलायः मातंग राजानो स्त्रीणां रक्तं स्तंभय २ ॐ तद्यथा हु सुरलघु २ तिलि २ मिलि२ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से लाल डोरे को २१ बार मन्त्रीत कर ७ गांठ लगाकर स्त्रियों के वाम पांव के अँगूठे में बांधने से रक्त स्राव रुक जाता है।

मन्त्र :—ॐ रक्ते २ वस्त्रे पु फु रक्ते वाक्ते स्वाहा ।

विधि :—अनेन कसुंभ रक्त सूत्रेण अन्हदु हस्त दवरकं वटित्वा अथा घाड़ा मूलं बंधित्वा वार ७ अभिमन्त्र्यते रक्त वाहकं नश्यति ।

मन्त्र :—ॐ भौमाय भूमि पुत्राय मम् गर्भं देहि २ स्थिर २ माचल माचल ॐ क्रां क्रीं क्रौं उं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का मंगलवार दिन को कुमारी कन्या को भोजनादि वस्त्रालंकार से सन्तुष्ट करे फिर इस मन्त्र का १ महिने में ५०:००० जाप पूरा करे, किन्तु मंगलवार को ही जाप्य शुरू करना चाहिये और याव जीवं (जीवन पर्यन्त) प्रत्येक मंगलवार को ब्रह्मचर्य व्रत पाले और एकासन करे तो निःसन्देह सन्तान उत्पन्न होती है ।

मन्त्र :—ॐ हिमवंतस्योत्तरे पार्श्वे पर्वते गंध मादने तस्य पर्वतस्य प्राग्दिग्विभागे कुमारी शुभ पुण्य लक्षणाए णेव चर्मवसना घोणसैः कृत के ऊरन्नुपुरा सर्प मंडित मेखला आसी विसचोंभलि का वृष्टि विष कर्णा व तंसिका खादंती विषपुष्पाणि पिवंती मारुतां लतां समांल बेति लावेति एह्योहि वत्से श्रुणोहि मे जांगुली नाम विद्याहं उत्तमा विषनाशिनी (यत्किंचि मम नाम नालत्सर्वं नश्यते विषं)।

मन्त्र :—ॐ इलचित्ते तिलचित्ते डुंवे डुवालिए दुस्से दुस्सालिए जक्के जक्करणे मम्मे मम्मरणे संजक्करणे अघे अनघे अखायंतीए अपायंतीए श्वेतं श्वेते तुंडे अनानु रक्ते ठः २ ॐ इल्ला चिल्ला चक्का वक्का कोरडा कोरड़रति घोरडा घोरड़ति मोरडा मोरड़ति अट्टे अट्टरुहे अट्टट्टोंडु रुहे सप्पे सप्प रुहे सप्प ट्टोंडु रुहे नागे नागरुहे नाग ट्टोंडु रुहे अछे अछले विषत्तंडि २ त्रिंडि २ स्फुट २ स्फोटय २ इंदाविषम विषं गच्छतु दातारं गच्छतु भोक्तारं गच्छतु भूम्यां गच्छतु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र विद्या को जो पढ़ता है, सुनता है, उसको सात वर्ष तक सांप दृष्टि में नहीं दिखेगा याने उसको सात वर्ष तक सर्प के दर्शन नहीं होंगे और काटेगा भी नहीं और काटेगा भी तो शरीर में जहर नहीं चढ़ेगा ।

मन्त्र :—अपसर्प सर्प भदंते दूरं गच्छ महाविषु जनमेजय य ज्ञाते आस्तिक्य वचनं श्रृणु । आस्तिक्य वचनं श्रुत्वा यः सर्पेनि निवर्त्तते । तस्यैव भिद्यते मुर्द्धा सं सृ वृक्ष फलं यथा ।

मन्त्र :—ॐ गरुड जीमुत वाहन सर्प भयं निवर्त्तय २ आस्तिक की आज्ञा पर्यंत पदं ।

विधि :—इस मन्त्र को हाथ की ताली बजाता जावे और पढ़ता जावे तो सांप चला जाता है, किन्तु मन्त्र तीन बार पढ़ना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले २ मातंग सबराय सं खं वादय ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि :– इस मन्त्र से बालू २१ बार मन्त्रीत करके घर में डाल देने से सर्व सर्प भाग जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नकुलि नाकुलि मकुलि माकुलि अ हा ते स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से बालू २१ बार मन्त्रीत करके घर डाल देने से घर में सांप नहीं होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ सुरबिंदु सः ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़ता जावे और सर्प डसने वाले मनुष्य को नीम के पत्तों से झाड़ता जाय तो सांप का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ चामुंडे कुर्यम दंडे अमुक हृदय मम हृदयं मध्ये प्रवेशाय ३ स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र को पढ़ता जावे और जिस दिशा में क्रोधी मानव हो उस दिशा में सरसों फेंकता जावे तो क्रोध नष्ट हो जाता है । (भस्म गिसद्य: क्षिपते क्रोध)

मन्त्र :—वानरस्य मुखं घोर आदित्य सम तेजसं ज्वरं तृतीयकं नाम दर्शना देव नश्यति तद्यथा हन २ दह २ पच २ मथ २ प्रमथ २ विध्वंसय २ विद्रावय २ छेदय २ अन्यसीमां ज्वर गच्छ हनुमंत लांगुल प्रहारेण भेदय ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षः रक्ष रक्ष फट् स्वाहा । विष्णु चक्रेण छिन्न २ रुद्र शूलेण भिंद भिंद ब्रह्मकमलेन हन हन स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को केशर, गौरोचन से भोजपत्र पर लिखकर प्रातः रोगी को दिखाने से ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुरु क्षेत्रपाल मेघनाद केरी आज्ञा ।

विधि :—अनेन बार २१ खटिकामभिमन्त्र्यस्य ज्वर आगच्छन्नस्ति स ज्वर वेला या अग्रे उपवेश्य तत्पार्श्वेतस्त्रि रेखाभिः कुंडकं । क्रियते यावद्वेलाथा उपरिघटिका १ अतिक्रांता भवति तावत्कुंडकं नमस्कारेण उत्तारणीयं कुंडस्थेन न पातव्यं न भोक्तव्यं किंतु नमस्कारा गुणनीयाः य र ल व व ल र य इति पूर्वेत एव परावर्त्तनात् ३०० एकांतरादि वेलोप शाम्यांति दृष्ट प्रत्ययोयं कस्यापि अग्रे न कथनीयः ।

मन्त्र :—ॐ पंचबाण हृये धनुषं बालकस्य अवलोकनं हनु अस्य सरूपेण नश्यत्तं धनुर्वातिकं ॐ क्रां क्रीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—धनुष और पांच बाण लेकर मन्त्रीत करे, इस मन्त्र से फिर चारों दिशा में एक-एक बाण छोड़ देवे और एक बाण आकाश में छोड़े फिर धनुर्वात रोगी के देखने से धनुर्वात शांत होता है। और कोई भी बालक को भी देखें।

मन्त्र :—ह्रूँ छाया पुरुषस्य क्षंः क्षाः ३ क्षंः क्षाः क्षाः क्षाः क्षाः क्षः।

विधि :—इस मन्त्र से अधाहेडा दूर होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते ईश्वराय गौरी विनाय कषए मुष सहिताए कपाल मालाधराय चंद्र शोभिताय तृतीय ज्वर वर प्रदाय गमय गमय स्फोटय २ त्रोटय२ परमेश्वरीश्य आज्ञायाम रहिरे तृतीय ज्वर जइ पीडा करइ।

विधि :—इस मन्त्र से गुग्गुल को १०८ बार मन्त्रीत करके, फिर रोगी के सिर पर महेश्वर है ऐसा विचार करता हुआ रोगी के सामने उस गुगुल को जलाने से तथा पानी कलवानी करके पिलावे तो तृतीय ज्वर जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतः क्षेत्रपालं त्रिशुलं कपालं जटा मुकुट बद्ध शिरो डमरुक शोभितं उन्मादं जियं गोगिणी जय जया बहुला संद विकट नं मुखं जयंतु कुंडल विशालं।

विधि :—इससे दर्भ हाथ में लेकर रोगी को झाड़ा दे तो ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते काश्यपपस्ताय वासुकि सुवर्ण पक्षाय वज्र तुंडाय महागुरुडाय नमः सर्वलोकन खांतर्गताय तद्यथा हन २ हनि २ मन २ मनि २ सर्वलूतान ग्रस २ चर २ चिरि कुरु २ घोड़ासान गृन्ह २ लोह लिग छिद भिंद २ गंडमाल कीटां भक्षे स्वाहा।

विधि :— तीक्ष्ण शस्त्रेण उंजयेत गंडमाला नश्यति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय शंशाक गोक्षीर धवलाय अष्टकर्म निर्मूलनाय तत्पाद पंकज निषेविनी देवी गोत्र देवत्ति जलदेवत्ति क्षेत्र देवति पाद्रदेवति गुप्त प्रकट सहज कुलिश अंतरीषयत्र स्थाने मठे आरा में नदी कुल संकटे भूम्यां आगच्छ २ आणि २ बांधि २ भूत प्रेत पिशाच्च मुद्गर जोटिंग व्यंतर एकाहिक द्वयाहिक चातुर्थिक मासिक वरसिक शीत ज्वर दाह ज्वर श्लेष्म ज्वर सर्वाणि प्रवेश २

गात्राणि भंज २ पात्राणि पूर २ आत्म मंडल मध्ये प्रवेशय २ अवतर २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मुद्गलादि दोष नाश होते हैं।

मन्त्र :—**पर्वतु डुंगरु कर्कट वाड़ि तसु केरि वंश कुहा हाडी छिद २ भिद २ साप्नन केरि शक्ति ठः ठः स्वाहा ।**

विधि :—इस मन्त्र से विष कांटा ठीक होता है।

मन्त्र :—**ॐ नमो रत्नत्रयाय तद्यथा हने मोहने अहं अमुकं अमुकस्यं ज्वरं बंधामि एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिकं नित्यं ज्वरं बंधामि वेला ज्वरं बंधामि स्वाहा ।**

विधि :—केशर, गौरोचन से चीरिका (   ) ऊपर इस मन्त्र को लिखकर कंठ में धारण करने से ज्वर का नाश होता है। बिंदुक २० लिखित्वा द्वयोदिक शीर्गण-यित्वार परिमार्ज्यते ततो वृश्चिक विषंयाति ।

मन्त्र :—**घ घ घः घु घु घुः धरुरे धरुहुउ सुनील कंठु आउरे वाहुडि २ ।**

विधि :—वाम हस्ते दुहं अंगुलि आंगुट्ठे, डंकं, गृहीत्वा अयं मंत्रो भण्यते वृश्चिक विषं याति ।

मन्त्र :—**ॐ सर्वारि स्वाहा ।**

विधि :—जब अपने को बिच्छू काट ले तो वे इस मन्त्र को जपे, बिच्छू का जहर नहीं चढ़ता है।

मन्त्र :—**ॐ रौद्रं महारौद्रं वृश्चिकं अवतारय-२ स्वाहा ।**

विधि :—इस मन्त्र से सात प्रदिक्षणा करते हुये जपे तो वृश्चिक विषं उतरति । अमं जपित्वा ग्रामः सप्तप्रदक्षिणादाय नीयाग्ततो वृश्चिक उतरति ।

मन्त्र :—**अट्ठारह जाति विछी यह अरुणार उदे बुल्लावइ महोदवउ उत्तारइ खंभाक देव केरी आज्ञा फुरतु देव उतारउ ।**

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार हाथ फेरता जाय और मन्त्र पढ़ता जाय तो बिच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—**अट्ठ गंट्ठि नव फोडि ३ तालि बीछतु ऊपरि मोरु उडिरे जावन गरुड भक्खइ ।**

विधि :—इन मन्त्र से ७ बार हाथ से झाड़ा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

मन्त्र :—सुयर वाले हिंगेए यीहिं अन्नु नेहिं फलेहिं अमुका विछि उलग्गउ उत्तारित्तइ एहिं।

विधि :—इस मन्त्र से प्रथम कपड़ा को मोड़ता जाये, तो बिच्छू का जहर उतर जाता है। मौन से मन्त्र पढ़ना चाहिये।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि :—तृणाग्रेण वृश्चिक अंकुटकं सप्तवारं स्पृश्यते हस्ते गृह्यते न लगतो यदपि पतति भूमौ तदा पुनस्तथैव स्पृश्यते शिरीष वृक्ष फले वर्तित्वा लगित्ते डंकादौ। वृश्चिक नुत्तरति।

मन्त्र :—ॐ जः हः सः।

विधि :—इस मन्त्र से सिर दर्द ठीक होता है।

मन्त्र :—ॐ वैष्णवे हुं स्वाहा।

मन्त्र :—ॐ क्षं क्षूं शिरोवेदनां नाशय २ स्वाहा।

विधि :—ऊपर लिखे दोनों ही मन्त्र सिर का दर्द मिटाने का है, इस मन्त्र को २१ बार पढ़ने से सिर वेदना ठीक होती है।

मन्त्र :—ॐ पूं पूं हः हः डुंडुः स्वाहा।

विधि :— इस मन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिखकर कान में बांधने से अर्द्ध शिसा रोग शान्त होता है।

मन्त्र :—अध भेदकं सिरतो नाशय २ स्वाहा।

विधि : -इस मन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर कान में बांधने से आधासोसी शान्त होता है।

मन्त्र :—आवइ २ उद्धं फाटिउमरि सिजा ३ चाउंड हणी आण जइ २ हुइ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं रीं रीं रुं यः क्षः।

विधि :—इस मंत्र को २१ बार जपने से सिर पीड़ा की शांति दूर होती है।

मन्त्र :—ॐ महादेव नील ग्रीव जटा धर ठः ठः स्वाहा।

विधि : – इस मंत्र से भी सिर पीड़ा शान्त होती है।

मन्त्र :—ॐ ऋषभस्य किरु २ स्वाहा।

विधि :– इस मंत्र से भी सिर पीड़ा दूर होती है।

मन्त्र :—पारे पारे समुद्रस्य त्रिकुटा नाम राक्षसी तस्याः किली २ शब्देन अमुकस्य चक्षु रोगं प्रणश्यति।

विधि :— इस मंत्र से सप्तबद्ध लाल डोरे को ७ गांठ देकर वाम कान पर डोरे को बाँधने से चक्षु पीड़ा दूर होती है।

मन्त्र —ॐ अंषि जले जलं धरे अन्धा बंधा कोडो देव पुआरे हिमवंतसारी।

विधि :– इस मंत्र से २१ बार आरनाल जल मन्त्रीत करके चक्षु धोने से पीड़ा मिटती है।

मन्त्र :—ॐ कालि २ महाकालि २ रौद्री पिंगल लोचनी श्रुलेन रौद्रोप शाम्यंते ॐ ठः ठः स्वाहा।

विधि :—बार ७ घर टूपुट लहुणक वस्त्र दोरडउ यदि वामी तदा दक्षिणो कर्णे यदि दक्षिणा तदा वामे बध्यते।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्म पुष्पाय महापद्म पुष्पाय ठः ठः स्वाहा।

विधि :—बार २१ हस्तो वाह्यते चक्षुषोर्भरण निवृत्तिः क्रियते।

मन्त्र :—ॐ विष्णु रूपं महारूपं ब्रह्मरूपं महागुरु शंकर प्रणिपादेयं अक्षि रोग मा हं ह री हं हं हिरंतु स्वाहा।

विधि :– इस मंत्र से पानी २१ बार मंत्रीत करके जल छिड़के तो चक्षु पीड़ा शांत होती है।

मन्त्र :—ॐ क्षि क्षि प क्षं हं सः।

विधि :—भस्म मंत्रीत करके आँख पर लगावे तो चक्षु पीड़ा शांत होती है।

मन्त्र :—रे आकस हणाक आदित्य पुत्र थलि उप्पन्नउ खमणिया दारी उत्तर हि कि उत्तारउं कि छालियाह कवार तुं (अर्कोतारण मन्त्र)।

मन्त्र :—ॐ भूर २ भूः स्वाहा। (खजूरा मन्त्र)।

मन्त्र :—ॐ भूरु २ स्वाहा।

विधि :—इस इस मंत्र को २१ बार पढ़ कर हाथ से झाड़ा दे तो खजूरा विष शांत होता है। कपित्थ वटिका पानीयेन घर्षित्वा डंके दीयते खजूरो विषोपशमः।

मन्त्र :—हूं बु कु कुरु बंभगुराउ पंचय मिलहि तिपव्वय घाउ।

विधि :—इस मन्त्र से मिट्टी को मन्त्रीत करके घोड़े के काटे हुये पर डालने से और हाथ से झाड़ा देने से अच्छा हो जाता है।

मन्त्र :—वागघहि रहोज्जुत्तो सीहे हिं परिवारिऊ एम्य नंद गछा मोकु कुराणां मुखं बंधामि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार पढ़ता जाय और कपड़े में गांठ देवे तो पागल कुत्ते का मुख बंध हो जाता है, फिर किसी को भी नहीं काटता है।

मन्त्र :—धतूरे वाहि ऊँहि महादेवो उपाइ ऊँहि धरि गरुडि बच्चाइ ऊँहि धरि गरुडि गरुडि ।

विधि :—२१ बार जलमभिमन्त्र्य पीयते धतूरउ चूरति ।

मन्त्र :—कालो पंडालो श्यालि फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से मक्खियाँ भागती हैं।

मन्त्र :—उडक वेडि जांगलि जाहुठर ललइ परिपरे ललइ जाहुः कालो कुरड़ी तु हुं फिट् काल काले सरी उग्र महेसरी पछाड़ सावणि शत्रु नाशिनी ।

विधि :—रविवार को गोबर से मण्डल करके उसके ऊपर खड़ा रहे फिर दर्भ लेकर इस मन्त्र से भाड़ा २१ बार देवे तो कृमि दोष मिटता है।

मन्त्र :—समुद्र २ माहिदीपु दीप माहिधनाढ्य जोध दाढ़ कोड़उ खाउ दाढ़ कीडउ न खाहित अमुक तणइ पापिली जइं ।

विधि :—इस मन्त्र से दाढ़ को २१ बार मन्त्रीत करे तो दाढ़ पीड़ा शान्त होती है।

मन्त्र :—ॐ इटि त्तिटि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार जप कर ७ बार हाथ से झाड़ा देवे तो कांख विलाई नष्ट होती है।

मन्त्र :—कुकुहा नाम कु हाडउ पलि घडि उपलासइ घडिउ भारि घडिउ भारसइ घडिउ सवरासवरी मंत्रेण तासु कुहाडेण छिन्न वलि त्रूटे व्याधि ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जपने से काग कांख बिलाई नष्ट होती हैं।

मन्त्र :—ॐ चक्रवाको स्वाहा ।

विधि :—मनुष्य के प्रमाण सात बड डोरा बनावे, फिर इस मन्त्र से १०८ बार मन्त्रीत करे गुड़ के अन्दर गुटिका भक्षापयेत् वालका नश्यंति ।

मन्त्र :—ॐ यः क्षः स्वाहा । अनेनापि सर्वतथैव कार्यं बालको पशमो भवति ।

मन्त्र :—ॐ देवाधिपरो सर्व भूतादि परो ह्रीं बालकं हन २ शोषय २ अमुकस्य हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—दोरउ नवतंतु नव गंठि बालकोपशमो भवति ।

मन्त्र :—ॐ धीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—पानी अभिमन्त्य १०८ बार पीयते हिड्कि नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :— बार ३२ हिड्की नश्यति ।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षां क्षुं क्षे क्षौ क्षं क्षः ।

विधि :—गर्म पानी को २१ बार मन्त्रीत करके पीने से विशुचिका नाश होती है ।

मन्त्र :—भस्म करी ठः ठः स्वाहा । ॐ इटि मिटि भस्म करी स्वाहा । ॐ इटि-मिटि मम भस्मं करि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से जल मन्त्रीत करके पिलाने से और हाथ से झाड़ा देने से अजीर्ण ठीक होता है और अतिसार भी ठीक होता है । और पेट का दर्द भी ठीक होता है ।

मन्त्र :—अतीसारं बंधेमि महाभेरं बंधेमि न ववाहि बंधेमि स्वाहा ।

विधि :—डोरा को ७ बार मन्त्रीत करे, फिर कमर में बांधे तो नाक रक्त, अतीसार ठीक होता है । और बहुत खट्टी कांजी नीमक के साथ पीने से भी अतिसार ठीक होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो ऋषभध्वजाय एक मुखी द्विमुखो अमुकस्य प्लीहा व्याधि छिंदय २ स्व स्थानं गछ प्लो हे स्वाहा । यह प्लीहा मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ क्रों प्रों ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार जाप करने से दुष्ट वर्ण (घाव) का नाश होता है ।

मन्त्र :—ॐ इटि तुटि स्वाहा ।

विधि :—(बलि नाशः)

मन्त्र :—ॐ इज्जेविज्जे हिमवंत निवासिनी अमोविज्जे भगंदरे वातारिसे सिंभारिसे सोणि यारि से स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी ७ बार मन्त्रीत करके पिलाने से बवासीर ठीक हो जाता है।

मन्त्र :—अडी विणडी विहंडि विमडीवा कुंण कुंण कुंतय तीविण ट्टी विमडी वा कुंकुणा विद्यापसाए अम्हकुले हरि साउन भवंति स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से किसी भी प्रकार के धान्य का लाथा। (धाणी) को मन्त्रीत करके ७ दिन तक खिलावे तो हरिष रोग याने बवासीर ठीक होता है।

मन्त्र :—अंजणि पुत्तु हणवंतु वालि सुग्रीउ मुहि पइसइ २ सोसइ २ हरि मंत्रेण हणुवंत की आज्ञा फुरइ।

विधि :—इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रीत कर देने से और नारियल को जटा कमर में बांधने से बवासीर रोग ठीक होता है।

मन्त्र :—ॐ धानी धानी तुह सो वलि हालो वावो होई दुवस्री मासि दोहि बांधइ इ गांठिडउ गांठि २ विस कंटउ पसरइ असुर जिणे विणऊभऊ। भाणऊं।

विधि :—इस मन्त्र से पानी २१ बार मन्त्रीत करके पीने से विष कंटक नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो द्राद्राव्य जस्स सरीखेर कारिणो तस्स छंडती नमो नमः श्री हनुमन्त की आज्ञा प्रवर्तते।

विधि :—इस मन्त्र से थूक और भस्म दोनों को मन्त्रीत कर दाद के ऊपर लगाने से दाद ठीक होता है। प्रभु गदिनदद्रे नहिया बलि तैलेन सह मेलयित्वा अभि मन्त्रिणा पूर्व दीयते दद्रादिकं याति।

मन्त्र :—कर्म जाणइ धर्म्म जाणई राका गुरु कउ पातु जाणइ सूर्य देवता जाणइ जाई रे विष।

विधि :—इस मन्त्र से फोड़ा को मन्त्रीत करने से फोड़ा ठीक हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ दधी चिकतु पुतु तामलि रिषि तोर उपित्ता गावि जोभ वाटि मारियउ तिथु वयरिहंतु लागउहंतु गावितु हु ब्राह्मणु छाडि २ न कीजइ अइसा।

विधि :—इस मन्त्र से जल २१ बार मन्त्रीत करके उस पानी को मुख में लेकर, मुख में घुमाने से मसोड़ा ठीक होता है।

मन्त्र :—ॐ घंटा कर्ण महावीर सर्व व्याधि विनाशनः चतुः पदानां मले जाते रक्ष रक्ष महा बलः ।

विधि :—इस मन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिख कर घण्टा में बांधे फिर उस घण्टा को जोर से बजावे जितने प्रदेश में घण्टे की आवाज जायेगी उतने प्रदेश के मल दोष नष्ट होंगे सर्व व्याधि नष्ट होगी ।

मन्त्र :—ॐ चन्द्र परिश्रम २ स्वाहा ।

विधि : एक हाथ प्रमाण बाण (शर) को लेकर २१ दिन तक इस मन्त्र से रिंगणी वाय को ताडन करे तो रिंगणी वाय नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ कमले २ अमुकस्य कामलं नाशय २ स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र से चने मन्त्रीत करके खाने से कामल वाय नष्ट होती है ।

मन्त्र :—ॐ रां रीं रूं रौं रः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से २१ बार दिन ३४ तक हाथ से झाड़ा देवे तो कामल वात नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ कामली सामली विवहिन कामली चडइ सामली पडइ विहुसुइ सारतणी ।

विधि :—इस मन्त्र से कामल वात नष्ट होता है ।

मन्त्र :— ॐ नमो रत्नत्रयाय ॐ चलूटुं चूजे स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र को रोते हुये बच्चे के कान में जपने से बच्चा चुप हो जाता है रोता नहीं है ।

मन्त्र :—इष्टिः महाःष्टिः विद्विष्टि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से दृष्टि दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ मातंगिनी नाम विद्या उग्रदंडा महाबला लूतानां लोह लिंगानां यच्चहलाहलं विषं गरुडो ज्ञापयति (लूतागड़ गंडादि) ।

विधि :—इस मन्त्र से मकड़ी का जहर निकल जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ पार्श्व चंद्राय पद्मावती सहिताय सर्व लूतानां शिरं छिद छिद २ भिद २ मुंच २ जा २ मुख दह २ पाचय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि : यह भी मकड़ी विष दूर करने का मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ चंद्रहास खड्गेन छिंद २ भिंद २ हुंफट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से फोड़ा को मन्त्रीत करने से फोड़ा ठीक होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः महा दुष्ट लूता, दुष्ट फोडो, दुष्ट व्रण ॐ ह्रां ह्रीं सर्वं नाशय २ पुलित खड्गेन छिंदि २ भिंदि २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार फोड़ा, फुन्सी, व्रण, मवाड़ी विष को मन्त्रीत करने से शान्त होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ हुड होडि फोडि छिन्न तल होडि फोडि छिन्नउ दिट्टा होडि फोडि छिन्न बाहोड़ि फोडि छिन्नउ सातग्रह चऊ रासी फोडि हणवंत कइ खांडइ छिन्नउ जाहिरे फोडि वाय व्रण होइ ।

विधि :- कुमारी कन्या कत्रीत सूत में इस मन्त्र से गांठ १४ दे, फिर गले में या हाथ में बांधे तो सर्व प्रकार के फोड़े-फुन्सी इत्यादिक दूर होते हैं। और सर्व प्रकार की वायु नष्ट होती है ।

मन्त्र :—पवणु २ पुत्र, वायु २ पुत्र हणमंतु २ भणइ निगवाय अंगज्ज भणइ ।

विधि :—इस मन्त्र से भी सर्व प्रकार की वात दूर होती है ।

मन्त्र :—ॐ नील २ क्षीर वृक्ष कपिल पिंगल नार सिंह वायुस्स वेदनां नाशय नाशय २ फुट् ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भी वात रोग दूर होता है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते विरक्ते रक्त वाते हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से स्त्रियों की या पुरुषों की लावण पड़ जाती है, वह दूर हो जाती है ।

मन्त्र :—ॐ महादेव आइ की दुट्टि विकि सर्व लावण छिंदि २ भिंदि २ जुलि २ स्वाहा ।

विधि :—यह भी लावण उतारण मन्त्र है ।

मन्त्र :—कविलउ कथकडउ वैश्वानरु चालंतउ ठः ठः कारी नपज्जलइ न शीतलउ थाइ श्री वाहो नाथलणी आज्ञा फुरइ स्वाहा ।

विधि :-वार १०८ पुरुष, स्त्री, वाग्निदग्धोऽनेन मंत्रेण घू घू कार्यते भव्यो भवति । यद्यनेनोपायेननोपशाम्यति तदा तैल मभिमन्त्र्य दीयते भव्यो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते हिमसीत लेहि मजुषारपालने महाशीतले ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से अग्नि उतारी जाती है।

मन्त्र :—ॐ ज्लां ज्लीं ज्लं ज्लः।

विधि :—इस मन्त्र से अग्नि का स्तम्भन होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ठः।

विधि :—इस मन्त्र से अग्नि का स्तम्भन होता है।

मन्त्र :—ॐ अमृते अमृत वर्षणि स्वाहा।

विधि : इस मन्त्र से कांजि (मट्ठा) मंत्रीत करके उस मट्ठा कांजी से धारा देवे तो अग्नि का स्तंभन होता है।

मन्त्र :—ॐ नमः सर्व विद्याधर पूजिताय इलि मिलि स्तंभयामि स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़कर अपनी चोटी में गांठ लगा कर अग्नि में प्रवेश करे तो जलेगा नहीं।

मन्त्र :—गंग वहंती को धरइ कोकयाँलि विसुखाइ एर्णाहि विंदि हि विंदउ वेसं नरु ऊल्हाइ। ॐ शीतले २ स्ये शीतल कुरु कुरु स्वाहा। (चारायां स्मर्यंते)।

मन्त्र :—वालेयः कर्द मेयः चिखिलंयष्ठ कारं ठः।

विधि : इस मन्त्र से भी दिव्य स्तंभन होता है।

मन्त्र :—इंद्रेणरइय चुल्लिउ वेण चाडा विषं तिल्लं महादेवेण थंभियं हिमजिस्य सीयलं हाहि गोलक स्तंभ ॐ जं जे अमृत रुपिणी स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से (चारिका) दासी का स्तंभन होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं स सूर्याय असत्यं सत्यं वद वद स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार स्मरण करके सिर पर हाथ धरे, फिर आग में प्रवेश करे तो आग में नहीं जलता है। यह मन्त्र झूठे को सत्य कहलाने वाला है। झूठा आदमी अगर शपत करे कि मेरी अगर बात झूठी हो तो मैं आग में जल जाउंगा नहीं तो जलूंगा नहीं। ऐसी शपत करने वाला झूठा आदमी भी इस मन्त्र का आश्रय लेकर आग में प्रवेश करे तो झूठा होने पर भी अग्नि में नहीं जलेगा और सच्चा साबित

होगा निःसन्देह। बार २१ स्मरताय छिरसि हस्तो दीयते सो शुद्धोपि दिव्ये श्रुध्यति न संदेहो। यावति क्षेत्रे दृष्टिः प्रसरति तावति क्षेत्रे एतं स्मरता दिव्य श्रुद्धिः।

मन्त्र :—ॐ श्री वीर हनुमंत्र मेघ घर श्रय श्रावय सागर नागगण २ देवगण २ भेदगण जलंततो सावय सागर लहरि हिमाल जसुपाडदिय उतसु कण्ठ मीथाइ जलं थाह सीतलं जलत श्री हनुवंत केरी आज्ञा बापु वीर।

विधि :— अयं मन्त्रो बार १०८ स्मृत्वा चूरि गृह्यते न दह्यते यदा अन्योगाह्यते तदा बार २१ चुरिसं मुखं निरीक्ष्य स्मर्यते सोपि न दह्यते परं चुरौ दृष्टि धरणीया।

मन्त्र :—ॐ सिद्धि ज्वाला मती मेघामती कालाग्नी रुद्र शीतलं जलत श्री हनुवंत पद्ममय वज्र लोह मयी तिलल नास्ति अग्निः।

विधि :—अयं मन्त्रो बार १०८ स्मृत्वा गोल को गृह्यतेऽन्य पार्श्वाद्धि लोकयता ग्राह्यते सोपिन दह्यते।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय अनंत योग सहस्त्राय आकारणा आदिया हनुं दहुं २ जलुं २ प्रज्वलुं २ भेदउं २ छेदउं २ सोसउं २ आप विद्या राखउं पर विद्या छेदउं प्रत्यंगिरा नमोस्तु सुग्रीव तणी आज्ञा फुरइ ठः ठः स्वाहा।

विधि :—बार २१ स्मृत्वा चूरि गोलक दिव्योः शुद्धि यति। अक्षतान् बार २१ जपित्वा 5 पर पार्श्वाक्चुरि गोलक धमने क्षेप्यंते स्व परयोः श्रुद्धिः दृष्ट प्रत्ययः।

मन्त्र :—ॐ अणिउ बंध उधार बंद्धउं बालिसउं हणुवंतु बंधउं हणुवंति मूकी लाल अणिउं बंधउं किधार।

विधि :— अनेन मन्त्रेण बार २१ धारा जप्यते खङ्ग की धारा बंधः।

मन्त्र :—आर धार खांडउ कयर तुं आणिउ लोहु बंधु बंधउ बाप प्रचंड नारस्यंह की शक्ति।

विधि :—बार ७ खड्गा दीनां धारा बंधः।

मन्त्र :—धुलि २ महा धुलि धुलि दर्शणि न फट्टई घाउ सुमरंतह वज्रा सणि पाउ।

विधि :—एक विंशति बार चतुप्पथ धूलिमभिमंत्र्य प्रहारे दीयते भद्रो भवीत न संशयः।

मन्त्र :—अरकंड मंडलस चरा चरं लोणि पीहुउ प्रलय नीगउ कालिग वडं गणध तुरकं ।

विधि :—बार १०८ भणित्वा चोर्यंज्ल्लीह् को परि रविवारे ल्लीह् की यात्येव ।

मन्त्र :—ॐ भगवति भिराड़ी भाटप्तु तु कुरु कुडउतिणि भगवति भिराड़ी की ६ मास सेवा कीधी भगवति भिराड़ी तूसि करि वरू दीहुउ जुकणू जल वटि थल वटि अम्हरउ गामुले सइ तसुकु सवणु फ्रेडि ससवणु होसइ ।

विधि :—इस मन्त्र को घर से जाते समय ३ बार स्मरण करे तो अपशकुन भी शकुन हो जाते हैं । बार ३ अस्तु वस्त्र मार्गेऽशकुनं सु सकुन भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं शासन देवते सिद्धायके सत्यं दर्शय २ कथय २ स्वाहा ।

विधि : परदेश जाते समय इस मन्त्र का सात पाँव चलकर ७ बार स्मरण करे तो मुहुर्त बार शकुन अच्छे न होने पर भी सर्व कार्य सफल होते हैं । अशुभ मुहुर्त भी इस मन्त्र के प्रभाव से शुभ हो जाता है ।

विशेष :—सरसों का चूर्ण करे, फिर अंकोल के तेल में आग पर औटावे, फिर उस तेल को ऊंट के चमड़े से बने हुए जूतों पर लगावे, फिर चले तो एक में सौ योजन की शक्ति

हा ला फट् स्वाहा ।

सर्वं कर्म करोत ।

र्दिशो मोकर्ला ।

ने से सुख पूर्वक प्रसुति होती है ।

) मिटता है ।

सखानाथ देव नास्ति शूल बह्म चक्रेण

होता है ।

क्लीं ह्रीं २ अमुकस्या गर्भं स्तंभय स्तंभय

।

मन्त्र :—ॐ कुनय त्रिकलाय स्वाहा ॐ

विधि :—कलपानिमे मन्त्रो बार २१ गुणनियो

मन्त्र :—कालेउ बोलेउ सूतलो चाउ च

विधि :—इस मन्त्र से तेल मन्त्रीत करके लगा

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षं क्षं ।

विधि :—इस मन्त्र से कर्ण शूल (कान का दर्द

मन्त्र :—ॐ शूलानाथ देव नास्ति सूल योगिनी मंत्रेण भ्रं ५ ।

विधि : इस मन्त्र से प्रसूति शूल का नाश हो

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कल लोचने ल ल भी क्लां क्लीं क्लूं ठः ठः स्वाहा

विधि : इस मन्त्र को हरिद्रा (हल्दी) के रस से भोज पत्र पर लिखकर एक मटके में लिखित भोजपत्र को डाल कर चौ रस्ते पर उस मटके को गाड देवे तो गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है। देहली का धोवण तलवार का धोवण पीवे तो गर्भ नहीं गिरता है। पंचाग कर्णवीरं पिवेत लडड् पतनि।

मन्त्र :—ॐ चिटि चांडालि स्वाहा।

विधि : इयं मुगोपितेन् बार १०८ जाप्यानन: स्त्रीणां सुखं भवति। कुंकु गोरोचनाभ्यांभूर्जे लिखित्वा कंठा दौ बध्यते।

मन्त्र :—ॐ चामुंडे एष कोस्थंयं भामि व्रज की लके न ठः ठः स्वाहा।

विधि :—काले डोरे को उल्टा बट कर इस मन्त्र को ९ बार बोलकर - गांठ डोरे में लगावे फिर कमर में बांधे मूल नक्षत्र या जेष्ठा नक्षत्र में तो गर्भ गिरना रुक जाता है। नो महीने समाप्त हो जाने पर उस डोरे को छोड़ देना चाहिए तब ही बच्चा होगा। जब तक डोरा कमर में बन्धा रहेगा तब तक प्रसूति नहीं होगी।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख गदा हस्त प्रहरणी अमुकस्य बंदि मोक्षं कुरु २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से तैल सात बार मन्त्रीत करके सिर पर डालने से बंदि मोक्ष:।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कलिकुंड दंड स्वामिने मम् बंदि मोक्षं कुरु २ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा।

विधि :- सात दिन तक संध्या के समय निश्चय से जप करे तो शीघ्र ही बंदी मोक्ष होता है एक माला नित्य फेरे।

मन्त्र :—ॐ हरि २ तिष्ट २ तस्करं बंधेमि माचल २ ठः।

विधि :—इस मन्त्र से अपने वस्त्र को मन्त्रीत कर एक गांठ लगावे तो मार्गमे चोर का भय नहीं रहता।

मन्त्र :—ॐ नमो सवराणं हिली हिली मिलि मिलि वाचार्यं स्वाहा।

विधि :— इस मन्त्र का २१ बार स्मरण करने से वचन चातुर्य होता है।

मन्त्र :—ॐ मालिनी किलि २ सणि २।

विधि : इस मंत्र का स्मरण करने से सरस्वती की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ कर्ण पिशाचो अमोघ सत्य वादिनी मम् कर्णे अवतर २ अतीताः नागत वर्त्तमानं दर्शय २ एहि ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

विधि : –शुद्ध होकर रात्री में स्मरण करे।

मन्त्र :—ॐ नमो नमो पत्तेय बुद्धाणं ।

विधि : प्रतिवादि पक्ष की विद्या छेद होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो सयं बुद्धिणं ज्रौं २ स्वाहा ।

विधि :—नित्य ही सिद्ध भक्ति करके इस मंत्र का जाप करे तो कवि होता है और आगम वादि होता हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो बोहि बुद्धाणं स्रौं २ स्वाहा ।

विधि : शत शत पंचविंशति दिनानि जपेत् एक संधो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो आगास गमणाणं श्रौं २ स्वाहा।

विधि :—अट्ठावीस (२८) दिन तक नमक रहित कांजि का भोजन करके प्रतिदिन १०८ बार मंत्र जपे तो आकाश में १ योजन तक गति होती हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो महातवाणं श्रौं २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र से १०८ बार पानी मंत्रीत करके पीने से अग्नि का स्तंभन होता हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो विप्पो सहिपत्ताणं श्रौं २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का जप करने से मर मारी का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो अमिया सवाणं श्रौं २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का जप करने से सर्व प्रकार का उपसर्ग नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो खेलो सहिपत्ताणं।

विधि :—सद्योऽल्प मृत्यु मुपशमयती इस मंत्र को नित्य जपने से अपमृत्यु का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो जलो सहिपत्ताणं ।

विधि :—इस मंत्र से शुद्ध नदी का जल १०८ बार मंत्रीत करके पीने से तीन दिन में ही अपस्मरादि रोग का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो घोर तवाणं ।

विधि : विष सर्पादि रोग पर जय प्राप्त करता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते नमो अरहंताणं नमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रति चक्रे फट्‌वि चक्राय ह्रीं ह्रूं अ सि आ उ सा ज्रौं २ ज्रौं २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का स्मरण करने से बिसुचि (हैजा) रोग का स्तम्भन होता है।

मन्त्र :—ॐ ज्वल २ प्रज्जवल २ श्रीं लंका नाथ की आज्ञा फुरइ।

विधि :—इस मंत्र का स्मरण करने अग्नि प्रज्जवलित होती हैं।

मन्त्र :—ॐ अग्नि ज्वलइ प्रज्जवलइ डभइ कट्टह भारु मई वे सन रुर्थ भियउ अग्नि हिं पडउतु सारु।

विधि :—अनेन मंत्रेण कटाहा मध्याद्वटका: कृष्यंते।

मन्त्र :—ॐ पुरुषकाये अघोराये प्रवेग तो जाय लहु कुरु २ स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र से सरसो २१ बार जप करके सिर पर धारण करे तो सर्व कार्य सिद्ध होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो कृष्ण सवराय वलगु २ ने स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र को हाथ से २१ बार स्वयं को मंत्रीत करके जिसको भी स्पृश करे वह वश में हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ भवगती कालो महाकाली स्वाहा।

विधि :—सवेरे मुँह धोकर इस मंत्र से हाथ में पानी लेकर ७ बार मंत्रीत करे और फिर जिस व्यक्ति के नाम से पीवे वह व्यक्ति वश में हो जाता है। सात दिन तक इसी प्रकार जल पीवे।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती गंगे कालो २ महाकालो स्वाहा।

विधि :—वाम पाँव के नोचे की मिट्टी को वाम हाथ से ग्रहण करे फिर उस मिट्टी को ७ बार मंत्रीत करे फिर अपने मुख पर लगावे (मुखं खरंघते) फिर राज कुल में प्रवेश करे और जैसा राजा को कहे, वैसा ही राजा करे।

मन्त्र :—ॐ आकाश स्फाटिनी पाताल स्फोटिनी मद्य मांस भक्षणी अमुका जीभ खिलि २ स्वाहा।

विधि :—दक्षिण दिशं गत्वा, ठिकरकं गृहीत्वा, श्मशानां गारेण, जलसह घृष्टेण अर्कपत्रे मन्त्र लिखित्वा [illegible]

[illegible] यंत् त्रैलोक्यं वशी भवति।

[illegible] मिश्रेन लोहित वामहस्त कनिष्ठा गुल्या तिलकं कार[illegible]

मन्त्र :—ॐ नमो रुद्राम अगिघगि रंगि स्वाहा।

विधि :—श्वेत सरसो को इस मन्त्र से ६० बार मन्त्रीत करके जिसके माथे पर डाले तो सबशी भवति महिला विशेषत:।

मन्त्र :—ॐ जलिपाणिउं थलि पाणिउं मकरि मच्छिउं टोलोउंवाणिउं सूरग हणिउं विज्जमु खुधावउं ज्ज जोयउं सुमोहउं ज्ज वाहउं सुवाहउं पंचकिरिण पंच धारि जो महु करइ रागुरो सु सुजाउ अट्ठमइपा तालि फट् स्वाहा ।

विधि :—अनेन् सुर्योदय समये वाम हस्तेन् करोटक मध्य स्थितं उदकं गृहित्वा बार २१ अभि-मन्त्र्यंतत एकविंशति बारा मुखं प्रक्षाल्य राजकुले गंतव्यं श्वेत सर्षपा: शिव निर्माल्य-मेव च एकीकृत्य यस्य गृहे स्थापयेत् तस्यो च्चाटनं भवति ।

मन्त्र :—ॐ पिशाच रूपेणलिंग परिचुबयेत् भगंचि सिंचयेत् स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण उदक चुलकमेक विंशतिवारा नमुख प्रक्षाल्य संध्या कालेऽनया बिअयायस्य नाम गृहीत्वा पानीयं पीयते एक विंशति रात्रेण नरेन्द्र पत्नी अपि वशी भवति किं पुन. सामान्य स्त्री । दूधी ली (लोकी) मूलं शुक्ल चतुर्दशी आदित्यवारे गृहीत्वा आत्म मुखे प्रक्षिप्यते प्रकुपितमपि राजान पादयोः ।
पातयति वशी करोति दृष्ट प्रत्यक्षः ।

मन्त्र :—ॐ तारे तु तारे तुरे मम कुले सर्वं दुष्ट प्रदुष्टानां जंभय स्थंभय मोहय हुं फट् ३ सर्वदुष्ट प्रदुष्टानां स्तंभय तारे स्वाहा ।

विधि :—शुक्ल चतुर्दशी दिने १००० जाप्यसिध्यति प्रतिदिनं वार ७ कार्ये उपस्थते वार १०८ वशी भवति दृष्ट मात्रे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति रक्ता क्षीरक्त मुखो रक्त खशीरक्त मांस बलि ए ए अमुकं उच्चाटय २ ॐ ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहा ।

विधि : -इस मन्त्र को केशर से भोजपत्रपर लिखकर शत्रु द्वारे गाड़े तो शत्रु उच्चाटन होजाता है जहां जाता है वहां द्वेष ही होता है नोन जालि गृह सत्कानि सप्तमं च वा तृणानि मौन पूर्वकं गृहीत्वा कुमारी सुत्रेण वेष्टयित्वा पश्चात सृष्टि संहार विरचितशरा व युग्मं लात्वा कपिलगौघृतेन एक वर्ण गौघृतेन भृत्वामलिन स्त्री पार्श्वात् वृति दापयित्वा कज्जलं पातयित्वा तेनैव घृतेन सहाजनं कृत्वा तेन तिलकं विधाय राज-कुलादौ गम्यते वशी कर्णमुत्तमं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति पद्मावती वृषभ वाहिनी सर्वजन क्षोभिणि मम चिंतित कर्मं कर्मकारिणी ॐ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रः ।

विधि :—इस महा मन्त्र का स्मरण करने से सर्वजन वश करता है आदर से स्मरण करना चाहिये । दृष्ट प्रत्यक्षः ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो रुद्राय ॐ चामुंडे अमुकस्य हृदयं पिवामि चामुंडिनी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार पानी मन्त्रीत करके जिसके नाम से पीवे तो वह वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती वशं करि स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र से फलादिक २७ बार मन्त्रीत कर जिसको खिलाया जाय वह वश में होता है । अन्धा हुलि के फूल और वाम पाव के नीचे की धूली, श्मशान की राख (भस्म) सब मिलाकर चुर्ण करे फिर उस चुर्ण को जिसके माथे पर डाले वह वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ सुंगधवती सुंगध वदना कामिनी कामेश्वराय स्वाहा अमुक स्त्री वश मानय २ ।

विधि :—इस मन्त्र का ३० दिन तक रात्री में १०८ बार जप करे तो अन्य की तो क्या बात इन्द्र की पत्नी भी वश में होती है ।

मन्त्र :—ॐ देवी चंद निरइ करइ हरु मंडइ राहुडि लीनइ त्रिभुवन वसि किया ह्रीं कियइ निलावि ।

विधि :—इस मन्त्र से चन्दनादिक मन्त्रीत करके तिलक करने से सर्वजन वश में होते है ।

मन्त्र :—ॐ काम देवाय काम वशं कराय अमुकस्य हृदयं स्तंभय २ मोहय २ वशमानय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कोई भी वस्तु मन्त्रीत कर चाहे जिसको देने से वह वश में होता है । सिन्दुर, चन्दन, कुंकुम सम भाग लेकर इस मन्त्र से ७ बार मन्त्रीत कर माथे पर तिलक करने से अच्छा वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ देवी रुद्र केशी मन्त्र सेसी देवी ज्वाला मुखी सूति जागा विसिवइट्ठी लेयाविसी हाथ जोडंति पाय लागंति ठं ठलो वाधंति सांकल मोडंति ले आउ कान्हड नारसिंह वीर प्रचंड ।

विधि :—इस मन्त्र को जिसका नाम लेकर १०८ बार ७ दिन तक जपे तो वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ समोहनी महाविद्ये जंभय स्तंभय मोहय आकर्षय पातय महा समोहनी ठः ३ ।

विधि :—इस मन्त्र का स्मरण मात्र से वशीकरण होता है।

मन्त्र :—कांइ करे सिलोउरे खुवा मुहु चउसट्ठि जोगिणि केरीमुदा ।

विधि :—इस मन्त्र से अपने थुक को २१ बार मंत्रीत करके फिर उस थुक से तिलक करे तो राज कुलादिक में सर्वत्र जय होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रुं ३ ह्रीं ३ ह्रुं व वा वि वी वु वू वे वं वो वौ वं वः ।

विधि :—रात्री को सोते समय प्रातः इस मन्त्र का एक एक श्वास में चिंतन करे फिर जो मन में चितन करे वह वश में होता है।

मन्त्र :—ॐ काली आवी काला कपड़ा काला आभरण काला कंनि ताडवत्र केशकरी मोकला आवीचउ वाहए कहाथि प्रज्वलंतो छाणो एक हाथी कुत्ता चाक हिग हिल्ली तहिं नगहिल्ली जहिं अच्छइ मत्तविलासिणि घरु फोड़ि पुरु मोड़ि घरु जालि धरु वालिदा घुता पुसी सु अंगिलाइ अमुकी मारइ पाद पाडि ।

विधि :—अनेन मंत्रेण जल चलुक २१ अभिमन्त्र्य स्वप्न काले सुप्यते यावन्निद्रा नागच्छति तावन्न वक्त व्यंसा वशी भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय नमो चार्या व लोकिते श्वराय बोधिसत्त्वाय महा सत्वाय महा कारुणि काय चंद्रेश सूर्य मति पूतेन महा महा पूतेण सिद्ध पराक्रमे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से अपने स्वयं के कपड़े को २१ बार मन्त्रीत करके उस कपड़े से गांठ लगावे फिर क्रोधी के आगे जावे तो वह शांत हो जाता है धतुरे के फल को लेकर अपने मूत्र में भावना देवे, फिर उसको पान के साथ जिसको भी खिलावे तो वह वश में हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं व्लूं अमुकं अमुकीं वा स्तंभय २ मोहय २ वश मानय स्वाहा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं मम अमुकं वशी कुरु २ स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र का १०८ बार स्मरण करने से वश में होता है

मन्त्र :—ॐ ह्रूं सर्व दुष्ट जनं वशी कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का भी १०८ बार स्मरण करने से वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं कूष्मांडि देवि मम सर्व शत्रुं वशं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार स्मरण करे, वशीकरण होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्रों ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से सुपारी मन्त्रीत करके जिसको दिया जाय वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो देवीए ॐ नमो भरणीय ठः ठः ।

विधि :—इस मन्त्र से काजल १०८ बार मन्त्रीत करके आँख में आंजने से सर्वजन वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं सिद्ध बुद्ध माला अंबिके मम सर्वां सिद्धिं देहि देहि ह्रीं नमः ।

विधि :—पुत्र की इच्छा रखने वालों को नित्य ही १०८ बार स्मरण करना चाहिये ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं द्रः द्रावय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल और चावल मन्त्रीत कर देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

मन्त्र :—ॐ शुक्रकामाय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कन्या कत्रित सूत को २१ बार मन्त्रीत करे, फिर सात बार मन्त्र को पढ़कर उस सूत को कमर में बांधे तो शुक्र का (वीर्य) स्तम्भन होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवउ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाणसस्स अवतर अवतर स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से अक्षत ५०० बार मन्त्रीत करके बिकने वाली चीजों पर डालने से क्रय विक्रय में लाभ होता है ।

मन्त्र :—सीता देलागउ घाउ फूकिउ भलउ होइ जाउ ।

विधि :—इस मन्त्र से तैल ७ बार मन्त्रीत करके घाव पर लगाने से और २१ बार मन्त्र पढ़कर घाव ऊपर (फुक्का प्रदानं विधियते) घाव भरने लगता है ।

मन्त्र :—सोवन कंचोलउ राजादुधु पियइ घाउ न अउघाइ भस्मांत होइ जाइ ।

विधि :—कुत्ते के काटने पर इस मन्त्र से भस्म मन्त्रीत कर, लगाने से अच्छा होता है ।

मन्त्र :—सीहु आकारणी पहुया घालिरे जंप जारे जरा लंकि लीजइ हणुया नांउ हरसं करची अगन्या श्री महादेव भराडाची अगन्या देव गुरु ची अगन्या जारे जरा लंकि ।

विधि :—दशवड सुत्र में दश गांठ लगावे, दस वार मन्त्र पढ़े, फिर उस सुत्र को गले में या हाथ में बांधे तो वेला ज्वर, एकांतर ज्वर, द्वयान्तर ज्वर, त्र्यंतर ज्वर, चतुर्थ ज्वर नष्ट होता है। इसी प्रकार गुगुल मन्त्रीत करके जलाने से भी ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ चंड कपालिनी शेषान् ज्वरं बंध सइंल ज्वरं बंध वेला ज्वरं बंध विषम ज्वरं बंध महा ज्वरं बंध ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कुसुंभ रंग के डोरे में मन्त्र २१ बार पढ़ता हुआ ७ गांठ लगावे फिर गले में या हाथ में बांधे तो सर्व ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—कालिया ज्वर वेताल नारसिंह खय काल क्षीं क्षीणो अनुकस्य नास्ति ज्वरः ।

विधि :—वार २१ चापडी वादने ज्वरोयाति ।

मन्त्र :—सप्त पातालु सप्त पाताल प्रमाणु छइ वालु ॐ चालिरे वालु जउ लगि राम लाषण के वाणु छीनि घातिय हिलउ ।

विधि :—इस मन्त्र से जंगली कंडे की राख और अक्षत मन्त्रीत कर देने से स्तन की पीड़ा ठीक होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते आदित्याय सर २ आगच्छ २ इमं चक्षुरोगं नाशय २ स्वाहा ।

विधि :—कुमारीकत्रीत सुत्र को लेकर ७ वड करे, फिर मयुर शिखा को केशर में रंग कर उस डोरा में मयुर शीखा को बांधे, फिर इस मन्त्र से २१ वार मन्त्रीत करके कान में बांधने से चक्षु रोग का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ ज्येष्ट शुक्रवारिणि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कुमारी सुत्र को सात वड करके सात गाठ लगावे, फिर उस डोरे को कमर में बांधने से वीर्य का स्तम्भन होता है।

मन्त्र :—अं रं हं तं सिं द्धं आं यं रिं यं उं वं ज्ञां यं सां हुं च ।

विधि :—एयाणि विंदु मत्ता सहियाणि हवंति सोलसवि १ सोलससु अक्खरेसु इक्कि क्कं

अक्खरेमुम ताजा सावरि सा वइ मेहं कुणइ सुभिक्खं न सन्देहो। एयाइं अक्खराइं सोलस जो पढ़इ सम्म मुवउत्तो सोदुष्भिक्खु डुराउलपर चक्क भयाइं हणइ सया।

मन्त्र :—ऐं ह्लीं ष्यूं व्यूं क्ष्मूं द्रूं ट्य्ं क्ष्ं ह्लं म्लें ह्लें ह्सां क्रों ह्रीं फें ह्लं क्ष्मौंक्ष्मः।

विधि : यह अठारह अक्षर वाली त्रैलोक्य विजयादेवी नाम महाविद्या वार ३३ चांवल तीनों काल ध्यान करने से सर्व इष्ट की सिद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ अर्हं नमः ॐ ह्लीं ३ ॐ श्रीं ३ ॐ प्रीं २ ॐ ग्रीं ३ ॐ श्रीं ३ म्रीं ३ ज्रीं ३ ल्रीं ३ ह्रीं ग्रीं ३ हुं फट् स्वाहा।

विधि :—यह विद्या ३१ अक्षर की महा विद्या है, सर्व कर्म करने वाली है प्रथम विद्या चौर भय होने पर १६ बार जाप करना चाहिये। दूसरी विद्या शांति कर्म स्थापना, प्रतिष्ठादिक में, राजा आदि के पास जाने के समय ३ बार जपना चाहिये। तुरन्त ही राजा के दर्शन होते हैं। तीसरी विद्या शाकिन्यादिक में मुद्गलादि दोष में और ओदर पीड़ा में १०८ बार कलपानी आदिक करना चाहिये। चतुर्थ विद्या जब गर्भ गिरने लगे, तब पानी तैल को १०८ बार मन्त्रीत करे फिर लगावे। पंचम्यां राज शत्रु भयादिषु स्वयं जाप्या आतुर पार्श्वा च जपनीया इष्ट देवता दीनां च भोगः कार्यः। षष्टया मनुशस्य धनुर्वाते सति गुग्गुलं १०७६ दाह्यते कर्णे च जप्यते। सप्तम्यां सर्प दष्टस्य घनं घृतं वार २१६६ जप्त्वापानीयं कृष्ण जीरकं च परि जाप्यो ड्राह्यते लहरी नाशः। अष्टमीयदा मेयजानदि मार्गा दो विषमा भवति तदा जातप कुंकुमेन जपेन् वा, हस्त पट्ट (द) कादौ लिखित्वा कर्पूरा गुरु धूपा दिना पूज्या वार १०८ नदी सुगमा भवति। नवमी जपनीया खड्गादि स्तम्भः। दशमी पदीप नादौ स्मरणीया एक वस्त्रं परि जाप्य सं मुखं स्तम्भः दिव्ये ऊँजि जप्त्वा

विधि : इस मन्त्र को विशेषतः कुंवार पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) को चन्द्रमा के सामने मुख करके जप किया जाता है। और करीब १००० बार जपने से ज्ञान का प्रकाश होता है। एक माला नित्य जपने से पाप कालिमा दूर होती है, मनः स्वस्थ होता है।

मन्त्र :—ॐ श्रीं श्रि श्रुं श्रः क्ष्रां क्ष्रीं क्ष्रुं क्ष्रः रां रिं रुं रः ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रः ध्रां ध्रि ध्रुं ध्रः स्वाहा।

विधि : सिचइ काउण जलं इमेण मन्त्रेण सत्तपरियत्तं थंभेइ पली वयणं दिव्वं च करेहीं धोएहिं। मेव मालां प्रवक्ष्यामि। जा संग्रहुती अवलरंती गज्जंती अमीयधाराहिं वरि संती तुट्टं मेघमाला बुच्चहि परम कल वारणु कारणु करिति वइ सान रुधंमंती जवीउंति।

विधि :—इमेण मंत्रेण पाणियं पवरं धोउण जाइ जलणे सिहि इमथ्ये निरासंको।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते महामाए अजिते अपराजिते त्रैलोक्य माते विद्ये से सर्व भूत भयावहे माए २ अजिते वश्य कारिके भ्रम भ्रामिणि शोषिणि ध्रुवे कारिणे ललति नेत्राशनि मारणि प्रवाहणि रण हारिणि जए विजय जं भंनि खगेश्वरी खगे प्रोखे हर २ प्राण खिखिणी २ विधून २ वज्र हस्ते शोधय २ त्रिशुल हस्ते षट्वांग कपाल धारिणि महापिशित मांस सिनि मानुषार्द्र चर्म प्रावृत शरीरे नर शिर मालां ग्रंथित धारिणी निश्रूंजिनि हर २ प्राणानु मर्म छेदिनि सहस्त्र शीर्षे सहस्त्र बाहुने सहस्त्र नेत्रे हे ह्व २ हे २ घ २ ग २ धु २ छ २ ओं २ ह्रीं २ त्रि २ ख २ हसनी त्रैलोक्य विनाशिनि फट् २ सिंहे रूपे खः गज रूपे गः त्रैलोक्यो दरे समुद्र मेखले गृन्ह २ फट् २ हे २ हुं २ प्रं २ हन २ माए भूत प्रसवे परम सिद्ध विद्ये हः २ हुं २ फट् २ स्वाहा।

विधि :—सूर्य ग्रहण अथवा चन्द्र ग्रहण में उपवास करके इस मन्त्र का १०८ बार जाप करे मन्त्र तब सिद्ध होता है, फिर इस मन्त्र का २१ बार स्मरण करनेसे राजा, मन्त्री, नर, नारी, जो कोई भी हो सबका आकर्षण होता है। सब वश में होंगे। जिस किसी दुष्ट के नाम से जपे तो उसका अवश्य ही उच्चाटन होता है। रण में वा, राजकुल में, वाद में, विवाद में इस विद्या का स्मरण करने से अजय होता है। और पुष्पादिक मन्त्रीत करके, जिसको भूत, प्रेत, शाकिन्यादि से लगा हो, उस पुरुष के ऊपर डालने से भूतादिक प्रकट होते हैं। बहुत क्या कहें सर्व अभिष्ट सिद्ध होता है।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो अणंत जिणाणं णमो सिद्ध जोग धराणं णमो सव्वेसिं विज्जा हर पुत्ताणं कयंजली ।

विधि :—इमं विज्जारायं पढं जामि इमामे विज्जा पसिष्यऊ ।

मन्त्र :—आवब्रालि बालिका लियं सुखरे ॐ आवत वो चंडि स्वाहा ।

विधि : -दियं वाय पत्त कक्करा ऊ वा धिप्पंति ताऊ सत्त वाराऊभिमंति उण जो श्राहम्म इसो बसो होइ ॥१॥ इस मन्त्र से सात कंकर लेकर मन्त्रीत करे, फिर जो भी बिकने वाली चीज है उसमें उन सात कंकरों को डाल देवे तो वस्तु शीघ्र बिक जाती है ॥२॥ एयाए तुलसी पत्ताणी सत्ताभि मंतिउण कंन्हे कीरंति जं मग्गइ त लह इ ॥३॥ सत्ताभि मंतिऊ कुमारी सुत मऊ डोरो हस्ते बध्यते कुविऊ पसीयइ ॥४॥ एयाए धरा, कक्कराऊ सत्तधि तुण सत्त वा राजा वियाहि गावी सुण हीवा । श्राहम्मइ ॥ ५ ॥ अप्पणो सरीरे पज्जविऊण जं मोसो वइ सो वसो भवई ॥ ६ ॥ एयाए तिल्लं जविउण जरिऊ मक्खिज्जइ सत्थो हवइ ॥ ७ ॥ एयाए सप्पदट्ठस्स पाणियं सत्ताभिमंतियं पाइज्जइ सुही होइ ॥ ८ ॥

मन्त्र :—ॐ क्रों प्रों नरो सहि सहे नमः ।

विधि :—गोमय मंडलं कृत्वा श्री खंड कस्तुरिका कर्पूरेणमंडलं वेधाय तस्यो परि दीपकः कुमारी कर्तित सूत्र श्रुति घृत भृतो दीयते बार १०८ बार मन्त्रो जप्यते पात्र मस्तके दीयते जव निकांतर मध्ये श्रात्मना मन्त्रो जप्यते शुभे शुकलां वरधरा नारी श्रुक्ल पुष्पं गृहीत्वा शुभं वदंती दृश्यते अशुभे रक्तां बरा श्रुभं वदंती च श्रष्टम्यां चतुर्दश्यां वा अथवा प्रयोजनेऽनस्यां तिथौ दृश्यते दीप शीखायां दृश्यते ।

मन्त्र :—ॐ अरिहंते उत्पत्ति स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लाख जाप करने पर सिद्ध होता है इस विद्या का नाम त्रिभुवन स्वामिनि है । सिद्ध हो जाने पर विद्या से जो पूछो वह सब कहेगी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा नमः ।

विधि :—इयं सप्ता दशाक्षरी विद्या अस्याः फलं गुरुपदेशा देव ज्ञायते ।

मन्त्र :—ॐ रूधिर मालिनी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को सात बार जप करके अपना रक्त निकाले फिर उस रक्त को करंज के तेल में मिलावे फिर कमल पुष्प की डंडि का डोरा सूत निकाले फिर उस डोरे को बत्ती बनावे उस बत्ती को रक्त मिला हुआ करंज के तेल में डाल कर बत्ती को जला देवे फिर काजल ऊपाड कर आंख में अंजन करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है ।

अदृश्य व्यक्ति सबको देखता है, किन्तु दूसरे व्यक्ति उस अदृश्य व्यक्ति को नहीं देख पाते हैं।

मन्त्र :—ॐ मातंगाय प्रेत रूपाय विहंग माय धून २ ग्रस २ आकर्षय २ हूं फट सिरि सूल चंडा धर प्रचंड सुग्रीवो आज्ञापयति स्वाहा।

विधि :—सरसों लेकर इस मन्त्र से १०८ बार ताड़ित करने से ग्रह भूत डाकिन्यादि शीघ्र दूर होते हैं। कनेर के फूल, धतूरे के फूल, अश्व गन्ध, अपामार्ग इन वस्तुओं की धूप बनाकर जलाने से भूत बाधा नष्ट होती है।

श्लोक :—कण वीरस्य पुष्पाणि कनकस्य तथैव च,
अश्व गंधा स्वपा मार्ग मेप धूपो विधियते ॥१॥
अनेन् धूपि तांगस्य भूता नश्यंति वि विन्हला:,
शाकिन्यो विविधा कारास्तथा च, रजनी चरा: ॥२॥
वैताला श्चैव सु [illegible] ज्वरा [illegible],
सर्पादिचेव विशेषेण शिरोर्ति विविधा तथा ॥३॥
धूप राजेन सर्वपि धूपि तायां विनाशनं,
[illegible] ॥४॥

[illegible]

मन्त्र :—ॐ ... ॐ ह:।

विधि : [illegible]

मन्त्र :—ॐ कुमारी केन ह्रीँ भगवति नमो हूं अनाकाय ठ: ठ:।

विधि :—[illegible] —सप्ताह [illegible] ददाति, गोरोचन तथा—हिंगु कुं कुमं च मन: शिलाक्षौ द्रेण च समा युक्तं जात्यं धोपि च पश्यति।

मन्त्र :—ॐ किरि २ स्वाहा।

विधि : अर्द्ध रात्री में नग्न होकर इस मन्त्र का जाप करने से स्वप्न में मन चिन्तित कार्य को न हता है।

मन्त्र :—हृंषो बलाय सूर्यो नम:।

विधि : कन्या कत्रीत सूत्र में ६ गांठ लगाकर पांव में बांधने से वलियाति।

मन्त्र :—ॐ गरूडाय विलि २ गरूडो शापयति तस्य विष्णु वचने न हिलि २ हर २ हिरि २ हुर २ स्वाहा निरक्षे (निरंरके) व सुमध्य यारे।

विधि :—इमेण मन्त्रेण सत्त परियते भुइ धराउ नाशंति विस गजेण दुट्ठात्रि ।

मन्त्र :—ॐ लं वं रं यं क्षं हं सं मातंगिनी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से जल को अभीमन्त्रीत कर पिलाने से सर्व रोग चला जाता है । चउ दश अक्खर विज्जा जवियं जलं सत्त वाराऊ जल विस दाह् विसाएां वाहि् हरं लोए पीएण ।

मन्त्र :—ग छ ह उ कुपाउ उरू छिदउ मुहुछिदउ पुंछु छिदउ छिंदि २ भिंदि २ त्रुटि २ जाहि् ३ निसंताणु ।

विधि :—इस मन्त्र को २१बार पढ़ता जाय और हाथसे झाड़ा देता जाय तो, गड दोष नष्ट हो।

मन्त्र :—ॐ पंचात्माय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से २१ बार चोटि मन्त्रीत करके चोटी में गांठ लगावे तो ज्वर से छुटकारा मिलता है ।

मन्त्र :—ॐ आं क्रों ह्रीं नित्ये क्लें वे मद द्रवे इं क्लीं ह्सौं पद्मावती देवी त्रिपुराजित्रिपुर क्षोभिनी त्रैलोक्यं क्षोभय २ स्त्री वर्ग आकर्षय २ क्लीं ह्रीं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का विधि विधान से जप करने से महादेवी पद्मावती जी का प्रत्यक्ष दर्शन होता है ।

मन्त्र :—ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं ह्सौं पद्मावती नमः ।

विधि :—यह पद्मावती मूल मन्त्र है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती श्रियं मम कुरु २ दुरितानि हर २ सर्व दुष्टानां मुखं बंधय २ ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का २१ बार स्मरण करने सर्व कार्य की सिद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ क्लीं क्लीं लीं प्रीं (प्री) श्रीं कलि कुंड भगवती स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र का १००८ बार ज्येष्ठ महीने में जप करे तो पद्मावती महादेवी जी प्रसन्न होती हैं ।

मन्त्र :—ॐ भगवति विद्या मोहिनी ह्रीं हृदये हर २ आउ २ आणि जोहि २ मोहि २ फे ३ आकर्षि २ भैरव रूपिणी क्लूं ३ मम वशमानय २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार जप करने से आकर्षण होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति महा विद्ये चक्रेश्वरी एहि २ शीघ्रं द्रां भ्रूं गृन्ह २ ॐ ह्रीं सहस्त्र वदने कुमारि शिखंड वाहने अमुकी अमुक गात्रे ह्रीं सत्य वादिनि नमः।

विधि :—हाथ के चुलु में पानी ७ बार मंत्रीत करके नित्य पीवे। ७ बार तो, ज्ञान की बृद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो देवाधि देवाय नमः सिंह व्याघ्र रक्ष वाहने कटि चक्र कृत मेखले चंद्राधि पतये भगवति घंटाधिपतये टणं २ शब्दाधिपतये स्वाहा।

विधि :—घण्टा को २१ बार इस मन्त्र से मंत्रीत कर बांधने से रोग मिटता है। (यहां घण्टा से मतलब छोटे घुंघरू लेना।)

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति महा मोहिनी जंभनी स्तंभनी वशी करणी पुर क्षोभिणी सर्व शत्रु विद्रावणी ॐ आं क्रों ह्रां ह्रीं श्रों जोहि २ मोहि २ क्षुभ २ क्षोभय २ अमुकं वशी कुरु २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का रात्री को सोते समय ३०८ बार नग्न होकर जपने से महा वशी करण होता है।

मन्त्र :—ॐ अरे अरुणु मोहय २ देवदत्तं मम वश्यं कुरु २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को कृष्ण पक्ष की चौदश को पाटे पर लिखकर लाल कनेर के फूलों से जप करे १०८ बार तो उत्तम वशीकरण होता है। देवदत्त मन्त्र में आया है। उस जगह पर जिसको वश करना चाहे उसका नाम ले।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति अप्रति चक्रे जगत्सं मोहिनी जगदुन्मादिनी नयन मनोहरी हे हे आनंद परमानंदे परम निर्वाण कारिणी क्लीं कल्याण देवी ह्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का सतत जप करने से सौभाग्य की बृद्धि सर्व जनप्रीयता, और उत्तम प्रकार से वशीकरण होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति अप्रति चक्रे रत्नत्रय तेजो ज्वलित मु वदने कमले विमले अवतर देवि अवतर विबुध्य ॐ सत्यं मादर्शय स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से शीशा, दीप, तलवार छूरी, लकड़ी, जल, दीवाल आदि मन्त्रीत करके दोषी को दिखाने से जैसा का तैसा कह देता है।

मन्त्र :—**ॐ नमो भगवति अप्रति चक्रे जगत्संमोहन कारि सिद्धे सिद्धार्थे क्लीं क्लिन्ने मदद्रवे सर्व कामार्थ साधिनी आं इं ऊं हितकरी यसस्करी प्रभंकरी मनोहरी वशंकरी श्रूं ह्स म्रूं द्रूं कुं द्रां द्रीं अप्रति चक्रे फट् विचक्राय स्वाहा।**

विधि :—इस मन्त्र का सतत् जप करने से तीनों लोको की स्त्रियां क्षुभित होती है। परम सौभाग्य की प्राप्ति होती है। राजकुल की स्त्रियों को देखकर जपने से नित्य ही दास भाव से व्यवहार करती है। इन तीनों ही कार्य के लिये पहले लाल कनेर के फूलों से १००० जाप करे सर्व कार्य सिद्ध होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रां **ह्रीं** ह्रूं ह्रः य. क्षः र. ह्रीं फट् फट् **२ स्वाहा।**

विधि :—मन्त्राधि राजमन्त्र :- पहले उपवास करे; फिर सायंकाल में दूध पीकर सवेरे, काले चनों को खाकर मुष्टीप्रमाण कुष्मक जटा षड्डिक को चांवल का धोया हुआ पानी या चांवल मांड को पीसकर पिलाने से मारी रोग की निवृत्ति होती है।

मन्त्र :—**ॐ ह्रीं चंद्रमुखि दुष्ट व्यंतर कृतं रोगोपद्रवं नाशय २ ह्रीं** स्वाहा।

विधि :—वासाः श्वेताक्षता अभिमंत्र्य गृहादीक्षेप्याः दुष्ट व्यंतर कृत रोगो नश्यति।

अब भूत तत्र विधान को कहते हैं।

[श्रीमद पूज्य पादाचार्य कृत]

प्रणिपत्य युगादि पुरुषं, केवल ज्ञानं भास्करं, भूत तन्त्र प्रवक्ष्यामि यथावदनु पूर्वशः ॥१॥

अर्थ :—श्री आदिश्वर प्रभु को नमस्कार करता हूं जिनको की केवल ज्ञान रूपी सूर्य का उदय हुआ है। ऐसे आदि पुरुष को नमस्कार करके भूत तन्त्र को कहूंगा जैसे कि पहले पूर्वाचार्यों ने कहा है।

तत्र :—शुचि विद्या लं कृतो मन्त्री पंचाग बद्ध परिकरः साधयेद्भुवनं कृत्स्णं किं पुनः मनुजेश्वरान् ॥२॥

अर्थ :—सर्व विद्या से अलंकृत साधक सकली करण पूर्वक पंच अंग का रक्षण करता हुआ साधन करे तो तीनों लोकों को साधने वाला होता है तो फिर मनुष्यों के राजा की

तो बात ही क्या, अब आगे वाली विद्या का तीन बार उच्चारण करे। णमो अरि हंताणं णमो सिद्धाणं णमो आगासगामिणिणं । ॐ नमः— अत्र पंच अंग न्यास करके विचक्षण बुद्धि वाला कार्य प्रारम्भ करे। पंचांग न्यास विधि :...ॐ अरहंताणं नमः हृदयं । हृदय को हाथ लगावे । ॐ सिद्धाणं नमः शिरः। ऐसा कहकर सिर का स्पर्श करे। ॐ आचार्याणां नमः शिखा। शिखा का स्पर्श करे। ॐ उपाध्यायानां नमः कवचं। ऐसा कहकर कवच धारण करे। ॐ लोके सर्व साधुनां नमः अस्त्रं। ऐसा विचार करके अस्त्र धारण करे। इस सकली करण को सुर, इन्द्र भी भेदन करने में असमर्थ हैं, फिर अन्य की तो बात ही क्या है। सुरा सुरेन्द्राणां अस्त्रं विसर्ग युक्तं शासकरं सर्वं दुष्टानां। इस प्रकार अंग न्यास विधि करके आदि प्रभु की प्रतिमा के सामने या अन्य तीर्थंकर की प्रतिमा के सामने यथा शक्ति पूजा करके मन्त्र का जाप प्रारम्भ करे।

मंत्र :—सवायं नमो भगवतो ऋषभाय नमो गुरु पादेभ्यो हुदु २ काल २ सिमि २ गृह्ण २ धनुं २ रुंभ २ आविश २ माविलंब २ शीघ्रं कुरु २ सुरु २ मुरु २ जंध २ दह २ छिंद २ ध्युंभ २ वीर २ भंज २ महावीर २ ग्रस २ मर्द २ हे हैं हे धुं घूं मे२ बुध २ हस २ केलि २ महाकेलि ठः फट् २ फुरु २ सर्वऽहान धुनु महासत्व वज्रपाणि दुर्दांतानां दमकं चर २ कर २ यथा नुशास्तोस्ति भगवता ऋषभदेवेन तथा प्रति प्रद्य इदं ग्रहं ग्रह्ण सुवज्र मूर्द्धान् पालय महा वन्त्राधिपति सर्व भूताधिपति वज्र भैरवल वज्र काल हुं २ रौतु २ जयति वज्र पाणिर्महाबलः हुर्द्धं र २ क्रोध चण्ड धुरु २ धावे २ ह्रीं ह्र ह्रीं ह्र हं ह्रा क्षा क्षा ह्रो २ क्षी २ है २ क्षुं २ क्षं २ क्षः सोध र्माधिपति ऋषभ स्वामिराज्ञापयति स्वाहा।

विधि :—यह पठित सिद्ध मन्त्र है, केवल पुष्पों से जप करना चाहिये, तब सिद्ध हो जाता है। चाहे गृह से गृहित हो, चाहे अगृह से हो, सबको सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र को पढ़ने से गृहित व्यक्ति को आवेश आता है, छोड़ देता है, हंसाता है, गवांता है, जिसको कि इन रोगों से गृसीत हो। अनंत, वासुकि, तक्षक, कर्कोटिक, पद्म, महापद्म, शंखपाल, कुलिक, महानाग, इत्यादिकों के काट लेने पर आवेश में आते हैं, शीघ्र ही जहर उतर जाता है। तीन लोक में जो काल कुट विष हैं उसका भी असर नहीं रहता, फिर सर्प के जहर की तो क्या कथा। इस प्रकार पूज्यपादाचार्य का वाक्य है यहां किसी भी प्रकार की शंका नहीं करनी चाहिये। और पवन ज्वरं, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, राक्षस, व्यंतर, गर्दभ, लूता (मकड़ी विषा) दिक को नष्ट करता है, कितने ही दुष्ट क्यों न हो (पूजपादाचार्य कृत भूत तंत्र समाप्ताः)

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का पहले ३० हजार जाप करे, तब मन्त्र सिद्ध होता है। प्रतिदिन रात्रि में बलि देकर नवैद्य की ओर जपे, फिर इस मंत्र से वस्त्राचल को १०८ बार मन्त्रित

करके गांठ देवें, फिर राजकुलादिक में आवे तो साधक जो कहे, सो मान्य होता है। अगर १००० जाप नित्य करे तो सर्व स्त्रियों का प्रिय होता है, और अगर किसी को वश करना चाहे तो अनु को १०८ बार जाप करने से कार्य की सिद्धि होती है।

मन्त्र :—बहुत दिवस की कुठाहल नान्ही करिपाणी मे विसुपाणी उजान्हइ कापडइ छाणि लीजइ वियण दीजइ।

विधि : इस मन्त्र से शेर के बाल का विष नष्ट होता है।

शाकिनी उच्चारण धूप :- सरसों, हिंगु, नींब, के पत्ते बच, सर्प की कांचली, इस सबकी धूप बनाकर रोगी के सामने जलाने से शाकिनी का उच्चाटन हो जाता है। वणि की जड़, हिंगु, सूंठ सबको समभाग लेकर जल के साथ पीस लेवे, फिर शाकिनि गृसीत रोगी को नाक में सुंघाने से शाकिन्यादि, रोगी को छोड़कर भाग जाते हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो भाणि भद्राय कपिल लिंग लोचनाय वाताचल प्रेतां-चल डाकिनी अंचलं शाकिनी अंचल बंध्यरा चलं सार्वाचलं ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि :—आंचलबाल मन्त्र।

मन्त्र :—ह्रीं। इति उपरित नांगुलिद्वय मध्येअंगुष्ठकं निधाय गुण्यते मार्गे सर्व भयं निवर्तयति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवत्यं अंप कुष्मांडि महाविद्ये कनक प्रभे सिंह रथ गामिनी त्रैलोक्य क्षोभनी एह्यं २ मम चिंतितं कार्यं कुरु २ भगवती स्वाहा।

विधि :—सफेद गुलाब के फूल १०८ बार लेकर इस मन्त्र का जाप करे तो लाभालाभ शुभाशुभं जीवित मरणादिक का कहता है। इस मन्त्र का कर्ण पिशाची भी नाम है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्यवादिनी मम कर्णे अवतर २ सत्यं कथय २ अतीत अनागत वर्तमानं दर्शय २ एह्यं २ ॐ ह्रीं कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

विधि :—लाल चन्दन की एक पुतली बनावे, फिर उसको पुतली के आगे एक पट्टे पर इस मन्त्र को लिखकर सुगन्धित पुष्पों से १०,००० जाप करे तब यह मन्त्र सिद्ध होता है। अब यहाँ पर संक्षेप मे कहते हैं। शुद्ध होकर सिद्धे कान को ७ बार इस मन्त्र से मन्त्रित करे या १०८ बार अव्यग्र वस्त्रैः सुप्यते, तब शुभाशुभ स्वप्न में कहता है या वचन से कहता है। शिवजी के लिंग पर २४ षकार श्मशान के अंगारे से (कोयले) लिखे,

फिर ज्वर ग्रसित रोगी को उस लिंग को दूध से धोकर पिलावे, तो ज्वर से रहित होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रूं क्ष।

विधि :—इस मन्त्र से भस्म मन्त्रित करके खाने से, घंटिका रोग नष्ट होता है।

मन्त्र :—दिशां बंध भगवान बंध बाहूतां चक्षु बंधः सर्व मुख बंधः क्लीं मुखः ॐ वातली २ वाराही २ वारामुखी २ सर्व दुष्ट प्रदुष्टानां क्रोधं स्तंभस्तंभे जिह्वां स्तंभस्तंभे दृष्टि स्तंभस्तंभे महि स्तंभस्तंभे सर्व दुष्टान् प्रदुष्टे ॐ ठः ७ क्लीं गुरु प्रसादे।

विधि :—इस मन्त्र का जाप करने से स्तंभन होता है, लेकिन गुरु की कृपा होनी चाहिये।

मन्त्र :—ॐ सुग्रीवाय वानर राजाय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय स्वाहा।

विधि :—मन्त्रो लिख्यते ढाहु लीपले शोभने चूर्ण खरंटिते अधोमुखपुच्यां श्रूलायां वा एक द्विवि लिख्यते। इस मन्त्र को सुपारि, फल मन्त्रीत करके खिलाने से सर्व प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

मंत्र :—ॐ नमो भगवतो पार्श्व चंद्राय महावीर्य पराक्रमाय अपराजित शासनाय संसार प्रमर्दनाय सर्व शत्रु वंश कराय किनर किं पुरुष गरुड़ गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, प्रमर्दनाय सर्व भूत ज्वर व्याधि विनाशनाय काल दष्ट मन्त्रो छादनाय सर्व दुष्ट ग्रह छेदनाय सर्व रिपु प्रणाशनाय अनेक मुद्रा कोटा कोटी शत सहस्र लक्ष स्फोटनाय वज्र श्रृंखल छेदनाय वज्र मुष्टि सचूर्णनाय चंद्र हासच्छेदनाय सुदर्शन चक्र स्फोटनाय सर्व पर मन्त्र छेदनाय सर्वात्म मन्त्र रक्षणाय सार्वार्थ काम साधनाय विश्वांकुशाय धरणेन्द्राय पद्मावति सहिताय हिलि २ मिलि २ किलि २ महु २ दिलि २ परमार्थ साधिनी पच २ पय २ भ्रम २ धर २ छिंद २ भिंद २ मुंच २ पाताल वासिनी पद्मावति आज्ञापयती हुं फटः स्वाहा।

विधि :—सर्व विषय के कार्य में इस मन्त्र का जाप करना चाहिये।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती चंड पार्श्वाय भगवन एहि २ यक्षं यक्षी राक्षसं राक्षसी भूतं भूती पिशाचं पिशाची कुष्मांडं कुष्मांडि नागं नागी क्षरं क्षरी अपस्मारं अपस्मारी प्रेतं प्रेती कुमारं कुमारी ब्रह्म राक्षसं स्कंदं स्कंदी विशाखं विशाखी गांधर्व गांधर्वी उन्मादं उन्मादी काली महाकाली खेती महाखेती कात्य यिनी महा कात्यायिनी भृंगी रिटी महा भृगीरिटी विनाय की महा विनाय की चांमुडि महा चांमुडि सप्त मात्र की ताट की महा ताट की डाकिनी महा डाकिनी सप्त रोहिणी महा सप्त रोहीणी

सूर्य ग्रहं गृन्ह २ सोम ग्रहं गृन्ह २ वन राज ग्रहं गृन्ह २ नागेन्द्र ग्रह गृन्ह २ माहेश्वर ग्रहं गृन्ह २ नमोस्तुते भगवते पार्श्वनाथाय एकाहिकं द्वयाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं विषम ज्वरं सांवत्सरि कार्द्ध मासिकं वातिकं पितिकं श्लेष्मिकं संनिपातिकं ज्येष्ठाया गृन्ह २ मुह २ मुंच २ धम २ रंग २ तिष्ठ २ पच २ विष्ठि २ कय २ पच २ तुरु २ पूरय २ भगवते भो २ शिघ्रं २ आगच्छ २ आवेश २ हन २ दह २ पच २ छिंद २ भिंद २ कुरु २ लघु २ चल २ रिपु २ गंडाली २ चंडपुरी २ अपस्मारति पर पुरी २ धरि २ करि २ कुरु २ भीन्तरपूर्ण २ कुंभ २ भंज २ र र र र रि रि रि रि रु रु रु रु हुंफट् सर्वक्षर नाशिनी कालमुखीनां वासुकीनां तक्षकीनां कपिलानां काल कीटानां अष्टादश वृश्चिकानां द्वादश मूषकानां व्यंतर विषनाशिनी सर्व विष छेदनी सर्व रोग विनाशिनी हितंकरी यशस्करी सर्व लोक वशंकरी नमो स्तुते भगवते पार्श्व नाथाय तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः आज्ञापयति स्वाहा ।

विधि :—यह मन्त्र सर्व रोग में पढ़ता जाय और झाड़ा देवे तो सर्व रोग नष्ट होते हैं ।

मंत्र :—ॐ नमो भगवतो पार्श्वनाथाय श्री अशि कुंड नाथाय सप्त फण चतुर्दश दंष्ट्रा करालाय धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय महाबल पराक्रमाय अपराजित शासनाय अष्ट विद्या सहस्त्र परिवाराय सर्व भूत वशंकराय वज्रमुष्टि चूर्णनाय अकाल मृत्यु नाशनाय संसार चक्र प्रमर्दनाय सर्व विष मोचनाय सर्व मुद्रा स्फोटनाय सर्व शूल रोग नाशनाय काल दृष्ट मृतको पथापनाय सर्वबंध मोचनाय अनेक मुद्राशत सहस्त्र कोटा कोटि स्फोटनाय वज्र श्रंगोद्भेदनाय सुदर्शन चंद्र हास खड्ग नाशनाय सर्वात्म मन्त्र रक्षणाय सर्वार्थ काम साधनाय सर्व विष छेदनाय सर्व रोग नाशनाय किं पुरुष गरुड़ गान्धर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच डाकिनीनां प्रनाशनाय एहि २ महाबलि पद्मावति साधनी देवी एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक वातिक पैत्तिक श्लेष्मिक संनि पातिक सर्व ज्वरान् गंड पिटक विस्फोटिक शूल लूता ज्वाला गर्दभ अक्षि कुक्षि रोगाणां वाल ग्रह हन २ दह २ पच २ पाटय २ विध्वंशय २ गृन्ह २ बंध २ मोचय २ तिष्ट २ वेधय २ उच्चाटय २ चल २ धम २ रंग २ कंप २ जल्प २ कुरु २ पूरय २ आवेशय कपिल घाति कुरु २ कपिल पिंगल लोचनाय कुरु २ भ्रामय २ शांतिकर २ शुभकर २ प्रशांताय २ ह्लीं धरणेन्द्राय अमृतवर्षो ज्ञापयति हुंफट् स्वाहा । क्षि क्षां क्षं क्षः रः ७ कुरु २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से भी सर्व कार्य की सिद्धि होती है तथा सर्व रोग शान्त होते हैं । ये पठित सिद्ध मन्त्र हैं । मन्त्र नित्य १ बार पढ़ने से स्वयं सिद्ध हो जाते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो पार्श्वनाथाय तीर्थंकराय कालामुखीनां वासुकीनां कपिलिकानां कालकीटानां तक्षकानां अष्टादश वृश्चिकानां एकादश वेदलानां पंचादश विसर्पाणां द्वादश मूषिकानां सर्वेषां चित्रिकाणां सर्वेषां

डाकिनीनां सर्वेषां लूतानां सर्वेषां वातानां सर्वेषां विस्फोटकानां सर्वेषां ज्वराणं सर्वेषां णां सर्वेषां पन्नगानां सर्वेषां ग्रहाणां सर्व रोग विनाशिनी सर्व विद्या छेदिनी सर्व मुद्रा छेदिनी अर्थकरी हितकरी यशः करी सर्व लोक वशंकरी हन २ दह २ पच २ मथ २ गृन्ह २ छिंद २ शीघ्रं २ आवेशय २ पार्श्व तीर्थंकराय ॐ नमो नमः हुं २ यः २ पार्श्व चंद्रो ज्ञापयति स्वाहा।

विधि :—सर्व साधकोयं मन्त्र।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो सिद्धाणं ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ ऐसो पंच-णमोकारो ॐ सव्वपावपणासणों ॐ मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र के प्रभाव से सर्व कार्य सिद्ध होते है, और सर्व इच्छा सफल होती है। यह सर्व मन्त्रों का सार है।

मन्त्र :—ॐ थंभेउ जलं जलणं चिंतिय मित्तोय पंच नमुक्कारो अरि मारि चोर राउल घोरु वसग्ग पणासेउमसया स्वाहा मम समोहियथं-पुण कुणइ।

मन्त्र :—ॐ नमो पंचालए पंचालए।

विधि :—इस विद्या का जो जीवन-पर्यन्त स्मरण करता है। उनको जीवन पर्यन्त कभी सर्प नहीं काट सकता है।

मन्त्र :—ॐ णमो सिद्धाणं आउवंसि चाउवंसि अच्चप्पलं पच्चप्पलं स्वाहा।

मन्त्र :—ॐ नमि ऊणपास विसहर वसह जिण फुलिंग ह्रीं नमः।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं गह भूय जक्ख रक्ख सड़ाइणि चोरारि दुट्ठराय मारि धरागय रोग जलणाइ सव्व भयाउ रक्खउ सिरिथं भणयट्ठिऊ पासा स्वाहा।

नोट :—ऊपर लिखे मन्त्रों की विधि नहीं है।

हुं फट् ठः ५ बलि गृन्ह २ धूपं गृन्ह २ पुष्पाणि गृन्ह २ नैवेद्यं गृन्ह २ नानाविधं बलि गृन्ह २ सर्व रोगं अपहर २ ब्रां श्रीं ब्रूं ब्रः वर्द्धमान स्वामिने स्वाहा। ॐ पन्नती गंधारी वइरोटा माणवी महाजाला अच्छुता पुरिसदत्ता काली गौरी महाकाली अप्पडीहया रोहणी वज्रांकुसा वज्जसिखला माणसी महामाणसी एयाउ मम सन्नि कराखे मकरा लाभ करा हवंतु स्वाहा ॐ अट्ठेवय अट्ठसया अट्ठ सहस्संय अट्ठ कोडीऊ रखंतु में सरीरं देवा सुरपणमिया सिद्धा स्वाहा।

विधि :— मस्तके वाम हस्तं चालयद्भिः स्वस्वरक्षाक्रियते।

मन्त्र :—**ॐ नमः देवपास सामिस्स संसार भय पारग। मिस्स ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मी में कुरु २ देवी पद्मावति भगवती ह्रीं स्वाहा ॐ चोरारि मारि विसहर गर भयरिण रायदुट्ठ जलणोय गहभूय जरक्ख रखस साइणि दोसं पणासेउ मम देवोपास जिणो स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं अं लक्ष्मी स्वाहा।**

विधि :— सात धान्य को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके सातों धान्यों को पृथक-पृथक तोलकर पृथक-पृथक पुड़िया बांध लेवे फिर २१ बार मन्त्रीत करके सिराणे रखकर सो जावे फिर प्रातः उठकर उन धान्यों की पुड़िया को तोल लेवे, जो धान्य वजन में बढ़ जायगा वह धान्य ज्यादा पैदा होगा वर्षाकाल में।

मन्त्र :—**मुहि चंदप्पह ज्जहियइ जिणुम थइ पारस वथु ईंण इमु छ इं मुछकिय को ही लणह समुथु।**

मन्त्र :—**ॐ शांते शांति प्रदे जगज्जीव हित शांति करे ॐ ह्रीं भयं प्रशम २ भगवति शांतिमम शांति कुरु कुरु शिवं कुरु कुरु निरुपद्रवं कुरु कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः शांते स्वाहा।**

विधि :— इस मन्त्र को तीनों समय (टाइम) जपने से निरुपद्रव होता है।

मन्त्र :—**ॐ नमोअ रहो वीरे महावीरे सेणवीरे वर्द्धमान वीरे जयंते अपराजिए भगवऊ अरहस्स जिणिंद वरवीर आसणस्स कु समय मयप्पणा सणस्स भगवऊ समण संघस्स में सिद्धासिद्धाइया सासण देविनि विग्धं कुणउ सानिध्यं स्वाहा।**

विधि :— इस मन्त्र का नित्य ही स्मरण करने से किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता है।

मन्त्र :—**ॐ ह्रीं क्लीं ह्रूं श्रीं गज मुख यक्षराज आगच्छ मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रां क्रों श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं क्ष्म्ल्वर्यूं**

हम्ल्व्र्यूं भम्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं ठम्ल्व्र्यूं रम्ल्व्र्यूं घम्ल्व्र्यूं झम्ल्व्र्यूं छम्ल्व्र्यूं क्षम्ल्व्र्यूं ठम्ल्व्र्यूं ड्म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनी सर्वं कार्याणि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का नित्य ही स्मरण करने से सर्व उपद्रव शान्त होते हैं।

मन्त्र :—ॐ वीर वीर महावीर अजिते अपराजित अतुल बलपराक्रम त्रैलोक्य रण रंग मल्ल गजिस भवारि मल्ल ऊं दुष्ट निग्रहं कुरु कुरु मूर्द्धान् मा क्रम्य सर्व दुष्ट ग्रह भूत पिशाच शाकिनी योगिनी रिपुयक्ष राक्षस गंधर्व नर किनर महोरग दुष्ट व्याल गोत्रप क्षेत्रप दुष्ट सत्व ग्रहंति ग्रहाण निग्रन्हीया २ ॐ चुरु चुरु मुरु मुरु दह दह पच पच मर्दय २ त्राडय २ सर्व दुष्ट ग्रहं ॐ अर्हंद्भगवद्वीरो अतुलवल वीरो निन्हिया दंत्र स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से अक्षत २१ बार मन्त्रीत कर घर में डालने से घर में किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होता है।

मन्त्र :—अरहंताणं जिणाणं भगवंताणं महापभावाणं होउ नमो ऊ माई साहि तो सव्व दुःक्ख हरो, जोहि जिणाणपभावो पर मिठ्ठीणंच जंच माहप्पं संघामिजोणु भावो अवयर उजलं मिसोइथ।

विधि :—इस मन्त्र से २१ बार पानी मन्त्रीत कर पीलाने से सर्व प्रकार के उपद्रव शांत होते हैं।

मन्त्र :—ॐ असि आउसा नमः स्वाहा ॐ अरिहोति लोय पुज्जो सत्त भय विवज्जिऊ परम नाणी अमर नर नाग महिऊ अणाइ निहणो सिवंदेउ ॐ वियये जंभे थंभे मोहे हुः स्वाहा।

विधि :—इयं विद्या यस्य डिंभस्य बध्यते तस्य दंताः सुखे नायांति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ल्रौं क्ष्रीं क्रौं श्रौं हे हे हर २ अमुकं महाभूतेन गृन्हापय २ लय २ शीघ्रं भक्ष २ खाहि २ हुं फटौ।

विधि :—मसान के कपड़े पर विष और खून से इस मन्त्र को शत्रु के नाम सहित लिखे फिर उस कपड़े को चार रास्ता फाटता हो वहां गाड़ देवे तो शत्रु भूत बाधा से ग्रसित हो जाता है और उसको हटाने में कोई भी समर्थ नहीं होता है। जब गड़ा हुआ कपड़ा निकाल दिया जाय तब अच्छा होता है।

मन्त्र :—हुं घटो ॐ रुद्राय स्वाहा ।

विधि :—रुद्राक्ष, गुगुल, भूत केशी, हिंगु बिल्ली की टट्टी (मल) (वीराल वृष्टि) मोर पंख, गो शृंग, मुलोठी, सरसों बच, इन सब चीजों को एकत्र करे फिर ये मंत्र पढ़ता जाय और इन सब चीजों को धूप देवे तो प्रेत ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ लुंच मुंच स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी को मन्त्रीत करे २१ बार फिर रोगी को पिलावे तो (अरिशोपशमः) बवासीर रोग शान्त होता है। इस मन्त्र को जो पढ़ता है सुनता है उसको बवासीर रोग नहीं होता।

मन्त्र :—ॐ इले नीले २ हिमवंत निवासिने गलगंधे विसगंधे अनघटे भगंदरे न कोरसा वातारसा हता कृष्णा हता श्वेता स्फटिक रसा मणि सन्त्र ऊषधीनां वर्णरातं जोवेत् । जो इमां न प्रकाशयेत् चतुर्थब्रह्म घातक ।

मन्त्र :—ॐ कालि महाकालि अवतरि २ स्वाहा लुंचि मुंचि स्वाहा ।

विधि :—जो इमां विद्यां न प्रकाशयेत् तसु कुले हरिसा नाशयंति। सवेरे दुरा मन्त्र को २१ बार द्वयपलिका प्रमाण जल को मन्त्रीत कर ७ दिन तक पीवे तो उस व्यक्ति को हरस, (बवासीर) पीड़ा नहीं होती है। इस मन्त्र को प्रतिदिन भी स्मरण करना।

[illegible]

[illegible] लल्ल कारइ सौ गिय उवधणागु, अकु तेलु धतुर उदस्सु धरि सिरषु धरि [illegible] [illegible] दीट्ठि परम उर्दकारी [illegible] काल ला [illegible] का दवा पुक्कार हिट्ठ टीवाइ आछइ दुठु हंतुन जाणउ मनदा पूलिका मखदे लाल खाइ भारउ खाइ ब्रह्मा खाइ महादेउ खाइ तेतीस कोडि देवता खाइ जा फोडि बाउ सियालु होइ जउ लगि खडीका [illegible] छीपइ।

विधि :—इस मन्त्र से ३७ बार तैल मन्त्रित करके फोड़े पर लगाने से दुष्ट फोड़ा नष्ट होता है।

मन्त्र :—ॐ आं क्रों प्रों ह्रीं सर्व पुर जनं क्षोभय २ आनय २ पादयोः पातय २ आकर्षणी स्वाहा ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण वार २१ जपित्वा हस्तौ बाह्यते तथा कुमारि सूत्र दवर के अमु मन्त्र वा ७/७ जपित्वा सप्त ग्रंथयो दीयंते ततो गाढ़तर ग्लाना वस्था यां रोगिणः कटि प्रदेशे दक्षिण हस्ते वा दवर को बध्यते वार ७।२१ अनेन मन्त्रेण वासा अभिमन्त्र्य रोगिणा शरीरे लग्यंते शराव संपुटं च रोगिणः खट्वा धस्थात् स्थाप्यते तस्य नित्य भोगादि कार्यं ते स्वयं च नित्यं स्मर्यते ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कृष्ण वाससे शत वदने शत सहस्त्र सिंह कोटि वाहने पर विद्या उद्यादने सर्व दुष्ट निकंदने सर्व दुष्ट भक्षणे अपराजिते प्रत्यंगिरे महाबले शत्रु क्षये स्वाहा ।

विधि :—इस महामन्त्र का नित्य ही १०८ बार जप करने से सर्व दुष्टादिक का उपशम होता है और सर्वमन चिंतित कार्य की सिद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो इंद्र भूद गणहरस्स सव्व लद्धि करस्स मम ऋद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र को नित्य लाभ के लिए सदास्मरण करना चाहिए। बकरे का मूत्र, हिंगु, वच, इनको पानी के साथ पीसकर पिलाने से यदि वातु को सर्प भी काट लिया होतो भी निर्विष हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ माले शाले हर विषये वेगं हाहासरो अंबेलं चे सर्वेकिं पोत गेंद्रः मारुद्रं अर्चटः मः हुं २ लसः स्वाहा ।

विधि :—इस विद्या का स्मरण करने से विष निर्विष हो जाता है।

अब कुरंगिणी नाम की गारुड़ी विद्या को लिखते हैं।

मन्त्र :—ॐ अकलु स्वाहा

विधि :—इस मन्त्र से, शंख को सात बार मंत्रीत करके सर्प खाया हुआ मानव के कान में शंख को बजाने से तत्क्षण निर्विष हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ चिटि पिटि निक्षीज ३ ।

विधि :—अनया सप्त वारंपरिजप्य दष्टस्यें परि निक्षिपेत्क्षरणा निर्विषो भवति ।

मन्त्र :—ॐ चलि चालिनी नीयतेज ३ ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार जप कर हाथ को सर्प खाये हुये व्यक्ति के ऊपर (दापयेत्) फिर पानी को माथे पर डालने से निर्विष हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ चंद्रिनी चंद्रमालिनीयते ज ३ ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी को ५ बार मन्त्रीत करके सर्पदृष्टा को स्नान कराने से १०० योजन चला जाता है और निर्विष हो जाता है ।

मन्त्र :— उत्तरापथ पिप्पिलि सहि वसहि ज (ग) पडरवइसि विसऊ इइ विसुप थरइ विसु आहारि करेइ जं जं चक्खइ सयतु विसुतं सयलु निरु विसु होइ अरे विस दोटु उर्दाट्टु बंधउ गाट्टु लयउ मुट्टु ॐ ठः ठः ।

मोणा मन्त्र :—छ हार कारनेखार ठं ठं ठं ठं कार ठः ठः ठरे विष ।

विधि :—उर्द्ध स्वासेन सीत्कारं कुर्वताऽनेन मन्त्रेण बार १०८ जल मभि मंत्र्य भक्षित गड़तर विषोय पुरुषादि: पानीयं पाप्यते सिच्यतेऽवश्यं विषं वमति अस्य मन्त्रस्य पूर्व साधना ।

विधि :—प्रतिवर्ष बार १/१ एवं क्रियते निंब काष्टे पट्टि कायां नि ब चन्दना क्षरै मन्त्री लिख्यते निंब पुष्पं निंब चन्दने न पूज्यते निंब छाविश्चो ड्राह्यते बार १०८ मन्त्री जप्यते प्रतिवर्ष बार १/१ अनेन विधिना पट्टित सिद्धिस्यात ।

मंत्र :—अह घोणसविज्जाए मंतीहिं जयंति सत्तधाराउ पच्छापि बंति तोयं पटंति अह घोणसा विज्जा १ मंतीयं ॐ नमो श्री घोण से हुरे २ वरे २ तरे २ वः २ बल २ लां २ रां २ रीं २ हं २ रौं २ रस २ क्षूं २ ह्रीं २ हू हां भगवती श्री घोण से घः ५ सः ५ हः ५ वः ५ ढ़ ५ ठः ५ गः ५ वर विहंगम नुजे क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मः क्ष्मां रौ शोष य २ ठः ३ श्री घोण से स्वाहा ।

विधि :—यह पठित सिद्ध मन्त्र है इस मन्त्र से सर्व कार्य की सिद्धि होती है । सर्व प्रकार के विष दूर होते हैं । सर्व प्रकार के रोग दूर होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं महा संमोहिनी महाविद्येमम दर्शनेन अमुकं जृंभय स्तंभय

मोहय मूर्छय कछय आकछय आकर्षय पातय ह्रीं महा संमोहिनी ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का स्मरण करके उपदेश देने से सब श्रोता गण आकृष्ट होते हैं । स्त्र्यादि विषये तन्नाम् भू यः कोपि रोचते तन्नाम खटिकया लिख्यो पर वाम पादं दत्वा वार १०८ स्पृर्य तेन तस्तन्मृष्ट्वा वाम हस्तेन तिलकः क्रियतेऽधोमुखः ततो राजादिर्वशोस्यात् । स्त्र्यादि विषये च दक्षिण पादं दत्वा वार १०८ जप्त्वा च दक्षिण पाणिनोर्द्ध मुखस्तिलकः क्रियते परं तस्यानामोपरि पूगो फलं ध्रियते त तस्या दीयते ततः सा वशीकरण स्यातः ।

मंत्र :—ॐ ब्रह्म हुंदिय के कुर्जन मत रे मुझे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से ७ या २१ बार चन्दन मन्त्रीत करके उल्टा तिलक करे तो संसार को वश करने वाला होता है ।

मन्त्र :—ॐ जंभे स्तंभे मोहे अंधे सर्व शत्रु वंश करि स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को पहले १०० माला जप करके सिद्ध करले फिर जिसके नाम बार १०८ जल मन्त्रीत करके तीन चुलु पानी छींटे और तीन चुलु पानी पिलावे तो वशी हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ अर्घयाड़ा पिट्ठ वाड़ा जिवुथानक स्लेति आइ तिथु थानक जाहु महादेव की केरी आज्ञारा ठः ठः ।

विधि :—अनेन् मंत्रेन तृयानि सप्त वार १०८ अभि मंत्र्ये बिले प्रक्षिप्यते कीटि का न नी सरंती ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं कलि कुंडे अमुकस्य आपत रक्षणे अप्रतिहत चक्के ॐ नमो भगवऊ महइ महावीर वद्धं माण सामिस्स जस्सोयं चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भयाणं जोएवा रणेवा रायंगणेवा जाणे वा वाहणे वा बंधणे वा मोहणे सव्वेसि अपराजिऊ होमि होमि स्वाहा ।

जयपुर निवासी, गुरु भक्त, संगीताचार्य श्री शान्ति कुमार गंगवाल, व उनकी धर्मपत्नि प्रेमदेवी ग्रन्थ प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ कराने हेतु श्री १०८ आचार्य गणधर कुंथुसागर जी महाराज व श्री गणनी १०५ आर्यिका विजयमती माताजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुये ।

आचार्य श्री का संघ भक्त जनों के साथ (अकलज चातुर्मास में)

शारदा दंडक

ऐं नमः ? जगदेश प्रणाम्य इन्द्र सुरेंद्र सौपेन्द्र पद्मोद्भू वोध्यां भु शीतांशु शिखि पवन यम धनद दनुजेन्द्र पति वरुण मुख सकल सुर मुकुट मणि निचय कर निकर परिजनित वर विविध रुचिर चित्र नव कुसुम चय-बुद्धि लुंब्ध भ्रमद्भ्रमर मालानि नादा नुगत मुंजुसि जान मन्जीर कलस कनक मर्यकिंकिणी क्वाणजिम्नमुद्गुछामर सनि श्रुतपद किरण गण–किंकरानुगत सुचक्रामण ली लेषु ली ले स्थला भोजनिभ चरण नखवरन्न किरण कांति छलेन हृरन यन हृव्याशन: प्रतिकृतानंग विजय श्रियो सीभवत्या भये नेव शरणागत: पादमूले सुमूलेसमालीन इवलक्ष्यते ललित लावण्य तरुकंदली सुभग जंघालतं गजोन कलधौत रजत प्रभोरुद्यते विद्युद्योत माणिक्य बंधो ज्वलानर्घ्यं कांची कला पानु संप्रमित मुनि तंव विवरम रद्धिरद परि-रचित नव रोमराज्यं कुशे निरंकुशे दक्षिणा वर्तनाभि भ्रम त्रिवलितर लुंट्टित लावन्यरस निम्नगा भूषित मध्यदेशे सुदेशे स्फुरतार हारावली गगन गंगा तरंग ध्व जालिंगि तो तुंगनिविडस्तन स्वर्ण गिरि शिखर युग्मे उभे नुरारो कर कंबुरे खानुगत कंठपीठे सुपीठे लसित सरस सुविलास भुज युगल परिहसित कोमल मृणाल नव नाले सुनाले महानर्घ्यमपि वलय जमयूख मुख मांसलित कर कमल नखरन्न किरण जित तरणि किरणे सुशरणे स्फुरत्यग्रं रागेन्द्र मणि कुंडलो ल्लसित कांति छटा हुरित गल्लस्थली रचित कस्तुरिका पत्र लेखा समुत् खात सुरनाथ नामी व शोभे महासिद्ध गन्धर्व गण किंनरी तुंबर प्रमुख परिरचित विविध पद मंगला नंद संगीत मुख सम्पूर्ण कर्णेसु कर्णे जय जय स्वामिनि शक्ति सकल सुगन्धि तांबुल परिपूर्ण मुख वाल प्रवाल प्रभाधर दलोपांत विश्रांत दंत द्युति द्योतिता शोक नव पल्लवा सक्त शरदिंदु सांद्र प्रभेषु प्रभे विश्वनाथादि निर्माण विधि मन्त्र सूत्र सुसृष्ट नासाग्र रेखे सुरेखे कपोल तल कांति विभवेन विभांति नश्यंति यावंति तेजांसि चतमां सिच विमल तर तार तर संचर तार का नंम लीला विलासो ल्लसित कर्ण मूलांत विश्रांत विपुलेक्षणा क्षेप विक्षेपे विक्षिप्त रुचिर २ नव कुंदली नांबुज प्रकर भूषिताशा व काशे सुकाशे चलद्भ्रू लता विजित कंदर्प को दण्ड भंगे सुभंगे मिलन्मध्ये मृगनाभिमय बिन्दु पद चन्द्र तिलकाय मानेक्षणालंकृतार्द्धे दुरोचिर्लं लाटे सुलोटे लसित वंश मणि जालि कांत रि चलत् कुंतलांतानुगत नव कुंद माला नुषक्त भ्रम द्भ्रमरपंक्ते सुपंक्ते वह द्रहुल परिमल मनोहारि नव मालिका मल्लिका मालती केतकी चंपकें दीवरोदार माला नुसंग्रथित धम्मिल्ल मूर्द्धावन द्वेंदु कर संचयो गगन तल संचरोमं वशस्छ वरुप: सदा दृश्यते पार्श्व नाथे यस्य मधुर स्मीत ज्योतिषा पूर्ण हरिणांक लक्ष्मक्षणादेदेव विक्षिप्य ते तस्य

मुग्ध मुख पुंडरी कस्य कविभिः कदा कोप माकेन कस्मै कथदीयतां सस्फुट स्फटिक घटिताक्ष सूत्र नक्षत्र चय चक्र वर्ति पद विनोद संदर्शिताहर्निशा समय चारे सुचारे महाज्ञान मय पुस्तकं हस्तपद्मेऽत्र वामे दधता भवत्या स्फुटं वाम मार्गस्य सर्वोत्तम एवं समुपदिश्यते दिव्य मुख सौरभे योग पर्यंक बद्धास ने सुवदने सुखदने सुहसने सुवसने सुरसने सुवचने सुजघने सुसदने सुमदने सुचरणे सुधरणे सुकिरणे सुकरुणे जननि तुभ्यं नमः ऐ अ इ उ ऋ लृ इति लघु तया तदनु दैर्घ्येण पंचैव योनि स्थिता वाग्भवेः प्रणवः ॐ बिन्दु रू बिन्दु रू क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स हे ति सिद्ध रुद्रात्मिका काममृत कर किरण गण वर्षिणी मात्रि कामुद्गिरंतिव मन्ति रसं तीस संती हसंती सदा तत्र कमल भव भवन भूमौ भवंति भय भेदिनि भवानि नद भंजनी सुभुर्भवः स्वर्भुवन भूति भव्ये सुहव्ये सुकव्ये सुक्त तितायेन सभाव्यसे तस्य जर्जरित जरसो विरजसो त्रिपुत्री कृतार्द्धस्य सत्तर्क पद वाक्य मय सु शास्त्र शास्त्रार्थं सिद्धांत सौरादि जैन पुराणेति हास स्मृति गारूडं भूत तंत्र शिरोदय ज्योतिषायुर्विधाना रूय पाताल शास्त्रार्थ शस्त्रास मन्त्र शिक्षा दिकं विविध विद्या कुलं ललित पद गुर्फ परिपूर्ण रस लसित कान्ति सौ दार भणिति प्रगल्भार्थ प्रबन्ध सालं कृता शेष भाषा महा काव्य लीलोदय सिद्धि मुपयाति सद्योविके वाङ्देवे नैक के नैव वाग्देवी वागीश्वरी जायते किंच कामा क्षरेण सक्त दुचारितेन तव साध को बाध को भवतु भूवि सर्व श्रृंगारिणां तन्मय न पथ पथि मतित नेत्र निलोत्पलत् झटिति सिद्ध गंध वर्गण किंनरी प्रवर विद्याधरी वासुरी मरी वाम ही नाथ ना गांग ना बा तदा ज्वलन मदन शरि भिकर संक्षोभित्ता विगलितेव दलि तैव छलिते व कवलितेव विलिखि तेव मुखितेव मुद्रितेव व पुपि संदा ते शक्ति बीजेषु संध्यायिना योगिना भोगिनां रोगिणां वैनलेयाप्यते नाहि नातत् क्षणाद मृतं मेघाप्यते दुः सह विषाणां शशांक चूड़ाप्यते ध्यायते येन बीज त्रयं सर्वदा तस्य नाम्नैवप श्रु पाशमल पंजर त्रुटयति तदाज्ञया सिद्धयति गुणाष्टकं भक्ति भाजा महा भैरवि। ऐं ॐ ह्रीं कवलित सकलत त्वात्मके सुख रूपे परिणतायां त्वयि तदाक परि शिष्य ते शिष्यते यदि तर्हित्व ऽक्ति हीनस्य तस्य कार्य क्रिया कारितं तदिति तस्मिन विधौ तदा तस्य किं नाम किं शर्म किं कर्म किं नर्म किं वर्म किं मर्म कामतिः कामतिः कारतिः काधृतिः कास्थिति पर्यर्ष्यति यदि सर्व शून्यांत भूमौ निजे स्थाने मुन्मेष समयं समासाद्य वालाग्र कोग्र' शरूपापि गर्भि कृतः शेष संसार बीजानु बध्नासि कं तं तदा स्वंबिकागीय से तदनु रिजनित कुटिलाग्र तेजों कुराजन निवामेति संस्तूय से बद्ध सस्पष्ट रेखा शिखावा ज्येष्ठेति संभाव्यसे सैव श्रृंगा टका कारिता मागता रौद्रि रौद्रिति विख्याप्यसे ताश्चवामादि कास्त एक लास्त्रीन गुणान् संदधत्यः क्रियाज्ञानमय वांछा स्वरूपाः मायामरस जन्म मधु मथनपुर वैरिणांबीज भावं भजंत्यः सृंजत्य स्त्रि भुवनं त्रिपुर

भैरवी तेन् संकीर्त्य से तत्र शृंगार पीठे लसत् कुंडलोल्का कलाया कुला प्रोल्लसती शिवार्कं समास्क द्य चांद्रं महामण्डल द्रावयन्ति पिबंति सुधां कुल वधु व्रतं परित्यज्य पर पुरुषमकुलीन् मवलंब्य सर्वस्व माक्रम्य विश्वं परि भ्रम्य तेनैव स्यागेण निजकुल निवासं समागत्य सन्तुष्य सीनितदाक: पतिका: प्रिय: क: प्रभु: कोस्मिते नैव जानी महे हे महे स्यानिरम से च कामेश्वरी काम काम गर्जा लये अनंग कुसुमादिभि: सेविता: पर्यट सि जाल पीठे तदनु चक्रेश्वरी परिजेता नटसि भगमालिनी पूर्णा गिरि गह्वरे नग्न कुसुमा वृता विलससि मदन शरमधु विकासित कदंब विपिने त्रिपुर सुंदरी सो घ्राणे नमस्ते ३ अरहंते।

इति त्रिपुर सुंदरी चरण किं करोऽरीरचन् महा प्रणति दीपकं त्रिपुर दंडकं दीपक: इमं भजति भक्ति मान् पठुतिय: सुधी साधक: सर्वाष्ट गुण संपदा भवति भाजन सर्वदा ।।१।।

इस त्रिपुर सुंदरी शारदा दंडक को जो कोई पढ़ता है, सुनता बुद्धिमान तो सम्पूर्ण गुणरूपी सम्पदा को प्राप्त होता है। सम्पूर्ण दु:खों को दूर करता है। कीर्ति की प्राप्ति होती है और सम्पूर्ण विद्याओं का स्वामी बनता है।

।। इति शारदा दण्डक: समाप्त: ।।

मन्त्र :—संगले सीह सएसंतं भणि ऊण धणुह चूलेण किज्जइ तह कुंडलयं यहि एसे सयल संघस्स धणु हस्सरे हमध्येन कुणइ कुणइ चलणंपि सीह संघाऊ मंतप हाविण फुडं संघस्स विरक्खणं कुणई मंत्रोयथा नंटायणु पुत्रा सायरि उपडि हास मोरी रक्खा कुकुर जिम पुछी उल्ल वेइ उर हुइ पुछी पर हुइ मुहि जाहि रे जाह अट्ठ संकला करि उरू बंधउ वाघ वाघिणी मुहु बंधउ कलि व्याखि खिणी की दुहाइ महादेव श्री ऋषभदेव की पूजा पाइटा लहि जइ आगलही वीर वदेहि।

विधि : धनुष लेकर डोरी चढ़ाकर आवाज करे धनुष का फिर इस मन्त्र से सात बार मन्त्र पढ़ कर सात रेखा करे। मन्त्र के प्रभाव से व्याघ्र भी उस रेखा को उलंघन नहीं कर सकता है।

अनेन मन्त्रेण धणुहं अट्टणि ना कुंडला कार संघात बाह्ये रेखा सप्तकं क्रियते मन्त्र प्रभावेन सिंहो संघात मध्ये नायाति रेखा नोल्लंघते।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्स्क्लीं पद्मे पद्मे कटिनी क्लीं नमः।

विधि :—इस मन्त्र का त्रिकाल १ माला फेरने से सर्व कार्य की सिद्धि होती है। विशेष जप करना हो तो गुरु की पहले आज्ञा प्राप्त करे तब ही सिद्ध हो सकता है। अन्यथा नहीं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सर्व कार्य प्रसाधि के भट्टारिके सव्वनु वयणर तस्य सम सव्वाऊ रिद्धिऊ सं पज्जंतु ह्रां ह्रूं क्रौं नमः सर्वार्थ साधिनी सौभाग्य मुद्रया स्म० ॐ नमो भगवती यामये महा रौद्र काल जिह्वे चल चल मर मर हर हर क्रां क्रां क्षीं क्षौं हुं हुं य मालेनो हर हर ज्वीं हुं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से भूत प्रेतादि नष्ट होते हैं। इस मन्त्र को १०८ बार नित्य ही स्मरण करे।

मन्त्र :—ॐ इरि मेरि किरि मेरि गिरि मेरि पिरि मेरि सिरि मेरि हरि मेरि आयरिय मेरि स्वाहा:।

विधि :—इस मन्त्र का संध्या में ७ दिन तक १०८ बार जपे सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—श्री सह जाणंद देव केरी आज्ञा श्री गुरु याणंद केरी आज्ञा श्री पिंगला देव केरी आज्ञा अद्दलान् चालि चालि देऊ कार चालि चालि स्वाहा:।

विधि :—पुष्प धूपाक्षत श्री खंड युक्तो घट, संखो जपेत् बार १०८ ततः शिलायां प्रत्य परे पुरुषोनि वेश्या क्ष तें हंन्य ते ततः स्फिरतः यह घंट, शंख भ्रामण मन्त्र है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चक्र चक्रेश्वरी मध्ये अवतर २ ह्रीं चक्र चक्रेश्वरी घंट चक्रवेगेन भ्रामय २ स्वाहा।

विधि :—नये घड़े को चन्दनादिक से मन्त्र से पूजा करके फिर घड़े के ऊपर कुम्हार को स्थापन करके इस मन्त्र का १०८ बार जाप करे फिर अक्षत से उस घड़े को ताडन करे अगर घटा संसार में भ्रमण करे तो शुभ है और घड़ा टूट जाय तो हानी होगी। नूतन घटं चंदनादि ना पूजीय त्वा मन्त्र भरान पूर्व मुपरि कुमार विवेश्य प्रथम वार १०८ अभि मन्त्रितं रक्षितै स्ताडयत्तं सृष्टि भ्रमणे शुभं संहारे हानिः।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्र रूपेण घटं भ्रामय २ मम दर्शय २ ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि :—नये घड़े के अन्दर चन्दन से ही लिखे फिर उस घड़े को मंडल अन्दर स्थापन करे, फिर चारों दिशाओं में उस घड़े की पूजा करे फिर अक्षत लेकर मन्त्र पढ़ता जाय और घड़े का अक्षतों से ताड़न करता जाय तो घड़ा घूमेगा।

मन्त्र :—ऊँ ह्रीं चक्रेश्वरी चक्र धारिणी शंख धारिण चक्र वेगेन कटोरं के भ्रामय २ दव्यं दर्शय २ शल्यं दर्शय २ चौरं दर्शय २ सिद्धि स्वाहा ।

विधि :—एक कटोरा को गाय के मूत्र में धोकर पत्थर के चकले पर स्थापन करे फिर कुंदरू और गुगुल की धूप देकर इस मन्त्र से हाथ में सरसों लेकर उस कटोरा का मन्त्र पढ़ता जाय और ताडन करता जाय तो वह कटोरा जल कर जहाँ पर चोर होगा, अथवा चोरों द्वारा जहाँ पर धन गड़ा होगा वहां पर पहुँचेगा ।

मन्त्र :—ऊँ नमो रत्नत्रय याय नमो आचार्य विलोकिते स्वरात्य बोधि सत्वाय महा सत्वाय महा कारुणि काय चन्द्रे २ सूर्ये २ मति पूतने सिद्ध पराक्रमें स्वाहा ।

विधि :—अपने कपड़े को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत करके गाँठ लगावे फिर क्रोधित मनुष्य के सामने जावे तो तुरन्त वश में हो जाता है ।

मन्त्र :—ऊँ नमो रत्नत्रयाय मोचिनि २ मोक्षिणी २ मिलो २ मोक्षय जीवं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का त्रिकाल १० माला २ फेरे तो तुरन्त ही बंदी बंदी खाने से छूटता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अघोर घंटे स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १ लक्ष जाप करने से तुरन्त बंदी बंदी मोक्ष होता है ।

मन्त्र :—ॐ लिं विं विं विं स्वाहा अलइ नलइ तलइ गलइ हेमंतु न वास इरसा बाता रसा होता कि स्वामि लोभिता सप्त सिंगार केरउ मणि मंतु ए विद्या जेन प्रकाश इतेह् बत्वारि ब्रह्म हत्या ।

विधि :—इस मन्त्र का बार २१ या १०८ सारस्य श्रुचिकया कटोर कस्या लगंत्या जलमभिमंत्र्यते तज्जल मर्द्ध पीयते शेष अर्द्ध जल मध्ये श्रुचिकानिक्षिप्य टारकं भव्य परिणाममं स्थोद्य भव्य स्थाने रात्री मुच्यते तत्र हरीषा पतति प्रभाते कटोर कस्य जलं रक्तं भवति ।

हिंगु, वच दोनों समान मात्रा में लेकर चूर्ण करे उस चूर्ण को बकरी के मूत्र के साथ मिलाकर पिलाने से सर्प का विष दूर होता है ।

मन्त्र :—हुउं सिठ हु उं संकरू हुउं सुवर मत्तान् विसुरं जउं विसुखाउं विसु अवले विणि कर उं जादि सिवा हुउं सादिशि निविस कर वं हरो हर शिव नास्ति विसु ।

विधि :—थावर विष भक्षण मन्त्र : भक्षितो वा काल पानीयं गतध्यं वार ७ अभिमन्त्र्य निर्विषो भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय अमले विमले स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को १०८ बार पढ़ता जाय और हाथ से झाड़ा देता जाय और पानी को १०८ बार मन्त्रीत करके पिलाने से सर्प का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ह्रीं ह्रूं ह्रः ।

विधि :—इस मन्त्र से झाड़ा देवे १०८ बार तो किसी के द्वारा खिलाया हुआ जहर दूर होता है । तथा क्षः इति स्मर्यते सर्पो न लगति ।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुल्ले मातंग सवराय शंखं बादय २ ह्रीं फुट् स्वाहा ।

विधि :—बालु को २१ बार इस मन्त्र से मन्त्रीत करके घर में डालने से सर्प घर से भाग जाते हैं ।

मन्त्र —ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं कलि कुंड स्वामिने अप्रति चक्रे जये जये अजिते अपराजिते स्तंभे मोहे स्वाहा ।

विधि :- कन्या कत्रित सुत्र को मनुष्य के बराबर लेकर १०८ बार मन्त्रीत करे, फिर उस सुत्र का टुकड़ा करके खावे तो (बालका न भवति) सन्तान नहीं होवे ।

मन्त्र :—ब्म्ल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं ध्म्ल्व्र्यूं ।

विधि :- इस मन्त्र को पान ऊपर हाथी के मद से अथवा सुगन्धित द्रव्य से लिखकर खिलावे तो वश होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो ह्रां ह्रीं श्रीं चमुंड चंडालिनी अमुका मम नामेण आलिंगय २ चुंबय २ भग संचय २ ॐ क्रों ह्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्व फट् फट् स्वाहा ।

विधि :—रात्रि को सोने के समय इस मन्त्र को १०८ बार जपना, फिर पानी को २१ बार मन्त्रीत करके पीना, सोती समय इस प्रकार २६ दिन तक करना, शनिवार से प्रारम्भ करना, जिस स्त्री के नाम से जपा जायगा वह अवश्य वश में होगी ।

मन्त्र :—ॐ गुहिया वैतालाय नमः ।

विधि :—काली गाय का गोबर जब भूमि पर न पड़े उससे पहले ही रविवार को प्रभात ही अधर ले लेवे, फिर जंगल में एकान्त जगह में जाकर उस गोबर का ४ कंडे बनाना, फिर उसी दिन से नमक रहित गाय के दूध के साथ भोजन करना, उसी दिन से ब्रह्मचर्य का पालन करना, जब शौच लगे तब जंगल में जहाँ कंडे पड़े थे

वहाँ जा कर एक कंडे पर दाहिना पैर रखना दूसरे कंडे पर बांया पैर रखना, एक कंडे पर शौच करना, एक कंडे पर पेशाव करना, शौच करते समय इस मन्त्र का एक हजार जाप करना। इस प्रकार तीसरे रविवार तक करना, जब तीसरा रविवार आवे तब श्मशान की अग्नि लाकर मल वाला कंडा और पेशाव वाला कन्डा दोनों को अलग-अलग जलावे, फिर जलाकर दोनों कन्डों की भस्म अलग-अलग रख लेवे। जब प्रयोग करना हो तो शत्रु के घर में विष्टा के कन्डे वाली भस्म को डालने से शत्रु के घर में खाने पीने की वस्तु में भोजन में सब जगह विष्टा ही विष्टा हो जायगा, शत्रु भोजन भी नहीं करने पावेगा। जब शत्रु चरणों में आकर पड़े तो पेशाव वाले कन्डे की राख को शत्रु के घर में डलवाने से विष्टा होना बन्द हो जायगा। तब शान्ति होगी।

मन्त्र :—ॐ उचिष्ट चांडालिनी देवी अमुकी हृदयं प्रविश्य मम हृदये प्रवेशय २ हन २ देहि २ पच २ हुं फट् स्वाहा।

विधि :—शनिवार से रविवार तक ७ दिन इस मन्त्र को शौच पेशाब बैठते समय २१ बार जपे तो ७ दिन में वांछित स्त्री वश में होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु को ॐ नमो उयणो मोहिनी बोध बही नड़ी चालोकंत वन माही जान जलंती आगी बुझा दीदों जल मोही थल मोही आकाश मोही पाताल मोही पाणी की पणि हारी मोही वाट घाट मोही आवता जाता मोही सिंहासन बैठो राजा मोही गोखे बैठी रानी मोही चौशठ जोगिनी मोही एता न मोहै तो कालिका माता को दूध हराम करि हणुमंतनी वाचा फुरे गुरु की शक्ति हमरो भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—रविवार के दिन इस मन्त्र को १०८ बार नग्न होय जपे पान, फूल, सिन्दूर, गुगुल इन चीजों का सात बार होम करे। जिसको वशी करना चाहे उसके आगे वही पूजा में का सिन्दूर को सात बार मन्त्रीत करके सीधा तिलक अपने माथे पर करे। वह जिसके नाम से सिन्दूर मन्त्रीत करके तिलक लगाया हो। वश्य होता है। अगर वशीकरण को छोड़ना चाहे तब पूर्वोक्त क्रिया करके पूजा में का सिन्दूर से उल्टा तिलक करे।

मन्त्र :—ॐ काला कलावा कालीरात भैसासुर पठाऊं आधी रात जेरुन आवे आधीरात ताल मेलु करे सगलारात वाप हो काला कलवा वीर अमुकी स्त्री बैठाकूं उठाय लाय सूता कूं जगाय ल्याव खडी कूं

चलाय ल्याव पवन वेग आणि मिलाय आपणि बलि मुक्ति लीजै अमुकी स्त्री आणि बिजं आवै तो जीवै नहीं तो उड्ड काटि मरै ।

विधि :—भैंसहा गुग्गुल की गोली एक सौ आठ घृत के साथ बैर की लकड़ी को जलाय कर इस मन्त्र से होम करे। (बलि देवे)

मन्त्र :—सर्पाप सर्प भद्रंते दूरं गच्छ महाविष: जन्मेजयस्यय भीते आस्तिक वचनं स्मर ॥१॥ आस्तिक वचनं श्रुत्वा यस्सर्पोन निवर्त्तते। शतधाभिद्यते मून्द्धि शीर्ष वृक्ष फलं यथा ।

विधि :—अगर सर्प सामने चला आ रहा हो तो दोनों श्लोक रूप मन्त्र को पढ़कर ताली बजा देना और सर्प के सामने मिट्टी फेंक देना, सामने से सर्प हट जायगा, अगर नहीं मानेगा और जबरदस्ती सामने आवेगा तो सर्प के दो टुकड़े हो जावेगा। सवेरे और शाम को तीन-तीन बार इस श्लोक को नित्य ही स्मरण करे तो सर्प जीवन में कभी भी नहीं काटेगा ।

मन्त्र :—ॐ नमो काला भैरू कल वा वीर में तोहि भेजु सपदा तीर अंब चटपटी मांथै तेल काला भैरू किया खेल कलवा किलकिला भैरू गजगजाधर में रहे न काम सवारे रात्रि दिन रोव तो फिरै तो जती मसान जहारं लोह का कोट समुद्रसी खाई रात्रि दिन रौवता न फिरै तो जती हणमंत की दुहाई सबदशा चांपिडका चा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि : श्मशान की भस्म को ७ बार इस मन्त्र से मन्त्रीत करके जिसके ऊपर डाल दिया जाय वह उन्मत्त होकर फिरे, याने पागल हो जाय, भूकता फिरे ।

मन्त्र :—ॐ महा कुबेरेश्वरी सिद्धि देहि २ ह्रीं नमः ।

विधि : इस मन्त्र को तीन दिन तीन रात्रि अहर्निश जपे एकान्त जगह में, जहाँ स्त्री-पुरुष का मुख भी नहीं दिखाई पड़े ऐसी जगह जाकर जपे यहाँ तक कि भूख लगे चाहे प्यास लगे तो भी जपता ही रहे। टट्टी लगे तो भी जपे। और पेशाब लगे तो भी जपता रहे। एक मुरदे की खोपड़ी को सिन्दूर का तिलक लगावे फिर दीप धूप, नैवद्य चढ़ाय कर उस खोपड़ी के सामने जप करे निर्भय होकर चौथे दिन साक्षात भगवती सिद्ध होगी और वरदान देगी फिर नित्य ही ४० सुवर्ण मोहर का, फिर ४० सुवर्ण की मोहर नित्य मिलेगी।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं रक्त चामुण्डे कुरु कुरु अमुकं मे वश्य मे वश्यमानय स्वाहा ।

विधि :—लाल कनेर के फूल, लाल राइ, कडुवा तेल का होम करे, दश हजार जाप करे अवश्य ही वशीकरन होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो वश्य मुखीराज मुखी अमुकं मे वश्य मानय स्वाहा ।

विधि :—सवेरे उठकर मुंह धोते समय पानी को सात बार मन्त्रित करके मुंह धोने से जिसके नाम से जपे वह वशी होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो कट विकट घोर रूपिणी अमुख मे वश्य मानय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को भोजन करते समय एक २ ग्रास के साथ एक बार मन्त्र पढ़ता जाय और खाता जाय तो पाँच सात ग्रास में ही वशीकरण होता है। अमुक की जगह जिसको वश करना चाहे उसका नाम ले ।

मन्त्र :—ॐ जल कंपै जलधर कंपै सो पुत्र सौ चंडिका कंपै राजा रूठो कहा करे सिंघासन छाडि बैठे जब लगई चंदन सिर चडाउं तब गोत्र भुवन पांव पडाउं ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि :- चंदन को १०८ बार मन्त्रित करके तिलक लगाने से राजा प्रजा सर्व ही वश में होता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं श्री करी धन करी धान्य करी मम सौभाग्य करी शत्रु क्षय करी स्वाहा ।

विधि :—अगर, तगर, कृष्णागर, चन्दन, कपूर, देवदारू इन इन चीजों का चूर्ण कर इस मन्त्र का १०८ बार जाप करे और १०८ बार मन्त्र की आहुति देवे तो तुरन्त राजगार मिले चाहे व्यापार चाहे नौकरी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं नरसिंह चेट की ह्रां ह्रीं हृदया प्रत्यक्ष अमुको मम वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को रात्रि को १०८ बार जपने से स्त्री तुरन्त वश में होती है ।

मन्त्र :—ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं ॐ नमो भगवति मोहिनी महामोहिनी जृंभिणी स्तंभिनी पुर ग्राम नगर संक्षोभिनी मोहिनी वंश्य करिणी शत्रु विडारनी ॐ ह्रीं ह्रां ह्रूं द्रोही २ जोहि २ मोहि २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को सातों बार १०८ बार जपे और मुख पर हाथ फेरे तो राजा प्रजा सर्व वश्य ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी सप्त पाताल भेदिनी सर्व राज मोहिनी अमुकं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार नित्य ही जाप करने से बड़ा प्रतापी होता है और जगद्वश्य होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो राई रावै धनि आधावे खारी नोन चटपटी लावे मिरचै मारि दुश्मनै जलावे अमुक मेरे पांव पड़ता आवै बैठा होय तो उठावै सूता होय तो मार जगावै लट गहि साटी मार मेरे बांये पायें तले आनि घाल दखों हनमंत वीर तेरी आज्ञा फुरै ॐ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—राई, धनिया, नमक, मिरच, इन चारों चीजों को मिलाकर इस मन्त्र से १०८ बार अग्नि में होम करे तो इच्छित व्यक्ति आकर्षित होता है ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं मे वश्य मानय सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से वशी करण होय ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुक आकर्षय २ सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से आकर्षण होता है ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकी आकर्षय २ सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से स्त्री का आकर्षण होता है । पुरुष के लिये करे तो पुरुष भी आकर्षण हो ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं स्तंभय २ ठः ठः सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से भी स्तम्भ होता है ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं मोहय २ सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से मोहनी करण होता है । अमुकं की जगह साध्य व्यक्ति का नाम लेवे ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं उच्चाटय २ सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से उच्चाटन होता है ।

मन्त्र :—ॐ जुं सः अमुकं मारय २ घे घे सः जुं ॐ ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जप करने से मनुष्य मरण को प्राप्त हो जाता है

मन्त्र :—ॐ नमो चीटी २ चांडाली महाचांडाली अमुकं मे वश्य मानय स्वाहा।

विधि :—दूध, घी को एक हजार आठ बार होम करे तो स्त्री या पुरुष वश में होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो नगन कीटि आ वीर हूं पूरों तोरी आशा तूं पूरों मोरी आशा।

विधि :—भूने हुए चावल एक सेर, शक्कर १ पाव, घी आधा पाव इन सब चीजों को एकत्र करके रखना फिर प्रातःकाल जहाँ चीटियों का बिल है वहां जाकर मन्त्र पढ़ता जाय और वह एकत्र करी चीज को थोड़ी २ चीटियों के बिल पर डालता जाय। इस प्रकार ४० दिन तक करने से तुरन्त रोजगार मिलता है।

मन्त्र :—ॐ चंदा मोहन चंदा वेली नगरी माहि पान की वेली नागर वेलो की रंग चढ़ं प्रजा मेरे पाय पडं। यहाँ नाम देवें।

विधि :—बार ७ या २१ मन्त्रित पान खाने से सर्वलोक देखकर प्रसन्न होय।

मन्त्र :—ॐ नमो हन २ दह २ पच २ मथ २ अमुकं मे वश्य मानय २ कुरु २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से सूर्योदय के समय पानी को १०८ बार मंत्रित करके पीने से वश्य होता है।

तन्त्र :—दो मुंह वाले सांप मरे हुये को ७ दिन तक नमक में गाड़ देना फिर आठवें दिन उस सांप को नमक के अन्दर से उठा लेना। लेके पानी से धो लेना, फिर नदी या तालाब में जाकर कमर तक पानी में जाकर सांप के हड्डी की गुरीआ एक २ पानी में छोड़ते जाना जो हड्डी की गुरीआ पानी में सर्पाकार चले उसे ले लेना। लेके उस गुरीआ को चांदी या ताँबे के ताबीज में डालकर पास रखे तो मनुष्य अदृश्य होता है।

तन्त्र :—काली बिल्ली को तीन दिन उपवास करवा के धाप कर घी उस भूखी बिल्ली को पिलावे फिर जब वह बिल्ली उल्टी करदे तब उस घी को उठाय लेना, उस घी का दीपक जलाकर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल पाड़ना उस काजल को आँख में अंजन करने से मनुष्य अदृष्य हो जाता है। अपने तो सबको देखता है। किन्तु स्व को कोई भी नहीं देख पाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कूं काला भैरूं कपिली जटा भैरूं फिरे चारों दिशा कह भैरू तेरा कैसा भेष काने कुंडल भगवा हाथ अंगोछी ने माथे ममडो मरे मशाने भैरू खड़ो जह २ पठॐ तह २ जाय हाथ भी जी खड़ २ खाय मेरा वैरी तेरा भख काढ कलेजा वेगा चख

डाकिनी का चख शाकिनी का चख भूत का विगर चल्या रहे तो काली माला की सेज्या पर पाव धरे गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—अर्ध रात्रि में काली माला, काला वस्त्र पहनकर १०८ बार जपना, नित्य भुक्त भैरों को बलि देना २१ दिन तक, तो कार्य हो ।

मन्त्र :—ॐ माहेश्वरी नमः ।

विधि :—इस मन्त्र सों बेर की लकड़ी चार अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर में डाल देवे तो सर्व परिवार वश होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अमुकी में प्रयच्छ ठं ठः ।

विधि :—इस मन्त्र सों पाडर जाहि की लकड़ी पांच अंगुल की कील बनाकर एक हजार बार इस मन्त्र सों मन्त्रित करके देवता के मन्दिर में वाम तरफ मकान हो उसमें गाड़ देवे, कन्या जल्दी मिलती है ।

मन्त्र :—ॐ कें कां किं कीं अमुकं हुं कुं कूं कें कैं कीं कौं कं कः ठः ठः ।

विधि :— इस मन्त्र से खैर की लकड़ी की आग जलाकर उसमें घी की मन्त्र से आहुति देने से शत्रु को ज्वर चढ़ता है और जब शत्रु आकर चरणों में पड़े तो उसकी शान्ति के लिये इस मन्त्र ॐ सों सः, को जपने से ज्वर टूटता है ।

मन्त्र :—ॐ हूं खं खां हिं विं खुं खूं खें खैं खों खौं खं खः ठः ठः ।

विधि : भीलावे की लकड़ी छः अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके शत्रु के दरवाजे में गाडने से शत्रु महान कष्ट पाता है । जब गड़ी हुई लकड़ी को निकाले तब शांति ।

मन्त्र :—ॐ क्षौं धं धां धिं धीं धुं धूं धें धैं धों धौं धं धः अमुकं ठः ठः ।

विधि : हारि ६ की लकड़ी चौदह अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके चौराहे पर रात्रि को गाड़ देने से शत्रु को राक्षस आकर बाधा पहुंचाता है । जब उस लकड़ी को चौराहे पर से निकाले तो शांति हो ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रूं जं जां जिं जीं जुं जूं जें जैं जों जौं जं जः अमुकं ठः ठः ।

विधि :—पीपल की लकड़ी पांच अंगुल की हजार बार मन्त्रित करके अपने घर गाड़ देने से वश होय ।

मन्त्र :—ॐ शं शां शीं शिं शुं शूं शें शैं शों शौं शं शः अमुकं ठः ठः ।

विधि :—समी की लकड़ी की कील ११ अंगुल की इस मन्त्र से १००० बार मन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दी जाय उसके घर में के सर्व भय राक्षस, भूत, प्रेतादिक कृतोपद्रव शान्त हो।

मन्त्र :—ॐ क्षुं क्षौं अमुकं ठः ठः।

विधि :—लोहे के त्रिशूल को विष और रक्त से लिप्त करके १००० बार मन्त्रित करे और फिर उस त्रिशूल को भूमि में गाड़ देवे तो शत्रु का निश्चय से मरण हो।

मन्त्र :—ॐ कुरु कुध्वो ह्रां स्वाहा।

विधि :- सहस्त्रेक जप्त्वा पूर्वस्यैव कर्तव्यं मनास्मरे तु सर्वमाकर्षयति।

मन्त्र :—ॐ प्रचंड ह्रौं ह्रौं फट् ठः ठः।

विधि :—इस मन्त्र से मनुष्य की हड्डी सात अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर में गाड़े उसके घर में महान् उत्पात होता है उसको निकाल देवे तो शांति हो।

मन्त्र :—ॐ हूं क्षौं अमुकं फट् स्वाहा।

विधि :—चूटका मसं संयुक्तं कटुतैलेन जुहुयात् मन्त्रसहस्त्रेण मन्त्रीरवात् शत्रुनिपातो भवति।

मन्त्र :—ॐ हूं क्षौं अमुकं फट् स्वाहा।

विधि :- इस मन्त्र से चिउंटा मसा कडवा तेल में १००० बार होमे तो शत्रु का निश्चित मरण हो।

मन्त्र :—ॐ ह्रौं अमुकं ठः ठः।

विधि :—मनुष्य के हड्डी की अठारह अंगुल कील को इस मन्त्र से हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर में गाड़ दिया जाय उसके कुटुम्ब में महान् उत्पात हो। निकाले तब अच्छा हो।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रां ह्रूं महाकाल कराल वदन गृह भिंदि २ त्रिशुलेन ठं ठः।

विधि :—इस मन्त्र से विभितक काष्ट की कील एक दस अंगुल की एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर के द्वार पर जिसके नाम से गाड़े वह सद्य मरे।

ॐ ह्रीं ह्रां अमुकं ठं ठः।

विधि :—इस मन्त्र सेतु (   ) काष्ट की लकड़ी नव अंगुल प्रमाण १ हजार बार मन्त्रित करके जिसके नाम से घर में गाड़े तो वश्य होय।

मन्त्र :—ॐ मातं गिनी ह्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—राई, नमक दोनों को घी के साथ होम करने से जिसके नाम से होम करे वह वश में हो आकर्षित हो ।

मन्त्र :—ॐ जलयं जुल ठ ठ स्वाहा ।

विधि :—उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में बट वृक्ष की तीन अंगुल लकड़ी को सात बार मन्त्रित करके जिसके घर में डाल दिया जाय उसके घर में श्मशान हो जाय ।

मन्त्र :—ॐ मनु ऊं ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—हस्त नक्षत्र में जाल्हि की कील चार अंगुल सात बार मन्त्रित करके कुम्हार के आवा में (बरतनों के भट्टे में) डाल देवे तो सर्व बरतन फूट जाय ।

मन्त्र :—ॐ मरे घर मुह मुह ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—विशाखा नक्षत्र में विष काष्ट की चार अंगुल की कील को सात बार मन्त्रित करके जिसके घर में डाल देवे तो उस घर का सर्वनाश हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ मिली २ ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—ज्येष्ठान नक्षत्र में हिंगोष्ट की लकड़ी एक अंगुल की सात बार मन्त्रित करके जिस वैश्या के घर में डाल देवे, तो वैश्या के घर में अन्य पुरुष प्रवेश नहीं करेगा ।

मन्त्र :—ॐ नां नीं नुं ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—मूल नक्षत्र में नील (नाल) काष्ट की लकड़ी नौ अंगुल की सात बार मन्त्रित करके वैश्या के घर में डाल देने से दुर्भागी होती है वेश्या ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ठं ठः स्वाहा ।

विधि : पूर्वाषाढा नक्षण में अपामार्ग की कील और भृंगराज आता सहित मन्त्री के जिसके घर में डाले तो वह पुरुषहीन हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ जं जां जिं जुं ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—उत्तराषाढा नक्षत्र में काग की हड्डी सात अंगुल इस मन्त्र से मन्त्रीत करके जिसके घर में डाल देवे तो उसका उच्चाटन हो जाता है ।

अदृश्य अंजन विधि :—वैला द्राज्या ततो ग्राह्य बारांह् वस सजुतं । प्रिय पित यथा देवि कज्जलं यस्तु कारयेत् । इस प्रकार अंजन बनाकर आंख में आंजने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ठं ठां ठि ठीं ठु ठू ठें ठैं ठो ठौं ठं ठः अमुकं गृह २ पिशाच हुं ठं ठः ।

विधि : – शाखोटक की कील नो अंगुल एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके नाम से चौराहे पर रखे साथ में मद्य, मांस, नख, रक्त, फूल भी रखे तो शत्रु को पिशाच लग जायगा । जमीन में गाड़ना चाहिये । जब अच्छा करना हो तब वापस निकाल देवे तो अच्छा हो जायगा ।

मन्त्र :—ॐ जं जां जिं जीं जुं जूं जें जैं जों जौं जं जः अमुक ठं ठः ।

विधि :—अनेन मन्त्रेण लोह कील केन राश नाशन मन्त्रः ।

मन्त्र :—ॐ हुं अमुकं फट् स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र को सो कपास के बीज और छुई मुई (लजालु) कड़वा तेल (सरसों का तेल) मिलाकर जिसके नाम से होम करे उसके शरीर में फोड़ा फुंसी निकल आवे । अगर अच्छा करना चाहे तो ॐ स्वाहा मन्त्र की घृत दूब की आहुति देवे तो अच्छा हो ।

कर्ण पिशाची देवी सिद्ध करण मन्त्र :—ॐ धैंठ स्वाहा ।

विधि :—लाल फूल से एक लक्ष इस मन्त्र का जाप करे तब मन्त्र सिद्ध होता है । जो बात पूछो भूत, भविष्य, वर्तमान की सब कान में कह देवे ।

मन्त्र :—ॐ खं ऊं खः अमुकं हन हन ठ ठ ।

विधि : – इस मन्त्र से, जाऊ की लकड़ियों से जो नदी के किनारे हों, उन लकड़ियों से होम करे तो शत्रु का निपात हो ।

मन्त्र :—ॐ खं डुं खः अमुकं ठं ठः ।

विधि :– अनेन मन्त्रेण झाऊ काष्ट समिधि होमियात् सर्व शत्रु निपातो भवति ।

मन्त्र :—ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रां ह्रीं हुं ऊं दक्षिण कालिके क्रां ह्रीं हुं स्वाहा ।

विधि :-- इस मन्त्र से मयूर की बिष्टा, कबूतर की बिष्टा, मुरगा की बिष्टा, धतूरे का बीज ताल मखाना इन पांचों चीजों को बराबर लेना, फिर मन्त्र का जप १ हजार करना और दश मास होम करना तब वह होम की भस्म लेके जिसके माथे पर मन्त्रित कर डाल दिया जाय वह उन्मत्त हो जाता है । शरटो वृश्चिको भृंगोकर्करा च चतुष्टयं, चत्वारः पक्काय तैलं तल्लेपं कष्ट कारकं ।

मन्त्र :—ॐ मर २ ठं ठः स्वाहा ।

विधि :—पूर्वा फाल्गुणी नक्षत्र में राक्षस वैतालादि उपद्रव करे ।

मन्त्र :—ॐ नमः कामेश्वरीय गद २ मद उन्माद अमुकी ह्रीँ ह्रः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का २०००० जाप करे फिर दस मास होम करे। जिस स्त्री का नाम लेते हुये करे तो वह स्त्री वश में होती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ह्रीं परमेश्वरी स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का एक लक्ष जाप करने से पुरुष वश में होता है।

मन्त्र :—ॐ आं ह्रीं क्रो एहि २ परमेश्वरी स्वाहा ।

विधि :—लाल वस्त्र पहिनकर लक्ष जाप जपने से पुरुष वश में होता है।

मन्त्र :—ॐ क्षौं ह्रौं आं ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—लाल कपड़े पहिनकर कांप में कुंकुंम लगाना, लाल रंग का फूल धर माला पहिनकर एकांत निर्जन वन में १ लक्ष जप करने से स्त्री आकर्षण होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं अमुकं हन २ स्वाहा ।

विधि : लाल कनेर के फूल, सरसों का तेल, १ हजार जप कर एक हजार होम प्रत्येक पुष्प के प्रति मन्त्र पढ़कर होम करे तो शत्रु का नाश हो जाता है। विधि में थोड़ी सी कमी रहने पर स्वयं का नाश हो जाता है। सावधान रहें।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं लां ह्रीं लीं ह्रीं लौं ह्रीं लः ह्रीं अमुकं ठं ठः ।

विधि :—सरसों की भस्म को इस मन्त्र से मन्त्रित करके शत्रु के घर में डाल देवे तो शत्रु की भुजा का स्तम्भन हो जाता है, और सेना के सामने डालने से सेना का स्तम्भन हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ श्रीं क्षं का मातुरा काम खेला विध्वंसिनी लवनो अमुकं वश्यं कुरु २ ह्रीं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र को भोजन करते समय अपने भोजन को ७ बार मन्त्रित करके जिसके नाम से खावे वह सातवें दिन तथा बारहवें दिन वश में हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ जुं सः ।

विधि : इस मन्त्र को त्रि संध्याओं में जपने से शत्रु का नाश हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ हुं नमः ।

विधि :—तीनों संध्याओं में नित्य ही लक्ष लक्ष जप करे तो पादुका सिद्धि होती है। उस पादुका को पहिन कर, जल पर तथा आकाश में गमन करने की शक्ति आती है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रां ह्रां ॐ ह्रूं ह्रूं अमुकं हन हन खंडेन फुट स्वाहा ।

विधि :—गोबर को अधर ले लेना फिर उस गोबर की प्रतिमा बनाना (पुतला) शत्रु की, फिर श्मशान में जाकर रात्रि के अन्दर एक हजार मंत्र का जप करना, जप करके उस गोबर वाले पुतले का जो अंग छुरी से छेदन करे उसी अंग का छेदन शत्रु का हो जाता है। [illegible] गोबर [illegible] अंग को [illegible] जाय।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं क्षुं ह्रीं अमुकं ठः ठः

विधि :—विष रक्त, से लोहे के त्रिशूल को लिप्त करके इस मन्त्र का एक हजार जप कर त्रिशूल को मन्त्रित करे। फिर जमीन में गाड़ देने से शत्रु की तत्काल मृत्यु हो जाती है।

मन्त्र :—ॐ ॐ ॐ हः हः ऐं नमः।

विधि :—इस मन्त्र का आठ लाख जप करने से महा विद्वान् कवि पंडित होता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रौं ह्रौं ठः ठः।

विधि :—जाऊ काष्ट की बारह अंगुल कील को एक हजार बार मन्त्रित करके जिसके घर में डाल देवे वह मर जाता है, विधि में कमी रही तो स्वयं मर जाता है।

मन्त्र :—ॐ ह्रौं ह्रीं श्रीं श्रों श्रें सः स्वाहाः नमः।

विधि :—इस मन्त्र का जाप करने से सिद्ध जन होता है।

मन्त्र :—**ॐ नमो आदि योगिनी परम माया महादेवी शत्रु टालनी दैत्य मारनी मन वांछित पूरणी धन वृद्धि मान वृद्धि आन जस सौभाग्य आन न आनै तो आदि भैरवी तेरी आज्ञा न फुटै गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुटो मंत्र ईश्वरो वाचा।**

विधि :—मंत्र जपे निरन्तर १०८ बार विधिपूर्वक लक्ष्मी की प्राप्ति होय। सर्व कार्य सिद्धि होय। बार २१-१०८ चोखा मंत्र जिस वस्तु में राखे तो अक्षय होय।

मन्त्र :—**ॐ नमो गोमय स्वामी भगवउ ऋद्धि समो वृद्धि समो अक्खीण समो आण २ मरि २ पुरि २ कुरु २ ठः ठः ठः स्वाहा।**

विधि :—मंत्र जपे प्रातः काल शुद्ध होकर लक्ष्मी प्राप्त होय। बार २१–१०८ सुपारी चाँवल मंत्रित कर जिस वस्तु में घाले सो अक्षय होय। यह मंत्र पढ़ कर दीप, धूप, खेवे भोजन वस्तु भंडार में अक्षय होय। उज्ज्वल वस्त्र के धारी शुद्ध आदमी भीतर जाय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॐ नमो भगवउ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीणस्स भास्वरी ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि :—मंत्र नित्य प्रातः काले शुचिभूत्वा दीप धूप विधानेन जपे, लाभ होय, लक्ष्मी प्राप्त होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो गोतम स्वामीने सर्व लब्धि सम्पन्नाय नमः अभीष्ट सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि : -बार १०८ प्रतिदिन जपिये, जय हो, कार्य सिद्ध होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे महाविद्ये स्वाहा ।

विधि :—फल अनेन मंत्रेण लवणं च तुषाय धूलि च पृथक-पृथक एकविंशति वारान् परिजप्य आतुरस्य पार्श्वतौ भ्रामयित्वा एकविंशति वारान् परिजप्य नक्रादिमध्ये स्थापयित्वा आतुर पल्यंकस्याधो धारयेत् यथा २ लवणं विलीयते तथा तथा दृष्टिदोषणे मुच्यते लवण मंत्र दृष्ट प्रत्यय ।

मन्त्र :—ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृतं स्रावय २ अमुकस्य सर्व दोषान् स्रावय प्लावय स्वाहा ।

विधि :—औषधादि मंत्रण मंत्र ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं धरणेन्द्र पार्श्वनाथाय नमः निधि दर्शनं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—जप मंत्र अस्य तु मंत्रस्य जपात् हस्त नेत्रयोः स्पर्श्यं मंत्र निधिस्तंभनं प्राप्त्वा दर्शनं कार्य नेत्राभ्यां स्पर्ष्टं भवति दर्शनम् ।

मन्त्र :- ॐ नमो ह्रीं जय जय परमेश्वरी अम्बिके आम्र हस्ते महासिंह जानु स्थिते कंकणी नूपुरा रावकेयूर हारा गदानेक सम्द्भूषणैः भूषितांगे जिनेन्द्रस्य भक्ते कले निष्फले निर्मल निः प्रपंचे महाप्रनने सिद्ध गंधर्व विद्याधरे रंचिते मंत्र रूपे शिवे शंकरे सिद्धि बुद्धि धृति कीर्ति वृद्धि स्थिते शान्ति पुष्टि निधि स्तुष्टि दृष्टि श्रिये शोभने सुख हासे ज्वरे जंभिनी स्तंभिनी मोहनी दीपनी, शोषिणी, भासनी, दुष्ट निर्णाशिनी क्षुद्र विद्रावणी धर्म संरक्षिणी देवी अम्बे महा विक्रमे भीमनादे सुनादे अघोरे सुघोरे रौद्रे रोद्रानने चंडिके चंडरूपेसुचक्रे सुनेत्रे सुगात्रे, सुपात्रे, तनु मध्यभागे जयंति २ पुरंध्री कुमारी सुभद्रे पवित्रे सुवर्णे महामूल विद्यास्थिते गौरि गांधारी गंधर्व जक्षेश्वरी काली २ महाकालि योगीश्वरी जैनमार्ग स्थिते सुप्रशस्ते शस्त्रे धनुनाद्र दंडाभि चक्रेक वज्रांकुशाबेक शास्त्रोदिते सृष्टि संहार कांतार नागेन्द्र भूतेन्द्र देवेन्द्र स्तुते किन्नरैः यक्ष रक्षा धिपैः ज्योतिषैः पन्नगेन्द्रैः सुरेन्द्राश्चिति वंदिते पूजिते सर्व सत्वोतमे

सर्व मंत्राधिष्ठते ॐ कार वषट्कार हुंकार ह्रींकार सुश्राकार बीजान्विते दुःख दौर्भाग्य निर्णाशिनी रोग विध्वंशनी लक्ष्मी धृति, कीर्ति कान्ती विस्तारनी सर्व दुर्गुणेषु निस्तारणी दुस्तरोत्तारणी ॐ क्रौं ह्रीं नमो यक्षिणी ह्रीं महादेवी कुष्मांडिके ह्रीं नमो योगिनी ह्लू सदा सर्व सिद्धि प्रदे रक्ष मां देवी अम्बे अम्बे विवादे रणे कानने शत्रु मध्ये समुद्र प्रवेशागमे गिरौ कृष्ण रात्रौ क्षौ संध्याकाले निहृस्तं निरस्तं विहीन निशान्तं प्रशनं प्रनष्टं प्रहृष्टं ग्रहे यक्ष रक्षो रुगै दैत्यभूतैः पिशाचै ग्रहीतं ज्वरेणाभिभूतं गजैर्व्याघ्रिसिंहै निरुद्ध व्याल वेताल ग्रस्तं खगेन्द्रेण नीतं कृतातें न ग्रस्तं मृतं चापि संरक्ष मां देवी अम्बालये त्वत्प्रसादात् शान्तिकं पौष्टिकं वश्यमाकर्षणोच्चटनं स्तंभनं मोहनं दीपनं चैव एतन्यहा ताडकं एतानि सर्व कार्याणि सिद्धि नयति संक्षेपतः सर्वरोगाः प्रणश्यन्ति । न संशयं भवेदिह ॐ हूं फट् स्वाहा इति "आम्र कुष्मांडिनी मालामंत्र"। ॐ ह्रीं कुष्मांडिनी कनक प्रभेसिंह मस्तक समारुढे जिनधर्म सुवत्सले महादेवी मम चिंतित कार्यं शुभाशुभं कथय-कथय अमोघ वागीश्वरी सत्यवादिनी सत्य दर्शय-दर्शय स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का विधान मंगल के दिन से आरम्भ करे। गुलाब का इत्र अपने शरीर पर लगावे। गुलाब के फूल चढावे। एक चौकी पर या आले में चमेली के फूलों का चौकोर चबूतरा बना ले। वहां देवी की स्थापना करे। धूप बत्ती जलावे, धूप खेवे, धूप में जाविश्री अवश्य मिलावे, गाय के घी का दीपक जलावे, मिष्ठान्न चढावे और आम्रफल विशेष रूप से चढावे। नित्य प्रति प्रथम नेमिनाथ स्वामी की पूजा करके देवी की पूजन करना।

मन्त्र :—ॐ कुरु कल्लो हां स्वाहा ।

विधि :—लाल वस्त्र पहिनकर एकान्त में एक लाख जप करे तो आकर्षण होता है।

मन्त्र :—ॐ हूं हूं सं सं अमुकं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का एक हजार जप करने से सिद्ध होता है तब खयर की लकड़ी के एक हजार टुकड़े-टुकड़े विष और रक्त से लिप्तकर मंत्रपूर्वक अग्नि में होम करे तो शत्रु को ज्वर चढ़े। विधि में कमी रही तो स्वयं को चढ़े और फिर कभी भी अच्छा नहीं होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो काल रूपाय अमुकं भस्मीं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का जप श्मशान में तथा एकान्त में जपे तो शत्रु कभी नहीं जीवे। विधि चूके तो स्वयं का मरण निश्चित होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो विकराल रूपाय महाबल पराक्रमाय अमुकस्य भुजवत्सलं बंधय २ दृष्टि स्तंभय २ अंगानि धुनय २ पातय २ महीतले हुं।

विधि : इस मंत्र का एक हजार जप करे और शत्रु का मंत्र में नाम डाल दे तो शत्रु की शक्ति का छेद हो जाता है। जड़ के समान हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो कालरात्री त्रिशूलधारिणी मम शत्रु सेन्यं स्तंभनं कुरु २ स्वाहा।

विधि : भौ बारे गृहीत्वा तु काकोल्लूकपक्षयों, भूर्यपत्रे लिखेन्मत्रं, तस्य नाम समन्वितं गोरोचनं गले वध्वा, काकोल्लूकपक्षयो सेनानां संमुखं गच्छेत् नान्यनाशं करोदितं शब्द मात्रे सैन्य मध्ये, पलायंतेति निश्चितं राजा, प्रजा, गजा श्चश्व, नान्यथा च महेश्वरी। तथा :—

मन्त्र :—ॐ नमो भयंकराय परम भय धारिणे मम शत्रु सैन्य पलायनं कुरु २ स्वाहा।

विधि :— इस मंत्र को सीमवार कु काला कौवा और उल्लू के पंख लेकर इस मंत्र को भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधना। उन दोनों पंखों के साथ, फिर शत्रु की सेना के सम्मुख जावे तो सेना देखते ही भाग जावे।

मन्त्र :—ॐ सुं मंखी महापिशाचिनी ठः ठः ठः फट् स्वाहा।

विधि : अपमृत्यु से मरे हुये मनुष्य के मुर्दे पर इस मन्त्र का जाप २१ हजार बैठ कर करे और मुर्दे के मुंह में पारा दो तोला डाल देवे। जब जप समाप्त हो जावे तब सेहुत १ साँप १ शराब, उड़द का होम करे। दशांस। तब वह मुर्दा उठ जावेगा, उस मुर्दे को पकड़ कर उसके मुंह से पारा की गोली निकाल लेना और उस मुर्दे को जला देना। इसी मन्त्र से उस पारा की गोली की पूजा करके २१०० सो जाप करे। फिर उस गोली को पास में या मुंह में धारण करने से मनुष्य आकाश में उड़ने लगता है, जहाँ जाना चाहे वहाँ जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कु सेंदुरिया चलै अैसा वीर नरसिंह चलै असै वीर हनुमंत चलै लट छोड़ मरे पाय परै मेरी भगती गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—शुभ मुहूर्त मंगलवार के दिन अपने शरीर में उबटन लगावे, फिर उबटन उतारे। उस शरीर के मैल का एक मनुष्याकार पुतला बनावे। उस पुतले के माथे में सिन्दूर की टीकी सोलह लगाना, सोलह २ बार एक टीकी लगाते समय सोलह २ बार मन्त्र पढ़ना, इस प्रकार सोलह दिन तक करना प्रत्येक दिन का मन्त्र व टीकी २५६ हुई। इस प्रकार करने से बारआ, यक्ष प्रत्यक्ष होता है। प्रत्यक्ष होते ही उससे वचन ले लेवे जो आज्ञा करो सो ही करे।

मन्त्र :—थल बांधौ हथौडा बांधौ, अहरन माही, चार खूंट कवाही बांधो, बांधो

आज्ञा माही तीन सबद मेरे गुरु के चालियौ चढ़ियौ लहरस वाई अर्नों बांधी सुंई बांधी बांधी सारा लोहा निकलियो न लोहू पकियो न घाव जिसको रक्षा करे गुरु नाद ।

विधि :—इस मन्त्र को एक श्वांस में सात बार पढ़ कर नाक कान छेदन करने से पीड़ा भी नहीं होगी और पकेगा भी नहीं।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय चँद्र महिताय चन्द्र कीर्ति मुख रंजनी स्वाहा ।

विधि :— इस मन्त्र को चन्द्र ग्रहण के दिन रात्रि में जपने से विद्या की प्राप्ति अच्छी होती है।

मन्त्र :—ॐ नमों भगवती पद्मावती सर्व जन मोहिनी सर्व कार्य कारणी विघन संकट हरणी मन मनोरथ पूरणी मम चिंता चूरणी ॐ नमो पद्मावती नमः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप करना चाहिए, त्रिकाल जाप करे। अखण्ड दीप धूप रखना, शुद्ध भूमि, शुद्ध वस्त्र और शरीर शुद्धि का पूरा ध्यान रखे, पार्श्व प्रभु के मूर्ति के सामने अथवा पद्मावती के सामने सफेद माला पूर्व दिशा की तरफ मुख रखना, एकाग्रता से जप कर सिद्धि करना, इस मन्त्र का सवा लक्ष जप भी कहा है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती पद्मने पद्मावती ॐ ऐं श्रीं ॐ पूर्वाय, दक्षिणाय, पश्चिमाय उत्तराय, आण पूरय, सर्व जन वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का सवा लक्ष जप करना तब मन्त्र सिद्ध हो जावेगा, फिर प्रातःकाल एक माला नित्य फेरना जिससे आय बढ़ेगी, बेकार का कार्य मिटेगा। मन्त्र, दीप, धूप, विधान से जपना सकली करण पूर्वक। भगवान के सामने।

मन्त्र :—ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे पद्मासने लक्ष्मी दायिनी वांछा पूर्ण भूत प्रेत निग्रहणी सर्व शत्रु संहारिणी, दुर्जन मोहिनी, ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र का जप दीप धूप विधान से भगवान के सामने बैठ कर सवा लक्ष जप करना, धूप में गुग्गुल, गोरोचन, छाड़ छबीला, कपुर, काचरी इस सबको कूट कर गोली बना लेवे, शनिवार अथवा रविवार की रात्रि को लाल वस्त्र, लाल माला लाल आसन, लाल वस्त्र पर स्थापना करके जाप एक २ गोली अग्नि में डालते हुए एक २ मन्त्र के साथ खेवे और एक २ मन्त्र के साथ लाल पुष्प भी रखता जाय,

इस प्रकार सवा लक्ष जप एक महीने में पूरा करे, मन्त्र जपने के समय एक महीने तक ब्रह्मचर्य पाले तब मन्त्र सिद्ध होगा। फिर नित्य ही प्रातः काल ११ या २१ बार मन्त्र का नित्य ही स्मरण कर, आय बढ़ेगी, लक्ष्मी प्रसन्न होगी, सुख शान्ति मिलेगी।

मन्त्र :—ॐ पद्मावती पद्म कुंशी वज्र वज्र कुशी प्रत्यक्ष भवन्ति २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का जाप इक्कीस दिन में एक २ हजार नित्य करके पूरा करे, जाप दीप धूप विधान पूर्वक अर्द्ध रात्रि में एकाग्रता से करे तो मन्त्र सिद्ध होगा। फिर एक माला नित्य हो। फेरे लक्ष्मी की प्राप्ति होगी। वस्त्र शुद्धि का पूरा २ ध्यान रखें।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ह्रः ऐं नमः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को नव रात्रि में सिद्ध करे। सिद्ध करते समय ब्रह्मचर्य व्रत पाले। एकासन करे, कषायों का त्याग करे, मन्त्र एकान्त में अखण्ड दीप, धूप, पूर्वक साढ़े बारह हजार जप करना, फिर एक माला नित्य फेरने से आनन्द से दिन जायगा, रोजी मिलेगी। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर कार्य काल में इस मन्त्र का २१ बार जाप कर व्याख्यान देवे तो श्रोता मोहित होते हैं। २१ बार जप कर वाद विवाद करे तो जय प्राप्त हो। कोर्ट में मजिस्ट्रेट के सामने इस मन्त्र का २१ बार जप कर बोले तो मुकद्दमे में अपनी विजय हो। पर गांव में रोजी के निमित्त जाने के पहले प्रवेश के समय जलाशय के किनारे बैठ कर एक माला फेर कर प्रवेश करे तो व्यापार में लाभ मिले। सर्व कार्य सिद्ध हों। इस मन्त्र का ७ बार जाप करते हुए अपने मुंह पर हाथ फेरने से शत्रु की पराजय होती है। मन्त्र के अन्त में स्वाहा पूर्वक शत्रु का नामोच्चारण करता जाय। इस मन्त्र से २१ बार सिर को मन्त्रित करे तो सिर दर्द दूर होता है। इस मन्त्र से २१ बार पानी मंत्रित कर पिलाने से पेट का दर्द

ा—नारियल, खोपरे के टुकड़े, १ कपूर, खोरक, (छुहारा), मिश्री, गुग्गुल,
ञ्जणी घृत, गुड़, चन्दन। इस प्रकार की सामग्री की धूप बना कर हवन
स्वप्न में देव अथवा देवी आकर वरदान देगा। मन्त्र सिद्ध हो जाने के
ा बहुत आती है। व्याख्यान में चतुरता होती है।

का बनान
अगररता
करे तब
बाद विद्य

मन्त्र :—नमि उण असुर सुर गरूल सुयंग परिवंदिये गय किले से अरि है सिद्धापरिय उवज्भाय सव्व साहूणं नमः ।

विधि :—इस मंत्र का जप नित्य एक सौ इक्कीस बार उत्तर दिशा की ओर मुख करके करे, दीप धूप रखने से मन्त्र की शक्ति बढ़ती है । जतन पूर्वक उपयोग स्थिर रखना, जब जप पूरा हो जाय तब २१ बार णमोकार मन्त्र को जप लेना, इस तरह करने वाले को सर्व प्रकार के भय नष्ट होते हैं और आनन्द मंगल हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं णमो जिणाणं, ॐ ह्रीं अर्हं आगासगामीणं, ॐ ह्रीं श्रीं वद २ वाग्वादिनी भगवती सरस्वती मम विद्यासिद्धि कुरु कुरु ।

विधि :—इस मंत्र का अधिक जाप करने से ऐसा लगेगा कि मैं आकाश में उड़ रहा हूँ । जाप करने के बाद भगवान की व सरस्वती देवी की पूजा करे, जप आँख मींच कर करे तब मंत्र सिद्ध होगा, । उसके पश्चात् कोई भी मंत्र या विद्या सिद्ध करने में देर नहीं लगेगी तत्काल सिद्धि होगी । आयु का ज्ञान होगा, कष्ट निवारण होगा ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं क्रौं २ बटु काय आपद, उद्धारणाय कुरु २ बटु काय ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप विधि पूर्वक करे, विशेष पूजन करे, तब देव प्रत्यक्ष होगा अथवा स्वप्न में दीखेगा और स्पष्ट उत्तर देगा । इस मन्त्र का जाप अत्यन्त सावधानी पूर्वक करना नहीं तो पागल कर देता है ।

सहदेवी कल्प

सहदेवी के पेड़ के नीचे शनिवार की रात्रि को जाकर १ सुपारी रखे, सहदेवी को धूप दिखा कर हाथ जोड़ विनय पूर्वक प्रार्थना करे कि हे सहदेवी प्रातः मैं तुमको अपने यहाँ पधराऊंगा, ऐसा कह कर घर आ जावे, रविवार को प्रातः होने के पहले जा कर फिर १ फल भेंट कर ये मन्त्र इक्कीस बार पढ़े ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती सहदेवो सह्रल हया नीसद्ध बह कुरु २ स्वाहा ।।

विधि :—इस मंत्र से मंत्रित कर जड़ सहित सहदेवी को बाहर निकाले और मौन बने अपने स्थान पर आकर एक पाटे पर स्थापन कर धूप, दीप, फल भेंट करे और फिर उसका रस निकाले, और उस रस में गोरोचन व केशर डाल कर गोली बनावे, जब कभी काम हो तब गोली को घिस कर तिलक कर के जावे तो इच्छित व्यक्ति वश में होगा । विजय होगी, सहदेवी की जड़ हाथ में बांधने से रोग नष्ट होता है । इसके चूर्ण को पीस कर गाय के घी में मिला कर पीने से बन्ध्या स्त्री गर्भ धारण करती है ।

प्रसूति के समय कष्ट हो रहा हो तो इसको कमर से बांधने पर शान्ति से प्रसव होता है। कण्ठ माला रोग होने पर हाथ में बांधे, हाथ में बांध कर प्रस्थान करे तो जय पावे। शत्रु के सामने विवाद पड़ जाने पर जड़ जाने पर जड़ को पास में रखे तो जय पावे।

लोगस्स कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं नमः नेमिजिणं च बन्दामिरिट्ठ नेमि पासं तह वद्ध माणं चम नोवाच्छितं पूरय २ ह्रीं स्वाहाः।

विधि :— किसी प्रकार का भय उत्पन्न हुआ हो साधु संग में अथवा गृहस्थियों में तो इस मंत्र का पीले रंग की माला से जाप करना चाहिए और किसी प्रकार की मिथ्या दृष्टियों द्वारा उपद्रव आने वाला हो तो लाल रंग की माला से जप करने से सब प्रकार का भय मिट जाता है, शांति होती है। इष्ट देव का स्मरण करे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं लोगस्स उज्जोअ (य) गरेधम्म तित्थयेरोजण अरिहंते किति इस्सं चउविसंपि केवलि मम मनो अभिष्टं कुरु २ स्वाहाः।

विधि :— इस मंत्र का जाप पूर्व दिशा में मुख करके खड़े हो कर करना चाहिए। सम्पत्ति सुख के लिए श्वेत वस्त्र, सफेद माला, सफेद आसन चक्रेश्वरी देवी के सामने दीप धूप रख कर करे। साधु करे तो दीप धूप की आवश्यकता नहीं है। अन्तिम पहर रात्रि का बचे तब मंत्र की आराधना करना। खड़े होकर जप करने से शीघ्र लाभ होता है। सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

मन्त्र :—ॐ क्रौं क्रीं ह्रीं ह्रीं उस मम जिअं च वन्दे संभवमोभणं दणं च सु मइं च पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वन्दे स्वाहा।

विधि :— इस मंत्र का जाप पद्मासन से उत्तर मुख होकर संकल्पपूर्वक एकान्त स्थान में अयं बिल व्रत करते हुए २१ हजार जप करे। फिर एक माला नित्य फेरे जिससे शीघ्र ही कार्य की सिद्धि होती है। दीप धूप अवश्य सामने रखे।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं (ह्सौं) भ्रौं भ्रीं सुविहि चपुप्फ दन्तं सीयलं सिज्जं सवा सु पुजं च विमलनंणत च धम्मं संति च वंदामि कुंथुं अरं चमल्लि वन्दे मुणि सुव्वयं (च) स्वाहा।

विधि :— इस मंत्र का विधिपूर्वक दीप धूप दान पूर्वक सवा लक्ष जप करने से आपस के झगड़े ग्रह क्लेश वगैरह सब शांत होते है। सब प्रकार के बैर भाव मिटते हैं। फिर एक माला

नित्य फेरनी साधू संघ में अथवा गृहस्थों के घर में सर्व प्रकार का मन मुटाव दूर होता है । सम्पत्ति सुख की प्राप्ती होती है । जाप न्युनाधिक नहीं करें ।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रां ह्रीं एवं मए अभि थुआवि हुयर यमला पहीण जर मरणा चउव्विसंपि जिणवरा तित्थयरा में पसीयंतु स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का साढ़े बारह हजार दीप धूप विधान पूर्वक करने से सर्व प्रकार के अपवाद मिटते है यश फैलता है । सर्व कार्यों में जय विजय प्राप्त होती है । शत्रु स्वयं ही शांत हो जाते है ।

मन्त्र :—ॐ आं अम्बराय (उद्यंवराय) कित्तिय वंदिय महिया जे लोगस्य उत्तमा सिद्धा आरोग्ग बोहिलाभं समाहि वर मुत्तमं दिन्तु स्वाहा ।

विधि :—इस मंत्र का [illegible] जप [illegible] किसी प्रकार से रोग ठीक नहीं होता [illegible]

मन्त्र :—ॐ ह्रीं [illegible] स्वाहा ।

विधि :—यश प्रतिष्ठा के इच्छुक व्यक्तियों को इस मंत्र का जाप करना चाहिए [illegible] अत्यन्त चमत्कारी है । मंत्र का जाप साढ़े बारह हजार करें तो सर्व कार्य की सिद्धि होगी । यश प्रतिष्ठा बढ़ेगी, उपद्रव शांत होंगे ।

मन्त्र :—ॐ चंडिनि चले २ चित्ते चपले चपल चित्ते ऐतः स्तम्भय २ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—३ हजार जाप इस मंत्र का दीप धूप विधान पूर्वक जपने से सिद्ध होता है । फिर इस मंत्र से सात बार शक्कर मंत्रीत कर, योनी, में रखने से स्त्रियों का प्रदर रोग शांत होता है ।

मन्त्र :—ॐ ओं औं अं अः स्वाहाः ।

विधि :—इस मंत्र को जप कर काजल बनावे काजल आँख की रुई और लाख का रस अथवा आक की रुई और कमल के धागे की बत्ती बना कर काजल बना आँखों में अंजन करने से वश्य होता है ।

मन्त्र :—ॐ वाचस्पतये नमः ।

विधि :—इस मंत्र का जाप १ वर्ष तक करे तो बुद्धि बहुत बढ़ेगी ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अट्टे मट्टे क्षुद्र विघट्टे क्षुद्रान् स्थम्भय २ दुष्टान् चूरय २ मनोवांछित पूरय २ स्वाहाः ।

विधि :—दीवाली के दिन १००० जाप करे, पीछे एक माला नित्य फेरे तो मनोवांछित कार्य हो ।

मन्त्र :—ॐ नमो ज्वाला मालिनी देवी शर्भवति रक्त रोहिणी ॐ क्षांः क्षीं क्ष्म्ल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं रक्तू वाशसी अथ वर्ण दुहिते अघेरे कर्म कारके अमुकस्य मनः दह २ उपविष्टाय मुखं दह २ सुप्ताय मनः दह २ पर बुद्धाय हृदयं दह २ पच २ मथ २ अथ तावद हन्यात् ॐ हम्ल्व्र्यूं हूं हूं हूं फट् स्वाहाः ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार जाप नित्य करे तो सर्व कार्य की सिद्धि होती है ।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्तावते हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—कुमारिका सूत्रेण कंटकं कृत्वा कणवीर पुष्प १०८ जाप्य दत्वा कटौ बंधये द्रक्त प्रवाहं नाशयति ।

मन्त्र :— ॐ अंगे कुमंगे मंगे फु स्वाहाः ।

विधि :—१००८ वार जाप पूर्वं १०८ गुणिते स्वप्ने शुभाशुभं कथ ।

मन्त्र :—ॐ अंगे कुमंगे फु स्वाहा ।

विधि :—फल व जल अभिमंत्र्य पिवेत शूलं नाशयति ।

मन्त्र :—ॐ नमः क्षिप्त गामिनी कुरु २ विमले स्वाहा ।

विधि :—अने नाम्बु सप्ताभि मन्त्रितं कृत्वा यस्य नाम्नि पिवेत् स वश्यो भवंति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं हूं फट् स्वाहाः ।

विधि :—पुंगी फलादि यस्य दीयते स वश्यो भवति ।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं सर्वभय विद्रावणि भयायै नमः ।

विधि :—एनं ध्यायन् पंथानं व्रजेत् भयं न भवति ।

मन्त्र :—ॐ कृष्ण गन्ध विलपे नाय स्वाहा ।

विधि :—१०८ बार स्मरणे ना तीता नागत वर्तमान स्वप्ने कथयति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं त्रिशुलिनीं प्रेत कपालस्तां नृमुंड मुक्तावलि बद्ध कंठां कृतान्त-हारां रूधिरौधं संप्लुतां तामेव रोद्रीं शरणं प्रपद्यें अमुकं विस्फोटक भया द्रक्ष २ स्वाहाः ।

विधि :—ये मन्त्र केशर, कपूर, गोरोचन से लिखकर भुजा के बाँधने से शीतला का दोष जाता है ।

मन्त्र :—ॐ काम देवाय काम वशं कराय अमुकस्य हृदयं स्तम्भय २ मोहय २ वशं मानय २ स्वाहा ।

विधि :—अनेन मंत्रेणाभिमन्त्र्य यद्वस्तु यस्य कस्याऽपि दीयते स वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ सम्मोहिनो महाविद्ये जंभय स्तम्भय मोहय, आकर्षय पातय महा संभोहिनी ठः । स्मरण मात्रेण सिद्धिर्भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अरहंत देवाय नमः ।

विधि :—१०८ बार बाद के समय जपने से तथा और कार्य में तो जय होय। मन्त्रि के कपड़ा में गांठ दीजे तो चोरी न कर सके तथा सर्पादि वस्त्र से दूर रहैं ।

णमोकार मन्त्र उल्टा जपे बन्दी मोक्षः होय बिना कार्य उल्टी नाहीं जपि जै ।

णमोकार मन्त्र ३ बार पढ़कर धूल चूंटी के फूंक दे इके जे के माथे डारे सो वश्य होय ।

चौथ तथा चौदश शनिवार को णमोकार मन्त्र पढ़ि के सन्मुख तथा दाहिने बांई तरफ फूंकि दीजे पढ़ि पढ़ि के वेरी देखते ही भागि जाय ।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय अपराजित शासनाय चमर महा भ्रमर भ्रमर भ्रमर रूज २ भुंज २ कड़ २ सर्व ग्रहान् सर्व ज्वरान् सर्व वातान् सर्व पीडान् सर्व भूतान् सर्व योगिनीन् सर्व दुष्टान्नाशय क्षोभय २ ऊँ कः धः मः यः रः क्षि क्षं सर्वोपस र्गान्नाशय २ हुं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से कलवाणी करके पिलावे सर्व रोग दोष पीड़ा भूत उपद्रव जाय सही।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो भगवऊ पास जिणदस्स अलवेसर २ आगच्छ २ मम स्वप्ने शुभाशुभं दर्शय २ स्वाहा।

विधि :—प्रथम पूर्व मुख, दीप, धूप विधानेन १०००८ बार जपे। कार्य काले २११०८ जप सोवे, शुभ शुभ आदेश स्वप्न में होय सही।

मन्त्र :—ॐ णमो णाणाय, ॐ णमो दंसणाय, ॐ णमो चरित्ताय, ॐ णमो त्रिलोक वरं करहिं स्वाहा।

विधि :—सर्व कर्म करो मन्त्रोऽयम। कालायानी येन घटनं पायनं चलावण्यं च छु सिरोधी सिरोत्पातादिषु कार्येषु योज्यं॥

मन्त्र :—ॐ ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ठं ठं ठं स्वाहा।

विधि :—आद्रा नक्षत्रे राता कनीर की कील आंगुल चार बार ७ इस मंत्र सूँ मन्त्रि, जिको नाम लीजे सो वश्यं भवति।

मन्त्र :—अनेन कील सयनाल स्वाहा।

विधि :—उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रें खैर की कील अंगुल ८ बार ७ मन्त्रि जै जिका घर माहिं गाड़े सो उच्चाटनं भवति।

मन्त्र :—ॐ गर्दभ हृदये स्वाहा।

विधि :—चित्रा नक्षते गर्दभ अस्थिमयं कीलकं पंचागुलम् सप्तभिः मन्त्रये यस्य गृहे निखनेत गर्दभ समं भ्रमति।

मन्त्र :—ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं सिकोतरी मम चिंतितं कथय २ सत्यं ब्रूहि २ स्वाहा।

विधि : अनेन मन्त्रेण आजानुजल मध्ये प्रविश्य १०८ कनेर का फूल जपिजै, चन्दन, केशर, कपूर, कस्तूरी सूं हाथ लेप कीजै अरु धूप दीजै सफेद घोड़े चढ़ी कन्या दीसै। जो पूछो सो कहे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अचले प्रबलौ चल चल अमुकी गर्भ चाल २ स्तंभय २ स्वाहा।

गर्भ स्थंभनं मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्म्ल्व्र्यूं महादेवी पद्मावति महर्यहि मम दर्शनं देहि स्वाहा ।

विधि :—अक्षत १०,००० (दस हजार) जाप्यं क्रियते पद्मावति प्रत्यक्षो भवति अथवा आदेशं ददाति ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवोत्त गोमयस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्षीण महानसी लब्धि लक्ष्मी आनय २ पूरय २ स्वाहा ।

विधि :—वार २१ अक्षत पर जपिये । धनधान्य मध्ये क्षिप्यते अक्षयं भवति । किन्तु उस स्थान को उठाइजं नांहि ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं णमो महायम्मा पत्ताणं जिणाणं ।

विधि :—अनेन मंत्रेण द्वादश सहस्त्र जाप्य कृतेन लक्ष्मी सिद्धति लक्ष्मी कथयति निधि स्थानं ।

मन्त्र :—ॐ णमो इदं भुइ गण हरस्स सव्वलद्धिकरस्स मय ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :- वार १०८ लाभाय सदा स्मरणीया ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं श्वी श्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रूं श्रीं क्रौं श्रीं स्वाहा ।

विधि : -मंत्रोयं लक्ष जप्त: सन श्रिया वश्यं करोति च धन्य धान्यं समं दीप्तं दानं ददाति बृद्धमति ।

मन्त्र :—ॐ अम्बे अम्बाले भूतान् क्रूरान् सर्पान् दूरी कुरु २ निधि दर्शय २ श्रीं ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—मंत्रोऽयं द्वादश सहस्त्रं जप्तो कथयति, वशति निधानं स्फुटं ।

मन्त्र :—ॐ हं उ हं हं य वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः ।

विधि :—रात्रौ स्वाप समये प्रत्यूषे च वार १-१ श्वासेन स्मरणं कार्या यो मनसि चिन्तये तस्य वशी भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं इले तीले नीले हिमवंत निवासिनी गल गंधे विश्व गंधे दुष्ट भंगदरि, वा तारिशा नाशारिशा स्फटिकारिशा हता कृष्ठा, हतानिर्धू ताय ।

विधि :—इमां विद्यां पठति, शृणोति, तस्य कुले अरिश बाना नाहि । अनेन मंत्रेण वार २१ कलपानीयेन अर्शोपशमं ।

मन्त्र :—ॐ कालि महाकालि अवतरि २ स्वाहा लुंचि मुंचि स्वाहा ।

विधि :—वार २१ स्मरणात् हरण पीडा न भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कृष्ण वाससे शत वदने शत् सहस्त्र सिंह कोटि वाहने पर विद्या उछादने सर्व दुष्ट निकंदने सर्व दुष्ट भक्षणे अपराजिते प्रत्यंगिरे महाबले शत्रु क्षये स्वाहा ।

विधि :—एतस्य महा मंत्रस्य नित्यं बार १०८ जापने सर्व दुष्ट दुरितोपशमेन सर्व समिहित सिद्धि र्भवति ।

मन्त्र :—ॐ नमो अरहंउं भगवउं मुख रोगान् कंठ रोगान् जिह्वा रोगान्, तालु रोगान् दन्त रोगान् ॐ प्रां प्रीं प्रूं प्रः सर्व रोगान् निवर्तय २ स्वाहा ।

विधि :—पानीयमभि मन्त्र्य कुरला क्रियन्ते मुख रोगाः निवृतिः । तत्र कर्णे बध्यते ततोऽक्षि रोगा न निवर्तते ।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित पिंगलाय मातंग राजानो स्त्रीणां रक्तं स्तंभय २ ॐ तद्यथा हुसु २ लघु २ तिलि २ मिलि स्वाहा ।

विधि :—रक्त सूत्र डूवर के ग्रन्थि ७ कृत्वा वार २१ जापित्वा स्त्रीणां वाम पादागुष्ठे बंधयते रुधिर प्रशमयेत ।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कलि कुंड दंड स्वामिने मम बंदि मोक्षं कुरु रक्षीं ह्रीं क्लीं स्वाहा ।

विधि :—नित्य जाप्येन बंदि मोक्षः दिन ७ सन्ध्या समय निश्चयतः जापः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चन्द्रमुखी दुष्ट व्यंतर कृतं रोगोपद्रवं नाशय नाशय ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—दवेनाक्षत अभिमन्त्र्य ग्रहादौ क्षेप्याः दुष्ट व्यंतर रोगों नश्यति । वानर मुखं चोर आदित्य सम तेज सं ज्वरं तृतीयकं नाम दर्शनादेव नश्यति ।

मन्त्र :—तद्यथा हन २ दह २ पच २ मथ २ प्रमथ २ विध्वंशय २ विद्रावय २ छेदय २ अन्य सीमां ज्वर गच्छ २ हनुमंत लांगुल प्रहारेण भेदय २ ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षूं रक्ष २ स्वाहा ।

विष्णु चक्रेण छिन्न २ रुद्र शूलेन भिंद २ ब्रह्म कमलेन हन २ स्वाहा ।

विधि :—कुमकुम गोरोचन भूर्ये लिखित्वा प्रत्यवेला यां हस्ते बंधनीया।

मन्त्र :—ॐ भस्मकरी ठः ठः स्वाहा। ॐ इचि मिचि भस्मकरि स्वाहा। ॐ इटि मिटिमम भस्मकरि स्वाहा।

विधि :—एभि मन्त्र जलमभिमन्त्र्य पीयतेऽजीर्णं मुपशाम्यति। अति सारादि रोगानऽपि निवर्तते उदर पीड़ा च उपशाम्यति।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं श्रूं ह्रः कलिकुंड स्वामिने जये विजये अप्रति चक्रे अर्थं सिद्धि कुरु २ स्वाहा।

विधि :—इदं मन्त्र लिखित्वा वस्तु मध्ये क्षिप्यते क्रियाण विक्रियते रक्षायां।

मन्त्र :—ॐ णमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय एकाहिक द्वयाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पण मासिक वात पित्त कफ श्लेष्म सन्निपातिक सर्व रोगानां, सर्व भूतानां, सर्व प्रेतानां, सर्व दुष्टानां, सर्व शाकिनीनां, नाशय २ त्रासय २ क्षोभय विक्षोभय २ ॐ ह्रूं फट् स्वाहा।

विधि :—वार १०८ झाडा दीजे व डोरा कर गले बांधे सर्व रोग ज्वर दोष जाये।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते अपहृयत सासनाय संसार चक्र परि मर्दनाय आत्ममंत्र रक्षणाय पर मंत्र छेदनाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्व ज्वरं, विषम ज्वरं, महा ज्वरं, ब्रह्म ग्रहकं, नाग ग्रहकं, भूत ग्रहकं प्रेत ग्रहकं पिशाच ग्रहकं, सर्व ग्रह, सर्व दुष्ट ग्रह सहस्त्र शूल विनाशनाय, अमृत राई केशर की पीडा, ज्वर विनाशनाय, यक्ष राक्षस, भूत पिशाचादि भवनादि दोषं नाशय २ हिलि २ हल २ दह २ पच २ मर्दय २ विध्वंसय २ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व ग्रह उच्चाटनं ह्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं स्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं ॐ ह्रूं फट् स्वाहा।

विधि :—रक्षा मन्त्रोय झाडो दीजे सर्व रोग दोष जाए।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वतीर्थं नाथाय वज्र स्फोटनाय, वज्र महावज्र,

शाकिनी चक्षु, सिहारी चक्षु, माता चक्षु, पिता चक्षु, वटारी, चमारी, एतेषां सर्वेषां दृष्टि बंधय २ अवलतें श्री पार्श्वनाथाय नमः ।

विधि : इस मन्त्र से भाड़ा दे, नजर जाय। बालक का दृष्टि दोष न रहे।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पद्मे ह्रीं ह्रौं क्लीं ब्लूं गोय २ अमुकस्य अपत्यदा-नाय, अपत्यं सुपुत्रं सर्वावयवेन युतं, शोभनं दीर्घायुषं पुत्रं देहिया विलम्बय ह्री श्री पद्मावती मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—गोली बीज (पारस, पीपल बीज) मन्त्रीतटतु समये सूर्य सन्मुख होय खाय, सन्तान होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती मम त्रियं कुरु २ दुरितानि हर २ सर्व दुष्टानां मुख बंधय २ ह्रीं स्वाहा ।

विधि :—यह मन्त्र स्मरण करे २१ बार लाभ होय।

मन्त्र :—ॐ नमो पार्श्वनाथाय भगवते सप्तफणी मणि विभूषिताय, क्षिप्र २ भ्रमर २ महाभूमि सर्व भूतान सर्व प्रेतान, सर्व ग्रहान, सर्व रोगान, सर्व शाकिनी, भेदान आँ क्रों ह्रीं आहूय आह्वानया छेदय २ भेदय २ ॐ क्रौं ह्रीं फट् स्वाहा ।

विधि : पानी मंत्र पिलावें तथा भाड़ा दे, सर्व दोष रोग शान्ति करे।

मन्त्र :—ॐ नमो पद्मावती मुख कमल वासिनी गोरी गांधारी स्त्री पुरुष मन क्षोभिनी, त्रिलोक मोहनी स्वाहा ।

विधि : - ये मन्त्र दीवाली के दिन १०० जाप करे सर्व कार्य सिद्ध होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं क्लीं अ सि आ उ सा धुलु २ कुलु २ सुलु २ अक्षयं में कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—पंच परमेष्ठी मन्त्रोऽयं त्रिभुवन स्वामिनी विद्या अनेन लाभो भवति जाप १०८ नित्य करे गुरुवाम्नायेन सिद्धम्।

मन्त्र :—ॐ णमो भगवते विश्वचिन्तामणि लाभ दे, रूप दे, जश दे, जय दे, आनय २ महेश्वरी मन वांछितार्थं पूरय २ सर्व सिद्धि ऋद्धि वृद्धि सर्व जन वश्यं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—चिन्तामणि मन्त्रोऽयम् नित्य जपै सर्व सिद्धि होय, प्रभात सन्ध्या जपै । धूप खेवें ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते वज्र स्वामिने सर्वार्थं लब्धि सम्पन्नाय वस्त्तार्थ स्थान भोजनं लाभ दे ह्रीं समीहितं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—अनेन मंत्रेण ग्राम प्रवेशे कंकर ७ बार २१ क्षीर वृक्षे स्थाप्यते सिद्धिर्भवति ग्रामे सुखं भवति लाभं च भवति । लाभ मंत्रोऽयम् ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते गोमयस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्स अक्खीणस्स ह्रीं गौतम स्वामिने नमः अनेन मंत्रेण ग्राम प्रवेशे कंकर ७ बार २१ अभिमंत्र्य क्षीर वृक्ष दक्षिण दिशा हन्यते । प्रभूत लाभो भवति । लाभ मंत्रोयम । ॐ तारे तुतारे ह्रीं तुरे स्वाहा ।

विधि :—प्रथम ग्रामे प्रवेशे १०८ जपै सर्व जन शोभनं लाभ मन्त्रः ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं आरे अभिणी मोहनी मोहय २ स्वाहा ।

विधि :—नित्य १०८ बार जाप जपै ग्राम प्रवेशे ७ कंकर बार २१ क्षीर वृक्ष हन्यते लाभो भवति । प्रथम मन्त्र जप दीप, धूप से सिद्ध करना पीछे अपने कार्य में लगना ।

मन्त्र :—ॐ ह्रूं क्ष्रूं फट् किरटिं धातय २ पर विह्नान स्फोटय सहस्त्र खण्डान कुरु २ पर मुद्रां छिंद २ पर मंत्रान् भिंद २ ह्रां क्षां क्षं व फट् स्वाहा । २१ बार मंत्र जपकर चारों दिशा में फेंकना

विधि :—पढ़कर सिद्धार्थ क्षेपण करना । इसको ब्रह्मचर्य से जपना । शुद्ध भोजन करे, रात्री को भोजन न करे रक्षा मन्त्रोऽयम् ।

मन्त्र :—ॐ नमो अघोर घंटे मम बन्दि मोक्षं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :— जाप १२००० श्याम विधानेन ।

मन्त्र :—बन्दि मोक्ष मंत्रोऽयम् ।

विधि :—यह मन्त्र रोज १०८ बार भस्म पर लिखे श्याम विधानेन ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं तुर २ आगच्छ २ सुर सुन्दरी स्वाहा ।

विधि :—शाक आहारो, भुवि सेज्या, शुचि भूत्वा जितेन्द्रियः पंचोपचार योगेन अर्च्चये ।

चन्द्र मण्डल श्वेताम्बर शुक्ल वस्त्र धरो भूत्वा मन्त्र गुनिये श्वेत गंधानुलेपने लिंग करति आगे गुणी को होम कीजे साठ सहस्र गुणिये तिल, घृत होमये तो सिद्ध । भवति याक्षिणी । स्वर्ण पाद सहस्त्र च प्रयच्छति । दिने २ भगिनी मानेती वक्तव्यं अथवा चेटी च जल्पयेत् । अथ भार्या शोभने चेव तेन भावने पश्यते भागिनी इत्युक्ते नेतां

सिधिया मृ,गु ददाति पादुकांग हुँ देव कन्या प्रयच्छति। सर्व काम करा सास्तु सालिका भोग दायिनी निधानाति विचित्राणि आनये चेटिका सदा इति सुर सुन्दरि साधन विधि।

मन्त्र :—ॐ उच्चिष्ट चांडालिनी सुमुखी देवी महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

विधि :—बार १०८ दिन ६ पहले दिन जीमने बैठता ग्रास १ बार ३ जीमतां बीच भूंठे मुँह बार १०८ जपे। पानी ३ मन्त्र कर पीना फिर भोजन करे दिन ६ जप कर पीछे से परवाने बैठा बार १०८ जाप करना पीछे ६ दिन ३ मसान ऊपर जाप करना प्रत्यक्षी भवति।

मन्त्र :—ॐ णमो गोमय स्वामी भगवऊ ऋद्धि समो, वृद्धि समो, अक्षीण समो, आण २ भरि २ पुरि २ कुरु २ ठः ठः स्वाहा।

विधि :—मन्त्र प्रातःकाल नित्य जपे, शुचि होय, लक्ष्मी प्राप्त होय। बार १०८, २१ सुपारी, चावल मन्त्रित कर जिस वस्तु में धाले सो अक्षय होय। यह मन्त्र पढ़ दीप धूप खेवें। भोजन वस्तु भंडार में होय। उज्जवल वस्त्र पहनकर शुद्ध आदमी भीतर जाय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः। ॐ नमो भगवऊ गोमयस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्स अक्षीणस्स भास्वरी ह्रीं नमः स्वाहा।

विधि :—मन्त्र नित्य प्रातः काले शुचि भूत्वा दीप, धूप विधानेन जपे, लक्ष्मी प्राप्त होय, लाभ होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्मनी स्वाहाः।

विधि :—घर मध्ये सुन्दर स्थान केशर से एक हाथ लीपे, पद्मनी की पूजा करे।
जाप १०,००० गूगल खेवें। दीप पुष्प नैवेद्य चढ़ावें। अर्द्ध रात्रि में करें। १,००० रोज ऐसे ही १ मास करे। देवी प्रसन्न होय। लक्ष्मी देवे। लाभ मन्त्रोऽयम्।

मन्त्र :—ॐ कमल वासिनी कमल वासी महालक्ष्म्यै राज्य में देव रक्षे स्वाहा।

विधि :—त्रिकाल जाप कीजे मनोरथ सिद्धि लक्ष्मी प्राप्ति होय।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मन्त्र :—ॐ सुखी, राजा सुखी, प्रजा [illegible] सुखी, सर्व वश्यं कुरु २ पद्मावती क्लीं फट् स्वाहा।

विधि : बार २१ तथा १०८ पानी को कुल्लू मन्त्र मुख धोवे राजद्वार जाय सर्व सभा वश्य। कार्य सिद्धि होय।

मन्त्र :—ॐ नमो रत्नत्रयाय अमले विमले स्वाहाः।

विधि : हस्त वाहू नात् अभि मन्त्रय जल दानात् सर्प विष जाय।

मन्त्र :—ॐ क्लीं क्लीं सा दुग्ध वृद्धि कुरु २ स्वाहाः।

विधि :—चावल की खीर मन्त्रित कर खिलावे, दुग्ध स्तनों में बढ़े।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड स्वामिन् अमुकस्य गर्भं मुंच २ स्वाहा।

विधि :—अनेन मन्त्रेण तैलमभिमन्त्रय ऋष्यते सुखेन प्रसवति।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्तवर्ते हुं फट् स्वाहा।

विधि :—रक्त कण वीर पुष्प २१ जाप्यं कृत्वा देव रक्त स्त्री कण्ठे बंधनीयं। रक्त स्रावे हरति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कमले कमलोद्भवे स्वाहा।

विधि :—वार २१ चने की दाल, खारक मन्त्री दीयते कमल वाय जाय।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय अपराजित शासनाय चमर महा भ्रमर-भ्रमर रुज रुज मुंज २ कड़ सर्व ग्रहान् सर्व ज्वरान् सर्व वातान् सर्व पीड़ान् सर्व भूतान् सर्व योगिनी सर्व दुष्टान्नाशय क्षोभय २ ॐ कः धः मः यः र क्षिं क्षं सर्वोपसर्गान्नाशय २ हुं फट स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से जल वाणी करके पिलावे सर्व रोग दोष पीड़ा भूत उपद्रव जाय सही।

मन्त्र :—ॐ णमो अरहंताणं ॐ णमो भगवऊ पास जिणंदस्स अलवेसर २ आगच्छ २ मम स्वपने शुभाशुभं दर्शय २ स्वाहा।

विधि :—प्रथम पूर्व मुख, दीप, धूप विधानेन १६००८ जपे। कार्य काले २१, १०८ जप सोवे, शुभाशुभ आदेश स्वप्न में होय सही।

अष्ट गंध श्लोक

मन्त्र :—चन्दनो सीर कर्पूरा गुरू काश्मीर कामदं।
गोरोचन जरा मांसी युक्तं गंधाष्टकं विदुः॥
ॐ नमो भगवते चन्द्र प्रभावभित् सर्व मुख रंजनि स्वाहा।
प्रभाते उदकमभिमन्त्र्य अमुकं प्रक्षालयेत्॥

सर्व ग्रह क्षिपो रक्षति ।

ॐ नमों कपाली ज्वलिते लोहित पिंगले स्वाहा ॥

विधि :—इस मन्त्र से कंकर १२ लिखे, रोगी कूं गिनावने पूरे देखे तो रोगी जीवे। ज्यादा देखे तो रोग बढ़े। कम देखे तो रोगी मरे। इति रोग परीक्षा।

मन्त्र :—ॐ अप्रति चक्रे फुट् विचक्राय स्वाहा।

विधि :—सरसो के दाने आठ पानी से धोय सुखावे, पीछे १०८ वार पढ़ि (मन्त्र) पानी के कटोरे में डाले, एक दाना तिरे तो भूत दोष, दो तिरे तो क्षेत्र पाल दोष, तीन तिरे तो शाकिनी दोष, चार तिरे तो भूतनी दोष, पांच तिरे तो आकाश देवी दोष, छः तिरे तो जल देव दोष, सात तिरे तो कुलदेव दोष, आठ तिरे तो गोत्रज देवी दोष, सर्व डूबे तो किसी का दोष नहीं। इति दोष ज्ञान मन्त्रोऽयम्।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्र धारिणी कटोरे चालय २ चोरं ग्रहाण २ स्वाहा। चिट्ठी जुवा नाम।

विधि :—लिख बार २१ मंत्र पढ़ कटोरं भुवाई नाम चिट्ठी मंत्र पढ़ता ऊपर मेल जे जे नाम कटोरो सो चोर जानिए। वा चिट्ठी जलावे सो जले नाहीं इति चोर ज्ञान मंत्रोऽयम्। ॐ नमो श्री आदेश गुरू को थल बांधू, जल बांधू, बांधू जल की तीर। नगरी सहित राजा बांधू जाल सहित कीर। जे रण जाल में जीव मांछली आवे, तो श्री पार्श्वनाथ छप्पन छप्पन कोड जादू की दुहाई। बार ७ कंकरी मन्त्रि जाल में डाले। जाल बंधे मछली आवे नहीं।

मन्त्र :—ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे शत्रु उच्चाटनी महा मोहिनी सर्व नर नारी मोहनी जयं विजयं ऋद्धि वृद्धि कुरु २।

विधि :—राजा प्रजा मोहन होय, ऋद्धि बढ़े।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ज्रं श्री चक्रेश्वरी मम रक्षां कुरु २ ह्रीं अरहंताणं सिद्धाणं सूरीणं उवज्झायाणं, साहूणं मम ऋद्धि वृद्धि समीहित कुरु २ स्वाहा।

विधि :—वार १०८ नित्य जपे धन धान्य वृद्धि होय। कामधेनु मन्त्रोऽयम्।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लीं अ सि आ उ सा चल २ कुल मुल इच्छियम में कुरु २ स्वाहा।

विधि :—नित्य वार १०८ जपे दोनों समय लाभ होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं कलिकुंड स्वामिन् आगच्छ २ आत्म मंत्रान रक्ष रक्ष पर मंत्रान छिंद छिंद मम सर्व समीहितं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।

Gandhi Jain Karyalay
MANDSAUR (M.P.)

विधि :—ये मन्त्र १२००० जपे श्वेत तथा रक्त पुष्पे। सर्व सम्पदा प्राप्त होय।

मन्त्र :—ॐ नमों वृषभनाथाय मृत्यु जयाय सर्व जीव शरणाय, परम श्री पुरुषाय, चतुर्वेदाननाय अष्टादश दोष रहिताय, श्री समवशरणे द्वादश परीषह वेष्टिताय ग्रह, नाग भूत, यक्ष भूत, राक्षस सर्व शान्ति कराय स्वाहा।

सर्व शान्ति कर मन्त्रोऽयम्

मन्त्र :—ॐ कर्ण पिशाचिनी देवी अमोध वागीश्वरी, सत्यवादिनी, सत्यं ब्रूहि २ यत्वं चिंतेसि सप्त समुद्राभ्यंतरे वर्तते तत्सर्वं मम कर्णे निवेदय २ ॐ शीघ्र स्वाहा।

विधि :—जाप १००० करे, जल मध्ये होम १००८ शुभा शुभं कथयति।

मन्त्र :—ॐ रक्तोत्पल धारिणी मक्ष हाजर रिपु विध्वंशनी सदा सप्त समुद्राभ्यंतरे पद्मावती तत्सर्वं मम कर्णे कथय। शीघ्र शब्दं कुरु २ ॐ ह्रीं ह्रां ह्रूं कर्ण पिशाचिनी के स्वाहा।

विधि :—सहस्त्र जाप होम १०८ पश्चात्सिद्धिः।

गोरोचन कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हर २ ॐ ह्रीं दहे दहे ॐ ह्रीं हन हनां ॐ हन् २ ॐ ह्रीं हः हः स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र से गोरोचन २१ बार मन्त्रीत कर माथे पर तिलक करे तो राज दरबार में विवाद में वशीकरण होता है। रोगी मनुष्य हृदय पर तिलक करे तो स्त्री वश होय। बांहे तिलक करे तो व्याघ्र चिता वश होय। गर्दन पर तिलक करे तो सर्प वशी होय। पग (पैर) में तिलक करे तो चौरादिक वश होय। अंगुठे में तिलक करे तो सर्व विद्या सिद्धि होय। जीभ में तिलक करे तो कवि पंडित विद्वान होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो आदित्या भगवीन सूर्य संसयस वृष लोचन श्री शक्र प्रसादेन आधासीसी सूय नाशय २ स्वाहा ।

विधि : बार ६ मन्त्रीत धूप खेने से आधा सीसी रोग नष्ट होता है ।

मन्त्र :—ॐ जल कंपई जल हर कंपइ सय पुत्र मु चंडिका कंपे राजा रूवो (चो) कहा करे सि आसन छांडि वैदेसि जब लगई चंदन सिर चढ़ा वु तब लग त्रिभुवन पाप पठावु ह्रीं फुट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से चन्दनादि १०८ बार मन्त्रीत करके माथे में तिलक करे तो राजा का वशीकरण हो, सत्य है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कूं ऊंचो थेडो डिम जिरे सो: सर्व नें सरेए मुछालो ज्यों २ मोर करें पुकार तु तु बिछु चढ़ें कणाल ।

विधि : - इस मन्त्र को एकान्त में खड़े रह कर २१ बार जपे तो बीछू काटे हुए आदमी को ज्यादा जहर चढ़ता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरू कूं धाइ गाइ गोबर ऊसमें ऊपना च्यार बिछु चार काला चार काबरा चार भवरा पाखा लाल तारूं उतर बिछू नहीं तरें कें नील कंठ मोर हकारू मोर खासी तोड़ें जारे बिछू मंकरे खी छोड गु० ह० फु० ।

विधि :—इस मन्त्र को २१ बार पढ़ कर हाथ से झाड़ा देने पर बिछू का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ घु लु: दे उ ल: धुल पुर: तिहानें में वायण देव कुकर विस कुनर ई माण माणस के ही मालरीख मंत्री बंधो जें सगला ई स्वान रो विषल-लरई सही ।

विधि :—इस मन्त्र से ३ रविवार तक पागल कुत्ते का काटा हुआ आदमी को मन्त्रीत करे २१ बार, तो कुत्ते का जहर उतर जाता है ।

मन्त्र :—ॐ छौं छौं छौं छः अस्मिन् यात्रे अवतर स्वाहा: ।

विधि :—इस मन्त्र से पेडा, ३ बार मन्त्रीत कर प्रातः ही खावे तीन दिन तक, तो आधा सीसी (आधा माथा का दर्द दूर हो ।)

मन्त्र :—मेरू गिरी पर्वत जहाँ बसें हणमंत वीर कांख विलाई अंग थण मुरड तीनु भस्मा भूक गु:० ह:० फुरो:० ।

विधि : – ७ नमक की डली लेकर ७ बार मन्त्रीत करे, २१ बार फूंक दे तो कांख विलाइ ठीक होती है गाथैस बंरो बार २१ तिणाथी मन्त्री जे तिण – लेई एक २ का तिणाथी बार ३ मन्त्री जे फूंक दीजे थणस से जाय । मूरड गई होय तो तेनो लोहनी कड्छी की डंडी बार २१ मन्त्र कर २१ बार फूक देने पर पेट दर्द, उदर शूल, धिरण पीडा, वाय काख विलाई । इतने रोग ठीक होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो इंद्र पूत इंद्राणी हणई राधणी हणइ वायसूल हणइ हूर्या हणई फोहा गोला अंतगलि वायगोला हणई नहीं तर इंद्र माहाराजा नी आज्ञा ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार साढ़े तीन आंटा की तांबा की रींग मंत्र कर चाँवल से रक्त वस्त्र सवा गज कपड़े को मंत्रे तो गोलो, फीहो ठीक होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं श्री करि धन करि धान्य करि रत्न वर्षणी महादेव्यै पद्मावत्यै नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का १०८ बार नित्य ही जाप करे तो देवीजी प्रत्यक्ष हो ।

नारि केल कल्प

श्लोकः—द्वि जटी एक नेत्रस्तुः नालि केरो मही तले ।
चिंतामणि समोप्रोक्तं सर्व वांछित दायक ।। १ ।।

यस्य पूजन मात्रेण समृद्धि कुरु ते सदा ।
राजद्वारे जयेप्राप्तेः लाभः आकस्मिक तथा ।। २ ।।

वेशान्तिपूज्य मानेय दद्यात्यभीष्ट वांछितं ।
प्रज्ञाल नपयध्याना । इंध्याज नयतेसुतं ।। ३ ।।

गंधाद्रातेनय स्यासु मूढ गर्भाप्रसुत्तये ।
स्वगारेपूजितेयस्मिन् इष्टसिद्धि स्थिरा भवेत् ।। ४ ।।

सांयुगी तरणे घोरे । विवादे नृप वेस्मनि ।
अर्चयेन्नेक नेत्रंयन् । अजज्यो जायतेपुमान् ।। ५ ।

वृद्धिस्यादिवसायस्य । विदेसेपूजनाद्विसः ।
पूजनात्मंदिरे स्वीये क्षुद्रानस्यंत्यु पद्रवा ॥ ६ ॥
शाकनी भूत प्रेतादि क्षेत्रपाल पिशाचकाः ।
मुद्गलादि महादोषाः क्षयंयांति क्षणे नते ॥ ७ ॥
सर्व शांति भवेयस्मिन् मही तेज गती भले ।
आयु वृद्धि महासिद्धिः तीव्र बुद्धि समुद्भय ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लूं स्वरूपायः क्लीं चकामाक्षये नमः
स्वति त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम प्रदाय च ॥ ९ ॥
सर्वात्मगूढ मंत्राय नालिके रेक चक्षुषेविना मणि समानाय प्रसस्याय नमो नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लूं क्लीं एकाक्षराय भगवती स्वरूपाय सर्व युगेस्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम प्रदाय नमः ।

विधि :—अनेन मंत्रेण नैवाष्टम्यां रक्त कुसु मैवा १०८ लक्ष्मी बीज जप पुरस्सरं गृहे पूज्ययति तस्यस र्वार्थ भीष्ट सिद्धिर्भवती । एतस्य प्रक्षाल नोद केन वंध्या सुतंजनयति । ऋतु स्नानानंतरं एतस्य गंधा क्तेन गूढगर्भा प्रसूतय । गृहे पूजिते सर्वा भिष्टार्थं सिद्धि स्थिरा भवति । एतस्य पूजना द्वादेव्यवस्थिपिते व्यवसाय वृद्धि भवति । इदं माया बीजपूर्व स्वेत पुष्प १०८ पूजनात् गृहेस गोणसा द्युपद्रवो न स्यात् । एतस्य पूजनात् गृहे शाकिनी भूत प्रेत पिशाच क्षेत्र पालादि दोषो न भवति । एतस्य गृहे पूजनात् क्षुद्रोप द्रवानस्युः । एतस्य पूजनात् सर्व शांति भवति । एतस्य गृहे पूजनात् मुद्गलाद्याः सानिध्यः करा भवति, किं बहुनायस्यैक नेत्नंद्विजटी सयकं तं नालिकेरं कृति सास्ति गेहे । चिंता मणि प्रस्तर तुल्य नाव समं चितं धन्य त मस्य चित्तं ।

॥ इति ॥

मन्त्र :—ॐ क्लीं क्लीं क्लूं क्लूं क्लीं क्लूं यस्तोस्तं सुग्नी वीय शाकिनी दोष निग्रहं कुरु २ स्वाहाः ।

विधि : -कोरा मटका या हंडिया में खडी चूना से अक्षर लिखे फिर उडद मुट्ठी, १५ कपूर, फूल ७, वार मन्त्रीत कर हंडिया में डालकर ढक्कन लगा देवे फिर नीचे आग लगा कर ऊपर हंडिया धर देवे । बिल्ली को आने नहीं देवे तो, शाकिनी पुकारती आवे ।

मन्त्र :—ॐ नमो महाकाय योगणि योगणि नाथाय शाकीनी कल्प वृक्षाय दुष्ट योगिणी संचिरू हाय कालडेडेशाधय २ बंधय २ मारय २ चूरय २

अपहर शाकिनी संधूमवीरात् ॐ उँ ग्लों ग्लीं ग्लां उँ ह्रीं ह्रां २ ह्रोंत्फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से गुग्गुल ७ वार मन्त्रित कर उंखल में डाल कर मुसल से कूटे तो शाकिनी को प्रहार लगता है। गोडो मूडे शाकिनी मस्तक मूडा वैलागीनी चेष्टा। पेट दर्द हो, उवाक आवे, उच्चाट उपजै, सूल आवे, वेटि करे, माँटि दिठाउ बाट उचाट उपजै, सूल आवे, सासरे न रहे, मावो भंगरे, देह लूणपाणि हो वई। घणु बोले नही, सुहणो भीलडी रूप देखे। सुती डरे, छोरू आवद्ध रहे, लोहि पडे, छोरू न हुवे। इतनी बात हो तो शाकिनी की चेष्टा जानना।

मन्त्र :—कालो चीडो चग २ करे मोर विलाइ नाचे हणमंती यती की हाक मांने अमुका की धरण ठीकाणे ।

विधि :--इस मंत्र को १०८ बार प्रभात ही रविवार को वेलग्रठाइ आंटा की मन्त्री धूप देइ हाथ में राखिजे धरण ठीकाने आवे।

मन्त्र :—ॐ नमो अ जैपाल राजा आजया देराणी तेहने सात पुत्रा प्रथम पुत्र: एकान्तरो, वेलाज्वर, शीतज्वर, दाह ज्वर, पक्ष ज्वर, नित्य, ज्वर, तृतीय ज्वर, ए सात ज्वर माहिपीडा करे तो श्री जैपाल राजा अजैया देराणी की ग्र० में फु०

विधि :—कन्या कत्रीत सूत्र को सात बड कर के गाठ ७ लगावे उसको २१ वार मन्त्रीत करे हाथ में बांधे तो सर्व प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो रूद्र २ महारूद्र २ वृश्चिक विनाशय नाशय स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से १०८ बार मन्त्रीत करे वैसे बीछू का जहर उतरे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हिमवन्तस्योतरे पार्श्वे अश्व कर्णो महाद्रुमः तत्र सूलसमुत्पन्ना तत्रैव विलयंगता ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी कलवाणी कर पीलाने से सूल मिट जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो लोहित पींगलाय मातंगराजाय उसव्यथा लघु हिली २ चिली २ मिलि २ स्वाहा ।

विधि :--कन्या कत्रीत सूत को सात वड करके गाँठ २१ देवे फिर २१ बार मन्त्रीत कर कमर में बांधने से गर्भ का स्तम्भन होता है।

मन्त्र :—ॐ ओंणू गंग जमण चीबेली लूं खीलूं होठ कंठ सरसा बालू खीलूं जीभ मुखं संभा लूं खीलूं मावापजिण तूं जाया खीलूं बाट घाट जिण तूं आया खीलूं धरती गयण अकाश मरहो बिसहर जो मेलूं सास ।

विधि :—इस मन्त्र से धूलि, अथवा कंकर, अथवा भस्म, १०८ मन्त्रीत कर सांप के ऊपर डालने से सांप की लीत होती है।

मन्त्र :—ॐ संगचलग छोडी पीयली जारे अर्थ निकलि वीर ।

विधि :—इस मन्त्र से भस्म १०८ बार मन्त्रीत कर सर्प पर डालने से कीलित किया हुआ सर्प छुट जाता है।

मन्त्र :—ॐ काली कंकारूं वाली महापत्र राली हूं फट् स्वाहाः ।

विधि :—इस मन्त्र से भस्म १०८ बार मन्त्रीत कर आँख (चक्षु) पर पट्टी बांधने से नेत्र अच्छे होते हैं।

मन्त्र :—ॐ नमो गंगा जमुना की आगु बल खीलुं होठ कंठ मुख खीनुं तेरी बाट घाट जोलु आया तर धरती ऊपर आकाश मरीन सकै कादिसा सलवा २ कोयला करी कार कहा काल राजारि रूघोच्यार दुआर हाली चाली कुंतरी पछारी लख गरूडदसर अफीरि फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—इस मन्त्र से सर्प का मुंह स्थंभन किया जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो सुं उखिलणभई वाचा भई विवाच इसर गोरी नयनसं जो वैं सिर मुकलाया केस कमर धोवती करैं वांभण का वेस मइंतो सरपा छोडि फिर करि च्यारूं दसर अफरि फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा ।

विधि :—इस मन्त्र से सर्प का मुख स्तम्भन किया हुआ छूटता है।

मन्त्र :—ॐ नमो लोह मै तालुं लोह मैं जडीउं बज्र में जडी उं तालो उघडि तालो न उं घडै तो बज्र नाथ की आज्ञा न उघडै तो राम सीता की आज्ञा फुरै तस उघडै तो नार सिंह वीर की आज्ञा फुरै ठः ठः ठः स्वाहाः ।

विधि :—वार ७ वा २१ ताला को मन्त्रीत कर तीन बार ताला को हाथ से ठपका लगावे तो ताला खुल जावे।

मन्त्र :—ॐ नमो कामरू देश कामक्षया देवी लंकामाहि चांवल उपाय: किसका चोर किसका चावलपीरकानुगाधीरमे रामनुकाचाउल चिडा चोर को मुख लागैं साहु उंगण उखा वै चोर कै मुख लोहो नी कावै चोर छुटैं तो महादेव को पत्र फुटैं फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा ब्रह्मा वा च विष्णु वाच सूर्य चंद्रमा वाच पवन पाणी वाणी वाच ।

विधि :—इस मन्त्र से चांवल २१ बार मन्त्रीत कर चबावे तो चोर के मुंह में खून निकले।

मन्त्र :—ॐ नमो ब्राह्मण कोटि योगी हुया ओर ज नोइ नासकीय फुटकिर गलइ पछा नारसिंह कोर की आण फिरइ ए ।

विधि :—इस मन्त्र से गुड (गुन) २१ बार मन्त्रीत कर खिलाने से ७ दिन तक तो बाला का रोग दूर होता है। बाला माने नेहरुआ रोग।

मन्त्र :—ॐ नमो उज्जेन नगरी सीपरा नंदी सिद्धवड़ गंधरप मसान तहां बसे जापरो जापराण बे बेटा भूतिया, मेलिया अहो भूतिया अहो मलिया अमुकाने घर पाखान नाख २ ॐ अहो मलिया अमुकाने घर विष्टानाख २ ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—भंगी के मशान में से पत्थर ईंट लाकर, एकान्त स्थान में चोका लगा कर जगह पवित्र करे, फिर उस लाये हुवे ईंट या पत्थर को उस चोके में रख देवे, फिर उस ईंट या पथर पर बैठकर, सामने एक बरतन में अग्नि रख कर, कनेर के फूलों से १०८ बार भैसा गुगल के साथ आहुति पूर्वक जप करना, पूर्व दिशा में बैठकर करना इस प्रकार सात दिन तक जप करना तो शत्रु के घर में निश्चय से पत्थर और विष्टा बरसेगा, अगर सात दिन में प्रत्यक्ष न हो तो सात दिन फिर करना तब तो जरूर ही बरसेगा। इस प्रकार की क्रिया समाप्त हो जाने के बाद मद्‌ की धार देना। जो होम की भस्म थी, उस भस्म को पोटली में बांध कर मंत्र से मन्त्रीत कर, जिसके घर में डाल दी जाय उसके घर में पत्थर वरसे सत्य है, किन्तु मन्त्र रात्रि में जप करे।

मन्त्र :—ॐ टें टें टें मार टें स्वाहा।

विधि :—जहां चौरस्ते की धूलि को लेकर मध्यान्ह समय में लेकर इस मन्त्र से १०८ बार मन्त्रीत करके, घर में डालने से चूहे सब भाग जाते हैं। एक भी चूहा नहीं रहता है।

मणि भद्रादि क्षेत्रपालों का मन्त्र

ॐ नमो भगवते ह्म्ल्व्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः माणि भद्र देवाय भैर वाय कृष्ण वर्णाय रक्तोष्टाय, उग्र दंष्ट्राय त्रिनेत्राय, चतुर्भुजाय, पाशां कुशफल वरदे हस्ताय नागकर्ण कुण्डलाय, शिखा यज्ञोपवीत मण्डिताय ॐ ह्रीं आं २ क्रुं २ ह्रीं २ आवेशय २ ह्रौं स्तोभय २ हर २ शीघ्रं २ आगच्छ २ खलु २ अवतर २ क्ष्म्ल्व्यूं ह्म्ल्व्यूं भ्म्ल्व्यूं चन्द्रनाथ ज्वालामालिनी, चंडोग्र पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर धरणेन्द्र पद्मावति आज्ञादेव नाग यक्ष, गंधर्व, ब्रह्म राक्षस रण भूता दीन्‌ रति काम, वलि काम, हंतु काम, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, भवांतर, स्नेह, वैर, संबंधीसर्व ग्रहान्नावेशय २ नाग ग्रहान्नावेशय २ गंधर्व ग्रहान्नावेशय २ आकर्षय २ व्यंतर ग्रहान्नाकर्षय २ ब्रह्म-राक्षस ग्रहान्नाकर्षय२ चेटक ग्रहानाकर्षय२ सहस्त्र कोटि पिशाच ग्रहानाकर्षय २ अवतर २ शीघ्र २ धुनु २ कम्पय २ कम्पावय २ लोलय २ लालय २ लोलय नेत्रं चालय २ गात्रं चालय २ सर्वांगं चालय २ ओं क्रों ह्रीं गगनगमनाय आगच्छ २ कार्य सिद्धि कुरु २ दुष्टानां मुखं स्तंभय २ सर्व

ग्रह भूतवेताल व्यंतर शाकिनि डाकिनी नां दोष निवारय २ सर्व पर कृत विद्यानाशय २ हुं फट् घे घे ठः ठः वषट् नमः स्वाहा ।

विधि :— इस मणि भद्र क्षेत्रपाल के महामन्त्र को दीप धूपपूर्वक क्षेत्रपाल की धूमधाम से पूजा करके, ब्रह्मचर्यपूर्वक, एकासन करता हुआ सिद्ध करे १००० बार तो ये मंत्र सर्व कार्य सिद्ध करने वाला है । जो भी रोगी भूत प्रेत बाधा से दुःखी हो उसको बैठाकर इस मन्त्र से १०८ बार झाड़ा देने पर उसकी व्यंतर बाधा हट जायगी । रोग से मुक्त हो जायगा । किन्तु पहले सिद्ध करना पड़ेगा । मन्त्र सिद्ध करे तो डरे नहीं, इस मन्त्र से मणि भद्र भैर व प्रत्यक्ष भी आ सकते हैं ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं चन्द्र प्रभपाद पंकज निवासिनी ज्वाला मालिनी तुभ्यं नमः ।

विधि :—इस मन्त्र का ६ दिन तक पिछली रात्री में शुद्ध होकर ३ माला जप करे नित्य त ज्वालामालिनी देवी जी प्रत्यक्ष दर्शन देवे ।

मन्त्र :—ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः भगवति सर्व निमिति प्रकाशिनी वाग्वादिनि अहिफेनस्य मासं धुर्वा कं कथय २ स्वप्नं दर्शय २ ठः ठः ।

विधि :— इस मन्त्र का खूब जप करने से सर्व चीजों के भाव क्या खुलेंगे सो स्वप्न में दिखेगा ।

अनोत्पादन

मन्त्र :—ॐ तद्यथा आधारे गर्भ रक्षणे आस मात्रिके हूं फट् ठः ठः ठः ठः ठः

विधि :—अनेन मन्त्रेण रक्त कुसुम सूत्रे स्त्री प्रमाणे ग्रन्थि ७ स्त्री के कटि बांधे गर्भ थंभे अधूरा जाय नहीं । मंत्र १००८ प्रथम जपे । दीप धूप विधानेन जपे ।

मन्त्र :—ॐ उदितो भगवान सूर्य सहस्राक्षो विश्व लोचन आदित्यस्य प्रसादेन अमुकस्य अर्द्ध शिरोर्द्ध नाशय २ ह्रीं नमः ।

विधि :—डोरा करि १०८ बार मंत्रि गांठ दे कर्ण बांधे अंधा शीशी जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो स्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमाराणां ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमाराणां वृष्टिं कुरु २ ह्रीं संवौषट् ।

विधि :—प्रथम १ लाख विधि पूर्वक जपे । जब पानी बरसावना होय तब उपवास कर पाटा पर लिख पूजा कर जपे पानी बरसे । जब रोकना होय तो ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्ष्रीं स्रौं क्षं क्षं क्षं मेघ कुमार केभ्यो वृष्टि स्तंभय २ स्वाहा ।

विधि :—श्मशान में प्यासो जाप जपै मेघ का स्तंभन होगा ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते त्रिश्व चिन्तामणि लाभ दे रूप दे, जश दे जय दे आनय २ महेसरिमनवांछितार्थ पूरय २ सर्व सिद्धि वृद्धि ऋद्धि सर्व जन वश्यं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :— चिन्तामणि मंत्रोयम्, नित्य जपै सर्व सिद्धि होय प्रभात संध्या जपै धूप खेवै ।

मन्त्र :—ॐ नमो ह्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमारणां ॐ ह्रीं श्रीं नमो स्म्ल्व्र्यूं मेघ कुमारिकाणां वृष्टि कुरु कुरु ह्रीं संवोषट ।

विधि : - सहस १२ जपेत वृष्टिकृत्सद्यः ।

मन्त्र :—ॐ स्फारस्फ कम्बले देवी सूत मृतं उत्था पय २ आकाशं भ्रामय २ जलवमानय २ प्रतिमांचालय २ पर्वत कंपय २ लीला विलासं ओं ओं ओं नमः ।

विधि :—अनेन मंत्रेण कुम-कुम मिश्रिते जवासे रंभिता नभि मन्त्राग्राडंगे स रक्त पादो क्षिप्यते जलदागमः । इदं मंत्र इटयं हरितालं कुंभ कुमाद्यं लिखेत् । इस मंत्र को इंट के ऊपर हरिताल और केशरादि से लिखकर भूमि के अन्दर गाडे तो वृष्टि रुक जाती है । याने पानी बरसना बंध हो जाता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय हनुमंताय सर्व कीटकका मक्षि काय पिपीलिका बिले प्रवेश २ स्वाहा ।

विधि :—यदा रविवारे सूर्य संक्रमणं भवति तदा रात्रौ वार १०८ सहस्रो जपित्वा कोटी नगरे क्षिप्यते सर्वथा कीड़ी जाय ।

मन्त्र :—ॐ चिकि २ ठः ३ ।

विधि :—बार २१ अनेन जप्तं सूत्रं शय्या बंद्ध मत्कुणा नाशयति । इस मंत्र को २१ बार जप कर सूत्र को शय्या में बांधने से खटमल कम होते हैं ।

मन्त्र :—ॐ नमो आवी टीडी हु अ ऊ उकाम छाडयउ मंदिर मेरु कवित्र हाकाइ हनुमंत हूकई भीम छां--डिरे टीडी हमारी सीम ।

विधि :—बार १०८ अभिमन्त्र्य सरसप ने बालू खेत में चोकर छींटे टीड़ी जाय बार १०८ अभिमन्त्र्य सरसप ने वेलू खेलने चौंकेर छींटे टीडी जायें ।

मन्त्र :—ॐ ॐ ॐ ठ सइफल नव सह भुज पंच ग्राम कूठ तनइ पापिली जइ जउइणि कणि कीडउ पडइ ।

विधि : त्रिट्टी लिखधान कण मध्ये अथवा जीर्णधान कण भमिमन्त्र्य अन्न मध्ये क्षिप्यते । धान सुलै नाहीं ।

मन्त्र :—ॐ नमो भुंज नायाय तद्यथा हर-हर ससि-ससि मिलि-मिलि सर्वेषां प्राणिनां मुंडं बंधं करोमि स्वाहा ।

विधि :— तीन सै गुणी जे सरसप बेलुमन्त्र्य सस्य मध्ये क्षिप्यते धान मुलै नाहीं ।

मन्त्र :—ॐ नमो नार सिंघ तू घूंघरियालो सब्रह वीरह खरड पियारउ ॐ तली धरती ऊपर-आकाश मरहि मृगी जइ लहइ प्रकाश ।

विधि :—जि वार मृगी आवै ति वार स्याही मसि सूं माथे लिख जै, मंत्र भणि औषधि नाख दीजै मृगी जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदेश गुरु कूं तेरह सरसौं, चौदह राई, हाट की धूलि, मसान की छाई पढ़कर मारुं मंगलवारै तो कदई नावह रोग द्वारे फुरई मंत्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—बारईं मंगलवारे इण मंत्र सूं मंत्रि तेरह महिला, ७ सरसप ७ राई, १ चुटकी चौराहे की धूलि, एक चुटकी मसान की छाई (राख) एकठा कर मंत्र मगल वारै दोषाइत में नाखिजे अबरसां गले मंत्रि बांधिये आदित्य वारे । एकठा करिए मंगलवारे कीजै मृगी जाय ।

मन्त्र :—ॐ नमो ऊँचा पर्वत मेष विलास सुवरण मृगा चरइ तसु आस-पास श्री रामचन्द्र धनुष बाण चढ़ाया आजि रे मृगा तुझको रामचन्द्र मारने आया गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि :—वर्षाकाले रवि दिने धनष अयुति नदा कमारी सत्र नो डोरो नव लड कीजे धनष

[illegible]

मन्त्र :—ॐ [illegible]

विधि :— [illegible]

मन्त्र :—समरा समरी इम मणइ गंडू गर ऊपर माल रवणई बलि रांगण फाग विलाई लूण पानी जिमि हेम गलाई भारा अमृत-२ प्रक्षुम्ध फुट् स्वाहा ।

विधि : - पानी मन्त्र्य वार २१ प्याइजे भाड़ो दीजे रींगनवाय जाय ।

मन्त्र :—ॐ तारणि तारय मोचनि मोचय मोक्षणि मोक्षय जीवं वरदे स्वाहा ।

विधि :— पानी बार २१ मंत्रित कर पीलावे भाड़ो दीजे सर्व वायु जाय ।

मन्त्र :—ॐ प्रह जउ गाइ सूरो ए ए झिझंत तिमिर संघाया अनिल, वयण, निबद्धो अमुकस्य लूतवातं, रक्त वा तं अगिवातं, अडनीवातं विगंछिया वातं, वृद्धिवातं, संतिवातं, पणासरा स्वाहा ।

विधि :—कुमारी का सूत्र बार १०८ गांठ १२ मंत्रि दीजे देह प्रमाण डोरो करिए तो वाय जाय ।

मन्त्र :—ॐ मोहिते ज्वालामालिनी महादेवी नमस्कृते सर्वभूत देवी स्वाहा ।

विधि :—जिसपर शंका हो उसके नाम की चिट्ठि मंत्र तेल में चोपड़ि अग्नि मांहि होमिये बले ते चोर जाणबे ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री वज्र स्वामिने सर्वार्थ सिद्धि सम्पन्नाय भोजन वस्त्रार्थ देहि-देहि ह्रीं नमः स्वाहा ।

विधि :- नगर प्रवेशे कांकरा ७, बार २१ मंत्रि वट वृक्ष के सामने डाले गांव में प्रवेशकरे तो सर्व कार्य सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवऊ गोमयस्य सिद्धस्य, बुद्धस्य अक्खीण महाणसस्य. भास्करी श्रीं ह्रीं मम चिंतितं कार्य आनय-आनय, पूरय-२ स्वाहा ।

विधि :— १०८ बार गुनिये तो लाभ होय ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वयर स्वामिस्स मम भोजनं देहि-देहि स्वाहा ।

विधि :— बार १०८ गुणि कांकरी २१ मंत्रि वट वृक्ष उपर छांटिये तत ग्रामे लाभ भोजनं भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलि कुंड स्वामिने अप्रति चक्रे जये-विजये अजिते अपराजिते जम्भे स्वाहा ।

विधि : देशना काले स्मृत्वां देशनाकार्ये युवति जनान आकर्षयति सर्व वशीभवति दिन अर्थ यस्यां दिशि पर चक्र भवति। तत्सम्मुखं स्मरयते निर्विघ्नहो भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो अरिहं ताणं आस्मिणी मोहनी मोहय-मोहय स्वाहा।

विधि : एष मार्गे गच्छद्भि स्मरतव्य: तस्कार। दर्शनमपि न भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो सयं बुद्धाणं ज्रौं झ्रौं स्वाहा।

विधि :—प्रति दिवसं सिद्ध भक्तिं कृत्वा अष्टोत्तर शत दिनानि यावदष्टोत्तर जपेत कवित्ता गमादित्यं, पाडित्यं च भवति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नमो पुरुषोत्तमाणं अर्लोल अपौरुषाणम् अर्हं असि आ उ सा नमः।

विधि :—जाप्य १०८ कृत्वा असवलित सुख सौभाग्यं ऋद्धि श्च भवति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोग पइवाणं लोग पज्जोयगराणं मम् शुभाशुभं दर्शय-२ कर्ण पिशाचिनी स्वाहा।

विधि :— जाप १०८ संस्तर के ऊपर मौनेन शयनीय स्वप्ने आदेशः'

मन्त्र :—ॐ नमो अर्हिहंताणं अभय दमाणं चक्खू दयाणं मंगा दयाणं शरण दयाणं एं ह्रीं सर्वभय विद्रावणाये नमः।

विधि :— जाप १०८ सर्व भयानि विशेष तो राजकुल भयं पर चक्र णयं निवर्तयति।

मन्त्र :—ॐ नमो अरंहताणं अप्पडिव्रहय वरनाणं दसंण धराणं विउट्ट छडमाणं एँ स्वाहा।

विधि : निरंतर जापा वतीत वर्तमानागत्त ज्ञानं स्वप्न शकुन निमित्तादीनामपि तथा देशत्वं च भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो जिणाणं जावयाणं केवलियाणं केवलि जिणांण सर्व रोष प्रशमनि जंभिनी स्तंभिनी मोहनी स्वाहा।

विधि :— पट्टे मंत्र लिखित्वा जापो १०८ वार दीयते तत् कार्य काले वस्त्रं खंड मयूर शिखां संयुक्तं परिजप्य वाम पार्श्वे ध्रियते राजा वश्यो भवति।

मन्त्र :—ॐ णमो जिणाणं जावयाणं मुत्ताणं मोयगाणं असि आ उ सा यँ नमः बंदि मोक्षं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि :—रात्री दश हजार जापो बंदि मोक्षः।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी शंख चक्र गदा प्रहरिणी अमुकस्य बंध मोक्षं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :—बार २१ तैलं जपित्वा मस्तके क्षिपेत् वंदि मोक्ष: ।

मन्त्र :—ॐ णमो बोहि जिणाणं धम्मदियाण धम्मदेसियाण अरिहंताणं, णमो भगवइ सुय देविया सव्वसु अतायराबार संग जणणि अर्हं सोरोए क्ष्वी क्ष्वीं स्वाहा ।

विधि :—१०८ जपिये । देखना समये वाक्य रस होय, व्याख्याने सत्य प्रत्यय: ।

मन्त्र :—ॐ नमो जिणाणं लोगुत्तमाणं लोगनिहाणं लोग हियाणं लोग पइवाणं लोग पज्जुगारांणं नम: शुभाशुभं दर्शय २ करण पिलावति स्वाहा ।

विधि :—रात्र सूता जापिये १०८ बार, शुभाशुभं [illegible] ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवउ गोयमस्स, सिद्धस्स, बुद्धस्त, अक्खीण महाणसी, अस्य संयोगो गोयमस्स भगवान भास्करीयम् ह्रीं आणय २ इम स भयवं अक्षीण महालब्धि कुरु कुरु सिद्धि, वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—तन्दुल १०८ मंत्र सूखडी घृत मांहि मूकिये । अदृथाय सही । अक्षय होता है । ॐ चिन्तामणि-२ चिंतितार्थं पूरय-२ स्वाहा ।

चिन्तामणि मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अर्हते नम: ।

विधि :—पान ७ ऊपरं लिखे, १ सांसे लिखि बीडा चबाइये, केशर सूं लिख स्त्री पुरुष सर्वं वश्य ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड स्वामिन आगच्छ २ पर विद्यां छेदं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ तथा २१ तेल मंत्रि प्रसूति काले नाभि लेप सर्व डील (शरीर) मर्दनं सुखे प्रसव होई ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि शीघ्रं चालय उर्द्धं बाहुं कुरु-कुरु स्वाहा ।

विधि :—प्रथमं यस्मिन् दिने बाहुबलि साधन प्रारभ्यते तस्मिन् दिने उपवास विधाय, संध्या समये स्नानं कृत्वा शुभ वस्त्राणि परिधारय श्री खण्ड, कर्पूर, कस्तूरिकाया, सर्वांङ्ग लिप्त्वा ततो पविश्य मंत्र—१०८ जप्यते ततोर्द्धी भूय कायोत्सर्गेन मंत्र स्मरणीयं शुभाशुभं कथयति । इति ।

मन्त्र :—लक्षं लक्षणं लक्ष्यते च पयसा संयुक्त भाजनोर्जलम् क्षीणे दक्षिण पश्चिमोत्तर पुरः षट्स त्रयद्वये मासकम ।

मध्ये छिद्र गतं भवे दश दिनं, धूमाकुले तद्दिने सर्वज्ञ परिभाषितं, जिनमते आयुर्प्रमाणं स्फुटं ॥१॥

अर्थ :— निर्मल भोजन में जल भर सम टामे (बर्तन) में रोगी ने दिखावी जै जो सूर्य दक्षिण हीन दीखै तो छः मास जीवै। पश्चिम हीन दीखै तो ३ मास जीवै, उत्तरहीन दीखै तो २ मास जीवै, पूर्वहीन दीखै तो १ मास जीवै। जो मडंल सछिद्र देखै तो १० दिन जीवै। धूमाकुलित देखै तो तिहि (उसी) दिन मरे। यह मृत्यु जीवित ज्ञान सर्वज्ञ देव कह्यो।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवतो कूष्मांडनी क्षां ह्रीं ग्वीं शासन देवी अवतर २ दीपे दर्पणे शक्ति ब्रूहि २ स्वाहा।

विधि : वार १०८ मंत्रि पढी जै विधि सुं पूजा कीजै माला प्रत्यक्षा भवेत् ॥

मन्त्र :—ॐ नमो चक्रेश्वरी, चक्रवेगेन वाम हस्ते अचलं चारय २ घंट भ्रामय २ श्री चक्रनाथ केरी आज्ञा ह्रीं आवर्त स्वाहा।

विधि : पूर्व जाप १०८ वावन मन्त्र घड़ा मांहि (डाले) नां खिजै घटो-भ्रमति।

मन्त्र : ॐ ह्रीं नमो आइरियाणम् म्म्ल्व्यूं पश्चिम द्वारं बंधय २।

ॐ णमो उवज्झायाणं म्म्ल्व्यूं उत्तर द्वारं बंधय-बंधय।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूण क्ष्म्ल्व्यूं अधोद्वारं बंधय-बंधय।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं स्म्ल्व्यूं अग्नद्वारं बंधय-बंधय।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं क्ष्म्ल्व्यूं नैऋत्य द्वारं बंधय-बंधय।

ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं म्म्ल्व्यूं पवन द्वारं बंधय-बंधय।

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं क्ष्म्ल्व्यूं ईशान द्वारं बंधय २।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं म्म्ल्व्यूं उत्तर द्वारं बंधय-बंधय आत्म विद्यां रक्ष-रक्ष।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षः क्ष्म्ल्व्यूं पर विद्यां छिंद छिंद देवदत्त स्वाहा।

क्षां क्षीं क्षीं क्ष्यः क्षों क्षूं क्षौं क्षः क्षेत्र पालाय वन्दि मोक्षं कुरु २ स्वाहा।

विधि :—बार १० जाप कीजे बन्धन छूटे। सही सर्व सिद्धि करे। सर्व सिद्धि करं मंत्र सर्व दुःख हरं परं पठनीयं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्मावती सर्वजन वशंकरी सर्व विघ्न प्रहारणी सर्वजन गति मति, जिह्वा स्तंभिनी।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः क्ष्म्ल्व्र्यूं, ह्म्ल्व्र्यूं गति मति जिह्वा स्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—७ बार व तीन चन्दन, केशर, कपूर, कस्तूरी, गोरोचन, पीस, गुटका क्रियते, तदुपरि जाप १०८ दीयते पुष्प दीयते, तिलकं कृत्वा गम्यते, शाकिनी भूत राजादि वश्यं भवति।

मन्त्र :—ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्रौं ह्रीं नमः।

विधि :—नित्य जाप पीत मालाया पञ्चशत क्रियते। पीतवसनानि धारयते सर्वसिद्ध मनो भिलास पूर्णिता भवति सकल भूषणाचार्य श्वालैर्या कृता लक्ष्मी लाभः स्यात्।

कलश भ्रामण मन्त्र विधि

मन्त्र :—ॐ नमो चक्रेश्वरी चक्रवेगेन वाम हस्तेन अचलं चालय २ घटं भ्रामय भ्रामय श्री चक्रनाथ केरो आज्ञा ह्रीं आवर्तय स्वाहा।

विधि :—गोमयेन चतुष्कोणं मंडलं लिप्य गौ धूमादि अन्नोपरि कलशं स्थाप्य तन्म ध्ये पुष्प १०८ मन्त्रेण मन्त्रयित्वा कलशे निवेशयेत्। पर पुरुष हस्तारूढे अक्षतेन घटं भ्रमति तदा अशुभं स्व हस्तारूढे सति घटं भ्रमति तदा कार्य सिद्धिः। महत्तर कार्ये विधिः कार्या राजादि विचार व वर्ष सुभिक्षाए विचारेण रोगादि विचारे स्त्री पुत्रादि विचारेऽपि विचारणीयं॥ "चमत्कृते व्यापारे वस्तु विक्रय प्रयोग भूर्य पत्रे लिखेद् यंत्रं।"

अष्टगंधेन नरः शुचिः पुनः सुश्वेत पुष्पेण मंत्रं जाप्य शतोत्तरं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं पद्मे पद्मासने श्री धरेणन्द्र प्रिय पद्मावती श्रियं मम कुरु कुरु दुरितानि हन २ सर्व दुष्टानां मुख बंधय २ स्वाहा।

इदं जप्त्वा वस्तु मध्ये यंत्रं क्षिपित्वा विक्रीयते। तत्क्षणादपि अन्य प्रकारः॥१॥

रम्भापत्रे लिखेन्नाम। कर्पूरेण मर्दन त्रि रात्रि मर्चनं कृत्वा केशरं समं। तन्दुले मस्तके क्षेप्यं। दारिद्रयं तस्य नश्यति, देवि तस्य प्रसादेनं धनवान जायते नरः॥ २॥

यंत्र च भक्षय दिशं दारिद्रयं तस्य नश्यति ।। ३ ।।

पुनः त्रिसायुतं जपेन्मंत्रं होमयेत् पायसं कृतं, नश्यते तत्क्षणादेवी दारिद्रयं दुष्ट बुद्धिना ।। ४ ।।

पद्मावती सिद्धि मन्त्र

महारजते ताम्रपत्रे कदली त्वचि व पुनः ।
अष्टगंधेन, दुग्धेन,श्वेत पुष्पं रक्त पूजनं ।।१।।
ताम्र पत्रे पयः क्षिप्त्वा यंत्र स्नानं समाचरेत् ।
आदौ च वर्तु लं लेख्यं, त्रिकोणकं षट् कोणकं ।।२।।
वर्तु ल चैव पश्चाश्चतुद्वारेण शोभितं ।
मध्ये क्रों लिखेद्धीमान् । कोणे क्लीं सदा बुधः ।।३।।
त्रिकोणे प्रणवं कृत्वा तद्वाह्ये च कुट् उच्यते ।
चतुर्द्वार लिखे श्री धरणेन्द्र पद्मावती नमः ।।४।।
क्रों कारेण वेष्टयेत् रेखां वन्हिमानं च वाहुभिः ।
एवमेव कृते यंत्रे । गोपीनाथ पुनेः पुनेः ।।५।।
पीताम्बर धरो नित्यं पीत गंधानु लेपनं ।
ध्यायेत् पद्मावती देवीं भक्ति मुक्ति वर प्रदां ।।६।।
प्रथमं क्रों वाहु क्षेत्रपाल संपूज्य यंत्र पूजनमाचरेत् । ततो जापः ।

मन्त्र :—ॐ क्रों क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं पद्मे पद्मासने नमः ।। लक्ष मेकं जपेन्मत्रं ।

होमयेत्पायसं घृतं ।। तावत्पात्रे घृतं क्षीरं । अथवा द्रव्य विमिश्रितं होमयेद्वर्तु ले कु डे । देवीनुवशगा भवेत् । दुग्धाहार यव भोज्यं निराहारश्च श्राद्धयो । एवमेव जपेन्मंत्रं भूमिशायि नरः शुचिः । प्रत्यक्षो देवीमा विश्य, वरं दत्ता भवेन्तदा । त्रिगुणं सप्त रात्रि च । जपं कृत्वा प्रशांत धी । प्रथम दिवसे देवीं । कन्यकां वशवर्षकीं ।
भैरवीं भीम रूपा च । सावधाने जितेन्द्रियः ।।

द्वितीय दिवसे शक्ति कन्यकां द्वादशाब्दिकां भैरवेण समायुक्तां भयं दृष्ट्वा च रौरवं। तृतीये दिवसे मायां वरं ब्रूहि मम प्रभो एवमेव प्रकारेण त्रिकालज्ञो भवेन्नरः।

मन्त्र :—ॐ नमो ह्रां श्रीं ह्रीं ऐं रवं चक्रेश्वरी चक्रधारिणी, शंख चक्र, गदा-धारिणी मम स्वप्न दर्शनं कुरु २ स्वाहा॥

विधि :—१०८ बार मौनेन शयनीय जप्त: स्वप्ने आदेश: सत्य:॥

मन्त्र :—ॐ अमुकं तापय २ शोषय २ भास्करी ह्रीं स्वाहा।

विधि :—आदित्य सम्मुखो भूत्वा, नामगृहित्वा, रात्रौ सहस्र मेकं जपेत् सप्ताहे म्रियते, रवौ कर्त्तव्यं। थोड़ा वच स्त्रीयी दाएं हाथ की छिटली अंगुली प्रमाण तंतु दूध सूं [illegible]

मन्त्र :—ॐ ह्रीं [illegible] पाद्ध्याणम्, लोग पञ्जो अगराणं, मम शुभाशुभं कथय २ क[illegible] पिशाचिनी स्वाहा।

जाप्य १०८ संस्थार के मौनेनशयनीयम स्वप्ने आदेशः।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं सव्वजीवानां मत्तायं सव्वेसिसत्तूणं अपराजिउं भवा[...] स्वाहा।

विधि :—श्वेत सरसप (सरसों) बार २१ मंत्रिजे जल मध्ये क्षिप्यति तरति तदा जीव[...] बूड़ति तदा मरति। रोगी आयुर्ज्ञानम्॥

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं वस्त्रांचल वृद्धि कुरु २ स्वाहा।

विधि :—बार १०८ संध्याएं मन्त्रि जे पछे बड़ी (चादर) सिरहाने दीजें प्रभाते नापिये बढ़े[...] शुभ घटै तो अशुभ।

मन्त्र :—ॐ गजाननाय नमः।

विधि :—जाप सहस्त्र घृत मधु एक टाकर का टक्का १०८ होमिये। वस्तु तौल सिर[...] दीजें। प्रभाते नापिये बढ़े तो मंदी, घटै तो तेज होय।

मन्त्र :—ॐ नमो वज्र स्वामिने सर्वार्थ लब्धि सम्पन्नाय स्नानं, भोजनं, वस्त्रा[...] लाभं देहि-देहि स्वाहा॥

विधि :— कांकरा ७ बार २१ मंत्रि क्षीर वृक्ष हेठ भूंकिये लाभ होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं सूर्याय नमः ।।

विधि :—जल मन्त्रि नेत्र प्रक्षालिये नेत्र दूखता न रहे।

मन्त्र :—ॐ विश्वावसु नाम गंधर्व कन्या नामाधिपति सरुपा सलक्षान्त देहि मे नमस्तस्मै विश्वावसवे स्वाहा ।।

विधि :—मन्त्र मणि ७ अंजुलि जल दीजे ए मन्त्र स्मरण १००० जाप कीजे नित्य १०८ कीजे, १ मास अथवा ६ मास में कन्या प्राप्त होय।

मन्त्र :—ॐ धूम्-धूम् महा धूं धूं स्वाहा।

विधि :—वार १०८ राख मन्त्र नांखिये उंदरा (चूहे) जाय। (सत्यं)

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रं ह्रः ।।

विधि :—सार बेर कांकरा मंत्रि चार दिशिनां खिये (डालि) टीडी जाय।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं ह्रूं वद् वद् वागेश्वरी स्वाहा।

विधि :—सरस्वती मंत्र बार २१ जपिये श्वेत पाटा लिखि बाल प्यावें वाचा स्फुटा भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय महति महावीर्य पराक्रमाय सर्वसूल रोग व्याधि विनाशनाय काल दृष्टि विष ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्व-कल्याणकर दुष्ट हृदय पाषाण जीवन रक्षा कारक दारिद्र विध्वंशक अस्माकम् मनोवांछितं (तं) भवतु स्वाहा।

विधि :—इमा पार्श्वनाथाय संपादिता विद्या यक्ष कर्दमेन स्थालीं लिखित्वा शुभां दिने जाती पुष्प १२००० जपेत। त्रिकोण कुंडे जाप द्वादशांशेन समगूगल गुटिका १२००० सिता-घृत मिश्रित होमिये। तत्र प्रत्यक्षा भवति ।। द्रव्यं ददाति, वार्षे दिन, प्रतिदिन १०८ बार करिये सर्वकार्य सिद्धिकर हर्षं ददाति ।।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते (दो) यो सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाण लब्धि मम आणय २ पूरय २ ह्रीं भास्करी स्वाहा।

विधि :—जाप १२००० चावल अखण्ड दिवाली की रात जपिये। रोज १०८ जपिये भोजन अक्षीण लब्धि मन संतोष शरीरं सौख्यं आलय मांगल्यं भवति।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते आदित्य रुपाय आगच्छ २ अमुकस्य अक्षिरोगं, अक्षि-पीड़ा नाशय स्वाहा।

विधि:—बार १४ आँख पर जपिजे पीड़ा जाय।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते विश्व रूपाय कामाख्याय सर्व चिंतितं प्रदाय मम लक्ष्मीं प्राप्त कराय स्वाहा ।

विधि :—(इस मंत्र की विधि नहीं है) ।

मन्त्र :—ॐ नमो अर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष—कल्मषाय दिव्य—तेजो—मूर्तये श्री शांतिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्व क्षामर डामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा देवदत्तस्य सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—अनेन मंत्रेण बार ३ व ७ गंधोदक पठि शिरसि निक्षिपेत् ।

मन्त्र :—ॐ उच्छिष्ट चांडालिनी सुमुखी देवी महा पिशाचिनी ह्रीं ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—बार १०८ दिन पहले जीमने बैठता ग्रास १ बार ३ जप धरती मेलता पानी चलु ३ धरती मेलता दुजे दिन ग्रास ३ जीमना बीच भूठे मुँह बार १०८ जप पानी चलु ३ मंत्र पढ़ि पीना । फिर भोजन करे दिन ६ इस प्रकार बार पीछे से पाखाने बैठता, बार १०८ जप करना । पीछे दिन ६ मशान ऊपर बैठ जप करना प्रत्यक्ष भवति ।

मन्त्र :—ॐ बम्ल्व्र्यूं, ॐ दम्ल्व्र्यूं, ॐ हम्ल्व्र्यूं, ॐ मम्ल्व्र्यूं, ॐ भम्ल्व्र्यूं, ॐ ह्म्ल्व्र्यूं, ॐ झम्ल्व्र्यूं, ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं, ॐ म्म्ल्व्र्यूं, ॐ हम्ल्व्र्यूं ।

विधि :—ये मंत्र अष्टगंधेन लिख पूजा पूर्वक मस्तक पर रखैं, लाभ हो जाये, जाप करें विधि पूर्वक लक्ष्मी की प्राप्ति होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो आदि योगिनी परम माया महादेवी शत्रु टालनी, दैत्य मारिनी मन वांछित पूरणी, धन आन वृद्धि आन जस सौभाग्य आन आनै तो आदि भैरवी तेरी आज्ञा न फुरै । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो । ईश्वरो मन्त्र वाचा ।

विधि :—मंत्र जपै निरंतर १०८ बार विधिपूर्वक लक्ष्मी की प्राप्ति होय । सर्वकार्य सिद्ध होय । बार २१–१०८ चोखा मंत्रि जिस वस्तु में राखै अक्षय होय ।

मन्त्र :—ॐ नमो गोमय स्वामी भगवउ ऋद्धि समो अक्खीण समो आण २ भरि २ पुरि २ कुरु २ ठः ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—मंत्र जपै प्रातः काल शुद्ध होयकर लक्ष्मी प्राप्त होय। वार २१–१०८ सुपारी, चावल, मंत्रि जिस वस्तु में घाले सो अक्षय होय। ये मंत्र पढ़ दीप, धूप खेवै भोजन वस्तु भांडार में अक्षय होय। उज्जवल वस्त्र के शुद्ध आदमी भीतर जायें।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॐ नमः भगवऊ गोमय मस्स सिद्धस्स बुद्धस्स, अक्खीणस्स भास्वरी ह्रीं नम स्वाहा।

विधि : - मंत्र नित्य प्रातः काले शुचिर्भूत्वा दीप–धूप विधानेन जपं लाभ होय। लक्ष्मी प्राप्त होय।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते गौतम स्वामिने सर्व लब्धि सम्पन्नाय मम अभीष्ट सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—वार १०८ प्रतिदिन जपिये। जय होय। कार्य सिद्धि होय।

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ज्वां ज्वीं ज्वालामालिनी चोर कंठं ग्रहण २ स्वाहा।

[illegible]
निकले ... काले चावल खवावे चोर का मुख ... ।

मन्त्र :—ॐ चक्रेश्वरी चक्रवेगेन कट्टोरकं भ्रामय २ चोरं गृहण २ स्वाहा।

विधि :—कट्टोरकं भमना पूर्वं मन्त्र चोरमेव गृहणाति कटोरा चलावन भस्मना पूर्वं चोरमेव गृहणाति कटोरा चलावन मन्त्रम्।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं क्लीं असि आ उ सा धुलु २ कुलु २ सुलु २ अक्षयं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—पंच परमेष्ठी मंत्रोयं त्रिभुवन स्वामिनी विद्या। अनेन लाभो भवति जप १०८ नित्य करें। गुरु आम्नायेन सिद्धम्।

काक शकुन विचार

जिस समय अपने मकान की हद में काक बोलै उसी समय अपने पैरों से परछाईं नाप ले जितने पैर हों उसमें ७ का भाग दे। शेषफल का शकुन इस है। पहले पगले अमृत फल लावें, द्वितीय पगले मित्र घर आवें, तीसरे पगले हान, चौथे पगले श्री कष्ट जान। पांचवे पगले (जीये न कोय) सुख सम्पति छटवें पगले निशान व जावें, सातवें पगले जीया न कोय। काक बचन नहीं होय।

जीवन मरण विचार

आत्मदूत तथा रोगी त्रिगुण्यं नामकाक्षरं सप्त हृते समे मृत्यु विषमे जीवति ध्रुवं ॥

इति ॥ १ ॥

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ॐ ह्रीं नमः कृष्ण वा ससे क्ष्मौं शत सहस्र लक्ष कोटि सिंह वाहने फ्रं सहस्र वदने ह्रौं महाबले ह्रौं अपराजिते ह्लीं प्रत्यंगिरे ह्र्यौं पर सैन्य निर्णाशिनी ह्लीं पर कार्य कर्म विध्वंशनीह्यः पर मन्त्रोच्छेदिनि यः सर्व शत्रूच्चाटनीह्यौं सर्वभूत दमनि ठः सर्वदेवान् बंधय बंधय हुं फट् सर्व विघ्नान् छेदय २ यः सर्वानर्थान निकृत्य २ क्षः सर्व दुष्टान् भक्षय २ ह्रीं ज्वाला जिह्वे ह्रौ कराल वक्त्रे ह्यः पर यंत्रान् स्फोटय २ ह्लीं वज्र शृंखलान् त्रोटय २ असुर मुद्रां द्रावय २ रौद्र मूर्ते ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे मम् मनश्चिंतित तं मंत्रार्थं कुरु २ स्वाहा ।

विधि :—अस्य स्मरणात् सर्वसिद्धि ।

मन्त्र :—ॐ नमो महेश्वराय उमापतये सर्व सिद्धाय नमो रे वार्चनाय यक्ष सेनाधिपते इदं कार्यं निवेदय तद्यथा कहि २ ठः २ ।

विधि :—एनं मंत्रं वार १०८ क्षेत्रपालस्याग्रे पूजा पूर्वं जपेत् । ततो वार २१ गुग्गलेनाभिमन्त्र्य आत्मानं धूपयित्वा सुप्यते स्वपने शुभाशुभं कथयति ।

मन्त्र :—ॐ विधुज्जिह्वे ज्वालामुखी ज्वालिनी ज्वल २ प्रज्वल २ धग २ धूमांधकारिकी देवी पुरक्षोभं कुरु कुरु मम मनश्चिंतितं मंत्रार्थं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—अमुं मंत्रं कर्पूर चन्दनादिभिः स्थालादौ लिखित्वा श्वेत पुष्पाक्षतादि मोक्षं पूर्वं सहस्र जाप्येन प्रथमं साध्य पश्चान्नित्यं स्मर्यमाणात्सिद्धिः ।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पिशाच रुद्राय कुरु २ यः भंज २ हर २ दह २ पच २ गृह्ण २ माचिरं कुरु रुद्रो आज्ञां पयति स्वाहा ॥

विधि :—अनेन मंत्रेण वार १०८ गुग्गुल, हींग (हिंगुल) सर्षप सर्पकं चुलिका एकत्र मेलयित्वा-गर्भन्त्र्य धूपोदेयः तत्क्षण शाकिन्यादि दुष्ट व्यंतरादि गृहीतं पात्रं सद्यो विमुच्यते स्वस्थं भवति ।

मन्त्र :—ॐ इटि मिटि भस्मं करि स्वाहा।

विधि :—अनेन बार १०८ जलमभिमन्त्र्य पाय्यते उदर व्यथोपशाम्यति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं सर्वे ग्रहाः सोम सूर्यांगारक बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्चर, राहु, केतु, सहिता सानुग्रहा मे भवन्तु। ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा स्वाहा।

विधि :—अस्यां स्मृतायां प्रतिकूला अपि गृहा अनुकूला भवन्ति।

मन्त्र :—ॐ रक्ते रक्तावते हुं फट् स्वाहा।

विधि :—कुमारी सूत्रेण कंटकं कृत्वा रक्त कण वीर पुष्प १०८ जाप्यं दत्वा कटौबंधयेत् रक्त प्रवाहं नाशयति।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं धनधान्य करि महाविद्ये अवतर २ मम गृहे धन धान्यं कुरु २ स्वाहा।

विधि :—वार ५०० अक्षताभिमंत्र्य क्रयाणके क्षिप्यंते क्रयो विक्रयो लाभश्च भवति।

मन्त्र :—ॐ शुक्ले महाशुक्ले ह्रीं श्रीं क्षीं अवतर २ स्वाहा।

विधि व फल :—१००८ जाप पूर्वं १०८ गुणिते स्वप्ने शुभाशुभं कथयति।

मन्त्र :—ॐ नमोर्हते भगवते बहुरूपिणी जम्भे मोहिनी स्तंभे स्तंभिनी कुक्कुट उरग वाहिनी मुकुट कुण्डल केयूर हारा भरण भूषिते चण्डोग्रपार्श्वनाथ, यक्षी लक्ष्मी पद्मावती त्रिनेत्रेपाशांकुश फलाभय वरद हस्ते मम अभीष्ट सिद्धि कुरु २ मम चिंतित कार्यं कुरु २ ममौषध सिद्धि कुरु २ वषट् स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र का त्रियोग शुद्ध कर श्रद्धापूर्वक जपने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं। सर्व औषधिओं की सिद्धि होती हैं। इस मंत्र की सिद्धि पुज्यपादाचार्य को थी, और इसके ही प्रभाव से देवी जी श्रीपद्मावती माताजी ने पुज्य पादाचार्य के पांव के तलवो में दिव्य औषधियों का लेप कर दिया था, उन औषधियों के प्रभाव से विदेह क्षेत्र में उन आचार्य का आकाश मार्ग से गमन हुआ था।

पुत्रोत्पत्ति के लिये मंत्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असि आउसा नमः ।

विधि :—सूर्योदय से १० मिनिट पूर्व उत्तर दिशा में, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, उर्ध्व, अधो दिशाओं में क्रमशः २१–२१ बार जप करे । पुनः १० माला फेरे, मध्यान्ह में १० माला, सांय काल १० माला जपे । पुनः स्वप्न आवेगा, तब निम्न प्रकार की दवाई देवे, मयूरपंख की चांद २, शिवलिंगी का बीज १ ग्राम, दोनों को बारीक खरल करे, ३ ग्राम गुड़ में मिलाकर रजो धर्म की शुद्धि होने पर खिलावे, पहले या दूसरे माह में ही कार्य सिद्ध हो जायेगा ।

। अथ वृहद् शांतिमंत्रः प्रारभ्यते ।

इस शांति मंत्र को नियमपूर्वक पढ़ने से अथवा शांति धारा करने से सर्व प्रकार के रोग शोक व्यंतरादिक बाधायें एवं सर्व कार्य सिद्ध करने वाला और सर्व उपद्रवों को शांत करने वाला है अतः इसे नित्य ही स्मरण करना चाहिये ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं २ मं २ हं २ सं २ तं २ पं २ झं २ झ्वीं २ क्ष्वीं २ द्रां २ द्रीं २ द्रावय २ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्रीं क्रों [+ देवदत्त नामधेयस्य] पापं खण्ड २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ कुट २ शीघ्र २ अर्हं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्षी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रों ह्रौं द्रां द्रीं द्रावय २ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ ठ ठ ठ [× देवदत्त नामधेयस्य] श्रीरस्तु । सिद्धिरस्तु । बृद्धिरस्तु । तुष्टि-रस्तु । पुष्टि-रस्तु । शान्ति रस्तु । कान्तिरस्तु । कल्याणमस्तु स्वाहा ॥

ॐ निखलभुवनभवनमंगलीभूतजिनपतिसवनसमयसम्प्राप्ताः । वरममिनवकर्पूरकाला-गुरुकुंकुमहरिचंदनाद्यनेकसुगन्धिबन्धुरगन्ध द्रव्यसम्भारसम्बन्धबन्धुरमखिलदिगन्तरा- लव्याप्त—सौरभातिशयसमाकृष्टसमदसामजकपोलतलविगलित — मदमुदितमधुकर— निकरार्हत्परमेश्वर-पवित्रतरगात्र—स्पर्शनमात्रपवित्रिभूत — भगवदिदंगन्धोदकधारा वर्षमशेष हर्षं निबन्धनं भवतु [देवदत्त नामधेयस्य] शान्तिं करोतु । कान्तिमाविष्करोतु । कल्याण प्रादुः करोतु । सौभाग्यं सन्तनोतु । आरोग्यं मातनोतु । सम्पदं सम्पादयतु । विपद-

भवसादयतु । यशोविकासयतु । मनः प्रसादयतु । आयुर्द्राधयतु । श्रियं श्लाघयतु । शुद्धि विशुद्धयतु । बुद्धि विवर्द्धयतु । श्रेयः पुष्णातु । प्रत्यवायं मुष्णातु । अनभिमतं निवारयतु । मनोरथं परिपूरयतु । परमोत्सवकारणमिदं । परममंगलमिदं । परमपावनमिदं । स्वस्त्यस्तु नः । स्वस्त्यस्तु वः । इवीं क्ष्वीं हं सः असिआउसा स्वाहा ॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय घातिकर्मविनाशनाय अष्टमहाप्रातिहार्य-सहिताय चतुस्त्रिंशदतिशयसमेताय । अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यसुखात्मकाय । अष्टादशदोषरहिताय । पञ्चमहाकल्याणसम्पूर्णाय । नवकेवललब्धिसमन्विताय दशविशेषणसंयुक्ताय । देवाधिदेवाय । धर्मचक्राधीश्वराय । धर्मोपदेशनकराय । चमरवैरोचनाच्युतेन्द्र प्रभृतीन्द्रशतेन मेरुगिरिशिखरशेखरीभूतपाण्डुकशिलातलेन गन्धोदकपरिपूरितानेक — विचित्रमणिमय — मंगलकलशैरभिषिक्त—मिदानीमहंत्रैलोक्येश्वरमर्हत्परमेष्ठिनमभिषेचयामि हं भं इवीं क्ष्वीं हं सः द्रां द्रीं ऐं अर्हं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रावय २ स्वाहा ॥

(यहां जिस २ भगवान के नाम के साथ
जो जो द्रव्य का नाम है उन्हें चढाता जावे)

ॐ ह्रीं शीतोदकप्रदानेन शीतलो भगवान् प्रसीदतु वः । शीता आपः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥१॥ गन्धोदकप्रदानेन अभिनन्दनो भगवान् प्रसीदतु । गन्धाः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥२॥ अक्षतोदक प्रदानेन अनंतो भगवान् प्रसीदतु अक्षताः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥३॥ पुष्पोदकप्रदानेन पुष्पदन्तो भगवान् प्रसीदतु । पुष्पाणि पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥४॥ नैवेद्यप्रदानेन नेमिनाथो भगवान् प्रसीदतु । पीयूषपिण्डः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥५॥ दीपप्रदानेन चन्द्रप्रभो भगवान् प्रसीदतु । कर्पूरमाणिक्यदीपाः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥६॥ धूपप्रदानेन धर्मनाथो भगवान् प्रसीदतु । गुग्गुलादिदशाङ्गधूपाः पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥७॥ फलप्रदानेन पार्श्वनाथो भगवान प्रसीदतु । क्रमुक – नारिंग—प्रभृतिफलानि पान्तु । शिवमाङ्गल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥८॥ अर्हन्तः पान्तु वः । सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु वः ॥ सिद्धाः पान्तु वः । हृदयनिर्वाणं प्रयच्छन्तु वः ॥ आचार्याः पान्तु वः । शीतलसौगन्ध्यमस्तु वः ॥ उपाध्यायाः पान्तु वः । सौमनस्यं चास्तु वः ॥ सर्वसाधवः पान्तु वः । अन्नदानतपोवीर्य विज्ञान—मस्तु वः ॥ (यहां २४ बार पुष्प चढावे)

ॐ वृषभस्वामिनः श्री पादपद्मप्रसादात् अष्टविधकर्म विनाशनं चास्तु वः ॥१॥ श्रीमदजितस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादजेयशक्तिर्भवतु वः ॥२॥ शम्भवस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादा-

दनेकगुणगणाश्चास्तु वः ।।३।। अभिनन्दनस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादभिमतफलं प्रयच्छन्तु वः ।।४।। सुमतिस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादमृतं पवित्रं प्रयच्छन्तु वः ।।५।। पद्मप्रभस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद्दयां प्रयच्छन्तु वः ।।६।। सुपार्श्व स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् कर्मक्षयश्चास्तु वः ।।७।। श्रीचंद्रप्रभस्वामिनः श्रीपादपद्म प्रसादाश्चन्द्रार्कतेजोऽस्तु वः ।।८।। पुष्पदंतस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् पुष्प सायकातिशयोऽस्तु वः ।।९।। शीतलस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादशुभ-कर्ममलप्रक्षालनमस्तु वः ।।१०।। श्रेयांसजिनस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् श्रेयस्करोऽस्तु वः ।।११।। वासुपूज्यस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद्रत्नत्रयावासंकरोऽस्तु वः ।।१२।। विमलस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् सद्धर्मवृद्धिर्वै माङ्गल्यं चास्तु वः ।।१३।। अनन्तनाथस्वामिनः श्रीपादपद्म-प्रसादादनेकधनधान्याभिवृद्धिरक्षणमस्तु वः ।। १४ ।। धर्मनाथस्वामिनः श्रीपादपद्म-प्रसादात् शर्मप्रचयोऽस्तु वः ।।१५।। श्रीमदर्हत्परमेश्वरसर्वज्ञपरमेष्ठिशान्तिनाथ स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् शान्तिकरोऽस्तु वः ।।१६।। कुन्थुनाथस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात्त श्रभि-वृद्धिकरोऽस्तु वः ।।१७।। अरजिन स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्परमकल्याणपरम्पराऽस्तुवः ।।१८।। मल्लिनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाच्छल्यविमोचनंकरोऽस्तुवः ।।१९।। मुनिसुव्रत-स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सम्यग्दर्शनं चास्तु वः ।।२०।। नमिनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादा-त्सम्यग्ज्ञानं चास्तु वः ।।२१।। अरिष्टनेमिस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् अक्षयं चारित्रं ददातु वः ।।२२।। श्रीमत्पार्श्व भट्टारकस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सर्वविघ्नविनाशनमस्तु वः ।।२३।। श्रीवर्धमानस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सम्यग्दर्शनाद्यष्टगुणविशिष्टं चास्तु वः ।।२४।।

श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ परमेष्ठी–परम–पवित्र–शांतिभट्टारक स्वामिनः श्रीपाद्पद्म-प्रसादात्सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु । वृषभादयो महति महावीर वर्धमान पर्यन्त परम तीर्थंकरदेवाश्चतुर्विंशतिर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सम्भिन्नतमस्का वीतरागद्वेष-मोहास्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जातिजरामरणविप्रमुक्ता सकल भव्य-जनसमूहकमलवनसम्बोधनकराः । देवाधिदेवाः । अनेकगुणगणशतसहस्रालङ्कृतदिव्यदेहधराः । पञ्चमहाकल्याणाष्टमहाप्रातिहार्यचतुस्त्रिंशदतिशयविशेषसम्प्राप्ताः इन्द्रचक्रधरबलदेववासुदेव-प्रभृतिदिव्यसमानभव्यवर पुण्डरीकपरमपुरुषमुकुटतटनिबिडनिबद्धमणिगणकर निकरवारिधारा-भिषिक्तचारुचरणकमलयुगलाः । स्वशिष्य पर शिष्यवर्गाः प्रसीदन्तु वः ।। परममाङ्गल्यनामधेयाः । सद्धर्मकार्येष्विहामुत्र च सिद्धाः सिद्धिं प्रयच्छन्तु वः ।।

ॐ नृपातिशतसहस्रालङ् कृतसार्वभौमराजाधिराज परमेश्वरबलदेववासुदेवमण्डलीक महामण्डलीकमहामात्यसेनानाथराजश्रेष्ठिपुरोहिताधीशकराञ्जलिनमितकर कुड्मलमुकुलालङ्

कृतपादपद्मा: । कुलिशनालरजत मृणालमन्दारकर्णिकारातिकुलगिरिशिखरशेखरगगन मन्दाकिनीमहाह्लदनदनदी शतसहस्त्रदलकमलवासिन्यादि सर्वाभरणभूषिताङ्ग सकलसुन्दरीवृन्दवन्दित–चारुचरणकमलयुगला: ।। आमौषधय: । क्ष्वेलौषधय: जल्लौषधाय: विप्रुषौषधय: । सर्वौषधयश्च व: प्रीयन्ताम् २ ।। मतिस्मृति संज्ञाचिन्ताभिनिबोधज्ञानिनश्च व: प्रीयन्ताम् २ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सिरो रोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं नासिका रोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं अक्षिरोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं कर्ण रोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठ बुद्धीणंममात्मनि विवेकज्ञानं कुरू २ शुल उदर गड गुमड विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं मम सर्व ज्ञानं कुरू २ श्वास हेडकी रोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणु सारीणं परस्पर विरोध विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्न सोदराणं श्वास कास रोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमोसयं बुद्धिणं कवित्वं पांडित्वं च कुरू२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धिणं प्रतिवादी विद्या विनाशनं कुरू२ ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धिणं अन्य गृहीत श्रुत ज्ञानं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो ऋजुमदीणं बहु श्रुत ज्ञानं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं सर्व शांति कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दश पुव्वीणं सर्व वेदिनो भवतु ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउ दस पुव्वीणं स्व समय परसमय वेदिनो भवतु ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठाङ्ग महाणिमित कुसलाणं जीवित मरणादि ज्ञानं कुरू २ ॐ ह्रीं णमो विउण यड्ढि पत्ताणं कामित वस्तु प्राप्ति र्भवतु ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जा हराणं उपदेश प्रदेश मात्र ज्ञानं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणंनष्ट पदार्थ चिंता ज्ञानं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमोपण्ण समणाणं आयुष्यावसान ज्ञानं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं अंतरिक्ष गमनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं विद्वेष प्रति हतं भवतु ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं स्थावर जंगम कृत विघ्न विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग तवाणं वचस्तम्भणं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं सेना स्तम्भनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्तवाण अग्नि स्तम्भनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं जलस्तम्भनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं विषरोगादि विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं दुष्ट मृगादि भय विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण परक्कमाणं लता गर्भादि भय विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बम्भ चारीणं भूतप्रेता दिभय विनासनं भवतु ॐ ह्रीं अर्हं णमो विपो सहि पत्ताणं जन्मान्तर देव वैर विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लो सहिपत्ताणं सर्वाप मृत्यु विनाशनं कुरू २

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अपस्मार रोग विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणंगजमारि विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं मनुष्यऽमरोप सर्गं विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण बल्लीणं गो अश्व मारि विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वच बल्लीणं अजमारि विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय बल्लीणं महिष गोमारि विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं सर्प भय विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं युद्ध भय विध्वंसकं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाण साणं कुष्ट गंड मालादि विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं मम् सर्व सौख्यं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमीय सवीणं मम् सर्व राज भय विनाशनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं बंधन विमोचनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढ माणाणं अस्त्र शस्त्रादि शक्ति निरोधनं कुरू २ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व साहूणं सिद्धि कुरू २॥

कोष्ठबुद्धिबीजबुद्धिपदानुसारिबुद्धिसम्भिन्नश्रोत्रश्रवणाश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ जलचारणजङ्घाचारणतन्तुचारणभूमिचारणश्रेणिचारणचतुरङ्गुलचारणआकाशचारणाश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ मनोबलिवचोबलिकायबलिनश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ उग्रतपोदीप्त-तपोमहातपोघोरतपोऽनुतपोमहोग्रतपश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्यय केवलज्ञानिनश्च वः प्रीयन्ताम् ॥ यमवरुणकुबेरवासवाश्च वः प्रीयन्ताम् ॥ अनन्तवासुकीतक्षककर्कोटकपद्‌ममहापद्‌मशंखपालकुलिशजयविजयादिमहोरगाश्च वः प्रीयन्ताम् ॥ इंद्राग्नियमनैऋंतवरुणवायुकुबेरईशानधरणेन्द्रसोमाश्चेतिदशदिक्पालकाश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ सुरसुरोरगेन्द्रचमरचारणसिद्धविद्याधरकिन्नर किम्पुरुषगरुडगन्धर्वयक्ष-राक्षसभूतपिशाचाश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ बुधशुक्रबृहस्पत्यर्कन्दुशनैश्चराङ्गारकरा-हुकेतुतारकादिमहाज्योतिष्कदेवाश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ चमरवैरोचनधरणानन्दभूतानन्द वेणुदेव वेणुधारिपूर्णवशिष्ठ जलकान्तजल - प्रभुघोषमहाघोषहरिषेणहरिकान्तअमितगतिअ-मितवाहनवेलाम्जनप्रभञ्जन अग्निशिखिअग्निवाहनाश्चेति विंशतिभवनेन्द्राश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ गीतरति गीतकान्तसत्पुरुषमहापुरुषसुरूपप्रतिघोषपूर्णभद्रमणिभद्र पुष्प-चूलमहाचूलभीममहाभीमकालमहाकालाश्चेति षोडशव्यन्तरेन्द्राश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ नाभिराजजितशत्रुदृढराजस्वयंवरमेघराजधरणराजसुप्रतिष्ठमहासेनसुग्रीवदृढरथविष्णुराजवसु—पूज्यकृतवर्मसिंहसेनभानुराजविश्वसेनसुदर्शनकुम्भराजसुमित्राविजयमहाराजसमुद्रविजय विश्वसेन सिद्धार्थाश्चेतिजिनजनकाश्च वः प्रीयन्ताम् २॥ मरूदेवीविजयासुषेणासिद्धार्थासुमंङ्गला-सुसीमापृथ्वीलक्ष्मणाजयरामासुनन्दाविपुलानन्दाजयावतीआर्मश्यामालक्ष्मीमतिसुप्रभाऐरादेवी—श्रीकांतामित्रसेनाप्रभावती सोमार्वलाशिवदेवीब्राह्मी प्रियकारिण्यश्चेति जिनमातृकाश्च

वः प्रीयन्ताम् २ ।। गोमुखमहायक्षत्रिमुखयक्षेश्वरतुम्बरुकुसुमवरनन्दिविजयअजितब्रह्म ईश्वरकुमारषण्मुख पातालकिन्नरकिम्पुरुषगरुडगन्धर्वमहेन्द्रकुबेरवरुणविद्युत्प्रभसर्वाण्हधरणेन्द्रमातङ्गनामदश्चेतिचतुर्विंशतियक्षाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। चक्रेश्वरीरोहिणीप्रज्ञप्तिवज्रशृंखला-पुरुषदत्तामनोवेगाकालीज्वालामालिनीमहाकालीमानवीगौरीगान्धारीवैरोटीअनन्तमतिमानसी—महामानसीजयाविजयाअपराजिताबहुरूपिणीचामुण्डीकुष्माण्डीपद्मावतीसिद्धायिन्यश्चेति चतु—र्विंशतिजिनशासनदेवताश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। कुलगिरिशिखरशेखरीभूतमहाह्रदादिसरोवरमध्यस्थितसहस्रदलकमलवासिन्योमानिन्यः सकलसुन्दरीवृन्द वन्दितपादकमलाश्च देव्यो वः प्रीयन्ताम् २ ।। यक्षवैश्वनरराक्षसनधृतपन्नगअसुर सुकुमारपितृविश्वमालिनी—चमरवैरोचनमहाविद्यमारविश्वेश्वरपिण्डासनाश्चेति पञ्चदशतिथिदेवताश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। हिट्ठिमहिट्ठिम हिट्ठिममज्झम हिट्ठिमोपरिम मज्झमहिट्ठिम मज्झम मज्झम मज्झ-मोपरिम उपरिमहिट्ठिम उपरिममज्झम उपरिमोपरिमाश्चेति नवग्रैवेयकवासिनोऽहमिन्द्रदेवाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। अर्च्चअर्च्चमालिनोवैरोचनसोमसोमरूपाङ्का स्फटिकादित्यादि नवानुदिशवासिनश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। विजयवैजयन्तजयन्तअपराजितसर्वार्थसिद्धिनामधेयपञ्चानुत्तरविमानविकल्पानेकविविधगुणसम्पूर्णाष्टगुणसंयुक्ताः सकलसिद्धसमहाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। सर्वकालमपि [+ देवदत्त नामधेयस्य | सम्पत्तिरस्तु । सिद्धिरस्तु । वृद्धिरस्तु । तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । शान्तिरस्तु । कान्तिरस्तु । कल्याणमस्तु । सम्पदस्तु । मनःसमाधिरस्तु । श्रेयोऽभिवृद्धिरस्तु । शाम्यन्तु घोराणि । शाम्यन्तु पापानि । पुण्यं वर्धताम् । धर्मो वर्धताम् । आयुर्वर्धताम् । श्रीर्वर्धताम् । कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु वः । ततो भूयो भूयःश्रेयसे ।। ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वस्त्यस्तु वः । स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा । ॐ पुण्याहं २ प्रीयन्ताम् २ । भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञः सर्वदर्शिनः सकलवीर्याः सकलसुखास्त्रिलोकप्रद्योत-नकरा जातिजरामरण विप्रमुक्ताः सर्वविदश्च ॐ श्रीह्री-धृतिकीर्तिबुद्धि लक्ष्म्यश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। ॐ वृष-भादिवर्धमानान्ताः शान्तिकराः सकलकर्मरि-पुकान्तार-दुर्गविषमेषु रक्षन्तु मे जिनेन्द्राः । आदित्यसोमाङ्गारक-बुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चर राहु केतुनामनवग्रहाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। तिथिकरण नक्षत्रवार मुहूर्तलग्नदेवाश्च इहान्यत्र ग्रामनगराधिदेवताश्च ते सर्वे गुरुभक्ता अक्षीणकोशकोष्ठगारा भवेयुर्दानतपोवीर्यधर्मानुष्ठानादि नित्यमेवास्तु । मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्र गुरुसुहृत्स्वजनसम्बधि बन्धुवर्गसहितस्यास्य यजमानस्य [+देवदत्त नाम धेयस्य] धनधान्यैश्वर्यद्युतिबलयशःकीर्तिबुद्धिवर्धनं भवतु सामोद-प्रमोदो भवतु । शान्तिर्भवतु कान्तिर्भवतु । तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । सिद्धिर्भवतु । वृद्धिर्भवतु । अविघ्नमस्तु । आरोग्यमस्तु । आयुष्यमस्तु । शुभकर्मास्तु । कर्मसिद्धिरस्तु । शास्त्रसमृद्धिरस्तु

इष्टसंपदस्तु। अरिष्टनिरसनमस्तु। धनधान्यसमृद्धिरस्तु। काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु। शाम्यन्तु पापानि, पुण्यं वर्धताम्। धर्मो वर्धताम्। श्रीर्वर्धताम्। आयुर्वर्धताम्। कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु वः। स्वस्ति भद्रं चास्तु नः। क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वस्त्यस्तु ते स्वस्त्यस्तु मेस्वाहा॥

ॐ नमो ऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थङ्कराय श्रीमद्रत्नत्रयालङ्कृताय दिव्य-तेजोमूर्तये नमः प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणपरिवेष्टिताय शुक्लध्यानपवित्राय सर्वज्ञाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यहिताय। अनन्तसंसारचक्रपरि-मर्दनाय। अनन्तज्ञानाय। अनन्तदर्शनाय। अनन्तवीर्याय। अनन्तसुखाय। सिद्धाय बुद्धाय। त्रैलोक्यवशंकराय। सत्यज्ञानाय। सत्यब्रह्मणे। धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय। उपसर्गविनाशनाय। घातिकर्मक्षयंकराय। अजराय। अमराय। अपवाय। [देव-दत्त नामधेयस्य] मृत्युं छिंदि २ भिंदि २॥ हन्तुकामं छिंदि २ भिंदि २। रतिकामं छिंदि २ भिंदि २॥ बलिकामं छिंदि २ भिंदि २॥ क्रोधं छिंदि २ भिंदि २॥ पापं छिंदि २ भिंदि २॥ वैरं छिंदि २ भिंदि २॥ वायुधारणं छिंदि २ भिंदि २॥ अग्निभयं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व शत्रुभयं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वोपसर्गं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व विघ्नं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व भयं छिंदि २ भिंदि॥ सर्व राज भयं छिंदि २ भिंदि॥ सर्व चोर भयं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व दुष्ट भयं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व सर्प भयं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व वृश्चिक भयं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व ग्रहभयं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व दोषं छिंदि २ भिंदि २। सर्व व्याधि छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व क्षाम डामरं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व परमंत्रं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वात्मघातं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व परघातं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व कुक्षि रोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व शूलरोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वाक्षिरोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व शिरोरोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व कुष्ट रोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व ज्वररोगं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व नरमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व गजमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वाश्वमारिं छिंदि २ भिंद २॥ सर्व गोमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व महिषमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्वाजमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व सस्यमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व धान्यमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व वृक्षमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व गुल्ममारिं छिंदि २ भिंदि। सर्व लतामारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व-पत्रमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व पुष्पमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व फलमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व राष्ट्रमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व देशमारिं छिंदि २ भिंदि २॥ सर्व विषमारिं छिंदि २ भिंदि २। सर्व क्रूररोगवेतालशाकिनीडाकिनीभयं छिंदि २ भिंदि २

सर्व वेदनीयं छिंदि २ भिंदि २ ।। सर्व मोहनीयं छिंदि २ भिंदि २ ।। सर्वापस्मारं छिंदि २ भिंदि २ ।। सर्व दुर्भगं छिंदि २ भिंदि २ ।।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र विक्रम तेजो बलशौर्य वीर्य वशं कुरु २ । सर्व जनानन्दं कुरु २ । सर्व जीवानन्दं कुरु । सर्व राजानन्दं कुरु २ । सर्व भव्यानन्दं कुरु २ । सर्व गोकुलानन्दं कुरु २ । सर्व ग्राम नगर खेट खर्वट मटम्ब पत्तन द्रोणमुख जनानन्दं कुरु २ । सर्व लोकं सर्व देशं सर्व सत्व वशं कुरु २ । सर्वानन्दं कुरु २ । हन २ दह २ पच २ पाचय २ कुट २ शीघ्रं २ । सर्व वशं मानय हूं फट् स्वाहा ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसन वर्जितं । अभयं क्षेम मारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते ।। श्री शांतिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव दृष्टिपुष्टिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्त्वभि वृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनं धान्यम् सदास्तु ।

॥ इति ॥

इस बृहत् शान्ति मंत्र का उच्चारण करते हुए मन्त्र साधक जिनेन्द्र प्रभु पर जल धारा अवश्य करें । तब मन्त्र साधन करने में किसी प्रकार का भय उत्पन्न नहीं होगा ।

पद्मावती आह्वाननमंत्र:

ॐ [illegible] भगवते [illegible] श्रीमद् [illegible] त्रैलोक्य [illegible], सुवर्ण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] समस्त-काशादिक चक्रवाल लीला निर्दलित रौद्र दारिद्रोपद्रवे शरणागत त्राणकारिणी, दैत्योपसर्ग निवारिणी भूत–प्रेत–पिशाच–यक्ष राक्षसाकाश जल, स्थल देवता दोष निर्णाशिनी मातृ मुग्दल चेटकोग्र ग्रहण शाकिनी योगिनी वृन्द वेताल रेवती पीड़ा प्रमर्दित परविद्या मन्त्र यन्त्रोच्छेदिनी पर सैन्यविध्वंसिनी स्थावर जंगम विष संहारिणीसिंह शार्दूलव्याघ्रोरग प्रमुख दुःटसत्व भयापहारिणि कास–श्वास, ज्वर भगन्दर श्लेष्मवातपित्त कंडूकामल क्षयो दुम्बर प्रसूति प्रमुख रोग विध्वंसिनी चोरानल जल राजग्रहविच्छेदिनी एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक शीतिश वातिक सान्निपातिक पैत्तिक ज्वरोच्चाटिनी त्रिभुवन जन मोहिनी भगवती

श्री पद्मावती महादेवी एहि एहि आगच्छ आगच्छ प्रसादं कुरु कुरु (वषट्) सर्व कर्म करी (वषट्) ।

इस आह्वानन् मन्त्र का स्मरण जब करे, जहाँ देवीजी को आकर्षण करना हो।

पद्मावती माला मन्त्र लघु

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय पद्मावती सहिताय धरणोरगेन्द्र नमस्कृताय सर्वोपद्रव विनाशनाय, परविद्याच्छेदनाय, परमन्त्र प्रणाशनाय सर्व दोष निर्दलनाय आकाशान् बंधय-२ पातालान् बंधय-२ देवान् बंधय-२ चाण्डाल ग्रहान् बंधय-२ भगवन् क्षेत्र पालग्राम बंधय-२ डाकिनी बंधय-२ लाकिनी बंधय-२ जाकिनी बंधय-२ ग्रहीत मुक्तकाम बंधय-२ दिव्य योगिनी बंधय-२ वज्र योगिनी बंधय-२ खेचरी बंधय-२ भूचरीम् बंधय-२ नागान् बंधय-२ वर्ण राक्षसान् बंधय-२ जोटिगान् बंधय-२ मुग्दल ग्रहान् बंधय-२ व्यन्तर ग्रहान् बंधय-२ आकाश देवी बंधय-२ जल देवी बंधय-२ स्थल देवी बंधय-२ गोत्र देवी बंधय-२ एकाहिक द्वयाहिक-त्र्याहिक चातुर्थिक नित्य ज्वर रात्रि ज्वर सर्व ज्वर मध्यान्ह ज्वर वेला ज्वर वातिक-पैतिक श्लेष्मिक-सान्निपातिक-सर्व दोष देव कृत-मानव कृत यंत्रकृत कार्मण उच्छेदय-२ विस्फोटय-२ सर्व दोषान् सर्व भूतान् हन-हन दह-दह पच-पच भस्मी कुरु-२ स्वाहा घे घे।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ह्म्ल्व्र्यूं क्ष्मां क्ष्मीं क्ष्मूं क्ष्मौं क्ष्मं: क्ष्म: कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन्नतुल बलवीर्य पराक्रम मम शाकिन्यादि भयोपशमनं कुरु २ आत्म-विद्यां रक्ष २ पर विद्यां छिदि २ भिंदि २ हूं फट् स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र का साढ़े बारह हजार विधि से जप करे, दसांस होम करे तो सर्व प्रकार के उपद्रव शांत होते हैं।

पद्मावती माला मंत्र: (वृहत्)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र सहिताय पद्मावती सहिताय सर्व लोक हृदयानन्द कारिणि भृंगी देवि सर्व सिद्धि विद्या विधायिनि कालिका सर्व विद्या मन्त्र यन्त्र मुद्रा स्फोटिनिकरालि सर्व पर द्रव्ययोग चूर्ण मथिनि सर्वविष प्रमर्दिनि देवि। अजितायाः स्वकृत विद्या मंत्र तंत्र योग चूर्ण रक्षिणि जृम्भे पर सैन्य मर्दिनि मोमोदानन्द दायिनि सर्व रोग नाशिनि सकल त्रिभुवानन्द कारिणि भृंगी देवि सर्वसिद्ध विद्या विधायिनि महामोहिनी त्रैलोक्य संहार कारिणि

च ५ (चि०) ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वं ग्रह निवारिणि फट् २ कम्प २ शीघ्रं चालय २ बाहुं चालय २ गात्रं चालय २ पादं चालय २ सर्वाङ्गं चालय २ लोलय २ धुनु २ कम्प २ कम्पय २ सर्व दुष्टान विनाशय २ सर्वं रोगान् विनाशय २ जये, विजये, अजिते, अपराजिते, जम्भे मोहे स्तम्भे,स्तम्भिनि,अजिते ह्रीं २ हन २ दह २ पच २ पाचय २ चल २ चालय २ आकर्षय २ आकम्प २ विकम्पय २ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः हूं फट् फट् फट् निग्रह ताडय २ क्ष्म्ल्व्र्यूं स्रां स्रीं ह्रूं क्रौं क्षं क्षौं क्षः क्षः हः २ सः २ धः २ सं २ भ्म्ल्व्र्यूं हूं २ धर २ कर २ हूं फट् फट् फट् ॐ शंख मुद्रया धर २ म्म्ल्व्र्यूं पुर हूं फट् कठोर मुद्रया मारय २ ग्राहय २ क्ष्म्ल्व्र्यूं हर हर स्वस्तिक मुद्राताडय २। र्म्ल्व्र्यूं पर २ प्रज्वल २ प्रज्वालय २ धग २ धूमान्धकारिणि रां रां प्रां प्रां क्लीं हः २ वः २ आं नंद्यावर्त मुद्रया त्रासय २। क्ष्म्ल्व्र्यूं शंख चक्र मुद्रया छिंदि २ भिंदि २ म्म्ल्व्र्यूं गः त्रिशूल मुद्रया छेदय२ भेदय २ छ्म्ल्व्र्यूं ध्रः चन्द्र मुद्रया नाशय २ क्ष्म्ल्व्र्यूं मुशल मुद्रया ताडय २ पर विद्यां छेदय २ पर मन्त्र भेदय २ छ्म्ल्व्र्यूं धम २ बन्धय २ भेदय २ हलमुद्रया पः २ वः २ यं कुरु २ व्म्ल्व्र्यूं व्रां व्रीं व्रूं व्रौंव्रः समूद्रे मज्जय २ घ्म्ल्व्र्यूं छ्रां छ्रीं छ्रौं छ्रः अंत्राणि छेदय २ पर सैन्यमुच्चाटय २ पर रक्षां क्षः क्षः क्षः हूं २ फट् फट् पर सैन्य विध्वंसय २ मारय २ दारय २ विदारय २ गति स्तम्भय २ भ्म्ल्व्र्यूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः श्रवय २ श्रावय २। ट्म्ल्व्र्यूं यः प्रेषय २ पं छेदय २ द्वेषय २ विद्वेषय २ स्म्ल्व्र्यूं स्रां स्रीं स्रूं स्रौं स्रः श्रावय २। मम रक्षां रक्ष २ पर मन्त्रं क्षोभय २ छेद २ छेदय २ भेद २ भेदय २ सर्व यन्त्र स्फोटय २ मं मं म्म्ल्व्र्यूं म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जृम्भय २ स्तम्भय २ दुःखय २ दुःखाय २ ख्म्ल्व्र्यूं ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः हाः ग्रीवां भंजय २ मोहय २ त्म्ल्व्र्यूं त्रां त्रीं त्रूं त्रौं त्रः त्रासय २ नाशय २ क्षोभय २ सर्वाङ्ग स्तम्भय २ चल २ चालय २ भ्रम २ भ्रामय २ धूनय २ कम्पय २ आकम्पय २ थ्म्ल्व्र्यूं स्तम्भय २ गमनं स्तम्भय २ सर्वभूतं प्रमर्दय २ सर्व दिशा बंधय २ सर्व विघ्नान् छेदय 2 निकृन्तय २ सर्व दुष्टान् निग्राहय २ सर्व यंत्राणि स्फोटय २ सर्व शृंखलान् त्रोटय २ मोटय २ सर्व दुष्टान् आकर्षय ह्म्ल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः शान्ति कुरु २ तुष्टि कुरु २ पुष्टि कुरु २ स्वस्ति कुरु २ ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रौं ह्रः पद्मावति आगच्छ २ सर्व भयात् माम रक्ष २ सर्व सिद्धि कुरु २ सर्व रोगं नाशय २। किन्नर किं पुरुष गरूड महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच वेताल रेवती दुर्गा चण्डी कूष्माण्डिनी डाकिनी बन्धं सारय २ सर्व शाकिनी मर्दय २ सर्व योगिनी गण चूर्णय २ नृत्य २ गाय २ कल २ किलि २ हिलि २ मिलि २ सुलु २ मुलु २ कुलु २ कुरु २ अस्माकं वरदेः पद्मावती हन २ दह २ पच २ सुदर्शन चक्रेण छिंदि २ ह्रीं २ क्लीं ग्लीं ग्लुं ग्लुं ह्रां ह्रीं श्रूं ह्रूं भ्रूं स्रूं स्रं ह्रूं श्रीं प्रीं श्रां श्रीं त्रां त्रीं ह्रां ह्रीं प्रां प्रीं प्रूं प्रः पद्मावती धरेणन्द्र माज्ञापयति स्वाहा।

यह पद्मावती माला मन्त्र पढ़ने मात्र से सिद्ध होता है नित्य ही दिन मे त्रिकाल पढ़े। सर्व कार्य की सिद्धि होती है, भूत प्रेतादि व्याधियां नष्ट होती हैं।

'श्री ज्वालामालिनी देवी माला मन्त्र:'

ॐ नमो भगवते चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय शशांक शंख गोक्षीर हार नीहार विमल धवल
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] चतुस्त्रिंशदतिशय सहिताय [illegible]
प्रविष्टाय अनन्त ज्ञानाय अनन्त दर्शनाय अनन्तवीर्याय अनन्त सुखाय सर्वज्ञाय [illegible]
[illegible] स्वयंभुवे [illegible] अच्युताय [illegible]
[illegible] निःशेषभाषा प्रतिपाल
धरणेन्द्र चक्रवर्त्यादि शतेन्द्र वंदित पादार विंदाय पंच कल्याणाष्ट महा प्रातिहार्यो
कुलाय वज्रवृषभनाराच संहनन चरम दिव्य देहाय देवाधिदेवाय परमेश्वराय तत्प
निवेशिनि देविशासन देवते त्रिभुवन जन संक्षोभिणी त्रैलोक्य संहार कारिणि स्थावर
विषम विषसंहार कारिणि सर्वाभिचार कर्मापहारिणि पर विद्या छेदिनि पर मंत्र प्रण
महानाग कुलोच्चाटिनि कालदंष्ट्र मृतकोत्थापिनि सर्व रोगापनोदिनी ब्रह्मा विष्णु
दित्य ग्रह नक्षत्र तारा लोकोत्पाद ...... भय पीडा प्रमर्दिनी त्रैलोक्य महिते भव्यल
विश्वलोक वशंकरि महाभैरवि भैरव रूपधारिणि भीमे भीम रूपधारिणि महारौद्रे
सिद्धे सिद्ध रूपधारिणि प्रसिद्ध सिद्ध विद्याधर यक्ष राक्षस गरुड़ गंधर्व किन्नर
दैत्योरगेन्द्रामर पूजिते ज्वाला माला कराले दत्तदिगन्तराले महामहिष वा
चक्र झष पाश शर शरासन फलवरद प्रदान विराजमान षोडशार्द्ध भुजे खेटक
त्रैलोक्याकृत्रिम चैत्यालय निवासिनि सर्व सत्वानुकम्पनि रत्नत्रय महानिधि स
चार्वाक मीमांसक दिगम्बरादि पूजिते विजयवर प्रदायिनि भव्यजन संरक्षिणि
प्रमर्दिनि कमल श्री गृहीत गर्वावलिप्त ब्रह्म राक्षस ग्रहापहारिणि शिवकोटि महारा
भीम लिंगोत्पाटन पटु प्रलापिनि समस्त ग्रहाकर्षिणि (ग्रहानुबन्धिनि ग्रहानुछेदिनि
मुखि) नगर निवासिनि पर्वत वासिनि स्वयंभूरमण वासिनि वज्र वेदिकाधिष्ठित
वासिनि मणिमय सूक्ष्म घंटनाद किंचिद्रणित नूपुर युक्त पादार विन्दे वज्र वैडू

हरिन्मणि मयूरवमाला मण्डित हेम किंकिणि झणत्कार विराजित कनक ऋजुसूत्र भूषित नितम्बिनि वारद नीरद निर्मलायमान सूक्ष्म दुकूल परीत दिव्य तनुमध्ये संध्यापरागारूण मेघ समान कौसुम्भ वस्त्र धारिणि बालार्क रूक् सन्निभायमान तपनीय वसनाच्छादिते इन्द्र चन्द्रकादि मौक्तिकाहार विराजित स्तन मण्डले तारा समूह परित्तोत्तमांगे यमराज लुलायमान महिषासुर मर्दन दक्षभूत महामहिष वाहिनि ताराधर तारे नीहार पटीर पयः पूर कर्पूर शुभ्रायमान विमल धवल गात्रे भयकाल रूद्र रौद्रावलोकित भाल नेत्रानल विस्फुलिंग समूह सन्निभ ज्वालावेष्टित दिव्य देहिनि कुल दैव निर्मेदिनि कृत सहस्र आरायुक्त महा प्रभा मण्डल मण्डित कृपाणि भ्राज दोर्दण्डे देवि ज्वालामालिनि अत्र एहि २ २ पिण्ड रूपे एहि २ नव तत्त्व देहिनि महामहित मेखला कलित प्रतापे एहि २ संसार प्रमर्दिनि एहि २ महामहिषवाहने एहि २ कटक कटि सूत्र कुण्डलाभरण भूषिते एहि २ घनस्तनि किंकिणि नूपुरनादे एहि २ महामहित मेखला सूत्रे एहि २ गरूड गंधर्व देवासुर समिति पूजित पादपंकजे एहि २ भव्यजन संरक्षिणि एहि २ महादुष्ट प्रमर्दिनि एहि २ मम ग्रहाकर्षिणि एहि २ ग्रहानुबन्धिनि एहि २ ग्रहानुच्छेदिनि एहि २ ग्रहकाल कालामुखि एहि २ ग्रहोच्चाटिनि एहि २ ग्रह मारिणि एहि २ मोहिनि एहि २ स्तम्भिनि एहि २ समुद्रधारिणि एहि २ धुनु २ कम्प २ कम्पावय २ मण्डल मध्ये प्रवेशय २ स्तम्भ २ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः आह्वाननं गृण्ह २ जलं गृण्ह २ गंध गृण्ह २ अक्षतं गृण्ह २ पुष्पं गृण्ह २ चरूं गृण्ह २ दीपं गृण्ह २ धूपं गृण्ण २ फलं गृण्ह २ आवेशं गृण्ह २ ॐ ह्म्ल्व्र्यूं महादेवि ज्वालामालिनि ह्लीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः हा देव ग्रहान् आकर्षय २ ब्रह्मा विष्णु रूद्रेन्द्रादित्य ग्रहान्नाकर्षय २ नाग ग्रहान्नाकर्षय २ यक्ष ग्रहान्नाकर्षय २ गंधर्व ग्रहान्नाकर्षय २ ब्रह्मराक्षस ग्रहान्नाकर्षय २ भूत ग्रहन्नाकर्षय २ व्यन्तर ग्रहान्नाकर्षय २ सर्व दुष्ट ग्रहान्नाकर्षय २ शतकोटिदेवतानाकर्षय २ सहस्रकोटि पिशाच देवतानाकर्षय २ कालराक्षस ग्रहानाकर्षय २ प्रेतासिनो ग्रहानाकर्षय २ वैतालो ग्रहानाकर्षय २ क्षेत्रवासी ग्रहानाकर्षय २ हन्तुकाम ग्रहानाकर्षय २ अपस्मार ग्रहानाकर्षय २ क्षेत्रपाल ग्रहानाकर्षय २ भैरव ग्रहानाकर्षय २ ग्रामादि देवतानाकर्षय २ गृहादि देवतानाकर्षय २ कुलादिदेवतानाकर्षय २ चण्डिकादि देवतानाकर्षय २ शाकिनि ग्रहान्-आकर्षय २ डाकिनी ग्रहानाकर्षय २ सर्व योगिनी ग्रहानाकर्षय २ रणभूत ग्रहानाकर्षय रज्जूनिग्रहानाकर्षय २ जलग्रहानाकर्षय २ अग्नि ग्रहानाकर्षय २ मूक ग्रहानाकर्षय २ मूर्ख-ग्रहानाकर्षय २ छल ग्रहानाकर्षय २ चोरचिताग्रहानाकर्षय २ भूत ग्रहानाकर्षय २ शक्ति-ग्रहानाकर्षय २ चांडाली ग्रहानाकर्षय २ मातंगग्रहानाकर्षय २ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रभव भवान्तर स्नेह वैर बंध सर्व दुष्ट ग्रहानाकर्षय २ कम्प २ मृत्योरक्षय २ ज्वरं भक्षय २

अमलविषंहर २ कुमारीरक्ष २ योगिनीभक्षय २ शाकिनी मर्दय २ डाकिनी मर्दय २ पूतनीं कम्पय २ राक्षसीं छेदय २ कोलिकामुद्रा दर्शय २ सर्व कार्यकारिणी सर्व ज्वर महिनिसर्व शिक्षांजन प्रतिपादिनि एहि २ भगवति ज्वालामालिनि एकाहिकं द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिकं वात्तिकं श्लेष्मिकं पैत्तिकं २ श्लेष्मिकं सान्निपातिक (वेला) ज्वरादिकं पात्रे प्रवेशय २ ज्वलि ज्वलि ज्वालावय २ मुंच २ मुंचावय २ शिरं मुंच २ मुखं मुंच २ ललाटं मुंच २ कंठं मुंच २ बाहू मुंच २ हृदयं मुंच २ उदरं मुंच २ कटिं मुंच २ जानुं मुंच २ पादं मुंच २ आछेदय २ क्रों भेदय २ ह्रीं मर्दय २ क्षीं बोधय २ ह्म्ल्व्र्यूं घूर्मय २ र र र र र रां रां संघं पालय २ पर मंत्रान् स्फोटय २ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः घे घे फट् स्वाहा। अस्मिन् दलमध्ये प्रवेशय २ पात्रे गृह्ण २ आवेशय २ ग्रासय २ पूरय २ खण्ड २ कट कट कंपावय २ ग्राह्य २ शीर्षं चालय २ भालं चालय २ नेत्रं चालय २ वदनं चालय २ कण्ठं चालय २ बाहू चालय २ हस्तं चालय २ हृदयं चालय २ गात्रं चालय २ सर्वांग चालय २ लोलय २ कंप २ कम्पावय २ शीघ्रं अवतर २ गृण्ह २ ग्राहय २ अचेलय २

प्रलय धग धगित वदने दैव ग्रहान् दह २ नाग ग्रहान् दह २ यक्ष ग्रहान् द
दह २ ब्रह्म राक्षस ग्रहान् दह २ सर्व भूत ग्रहान् दह २ व्यन्तर ग्रहान् दह
दह २ शतकोटि देवतान् दह २ सहस्र कोटि पिशाच राजान् दह २ घे घे स
दहनाक्षि प्रलय धग धगित मुखि ॐ ज्वालामालिनि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः
हृदयं हूं दह दह पच पच छिंदि २ भिंदि २ हः हः हाः हाः हे हे हूं फट् २
ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः हाः सर्व दु
हूं फट् २ घे २। ॐ म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं त्रां
सर्व दुष्ट ग्रहाणां वज्रमय सूच्या अक्षिणी स्फोटय २ अदर्शय २ हूं फट् २ घे
ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ह्रां भ्रां क्रों क्षीं यां यीं यूं यौं यः
प्रेषय २ घे २ हूं जः जः जः ॐ म्ल्व्र्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं
घ्रौं घ्रः हाः घं घं खं खं खड्गं रावण सद्विद्यया घातय २ सच्चन्द्रहासः शस्त्रे
जठरं भेदय २ भं भं खं खं हं हं हूं २ फट् २ घे २ ॐ म्ल्व्र्यूं ज्वाला
ब्लूं द्रां द्रीं झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः हाः सर्व दुष्ट ग्रहान् वज्रपाशेन बंधय २

हूं फट् २ घे २। ॐ हम्ल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं खां खीं खूं खौं खः ह्राः सर्व दुष्ट ग्रहाणां अंगभंग कुरु २ ग्रीवां भंजय २ हूं फट् २ घे २। ॐ छ्म्ल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं छां छीं छूं छौं छः ह्राः सर्व दुष्ट ग्रहाणां अन्त्राणि छेदय २।

हूं फट् फट् घे घे। ॐ ठ्म्ल्व्यूं ज्वालामालिनी ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ठां ठीं ठूं ठौं ठः ह्राः सर्व दुष्ट ग्रहान् विद्युत्पाषाण अस्त्रेण ताडय २ भुम्यां पातय २ फट् फट् घे घे। ॐ भ्म्ल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः ह्राः सर्वदुष्ट ग्रहान समुद्रे मज्जय २ हूं फट् फट् घे घे। ॐ ड्म्ल्व्यूं ज्वालामालिनि ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ड्रां ड्रीं ड्रूं ड्रौं ड्रः ह्राः सर्व डाकिनीं मर्दय २ हूं फट् फट् घे घे क्ष्रौं क्ष्रः सर्व शाकिनि मर्दय २ हूं फट् फट् घे घे सर्व योगिनिस्तर्जय तर्जय सर्व शत्रून् ग्रासय २ खं खं खं खं खं खं खादय खादय सं तं वं मं ह्रां भ्रं सर्व ग्रहान् उत्थापय २ नट नट नृत्य नृत्य स्वाहा य य सर्व दैत्यान् ग्रस ग्रस विध्वंसय २ दह दह पच पच पाचय २ धर २ धम २ घुरु २ पुरू २ फुरू २ सर्वोपद्रव महाभयं स्तभय २ भ्रम् २ हं हं दर दर पर २ खर २ खड्गरावण सद्विद्यया घातय २ पातय २ चन्द्रहास शस्त्रेण छेदय २ भेदय २ भं भं हं हं खं खं घं घं दं दं फट् फट् घे घे ह्रां ह्रां आं क्रौं क्ष्वीं क्षौं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं क्रौं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं ज्वालामालिन्या ज्ञापयति स्वाहा॥ ग्रयं प ' ति संसिद्धि ....।

॥ इति ॥

इस ज्वालामालिनीपठति सिद्ध माला मंत्र को ७२ दिन तक दीप धूप रखकर नित्य ही १ बार पढ़ने मात्र से सिद्ध हो जायगा, फिर प्रत्येक व्याधि में पानी मंत्रित करके देने से अथवा भाडा देने से सर्व व्याधि दूर हो, और भूत, प्रेत, शाकिनि आदि तथा परविद्या का प्रभाव नष्ट होता है।

सरस्वती मन्त्र:

मन्त्र :—ॐ अर्हन् मुख कमल वासिनी पापात्म क्षयंकरी श्रुत ज्ञाना ज्वाला सहस्त्र ज्वलने सरस्वती मत्पापं हन २ दह २ पच २ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीर वर धवले अमृत संभवे (पल्लवे) अमृतं श्रावय २ वं वं वं वं हुं हुं फट् स्वाहा।

विधि :—केशर घिसकर गोली ३६० बनाकर दीपोत्सव के दिन अथवा शरद पूर्णिमा के दिन अर्हन्त प्रतिमा के सम्मुख साधन करे। १००० जप करे। उपरोक्त से १ गोली को

२१ बार मंत्रित करके प्रातः उस गोली को खावे, इस प्रकार ३६० दिन में ३६० गोली खावे तो महान विद्यावान हो। किन्तु खट्टा खारा नहीं खावे। प्रतिदिन स्मरण करने से बुद्धि का वैभव बढ़ता है।

द्वितीय विधि :—इस मंत्र को कांसी की थाली में लिखे सुगंधित द्रव्यों से, फिर सुगन्धित पुष्पों से १००८ बार मंत्र का जाप करे, शरद पूर्णिमा के दिन मेवा की खीर बनाकर रखे। दूसरे दिन वही मेवा की खीर खावे और कुछ नहीं खावे, तो सरस्वती प्रसन्न रहे। बुद्धि तक्षण होती है। यह प्रयोग शरद पूर्णिमा के दिन करें। जप सुगन्धित पुष्पों से करे।

। शांतिमन्त्र लघू ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्री शांति नाथाय जगत् शांति कराय सर्वोपद्रवशांति कुरु २ ह्रीं नमः स्वाहा।

विधि :—इस मंत्र का जाति पुष्प से नित्य ही १०८ बार जप करने से सर्व मनो वांछित प्राप्त होता है।

शांति मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमोऽर्हते भगवते श्री शांति नाथाय सकल विघ्न हराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अमुकस्य सर्वोपद्रव शांति लक्ष्मी लाभं च कुरु २ नमः (स्वाहा)

विधि :—इस मंत्र का सोलह दिन में १६००० जप करके दशांस होम करे, शुक्ल पक्ष के पखवाडे में १६ दिन का जो पखवाडा हो, उसमें प्रत्येक दिन १००० जप सुगन्धित पुष्पों से करे तो सर्व कार्य की सिद्धि हो। उपसर्ग, उपद्रव, सर्व दूर हो, सर्व शांति होती है। लक्ष्मी लाभ, यश लाभ होता है।

नवग्रह जाप्य

१ रवि महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थंकराय कुसुलयक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आं क्रो ह्रीं ह्रः आदित्यमहाग्रह (मम कुटुंबवर्गस्य) सर्व

दुष्टग्रह रोग कष्टनिवारणं कुरु कुरु सर्वशांति कुरु कुरु सर्व समृद्धि कुरु कुरु इष्ट संपदा कुरु कुरु अनिष्ट निरसनं कुरु कुरु धनधान्य समृद्धि कुरु कुरु काममांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूं फट् ।

इस मंत्र का जप ७००० हजार करे, तो रवि गृह शांत होते हैं।

२ सोम महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चंद्रप्रभतीर्थंकराय विजय यक्ष ज्वाला-मालिनी यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः सोममहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

३. मंगल महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्यतीर्थंकराय षण्मुखयक्ष गांधारि सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः मंगलकुज महाग्रह मम-दुष्टग्रह रो निवारणं सर्वशांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

इस मंत्र का जप १०००० करे।

४. बुध महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्लीतीर्थंकराय कुबारेयक्ष अपरा-ता यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः बुधमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

इस मन्त्र का जाप १४००० करे।

५. गुरू महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थंकराय मातंगयक्ष सि-द्धायिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रों ह्रीं ह्रः गुरुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट नि-वारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

ग्रह की शांति के लिये इस मन्त्र का जप १९००० हजार करे।

६. शुक्र महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थंकराय अजितयक्ष महाकालीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः शुक्रमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्वं शांति च कुरू कुरू हूं फट् ॥

इस मन्त्र का जप १६००० हजार करे।

७. शनि महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनि सुव्रततीर्थंकराय वरुणयक्ष बहुरुपिणीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः शनिमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारण सर्वं शांति च कुरू कुरू हूं फट् ॥

इस मन्त्र का जप २३००० हजार करे।

८. राहु महाग्रह मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थंकराय सर्वाण्हयक्ष कुष्मांडीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः राहुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट् ॥

इस मन्त्र का १८००० जप करे।

९. केतुमहा ग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय धरणेंद्रयक्ष पद्मावतीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु फट् ॥

इस मन्त्र का ७००० जप करे।

नोट :—प्रत्येक ग्रह के जितने जप लिखे हों उतना जप करके नवग्रह विधान करे। दशमांस होम करे तो ग्रह की शान्ति होती है।

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष कल्मषाय दिव्य तेजोमूर्तये नमः

श्री शांतिनाथाय शांति कराय सर्व पापप्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्व रोगाय मृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षाम डामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा मम सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि :—इस शान्ति मन्त्र को शुक्ल पक्ष के सोलह दिन के पखवाड़े में प्रत्येक दिन १००० जप करे। सोलह दिन में सोलह हजार जप दीप, धूप विधि से करे, फिर शान्ति विधान कराकर, १६००० जप का दशांस होम करे, तो सर्व प्रकार के रोग, सर्व प्रकार के डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेतादि बाधा दूर होती है। लक्ष्मी लाभ होता है, मनवांछित सिद्धि प्राप्त होती है।

वर्द्धमान मन्त्र

ॐ णमो भय वदो वड्ढ माणस्स रिसहस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जये वा विवादे वा थंभणेवा रणांगणेवा रायं गणेवा मोहेण वा सव्व जीवसत्ताणं अपराजिदोमम् भवदु रक्ख २ स्वाहा ।

विधि :—इस वर्द्धमान महाविद्या को उपवास करके एक हजार जप सुगन्धित पुष्पों से जप करे, दशमांस होम करे, तो ये मन्त्र सिद्ध हो जाता है। फिर कहीं से भय आने वाला हो अथवा आ गया हो, तो सरसों हाथ में लेकर सर्व दिशाओं में फेंक देने से आगत उपद्रव, भय, परकृत विद्याएँ सर्व स्तम्भित हो जायेंगे। घर में स्मरण मात्र से ही शांति हो जायगी। विशेष फल गुरु गम्य है।

जिनेन्द्र पंच कल्याणक के समय प्रतिमा के कान में देने वाला सूर्य मन्त्र

ॐ ह्रीं क्ष्रूं ह्रूं स्रुं सुः क्रौं ह्रीं ऐं अर्हं नमः सर्व अर्हन्त गुणभागी भवतु स्वाहा ।

विधि :—प्रतिष्ठाचार्य इस मन्त्र को २१ बार कान में पढ़े।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रौं श्रीं श्रीं जय जय द्रां कलि द्रा क्ष सां मृंजय जिनेभ्योः ॐ भवतु स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को दर्पण सामने रखकर ५ बार कान में पढ़े।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रातर गाम्राय चतुरशिति गुण गणधर चरणाय अष्ठचत्वारिंशत गणधर वलाय षट्त्रिंशत गुण संयुक्ताय णमो आइरियाणं हं हं स्थिरं तिष्ठ २ ठः ठः चिरकालं नंदतु यंत्र गुण तंत्र गुणं वेदयुतं अनंत कालं वर्द्धयन्तु धर्माचार्या हुं कं कुरु २ स्वाहा, स्वाधा ।

विधि :—इस मन्त्र को भी प्रतिमा के सामने सात बार पढ़े ।

प्रत्येक शासन देव सूर्य मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां श्रीं वं सर्वज्ञाय प्रचण्डाय पराक्रमाय वटुक भैरवाय अमुक क्षेत्रपालाय अत्र अवतर २ तिष्ठ २ सर्व जीवानां रक्ष २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से जिस क्षेत्रपाल की प्रतिष्ठा करनी हो, उस क्षेत्रपाल की मूर्ति के कान में २७ बार पढ़े ।

पद्मावती प्रतिष्ठावायक्षिणी प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं श्री पद्मावती देवी (स्थै) अत्र अवतर २ तिष्ठ २ सर्व जीवानां रक्ष २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—कोई भी देवी की प्रतिष्ठा करनी हो तो इस मन्त्र को जिसकी प्राण प्रतिष्ठा होनी है, उस मूर्ति के दोनों कानों में २७—२७ बार पढ़ना चाहिये ।

[illegible] शासन [illegible] प्रतिष्ठा सूर्य मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं श्री धरणेन्द्र देवताये अत्र अवतर २ अत्र तिष्ठ २ सर्व जीवानां रक्ष २ हूं फट् स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को यक्ष मूर्ति के कान में २७—२७ बार कान में पढ़ने से प्रतिष्ठा हो जायगी ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वद् २ वाग्वादिनीभ्योनमः ।

विधि :—कुमकुम कपूर के साथ सूर्य ग्रहण में जिह्वाग्रे लिखितस्य नरस्य वाग्वादिनी संतुष्टा भवति ।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं वद् २ वाग्वादिनी भगवति सरस्वती ह्रीं नमः ।

विधि :—१२००० जप इस मन्त्र का करके दशांश होम करे, सूर्य या चन्द्र ग्रहण में बेला, वच, मालकांगणी, इन चीजों को १०८ बार मन्त्रीत करके जिस बालक को खिलावे उसकी बुद्धि का विकास होता है।

॥ ० ॥

गणधर वलय से सम्बन्धित

ऋद्धि मंत्र व फल

ॐ णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं अर्हं असि आउ सा ह्रौं २ स्वाहा। एतत् सर्व प्रयोजनीयम्, विसूचिकाशान्ति भवति ॥ १ ॥

ॐ णमो अरहंताणं णमो जिणाणं ह्रां पुष्प १०८ जपेत्, ज्वरनाशनम् ॥ २ ॥

णमो परमोहिजिणाणं ह्रां शिरोरोगनाशनम् ॥ ३ ॥

णमो सव्वोहिजिणाणं ह्रां अक्षिरोगनाशनम् ॥ ४ ॥

णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगं नाशयति ॥ ५ ॥

णमो कुट्ठबुद्धीणं शूल-गुल्म-उदररोगं नाशयति ॥ ६ ॥

णमो बीजबुद्धीणं श्वास-हिक्कादि (हीचकी) नाशयति ॥ ७ ॥

णमो पदाणुसारीणं परैः सह विरोधं कलहं नाशयति ॥ ८ ॥

णमो संभिन्नसोयाणं कासं नाशयति ॥ ९ ॥

णमो पत्तेयबुद्धाणं अतिवादिविद्याच्छेदनम् ॥ १० ॥

णमो सयंबुद्धाणं कवित्वं पाण्डित्यं भवति ॥ ११ ॥

णमो बोहिबुद्धाणं अन्यतरगृहीते श्रुते एक संधो भवति ५२ दिनं यावज्जपेत् ॥ १२ ॥

णमो उज्जुमईणं शान्तिकं भवति, दिन २४ यावज्जपेत् ॥ १३ ॥

णमो विउलमईणं बहुश्रुतत्वम्, लवणाम्लवर्जं भोजनम् ॥ १४ ॥

णमो दसपुव्वीणं सर्वाङ्गवेदी भवति ।। १५ ।।

णमो चऊदसपुव्वीणं जापः १०८ स्वसमय-परसमयवेदी ७ भवति ।।१६।।

णमो अट्ठंगनिमित्त कुसलाणं जीवित-मरणादिकं जानाति ।। १७ ।।

णमो विउव्वणरिद्धिपत्ताणं काम्यवस्तूनि प्राप्नोति, दिन २८ जापः ।। १८ ।।

णमो विज्जाहराणं उद्देशप्रदेशमात्रं खे गच्छति ।। १९ ।।

णमो चारणाणं चिन्तामुष्टिपदार्थं स्वरूपं जानाति ।। २० ।।

णमो पण्हसमणाणं आयुर्वसानं जानाति ।। २१ ।।

णमो आगासगामीणं अन्तरिक्षे योजनमात्रं गमयति ।। २२ ।।

णमो आसीविषा (सा) णं विद्वेषणं पार्श्वष्टकमंत्रक्रमेण ।। २३ ।।

णमो दिट्ठीविसाणं स्थावर जङ्गम-कृत्रिमविषं नाशयति ।। २४ ।।

णमो उग्गतवाणं वाचास्तंभनम् ।। २५ ।।

णमो दित्ततवाणं रविवाराद् दिनत्रयं मध्याह्ने जापः, सेना-स्तम्भ ।। २६ ।।

णमो तत्ततवाणं जलं परिजप्य पिबेत् अग्निस्तम्भं ।। २७ ।।

णमो महातवाणं जलस्तम्भनम् ।। २८ ।।

णमो घोरतवाणं विष-सर्प-मुखरोगादिनाशः ।। २९ ।।

णमो घोरगुणाणं लूतागर्दपिटकादि नाशयति ।। ३० ।।

णमो घोरगुणपरक्कमाणं दुष्टमृगादीनां भयं नाशयति ।। ३१ ।।

णमो घोरगुण बंभचारीणं ब्रह्मराक्षसादि नाशयति ।। ३२ ।।

णमो आमो सहिपत्ताणं जन्मान्तरवैरेण पराभवं न करोति ।। ३३ ।।

णमो खेलोसहिपत्ताणं सर्वानपमृत्यूनपहरति ।। ३४ ।।

णमो जल्लोसहिपत्ताणं अपस्मारमवलेपं चित्तविप्लवं नाशयति ।। ३५ ।।

णमो विप्पोसहिपत्ताणं गजमारी नाशयति ।। ३६ ।।

'णमो सव्वोसहियत्ताणं' मनुष्यमरकं नाशयति ॥ ३७ ॥

'णमो मणबलीणं' अश्वमारी शाम्यति ॥ ३८ ॥

'णमो वचोबलीणं' अजमारी शाम्यति ॥ ३९ ॥

'णमो कायबलीणं' गोमारी शाम्यति ॥ ४० ॥

'णमो अमयसवीणं' समस्तमुपसर्गं शाम्यति ॥ ४१ ॥

'णमो सप्पिसवीणं' एकाह्निक-द्वयाह्निक-त्र्याह्निक चातुर्थिक-पाक्षिक मासिक-सांवत्सरिक-वातादिसमस्तज्वरं नाशयति ॥ ४२ ॥

णमो खीरसवीणं गोक्षीरं परिजप्यपिबेत् क्रिम २४ क्षयं कांस गण्डमाला-दिकं च नाशयति ॥ ४३ ॥

'णमो अक्खीणमहाणसाणं' आकर्षणं ॥ ४४ ॥

'णमोलोए सव्वसिद्धायदणाणं' राजपुरूषादिवश्यं ॥ ४५ ॥

ॐ नमो भगवदो महदि महावीर वड्ढमाणबुद्धिरिसीणं चेतः समाधिम व स्थायां प्राप्नोति ॥ ४६ ॥

ॐ णमो जिणे तरे उत्तरे उत्तिण्णभवण्णवे सिद्धे २ स्वाहा ।

पूर्वसेवा—करजापः ११००० ततः । १००८ अथवा जघन्यतः १०८ उभयं गरूडाक्षतैजपिः इति सिद्धा भवति । ततो महति संघादि कार्ये प्रयुज्जते अनागाढे न प्रयोज्यम् । रौद्रकर्मणि 'ॐ णमो जिणे चक्कवाले' इति विशेष । शेषं समानमेव ।

प्रयोगश्चेत्यम्...

३ तथा स्वकार्येऽध्यावौ जलवीः स्थूये जापः शतत्रयंत्तन प्रतीक्षते । ततः स्वोत्सङ्गाच्छ्वेता मार्जारिका निर्गच्छति । सा च गच्छन्ती धीरैरनुगम्यते । यत्र झाटादौ गत्वान्तर्धत्ते तत्र एकहस्ते खनिते जलं भवति ।

अवृष्टयादावागाढे कार्ये गूहलिकां कृत्वा कांस्यं चतुरस्त्रं चतुर्द्वारप्राकारं

कृत्वा मध्ये चंदन हिवकक्कं कृत्वा गरूडाक्षतैर्जातिक लिकाभिर्वा १०८ जाप दिन ६ न प्रतीक्षते कार्यं सिद्धयति ।

अथ अप्रस्तुता अपि मन्त्रा नान्दीपदगर्भत्वात् प्रकाश्यन्ते केचित—नमो 'अरहन्ताणं इत्यादि नमो लोए सव्वसाहूण' पर्यन्तमादौ पठयते ॐ णमो ।

जिणाणं २ णमो ओहिजिणाणं ३ णमो परमोहिजिणाणं ४ णमो सव्वोहिजिणाणं ५ णमो अणंतोहिजिणाणं ६ [illegible]

[illegible] १० णमो [illegible] ११ णमो पत्तेयबुद्धाणं १२ णमो उज्जुमईणं १३ णमो विउलमईणं १४ णमो दसपुव्वीणं १५ णमो चउदस- पुव्वीणं १६ णमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं झ्रौं झ्रौं सत्यं कथय कथय स्वाहा । अष्टोत्तरशतजापेन यत्किञ्चित्पृच्छ्यते तत् सर्वं कथयति भय[illegible]ति च ।

अत्रापि पूर्वपाठः । १ ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं २ णमो जल्लोसहिपत्ताणं ३ णमो खेलोसहिपत्ताणं ४ णमो विप्पोसहिपत्ताणं ५ णमो सव्वोसहिपत्ताणं झ्रौं [illegible] २ स्वाहा ।

गुल्म-शूल-प्लीह-वृद्ध (वाद्) गड-गण्डमाला-कुष्ट-सर्वज्वरातिसार लूता व्रण विषाणि अन्येऽप्यष्टोत्तरशत व्याधय उञ्जनेन जलपानेन नश्यन्ति ।

पूर्ववत् पाठः । १ ॐ णमो उग्गतवाणं २ णमो दित्तवाणं ३ णमो तत्ततवाणं ४ णमो महातवाणं ५ णमो घोरतवाणं ६ णमो घोरगुणाणं ७ णमो घोरपरक्कमाणं ८ णमो घोरगुणबभयारीणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा । युद्ध तस्करादिघोऽशभयनाशो युद्धे विजयश्च ।

पूर्ववत् पाठः । १ ॐ णमो खीरासवीणं २ णमो सप्पिरासवीणं ३ णमो महुसवीणं ५८ णमो अमयसवीणं स्वाहा । सर्वौषधी (धि) उत्पादन-बंधन-नियो-जनभिम[illegible]त्रण कला पानीय स्थावरजङ्गमजाठरयोगज कृत्तिमादिसर्वविष सर्ववृश्चिकादि विषहरणं जलपानामृतध्यानेन ।। १० ।।

स्तुतिपदानि ३२, २४, १८—१६—१३—१२—८ यावत् पञ्च भविष्यति इहचात्यन्तगोप्यान्याम्नायान्तराण्यपि सन्तीति वृद्धाः ।

तथाहि [ॐ णमो अरिहंताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् दिचक्राय ह्रीं अर्हं असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा ॐ नमो भगवते अरिहंताणं णमो ओहि जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रीं अर्हं असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा । पूर्वोक्तयंत्रस्वरूपं ध्यात्वा कार्योत्सर्गं दत्वा एतं मंत्रमष्ट्रोत्तरशतवारं जपेत । ज्वरस्तम्भनं भवति ।। २ ।।]

ॐ णमो बीज (य) बुद्धीणं । एतन्मंत्रमष्टोत्तराशतवारं कायोत्सर्गेण यन्त्रस्वरूपं ध्यात्वा जपेत । काशश्वासहिक्कारोगोऽपयाति ।। ३ ।।

ॐ णमो परमोहिजिणाणं । एतन्मंत्रं ध्यात्वा कायोत्सर्गेण तिष्ठेत् । शिरोरोगोऽपयाति ।। ४ ।।

ॐ णमो णमो सव्वोहिजिणाणं अक्षिरोगोऽपैति ।। ५ ।।

ॐ णमो-णमो अणंतोहिजिणाणं कर्णरोगनाशः ।। ६ ।।

ॐ णमो-णमो कुट्ठबुद्धीणं शूल-गुल्म-कृमिनाशः ।। ७ ।।

ॐ णमो-णमो पत्तेयबुद्धाणं । प्रतिवादि पक्षस्य विद्याच्छेद ।। ८ ।।

'ॐ णमो सयंबुद्धाणं' झ्रौं झ्रौं स्वाहा । प्रतिदिवसं सिद्धभक्ति कृत्वा अष्टोत्तरशतदिनानि यावत् अष्टोत्तरशतं जपेत् कवित्वमागमवेदित्वं च भवति ।। ९ ।।

ॐ णमो बोहिबुद्धाणं झ्रौं-झ्रौं स्वाहा । पञ्चविंशतिदिनानि यावच्छतं जपेत् एक संधो (?) भवति ।। १० ।।

ॐ णमो दसपुव्याणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा । एकान्तर भोजनं कृत्वा दिनास्त् समये दिन ८० यावज्जपेत्, परसमयागमवेदित्वं भवति ।। १३ ।।

ॐ णमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा । त्रिधा ब्रह्मचर्येण दिन २४ चतुर्विंशतितीर्थंकरस्तवानन्तर श्री खंडकुंकुमसितसर्षपकुष्टोगोक्षीरेण

पिष्टा सव्यकरेणालिख्य पश्चादुपरिसुगन्धपुष्पैरेकान्तेऽधरात्रवेलायां जपेत् नष्ट-विनष्टचिन्ता सुख-दुःख जीवित-मरणादीन् सम्यग् जानाति ।

ॐ णमो विउव्वणइड्ढिपत्ताण झ्रौं झ्रौं स्वाहा । दिन २८ पञ्चोपवा स्क्रमेण रक्तकणवीरपुष्पैर्जपेत् १०८ । काम्यवस्तूनि प्राप्नोति ।। १५ ।।

ॐ णमो विज्जाहराणं झ्रौं भ्रौं स्वाहा । दिन २५ यावत् जाती पुष्पैः १०८ जपेत् देशतोऽन्तरिक्ष गामी ।।१६।।

ॐ णमो चारणाणं झ्रौं ण्रौं स्वाहा । स्नात्वा नदी तीरे वार २५ जपेत् । कायोत्सर्गं कृत्वा नष्टमुष्टिचिन्तास्वरूपं जानाति ।। १७ ।।

ॐ णमो पण्हसमणाणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा दिन २८ यावत् श्वेतकणवीर पुष्पै, १०८ जिनगृहे चन्द्रप्रभपादमूले जपेत् । आयुरवसानं कथयति ।। १८ ।।

ॐ णमो आगासगमणाणं झ्रौं झ्रौं स्वाहा । दिन २८ जपेत् । अलवणकाञ्जिकेनभोजनम् । योजनमेकं खे याति ।। १९ ।।

ॐ णमो दिट्ठी विसाणं झ्रौं २ स्वाहा । गमनस्तम्भः ।। २० ।।

ॐ णमो दित्ततवाणं झ्रौं २ स्वाहा रवौ मध्यान्हे दिन ३ जपेत् चौरस्तंयः ।। २१ ।।

ॐ णमो महातवाणं झ्रौं २ स्वाहा । शुद्धजलं १०८ अभिमन्त्र्य पिबेत्, अग्निस्तम्भः ।। २२ ।।

ॐ णमो मणोबलीणं झ्रौं २ स्वाहा । दिन २ जपेत् १०८, जलस्तम्भ ।। २३ ।।

ॐ णमो घोरतवाणं झ्रौं २ स्वाहा विष विषर्पादिरोगजयः ।। २४ ।।

ॐ णमो महाघोरतवाणं झ्रौं २ स्वाहा । दुष्टा न प्रभवन्ति ।। २५ ।।

ॐ णमो घोरपरक्कमाणं झ्रौं २ स्वाहा । लूतादिदोषापनयः ।। २६ ।।

ॐ णमो घोरबंभयारीणं झ्रौं झ्रौं २ स्वाहा । ब्रह्मराक्षसनाशः ।। २७ ।।

ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं जन्मान्तरावस्थायां वैरकारणेन प्राप्तग्रह—मेकदिन—मात्रेण न स्पृशति ।। २८ ।।

ॐ णमो खेलोसहिपत्ताणं । सद्योऽपमृत्युनाशः ।। २९ ।।

ॐ णमो जल्लोसहिपत्ताणं। शुद्ध नदीजले १०८ जपित्वा तज्जलं पिबेत्, दिनत्रयेणापस्मारादिरोगनाशः ॥ ३० ॥

ॐ णमो विप्पोसहिपत्ताणं स्रौं २ स्वाहा नरमारीशमः ॥ ३१ ॥

ॐ णमो मणोबलीणं (स्रौं स्रौं स्वाहा) दिन २ जपेत् अजमारीशमो-अष्टशतम् ॥ ३२ ॥

ॐ णमो वयणबलीणं स्रौं २ स्वाहा दिन ३ जपेत् गोमारी-शमः ॥ ३४ ॥

ॐ णमो अमयासवाणं (स्रौं २ स्वाहा,) समस्तोपसर्गनाशः ॥ ३५ ॥

ॐ णमो सप्पिरासवलद्धीणं स्रौं २ स्वाहा। एकाहिक—द्व्याहिक—त्र्याहिक—चातुराहिक—षण मासिक वार्षिक—वातिका—पैत्रिक—श्लैष्मि-कादीनां दिनत्रयेण शमः ॥ ३९ ॥

ॐ णमो खीरासवलद्धीणं स्रौं २ स्वाहा कायोत्सर्गे स्थित्वा १०८ जपेत् ततः क्षीरमभिमंत्र्य दिन २४ पिबेत्, अष्टादशकुष्ठव्रणोपशमः ॥ ३७ ॥

ॐ णमो जिणाणं जायमाणाणं न य पूई न य सोणियं न य पच्चइ न य फुट्टइ व्रणं ठः ठः। रक्षा लवणं जलक्लिन्नंवार २१ अभिमन्त्र्य बध्यते ॥ ३८ ॥

ॐ णमो जिणाणं णमो पण्हसमणाणं णमो वेसमणस्स णमो रयण चूडाए णमो पुण्य भद्दमाणिभद्दाण णमो सव्वाणुभूईणं रयगुत्तर पुप्फचूलाणं णमो अट्ठण्हं वाईणं सिद्धिसंतिपुट्ठिसिद्धाणुवयणं आणाइक्कमणिज्ज स्वाहा। गोरोयणा १० मणसिलापत्रं कुंकुम च पोसपुण्णिमाए चउत्थेण ११ अट्ठसयं जाओ दायव्वो पुस्सजोगे वा परिजवित्तेणं गुलिया समालभिन्ना सव्वकज्जसाहणी होइ विसाणं असज्जसया होइ ॥ ४४ ॥

अण्डकोष वृद्धि व खाख बिलाई मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमो नलाई-ज्यां बैठ्या हनुमंत आई पके न फुटे चले बाल जति

रक्षा करे। गुरु रखवाला शब्द सांचा पिंड काचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को ।

विधि :—नीम की डाली से २१ बार झाड़े तो अण्डकोष वृद्धि तथा खास बिलाई ठीक हो।

मस्सा नासक मन्त्र

मन्त्र :—ॐ उमती उमती चल चल स्वाहा ।

विधि :—शुभ मुहूर्त में ११०० जाप कर इस मन्त्र को सिद्ध करले। फिर २१ बार पढ़कर लाल सूत में एक गांठ दे, और हर २१ बार पढ़कर एक गांठ दे। इस तरह तीन गांठ देने पर ६३ बार मन्त्र पढ़ लिया जायेगा। इस सूत्र को दाहिने पैर के अंगूठे में बांध देने से खूनी बवासीर की पीड़ा दूर होती है।

व्रणहर मन्त्र

मन्त्र :—ॐ णमो जिणाणं जावयाणं पुसोणि अं ए एणि सव्व पायेण व्रणमा पच्चं उमा धुव उमा फुट् ॐ ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र से राख अभिमन्त्रित कर व्रण जिनको व्रण भी कहते हैं। जो बालकों के शरीर पर हो जाते हैं उन पर अथवा शीतला के व्रणों पर लगावे, तो मिट जाते हैं।

बाला (नहरवा) का मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमो मरहर दे शंक सारी गांव महामा सिधुर चांद से बाले कियो विस्तार बालो उपनो कपाल भांय या हुंतियो गोंहु ओ तोड़ कीजे ने उबाला किया पाचे फुटे पीड़ा करे तो विघ्ननाथ जोगी री आज्ञा फुरे ।

विधि :—कुमारी कन्या के हाथ से कते सूत की डोरी करके ७ गांठ मन्त्र पढ़कर दे, पैर के बांध दे। बाला ठीक हो जायगा।

घाव की पीड़ा का मन्त्र

मन्त्र :—सार सार बिजे सार बांधू सात बार फूटे अन्न उपजे घाव सीर राखे श्री गोरखनाथ ।

विधि :—इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर घाव पर फूंके तो पीड़ा कम हो घाव भरे।

कर्ण पिशाचिनी देवी का मन्त्र

मन्त्र :—ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं मम शुभाशुभं दर्शय कर्णपिशाचिनी नमः स्वाहा।

विधि :— प्रतिदिन स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहनकर पूर्व की ओर मुँहकर रुद्राक्ष की माला से जाप शुरू करे। दसो दिशाओं में एक एक माला फेरे २१ दिन तक। फिर जब जरूरत हो तो रात के समय एक माला फेर कर जमीन पर सो जाय, चन्दन घिस कान पर लगावे। स्वप्न में प्रश्न का सम्पूर्ण उत्तर प्राप्त होगा, कान में बीच में चटका चलेगा, घबराये नहीं।

क्लीं बीजमन्त्र

आकर्षण तन्त्र में सबसे पहले क्लीं बीजमन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। इसके सिद्ध होने के बाद ही आकर्षण मन्त्रों व तन्त्रों का प्रयोग करना चाहिये। उसके अभाव में

सफलता प्राप्त करना सम्भव प्रतीत नहीं होता। क्लीं बीज मन्त्र को काय बीज यानि काय कला बीज कहते हैं। त्रिकोण की ऊर्ध्व मुख तथा अधोमुख स्थापन से जो आकृति बनती है।

उसे योनि मुद्रा कहते हैं। इसके बीच में क्लीं बीजाक्षर की स्थापना करके ध्यान करना चाहिये। इस मन्त्र का जाप करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है :—

१. सर्व प्रथम भृकुटी के बीच में योनि मुद्रा की कल्पना करके उसके बीच में क्लीं बीजाक्षर की स्थापना कर उसका ध्यान करना चाहिये।

२. ध्यान में इसका वर्ण लाल रंग का बनाकर ध्यान करना चाहिये।

३. प्रातःकाल दो घण्टे तक इसका ध्यान करना चाहिये।

४. स्वस्थ मन शांत चित्त होकर ही ध्यान व जप किया जाना चाहिये।

५. दाहिने हाथ की कनिष्ठा अंगुली पर माला फेरनी चाहिये।

६ दण्डासन का उपयोग व दक्षिण दिशा की ओर मुंह रखना चाहिये।

७. प्रवाल (मूंगा) की माला का प्रयोग करना चाहिये।

८. ६ महिने में यह बीज मन्त्र सिद्ध हो जाता है। उसके बाद वशीकरण व आकर्षण आदि मन्त्र का प्रयोग करना चाहिये।

वाक् सिद्धि मन्त्र

मन्त्र :—ॐ नमो लिंगोद्भव रुद्र देहि में वाचा सिद्धं बिना पर्वतं गते, द्रां, द्रीं, द्रूं, द्रें, द्रौ, द्रः।

विधि : मस्तक पर बांया हाथ रखकर एक लक्ष जाप करे तो वचन सिद्ध हो।

मन्त्र :—ॐ णमो अरिहंताणं धम्म नाय गाणंधम्म सार हीणं धम्म वर चाउरंग चक्क पट्टीणं मम् परमेश्वर्यं कुरु कुरु ह्लीं हंसः स्वाहा।

विधि :—पूर्व की ओर मुख करके सफेद आसन, सफेद माला व सफेद वस्त्र पहनकर शुभ मुहूर्त में जाप शुरू करे। मस्तक पर बांया हाथ रखकर एक लक्ष जाप कर, फिर एक माला रोज जपे तो वाक् सिद्धि होती है।

दाद का मन्त्र

मन्त्र :—गुरुभ्यो नमः देव देव पूरी दिशा मेरुनाथ दलक्षना भरे विशाह तो राजा वैरधिन आज्ञा राजा वासुकी के आन हाथ वेगे चलाव।

विधि :—इस मन्त्र से पानी २१ बार मन्त्रीत कर पिलाने से दाद का रोग दूर होता है।

卐 भजन 卐

—संकलन कर्त्ता—श्री शान्तिकुमार गंगवाल

कुंथु सागर, गुरुवर हमारे, हमको दर्शन दे रहियो ।
मन मन्दिर में आजइयो ॥ टेक ॥
रेवा चन्द्र के राज दुलारे, माता के हो प्राण पियारे ।
हमको दर्शन दे रहियो, मन मन्दिर में आजइयो ॥१॥
बीस वर्ष में दीक्षा धारी, छोड़ी है धन दौलत सारी ।
शरण हमें स्वामी ले रहियो, मन मन्दिर में आजइयो ॥२॥
भेष दिगम्बर तुमने धारा, सकल भेद विज्ञान संवारा ।
भेद ज्ञान दरशा जइयो, मन मन्दिर में आजइयो ॥३॥
मंडल को है शरण तुम्हारी, पूरी करना आश हमारी ।
मोक्ष मार्ग बतला जइयो, मन मन्दिर में आजइयो ॥४॥

॥ आरती ॥

संतोषी लाल की दुलारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥टेक॥
कामा नगरी में जन्म लियो है, जन्म लियो है माता जन्म लियो है ।
माता जी हो प्यारी-प्यारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥१॥
यह संसार दुःखमय जाना, दुःखमय जाना, माता दुःखमय जाना ।
भारत देश उजियारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥२॥
बालापन में दीक्षा धारी, दीक्षा धारी, माता दीक्षा धारी ।
मुक्ति दीजे भव पारि, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥३॥
आप विदुषि हो माता जी, जय माता जी, जय माता जी ।
ज्ञान का है भण्डार भारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥४॥
गणनी विजयमती माता जी, जय माता जी, जय माता जी ।
मंडल है शरण तुम्हारी, मैं आरती उतारू तुम्हारी ॥५॥

दि० जैन मन्दिर, जयसिंहपुरा खोर पर १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज प्रवचन करते हुये। श्री लल्लूलाल गोधा महाराज श्री का करबद्ध प्रवचन सुनते हुए।

दि० जैन मन्दिर, जयसिंहपुरा खोर की मूल वेदी में बैठे हुये १०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज एवं गणनी १०५ आर्यिका श्री विजयमती माताजी, प्राचीन भव्य मूर्तियों के दर्शन करते हुये, पास में श्री लल्लूलाल गोधा सम्पादक जयपुर जैन डायरेक्टरी मन्दिर व मूर्तियों के बारे में जानकारी देते हुए।

आचार्य श्री के चातुर्मास के समय आरा (बिहार) में भक्ति संगीत का कार्यक्रम करते हुए जैन संगीत कोकिला रानी एवं आध्यात्मिक संगीत विदुषी बहिन श्रीमती कनक प्रभाजी हाड़ा, साथ में बायें से दायें श्री शान्ति कुमार गंगवाल, श्री मोतीलाल हाड़ा श्री राजेन्द्र कुमार बाकी वाला, प्रदीप कुमार गंगवाल, जयपुर (राजस्थान) बैठे हुए हैं।

तृतीय-यंत्राधिकार

मन्त्र लिखने की विधि व बनाने की विधि

९ १६ ७ ८

श्लोक :—इच्छा कृतार्द्धं कृत रूप हीनं। धने गृहे, षोडश सप्त चाष्टौ।

१५ १०—० १ २ ७ ६ ३ ८ १ ४ ५

त्रिथि दशाशे प्रथमे च कोष्टे। द्वि सप्त षट् त्रि अष्ट कु वेद वाण।

अर्थ :— जितने का यन्त्र बनाना हो उस संख्या का आधा करना, उसमें से एक कम करना, पुन: एक–एक कम कर लिखना, धने गृहे— ९ वां कोठे में लिखना, फिर १६ वें कोठे में लिखना, फिर ७ वें कोठें में लिखना, फिर ८ वें कोठे में लिखना, फिर १५ वें कोठे में कोठे में लिखना, फिर १० वें कोठे में लिखना, इतना लिख जाने के बाद जो कोठे खाली

कु वेद-वाण

रह जायें उन कोठों में क्रमश: २, ७, ६, ३, ८, १, ४, ५ ।

उदाहरणार्थ यन्त्र नीचे मुजब देखो जैसे कि हमको बनाना है ८४ का यन्त्र—

यन्त्र ८४ का

३४	४१	२	७
६	३	३८	३७
४०	३४	८	१
४	५	३६	३९

८४÷२ —२ =४२ – १ =४१ इस ४१ संख्या को कोष्टक का जो प्रथम खाना है चार लाइन वाला, उसके दूसरे खाने में ४१ संख्या को रक्खे। फिर श्लोक में लिखा है कि, धने गृहे, राशियों में सबसे अन्तिम वाली राशी धन राशी है। इसलिए धन राशि को ९वां नं० दिया है। सो कोष्टक में भी नौवां खाना है उसमें एक संख्या घटा कर ४० रख देवे। इस प्रकार श्लोक में जो जो नंबर पूर्वक संकेत दिया है, उन २ खाने में एक २ संख्या को कम करते हुए रख देना। इस प्रकार रखते हुए यंत्र बना लेना। इसी विधि से अन्य प्रकार जिसको जितनी संख्या का यंत्र बनाना हो वह इसी प्रकार बनावे। ये १६ खाने वाले यंत्र की विधि है।

नो खाने वाले यन्त्र की विधि :—एक नो खाने वाला कोष्टक बनावे फिर उसको विधि के अनुसार संख्या भर देवे।

यन्त्र १५ का

८	१	६
३	५	७
४	९	२

उदाहरणार्थ :—जैसे हमको १५ का यंत्र बनाना है तो दूसरे नम्बर कोठे में १ लिखे फिर ९ नम्बर के कोठे में २ लिखे, फिर ४ नम्बर के कोठे में ३ लिखे, फिर ७ नम्बर कोठे में ४ लिखे फिर ५ नम्बर कोठे में ५ लिखे, फिर ३ नम्बर कोठे में ६ लिखे, फिर ६ नम्बर कोठे

यन्त्र १८ का

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

यन्त्र २१ का

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

यन्त्र २४ का

११	४	९
६	८	१०
७	१२	५

में ७ लिखे, फिर १ नम्बर के कोठे में ८ लिखे, फिर ८ नम्बर के कोठे में ९ लिखे, इस प्रकार यंत्र कोष्टक भरने से १५ का यंत्र तैयार हो जाता है। इसी प्रकार नो कोठे के यंत्र लिखने की विधि है। अन्य १८ या २१ का या २३ जो भी जरूरत हो, वह इसी प्रकार लिखकर तैयार करें।

यन्त्र लेखन विधि समाप्त।

यन्त्र महिमा वर्णन

जिण चोवीसेपय प्रणमेवि, सह गुरु तणा वचन निसुणेवि ।
यंत्र तणो महिमा अतिघणो, भावे बोलु भवियण सुणो ॥ १ ॥
सोले कोठे लखियें वीश, सघला भय टाले जगदीश ।
अठावीसवाँ रोग भय हरे, छत्रीशे द्युति जय करे ॥ २ ॥
त्रीशे वलि सार्यणि (शाकिनी) नाशंति, बत्रीशे सुख प्रसवते हुंति ।
देवध्वजा जो लखिये इसे, पर चक्र भय न होवे किमे ॥ ३ ॥
घर बारणें जो लखिये एह, कामण नव पराभवे तेह ।
शाकणि संहारनि हुवे तिहां, चोतीसो यंत्र लखिये जिहाँ ॥ ४ ॥
चालीशे शीश रोग टले, पागे वयरी हेला दले ।
अनेवली ठाकरवे बहुमान, वसुधावलि साधारे मान ॥ ५ ॥
बासठें बंध्या गर्भ जु धरें, ऐसा वयण सद्गुरु उच्चरें ।
चौसठ रो महिमा छे घणो, मार्गे भय न होवे कोई तणों ॥ ६ ॥
वारिभय रिपू शाकिणी तणा, चौशठना नहीं प्रणं ।
बावत्तरी भूरू भूरि जेह, भुंभे नर जय पाये तेह ॥ ७ ॥
पच्चासी पंथे भय हरे, अठयोत्तरि सो शिव सुख करे ।
बीशोत्तर सौ नयणे निरखंत, प्रसव वेदन तेव विहुत ॥ ८ ॥
बावनशोनो ऊली नीर, मुख धोवे होवे वाहलो वीर ।
सत्तरि भय नो महिमा अनन्त, तुच्छ बुद्धि किम जाणे जंत ॥ ९ ॥
एक सो बहुत्तरो यंत्र प्रभाव, बालक ने टाले दुष्ट भाव ।
बिहुमोनो यंत्र लखिये वाट, वाणिज्य घणा होय हाट मझार ॥ १० ॥
त्रणशें नर नारी नो नेह, जिणठो बांधे नहीं सन्देह ।
चारशें घर भय न विहोय, कण उत्पत्ति घणी खेत्रे जोय ॥ ११ ॥
पाँच सै महिला गर्भज धरें, पुरुष हने पुत्र संतति करे ।
छशे यन्त्र होय सुखकार, सातशे झगड़े होय जयकार ॥ १२ ॥

नवसे पंथे न लागे चोर, दश में दुख न परभवें घोर ।
इग्यारसे छेजे जीव दुष्ट, तेहना भय टाले उत्कृष्ट ॥ १३ ॥

बन्दी मोक्ष बार से होय, दश सत्से पुनः तेहिज होय ।
बली सयलनी रक्षा करे, एम यन्त्र तणी महिमा विस्तरे ॥ १४ ॥

पच्चास से राजा दिक मान, शाकिनि दोष निवारण जान ।
कण्ठे [illegible] [illegible] से धरे, अशुभ कर्म तें शुद्ध जे करे ॥ १५ ॥

बावनना मो मस्तके तथा, कंठे क्षेत्रपालनो हित सदा ।
पणयालीस सिर कण्ठे होय, सर्व वश्य धापें तस जोय ॥ १६ ॥

कुंकुम गोरोचन्दन सार, मृग मद सों चौदस रविवार ।
पवित्र पणे पुण्य मूल नक्षत्र, एकमना लखिये जो यन्त्र ॥ १७ ॥

पार्श्व जिनेश्वर तणे पसाय, अलिय विघन सब दूर पलाय ।
पंडित अमर सुन्दर इम कहे, पूजे परमारथ सब लहे ॥ १८ ॥

॥ इति छन्द महिमा ॥

अथ यंत्र महिमा छंद का भावार्थ :

[illegible] (तीसा) यंत्र से शाकिनी [illegible] मुख से प्रसन्न [illegible]कारक है। पर नत्र अथवा [illegible]कान के बाहर दीवार पर [illegible]। शाकिनी आदि पलायण [illegible] बैरी पांवो में गिरता है। [illegible] से वन्ध्या स्त्री भी मान-[illegible]मा बहुत हैं। मार्ग में सर्व [illegible]प्रेत का भय नष्ट होता है,

[illegible] होता है। [illegible] (बत्तीसा) यंत्र से [illegible] भय को नष्ट करता है। [illegible] सदा करने वाले पास रखकर करें तो विजय होती है। [illegible] भय नष्ट होता है। [illegible] (बत्तीसा) यंत्र से कष्ट के समय [illegible] होता है। ३४ (चौंतीसा) यंत्र देवध्वजा पर लिखा जाय तो शुभ [illegible] किसी के द्वारा भय प्राप्त होने वाला हो तो उसे मिटाता है। [illegible] लिखने से पराभव नहीं होता। कामण टुमण का जोर नहीं चलता [illegible] हो जाती है। ४० (चालीसा) यंत्र से सिरदर्द मिट जाता है। [illegible] गांव में परगने में मान-सम्मान बढ़ता है। ६२ (बासठ) के यंत्र [illegible] सम्मान गर्भ स्थिर धारण करती है। चौसठिया यंत्र की महि[illegible] प्रकार के भय से बच जाता है। ७२ (बहत्तरिया) यंत्र से भूत

संग्राम में विजय पाता है। ८५ (पिच्चासिये) यंत्र से मार्ग का भय मिटता है। अट्ठोत्तरिये यंत्र से शिव सुख दाता सर्व कष्ट को नष्ट करने वाला है। २० (बिशोत्तर) सो यंत्र बड़ा होता है जिससे प्रसव सुख रूप होता है। वेदना मिटती है। ५२ (बावन सौ) यंत्र को पानी से धोकर मुख धोवे तो भाईचारा स्नेह बढ़ता है। भाई बहिन के आपस में प्रेम रहता है। १७० (एक सौ सत्तरिये) यंत्र की महिमा बहुत है। इसका वर्णन तुच्छ बुद्धि से मनुष्य नहीं कर सकता। १७२ (एक सौ बहत्तरिया) यंत्र से बालक को लाभ होता है, भय मिटता है। २०० (दो सौ) का यंत्र दूकान के बाहर दीवार पर या मांगलिक स्थापना के पास लिखने से व्यापार बढ़ता है। ३०० (तीन सौ) के यंत्र से नर नारी का प्रेम बढ़ता है और टूटा हुआ स्नेह फिर जुड़ जाता है। ४०० के यंत्र से घर में भय नहीं होता। खेत पर लिखने से वा लिखकर खेत में रखने से उत्पत्ति अच्छी होती है। ५०० के यंत्र से स्त्री को गर्भ धारण हो जाता है, और साथ ही पुरुष भी बांधे तो संतति योग भी होता है। बनता है। ६०० (छः सौ) के यंत्र से सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। ७०० के यंत्र बांधने से झगड़े टंटों में विजय करता है। ९००(नौसौ)के यंत्र से मार्ग में भय नहीं होता, तस्कर का भय मिटता है। १०००(सहस्रिये) यन्त्र से पराजय-परभव नहीं होता और विजय पाता है। ११०० (ग्यारह सौ) के यंत्र से दुष्टात्मा की ओर से भय क्लेश होता हो तो वह मिट जाता है। १२०० (बारह सौ) के यंत्र से बन्दीवान् मुक्त हो जाता है। १०००० (दस सहस्त्रिये) यंत्र से बन्दीवान मुक्त हो जाता है। ५०००० (पचास सहस्त्रिये) यंत्र से राज मान मिलता है, कष्ट मिटता है। इस तरह प्राचीन छन्द का भावार्थ है। इसमें बताये बहुत से यंत्र हमारे संग्रह में नहीं हैं, लेकिन यंत्र महिमा और उनमें होने वाले लाभ का पाना छन्द भावार्थ से समझ में आ सकेगा। जिनको आवश्यकता हो यंत्र शास्त्र के निष्णात से लाभ उठावें।

यंत्र लेखन गन्ध।। यंत्र अष्ट गंध से और यक्ष कर्दम से लिखे जाते हैं और कलम के लिए भी अलग विधान है।। अनार की चमेली की और सोने की कलम से लिखना बताया है सो यंत्र के बयान में जिस प्रकार की कलम या गंध का नाम आवे वैसी तैयारी कर लेना चाहिये। लिखते समय कलम टूट जाय तो यंत्र से लाभ नहीं हो सकेगा और लिखते समय गंधादि भी कम न हो जाय जिसका उपयोग पहले ही कर लेना चाहिये।। अष्ट गंध में अगर, तगर, गोरोचन, कस्तूरी, चन्दन, सिन्दूर, लाल चंदन कपूर इनको एक खरल में घोट कर तैयार कर लेना चाहिये। स्यांही जैसी रस बना लेनी चाहिये ।।=।। अष्ट गंध का दूसरा प्रकार कपूर, कस्तुरी, केशर, गोरोचन, संधरफ, चन्दन और गेहुँला। इस तरह आठ वस्तु का बनता

है । अष्टगंध का तीसरा विधान' केशर, कस्तुरी, कपुर, हिंगुल, चन्दन, लाल चन्दन, अगर, तगर लेकर घोटकर तैयार कर लेना । पंच गंध का विधान केशर, कस्तुरी, कपूर, चन्दन, गोरोचन इन पांच वस्तु का मिश्रण कर रस बना लेना ॥=॥ यक्ष कर्दम का विधान, चन्दन, केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तुरी, गोरोचन, हिंगुल रत्ता जणी, अम्बर सोने का वर्क, मिरच, ककोमु इन सबको लेकर स्याही जेसा रस बना लेवें ॥ ऊपर बताए अनुसार स्याही जैसा रस तैयार कर पवित्र कटोरी या अन्य किसी स्वच्छ पात्र में लेना । ध्यान रखिये कि जिसमें भोजन किया हो अथवा पानी पिया हो तो वह कटोरी काम में नहीं आ सकेगी । स्याही यदि तत्कालिक बनाई हो अथवा पहले बनाकर सुखाकर रखी हो तो उसे काम में ले सकते हैं । सब तरह के गंध या स्याही की तैयारी में गुलाब जल काम में लेना चाहिये और अनार की या चमेली की कलम एक अंगुल से याने ग्यारह तेरह अंगुल लम्बी होनी चाहिए और याद रखिये कि ग्यारह अंगुल से कम लेना मना है । सोने का निब हो तो वह भी नया होना चाहिए जिससे पहले कभी न लिखा हो । जिस होल्डर में निब डाला जाय उसमें लोहे का कोई अंश नहीं होना चाहिए । इस तरह की तैयारी व्यवस्थित रूप से की जाय ॥ भोजपत्र स्वच्छ हो, दाग रहितहो, फटा हुआ नहींहो ऐसा स्वच्छ देखकर लेना और यंत्र जितना बड़ा लिखना हो उससे एक अंगुल अधिक लम्बा, चौड़ा लेना चाहिए । भोजपत्र न मिले तो अभाव में आवश्यकता पूरी करने को कागज भी काम ले सकते हैं ॥=॥ यंत्र लेखन योजना ॥=॥ जब यंत्र का साधन नया सिद्धि करने के लिए बैठे उससे पहले यन्त्र को लिखने की योजना को समझ ले । बिना समझे या अभ्यास किये बगैर यंत्र लिखोगे तो उसमें भूल हो जाना संभव है । मान लो भूल हो गयी लिखे हुए अंक को काट दिया या मिटा दिया और उसकी जगह दूसरा लिखा हो वह भी यंत्र लाभदायक नहीं होगा यदि अंक लिखते समय अधिक या एक के बदले दूसरा लिखा गया तो वह भी एक प्रकार की भूल मानी गयी है । अतः इसी तरह से लिखा गया हो तो उसका कागज या भोजपत्र, जिस पर लिख रहे हो उसको छोड़ दो और दूसरा लेकर लिखने लगो इस तरह एक भी भूल न होने पाए । इसीलिए पहले लिखने का अभ्यास कर लेना चाहिए ॥ यंत्र लिखते समय यंत्र में देख लो कि सबसे छोटा या कम गिनती वाला अंक किस खाने में है ॥ और जिस खाने में हो उसी खाने में लिखना शुरू किया जाय, और बढ़ते वाले अंक से लिखने [illegible]

उनमें लाइन सिर लिखते जाओ। यदि इस तरह से यंत्र लिखा गया हो तो वह यंत्र लाभ नहीं पहुंचा सकेगा। इसलिए यंत्र लिखने की कला बराबर सीख लेनी चाहिए। और लिखते समय बराबर सावधानी से लिखना योग्य है "यंत्रों की योजना" यंत्र में जो विविध प्रकार के खाने होते हैं जिसमें से कई यंत्र तो ऐसे होते हैं कि जिनमें लिखे अंकों को किसी भी तरह से गिनते हुए अन्त की संख्या एक ही प्रकार की आवेगी। बहुधा इस प्रकार के यंत्र आप देखेंगे इस तरह की योजना से यह समझ में आता है कि यंत्र अपने बल को प्रत्येक दिशा में एकता रखता है और दिशा में भी निज प्रभाव को कम नहीं होने देता॥ यंत्रों में भिन्न भिन्न प्रकार के खाने होते हैं, और वह भी प्रमाणित रूप से व अंकों से अंकित होते हैं। जिस प्रकार प्रत्येक अंक निज बल को पिछले अंक में मिला दश गुना बढ़ा देता है। तदनुसार यह योजना भी यंत्र शक्ति को बढ़ाने के हेतु की गयी, समझना चाहिये। जिन यंत्रों में विशेष खाने हों और उन खानों में अंकित किए हुए अंकों को किधर से भी मिलान करने से एक ही योग की गिनती आती हो तो इस तरह के यंत्र अन्य हेतु से समझना चाहिए और ऐसे यंत्रों का योगांक करने की भी आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे यंत्र इस तरह देखें से अधिष्ठित होते है कि जिनका प्रभाव बलिष्ट होता है—जैसे भक्तामर आदि के यंत्र हैं। इसलिए जिन यंत्रों में योगांक एक मिलता हो उनके प्रभाव में या लाभ प्राप्ति के लिए शंका करने की आवश्यकता नहीं है॥ **यंत्र लेखन विधान** ॥ ॥ यंत्र लिखने बैठे तब यदि यंत्र के साथ विधान लिखा हुआ मिलेगा तो उस पर ध्यान देना चाहिए और खासकर यंत्र लिखते मौन रहना उचित है। सुखासन से आसन पर बैठना सामने छोटा बड़ा पाटिया या बाजोठ हो तो उस पर रखकर लिखना परन्तु निज के घुटने पर रखकर कभी न लिखना चाहिए। क्योंकि नाभि के नीचे का अंग ऐसे कार्यों में उपयोगी नहीं माना है।

प्रत्येक यंत्र के लिखते समय धूप, दीप आदि अवश्य रखना चाहिए और यन्त्र विधान में जिस दिशा की तरफ मुख करके लिखना बताया हो देख लेवे। यदि न लिखा मिले तो सुख-सम्पदा प्राप्ति के लिए पूर्व दिशा की तरफ और संकट-कष्ट, आधि-व्याधि के मिटाने को उत्तर दिशा की तरफ मुख करके बैठना चाहिए। तमाम क्रिया करे तो शरीर शुद्धि कर स्वच्छ कपड़े पहिन करके विधान पर पूरा ध्यान रखना॥ ॥ **यंत्र चमत्कार** ॥ – यंत्र का बहुमान कर उनसे लाभ प्राप्त करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आती है। वार्षिक पर्व दिवाली के दिन दुकान के दरवाजे पर या अन्दर जहाँ देव स्थापना हो वहाँ पर पन्दरिया चोतीस पेसठिया यंत्र लिखने की प्रथा है। जगह-जगह बहुत देखने में आती है। विशेष में यह भी देखा है कि गर्भवती स्त्री कष्ट पा रही हो और छुटकारा न होता हो तो विधि सहित यंत्र लिखकर उस

स्त्री को दिखाने मात्र से ही छुटकारा हो जाता है। और किसी स्त्री को डाकिनी शाकिनी सताती हो तो यंत्र को हाथों पर या गले में बांधने मात्र से या सिर पर रखने से व दिखाने मात्र से आराम हो जाता है ।। प्राचीन काल में ऐसी प्रथा थी कि किले या गढ़ की नींव लगाते समय अमुक प्रकार का यंत्र लिख दीपक के साथ नींव के पास में रखते थे। इस समय भी बहुत से मनुष्य यंत्र को हाथ में बांधे रहते हैं, और जैन समाज में तो पूजा करने के यंत्र भी होते हैं जिनका नित्य प्रति प्रक्षाल कराया जाता है। और चंदन से पूजा कर पुष्प चढ़ाते हैं। इस तरह से यंत्र का बहुमान प्राचीन काल से होता आया है जो अब तक चल रहा है ।। साथ ही श्रद्धावान लोग विशेष लाभ उठाते हैं। श्रद्धा रखने से आत्म विश्वास बढ़ता है। साथ ही श्रद्धा भी फलती है। जिस मनुष्य को यंत्र पर भरोसा होता है उसे फल भी मिलता है। एक निष्ठ रहने की प्रकृति हो जाती है और इतना हो जाने से आत्म बल, आत्म गुण भी बढ़ता है। परिणाम मजबूत होते हैं और आत्म शुद्धि होती है। इसलिए विश्वास रखना चाहिए।

यंत्र लेखन कैसे करवाना ।।—।। जो मनुष्य मन्त्र शास्त्र यंत्र शास्त्र के जानकार और यंत्र गणित जानने वाले ब्रह्मचारी, शीलवान, उत्तम पुरुष हो, उनसे लिखवाना चाहिए और ऐसे सिद्ध पुरुष का योग न पा सके तो जिस प्रकार का विधान प्रति मन्त्र के साथ लिखा हो उसी तरह से तैयारी कर मन्त्र लेखन करें। और लिखते ही यंत्र को जमीन पर नहीं रखना और जिसके लिए बनाया हो उसे सूर्य स्वर या चन्द्र स्वर में देना चाहिए ।। लेने वाला बहुमान पूर्वक ग्रहण करते समय देव के निमित्त फल भेट करे तो अच्छा है। यंत्र लेने के बाद सोने के चाँदी या ताँबे के माद लिए में यंत्र को रख देना भी अच्छा है। यदि माद लिया न रखना हो तो वैसे ही पास में रख सकते हैं। यंत्र को ऐसे ढंग से रखना उचित है कि वह अपवित्र न हो सके मृत्यु प्रसंग में लोकाचार में जाना पड़े तो वापसी आने पर धूप खेने से पवित्रता आ जाती है ।। - ।।

शकुनदा पन्दरिया यन्त्र ।।१।।

पंदरिया यन्त्र आपके सामने है इसमें एक से नौ अंक तक की योजना है। इसलिए इसको सिद्ध चक्र यन्त्र भी कहते हैं। इस यन्त्र पर शकुन लिए जाते हैं। ताँबे के पत्रे पर या कागज पर अष्ट गंध से अच्छे समय में यंत्र लिख लिख लिया जाय और जहां तक हो सके (आम) आंबे के पाटिया का बना हुआ पाटला हो उस पर स्थापित करे। आंबे का पाटिया न मिल सके तो जैसा भी मिले उस पर स्थापित कर धूप से निज हाथों को स्वच्छ कर नवकार मन्त्र नौ बार बोलकर तीन चांवल या तीन गेहूँ के दाने लेकर ऊपर छोड़ देवे। जिस अंक पर

कण अर्थात दाने गिरे उसका फल इस तरह समझ लेंवे। चोके छक्के दीसे नहीं। शकुन वीचारी

यन्त्र नं. १

४	३	८
९	५	१
२	७	६

आवे, वीये अट्ठे साल तिये बात सुनावे। रुके पञ्जे नव निधि पावे॥ इस तरह फल का विचार कर कार्य की सिद्धि को समझ लेना ॥१॥

द्रव्य प्राप्ति पन्द्रिया यन्त्र ॥२॥

इस यंत्र से बहुत से लोग इसलिए परिचित हैं कि दिवाली के दिन दुकान में पूजन [illegible] सिन्दूर से लिखना चाहिए।

४	३	८
९	५	१
२	७	६

पहले छोटे खाने शुद्ध कलम से बनाकर एक अंक छट्ठे खाने
खाने में दो का अंक दूसरे में तीन का अंक इस तरह चढ़ते
चन्दन या कुंकुम से पूजा कर पुष्प चढ़ाना धूप खेय कर नैवे
चाहिये यही इसका विधान है। यंत्र लिखते समय जहां तक हो
लिखना चाहिए और हो सके तो नित्य धूप खेय कर नमन कर

है वहां से शुरुआत करे। सातवे
कि लिखना चाहिये और बाद में
द्य फल चढ़ा कर हाथ जोड़ लेना
सके श्वास स्थिर रख मौन रहकर
लेना चाहिए ॥२॥

वशीकरण पंदरिया यन्त्र ॥३॥

यह पंदरिया यंत्र भोज पत्र या कागज पर पंच गंध से लिखना चाहिए। विशेषकर शुक्ल पक्ष में पूर्ण तिथि के दिन शुभ नक्षत्र में घी का दीपक सामने रख, धूप खेयकर चमेली की

यन्त्र नं० ३

६	७	२
१	५	६
८	३	४

यन्त्र नं० ४

२	७	६
६	५	१
४	३	८

कलम से लिखना और इस यंत्र को पास रखना चाहिए। शीघ्र से सिद्ध करना है तो जिस काम पर काबू करना है प्रातःकाल में यन्त्र को धूप से खेवे और कार्य का नाम लेवे। यन्त्र को नमन कर पास में रख ले कार्य सिद्धि हो जाती है ॥३॥

उच्चाटन निवारण पन्दरिया यन्त्र ॥४॥

यह यन्त्र उच्चाटन या उपद्रव को नाश करने में सहायक होता है। प्राचीन समय से ऐसी पद्धति चली आती है कि इस यंत्र को दिवाली के दिन दुकान के दरवाजे पर लिखते हैं और इस यंत्र को लिखने का कारण यही है कि भय का नाश हो और सुख सम्पदा आवे। लिखते समय धूप दीप रखना और सिन्दूर से चमेली की कलम से लिखना चाहिए। दरवाजे के सिरे पर कोई मांगलिक स्थापन हो तो उसके दोनों तरफ लिखना। स्थापना न हो तो दरवाजे में जाते दाहिनी तरफ ऊपर के भाग में लिखना चाहिए। इस यन्त्र को जब किसी मनुष्य को भय उत्पन्न हुआ हो और उसे वास्तविक भय के सिवाय वहम भी हो रहा हो तो उसके निवारण के लिए भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिखकर पास में रखने से स्थिरता आयेगी, वहम दूर होगा। यंत्र को दशांग धूप से खेना चाहिए ॥४॥

प्रसूति पीड़ा हर यंत्र (पंदरिया यंत्र)

प्रसूति को प्रसव के समय पीड़ा हो और शीघ्र छुटकारा न हो तो कुटुम्ब में चिंता बढ़ जाती है। जब ऐसा समय आया हो तो इस यंत्र को सिन्दूर से या चन्दन से अनार की

यन्त्र नं० ५

८	३	४
१	५	९
६	७	२

कलम से मिट्टी की कोरी ठीकरी जो मिट्टी के टूटे हुए बर्तन की हो। इसमें लिखकर लोबान से खेबकर प्रसूति वाली को बताने से प्रसव शीघ्र हो जायगा। प्रसूति स्त्री यंत्र को एक दृष्टि से कुछ देर देखती रहे, और इतने पर से प्रसव शीघ्र नहीं होवे तो चंदन से लिखे हुए यंत्र को स्वच्छ पानी से उस ठीकरी पर के यंत्र को धोकर वह पानी पिला देवे तो प्रसूति पीड़ा मिट जायगी ॥५॥

मृत्यु कष्ट दूर पंदरिया यन्त्र ॥६॥

यह यंत्र उन लोगों के काम का है जो जीवन की जोखिम का काम करते हैं। जल में, स्थल में, व्योम में या वराल यंत्र से आजीविका चलाते हों या ऐसा कठिन काम हो कि

यन्त्र नं० ६

८	१	६
३	५	७
४	९	२

जिनके करते समय आपत्ति आने का अनुमान किया जाता है। इस यंत्र की तरह के कार्य करने

वाले इस यंत्र को यक्ष कर्दम से लिखकर अपने पास रखे तो अच्छा है। इस यन्त्र को अनार की कलम से लिखना चाहिए और दिवाली के दिन मध्य रात्रि में लिखकर पास में रखे तो और भी अच्छा है। दिवाली के दिन नहीं लिखा जाय तो अच्छा दिन देखकर विधान के साथ लिख मादलिये में रख पास में रखे ।।६।।

पिशाच पीड़ा हर यन्त्र नं. ।।७।। (सत्तरत्रिया यंत्र)

पिशाच, भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी इत्यादिक कष्ट पहुंचाता हो तो उसे निवारण करने के लिये ऐसे यन्त्र को पास में रखना चाहिये। भोजपत्र या कागज पर यक्ष कर्दमसेअनार या चमेली की कलम से अमावस्या, रविवार और मूल नक्षत्र इन तीनों में एक जिस दिन हो

यन्त्र नं० ७

।।	७	२	७।।
४	५।।	२।।	५
६।।	१	८	१।।
६	३।।	४।।	३

स्वच्छ होकर मौन रह कर इस यन्त्र को लिखे लोबान व धूप दोनों का धुआं चलता रहे। उत्तर दिशा या दक्षिण दिशा की तरफ लाल या श्याम रंग के आसन पर बैठ कर लिखो। विशेष बात सात रंग के रेशम का धागा से यन्त्र को लपेट देवें और मादलिये में रख ले या कागज में लपेट अपने पास रखे। विशेष जिसके लिये बनाया हो उसका नाम यन्त्र के नीचे लिखे कि "शाकिनी पीड़ा निर्वाणार्थं या भूत पीड़ा निर्वाणार्थं। जिसकी ओर से पीड़ा होती हो उसका नाम लिखे। किसी मनुष्य को कोई शत्रु या क्रूर मनुष्य सताता हो, कष्ट पहुंचाता हो, हैरान करता हो, परेशान करता हो तो यन्त्र लिखे अमुक द्वारा उत्पन्न पीड़ा के निवार्णार्थ ऐसा लिखाना चाहिए और तैयार करने के बाद पास में रखे तो कष्ट हो रहा होगा उससे शांति मिलेगी। दोनों विधान में यक्ष कर्दम में लिखना चाहिए ।।७।।

बारीक कपड़े में गुलाल रखकर पोटली बनाने से छांटने में सुविधा होगी। जब एक सौ आठ बार लिख ले तब उसी समय अष्ट गंध से भोज पत्र पर या कागज पर यन्त्र को लिख कर पास में रखे तो उत्तम है। व्यापार या क्रय विक्रय का कार्य पास में रख कर किया करे और हो सके तो नित्य धूप भी देवे ॥९॥

सर्व कार्य लाभ दाता बीसा यन्त्र ॥१०॥

यह यन्त्र तमाम कार्य को सिद्ध करता है। इस यन्त्र को तांबे के पत्रे पर या भोज पत्र पर लिख कर तैयार कर अष्ट गंध और चमेली की सोने की कलम से लिखे। शुक्ल पक्ष शुभ

यन्त्र नं० १०

८	२	९	१
७	३	६	४
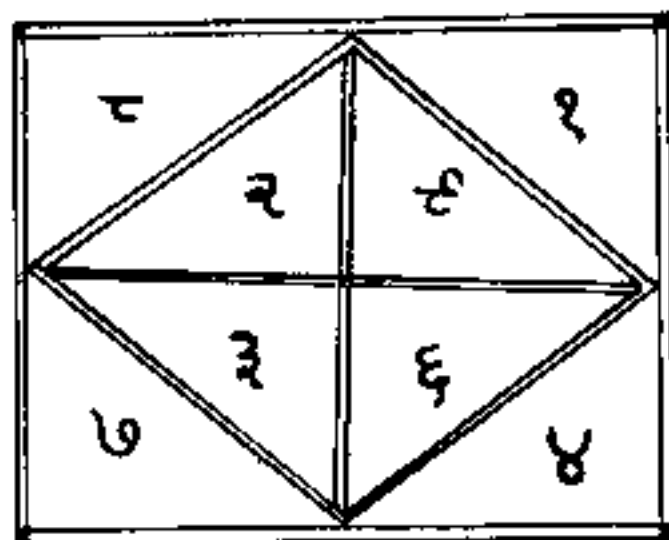
वार पूर्णा तिथि या सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग हो उस दिन लिख कर रख लेवे और अमृत धूप दीप रख लेवे प्रातः काल से यन्त्र की स्थापना कर सामने सफेद आसन पर बैठकर नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे। जाप कम से कम साढ़े बारह हजार और अधिक करें तो सवा लाख जाप पूरा कर, फिर यन्त्र को पास में रख कर कार्य करे॥

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं सर्व कार्य फलदायक कुरू कुरू स्वाहा:। यन्त्र तैयार हो जाने के बाद जब पास में रखा जाय और अनायास प्रसूति ग्रह या मृत देह दाह क्रिया में जाना हो तो वापस आकर यन्त्र को धूप खेवने मात्र से शुद्ध हो जायगा ॥१०॥

शांति पुष्टि दाता बीसा यन्त्र ॥११॥

शांति पुष्टि मिलने के लिये यह यन्त्र बहुत उत्तम माना गया है। जब इस तरह का यन्त्र तैयार करना हो तो स्वच्छ कपड़े पहिन कर पूर्व दिशा की ओर देखता हुआ बैठकर धूप दीप

रख कर इष्ट देव का स्मरण कर इस यन्त्र को ताँबे के पटिये पर एक सौ आठ बार गुलाल छींटक कर लिखे और विधि पूरी होने पर भोज पत्र या कागज पर, अष्ट गंध से लिखकर यंत्र

यन्त्र नं० ११
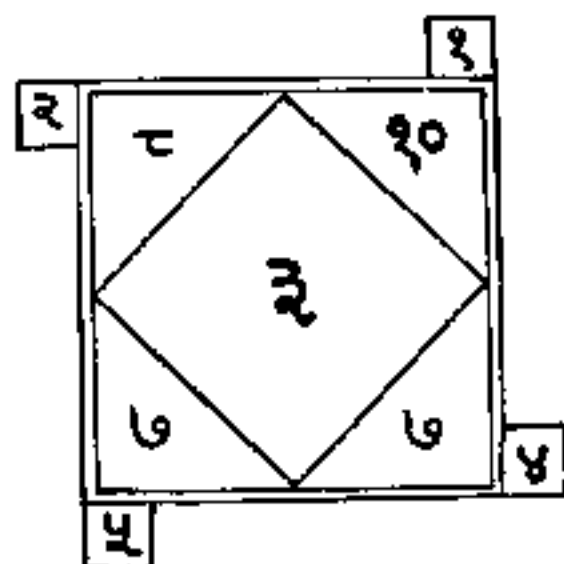
को अपने पास में रखे। जिसके लिये यन्त्र बनाया हो उसका नाम यन्त्र में लिखे अर्थात मनुष्य के श्रेयार्थ ऐसा लिख शुभ समय में हाथ में चावल या सुपारी ले कर यंत्र सहित देवे। लेने वाला लेते समय तो आदर से लेवे, और कुछ लेने वाला भेंट यन्त्र के नाम से कर धर्मार्थ खर्च करे। यह यन्त्र शुभ फल देने वाला है। शांति पुष्टि प्रदायक है। श्रद्धा रख कर पास में रखने से फलदायक होता है।
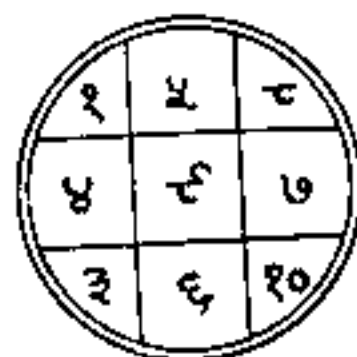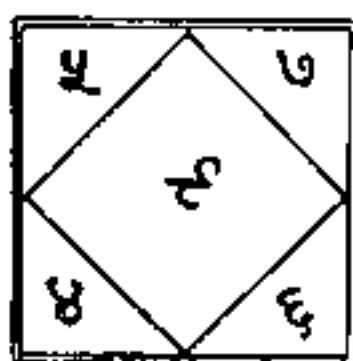
बाल रक्षा बीसा यन्त्र ॥१२॥

इस यन्त्र की योजना में एक अक्षर बायें से दाहिने ओर का एक खाना बीच में छोड़कर दो बार आया है जो रक्षा करने में बलवान है। इस यन्त्र को शुभ योग में भोज पत्र या कागज पर अष्ट गन्ध से अनार की कलम से लिखे और लिखने के बाद भेंट कर ऊपर रेशम का धागा लपेटते हुए नो आंटे लगा देवे। बाद में धूप खेवे मादलिये में रखें। गले में या कमर पर जहाँ

यन्त्र नं० १२

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

सुविधा हो बांध देवें वास्तव में गले में बांधना अच्छा रहता है। इसके प्रभाव से बालक बालिका के लिये भय, चमक, डर आदि उपद्रव नहीं होते और हर प्रकार से रक्षा होती है ॥१२॥

आपत्ति निवारण बीसा यन्त्र ॥१३॥

मनुष्य के लिये आपत्ति तो सामने खड़ी होती है। संसार आधि-व्याधि उपाधि की खान है। जब जब कष्ट आते हैं तब मित्र भी बैरी बन जाते हैं। ऐसे समय में इस यन्त्र द्वारा शांति मिलती है। आपत्ति को आपत्ति मानता रहे और हताश होता रहे तो अध्यिरता बढ़ती

यन्त्र नं० १३
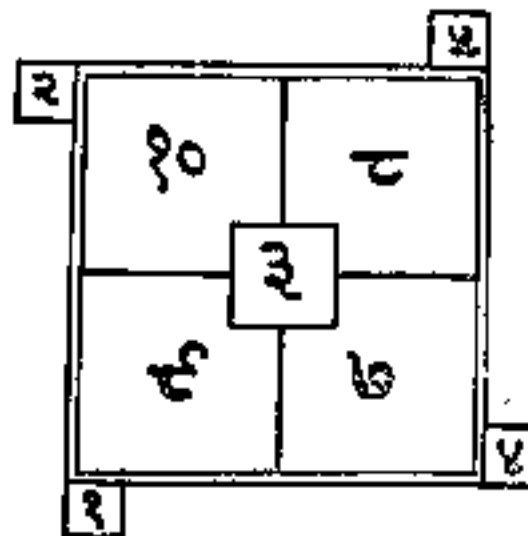
है। अतः इस यन्त्र को पंच गंध से चमेली की कलम से भोजपत्र या कागज पर लिख कर पास में रखो और जिस मनुष्य के लिये यन्त्र बनाया हो उसका नाम यंत्र में लिखो अमुक की आपत्ति

निवारणार्थ ऐसा लिख कर समेट कर चांवल, सुपारी, पुष्प और यंत्र हाथ में दे देवे। लेने वाला मंत्र को पास में रखे और चांवल सुपारी आदि जल में प्रवेश करा देवे। आपत्ति से बचाव होगा और आपत्ति को नष्ट करने में हिम्मत पैदा होगी। दिमाग में स्थिरता आवेगी साथ ही अपने इष्ट देव के स्मरण को भी करता रहे। इष्ट का आराधना ऐसे समय में बहुत सहायक होता है। और दान, पुण्य करने से आपत्ति का निवारण होता है। इस बात का ध्यान रखें। इष्ट सिद्धि होगी ॥१३॥

गृह क्लेश निवारण बीसा यन्त्र ॥१४॥

गृह क्लेश गृहस्थ के यहाँ अनायास छोटी बड़ी बात में हुआ करता है और सामान्य क्लेश हुआ हो तो जल्दी नष्ट हो जाता है परन्तु किसी समय ऐसा हो जाता है कि उसे दूर करने में कई तरह की कठिनाईयां आ जाती है और क्लेश, दिन-दिन बढ़ता रहता है। और ऐसे समय में यह बीसा यंत्र बहुत काम देता है। इस यंत्र को भोज पत्र या कागज पर यक्ष कर्दम से

यन्त्र नं० १४
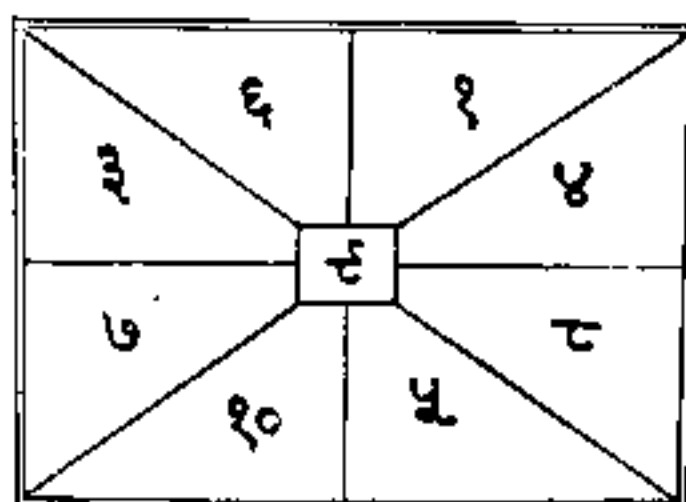
लिखना चाहिये और लिखने के बाद एक यंत्र को ऐसी जगह लगा देना कि जिस पर सारे कुटुम्ब की दृष्टि पड़ती रहे और एक यंत्र घर का मुखिया पुरुष निज के पास में रखें और पहला यंत्र जिस जगह लगाया हो वह शरीर भाग से ऊंची जगह पर लगावे और नित्य धूप खेय कर उपसम होने की प्रार्थना करे तो क्लेश नष्ट हो जाएगा। प्रत्येक कार्य में श्रद्धा रखनी चाहिये। इष्ट देव के स्मरण को कभी नहीं भूलना, जिससे कार्य की सिद्धि होगी ॥१४॥

लक्ष्मी प्राप्ति बीसा यन्त्र ।।१५।।

संसार में लक्ष्मी की लालसा अधिक रहा करती है। इसीलिये लक्ष्मी प्राप्ति के लिए अनेक उपाय संसार में गतिमान हो रहे हैं और ऐसे कार्यों की सफलता के लिये यह यंत्र काम में आता है। जिसको इस यंत्र का उपयोग करना हो तब उत्तम समय देखकर अष्ट

यन्त्र नं० १५
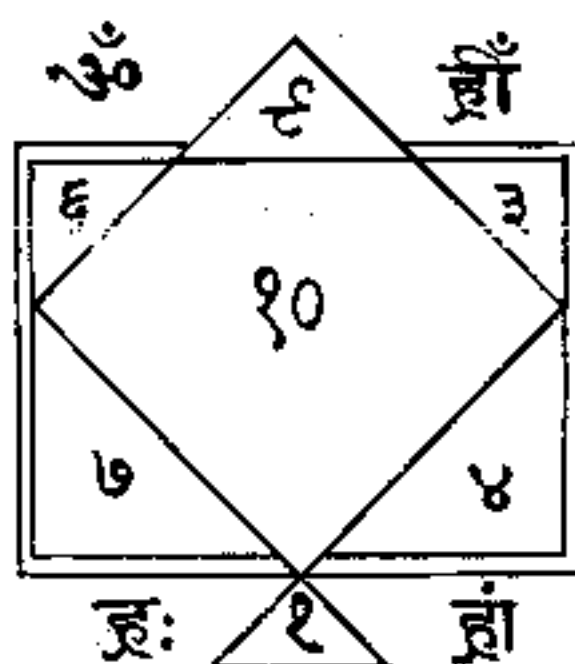
गंध से या पंच गंध से लिखले। कलम सोने की या अनार की अथवा चमेली की जैसी भी मिल सके लेकर भोजपत्र या कागज पर लिखे और यंत्र को अपने पास में रखे। हो सके तो इस तरह का यंत्र तांबे के पत्र पर तैयार करा, प्रतिष्ठित करा, निज के मकान में या दुकान में स्थापना कर नित्य पूजा करें। सुबह शाम घी का दीपक कर दिया करें तो लाभ मिलेगा। इष्टदेव के स्मरण को न भूलें। पुण्य संचय करें पुण्य से आशाएँ फलती हैं और दान देवें तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।।१५।।

भूत-पिशाच-डाकिनी पीड़ा हर बीसा यन्त्र ।।१६।।

जब ऐसा वहम हो जाय कि भूत पिशाच-डाकिनी पीड़ा दे रही हो तब यंत्र-मंत्र-तंत्र वाले को तलाश की जाती है। और इस तरह के वहम अक्सर स्त्रियों को हो जाया करते हैं और ऐसे वहम का असर हो जाने से दिन भर सुस्ती रहती है रोती है, रुग्णता रखती है और ऐसे वहम का असर और पाचन शक्ति कम हो जाती है। और भी कई तरह के उपद्रव

हो जाने से घर के सारे मनुष्य चिंतातुर हो जाते हैं और यंत्र मंत्र वालों की तलाश करने में बहुत साधन खर्च करते है ऐसे समय में यह बीसा यंत्र काम देता है। यंत्र को यक्ष कर्दम से अनार की कलम से लिखना चाहिये लिखते समय उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके बैठना और

यन्त्र नं० १६

यंत्र भोज पत्र पर अथवा कागज पर लिखवा कर दो यंत्र करा लेना। जिसमें से एक यंत्र को मादलिया में रखकर गले में या हाथ में बांध देना। दूसरा यंत्र नित्य प्रति देखकर डब्बी में रख देना और जिस समय पीड़ा हो तब दो-चार मिनट तक आंखें बन्द किये बगैर यंत्र को एक दृष्टि से देखकर वापस रख देना, सो पीड़ा दूर हो जायेगी, कष्ट मिटेगा और धन व्यय से बचत होगी। धर्म नीति को नहीं छोड़ना ।।१६।।

बाल भय हर इक्कीसा यन्त्र ।।१७।।

बालक को जब पीड़ा होती है, चमक हो जाती है तब अधिक भय पुत्र की माता को

यन्त्र नं० १७

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

हुआ करता है और जिस प्रकार से हो सके पीड़ा मिटाने का उपाय किये जाते हैं, और घर के सब लोग ऐसा अनुमान करते हैं कि किसी की दृष्टि लगने से या भय से अथवा चमकते यह पीड़ा हो गयी है। इस तरह की पीड़ा दूर करने में यह यंत्र सहायक होता है। जब यंत्र तैयार करना हो तब भोजपत्र अथवा कागज पर यक्ष कर्दम से अनार की कलम लेकर लिखना चाहिये। जब यंत्र तैयार हो जाय तब समेट कर कच्चे रेशमी धागे से सात अथवा नौ आंटे देकर मादलिये में रख गले में या हाथ में बांधने से पीड़ा मिट जाती है। आपत्ति चिन्ता का नाश हो जाता है। बालक आराम पाता है। नित्य इष्टदेव के स्मरण को नहीं भूलना चाहिये ॥ १७ ॥

नजर दृष्टि चौंबीसा यन्त्र ॥१८॥

बालक को दृष्टि दोष हो जाता है। तब दूध पीने या कुछ खाते समय अरुचि हो जाने से वमन हो जाता है। पाचन शक्ति कम हो जाने से मुखाकृति रक्त रहित दिखने लगती

यन्त्र नं० १८

७	६	११
१२	८	४
५	१०	९

है। इस तरह की हालत हो जाने से घर में सबको चिंता हो जाती है। इस तरह परिस्थिति में चौबीसा यंत्र भोजपत्र अथवा कागज पर अनार की कलम लेकर यक्ष कर्दम से लिखना चाहिये और मादलिये में रख गले में या हाथ पर बांधना और जिस मनुष्य का या स्त्री की दृष्टि की दृष्टि दोष हुआ हो उसका नाम देकर दृष्टि दोष निवारणार्थ लिखना चाहिये यदि नाम स्मरण न हो तो केवल इतना ही लिखना कि दृष्टि दोष निवारणार्थ यंत्र तैयार हो जाय तब समेट कर कच्चे रेशमी धागे में आंटे देकर यंत्र के पास में रखे या गले पर या हाथ पर पर बांधे तो दृष्टि दोष दूर हो जाता है ॥ १८ ॥

प्रसूती पीड़ा हर उन्तीसा यन्त्र ॥१६॥

यह यंत्र उन्तीसा और तीसा कहलाता है। ऊपर के तीन कोठे और बांयी तरफ के तीन कोठों में तो उन्तीस का योग आता है। औरमध्यभाग के तीनों कोठे और नीचे के

यन्त्र नं० १६

१५	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

तीन कोठे और ऊपर से नीचे तक मध्य विमाना व दाहिनी ओर के तीन कोठों में तीस का योग आता है गर्भ प्रसव के समय में यदि पीड़ा हो रही हो तब इस यंत्र को कुम्हार के अवाड़े की कोरी कोठरी पर अष्ट गंध से लिखकर बताने से प्रसव सुख हो जाएगा। बताने के बाद भी पीड़ा होती है तो यंत्र को पीतल या तांबे के पत्ते पर या थाली में अष्ट गंध से अनार की कलम से लिख कर धूप देकर धोकर पिलाने से पीड़ा मिटती है और प्रसव सुखपूर्वक हो जायगा॥ १६ ॥

गर्भ रक्षा तीसा यन्त्र ॥२०॥

यह यंत्र जब प्रसव का समय निकट नहीं और पेट में दर्द या और तरह की पीड़ा

यन्त्र नं० २०

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

होती है तो उस यन्त्र को अष्ट गंध से लिखकर पास में रखने से पीड़ा मिटेगी। अकाल में प्रसव नहीं होगा और शरीर स्वस्थ रहेगा ॥ २० ॥

गर्भ रक्षा पुष्टि दाता बत्तीसा यन्त्र ॥२१॥

यह यंत्र गर्भ रक्षा के लिए उत्तम माना गया है। जब महिने दो महिने तक गर्भ स्थिर रहकर गिर जाता हो अथवा दो चार महीने बाद ऋतुस्राव हो जाता हो तो इस यंत्र को अष्ट गंध से तैयार करके पास में रख लेने से या कमर पर बांधने से इस तरह के दोष

यन्त्र नं० २१

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

मिट जाते हैं। गर्भ की रक्षा होती है और पूर्ण काल में प्रसव होता है। विशेष कर गर्भ स्थित रहने के पश्चात् बाल बुद्धि से जो स्त्री ब्रम्हचर्य नहीं पालती हो अथवा गर्म पदार्थ खाती पीती हो उसी गर्भ स्राव होना संभव है। और दो चार बार इस त ह हो जाने से प्रकृति ही ऐसी बन जाती है। इसलिये ऐसे अमंगल करने वाले कार्य को नहीं करना चाहिये और यंत्र पर विश्वास रखकर शुद्धता से रखेंगे तो लाभ होगा ॥ २१ ॥

भयहर सुख्वं व्यवसाय वर्धक चौंतीसा यन्त्र ॥ २२ ॥

इस यन्त्र को निज जगह व्यवसाय की रोकड़ रहती हो या धन-सम्पत्ति रखने का स्थान हो या तिजोरी के अन्दर दीवाली के दिन शुभ समय लिखकर दीप, धूप, पुष्प से पूजा करते रहना। यदि नित्य नहीं हो सके तो आपत्ति भी नहीं है। इस यन्त्र को अष्टगंध से लिख-

यन्त्र नं० २२

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

कर पास में रखा जाय तो उत्तम है। तांबे के पत्रे पर तैयार कर प्रतिष्ठित करके तिजोरी में रखना भी अच्छा है। जैसा जिसको अच्छा मालूम हो करना चाहिए ।। २२ ।।

मंत्राक्षर सहित चौतीसा यंत्र ।। २३ ।।

यह चौतीसा यन्त्र बहुत चमत्कारी है। धन की इच्छा करने वाले और ऋद्धि सिद्धि जय विजय के इच्छुक लोगों की मनोकामना सिद्ध करने वाला यह यन्त्र है। इस यन्त्र को तांबे

यन्त्र नं० २३

ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ध	न
कुरु	९	१६	८	१	दा
कुरु	६	३	१३	१२	य
द्धि	१५	१०	२	७	म
सि	४	५	११	१४	म
यं	ज	द्धि	वृ	द्धि	ऋ

के पतड़े पर तैयार कर प्रतिष्ठित करा लेवे और हो सके तो मंत्र एक लाख जाप यन्त्र के सामने धूप, दीप, रख कर लेवे। यदि इतना जाप नहीं हो सके तो साढे बारह हजार जाप तो अवश्य कर लेना चाहिये। जाप करते मंत्र बोला जाय उसमें एक गुरु कम है वह यह है कि मंत्र के अन्त में स्वाहा: पल्लव से जाप करता जाय अर्थात कुरु कुरु स्वाहा करना चाहिये जिसमें मंत्र शक्ति बढ़ेगी और यंत्र-मंत्र नव पल्लवति जैसा होकर लाभ पहुँचायगा। जाप करते समय एक यंत्र भोज पत्र पर तैयार कर जाप करते समय तांबे के पतड़े वाले यंत्र के पास ही रखें। जब जाप सम्पूर्ण हो जाये तब भोजपत्र वाले यन्त्र को नित्य अपने पास में रखे और तांबे के यंत्र को, दुकान में या मकान में स्थापित कर नित्य दीप, पूजा किया करें। इतना कर लेने के बाद हो सके तो मंत्र की एक माला नित्य फेर लवें। और नहीं हो सके तो कम से कम २१ जाप तो अवश्य करना चाहिये। श्रद्धा रख कर इष्ट देव का स्मरण करता रहे। नीति से चले और दान पुण्य करता रहे तो लाभ होगा ॥ २३ ॥

प्रभाव प्रशंसा वर्धक चौतीसा यंत्र ॥ २४ ॥

चौतीसा यंत्र बहुत प्रसिद्ध है। और व्यापारी वर्ग तो इस यंत्र का बहुमान विशेष प्रकार से करते हैं। मेदा पाट मरु भूमि और मालव प्रांत में व्यापारी लोग अपनी दुकान पर

यन्त्र नं० २४

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	१	१४

दीवाली के दिन लिखते हैं प्राचीन काल में ऐसी प्रथा चलती हैं। कि शुभ समय में सिन्दुर से गणपति के पास लिखते हैं। दरवाजे पर, मकान की दीवार पर लिखना हो तो हड़मची से लिखना चाहिए। इस यंत्र को लिखने के बाद धूप, पूजा कर नमस्कार करने से व्यापार चलता रहता है। और व्यापारियों में इज्जत बढ़ती है प्रशंसा होती है और ऐसे यंत्र भोज पत्र पर लिख-

कर पास में रखने से व्यापारी वर्ग में आगे वान की गिनती में आ जाता है। हर एक कार्य में लोग सलाह पूछने आयेंगे। परन्तु साथ ही कुछ योग्यता, बुद्धिमान, धैर्यता और निष्पक्षता भी होना चाहिये। संस्कार न हों और मिलन सार भी न हों तो यंत्र से साधारण फल मिलेगा। [illegible] होगा तो विशेष फल मिलेगा ॥२४॥

[illegible] यंत्र ॥२५॥

[illegible]

[illegible]

१७	१६	२	७
६	३	१४	१३
१२	११	[illegible]	१
४	५	[illegible]	[illegible]

दीवार पर सिन्दूर से लिखे तो व्यापार बढ़ता है। व्यापार करते समय किसी प्रकार का भय, संकट आता हो तो मिट जायगा, प्रभाव बढ़ेगा और इस यंत्र को भोज पत्र पर लिख कर पास में रखना भी शुभ सूचक है ॥२५॥

सम्पत्ति प्रदान चालीसा यंत्र ॥२६॥

चालीसा यंत्र दो प्रकार का है। दोनो उत्तम है जो सामने है इस यंत्र को किसी भी महिने की सुदी पक्ष की एकादशी के दिन अथवा पूर्णिमा के दिन पंच गंध से लिखना चाहिये पंच गंध (१) केसर (२) कस्तूरी (३) कर्पूर (४) चन्दन (५) गोरोचन इन पांचो को मिश्रित कर उत्तम गंध बनाकर स्वच्छ भोजपत्र पर लिखना चाहिये। यह यंत्र पास में हो तो चोर, भय, मिटता है और नदी के किनारे या तालाब की पालपर बांध आसन बिछाकर बैठें।

शुभ समय में यंत्र लिखे। लिखते समय दृष्टि जल पर भी पड़ती रहे और लिखते समय धूप, दीप, अखंड रखे तो मने इच्छा पूर्ण होती है। इतना स्मरण रखना चाहिये कि ब्रह्मचर्य पालन

यंत्र नं. २६

१२	१६	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

में सभ्यता का व्यवहार करने में और शुद्ध सम्यक वृती से रहने में किसी प्रकार से कमी नहीं होनी चाहिये। आचरण शुद्ध रखने से क्रिया साधन फल देती है।।२६।।

ज्वर पीड़ा हर साठिया यंत्र ।।२७।।

यह साठिया यंत्र ज्वर ताप एकान्तरा तिजारी आदि के मिटाने के काम में आता है इस तरह के डोरे धागे व यंत्र बनवाने की प्रथा छोटे गांवो में विशेष होती है और जो लोग

यंत्र नं. २७

१	६	१	१८
६	१३	१७	४
१६	२	८	११
३	१६	१४	७

जिसमें श्रद्धा रखते हैं उनको मंत्र तंत्र यंत्र फलते भी है इस तरह के कार्य में इस यंत्र को अष्ट

गंध से तैयार कराके पास में रखने से पीड़ा दूर होती है शांति मिलती है। भोजपत्र पर अथवा कागज पर लिख पीडित के गले या हाथ पर बांधने से अथवा पास में रखने से लाभ होता है। इस यंत्र को कांसे के स्वच्छ पात्र में अष्ट गंध से लिखकर पी सकता है, उत्तम पानी से धोकर पानी पिलाने से सभी ज्वरादि पीड़ा नष्ट हो जाती है ॥२७॥

चोबीस जिन पेसठिया यंत्र ॥२८॥

अथ पंच षष्टि यंत्र गर्भित चतुर्विशति जिन स्तोत्रम। वन्दे धर्म जिनंसदा सुख करं चन्द्र प्रभं नाभिजं। श्री मन्दिर जिनेश्वरं जय करं कुन्थुं च शांति जिनम्। मुक्ति श्री फल दायनन्त मुनिपं वंधे सुपार्श्व विभुं। श्री मल्मेध नृपात्म जंच सुखदं पार्श्वं मनाड़े भीष्टदम ॥१॥ श्री नेमीश्वर सुव्रतांच विमल पद्म प्रभं सावर सेवे संभव शंपूर नमि जिनं मल्लि जया नदनम्। वंदे श्रीजिन शीतलं च सुविधं सेवेड़ जितं मुक्ति दं श्री संव वतपञ्च विशंति नभ साक्षा दंरं वैष्णवम् ॥२॥ स्तोत्रं सर्व जिनेश्वरै रभिगतं मन्त्रेषु मंत्र वरं एतत् स सङ्गत यंत्र एव विजयो द्रध्यौ लिखित त्वाशु भेः पार्श्वे सन्निरणा भाणा सब सुखदो माङ्गल्यमाला प्रदो बामांगे वनिता नारास्त दितरे कुर्वन्तुये भावतः ॥३॥ प्रस्थाने स्थिति युद्धवाद करणे राजादि सन्दर्शने। वश्यार्थे सुत हेत बंधन कृते रक्षन्तु पार्श्वे सदा। मार्गे संविण में दवाग्नि ज्वलिते चिन्ता दिनि नशिने। यंत्रो ध्यं मुनि नेत्रसिह कविता सङ्ग स्थितः सौख्यदः ॥४॥ इति पंच षष्टि यंत्र स्थापना ॥२८॥ उपर बताया हुआ स्तोत्र बोलते जाइये और जिन तीर्थंकर भगवान के नाम का अंक आवे, उतनो अंक संख्या लिखने से पेसठिया यंत्र तैयार हो जाता है। इस तरह के यंत्र को, तांबे के पतड़े पर तैयार कर शुद्ध

यंत्र नं. २८

२२	२९	२	७
६	३	२६	२५
२८	२३	८	१
४	५	२४	२७

कराने के बाद घर में स्थापित कर ऊपर बताया हुआ स्तोत्र नित्य पढ़े, स्तुति बोल कर नमन करना चाहिये। इस तरह के यंत्र को भोजपत्र पर लिखवा कर पास में रखने से परदेश

जाते समय अथवा परदेश में रहते समय में लाभ होता रहेगा। किसी के साथ वाद विवाद करने से जय प्राप्त होगी राजा के पास अथवा और किसी के पास जाने से आदर होगा। निः सन्तान को पुत्र प्राप्ति होगी निर्धन को धन प्राप्त होगा। मार्ग में किसी प्रकार का भय नहीं होगा चोरो के उपद्रव से बचाव होगा। अग्नि प्रकोप से पीड़ा न होगी और अकस्मात भय में

यंत्र नं. २६

१५	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२२	२०	१३	६	४
३	२१	१९	१२	१०
९	२	१५	१८	११

रक्षा होगी चिंता नष्ट होगी प्रत्येक कार्य में विजय प्राप्त होगी इसीलिये जो अपना भविष्य उज्जवल बनाना चाहते हैं उन पुरूषों को इस यंत्र का आराधना करनी चाहिये। दूसरा चोबीस जिन पेंसठिया यंत्र ।।२६।।

पंचा षष्टि यंत्र गर्भित ।।२६।।

श्री चतुर्विंशित जिन स्तोत्रम्। आदि नेमि जिनं नौमी संभव सुविधं तथा, धर्म नाथ महादेवं शांति शांति कर सदा ।।१।। अनंतं सुव्रतं भक्तया नमि नाथं जिनोत्तमम्। अजितं जित कन्दर्पं चन्द्रं चन्द्र समप्रभम् ।।२।। आदिनाथं तथा देवं सुपार्श्वं विमलंजिनं। मल्लि नाथं गुणोपेतं धनुषां पंच विंशतिम् ।।३।। अरनाथं महावीरं सुमतिं च जगद गुरुम् श्री प्रद्म प्रभ भाभं।

[illegible]

सुग [illegible] ... [illegible] ।।४।। [illegible]

कमल कोषे धी मतां ध्येय रूपम् । जयतिलक गुरु श्री सूरि राजस्य शिष्यो वदति सुख निदानं । मोक्ष लक्ष्मी निवासम् ।।८।। दूसरे पंसठिये यंत्र की स्थापना ।।२६।। इस यंत्र का जो स्तोत्र आठ श्लोक का बताया है उसका पाठ करते समय जिन तिर्थंकर का नाम आवे उनकी संख्या का अंक लिखने से पेंसठिया यंत्र तैयार हो जाता है। इस यंत्र का महात्मय भी बहुत है। यंत्र के

यंत्र नं. २६

२२	३	६	१५	१६
१४	२०	१६	२	८
१	७	१३	१६	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

विधानानुसार ही तैयार करना चाहिये। जिस घर में एसे यंत्र की स्थापना पूजा हुआ करती है उस घर में आनन्द मंगल रहा करता है जो मनुष्य इस यंत्र की आराधना करते हैं उनको प्रत्येक प्रकार के सुख मिलते हैं। और जिस मकान में स्थापना की हो वहां पर भूत-प्रेत पिशाच का भय नहीं होता। अगर हुआ हो तो नष्ट हो जाता है। इस यंत्र का जितना आदर करेंगे उतना ही अधिक सुख पा सकेंगे। इस यंत्र को निज के पास रखना हो तो भोज पत्र पर तैयार कराके रखना चाहिये। ऐसे यंत्र शुद्ध अष्ट गंध से लिखने से लाभ देते हैं ।।२६।।

लक्ष्मी प्रदान अडसठिया यंत्र ।।३०।।

यह अडसठिया यंत्र बहुत प्रसिद्ध है। कई लोग दीवाली के दिन शुभ समय दुकान के मंगल के स्थान पर लिखते हैं। इस यंत्र में यह खूबी है कि लक्ष्मी प्राप्ति के हेतु चमेली की

यंत्र नं० ३०

२	२८	८	३०
१६	२२	१०	२०
२६	४	३२	६
२४	१४	१८	१२

कलम लेकर अष्टगंध से लिखना चाहिये। और समेट कर रेशम लपेट कर निज के पास रखना और व्यापार करते समय तो यंत्र को पास में रख कर ही करना चाहिये ॥३०॥

नित्य लक्ष्मी लाभ दाता बहतरिया यन्त्र ॥३१॥

बहुतरि यंत्र के लिये कई मनुष्य खोज करते हैं। मंत्र का मिल जाना तो सहज बात है परन्तु विधान का मिलना कठिन बात है। इस यंत्र को सिद्ध करते समय जहां तक हो सके सिद्ध पुरूष की सानिध्यता में करना चाहिये और सिद्ध पुरूष का योग नहीं मिल सके तो किसी यंत्र के जानकार की सानिध्यता में करना चाहिये शुभ दिन देख कर शरीर व वस्त्र

यंत्र नं० ३१

२५	२०	२६
२६	२४	२३
२१	२८	२३

शुद्धता का उपयोग कर अधिष्ठाता देव को सान्निध्य समझ कर प्रातः काल में ढाई घड़ी कच्ची दिन चढ़े पहले अष्ट गंध से कागज पर बहत्तर यंत्र लिखना चाहिये। कलम जैसी अनुकूल

आवे चमेली की या सोने की निब से लिखें जब यंत्र लिखने बैठें तब तक पूर्व दिशा की ओर मुख रखना चाहिये, आसन सफेद लेना चाहिये, उत्तम बताया है लिखते समय मौन रख कर लिखने के विधान को पूरा करले, वे जब यंत्र लेखन पूरा हो जाय जब यंत्र को एक स्वच्छ पट्टे पर स्थापन अगर बत्ती लगा देवे दीपक स्थापन करे और ढाई घड़ी दिन बाकी रहे तब अर्थात सूर्यास्त से ढाई घड़ी पहले लिखे हुये यंत्रों को ऊंचे रख कर पानी से धोकर कागज भी जलाशय में डाल देवे। यह सब क्रिया समय पर ही करने का पूरा ध्यान रखे। एक विधान ऐसा भी है कि बहत्तर यंत्र अलग-अलग कागज पर लिखना चाहिये। और कोई एक कागज पर लिखना बताते हैं। जैसा जिसको ठीक मालूम हो सुविधा अनुसार लिखे। इस प्रकार से बहत्तर दिन तक ऐसी क्रिया करना चाहिये। और बहत्तर दिन ब्रह्मचर्य पालना चाहिये सत्य निष्ठा से रहना और कुछ तपस्या करे जिससे क्रिया फलवती होगी। इस प्रकार से बहत्तर दिन पूरे हो जाय और तिहत्तरवें दिन १ प्रातः काल ही बहत्तर यंत्र लिखकर एक डब्बी में लेकर दुकान में रख देवे या गल्ले में, तिजोरी में या ताक में रखकर नित्य पूजा कर लिया करे। इस तरह करते रहने से धन की आय और इज्जत, मान, सम्मान की वृद्धि होगी। सुख और सौभाग्य बढ़ता है। इष्ट देव के स्मरण को बीनत्य, सत्य, निष्ठा धर्म नीति को नहीं छोड़ना चाहिये १ तिहत्तर दिन प्रातः काल यंत्र लिख कर डब्बी में रख देवें यंत्र की पूजा कर धूप, दीप, रखना, कुछ भेंट भी रखना और दिन रात अखंड जोत रखना ॥३१॥

सर्प भय हर अस्सीया यन्त्र ॥३२॥

इस यन्त्र का विशेष करके सर्प के उपद्रव में काम आता है। जब सर्प का भय

यन्त्र नं० ३२

३२	३९	२	७
६	३	३६	३५
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

उत्पन्न हुआ या मकान में बराबर निकलता हो अथवा घर नहीं छोड़ता हो तो अस्सीयां यंत्र सिन्दूर से मकान की दीवार पर लिख कर और जहां तक हो ऐसी जगह लिखना चाहिये कि जहां सर्प की दृष्टि यंत्र पर गिर जाय अथवा कांसी की थाली में लिखा हुआ तैयार रखो सो जब सर्प निकले जब उसे थाली बता देवे सो सर्प का भय मिट जायेगा। और उपद्रव नहीं करेगा। विधान तो बताता है कि सर्प उस मकान को छोड़कर ही चला जायगा। किन्तु समय का फेर हो तो इतना [illegible] नहीं देता है तो भी उपद्रव भय तो नही रहेगा। ऐसा समय घर में सर्प हर नाम की औषधि जो काश्मीर जिले में बहुतायत से मिलती है मंगवा कर घर में रखने से सर्प तत्काल निकल जायेगा। लेकिन सर्प को मारने की बुद्धि नहीं रखना चाहिये। सर्प को सताने से वह क्रोध कर के काटता है वह समझता है मुझे मारते है और सताया न जाए तो वह [illegible]

[illegible]

भूत प्रेत हर पिशाचादिका यंत्र [illegible]

[illegible] और बहुत समय तक बेकार सा [illegible] भूत प्रेत नहीं भी बसते [illegible] हो उस मकान में परिवार [illegible]

अक्सर (प्रायः) जब मकान में कोई नहीं रहता हो [illegible] पड़ा हो तो ऐसे मकान में भूत प्रेत स्वतः स्थान बना लेते हैं [illegible] ही और मकान में रहने वाले उसके बाद कुछ अनिष्ट हो जाय [illegible]

यन्त्र नं० ३१

[illegible]
७
३७
१
४०

३४	४२	२
६	३	३९
४१	३५	८
४	५	३६

[illegible] है। लोकवाणी फैल जाती [illegible] नहीं होता है। ऐसी अवस्था

के लिये वहम सा हो जाता है और मकान को खाली कर देते [illegible] है और ऐसे मकान में कोई बिना किराये भी रहने को तैयार [illegible]

में यंत्र को यक्ष कर्दम से मकान की दीवार पर अन्दर के भाग में लिखें । और आवश्यकता हो तो प्रति मकान में लिखना भी बुरा नहीं है । यंत्र लिखने के बाद हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि हे देव स्वस्थान गच्छ: इस तरह करने से उपद्रव शांत हो जायगा और सुख पूर्वक मकान में रह सकेंगे । देव धूप दिल से प्रसन्न होते और प्रार्थना स्वीकार करते हैं । इसलिये इक्कीस दिन तक सांयकाल के समय एक घी का दीपक कर धूप खेंव देनी चाहिये ।।३३।।

सुख शांति दाताः इक्याणवे का यन्त्र ।।३४।।

कभी कभी ऐसा बहम हो जाता है कि इस मकान में आये बाद घर में से बीमारी नहीं निकलती है या सुख से नहीं रहने पाते है । कोई न कोई आपत्ति आ ही जाती है । इस तरह के कारण से उस मकान को छोड़ने की भावना हो जाती है । ऐसा प्रसंग आ जाय तो इस यंत्र को यक्ष कर्दम से मकान के अन्दर व दरवाजे के बाहरी भाग पर लिखना चाहिये । सांयकाल को धूप खेव कर प्रार्थना करना चाहिये कि यंत्राधिष्ठायक देव सुख शांति कुरु २ स्वाहा: इस तरह से इक्कीस दिन तक करने से सुख-शांति रहेगी और बहम मिट जायगा ।।३४।।

यन्त्र नं० ३४

३७	४५	२	७
६	३	४२	४०
४४	३८	८	१
४	५	३९	४३

गृह क्लेश हर निन्यानवे का यन्त्र ।।३५।।

गृहस्थी के गृह संस्कारों व्यवसाय के लिये अथवा विशेष कुटुम्ब के कारण या यों कह दीजिये कि स्त्रियों के स्वभाव के कारण जरा सी बात पर मन मुटाव हो जाता है और उसे न संभाला जाय तो घर में क्लेश बढ़ जाता है । जिस घर में इस तरह के क्लेश होते है उनकी

आजीविका भी कम हो जाती है और व्यवसाय व व्यवहार में शोभा भी कम हो जाती है। बाहर के दुश्मन से मनुष्य सम्भल के रह सकता है किन्तु घर का दुश्मन खड़ा हो तो आपत्ति रूप हो जाती है। धन, वैभव, मकान मिलकियत बही दस्तरे, खत, खतुन जिसके हाथ आई हो दबा देता है। और ऐसी अवस्था हो जाने से घर की इज्जत कम हो जाती है। इस तरह की परिस्थिति हो तब इस यंत्र को यक्ष कर्दम से मकान के अन्दर और खास कर पणिहारे पर और चूल्हे के पास वाली दीवार पर लिखे और अगरबत्ती या धूप सायंकाल को कर दिया करें। इस तरह से इक्कीस दिन तक करे और बाद में आपस में फैसला करने बैठे तो कार्य निपट जायगा। साथ ही स्मरण रखना चाहिये कि न्याय नीति और कर्तव्य पूर्वक कार्य करोगे तो सफलता मिलेगी। घर की बात को बाहर नहीं फैलने देना चाहिये। इसी में शोभा है इज्जत की रक्षा है। जो लोग स्त्रियों के कहने में आकर भ्रात प्रेम कुटुम्ब स्नेह और कर्तव्य को भूल जाते है। उनका दिन मान बिगड़ा समझना। प्रत्येक कार्य में इष्ट देव को न भूलना चाहिये ॥३५॥

यन्त्र नं० ३५

३६	२९	३४
३१	३३	३५
३२	३७	३०

पुत्र प्राप्ति गर्भ रक्षा यन्त्र ॥३६॥

यह सी का यंत्र है और इसको आशा पूर्ण यंत्र भी कहते है। जिसको सन्तान नहीं हो या गर्भ स्थिति के बाद पूर्ण काल में प्रसन्न होकर पहले ही गिर जाता है तो यह यंत्र काम देता है। इस यंत्र को अष्ट गंध से लिखना चाहिये। अष्ट गंध बनाने में (१) केशर (२) कपूर (३) गोरोचन (४) सिन्दुर (५) हींग (६) खैरसार, इन सब को बराबर लेना परन्तु केशर विशेष डालना, जिससे लिखने जैसा रस तैयार हो जायगा इतना कार्य शुद्धता पूर्वक करके भोज पत्र पर दीवाली के दिन मध्यरात्रि में तैयार कर स्त्री गले पर या हाथ पर जहाँ ठीक मालूम हो बांध देवे। पुत्र के इच्छुक हो तो पत्नि-पति दोनों को बांधना वैसे तो कर्म

यन्त्र नं० ३६

४२	४६	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४

प्रधान है। जैसे कर्म उपार्जन किये होंगे वैसा ही फल मिलेगा परन्तु उद्यम उपाय भी पुरुषों को बताए हुए है, करने में हानि नहीं है। अपने इष्ट देव को स्मरण करते रहें पुण्य प्राप्त करना सो क्रिया फल देगी। स्त्री गर्भ धारण करेगी, पूर्ण काल में प्रसव होगा अपूर्ण समय में गर्भ-पात नहीं होगा ऐसा इस यन्त्र का प्रभाव है। श्रद्धा विश्वास रखने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। पुण्य धर्म साधन नीति व्यवहार से आशा फलती है ॥३६॥

ताप ज्वर पीड़ा हर एक सौ पांचवा यन्त्र ॥३७॥

यह एक सौ पाँचवा यन्त्र है। ताप ज्वर एकान्तरा तिजारी को रोकने से काम देता है।

यन्त्र नं० ३७

५६	७	४२
२१	३५	४६
२८	६३	१४

भोज पत्र पर या कागज पर लिख कर धागे डोरे से हाथ पर बांधने से ताप ज्वरादि मिट जाते

जाते हैं। यन्त्र तैयार हो जायेगा तब धूप से खेव कर इक्कीस बार ऊपर कर पीड़ा वाले को [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	[illegible]	२	[illegible]
[illegible]	[illegible]	८	[illegible]

दीप, पुष्प चढ़ा कर पूजन वास क्षेप तप से पूजा कर सामने फल नैवेद्य चढ़ा कर नमस्कार करें यंत्र को समेट कर पास में रखें। यंत्र जिस कार्य के लिये बनाया हो उसका संकल्प यंत्र की पूजा करने के बाद खयाल कर नमस्कार कर लेवें और जहां तक कार्य सिद्ध न हो तब तक प्रातःकाल में नित्य प्रति धूप से या अगरबत्ती से खेव लिया करें। इष्ट देव का स्मरण कभी न भूले। कार्य सिद्ध होगा ॥३८॥

भूत प्रेत कष्ट निवारण एक सौ छत्तीस यन्त्र ॥३९॥

इस यन्त्र को मकान के बाहर भी लिखते हैं और पास में भी रखने को बताया जाता है। वैसे तो लिखने का दिन दीवाली की रात्रि को बताया है। परन्तु आवश्यकता अनुसार जब चाहे लिखले और हो सके तो अमावस्या की रात्रि में लिखना जिसमें यन्त्र लाभ दायक होगा।

जब भूत प्रेत डाकिनी का भय उत्पन्न हुआ हो तो इस यन्त्र को बांधनेसे मिट जायगा और इसी

यन्त्र नं० ३९

४	५६	१६	६०
३२	४४	२०	४०
५२	८	६४	१२
४८	२८	३६	२४

तरह के कष्ट होंगे तो वह भी इस यन्त्र के प्रभाव से कम हो जायेंगे और सुख प्राप्त होगा। इस तरह यन्त्र को भोज पत्र पर या कागज पर अष्ट गंध से लिखना चाहिये और मकान की दीवार पर सिन्दूर से लिखना चाहिये ॥३९॥

पुत्रोत्पति दाता एक सौ सत्तरिया यन्त्र ॥४०॥

यह सौलह कोठे का यन्त्र एक सौ सत्तरिया है। इस यन्त्र से धन प्राप्ति मे जय विजय

यन्त्र नं० ४०

७७	८४	२	७
६	३	८१	८०
८३	७८	८	१
४	५	७९	८२

म, पुत्र प्राप्ति के हेतु बनाना हो तो अष्ट गंध से लिखना चाहिये। भोज पत्र पर काला दाग न हो और स्वच्छ हो। कागज पर लिखे तो अच्छा कागज लेवे और शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा (पूर्णा) तिथि पंचमी दशमी पूर्णिमा को अच्छा होगा देख कर तैयार करें। लेखनी चमेली की या सोने की नीब से लिखे और पास में रखे तो मनोकामना सिद्ध होगी और सुख प्राप्त होगा। धर्म पर पालन्द रह पुण्योपार्जन करने से आशा शीघ्र फलती है। इष्ट देव के स्मरण को नहीं भूलना चाहिये ॥४०॥

एक सौ सत्तारिया दूसरा यन्त्र ॥०१॥

इस यन्त्र को लक्ष्मी प्राप्ति हेतु जय विजय के निर्मित इस यन्त्र को भी काम लेते हैं। गर्भ रक्षा और अन्य प्रकार की पीड़ा मिटाने के लिये भी काम लेते हैं गर्भ रक्षा करने के लिए इस यंत्र को अच्छे दिन शुभ समय में अष्ट गंध से भोजपत्र पत्र अथवा कागज पर लिखना चाहिये।

यन्त्र नं० ४१

४५	३६	५०	३६
४२	४७	३७	४४
३५	४६	४०	४६
४८	३१	४३	३८

ये एक सौ सत्तरिया दोनों यन्त्र लाभदायी है। नीति न्याय पर चलना चाहिए और इष्ट देव को स्मरण करते रहना जिससे यन्त्राधिष्टायक देव प्रसन्न होकर मनोकामना सिद्ध करेंगे। यन्त्र मादलिया में रखें या मोम के कागज में लपेट कर पास में रखें ॥४१॥

व्यापार वृद्धि दो सौ का यंत्र ॥४२॥

इस यंत्र का दो विधान है। पहला विधान तो यह है कि दीवाली के दिन अर्ध रात्रि के समय सिन्दुर या हींगुल से दुकान के बाहर लिखें तो व्यापार की वृद्धि होती है। दूसरा

विधान यह है इस यंत्र को भोज पत्र पर अथवा कागज पर पंच गंध से लिखे जिसमें केशर, कस्तूरी कपूर, गोरोचन और चंदन का मिश्रित हो उत्तम पात्र में पंच गंध से तैयार कर चमेली की कलम से लिखें। यह यंत्र विशेष कर दीवाली के दिन अर्ध रात्रि के समय लिखना चाहिये

यंत्र नं० ४२

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	१
४	५	९४	९७

और ऐसा समय निकट नहीं हो और कार्य को आवश्यकता हो तो अमावस्या के अर्ध रात्रि के समय लिख, और जिसके लिये बनाया गया हो, उसी समय प्रातः काल दे देवे। यंत्र को पास में रखने से ऋतु वन्ति का स्राव नहीं रुकता हो तो रुक जायेगा। गर्भ धारण करेगा और रक्षा होगी इष्ट देव का स्मरण नित्य करना चाहिये ।।४२।।

लक्ष्मी दाता पांच सौ का यंत्र ।।४३।।

इस यंत्र को पास में रखने से लक्ष्मी प्राप्ती होगी और विधान इसका यह है कि

यंत्र नं० ४३

२४२	२४९	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

पुत्र की इच्छा वाले पति-पत्नी पास में रखे तो आशा फलेगी। शुभ कामना के लिये अष्ट गंध से लिखना और बेरी, पुत्र पराजय के हेतु यक्ष कर्दम से लिखना चाहिये। कलम चमेली की लेना और यंत्र मादलिया में रख पास में रखना अथवा कागज में लपेट कर जेब में रखना। धर्म के प्रताप से आशा फलेगी। दान पुण्य करना धर्म निष्ठा रखना ॥४३॥

सात सो चोबीस यंत्र ॥४४॥

इस यंत्र को एक सो इक्यासिया यंत्र भी कहते हैं। इस यंत्र को वशीकरण यंत्रको

यंत्र नं० ४४

१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१
१८१	१८१	१८१	१८१

[illegible]

यंत्र नं० ४५

४९९९२	४९९९९	२	७
६	३	४९९९६	४९९९५
४९९९८	४९९९३	८	१
४	५	४९९९४	४९९९७

रात्रि में लिखते हैं और धन प्राप्ति अथवा दूसरे किसी काम के लिये बनवाना हो तो पंच गंध से लिखते हैं, जिसमें केसर, कस्तूरी चंदन, कपूर, मिश्री का मिश्रण होना चाहिये ॥४५॥

लखिया यंत्र दूसरा ॥४६॥

इसको भी दीवाली के दिन मध्य रात्रि में लिखते हैं और अष्ट गंध से लिख कर यंत्र जिसके लिये बनाया हो अथवा उसका नाम लिखकर पास में रखने से जय विजय होता है

यंत्र नं० ४६

४२०००	४९०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४८०००	४३०००	८०००	१०००
४०००	५०००)	४४०००	४७०००

व्यवसाय करते समय जिस गद्दी पर बैठते हैं उसके नीचे रखने से व्यवसाय में लाभ होता है। ऊपर बताया हुआ लिखिया यंत्र भी ऐसे कार्य में लाभ देता है। जिसको जो यंत्र ठीक लगे उसी

का उपयोग करे। इस यंत्र का एक विधान और भी है। वह हमारे संग्रह में नहीं है। परन्तु विधान यह है कि दीवाली की मध्य रात्रि में लिखकर उसके सामने एक पहर तक यंत्र का ध्यान करे। और फिर वन खंड में या बाग में अथवा जलाशय के किनारे बैठकर यंत्र के सामने एक पहर तक यंत्र का ध्यान करे। जिससे यंत्र सिद्ध हो जायगा क्रिया करते समय लोभान का धूप बनाकर रखना चाहिये तो यंत्र सिद्ध हो जायगा और भी इन दोनो यंत्र के कई चमत्कार है। श्रद्धा रखकर इष्ट देव का स्मरण करते रहना चाहिये जिससे कार्य सिद्ध होगा ॥४६॥

यन्त्र नं० ४७

५१	८	५३	६४	१	४६	६९	६	७१
४६	४४	६२	१९	३७	५५	२४	४२	६०
३५	८०	१७	२८	७३	१०	३३	७८	१५
६६	३	४८	६८	५	५०	७०	७	५२
२१	३९	५७	२३	४१	५९	२१	४३	६१
३०	७५	१२	३२	७७	१४	३४	७९	१६
६७	४	४९	७२	९	५४	६५	२	४७
२२	४०	५८	२७	४५	६३	२०	३८	५६
३१	७६	१३	३६	८१	१८	२९	७४	११

जयपता का यंत्र ।। ४७ ।।

यह जयपता का यंत्र है जिस व्यक्ति को महात्माओं की कृपा प्राप्त हो जाती है उसीको इस यंत्र की आमनाय मिलती है। सामान्य से इस यंत्र के लिये कहा है कि इस यंत्र को पंच गंध अथवा अष्ट गंध से लिखे और किसी खास काम पर विजय पाने के लिये बनाना हो तो यक्ष कर्दम से लिखे। लिखते समय इक्यासी कोठे में पांच का अंक बनाकर चढ़ते अंक से लिखने को शुरू करे जैसे प्रथम पंक्ति के पांचवां कोठे में एक का अंक लिखे। सातवी लाइन के आठवे कोठे में दो का अंक लिखें। चौथी लाइन के पांचवे कोठे में पांच का अंक लिखे। प्रथम लाइन के आठवे कोठे में ६ का अंक लिखे। चौथी लाइन के आठवे कोठे में सात का अंक लिखे। प्रथम लाइन के दूसरे कोठे में आठ का अंक लिखे। सातवी लाइन के पांचवे कोठे मे नौ का अंक लिखे और तीसरी लाइन के छट्ठे कोठे में दस का अंक लिखे। इस तरह से सम्पूर्ण अंक को चढ़ते अंक से लिखकर पूर्ण करे और तैयार हो जाने पर जिस मनुष्य के लिये बनाया हो उसका नाम व कार्य का संक्षेप नाम यंत्र के नीचे लिखे। इस तरह से तैयार कर लेने के बाद यंत्र को एक बाजोट पर स्थापन कर अष्ट द्रव्य से पूजा कर यथा शक्ति भेंट भी रखे और बहुत मान से यंत्र को लेकर पास में रखें तो लाभदायी होता है। नीति न्याय को नहीं छोड़े। चरित्र शुद्ध रखें। जिससे सफलता मिलेगी ।। ४७ ।।

विजयपता का यंत्र ।। ४८ ।।

इस यंत्र के लिखने का विधान जयपताका की तरह समझना चाहिये। विशेष इस यंत्र में यह विशेषता है कि प्रत्येक पंक्ति के पांचवे खाने में अंताक्षर एक है चौथे में अनुस्वर है और छठो पंक्ति के प्रत्येक खाने में अंताक्षर दो का है आठवे कोठे में अंताक्षर तीन का है कहीं ६ का, कहीं आठ का अंक अधिक बार आया है। इस यंत्र को विधि से लिख कर पास में रखने से विजय मिलती है। वाद विवाद करते समय मुकदमें की बहस करते समय और संग्राम में अथवा इसी तरह के दूसरे कामों में प्रयास प्रमाण या प्रवेश किया जाय तब इस यंत्र को पास रखने से सहायता मिलती है इस यंत्र का लेखन अष्ट गंध [illegible] अथवा यक्ष कर्दम से हो सकता है बाकी विधान जयपताका यंत्र की तरह

यन्त्र नं० ४८

४७	५८	६९	८०	१	१२	२३	३४	४९
५७	६८	७९	९०	११	२२	३३	४४	४६
६७	७८	८	१०	२१	३२	४३	५४	५६
७७	७	१८	२०	३१	४२	५३	५५	६६
६	१७	१९	३०	४१	५२	६३	६५	७६
१६	२७	२९	४०	५१	६२	७३	७५	५
२६	२८	३९	५०	६१	७२	८३	४	१५
३६	३८	४९	६०	७१	८२	४	१४	२५
३७	४८	५९	७०	८१	२	१३	२५	३५

संकट मोचन यंत्र ॥ ४९ ॥

इस यंत्र से यह लाभ है कि शरीर अस्वस्थ हो गया हो या पेट दर्द हो गया हो तो उस समय अष्ट गंध से कांसो की थाली में यंत्र लिखकर, धोकर पिलाने से दर्द मिट जाता है। इस तरह के विधान है, सो समझ कर उपयोग करे ॥ ४९ ॥

यन्त्र नं० ४९

११५	१५५	१५६	१३२	१५४	१५३	१२७
१३८	११६	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१३४	११७	१३०	१२५	१३५	१५६
१३९	१४०	१२४	११८	१४१	१४३	१४२
१४४	१२३	१४५	१२९	११९	१४६	१४७
१२२	१४८	१४९	१२६	१५०	१२०	१२१

विजय यंत्र ॥ ५० ॥

इस यंत्र को विजय यंत्र और वर्द्धमान पताका भी कहते हैं हमारे संग्रह में इसका नाम वर्द्धमान पताका है, परन्तु इस यंत्र को विजय राम यंत्र समझना चाहिये क्योंकि यही नाम इस यंत्र के मंत्र में आया है। इस यंत्र को रविवार के दिन लिखना चाहिये। और ऐसा भी लेख है कि केपुसंडिशा तारा का उदय हो तब लिखना चाहिये। जब यंत्र तैयार हो जाय तब एक बाजोर पर स्थापन कर धूप दीप की जयणा सहित रखकर कुछ भेंट रखकर और नीचे बताये हुये मंत्र की एक माला फेरना। ॥ मंत्र ॥ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः विजय मंत्र राज्यधार कस्य ऋद्धि वृद्धि जयं सुखं सौभाग्य लक्ष्मी मम् सिद्धि कुरु २ स्वाहाः ॥ जिसको जैसा विधान मालूम हो, उपयोग करे। इस तरह की माला फेरते पंचामृत मिश्रित शुद्ध वस्तुओं का हवन करना भी बताया है। इस यंत्र के नौ विभाग बताये हैं प्रत्येक विभाग के अलग-२ यंत्र भी है। जिसका वर्णन इस प्रकार है—

(१) प्रथम विभाग के यंत्र से दृष्टि दोष, डाकिनी शाकिनी, भूतप्रेत आदि का भय नष्ट होता है।

(२) दूसरे विभाग के यंत्र से अधिकारी आदि की प्रसन्नता रहती है।

(३) तीसरे विभाग के यंत्र से अग्नि भय, सर्प का भय या उपद्रव नष्ट होता है।

(४) चौथे विभाग के यंत्र से ताप एकान्तरा, तिजारी आदि नष्ट होती है।

(५) पाँचवे विभाग के यंत्र से नवग्रह आदि पीड़ा नष्ट होती है।

(६) छठे विभाग के यंत्र से विजय पाते हैं।

(७) सातवें विभाग के यंत्र से मन्दिर आदि के दरवाजे पर लिखने से दिन-दिन में उन्नति होती है।

(८) आठवें विभाग के यंत्र से धनुष आदि शस्त्र पर बांधने से विजय पाते हैं।

(९) नवें विभाग के यंत्र से दीवाली के दिन दीवार पर लिखने से जय विजय होती है। इस तरह से नौ विभाग के यंत्रो का वर्णन है। प्रथम विभाग के अंक गिनती के अनुसार, प्रथम पंक्ति के मध्य का समझना, इसी तरह से दूसरा, तीसरा आदि चढ़ते हुए अंकों से समझना चाहिए। इस यंत्र का दूसरा विभाग इस प्रकार है कि विधि सहित यंत्र तैयार करके एकान्त स्थान में शुद्ध भूमि बनाकर कुम्भ स्थापना कर अखण्ड ज्योत रखे और चोकोर पाटे पर नन्दी वर्धन साथिया करे। चावल सवा सेर, देशी तेल के केसर से रंगे हुये अखण्ड हो, उनसे साथिया कर फल नैवेद्य और रुपया, नारियल चढ़ावे फिर सामने बैठकर साढ़े बारह हजार जाप यंत्र के सामने पूरे करले। वे नियमित जाप की संख्या प्रतिदिन एक सी हो इस तरह से विभाग कर जाप पांच दिन अथवा आठ दिन में पूरा कर लेवे। जाप करने के दिनों में चढ़ने से पहले पूजा कर लेवे। भूमि सयन ब्रह्मचर्य पालन और आरम्भ का त्याग कर नित्य स्थापना कर स्थान में ही करे। जिसदिन जाप पूरे हो जाय साथिया में से चावल चूटि भर कर लेवे। और सिरहाने रखकर एक माला यन्त्र की फर कर सो जावे। रात्रि के समय स्वप्न में शुभा शुभ कथन देव द्वारा मालूम होंगे और धन वृद्धि होगी। कार्य सिद्ध होगा। आशा श्रद्धा से और पुण्य से फलती है। पुण्य, धर्म साधन से उपार्जित होता है। इसका पूरा ख्याल करे। ॥५०॥

यन्त्र नं० ५०

७१	६४	६९	८	१	६	५३	४६	५१
६६	६८	७०	३	५	७	४८	५०	५२
६७	७२	६५	४	९	२	४९	५४	४७
२६	१९	२४	४४	३७	४२	६२	५५	६०
२१	२३	२५	३९	४१	४३	५७	५९	६१
२२	२७	२५	४०	४५	३८	५८	६३	५६
३५	२८	३३	८०	७३	७८	१७	१०	१५
३०	३२	३४	७५	७७	७९	१२	१४	१६
३१	३६	२९	७६	८१	७४	१३	१८	११

यन्त्र नं० ५१

२५८	१
३६६	२
४७०	३
३६६	४
४७०	५
५८१	६
४७०	७
५८१	८
६९२	९
५८१	०

सिद्धा यन्त्र ।। ५१ ।।

यह सिद्धा यन्त्र, सिद्धा सटोरियों के काम का है। इस यन्त्र को पास में रखने की आवश्यकता नहीं है। न हीं दीप, धूप रखकर भोज पत्र में लिखने की आवश्यकता है। यह यन्त्र तो जो इसकी गिनती के अनुभवी हैं उन्हीं के काम का है। जो पुरुष इसका उपयोग समझ सकेगा, वही लोग ऐसे यन्त्रों से लाभ उठा सकेंगे और बिना अनुभव से कार्य करने वाला हानि उठाता है ।। ५१ ।।

चौसठ योगिनी यन्त्र ।।५२।।

यह चौसठ योगिनी यन्त्र कई तरह के कार्य सिद्ध करने में समर्थ है। इस यन्त्र के लिखने में यह खूबी है कि एक का अंक लिखे बाद दो अंक तिरच्छे कोठे में, तिरच्छे एक कोठे के बीच में छोड़ कर लिखा गया है। इसी तरह के तमाम अंक तिरछे कोठे में एक-एक छोड़ते हुए लिखे हैं और अन्त में चौसठवें अंक पर समाप्ति की है। इस यन्त्र की लेखन विधि को अच्छी समझ लेना चाहिये और यन्त्र लिख कर जिस कार्य की पूर्ति के लिए बनाया हो उसकी बिगत

यन्त्र नं० ५२

४६	७	२०	३३	४४	५	१८	३१
२१	३४	४५	६	१९	३२	४३	४
८	४७	६०	५७	६२	५३	३०	१७
३५	२२	६३	५४	५९	५६	३	४२
४८	९	५८	६१	५२	४१	१६	२९
२३	३९	५१	६४	५५	५८	१३	२
१०	४९	२६	२५	१२	१५	४०	२७
३७	२४	११	५०	३९	२६	१	१४

और जिसके लिये बनाया हो उसका नाम यन्त्र में लिखना चाहिए। जब यन्त्र, विधि सहित तैयार हो जाये तब शुभ समय में पास में रखे और हो सके वहाँ तक कार्य सिद्धि तक धारण करना चाहिए। धूप नित्य देने से प्रभाव बढ़ता है कष्ट भी शीघ्र मिटता है और भावना फलती है। इष्ट देव देवी की पूजा करना और दान पुण्य करना सो कार्य ठीक होगा ।।५२।'

दूसरा चौसठ योगिनी यंत्र ॥५३॥

२६० का यह यन्त्र बहुत से कार्य में काम आता है। लिखने का विधान सर्वत्र समझना चाहिये। इस यन्त्र को तांबे के पतड़े पर बनवा कर पूजा करने से भी लाभ होता है। इष्ट देव की सहायता से कार्य सिद्ध होता है। मनुष्य का प्रयत्न करने का काम है ॥५३॥

यन्त्र नं० ५३

७	८	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४२	४१	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

उदय अस्त अंक ज्ञाता यंत्र ॥५४॥

यह उदय अस्त अंक ज्ञाता यन्त्र है। इसका ज्ञान जिसको है वह जान सकता है कि

भाव क्या खुलेंगे ? और क्या बन्द होंगे ? इस यन्त्र की गिनती किस प्रकार से करना चाहिए। इस यन्त्र की आम्नाय गुरू नाम से प्राप्त हो जाय तो कार्य सिद्ध होते देर नहीं लगती। इस यन्त्र को द्रव्य प्राप्ति हेतु चितामणि यन्त्र भी कह देना तो अतिशयोक्ति नहीं है। नसीब जोरदार हो तो देर नहीं लगती। यह यन्त्र विशेष करके सटोरियों के काम का है। इसकी गिनती का अभ्यास करने से जानकारी होगी। इष्ट देव के स्मरण को नहीं भूलना चाहिये। दान-पुण्य करने से इच्छाएँ फलती हैं ।।५४।।

यन्त्र नं० ५४

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	४००४ ७४३७	२९९२ ६८८१	४९२५ ०३३७	२५५२ ९३४२	२५५२ ६८९७	६३४१ ५७२५	६९५१ ५०९७	७४९७ ५२२५	९३३५ ०६२९	२५३७ ९६७४
२	६००५ ३६७८	७३५७ ४०००	६९०२ ८१४०	४७६९ ३०७०	८०७९ ५३५५	७३५३ ९५९१	४१९३ ६९७९	८३४६ ७०९७	९२१९ ३१०२	४९७९ २५४०
३	३६०४ ४१००	९७७९ २०२४	५३२६ ७५०४	४११५ ९३७०	०८५३ ९१९९	५०८१ २८८२	५९३५ २४०४	६०६४ १९८२	६८९२ ७१०३	३७६० ७३९६
४	५६६६ ३५८०	५७७५ ३००३	२८८६ ६९४४	६४४१ ५७७३	४५०४ ३३६८	७३३७ २८९१	१५१७ ६००७	२५९६ ३१३७	७३७५ ९५४६	३५३७ २९२४
५	६६०२ ३८८१	८००५ ७५९२	६००६ ५३८४	५५६० ८६७१	९५३७ ४१७०	६४६९ ६२३५	६३७९ ४६३४	५५३६ ६४५२	८७०० १५२९	९५०६ ७३५३
६	८३७० ६९१८	७३३१ ८५०५	६९३७ २६७१	७९०७ ३००३	९६९७ ५३६८	७००७ ३६६९	७५६४ ३९९२	७२५७ २५४१	४१७५ ९२०४	५३६९ ३९४२
७	४००४ ४७९६	३७०२ ४२०८	४००७ ७३९५	१८८१ ३७०२	२९०७ ९६१७	१८२८ ०३८६	३९६२ १९७३	३६७२ १९३१	३७०७ १०७४	३७४० ६३१९
८	५०८९ ७८३५	३००३ २९७३	४००५ ६९९७	८६३० ५७८०	३१२९ ६००६	२५५२ ५८६९	७००७ ६४४६	२५५७ २३४७	३७२९ ००७९	२५२६ ७४९३
९	१४०४ ९५९६	४५२८ ६०५७	४७७१ ११३६	८००४ २१९७	२५५२ ७००७	४१७० १३३६	४५०८ १८०१	७४३५ ९६०३	९२८६ ५२६०	८१६९ २९०४
१०	७१६४ ४६५२	६४२४ २०६९	३७७० ९२०९	६३९६ ४००८	३००४ ३९४६	२१६४ ५३१६	९२०५ ३१८३	९३७१ १८६०	५७०६ ५०३६	०१३० २५५३

शांत होती है। लक्ष्मी लाभ, सन्मान, यश, राज्य मान्यता, कोर्ट में विजय होती है कुष्ट, ज्वर, वायु रोग भी इस यन्त्र को धो कर पिलाने से नष्ट हो जाता है, सर्प का जहर उतर जाता है। एक वर्ण की गाय के दूध से यन्त्र का प्रक्षालन कर पिलाने से वंध्या गर्भ धारण करती है।

जप माला सोना, चांदी, प्रवाल रेशमी, सूत अथवा लीला, सफेद, रंगनी रखना। शुभ चन्द्र में मूल मन्त्र की छः मास में सवा लाख जाप करना चाहिए। यथा शक्ति ब्रह्मचर्य पालना। जाप पूर्ण होने पर प्रतिदिन ६–१०८, २७ या १०८ बार जप करना। यथा शक्ति सप्त क्षेत्रों में पूजन आदि में द्रव्य खर्च करना। पांचों गाथाओं का १०८ बार प्रतिदिन जाप करने से सर्व कार्यो की सिद्धी, सर्व रोगों का नाश सुख संपत्ति की प्राप्ति होती है ।।५५–५६।।

यन्त्र ५६ का
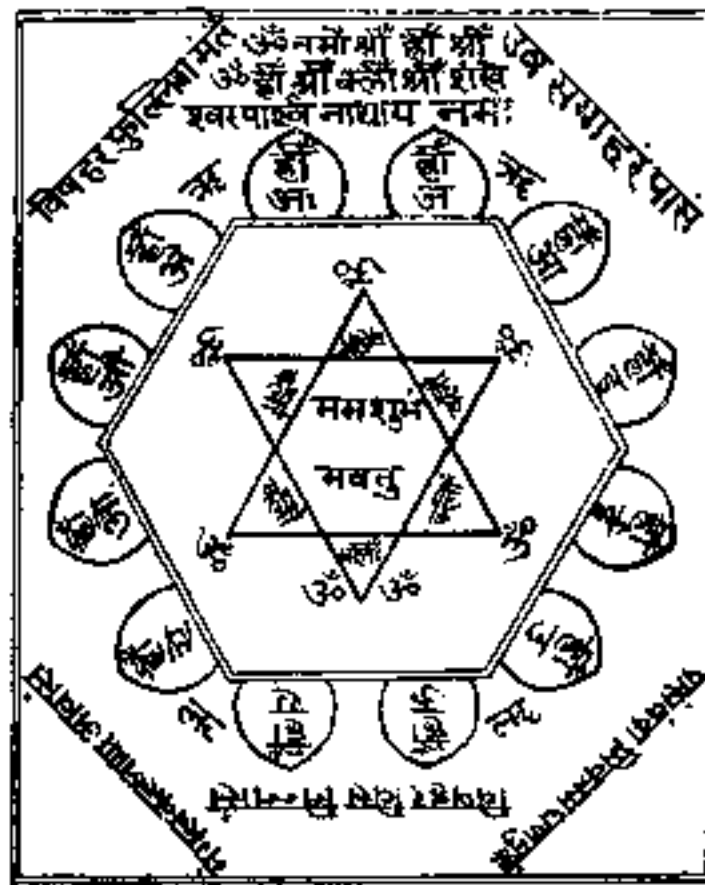
चोबीस तीर्थंकरो का यंत्र

इस यंत्र को सुवर्ण या चाँदी के पतड़े पर बनावे रविपुष्य नक्षत्र में। यंत्र में दिये हुए अंकों के समान उन २ भगवान को नमस्कार करे। यंत्र में लिखे यंत्र का प्रातः कम से कम पांच माला जपे। घर में अटूट धन, घर में शान्ति रहती है।। ५७ ।।

यन्त्र नं० ५७

१६	१२	८	५	३	२
१	१४	१३	६	१०	४
६	७	११	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	१७	१५
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	न	मः
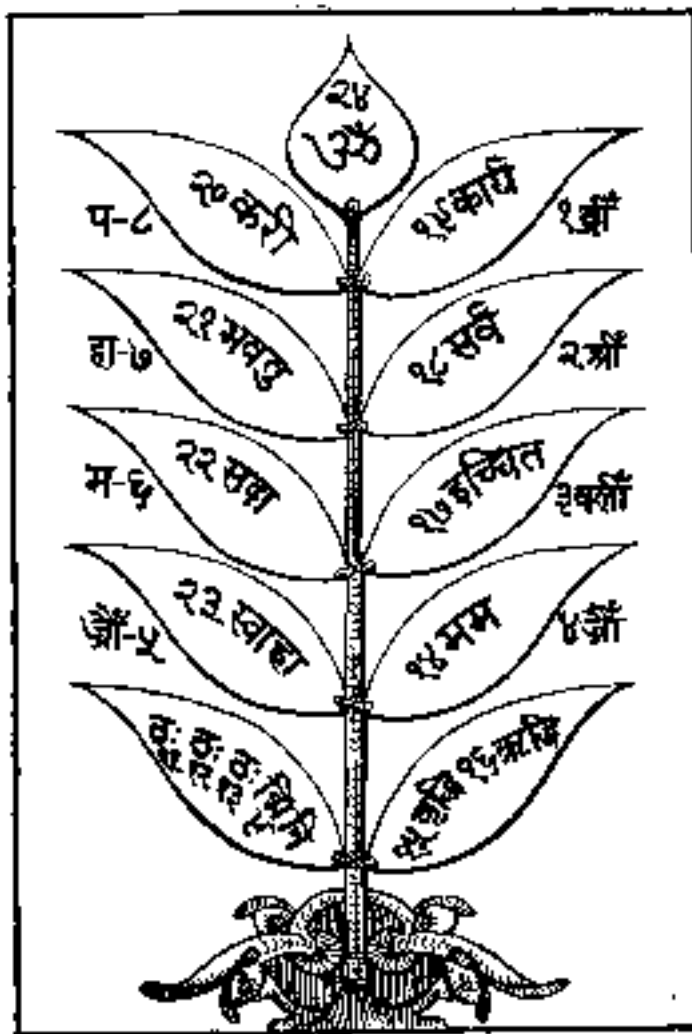
←यन्त्र नं० ५८

कल्प वृक्ष यंत्र

इस यन्त्र को रविपुष्य गुरुपुष्य रवि हस्त या रवि मूल में शुभो प्रयोग में सोना चांदी के पतड़े व भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखे, हमेशा पूजन करे, अक्षत से उन्हें अपने सिर पर डाले। मनुष्य मान सन्मान सत्कार पावे। रोजगार वृद्धि लक्ष्मी प्राप्ति। यन्त्र के एक एक अक्षर में चौबी तीर्थंकर देवी का निवास है॥ ५८॥

यन्त्र नं० ५९
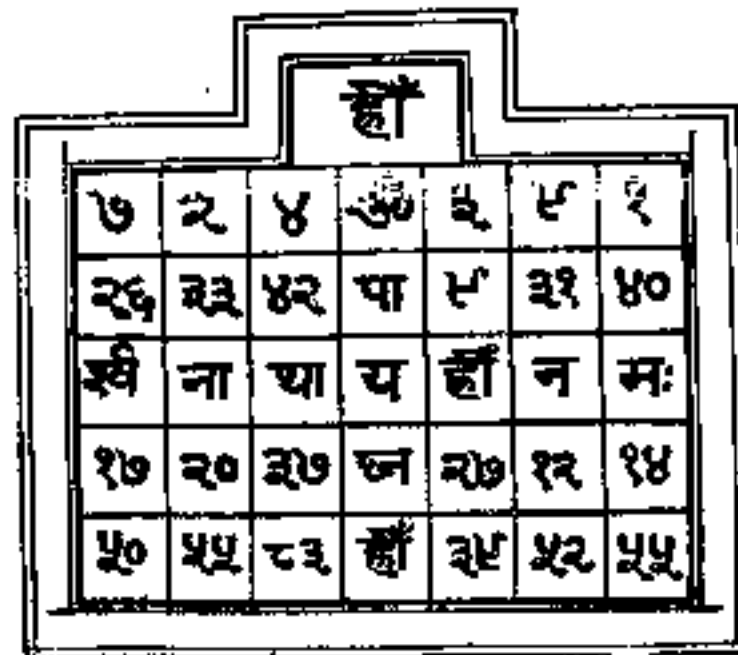
इस पार्श्वनाथ यन्त्र को पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याण के दिन तांबे के पतड़े पर खुदवावे। सुगन्धी द्रव्य से लिखे एक धान का एकासन करे। फूल जाइके से पूजन करे। धरणेन्द्र पद्मावती प्रसन्न होय मन वांछित फल देवे ॥ ५९ ॥

सर्व मनोकामना सिद्ध यंत्र

इस यन्त्र को पास में रखने से सर्व मनोकामना सिद्ध होती है ॥ ६० ॥ ६१ ॥

यन्त्र नं० ६०

यन्त्र नं० ६१
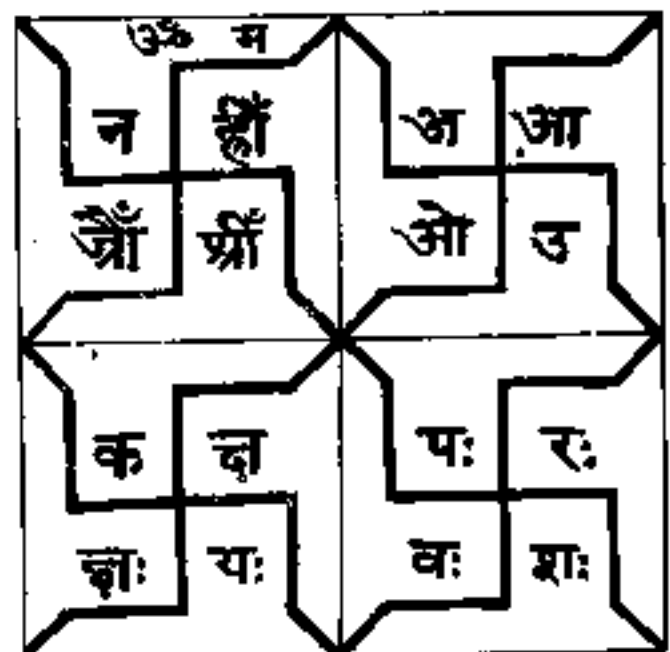
१३० को सर्वतो भद्र यन्त्र सिद्ध मन्त्र

मन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीं चतुर्दश पूर्वेभ्यो नमो नमः

विधि :—इस यन्त्र को रविपुष्य में, शुभ योग में बनावे। मन्त्र का सवालाख जाप करे। इससे महाविद्यावान तथा सर्व प्रकार सुखी होवे ॥ ६२ ॥

यन्त्र नं० ६२

१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०
१३०	३४	४८	२	१६	३०	१३०
१३०	४६	१०	१४	२८	३२	१३०
१३०	८	१२	२६	४०	४४	१३०
१३०	२०	२४	३८	४२	६	१३०
१३०	२२	३६	५०	४	१८	१३५
१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०	१३०

अद्भुत लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

इस यन्त्र को सोना चांदि या तांबे के पत्रे पर खुदाकर पूजन करे तथा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः महा लक्ष्म्यैः धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ह्रीं श्रीं नमः ॥ इस यन्त्र का १२५०० जाप करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ ६३ ॥

यन्त्र नं० ६३

ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	महा
अ	ल	न	म:	लक्ष्मै
ध्र	र	णे	न्द्र	पद्मा
स	हि	ता	य	वती
ह्रीं	श्रीं	न	म:	नम:

यन्त्र नं० ६४

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

इस यन्त्र को सोना व चांदी, तांबा के पत्रे पर खुदावे। अष्ट गंध से रविपुष्य में लिखकर पूजै। व्यापार वृद्धि होय। लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ॥ ६४ ॥

यन्त्र नं० ६५

४२	७	५६
४६	३५	२१
१४	६३	२८

इस यन्त्र को सुगन्धी द्रव्यों से भोजपत्र पर लिखकर पूजे, विद्या बहुत आवे ॥६५॥

यन्त्र नं ६६

यह यन्त्र लक्ष्मी दाता चमत्कारी है। रविपुष्य में सोने चाँदी के भोजपत्र पर लिखकर हमेशा पूजन करे ॥ ६६ ॥

यन्त्र नं० ६७

१	०	०	०
०	०	०	१
०	०	०	०
१	०	०	०

इस यन्त्र को अष्ट गंध से लिखकर दीवाली के दिन रोहिणी नक्षत्र में इसे घड़े में रखकर, घर के भण्डार में रखने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसे कुंभ में लिख, कुंभ का पानी रोगी को पिलाने से रोग नष्ट होता है ॥ ६७ ॥

यन्त्र नं० ६८
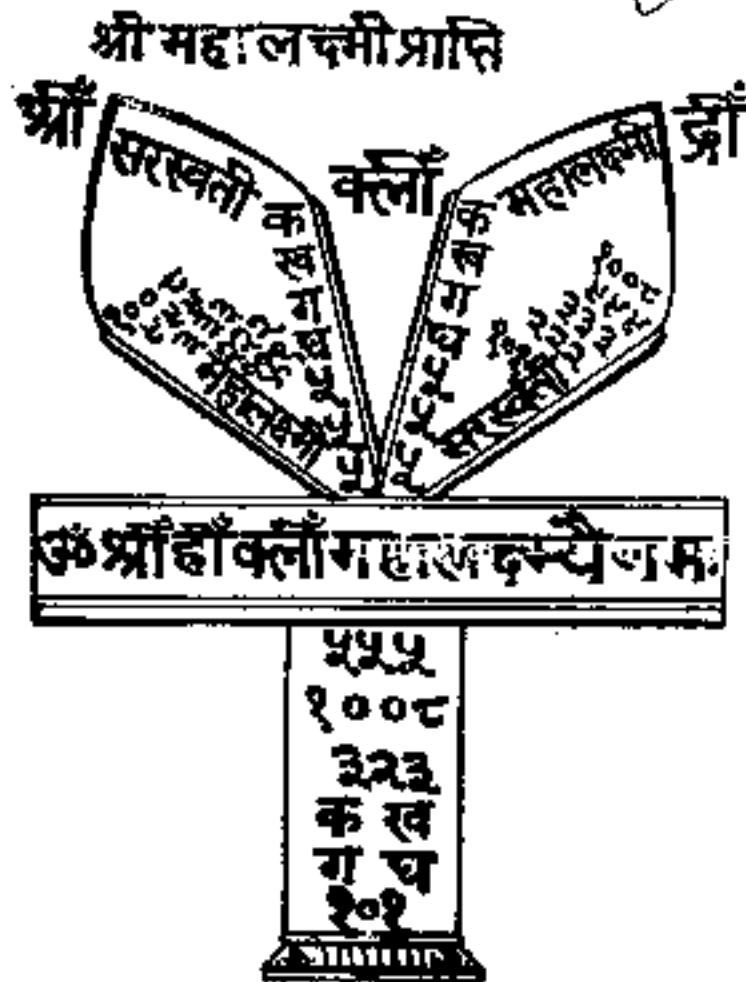
श्री महा लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

यह त्रिक (तीन) का यन्त्र लक्ष्मी पूजन का है। चांदी के कलश में लिखकर घर में स्थापित करे तो लक्ष्मी की प्राप्ति अवश्य होती है ॥ ६८ ॥

॥ अद्भुत विद्या प्राप्ति यन्त्र नं. ६९ ॥

इस यन्त्र को रविपुष्य में काँसी की थाली में तैयार कर सुगन्ध द्रव्य से सुदी पंचमी से दशमी तक, चाँदनी रात्रि में, थाली में पानी भर कर रखे। प्रात: उस पानी को पीने से अज्ञान दूर होता है विद्या बहुत आती है ॥ ६९ ॥

यन्त्र नं० ६९
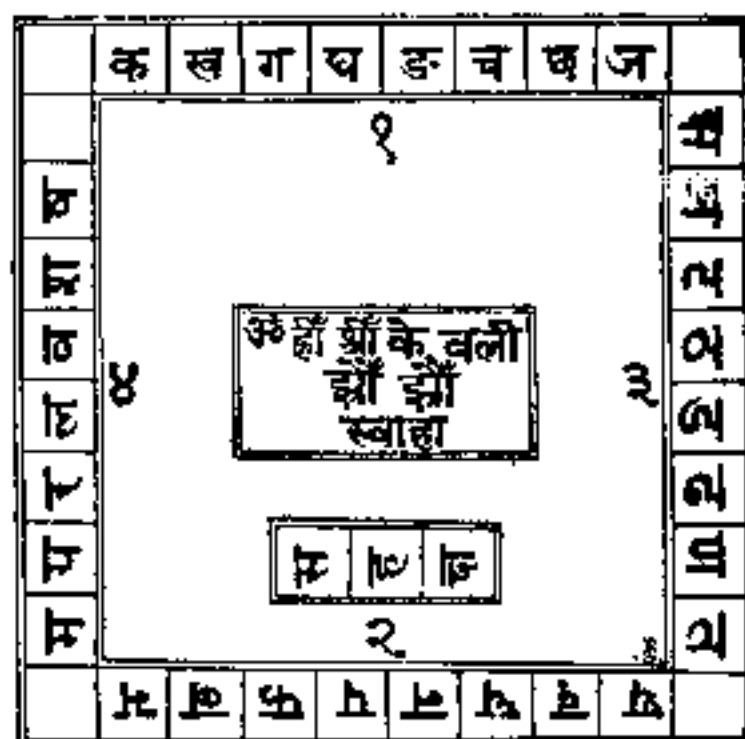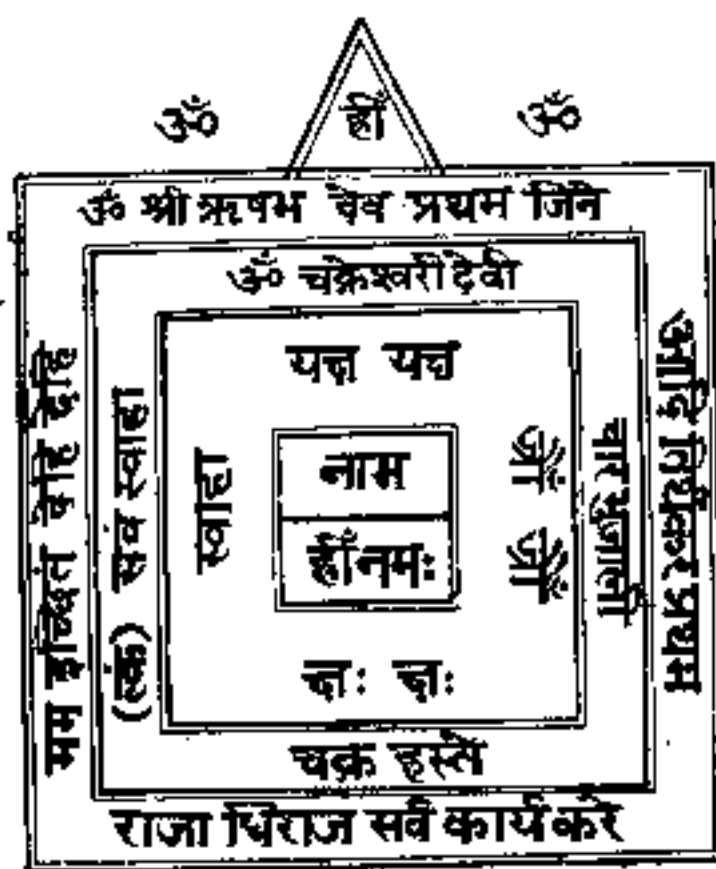
यन्त्र नं० ७०

इस यन्त्र को दीवाली के दिन गुरु पुष्य में अष्ट गंध से जाई की कलम से लिखकर पूजन करे तो सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हो। गंध से पूजकर तिलक करे मान सन्मान प्राप्त हो ॥ ७० ॥

यन्त्र नं० ७१

इस यन्त्र को तालड पत्र या भोज पत्र सोना, चाँदी व ताँबा के पत्रे पर गोरोचन, सिन्दूर, लाल चन्दन, कंकु और अपनी अनामिका अंगुली के रक्त से यन्त्र लिखना। भक्ति से पूजन कर निम्न मन्त्र से "ह्रां ह्रीं वह ह्रीं सह ह्रीं॥" का सवालाख जप करना चाहिए। जप अमावश्या से शुरू कर तीन पक्ष में पूरे करे॥ ७१॥

यन्त्र नं० ७२

इस यन्त्र को अपने रक्त से भोज पत्र पर लिखकर कंठ या बाहु में बांधे विद्यार्थी को विद्या की प्राप्ति होती है।॥ ७२॥

यन्त्र नं० ७३

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र श्रीचक्रेश्वरी नमः

इस यन्त्र को रविपुष्य, गुरु पुष्य दीवाली में भोजपत्र सोना चांदी पर लिख पूजे, सर्व कार्य सिद्धि होय॥ ७३॥

यन्त्र नं० ७४
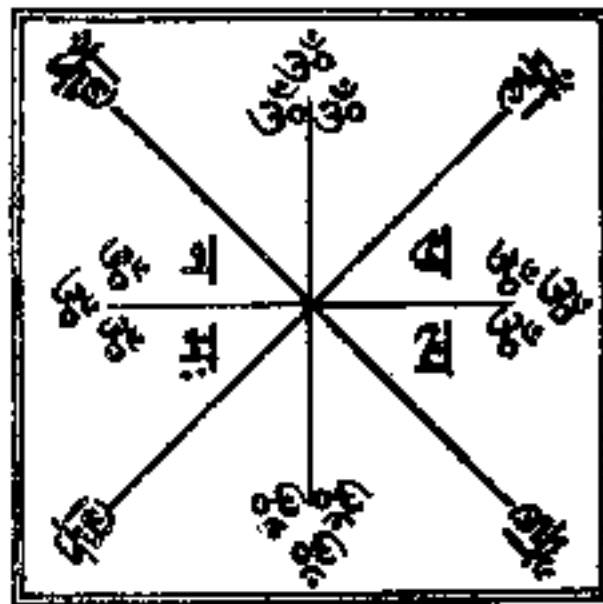
इस यन्त्र की विधि यन्त्र नं.   समान है ॥ ७४ ॥

यंत्र नं० ७५

४३	५०	२	७
६	३	४७	४६
४६	४४	८	१
४	५	४५	४८

इस ऋद्धि सिद्धि यन्त्र को कुंकुम, गोरोचन, केशर से आंबिया (आम) के पाटे पर लिखकर पूजन करे, ऋद्धि वृद्धि होय ॥ ७५ ॥

॥ चिंतिल कार्यं सिद्धि यन्त्र ॥ ७६ ॥

१	३२	३४	१२	६	२४	४२	५५
३८	५५	५	२८	४१	५१	१३	२८
३१	८	१४	३३	२३	१७	५३	४१
१७	३७	२७	१	५२	४५	१६	१४
३	३७	३१	६१	११	१२	४४	५६
४०	५७	७	२६	४६	४६	१५	१८
२६	४	६६	३५	२१	१२	६४	१८
५८	३६	२५	८	५७	४७	१७	१६

इस यन्त्र को रविपुष्य में अथवा अपने चन्द्रस्वर में भोजपत्र पर चाँदी, सोना या तांबे के पत्रे पर सुगन्धी द्रव्य से लिखे। जो पूजन करता है उसका चिंतित कार्य सिद्ध हो जाता है ॥ ७६ ॥

श्री घंटाकर्ण महावीर अद्‌भुत चमत्कारिक यन्त्र।।७७।।

ॐ	घं	टा	क	र्णो	म	हा	वी	र	स	र्व	व्या
लो	ऽक्ष	र	पं	क्ति	भिः	रो	गा	स्त	त्र	प्र	धि
खि	रक्ष	यं	शा	कि	नी	भू	त	वै	ता	ण	वि
लि	पा	स	र्पे	ग	द	श्य	ते	अ	ल	स्य	ना
य	ज	च	घं	टा	क	र्णं	न	गि	रा	तिं	श
दे	र्गे	न	ह्रीं	र	ठः	ठः	मो	चो	क्ष	ना	क
सि	क	स्य	ब्लूं	वी	स्वाहा	ठः	स्तु	र	सा	त	वि
ष्ठ	न्ति	ल	क्लीं	र	न	ॐ	ते	भ	प्र	पि	स्फो
ति	था	णं	श्रीं	ह्रीं	ॐ	स्ति	ना	र्य	भ	त्त	ट
वं	स्ति	र	म	ले	का	ना	न	न्ति	व	क	र्क
त्र	ना	यं	भ	ज	रा	त्र	त	वा:	द्य	को	भ
य	ल	व	हा	म	क्ष	र	क्ष	र	न्ते	प्रा	य

इस यन्त्र को रवि पुष्य व शुभयोग में भोजपत्र, चांदी, तांबा के पतरे पर व कांसी की थाली में खुदवावे। रवि हस्त अथवा मूला गुरु पुष्य में भी दीवाली के दिन बन सकता है। यन्त्र का पंचामृताभिषेक कर, चन्दन पुष्पादि से पूजा करना चाहिये। जाई जुई के १०८ पुष्प रखे। मन्त्र बोल कर एक—एक फूल थाली में चढ़ावे। एक टुकड़ा अगरबत्ती का लगावे और लकड़ी से एक टंकोर थाली में लगावे (बजावे)। १०८ बार होने पर थाली में श्री फल, पंचरत्न की पोटली तथा रुपया एक चांदी का रख दे। एक कांसी की थाली में यन्त्र लिखले। इन दोनों यन्त्रों की एक ही विधि है।। ७७—७८ ॥

यन्त्र नं० ७८
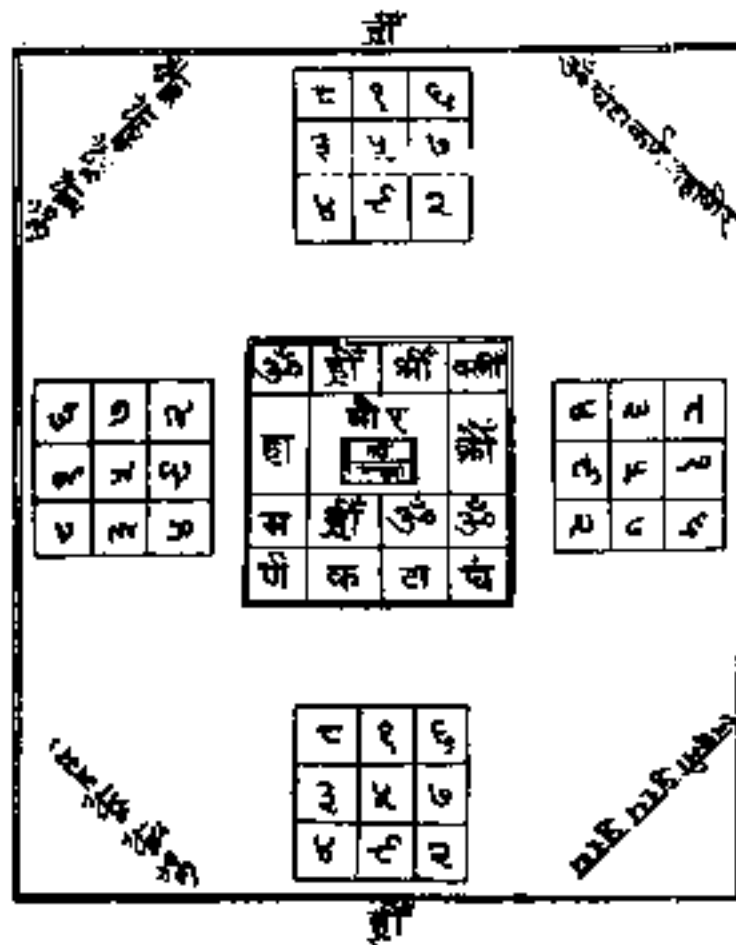
यन्त्र नं० ७९

इस चन्द्र यन्त्र को रूपा (चांदी) के पतरे पर खुदवाना, अष्टगन्ध से, चन्द्र ग्रहण में लिख कर अपने घर में रखे, फिर आवश्यकता पड़ने पर तीन दिन तक धोकर पिलावे तो रोग मिट जाये। शनिवार, रविवार, गुरुवार को इसे धोकर सवेरे पिलावे, कफ, गुल्म नष्ट हो जाये। इसका पूजन करने से जहाँ जाये, वहाँ जय होय सब काम सफल होय ।। ७९ ॥
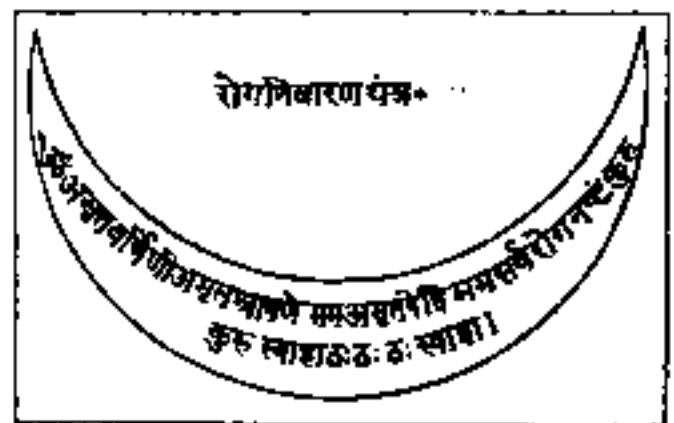
सर्व रोगनिवारण यन्त्र नं० ८०

ॐ	ह्रीं	वि	स	ह	र	पा	स	नाह
ह्रीं	ॐ	ह्रीं	फु	लिं	ग	क	म	ठु
श्रीं	श्रीं	ध	र	णे	न्द्र	प	द्मा	व
क्लीं	श्रीं	ती	मा	तृ	दे	वी	मम	विस
भ्रौं	श्रीं	रोगं	शोकं	भयं	द्वेषं	जरा	मरण	विघ्न
झौं	श्रीं	विघ्न	रा	जा	दि	भ	य	चो
ह्रीं	श्रीं	श	दि	भ	य	व्या	घ्रा	दि
ह्रीं	श्रीं	भ	य	सि	हा	दि	भ	य
ह्रैं	क्षः	स	वँ	फु	ट	फु	ट	स्वा
हः	क्षः	हा	ठः	ठः	ठः	ठः	ठः	स्वाहा

इस यन्त्र को रवि पुष्य या शुभ योग में कांसी की थाली में खुदवाना । अष्टगंध या केशर में अक्षर अक्षर की पूजन कर सुखाना, पीछे उसे पानी से धोकर उस पानी को दिन में तीन बार पिलाने से सर्वआधि, व्याधि रोग, पीड़ा भय, मिट जाता है ।।८०।।

यन्त्र नं० ८१

३६	३६	३६
३६	३६	३६
३६	३६	३६

इस छत्तीस यन्त्र को सुगंधित द्रव्य से लिख कर धारण करने से आंधा शीशी नष्ट हो जाती है ॥८१॥

यन्त्र नं० ८२

७	६	०	१	०	०
८	०	०	३	०	०
२	०	०	०	०	०
५	६	७	८	९	१०
४	०	०	०	०	०
५	३	२	१	०	८

यन्त्र नं० ८३

ह्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
ह्रीं	दे	व	ह्रीं
श्रीं	द	त्त	श्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

इस यन्त्र को किसी भी प्रकार के रोग के लिए तथा वश करने के लिए सुगंधित द्रव्य से लिखे। देवदत्त के स्थान पर अपना नाम लिखे ॥८३॥

गुमड़ा होने का यन्त्र

यन्त्र नं० ८४

हा क स्वा ७	ख पा छ र्वं
घ ८	३ ग
र ६ म ५	२ घ १ य
भ त	क्ष ध

इस यन्त्र को भोजपत्र या कागज पर सुगंधित द्रव्य से लिख कर भुजा में बांधने से सर्व प्रकार के फोडे गुमड़े मिट जाते है ॥८४॥

यन्त्र नं० ८५

३८	४६	२६	७७
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	९

इस यन्त्र को रविवार के दिन भोज पत्र पर लिख कर बांधने से आंधा शीशी का रोग जाय ।।८५।।

यन्त्र नं० ८६
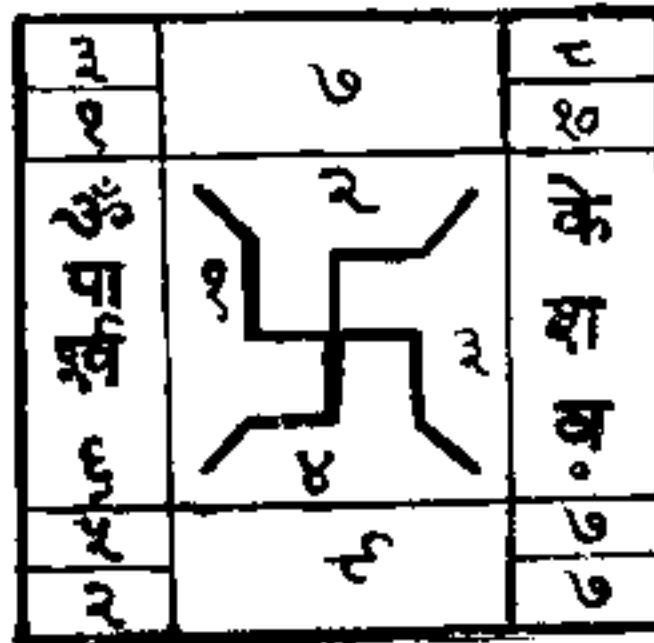
इस यन्त्र को हर ताल से बड़ के पत्ते पर मंगलवार के दिन लिख कर अपनी भुजा में बांधे तो दुखता (मस्सा) हरस मिट जाय रक्त स्राव ।।८६।।

यन्त्र नं० ८७

२	१०	३
३	२	१०
१०	३	२

इस पद्रहरिया यन्त्र को लिख कर धोकर पिलाने से तुरन्त ही ज्वर-ताप उतर जाता है। भूत प्रेत वगैरह जाय। यह बड़ा चमत्कारी है ॥८७॥

यन्त्र नं० ८८

१ श्रीं ह्रीं २	क्लीं ३ ४ ॐ
७ हा खा ८	हन ६ ५ क्ष

इस यन्त्र को मंगलवार, गुरुवार या शनिवार को जाई की कलम से आक के पत्ते पर लिख कर भुजा या गले में बांधे या सिरहाने रखे तो सभी प्रकार का ताप ज्वर उतर जावे ॥८८॥

भूत प्रेत पिशाच डाकिन वगैरह निवारण यन्त्र ॥८६॥

५	क्लीं	ह्रीं	क्लीं	५
क्लीं	२ शांतिनाथाय १ पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रदेव महावीरस्वामी १ चक्रेश्वरीदेवी २			क्लीं
५	क्लीं	ह्रीं	क्लीं	५

इस यन्त्र को हरताल मनसिल हिंगुल तथा गोरोचन से आंकड़ा के पत्ते पर लिख, धूप देकर जिसके गले, भुजा या कमर में बांधे तो भूतादि बाधा नष्ट हो जाय ॥८६॥

व्यापार वर्द्धक यन्त्र नं० ९०

"ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः" इस मंत्र को १० माला रोज २१ दिन तक सफेद माला,

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ठः	४२	३५	४०	फु
ठः	३७	३९	४१	फु
ठः	३८	४३	३६	फु
है	भुर	भुर	भुर	फु

सफेद आसन और सफेद पुष्पों से जपे। यंत्र को चांदी, सोना, तांबा के पत्रे पर खुदवा कर रखे। वदी चतुर्दशी से जाप करे, रात के समय जपे ॥ ९० ॥

यन्त्र नं० ९१

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

इस यंत्र को चांदी के पत्रे पर रवि गुरु पुष्य या रविहस्त मूला अथवा दिवाली के दिन जब अपना सूर्य स्वर चलता हो उस समय खुदवा कर प्रतिष्ठा कर रोज पूजन करे तो कोर्ट कचहरी आदि विषय में जीत होय। यंत्र को जेब में रखना ॥ ९१ ॥

यंत्र नं० ६२

इस यंत्र को रवि पुष्य के दिन सोना, चांदी, तांबा या भोजपत्र पर लिख प्रतिष्ठा कर लो। यंत्र को ५, १०, १५ तिथि से प्रारम्भ कर साढ़े बारह हजार करना फिर रोज एक

ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ब्लूं	न	मि
उ	ण	सुर	अ	सुर	ग	रु
ल	भु	यं	ग	प	रि	वं
दि	ये	म	ए	कि	ले	से
अ	रि	हे	सि	द्धा	य	रि
ये	उ	व	ज्झा	ये	स	व्व
सा	हू	णं	न	मः	स्वा	हा

माला जपना। मन्त्र प्रारम्भ और अंत करने वाले दिन उपवास करना। सफेद वस्त्र, माला, आसन सफेद, एकाग्रचित से जप करे, मन वांछित कार्य सिद्ध हो, गृह देव प्रसन्न होय ॥ ६२ ॥

पूर्व दिशा की ओर मुखकर ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एकाक्षय भगवते विश्व रुपाय सर्व योगेश्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम प्रदाय नमः दीवाली के दिन १२,५०० हजार जप पद्मासन से

यंत्र नं० ९५

यंत्र नं० ९६
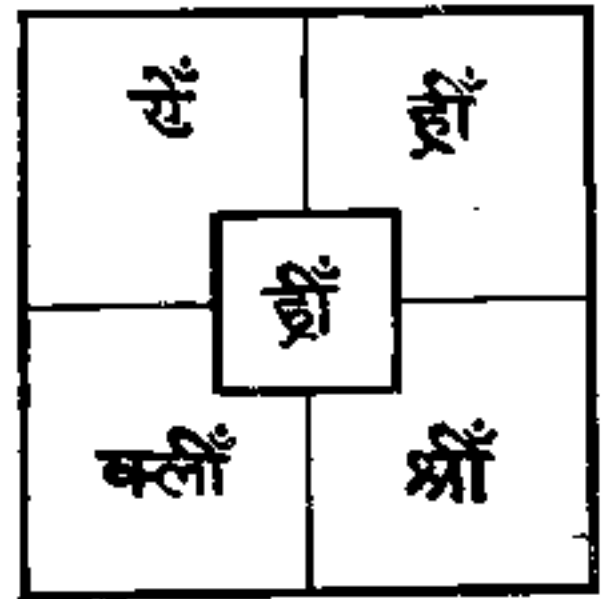
करे। माला प्रवाल की होनी चाहिये। पीछे होम करे, होम की विधिः—बादाम १०८—अखोल( ) १०८—सुपारी १०८ लोवान सेर १॥, काली मिरच सेर १॥, दाख सेर ०।— गोला ०।— जव

यंत्र नं० ९७
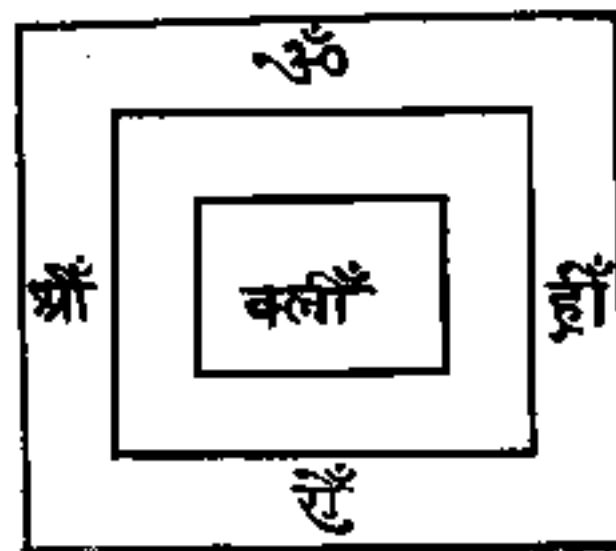
सेर ०।— घी सेर—२ बेर की लकड़ी, अर्द्ध रात्रि में उत्तर दिशा मुखकर हवन करना। चैत्र सुदी ८—आसोद सुदी ८ दिवाली, होली और ग्रहण के दिन में नारियल की पूजन करना। यंत्र में देव दत्त की जगह अपना नाम देना। तीनों यंत्रों की विधि एक ही है॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥

यंत्र नं० ९८

इस पंदरिया यंत्र को रवि पुष्य, रवि मूल, रवि हस्त, गुरु पुष्य, दिवाली के दिन अपने चन्द्र स्वर के साथ । सोने, चांदी के पत्रव भोजपत्र पर लिखे । "ॐ ह्रीं श्रीं ठः ठः ठः श्रीं

स्वाहा" साढे बारह हजार बार यंत्र लिखना और मंत्र भी इतना ही जपना । प्रतिदिन एक हजार जप करना । सफेद वस्त्र पहनना, लवण, खट्टा मीठा, नहीं खाना, ब्रह्मचर्य पालना, जमीन पर सोना, एक बार भोजन करना पान खाना ॥ ९८ ॥

यंत्र नं० ९९ नवग्रह शान्ति पंदरिया के साथ यंत्र

इस यंत्र की विधि नहीं है ॥ ९९ ॥

यंत्र नं० १०० विजय पता का यंत्र

इस यंत्र की विधि नहीं है ॥ १०० ॥

यंत्र नं १०१

इस यंत्र को लिखकर पास में रखने से सर्वग्रह शांत होते हैं ॥ १०१ ॥
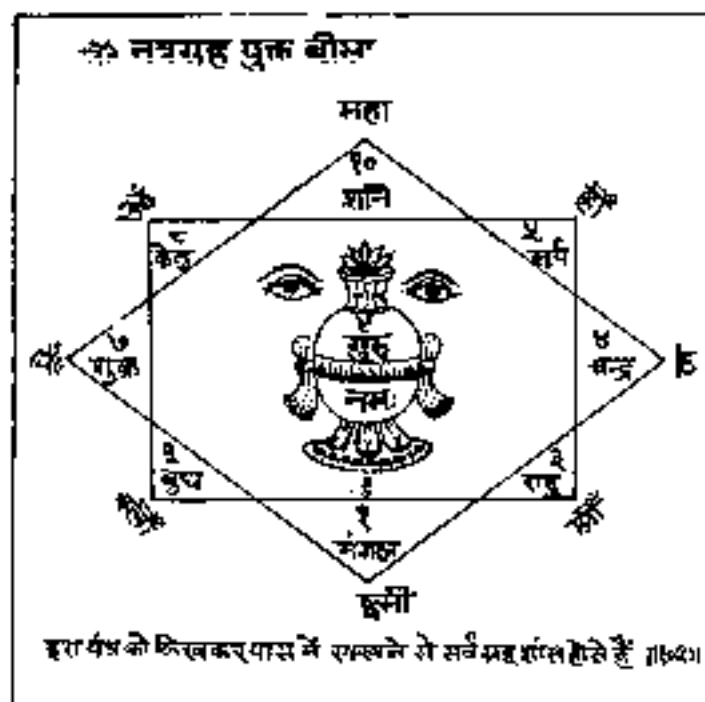
यंत्र नं० १०२

मूल यंत्र :—ॐ श्री ह्रीं क्लीं "महा लक्ष्मै नमः" भोजपत्र पर रोज एक यंत्र लिखना अष्टगंध से उस पर २१०० जाप करना धूप दीप फूल फल-नैवेद्य करना पीला वस्त्र पिली माला

महा लक्ष्मये	५		नमः
९	श्रीं		६
ॐ	१	४	ह्रीं
	७	८	
३	क्लीं		२

रखनी चाहिये। इस प्रकार ६२ यंत्र ६२ दिन में लिखना। ६३वाँ यंत्र चाँदी के पत्ते का बनवाना। उसके पीछे ६२ यंत्र भोजपत्र के रखना। श्री सुक्त ( ) से पूजा करनी चाहिये ॥ १०२ ॥

यन्त्र नं १०५

बत्तीसा : लक्ष्मी प्राप्ति यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

व्यापार तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए चालू विधि से तैयार करना ।। १०५ ।

चौतीसा यन्त्र नं० १०६

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

लक्ष्मी तथा व्यापार वर्द्धक यन्त्र है ।

चौंतीसा यन्त्र नं० १०७

४	१४	१५	१
९	७	६	१२
५	११	१०	८
१६	२	३	१३

व्यापार तथा लक्ष्मी वर्द्धक यन्त्र है।

छत्तीसा यन्त्र नं० १०८

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

व्यापार तथा लक्ष्मी वर्द्धक यन्त्र है।

उपरोक्त तीनों यन्त्रों को चालू विधि से लिखना ॥ १०६—१०७—१०८ ॥

६५ या यन्त्र नं० १०९

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

६५ या यन्त्र नं० ११०

२४	३२	२	७
६	३	२९	२७
३१	२५	८	१
४	५	२६	३०

इस यन्त्र को कुलड़ी में रख, सुपारी, रुपया, हल्दी, धनियां डालकर दुकान की गद्दी के नीचे गाढना, उस पर बैठना, तो व्यापार अधिक चलता है ॥ ११० ॥

यन्त्र नं० १११

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

यन्त्र नं० ११२

१५	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२३	२०	१३	६	४
३	२१	१९	१२	१०
९	२	२५	१८	११

६५ या यन्त्र का जप मन्त्र :—

(१) ॐ भ्रों भ्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा।

(२) ॐ ह्रां ह्रीं नमो देवाधिदेवाय अरिष्टनेमिय अचिन्त्य चिन्तामणि त्रिभुवन

जगत्रय कल्पवृक्ष ॐ ह्रां ह्रीं समीहितं सिद्धये स्वाहा।

विधि :—पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र में जाप करना, १२,५०० (साढ़े बारह हजार) जप करे। फिर बाद में एक माला रोज जप करते रहना ॥ ११०–१११—११२ ॥ इन तीनों ६५ या यन्त्र की विधि एक ही है।

यन्त्र नं० ११३

९	८	७	६	५	४	३	२	१
८	८	७	६	६	२	२	१	२
७	३	३	३	३	३	३	३	३
६	४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५	५
४	६	६	६	६	६	६	६	६
३	७	७	७	७	७	७	७	७
२	८	८	८	८	८	८	८	८
१	९	९	९	९	९	९	९	९

इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिखे। काटे में बांधे के नाभि ठिकाने आवे ॥११३॥

यन्त्र नं० ११४

ह् २५	र ८०	क्षीं	हुं १५	हः ५०
स २०	र ४५	प	सुं ३०	सः ७५
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
ह ७०	र ३५	स्वा	हुं ६०	हः ५
स ५५	र १०	हा	सुं ६४	सः ४०

इस यन्त्र को आंधे बालक के गले में बांधे तो सर्व रोग जाये, नजर न लगे ॥११४॥

यन्त्र नं० ११५

३८	३१	२६
२१	२१	३७
३४	३७	३२

इसे अष्ट गन्ध से लिखकर, पास रखे तो दुश्मन वश में होय ॥११५॥

यन्त्र नं० ११६

४	७	२	७
६	३	८	३
६	५	८	१
४	५	२	९

इस यन्त्र को बांधने से कागलों अच्छो होय ॥११६॥

यन्त्र नं० ११७ ।

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

इस यन्त्र को कमर में बांधे तो वायुगोला की पीड़ा न रहे तथा गले में बांधे तो सांप का जहर उतर जाता है ॥११७॥

यन्त्र नं० ११८

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

इस यन्त्र को लिख कर चरखे में बांध कर उल्टा घुमावे, परदेश गया हुआ वापस आता है ॥११८॥

नोट:—पेज नं० ३२७ पर यंत्र नं० १०९ की विधि नीचे दी हुई है।

"ॐ नमो गौतम स्वामिने सर्व लब्धि सम्पन्नाय मम अभीष्ट सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।
प्रतिदिन १०८ बार जपिये । जय होय, कार्य सिद्धि होय ।

"ॐ ह्रीं धरणेन्द्र पार्श्वनाथाय नमः ।

विधि :—दर्शनं कुरु २ स्वाहा । १२ हजार जप कर हाथ मुंह पर, नेत्रों पर फेरे, जहाँ धन गड़ा होगा स्पष्ट दिखेगा ।

यन्त्र नं० ११९

४	११	२	७
६	३	८	७
१०	५	८	१
४	५	६	९

यन्त्र नं० १२०

७७	१	१	५
२	७	५	१३
७	१३	१	५
१	५	१३	७

इन दोनों यंत्रों को कुंकुम गोरोचन से भोजपत्र पर लिख कर गले में बांधे, गर्भ स्तम्भन होय ॥११९, १२०॥

यन्त्र नं० १२१

५३	५२
३११	७०

इस यन्त्र को स्याही से लिखकर माथे पर बांधे तो आंधा शीशी का जाय ॥१२१॥

यन्त्र नं० १२२

४२	४९	१४०	४३
६	३३	४६	४५
४९	४४	९	१
४१	४०१	देवदत्त	४१७

लोहे के ढोलने में ताबीज घाल कर स्त्री के गले में बांधे, गर्भ रहे ॥१२२॥

यन्त्र नं० १२३

४४	५१	२	८
७	३	५८	४८
४०	४४	९	१
४	६	४६	४९

कुमारी कन्या के हाथ पूणी कत्ताकर यह यन्त्र कागज पर दूध से लिखे। स्त्री के गले में बांधे, दूध घनो घनो होय ॥१२३॥

यन्त्र नं० १२४

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देव	दत्त	ह्रीं
ह्रीं	मन्त्र	फुरै	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

यह मन्त्र पास रखे राजा, गुरु प्रसन्न होय अष्ट गंध से लिखे ॥१२४॥

यन्त्र नं० १२५

१३३	२	१२	१६
८	१५	११	६
०१८	१३	१०	१९
१	१३	४	४

यन्त्र बांधे शीतला जाय ॥१२५॥

यन्त्र नं० १२६

७	१४	२	७
६	३	११	१०
१३	८	८	१
[illegible]	५	४	१२

इस यन्त्र को पान के ऊपर चूने से लिख, सभा वश्य होय ॥१२६॥

यन्त्र नं० १२७

मं	क्षं	जं	चं
क्षं	तं	जं	हं
हं	जं	हं	चं
नं	क्षं	जं	हं

भोज पत्र पर लिख, सिरहाने रखे तो स्वप्न न आवे ॥१२७॥

यन्त्र नं० १२८

ॐ	ऐं	श्रीं	ह्रीं
अ	दु	वा	च
र	ज	ग	म
वा	ली	न	नमः

अर्क के पत्ते लिखात्वा यस्य द्वारे स्थापत्ये तस्योच्चाटनं भवति ॥१२८॥

यन्त्र नं० १२९

१३२	३	१२	१६
८	१५	११	६
४१८	२	१०	१६
१	१३	४	४

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर हाथ में बांधे शीतला जावे ॥१२९॥

यन्त्र नं० १३०

१२	१४	१६	१८
१३	१५	१७	२०
२१	१३	१५	२७
१२	१४	१६	१८

इस यन्त्र को रविवार के दिन चूना से पान पर लिख कर खिलावे, वश्य होय ॥१३०॥

यन्त्र नं० १३१

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५६	५१	८	१
४	५	५२	५५

इस यन्त्र को घर के दरवाजे पर गाढ़े, तो अति उत्तम व्यापार चले ॥१३१॥

यन्त्र नं० १३२

३०	७	२६	८
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२	७

इस यन्त्र को रविवार के दिन लिख कर बांधे, तो आंधा शीशी जाय ॥१३२॥

यन्त्र नं० १३३

फल—कोई व्यक्ति धोका देकर जहर पिलावे, तो चल छः लिख कर धोकर पिलावे तो विष उतरे ॥१३३॥

यन्त्र नं० १३६

२	७	६
९	५	१
४	३	८

उच्चारण निवार यंत्र ।।१३६।।

यन्त्र नं० १३७

देवदत्त देवदत्त

ॐ १	ह्रीं २	ह्रीं ३	ह्रीं ३	
५	स ६	६ १०	ह्रीं ८	
ॐ ९	ह्रीं ७	ह्रीं ६	ॐ १३	
पु ७	स १५	र १४	ह्रीं १	

देवदत्त देवदत्त

इस यन्त्र को तांबे के पत्रे पर खुदवा कर मकान के चारों दीवार में लगा देवे, तो धन की प्राप्ति, उपद्रव की शांती होती है ।।१३७।।

यंत्र नं० १३८

श्री मणि भद्र महा यन्त्र से यन्त्र नं० १०० का है । मणिभद्र महाराज का का है । जो मनुष्य ये यन्त्र दीवाली के दिन छट्ठ तप कारी सुगंधि द्रव्य से रात में लिखे, जो चणोटी का जड हो वहां जा कर यन्त्र को गाड़े, फिर दूसरे दिन सुबह ब्राह्म मुहूर्त में निकाल लेना । मौनपूर्वक घर आकर इस यन्त्र का हमेशा श्रद्धा से पूजन करे, तो उसके घर में लीला लहेर और मंगलाचार होता रहे । अटूट लक्ष्मी का आवागमन होता है ।।१३८।।

यंत्र नं० १३९

विधि :—गुगल गोली १०८ होमयेन शत्रु, नांदाहु। इस यन्त्र को मशान की ठीकरी वौ × नीयत दोय परि लिखत्वाऽग्नि मध्ये प्रज्वाल्य तदोपरिकुर्यात् ॥१३९॥

यन्त्र नं १४०

१२	१९	२	७
६	३	१६	१५
१८	१३	८	१
४	५	१४	१७

यह यन्त्र . रविवार के दिन लिख कर, माथे में राखै, तो मंथवाय जाये तथा यह यन्त्र पृथ्वी में गाडे तो टिड्डी खेत को नहीं खावे ॥१४०॥

यंत्र नं० १४१

या यन्त्र रविदिन आक का दूध, सो आमकी लेखनी से लिखै। पानी ऽ१।—घालिजे
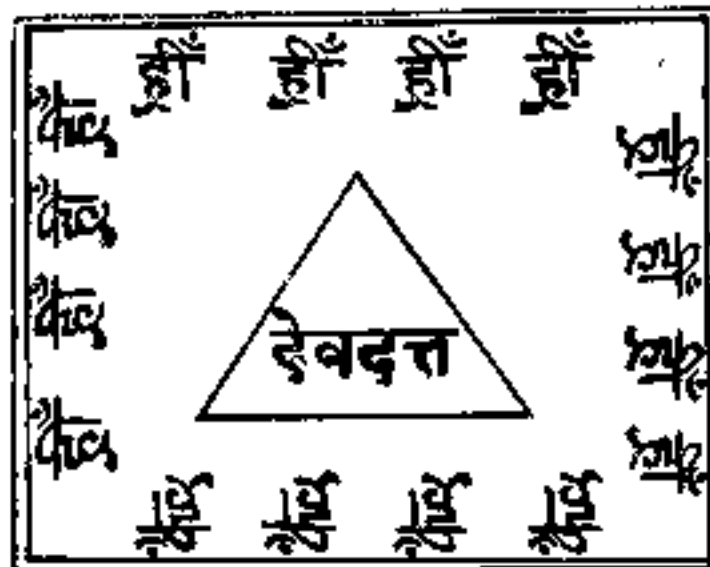
४ उड़द ऽ१ लीजे। हांडी में जंत्र डाले, औंटावे। मुडै, मुदै डाकिनी आवै सही ॥ १४१ ॥

यन्त्र नं० १४२
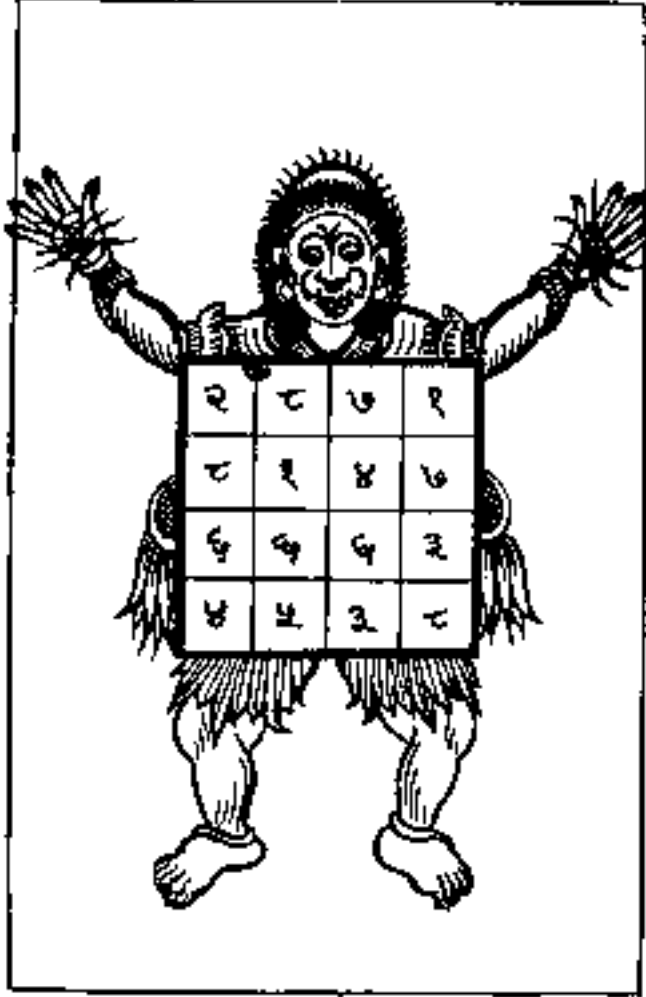
पलीतो मली भूत को स्याही सों लिख कर धूप दीजे, डील में आवे सही। सत्यं ।।१४२।।

यन्त्र नं० १४३

यह यन्त्र होली दीवाली में लिखे, पास राखे सर्व वश्यं होय ।। १४३ ।।

ॐ ह्रीं	क्ष	स्वा	हा	प	क्षै
ह्रां	क्षं	स्वहैं	क्षं	प	क्ष्मीं
ॐ	ज	ह्रौं	कं	स्वा	क्लीं

यन्त्र नं० १४४

यह यन्त्र अष्टगंध सूं भोजपत्र पर लिखे। कर्म राखे, तो घाव लगे नाहीं। फते होवें सही॥ १४४॥

६६	५५	२२	११
५५	११	२२	६६
२२	६६	५५	११
११	५५	६६	२२

यन्त्र नं० १४५

राजा रानी मोहन को नव प्रकर्ण यन्त्र है सत्य। इस यन्त्र को अष्टगंध से लिख कर, पास में रखने से, राजा-रानी वश में होते हैं॥ १४५॥
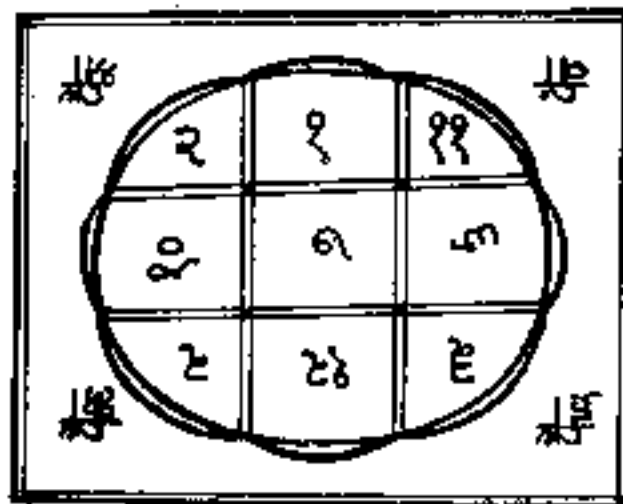
यन्त्र नं० १४६

२७	२७	२७	२७
२७	२७	२७	२७
२७	२७	२७	२७
२७	२७	२७	२७

इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से, भोजपत्र पर लिखकर, डाकिनी के गले में बांधे, तो जिसको डाकिनी की बाधा है, वह दूर होगी ।। १४६ ।।

यन्त्र नं १४७

६७८	६८५	२	७
६	३	६८२	६८१
६८४	६७९	८	१
४	५	६८०	६८३

इस यन्त्र को सुगन्ध द्रव्यवास सूँ लिखकर गले में बांधना चाहिये, इस यन्त्र से भूत-प्रेत का डर कभी नहीं होय ।। १४७ ।।

यन्त्र नं० १४८

२०	२७	२	७
६	३	२४	२३
२६	२१	८	१
४	५	२२	२५

यन्त्र नं० १४९

२३	१	२१	८
२	२६	८	२७
५	१८	२	२५
२२	६	२४	७

इस यन्त्र को थाली में लिखकर, धोकर पिलावे सर्व ज्वर ठीक हो जावे ॥१४६॥

यह यन्त्र भोज पत्र पर अष्टगन्ध से लिखे, दीतवार (रविवार) के दिन पास में रखे तो राड जीत कर घर आवे। सत्यं व तथा यन्त्र को बालक के गले बांधे तो नजर न लगे ॥१४७॥

विजय यन्त्र नं० १५०

ॐ	ह्रीं	दे	व	द	त्त	स्वा	हा
मं	ॐ	२८	३५	२	७	ॐ	भ
र	ह्राः	६	३	३२	३१	ह्रां	वा
वी	ॐ	३४	२९	८	१	ॐ	नी
ब्म	ह्रीं	४	५	३०	३३	ह्रां	जी
श्री	प	द	मा	व	ती	स्वा	हा

यन्त्र रविवार के दिन आटे की गोली बनाकर मछलियों को खिलावे, तो जिस नाम से खिलावे, वह वश में होता है। इस यन्त्र को सवा लाख बार लिखने से मनवांछित कार्य की सिद्धि होती है ।। १५० ।।

यन्त्र नं० १५१

४८५	४८२	२	७
६	३	४२६	४८८
४६१	४२६	८	१
४	५	४८	४६०

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर पास में रक्खे तो शस्त्र नहीं लगे, विजय हो ।। १५१ ।।

यन्त्र नं० १५२

८	१	६८१	१०
११	६८०	४	५
२	७	६	६८२
६७६	१२	६	३

ग्रहण में लिख बांधे, मृगी जाय ।।१५२।।

यन्त्र नं० १५३

१४	२१	२	७
६	३	१८	१७
२०	१५	८	१
४	५	१६	१६

जन्त्र नजर निवारण को, भोजपत्र पर सुगन्ध सौं लिखकर गले में बांधें ।।१५३।।

यन्त्र नं० १५४
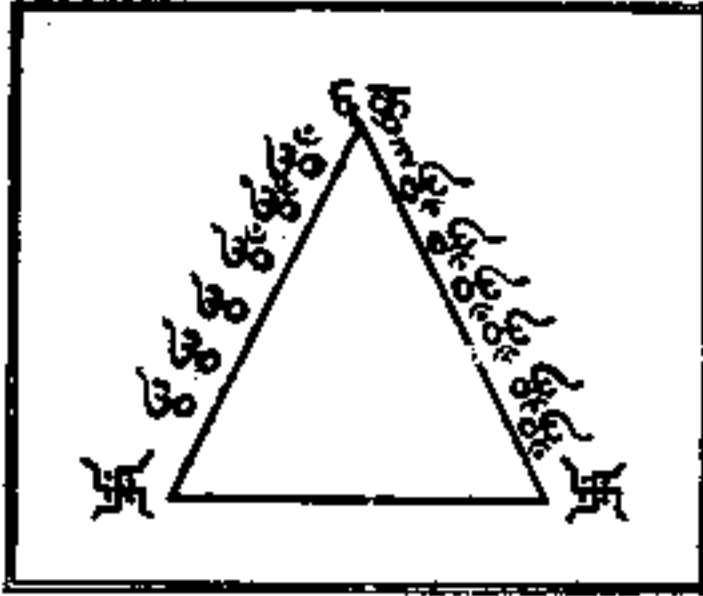
इदं यन्त्र राई भर दीवा बालै तो जिन्द भूत जाय। निश्चय सेती इदं भूत नाशन यंत्रम् ॥ १५४ ॥

यन्त्र नं० १५५

रविवार के दिन यन्त्र लिख, हाथ में बांधे, तिजारी चढ़े नहीं ॥ १५५ ॥

यन्त्र नं० १५६

१०४	१०११	२	७
६	३	१०८	१०७
१०२	१०५	८	२
४	५	१०६	१०९

यह मन्त्र लिख पास राखे, काख अलाई अच्छी होय। विष न रहे ॥ १५६ ॥

यन्त्र नं० १५७

२५	२२	१२	५६	९५	८७	८७
३७	४५	५६	३६	३७	८१	५६
८१	१७	५७	४२	५६	२५	४५
७७	८५	८७	८७	३४	३७	२५
५६	४७	२५	२५	५६	२५	३७
२५	२५	४२	१७	५७	२५	४५

यह यन्त्र अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर पास में राखे, तो भूत मैली वीजासण लागे नहीं, कभी याको दखल होय नहीं ॥१५७॥

यन्त्र नं० १५८

३	८	२
२	६	७
१	३	८
६	२	१

यह यन्त्र रविवार के दिन भोजपत्र पर लिखकर हाथ में बांधे, तो वेला ज्जर चढ़े नहीं ॥ १५८ ॥

यन्त्र नं० १५९

	माँ	माँ	माँ	मां	
८	९	७	२	६	३
५	१०	५	८	७	४
७	१२	२	३	८	६
७	८	२	३	६	५
	कां	काँ	कां	कां	

इदं यंत्रं अष्टगंधेन भोज पत्रे लिखित्वा स्थापय, भरतार वश्यं ।

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर, पास में रक्खे या स्थापन करे, तो भरतार बश में होता है ॥ १५९ ॥

यन्त्र नं० १६०

११	७४	२	३
[illegible]	८	५	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४	५	६	५

यन्त्र नं० १६१

१२६	४१	६०	२७
२६	६१२	१६	३५
१४१	१२	४३	४५
१२	१५१३	२१	४१

यन्त्र रविवार के दिन भोजपत्र पर लिखें, दुष्ट मूठ को भय कभी भी नहीं होय ॥१६०—१६१ ॥

यन्त्र नं० १६२
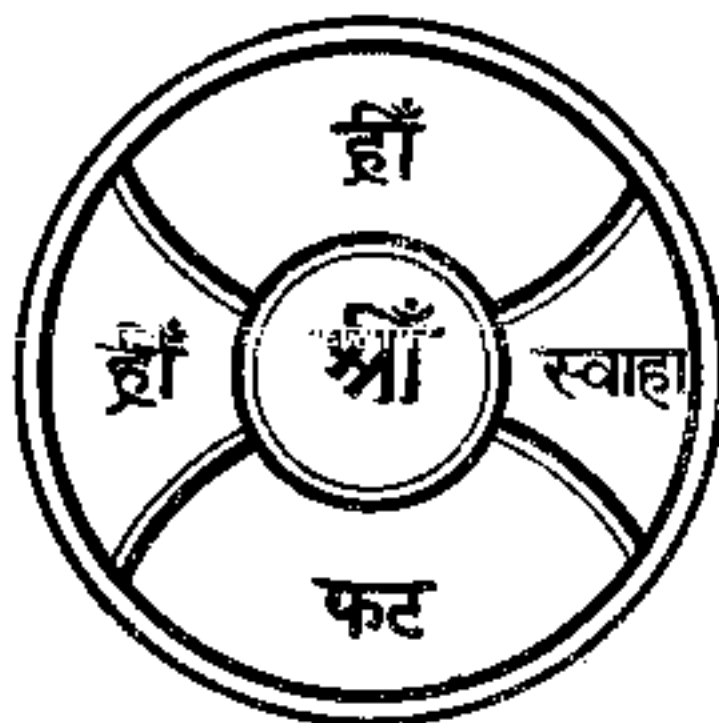
यन्त्र को पीपल के पान पर स्याही से लिखिये। इससे एकांतरा ज्वर जाय ॥ १६२ ॥

यन्त्र नं० १६३

९९	८८	७७	६६	५५
१०	९९	८८	७७	६६
१११	११०	१०९	१०८	१०७
६००	३००	६	७	६००
१०१	६९	९९	९७	८९

इस यन्त्र को लिखकर काजल कीजे, पाछे ७ दिन लीजे, अंजनि को करि भरतार कर्न जावे वश्यं भवति ॥ १६३ ॥

यन्त्र नं० १६४
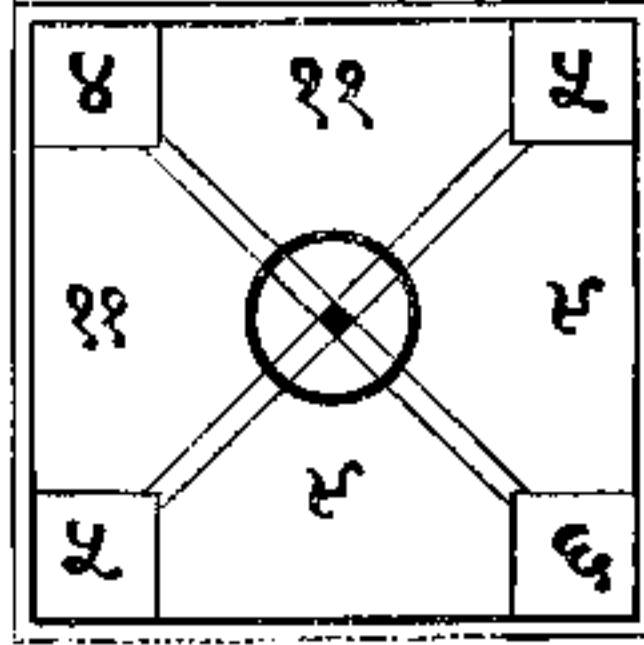
यह यन्त्र भोजपत्र पर लिख, माथा में राखे, सभा वश होय सही ।। १६४ ।।

यन्त्र नं० १६५

हनुमन्त की आज्ञा फुरै

१२	३	१९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	१३	४

हनुमन्त की आज्ञा फुरै

यह पद्मावती यन्त्र लिखकर बिलोवनी के बांधने से घी ज्यादा होता है ।। १६५ ।।

यन्त्र नं १६६

६८६ या यन्त्र

४८५	४९२	२	७
६	३	४८९	४८८
४९१	४८६	८	१
४	५	४८७	४९०

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से लिखकर पास में रक्खे तो युद्ध में जीत होय ॥१६६॥

यन्त्र नं० १६७

इस यन्त्र को कागज में लिखकर जलावे, फिर सुंघावे प्रेत वकारे जाय सही। इदं प्रेत व कारो यंत्रोऽयम् ॥ १६७ ॥

यन्त्र नं० १६८

केशर से थाली में लिख धोय ॥ १६८ ॥

४	५	३१	३६
३५	३२	८	१
७	२	३४	३३
३०	३७	३	६

यन्त्र नं० १६९

यन्त्र जाप में स्त्री के सिरहाने राखें तो कोई बात का विघ्न नहीं सही ॥ १६९ ॥

५४	६१	२	९
७	३	४६	५७
६०	५५	८	१
४	६	५६	५८

यन्त्र नं० १७०

यन्त्र सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर मकान कि देहली के ऊपर नीचे गाडे और उसको उलांघे तो स्त्री सासरे रहे सही ॥ १७० ॥

६२	६९	२	८
७	३	६६	६५
६८	६३	९	९
४	६	६४	६७

यंत्र नं० १७१

इस यन्त्र को केशर, सिन्दुर, से लोटा के नीचे लिख कर पानी पीलावे तो वश होता है ॥ १७१ ॥
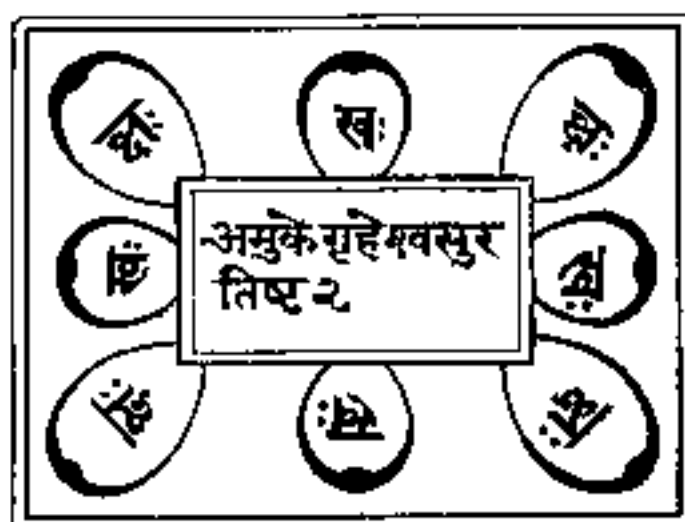
चौतीसा यन्त्र नं० १७२

यह यन्त्र क्रियाण मध्ये रखै, लाभ होय। कच्ची ईंट में लिख, गद्दी के नीचे गाडे, लाभ अवश्य होय ।। १७२ ।।
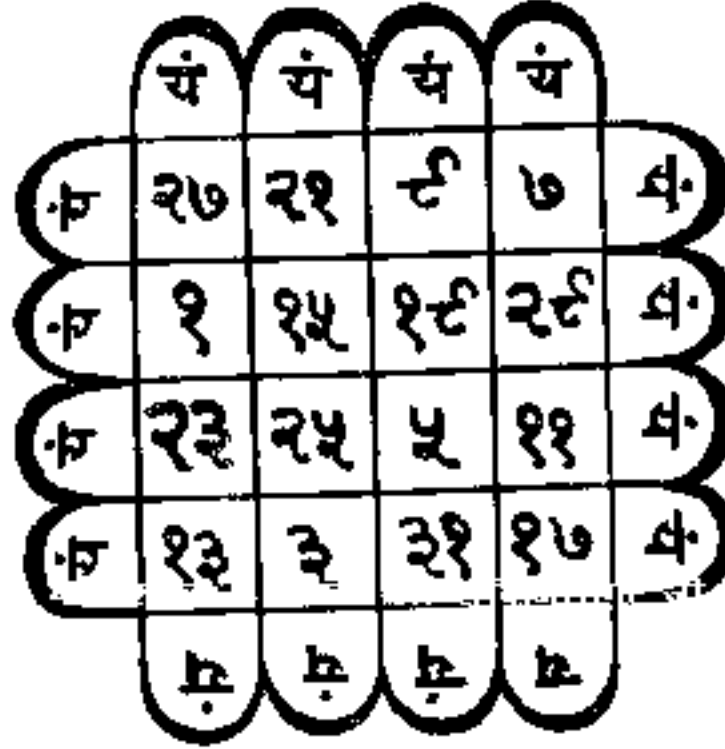
यंत्र नं० १७३

२	७	२४	४१
२२	२७	६	३
८	१	४०	२५
३६	३४	४	५

यन्त्र नं० १७४

५	९	६
७	१०	६
४	१	५

शाकिनी, डाकिनी, भूत भैंसासुर लगै नहीं, पीपल के पान पर लिखि धूप दे, तावीज में मढि गले में बांधे ।। १७३ ।।

यन्त्र नं० १७५

२१	१८	१८	२५
२६	१७	३१	२०
२९	३२	२४	१९
१६	२७	२१	२

ॐ नमो आदेश गुरु को आधाशीशी आध (कपाली) कमाल माँग संवारी सारी रात एकून आया, हनुमंत आया कांई लाया सहसा-मणा को मुदगर लाया, सवाहाथ की धुरी हांक सुनीं हनुमंत की (आधा शोशी) जाय ॥ १७५ ॥ १७६ ॥

यन्त्र नं० १७६

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३९	४२

जन्त्र पीड की कागज पर स्याही से लिखे तो पीडा मिटे ॥ १७६ ॥

यन्त्र नं० १६६

यन्त्र थाली में लिख स्त्री को पिलावे, तो गर्भ ९ माह पीछे खजास होय ॥ १७७ ॥

यः	यः	यः	यः	यः	यः	यः
यः	२४	३१	२	७	९	यः
यः	६	६	२	८	२७	यः
यः	३	२५	८	१	३	यः
यः	६	५	२	६	२९	यः
यः	यः	यः	यः	यः	यः	यः

यंत्र नं० १७८

२९	३६	२	८
७	३	३३	३२
३१	३०	९	१
४	६	३१	३१

यन्त्र लिख थल में गाडे। रविवार के दिन उलंघे तो गर्भ जाता है ।। १७८ ।।

यन्त्र नं० १७९

६७७	६८४	२	७
६	३	६८१	६८०
६८३	६७८	८	१
४	५	६७९	६८२

यन्त्र सुगंध से लिखे। गाय के गले बांधै, बछड़ा होगा तथा स्त्री के गले में बांधे तो भरतार वश्य होय ।। १७९ ।।

यन्त्र नं० १८०

३३	४०	२	८
७	३	३७	३६
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

यन्त्र माल कांगनी का रस सूं जाका घर में गाडे ताके सर्प भय होय नाहीं ।। १८० ।।

यन्त्र नं० १८१

३७	४४	२	८
७	३	४१	४०
४३	३८	९	१
४	६	३९	४२

इस यन्त्र को मुर्गा की बींट से कागज पर लिख कर माथे पर रखे, तो वश में हो ॥ १८१ ॥

यन्त्र नं० १८२

३४	४१	२	८
७	३	३८	३७
४०	३५	९	१
४	६	३६	३९

यन्त्र घर के सम्मुख हिरमिच सूँ मांडे, तो डाकिनी शाकिनी का भय नहीं होय ॥ १८२ ॥

यन्त्र नं० १८३

३६	४३	२	८
७	३	४०	३९
४२	३७	६	१
४	६	३८	४१

यन्त्र कोंच का रस सुँ लिख, भोज-पत्र, ऊपर घर में राखें तो सर्प, आवे नहीं ।। १८३ ।।

यन्त्र नं० १८४

४२	४८	२	६
७	३	४६	४५
४८	४३	६	१
४	६	४४	४७

यन्त्र पौलि के दरवाजे लिखें, शत्रु देख जल मरें । शत्रु वश होय सही ।। १८४ ।।

यन्त्र नं० १८५
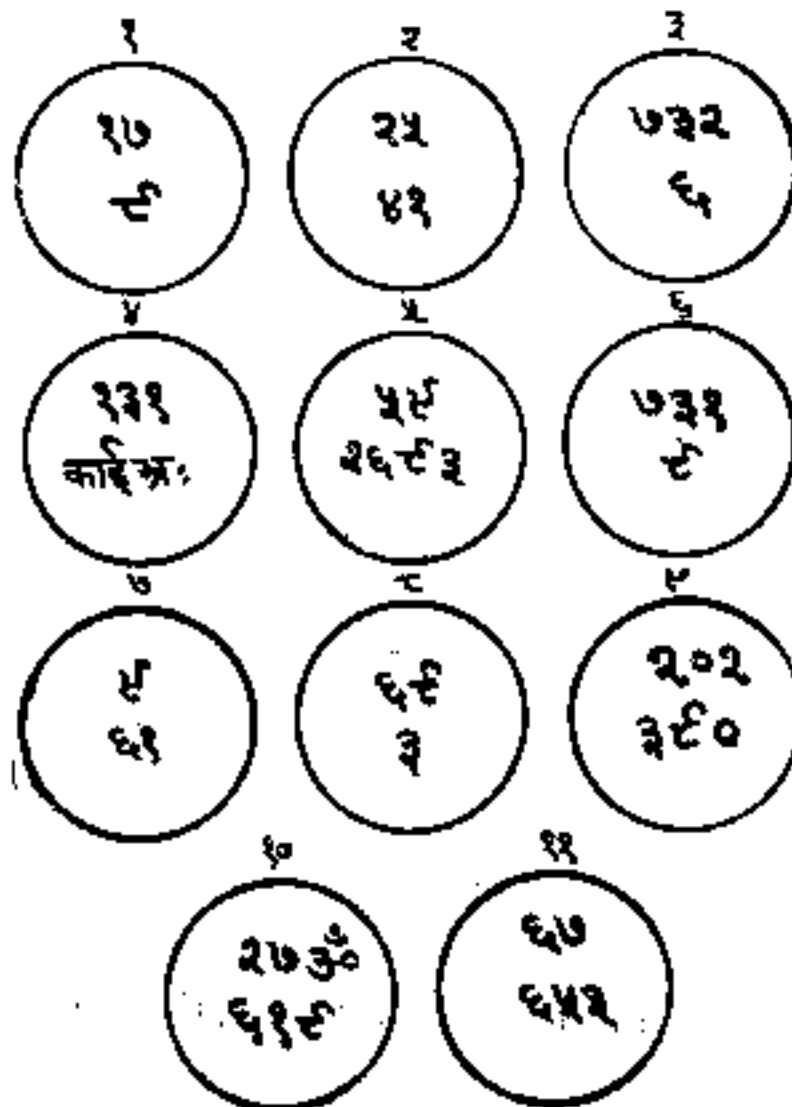
गेहूँ की रोटी आदित्यवार के दिन करावे । ११ लिह ऊपर यह यन्त्र लिखिये ते रोटी छाया में सुखावे, पुरुष कुत्ती—स्वानती तें खिलावें तो स्त्री वश्य होय और स्त्री स्वान ने खिलावें तो पुरुष वश्य हो ।। १८५ ।।

यन्त्र नं० १८६

४४	५१	२	८
७	३	४८	४७
५०	४५	९	१
४	६	४६	४९

कुमारी कन्या के हाथ पूनी २।। को कतार कर ये यन्त्र कागज में दूध से लिखें। स्त्री के गले बांधे, दूध ज्यादा होय ।। १८६ ।।

यन्त्र नं० १८७

४५	५२	२	८
७	३	४९	४८
५१	४६	९	१
४	६	४७	५०

यन्त्र भोजपत्र पर दिवाली की रात लिख, गले में राखें। मनुष्य व स्त्री, तो कामण दमण लागे नाहीं ।। १८७ ।।

यन्त्र नं० १८८

४२	४९	२	८
७	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	६	४४	४७

यंत्र, ञाबरा का पान पर मांडै, जाका नाम को सी यन्त्र वन में गाडै, तो वह भ्रमता फिरै ॥ १८८ ॥

यन्त्र नं १८९

५४	६१	२	८
७	३	५८	५७
६०	५५	९	१
४	६	५६	५९

यन्त्र जापा में स्त्री के सिरहाने राखै तो कोई बात का विघ्न नहीं, सही ॥ १८९ ॥

यन्त्र नं० १९०

६१	६८	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	९	१
४	६	६३	६६

यंत्र बुझारी के मांहि लिखकर के मशान में गाडै, तो स्त्री की कूंख बन्द होय ॥ १९० ॥

यन्त्र नं० १९१

६५	७२	२	८
७	३	६९	६८
७१	६६	९	१
४	६	६७	७०

यंत्र आक की जड़ सूँ लिख, माथै राखै, तो देवता प्रसन्न होय ॥ १९१ ॥
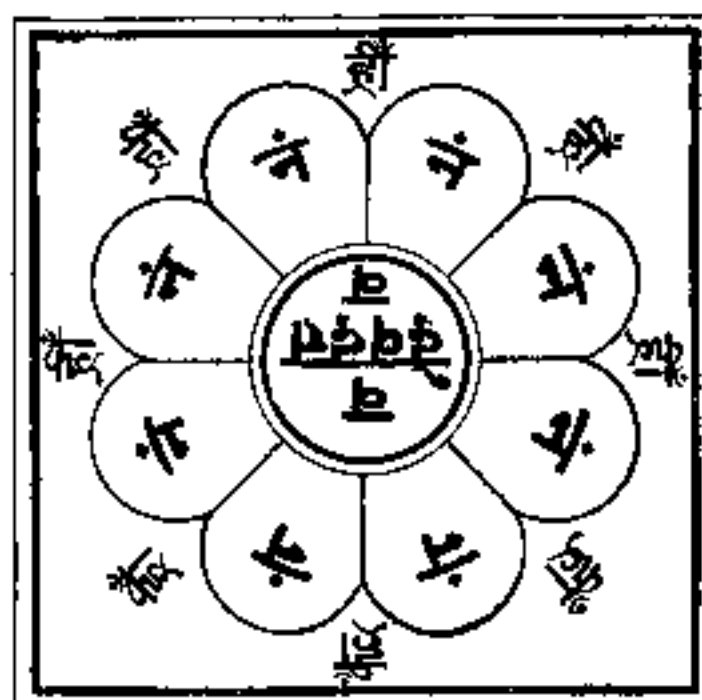
यन्त्र नं० १९२

यह यन्त्र गर्म पानी में रखिये। तीन दिन में शीत ज्वर जाय। शीतल पानी में रक्खे शी ज्वर जाय, हाथ में बांधे बेला ज्वर जाय, धूप खेवै, भूखों को जिमावै ॥ १९२ ॥

यन्त्र नं० १९३

१ यन्त्र चौराहे में और १ यन्त्र शत्रु के द्वारे गाडे १ आक के वृक्ष में बांधे। पहले दस हजार जपना, दशांश होम करना, उच्चाटन होय यन्त्र मन्त्र में है ॥ १९३ ॥

यन्त्र नं० १९४

ह्रौं	ह्रौं	ह्रौं	ह्रौं	ह्रौं	ह्रौं
ह्रौं	२७५	२७५	२७५	२७५	ह्रौं
ह्रौं	२७५	२७५	२७५	२७५	ह्रौं
ह्रौं	२७५	२७५	२७५	२७५	ह्रौं
ह्रौं	ह्रौं	ह्रौं	ह्रौं	ह्रौं	ह्रौं

नोट— इसकी विधि उपलब्ध नहीं हो सकी है।

यन्त्र नं० १९५

४२	४८	२	६
७	३	४६	४५
४८	४३	९	१
४	६	४४	४७

यन्त्र लोहे के ताबीज में घाल कर स्त्री के गले में बाँधे गर्भ रहे ।। १९५ ।।

यन्त्र नं० १९६

यह यन्त्र श्मशान के कोयले से धतूरे की लेखनी से लिखें । मनुष्य की खोपड़ी पर अग्नि में तपावें, शत्रु को ज्वर चढ़े । निकासे छूटे ।। १९६ ।।

यन्त्र नं० १६७

१०	२	८	८
३	७	६	६
४	६	१	१
६	५	८	८

जन्त्र भोजपत्र ऊपर हिंगुल से लिख, गले में बांधे तो ताव रोग जाय बालक का सही छै ॥१६७॥

यन्त्र नं० १६८

२८	३५	२	८
७	३	३२	३१
३४	२६	६	१
४	६	३०	३३

जंत्र थाली के ऊपर मांड स्त्री को दिखावे। उलंघी धोली प्यावे तो कष्टी का कष्ट छूटे ॥१६८॥

यन्त्र नं० १६६

६०	६७	२	८
७	३	६४	६३
६६	६१	६	१
४	६	६२	६५

जन्त्र स्त्री ने दूध में घोल पिलावे, पुष्य नक्षत्र में पाधां आत पड़े ॥१६६॥

यन्त्र नं० २००

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देव	दत्त	ह्रीं
ह्रीं	मन्त्र	फुरं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

यह यन्त्र पास राखे, राजा गुरू, प्रसन्न होय अष्ट गन्ध सु लिखे ॥२००॥

यन्त्र नं० २०१

४३	४२
३११	७०

इस यन्त्र को स्याही से लिख कर माथे पर बांधे, तो आधा शीशी जाय ॥२०१॥

यन्त्र नं० २०२

५	२
३	७

इस यंत्र को रविवार के दिन पीपल के पत्र पर लिख, हाथ में बांधे तो अन्तरा ज्वर जाता है ॥२०२॥

यन्त्र नं० २०३

१२	११	६६	१
६	११	।।।	।।।

रवि दिन धोय पिलावे, स्त्री पुरुष वश्य होय ॥२०३॥

यन्त्र नं० २०४

७७	१	१	५
२	७	५	१३
७	१३	१	५
१	५	१३	७

गर्भ स्तम्भन यंत्र कुंकुम गौरोचन सूं भोज पत्र पर लिखे कंठ में बांधे तो गर्भ का स्तभंन होता है ॥२०४॥

यन्त्र नं० २०५

७	४५	१	७
२	४६	८	४४
४६	३	४३	५
४३	६०	४५	४

यह यंत्र केशर सूं लिख थाली में लिख कर घोल कर पिलावे, तो प्रसव की वेदना में छुटे ॥२०५॥

यन्त्र नं० २०६

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

ये यन्त्र धोय पिलावे कण्ठी छूटे ॥२०६॥

यन्त्र नं० २०७

य:	न:	रप्र:
ॐ	घ:	ध:
स:	सी:	द:

पीपल के पत्ते पर लिखे, सिर पर बांधे, सिर दर्द जाय ॥२०७॥

यन्त्र नं० २०८

ॐ१	न ४	न : ४
रम ८	त ८	र६
द ७	ल ८	ज ३

आंधा शीशी जाय ॥२०८॥

यन्त्र नं० २०९

इदं यन्त्रं कुम कुमादिभि लिख्यते कंठेध्रियतेशिरोर्ति रोगं निवारयति रक्षां करोति ॥२०९॥

यन्त्र नं० २१०
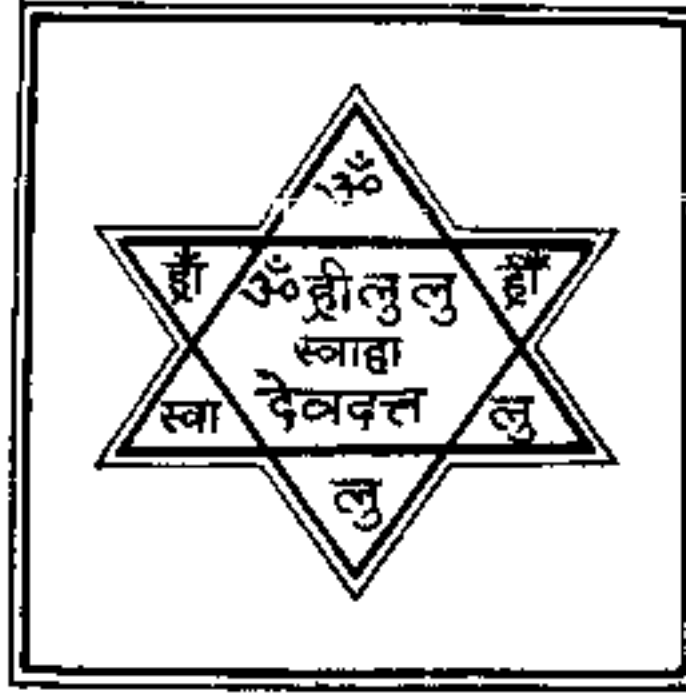
इस यन्त्र को बालक के गले में बांधने से रोना दूर होता है ॥२१०॥

यन्त्र नं० २११

८	१	६
३	५	७
४	९	२

एक च धन लाभं च । द्वितीयं च धनं क्षयं ॥
त्रितियं मित्र संयुक्तं । चतुर्थं च कलहं प्रियः ॥१॥
पंच में सुख लाभाय । षष्टमे कार्य नाशन ।
सप्तमे धन धान्यं च । अष्टमे मरणं ध्रुवं ॥२॥
नव में राज सन्मानं । कथितं जिन भाषितं ।
केवली समाप्तं ॥२११॥

यन्त्र नं० २१२

४	९	२
३	५	७
८	१	६

यह यंत्र १०८ बार मौन सों लिखि भजिमें पुष्ट बेडी भाजि पड़े ॥२१२॥

यन्त्र नं० २१३

८	३	४
१	५	९
६	७	२

यह यंत्र खड़ी सूं थाली में लिखि स्त्री ने दिखावे तो कष्ट सूं छूटे ।२१३।

यन्त्र नं० २१४
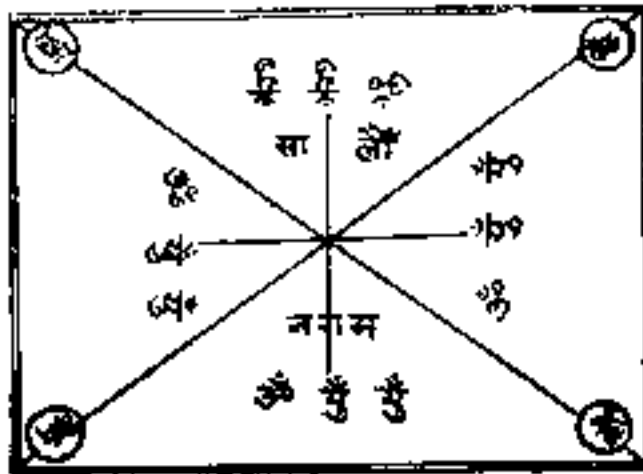
यह यन्त्र घृत पात्र के नीचे राखे। पात्र चालमे तो मात्र मांहि घृत बढ़े टूटे नहीं अष्ट गंध सो निखे ॥२१४॥

यन्त्र नं० २१५

अमुक मार्ग पर चक्र पागतं स्तंभ भवति स्वाहा। सत्यं कुरु स्वाहा प्रबल स्थभों भवति। भोज पत्रे लिख शत्रु दारे प्रवेशे स्थाने वा लिख तथा भोज पत्रे लिखि त्वा सूत लपेटे आटा की गोली मध्ये घालिये मनुष्य कृपाले ॥२१५॥

यन्त्र नं० २१६

यन्त्र नं० २१७
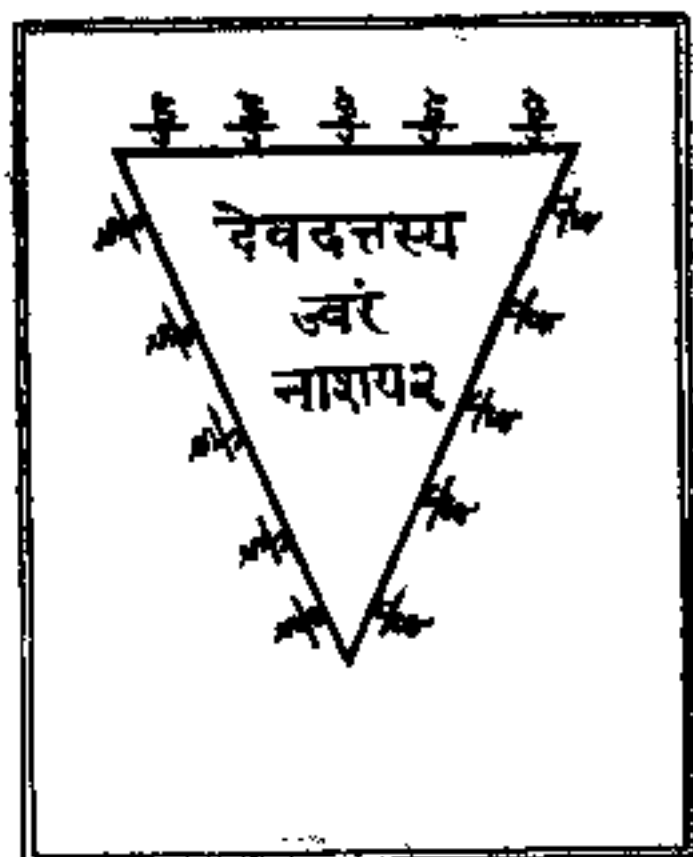
ये यन्त्र शीत ज्वर चढने के पूर्व अग्नि में तपावें । जब तक वक्त टल जाय पानी के कटोरे में डाल देवे सिरहाने राखे ज्वर जाय ॥२१६, २१७॥

यन्त्र नं० २१८
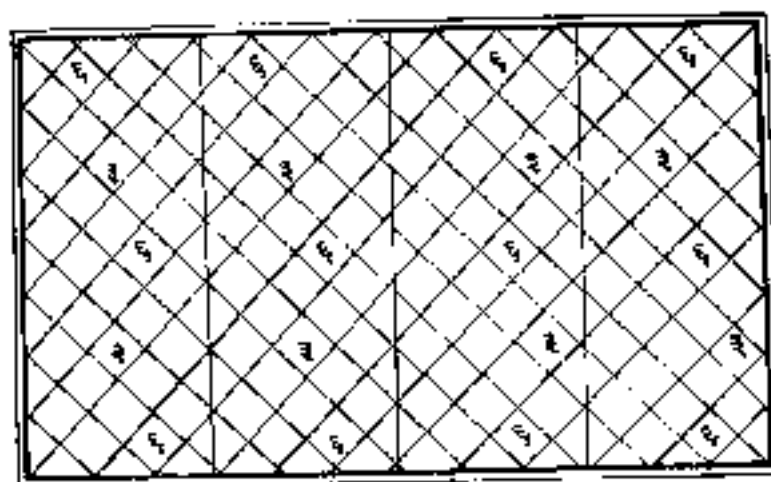
यन्त्र जंजीरे का सिन्दूर से लिखे । दिखावे जलावें भूत व कारे सही ॥२१८॥

यन्त्र नं० २१९

४५	४१	५	२
५४	५४	४६	४२
४२	५१	४४	४१
४५	४२	५२	४१

इस यंत्र को पान पर लिख स्त्री को खिलाने से प्रसुति में कष्ट नहीं होता ॥२१९॥

यन्त्र नं० २२०

२७	३४	२	७
६	३	३१	३०
३३	२८	८	१
४	५	२९	३२

इस यंत्र को बच्चे के गले में बांधने से दृष्टि दोष निवारण होता है ॥२२०॥

यंत्र नं० २२१

८	१	४९८॥	४९३॥
४९४॥	४९७॥	४	५
२	७	४९३॥	४९९॥
४९६॥	४९५॥	६	३

इस यन्त्र से गर्भ स्तम्भन होता है ॥२२१॥

यन्त्र नं० २२२

४	३	८
९	५	१
२	७	६

जमीन में लिखे मेटे शत्रु उच्चाटन होय ॥२२२॥

यन्त्र नं० २२३
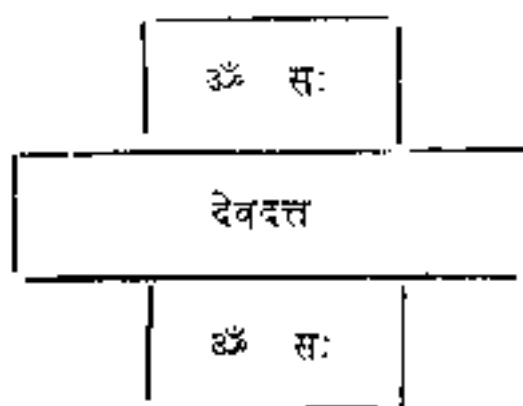
इस यन्त्र को पान में रख खिलावे वश्य होय ॥२२३॥

यन्त्र नं० २२४
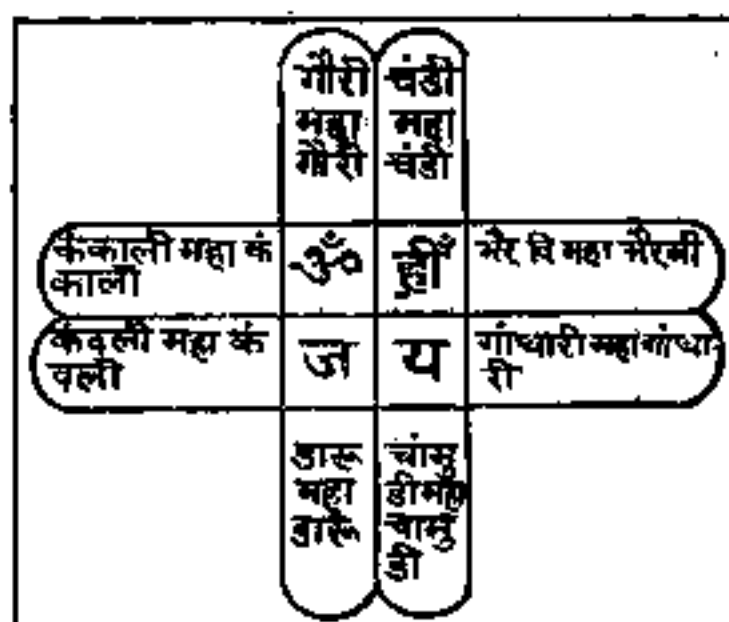
इस यंत्र को भोजपत्र पर लिख कर कमर में बांधे, तो सर्व वायु जावे ॥२२४॥

यंत्र नं० २२५

८३१	८२४	८२९
८२६	८२८	८३०
८२७	८३२	८२५

मृत वत्सा के मरे हुवे बच्चे होना बंध हो ।। २२५ ।।

यन्त्र नं २२६

३८	३८	३८	३८
३८	३८	३८	३८
३८	३८	३८	३८
३८	३८	३८	३८

इस यन्त्र को गले बांधे, शाकिनी जाये ।। २२६ ।।

यन्त्र नं० २२७

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३९	४२

पीपल के पत्ते पर लिख बांधें, ज्वर जाय ।। २२७ ।।

यन्त्र नं० २२८

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

यह यन्त्र लिख कर, सीमा में गाडे तो टीड्डी नष्ट हो जाय ।। २२८ ।।

यन्त्र नं० २२९

१	८	१०	८२
८१	११	५	४
७	२	८३	९
१२	८०	३	६

यन्त्र लिख कर बांधें आंधा शीशी जाय ॥ २२९ ॥

यन्त्र नं० २३०

१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२॥	१२॥
१२॥	१२॥	१२।	१२॥

यन्त्र बांधे जुआ जीते ॥ २३० ॥

यन्त्र नं० २३१

४	३२	७	३७
३८	६	३५	१
३३	३	३६	८
५	३९	२	३४

यन्त्र लिखँ बांधें शूल जाय ॥ २३१ ॥

यन्त्र नं० २३२

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

यन्त्र लिख नीले डोरे से बांधे, सिर पीड़ा मिटै ॥ २३२ ॥

यन्त्र नं० २३३

१४	२१	२	७
६	३	१८	१७
२०	१५	८	१
४	५	१६	१९

यह यन्त्र लिख धोय पिलावै, सुख से प्रसव होय, कष्ट छूटै ॥ २३३ ॥

यन्त्र नं० २३४

१८	२५	२	७
६	३	२२	२१
२४	१९	८	१
४	५	२०	२३

पीपल के पत्ते पर लिख कर बखें से बांध चरखा घुमावै, परदेश गया हुआ आवे ॥२३४॥

यन्त्र नं० २३५

यं	क्षं	जं	चं
क्षं	तं	जं	हं
हं	जं	हं	चं
नं	क्षं	जं	हं

भोज पत्र पर लिख सिरहाने राखै तो स्वप्न आवै नहीं ॥ २३५ ॥

यन्त्र नं० २३६

इन्द्रानन्दा [illegible] कारण निरु [illegible] मध्य [illegible] सत्य शत्रु [illegible] मध्ये
नाम मध्ये जिको मुंड ऊपर विराउ करावइ जडई जडावई चिन्ते चिन्तावई मन धरई धरावई
तीन मध्ये पंचांगुलि तणुवज्जनिर्घात पडई सत्यम् ।

ये मन्त्र यन्त्र के चारों तरफ लिखे । ये मन्त्र सर्वकार्य ऊपर श्रेष्ठ है । भुजा अथवा गले में बांधे तो भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी की बाधा दूर हो । राजा प्रजा सर्व वश्य होते हैं धूप से पूजा करे ।।२३६।।

यन्त्र नं० २३७

यह मन्त्र लिख बांधे शाकिनी, डाकिनी छाया भूतादि दोष जाये । वशी होय सही ।।२३७।।

यन्त्र नं० २३८

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५६	५१	८	१
४	५	५२	५५

इस यन्त्र को घर के दरवाजे पर गाड़े तो उत्तम व्यापार चले ॥२३८॥

यन्त्र नं० २३९

ॐ

८	१	६
३	५	७
४	९	२

श्रीं (बाईं ओर) हीं (दाईं ओर)

क्लीं

इस यन्त्र को पान पर, अथवा पीपल के पत्ते पर, भोज पत्र पर केशर से लिखे। ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं नमः [illegible] जाप करे, दीप धूप रखकर प्रभात, संध्या, सोते समय यंत्र सिरहाने राखे, शुद्ध पवित्र होकर रहे, अर्द्ध रात्री के पीछे सब शुभाशुभ मालूम हो ॥२३९॥

यन्त्र नं० २४०
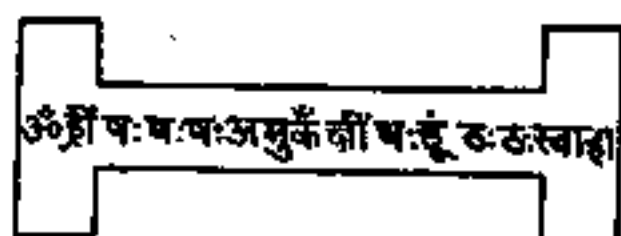
किसी पर चलाना होय तब शील संयम तथा त्रियोग शुद्धि के साथ लाल वस्त्र पहन कर उत्तर दिशा में मुख करके खड़ा हो। लाल माला से १२००० माला सवा पांच अंगुल की तांबे की कील बांये हाथ में लेकर ॥२४०॥

यंत्र नं० २४१
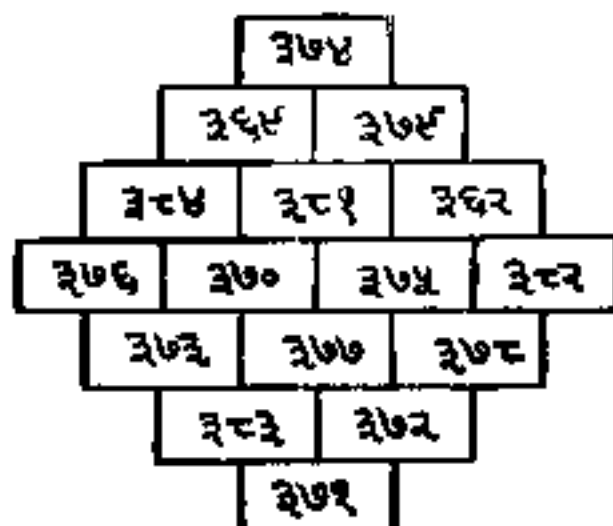
इस यंत्र को दुकान के तथा घर के दरवाजे पर लिखकर चिपका देवे तो चोरी कभी नहीं होती है, चोर भय मिटता है ॥२४१॥

यन्त्र नं० २४२
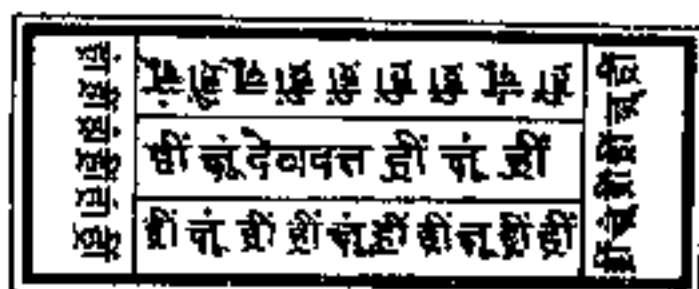
इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिखकर गले में बांधे तो सन्तान पुत्र होता है। और होकर मर जावे तो जीवे, मूल नक्षत्र रविवार के दिन गूंजा के रस से भोज पत्र पर यंत्र लिखकर पास में रखे तो शत्रु मित्र हो जाय। सत्यं ॥२४२॥

यन्त्र नं० २४३
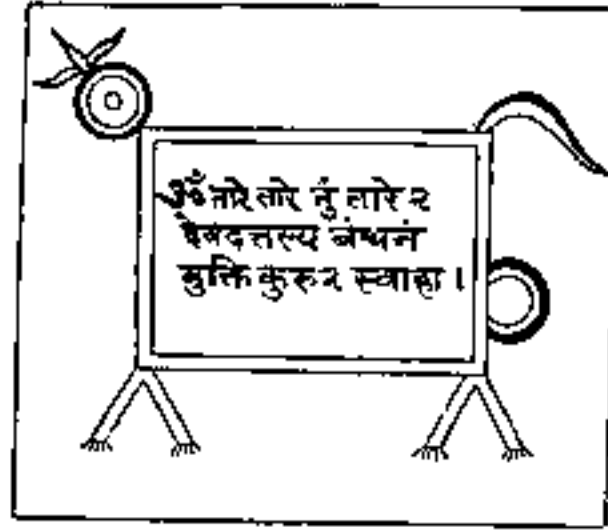
इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर, गले में बांधे तो राजा के बंधन से छूट जाय, बन्धि मोक्ष यन्त्र है ॥२४३॥

यन्त्र नं २४४

ॐ १६	ह्रीं २	ह्रीं ३	ह्रीं १३
सु ५	स ११	व १०	ह्रीं ८
ॐ ६	ह्रीं ७	ह्रीं ६	ह्रूं १२
स: ४	स: ४	ठ: १५	ह्रीं १

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिखकर घर में बांधे तो शाकिन्यादि नष्ट हो और ध्वजा पर लिखे तो राजा शत्रु भागे, घर में रखे तो घर का सर्व उपद्रव नाश हो सवेरे नित्य ही इस यन्त्र का दर्शन करे तो शुभ हो ॥२४४॥

यन्त्र नं० २४५
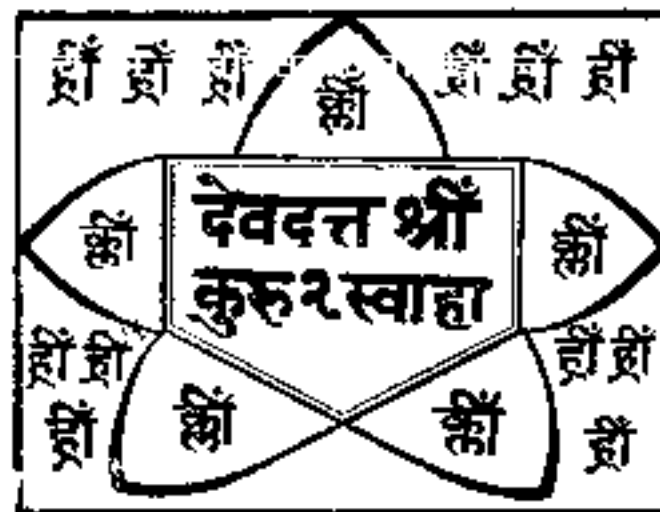
इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिखकर बांधे, तो निर्धन को धन की प्राप्ति हो ।।२४५।।

यंत्र नं० २४६
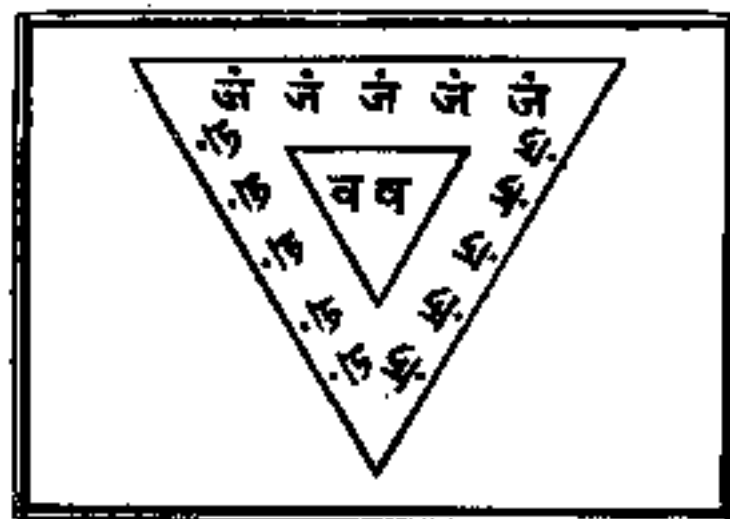
चन्दन कस्तूरी, सिन्दूर, गोरोचन, कपूर, इन चीजों से थाली में यन्त्र लिखे, फिर थोड़ा सा एक वरनी गाय का दूध डालकर रूई से उस यन्त्र को पोंछ लेवे, फिर उस रूई की

यन्त्र नं० २४७

ह्रीं ह्रीं ६ ह्रीं ह्रीं	ह्रीं ह्रीं १ ह्रीं ह्रीं	ह्रीं ह्रीं ८ ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ७ ह्रीं ह्रीं	ह्रीं ह्रीं ५ ह्रीं ह्रीं	ह्रीं ह्रीं ३ ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं २ ह्रीं ह्रीं	ह्रीं ह्रीं ९ ह्रीं ह्रीं	ह्रीं ह्रीं ४ ह्रीं ह्रीं

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अमुकं उच्चाटय वषट् ।

विधि :—इस मन्त्र का, १० हजार जप करके दशांस होम करने से सिद्ध होता है, फिर इस यन्त्र को १०८ बार लोहे की कलम से जमीन पर लिखना और पूजन करना तब जंत्र मंत्र सिद्ध हो जायेगा । फिर एक चिमगादड़ पक्षी को पकड़कर लावे । उस चिमगादड़ के पंख पर पीपल, मिरच घर का धुंआ, बन्दर का विष्टा, नमक, समुद्र फेन इनका चूर्ण कर स्याही बनावे । उस स्याही से यंत्र मंत्र लिखकर उस चिमगादड़ पक्षी को उड़ा देवे, चिमगादड़ जिस दिशा में उड़ेगा, उसी दिशा में शत्रु भाग जायेगा । उसका उच्चाटन हो जाएगा ।।२४७।।

यन्त्र नं० २४८

ह्रीं ह्रीं ह्रीं यं ह्रीं

देवदत्त	श्री. जुं

ये यन्त्र अष्ट गन्ध से लिखकर दरवाजे के चौखट में बांधने से बहू सासरे नहीं रहती हो तो रहे ।।२४८।।
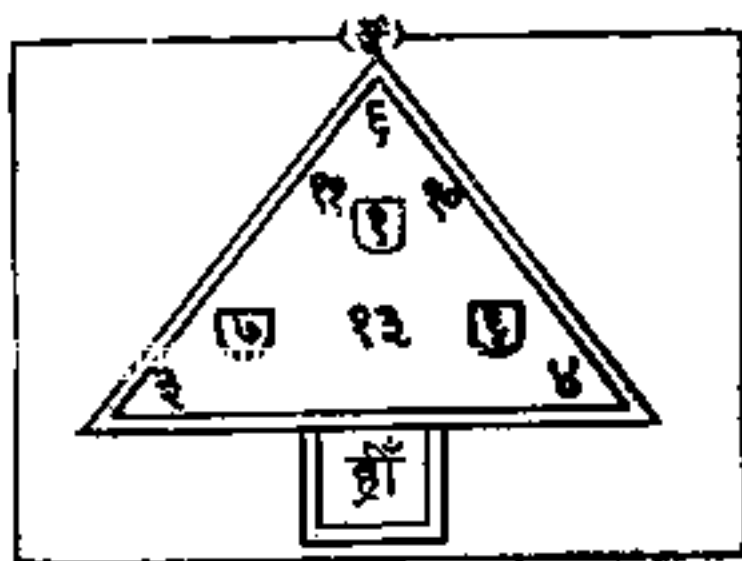
इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्टगंध से लिखे और पगड़ी में अथवा टोपी में रक्खे तो छत्रधारी होता है ॥२४९॥

यन्त्र नं० २५०

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

इस यन्त्र को १ लाख बार लिखकर सिद्ध करे । फिर कार्य पड़े तब प्रयोग करे ॥२५०॥

यन्त्र नं० २५१

हस्त नक्षत्र रविवार के दिन भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिखकर फिर पास में रखे, राजा वश्य, शत्रु मित्र होय ।।२५१।।

यन्त्र नं० २५२

इस यन्त्र को लिखकर हंडिया में डाले, फिर उस हंडिया में पीपल की छाल, संखा होली आधा सेर पानी डालकर बबूल की लकड़ी से चूले पर उबालना तो शाकिनी की जो बाधा हो, तो दूर होती है, शाकिनी पुकारती आवे सर्व दोष मिटे । आवेश उतारन यंत्र है ।।२५२।।

यन्त्र नं० २५३
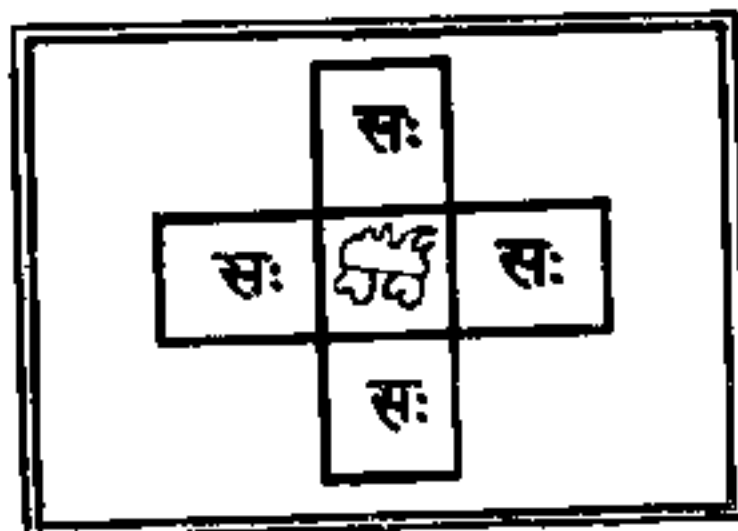
ॐ नमो लड़ी लड़गीही में ढ्रई मसाणं हिडई नागी पडर केशी मुहई विकराली अमकड़ा की अंगई पीडा चालई माजी मराती कर उरभ सई अमकडा के अंगई पीडा करे सही मात लड़ी लडगी गोरी शक्ति फुरई मेरी चाडतरई हुं फट् स्वाहा ॥२५३॥

विधि :—मोम का मनुष्याकार पुतला बनावे फिर जैसा यंत्र में है वैसा ही पुतले पर अक्षर स्थापन करे, फिर पुतले पर सिन्दुर चढ़ाकर स्वयं नग्न हो, लाल कनेर के फूल सो मंत्र १०८ बार जपकर पूजा करे, फिर पुतला के जिस अंग में सूई चुभावे, शत्रु के उसी अंग में पीड़ा होती है। दूध दही से स्नान करावे तब अच्छा होता है। इसकी साधना एकान्त में तथा श्मसान में व रात्रि को निर्जन स्थान में करे। विधि चूके तो वह स्वयं मरे।

यन्त्र नं० २५४
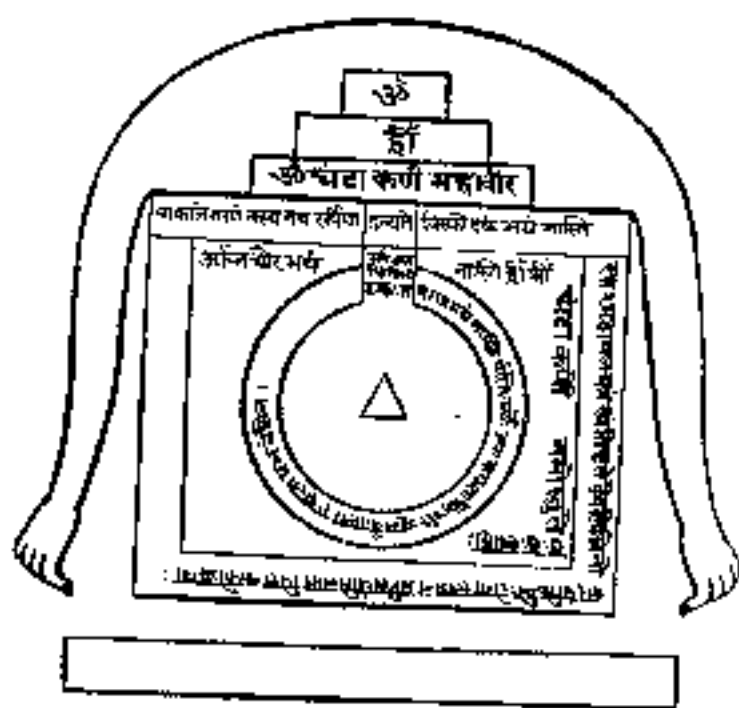
यह यंत्र घंटा कर्ण कल्प का है। इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोजपत्र पर लिखकर मंत्र का साढ़े बारह हजार जप विधिपूर्वक करे तो सर्व कार्य की सिद्धि होती है। विशेष विधि घंटा कर्ण कल्प में देख लेवे ॥२५४॥

यन्त्राधिकार

पन्द्रहिया यंत्र का विधि विधान

मूल मन्त्र :—ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः

यन्त्र साधना के समय मूल मन्त्र की हर रोज एक माला का जाप करना चाहिए।

विधि :—योग्य शुद्ध व एकान्त स्थान में पूर्व दिशा की ओर भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति की स्थापना करनी चाहिये। दशांग धूप या गुग्गुल की धूप करना चाहिए, घृत का दीपक होना चाहिए। प्रत्येक यन्त्र लिखने के बाद उसकी पूजन करे। चावल, पुष्प, खोपरे का टुकड़ा, पान, सुपारी अनुक्रम से चढ़ाने चाहिए। उपरोक्त यन्त्रों को गिनती में लिखने से अलग-अलग फल की प्राप्ति होती है।

(१) १० हजार—केसर कस्तूरी या गोरोचन की स्याही व चमेली की कलम से लिखे तो वशीकरण हो।

(२) २० हजार— चिता के कोयलों की स्याही व लोहे की कलम से श्मसान की भूमि पर लिखे, तो शत्रु का उच्चाटन हो, विनाश हो और धतूरे के रस व कौए की पांख से लिखे तो शत्रु की मृत्यु हो।

(३) ३० हजार हल्दी की स्याही व सेह की शूल से लिखे, तो शत्रु का स्तम्भन हो।

(४) ४० हजार केसर की स्याही व चांदी की कलम से लिखे, तो देव दर्शन हो प्रसन्न हो।

(५) ५० हजार- अष्टगन्ध स्याही व सोने की कलम से लिखे तो मोह न हो।

(६) ६० हजार—अष्टगन्ध स्याही व चाँदी की कलम से लिखे, तो खोई अचल सम्पत्ति वापस प्राप्त हो।

(७) ७० हजार—अष्टगन्ध स्याही व चमेली की कलम से लिखे, तो द्रव्य प्राप्त हो।

(८) ९० हजार—अष्टगन्ध स्याही व चमेली की कलम व आम केला, वटवृक्ष के पत्ते पर लिखे तो महान् बने।

(९) ९ लाख—अष्टगन्ध स्याही, चाँदी की कलम से लिखे तो भगवान की कृपा हो, सर्व कार्य सिद्धि हो।

इन यन्त्रों के अंक भरने की अलग-अलग विधि है उसका फल भी अलग-अलग है जो निम्नलिखित हैं।

(१) १ से ९ तक के अंक भरे, तो देव दर्शन हो, ९ लिखे तो वशीकरण हो।

(२) २ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ लिखे तो वशीकरण हो।

(३) ३ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १–२ लिखे तो भूमि प्राप्त हो। व्यापार वृद्धि हो।

(४) ४ से ९ तक लिखे, फिर १–२–३ लिखे, तो द्रव्य प्राप्त हो, देव दोष दूर हो।

(५) ५ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १–२–३–४ लिखे, तो यह अशुभ है। अतः इसे न लिखे।

(६) ६ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १–२–३–४–५ लिखे तो कन्या प्राप्त हो। उस पर कोई मारण का प्रयोग नहीं कर सकेगा।

(७) ७ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १ से ६ तक लिखे, तो मोह न हो, अनेक लोग वश हो।

(८) ८ से लेकर ९ तक लिखे, फिर १ से ८ तक लिखे तो शत्रु के उच्चाटन हो, अशुभ चिंतन करने वाला विपत्ति में पड़े।

(९) ९ से प्रारम्भ करे, फिर १ से ८ तक के अंक लिखे, तो सर्व कार्य सिद्ध हो।

पन्द्रहिया यंत्र कल्प

यह अति प्रसिद्ध व प्रभावशाली यन्त्र है। यह यन्त्र एक से लेकर नौ के अंक तक, नौ कोठों में ही भरा जाता है। इसको जिधर से भी गिना जावे, योगफल १५ ही आयेगा। यह पन्द्रहिया यंत्र मुख्यतया चार प्रकार का बनता है। इसकी अलग-अलग वर्ण व संज्ञा होती है।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

वर्ण— ब्राह्मण संज्ञा :—वादी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यन्त्र मिथुन, तुला, कुम्भ के चन्द्र में लाल चन्दन, हिंगुल या अष्टगन्ध से लिखा जाना चाहिए।

४	३	८
९	५	१
२	७	६

वर्ण— क्षत्रिय संज्ञा :—आलसी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यन्त्र धन व मेष के चन्द्र में काली स्याही व बरास (कपूर) मिला कर लिखा जाना चाहिए।

२	९	४
७	५	३
६	१	८

वर्ण— वैश्य संज्ञा :—रवाखी के नाम से पहचाने जाने का यह यन्त्र वृषभ के चन्द्र में अष्टगन्ध से लिखा जाना चाहिए।

वर्ण— शूद्र संज्ञा : आवी के नाम से पहचाना जाने वाला यह यन्त्र वृश्चिक और मीन के चन्द्र में काली स्याही से लिखा जाना चाहिए।

६	७	२
१	५	९
८	३	४

इन चारों यन्त्रों के अलग २ फल हैं। ब्राह्मण जाति वाले यन्त्र का फल सर्वश्रेष्ठ माना गया है। अतः उसी के विधि विधान का यहां उल्लेख किया गया है। उसे सिद्ध करने में निम्नलिखित वस्तुएं की आवश्यकता होती है।

लापसी, पुरी, अनार की कलम, अष्ट गन्ध, स्याही, चांवल, गुग्गुल, पुष्प, खोपरे के टुकड़े २१, नागर बेल के पान २१, सुपारी २१, घृत का दीपक, एक कोरा घड़ा।

विधि :—योग्य शुद्ध व एकांत स्थान में पहले पूर्व दिशा की ओर घड़े की स्थापना करनी चाहिये। उसके सामने भोज पत्र बिछाना चाहिये। उसके ऊपर के भाग में घृत का दीपक हो, नीचे के भाग में धूप का धूपिया हो, जिसमें गुग्गुल का धूप करना चाहिए। लापसी, पुरी आदि को भोज पत्र के बांये आधा आधा रखना चाहिये। तत्पश्चात् अनार की कलम से भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से यन्त्र लिखना चाहिये। यह यन्त्र लिखते समय "ह्रीं या ॐ ह्रीं श्रीं" मन्त्र का जाप करते रहना चाहिये। यन्त्र लिखने के बाद उसका पूजन करे। फिर मन्त्र का ६,००० जाप करे। इस प्रकार २१ दिन करे, जिससे सवा लाख जाप पूरा हो जायेगा। मन्त्र और यन्त्र की सिद्धि हो जायेगी, अन्त में, हवन, तर्पण आदि विधि पूर्वक करे।

इन यन्त्रों के अंक भरने की अलग अलग विधि है। उसका फल भी अलग अलग है जो निम्नांकित हैं—

(१) १ से ९ तक के अंक भरे, तो हनुमानजी के आकार का यक्ष दर्शन दे।

(२) २ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ लिखे तो राज्याधिकारी वंश में हो।

(३) ३ से ९ तक लिखे, फिर १, [illegible]

(५) ५ से ९ तक लिखे, फिर १–२–३–४ लिखे तो यह अशुभ है। स्थान भ्रष्ट कराता है। अतः इसे न लिखे।

(६) ६ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ से ५ तक लिखे, उस पर कोई मारण का प्रयोग नहीं कर सकेगा।

(७) ७ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ से ६ तक लिखे, तो अनेक मनुष्य वश हों।

(८) ८ के अंक से शुरू कर ९ तक लिखे, फिर १ से ८ तक लिखे, तो धन की वृद्धि हो।

इसको गिनती में लिखने से अलग अलग फल की प्राप्ति होती है :—

१००० लिखने से सरस्वती प्रसन्न होती है। विष का नाश होता है।

२००० लिखने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है। दुःख का नाश होता है। शत्रु वश में होता है। उत्तम खेती होती है। मन्त्र तन्त्र की सिद्धि होती है।

३००० लिखने से वशीकरण होता है. मित्र की प्राप्ति होती है।

४००० लिखने से भगवान व राज्याधिकारी प्रसन्न होते हैं, उद्योग धन्धा प्राप्त होता है।

५००० लिखने से देवता प्रसन्न होते हैं, बंध्या के गर्भ रहता है।

६००० लिखने से शत्रु का अभिमान टूटता है, खोई वस्तु वापिस मिलती है, एकान्तर ज्वर मिटता है, निरोग रहता है।

१५००० लिखने से मनवांछित कार्य में सफलता मिलती है।

शुभ कार्य के लिए शुक्ल पक्ष में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके यन्त्र लिखना चाहिए। सफेद माला, सफेद वस्त्र तथा सफेद आसन होना चाहिये। साधना के दिनों में ब्रह्म-चर्य का पालन, सात्विक भोजन, शुद्ध विचार रखे जाने चाहिए।

लिखने के बाद एक यन्त्र को रखकर बाकी सभी को आटे की गोलियों में भरकर मछलियों को खिला देना चाहिये या नदी में बहा देना चाहिये।

चांदी या सोने के मछलियों में डालकर पुरुष को दाहिने हाथ और स्त्री को बांये हाथ में या गले में धारण करना चाहिये।

विधि :—यह चौंसठ योगिनियों का प्रभावक यन्त्र है। यह यन्त्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी रविवार या चतुर्दशी रविवार को सूर्य दिशा की ओर मुंह कर, अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिखना चाहिए। अथवा सोने, चांदी या तांबे के पत्र पर खुदवा कर घर में पूजन के लिये रखा जा सकता है। पूजन में रखने के बाद नित्य धूप, दीप करना चाहिये। शरीर की दुर्बलता, पुराना ज्वर तथा किसी भी प्रकार की शारीरिक व्याधि के लिये

सात दिन तक नित्य एक बार चांदी की थाली में अष्ट गन्ध से लिखकर जल प्रक्षालित कर पिलाने से पूर्ण लाभ मिलता है। इस यन्त्र को धारण करने से भूत, प्रेत, पिशाच

चौसठ योगिनी महायंत्र

चौ स ठ यो गि नी म हा यं त्र
श्री च उ स ठ दि व्यायै न मः

१ दिव्ययोगिनी	२ महायोगिनी	६२ घोरा	६१ विकटी	६० दुर्जटा	५९ प्रेतभक्षणी	७ काली	८ कालरात्री
९ निसाचरी	१० हुंकारी	५४ यंत्रवाहिनी	५३ कौमारी	५२ यक्षी	५१ भक्षणी	१५ महाकाली	१६ रक्तांगी
४८ यम दूती	४७ लक्ष्मी	१९ वीरभद्राक्षी	२० धूम्राक्षी	२१ कलिप्रिया	२२ राक्षसी	४२ चर्क्री	४१ मोहिनी
४० कालाग्नि	३९ मंत्रयोगिनी	२७ कौमारकी	२८ चंडी	२९ वाराही	३० मुंडधारनी	३४ दुर्मुखी	३३ क्रोधी
३२ वज्रणी	३१ भैरवी	३५ प्रेतवाहिनी	३६ कंटकी	३७ दीर्घलम्बी	३८ मालिनी	२६ सैवरी	२५ भयंकरी
२४ विरूपाक्षी	२३ घोररक्ताक्षी	४३ कंकली	४४ भुवनेश्वरी	४५ कुंडला	४६ तालुकी	१८ प्रेतकारी	१७ नरभोजनी
४९ करालनी	५० कौशीकी	१४ उर्ध्वकेशी	१३ भूतडामरी	१२ कलिकरी	११ सिद्धवेताली	५५ विशाला	५६ कामुका
५७ व्याघ्री	५८ यक्षणी	६ डाकिनी	५ प्रेताक्षी	४ जिनेश्वरी	३ सिद्धयोगिनि	६३ कपाली	६४ विषलांगुली

शाकिनी, डाकिनी व्यंतर आदि देवों का दूषित प्रभाव अथवा दोष नहीं होते हैं। यन्त्र को पानी में घोलकर वह पानी घर में चारों कोनों में छिड़कने से व्यंतर देव सम्बन्धी दोष निवारण होता है। ऋद्धि, सिद्धि व समृद्धि का आगमन होता है। प्रतिकूल तांत्रिक व मान्त्रिक प्रभावों को नष्ट करता है।

यंत्रों का आकार

स्तंभन कमार्थं — चौकोर यन्त्र बनावे।
उच्चाटनार्थं — षट् कोण
विद्वेषण — त्रिकोण
वशीकरण — कमलाकर
शान्ति — गोलाकार

विद्या आने का यन्त्र

७४	८१	२	८
७	३	७८	७७
८०	७५	६	१
४	६	७६	७६

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में प्रत्येक दिन कांसी की थाली में केशर से लिखकर उस थाली में खीर डालकर यन्त्र को धोवे, उस खीर को खावे तो ज्ञान की वृद्धि होती है।

चोवीसिया यन्त्र कल्प

अथ चौबीस के जन्त्र मन्त्र का ब्यौरा :—

१. आदि भवन चौत्रीस भराय, आदर रक्षा बहुत बढाय ॥ १ ॥

११	८	१	१४
५	१०	१५	४
२	१३	१२	७
१६	३	६	९

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं काला गोरा क्षेत्रपाला जहाँ जहां भेजिये तहांई करवाला आया बाजंत जाय। योरंत जाव उडंत जाव, काला कलवा बाटका घट का चाले का भो पगाइण का चुहड़ का चमारी का प्रगट करे इस घर की आदर रक्षा बढ़ाई करे। गुरु की मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

दूजे घर तै जो अनसरै रोग जहां लो सब परहरै ॥२॥

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावती प्रसादात रोग दुःख बिनास नांई गुरु की शक्ति मेरी भक्ति मन्त्र ईश्वरो वाचा।

तीजे ठास जात घर आवे ॥३॥

मन्त्र :—ॐ ऐं तां विश्वधारणी भगड़ा जलिनी कुरु कुरु स्वाहा, गुरु की शक्ति मेरी भक्ति मन्त्र ईश्वरो वाचा।

चौथे घर उच्चाट लगावे ॥४॥

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ब्राह्मणी रः रः रः ठः ठः ठः।

विधि :—लूण राई का होम मंत्र जाप १०८ बार।

पंचम घर थंमण करै सब कोई ॥५॥

मन्त्र :—ॐ अजता अजत सासताई सः पः षः अः अमुक मुख बंधन कुरु स्वाहा।

छठे घर भट कंचन फुन होय ॥६॥

मन्त्र :—ॐ नमो जहाँ २ जाए वेग कारज करु धनधुन वीर धन ले आव, वेग ले आव, वीर की वाचा फुरः कुरु स्वाहा। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो

विधि :—१३६ यंत्र लिखना। १३६ दिन में रोज १ यंत्र लिखना, जबकि रोटी खाणी घीव, नहीं खाणा और उस यंत्र को रोज आटे में डालकर नदी में वहा देना। १३७ वें दिन यंत्र लिखकर दाहिने गोडे के नीचे दबाकर रखना। यंत्र देवता ले जाएगा, कुछ रुपये रख जावेगा। मंत्र जाप करता रहे।

सात में घर मोहन करै नर नार ॥७॥

मन्त्र :—ॐ नमो सर्व मोहनी मेल राजा पाय पेल जो में देखू मार मार करंता, सोई मेरे पांव पड़ता, रावल मोह देवल मोह स्त्री मोह पुरुष मोह नार सिंह वीर तेरी शक्त फुरे, दाहिना चाले नार सोंघ बांया चाले, हनवंत मेरे पिंड प्रान का रीछपाल होंडी मोह जहां मेरा मन चाले तहां मोह गुरु की शक्त मेरी भक्त फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :— १३६ बार जाप करना जहां जावे वहां सफल होय।

आठवे घर तै होय उजाड़ ॥८॥

मन्त्र :—ॐ नमो ॐ लमोल बीटा हनवंत वीर वज्र ले बैठा काकड़ा, सुपारी, पीले पान, मेरे दुश्मन घर उजाड़ करो, काढ़ो प्राण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—शत्रु के घर में गाड़ना, उजाड़ होय।

नौ में घर तै हाजरात कहावै ॥९॥

मन्त्र :—ॐ नमो कामरू देश ने कामख्या आई, ता डंड राता ही माई, राता वस्त्र पहरि आई राता जाप जपती आई, काम छै, काम धारणी रक्त पाट पहरणी परमुख बोलती आई वेग मन्त्र उतार लेही, मेरी भक्ति गुरु की भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—लड़की को लाल वस्त्र पहनाकर बैठावे, दीपक जलावे, अंगूठे पर काजल लगाकर मंत्र बोलकर हजरात चढ़ावे।

दस में घर फल उपजै सारा धरती, नारि, तीर जंच विचारा ॥१०॥

मन्त्र :—ॐ नमो मन पवन पवन पठारा के राख बंधे गरम रहै ॐ हठा ॐ कचे मासी फुले कपास पूरे मासे होई नीकास नदी अपूठी गंगा बहे। अर्जुण साधे बाण पुरे मासे निकासे सही सतो हणवंत जती की आण गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—यन्त्र लिखकर कमर के बाँधे, संतान होवे, खेत में गाड़े तो अनाज अच्छा ऊपजे।

ग्यारह में घर तै लिखे जो कोई, लिख मेटे जीवे नहीं कोई ॥११॥

मन्त्र :—काल भैरों कंकाल का तो वाही कलेजा भुंज कली रात काला मैं मरु चढ़े मसाण जिस हम चाहें तिस तु आण कड़ी तोड़ कलेजा फोड़ नौमे द्वार में द्वार लोहु जोख आव तो छूटै न आवतो कलेजा फुटे गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—११६ यन्त्र लिखे। मन्त्र को १०८ जाप करें। कौवे की पांख व श्मसान के कोयले की राख से लिखे तो शत्रु की मृत्यु हो। इसे न करे।

बारह में घर तै लिख जो कोई टोटा नहीं नफा फुन होई ॥१२॥

मन्त्र :—ॐ गणवाणी पत रह मसाणी सो मैं मांगु ले ले आऊ काची नदी क ब मै दीय फुल २ म्हा फुल जपे जगत्र दस कोस पंच कोसी ग्राहक ले आऊ गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि :—१३६ यन्त्र लिखे, हाट में गाड़े, बहुत ग्राहक आवे।

तेरहवां घर तै लिखे सुजान प्राणी सु करै है निदान ॥१३॥

चौदह घर तै चौदह विद्या कहीं लिख लिख पीव पंडित हो सही।

मन्त्र : ॐ ह्रीं श्रीं वदवद् वाग वादनी सरस्वती मम विद्या प्रसादं कुरु २ स्वाहा।

विधि :—यन्त्र १३६ लिख लिख के पानी में घोलकर पीवें तो पण्डित हो।

पन्द्रह घर ते लिखे मन लाय गुप्त ही आये गुप्त ही जाए।

मन्त्र : ॐ नमो उच्छिष्ट चंडालिनी क्षोभणी द्रव्य आणय पर सुखं कुरु २ स्वाहा।

विधि :—यन्त्र लिखके पावे। एक अपने पास रखे तो गुप्त आवे गुप्त जावे।

सोलह घर तै कारज सब सरे आपा राखे भूल न करे।

इन जंत्र को जानी भेष सब कोई करे तिसकी सेव ॥१६॥

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं ग्रीं प्रीं चउसठ जोगनी की रक्षा करेगी कुरु २ स्वाहा।

विधि :— यन्त्र १३६ पीवणा एक आपणा पास राखणा रक्षा करे।
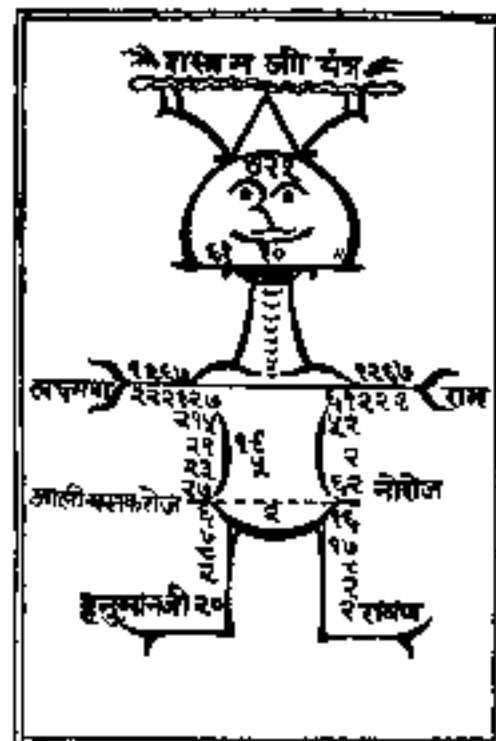
विधि :—इस यन्त्र को प्रात: जब तारे व सप्तर्षी मंगल के उतारे का समय हो, स्नान कर,

नये वस्त्र पहनकर चीनी मिट्टी की प्लेट या टुकड़े पर अष्ट गन्ध स्याही व अनार की कलम से पूर्व की ओर मुंह करके लिखे। फिर अपने गले में डाल लें। किसी प्रकार का शस्त्र उस पर नहीं चल सकेगा। शत्रु तलवार लेकर उस पर वार करे तो भी तलवार नहीं चलेगी।

अंडकोष वृद्धि रुके यन्त्र

४४२	४४९	२	७
६	३	४४६	४४५
४४८	४४३	८	१
४	५	४४४	४४७

विधि :—इस यन्त्र को केसर से भोजपत्र पर रविवार को लिखकर दाहिने हाथ के बांधने से बढ़ते

वप्नदाष ।नट यन्त्र

सा ॥	हो ॥

हा ॥	

२	२५	[illegible]

विधि :—पुष्य रविवार को भोज पत्र पर लिखकर कमर के बांधे तो स्वप्नदोष मिटे, स्तंभन बढ़े।

मिरगी मिटे यन्त्र

४२	४२	२	॥ ७
४५	४३	७	७।
॥१४॥	॥१५॥	४४	४७॥
॥१४॥	॥१५॥	४४	४७॥

विधि : अष्टगन्ध से भोज पत्र पर यह यन्त्र लिखकर भुजा पर बांधे, तो मिरगी का रोग मिटे।

वैराग्योत्पत्ति यन्त्र
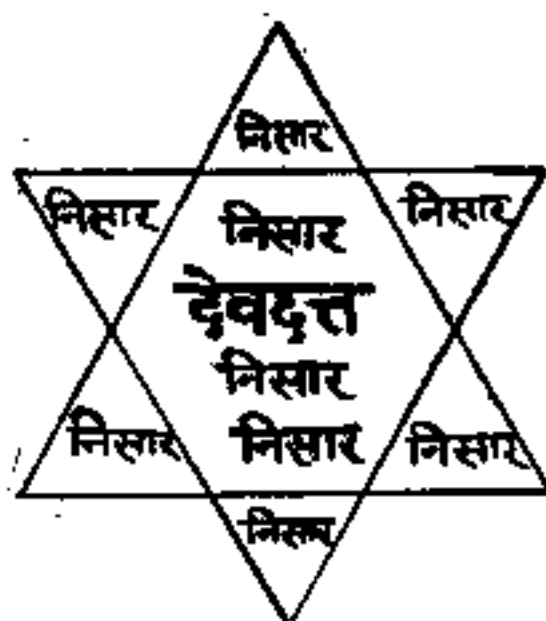
विधि :—इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोज पत्र पर लिखकर लोहे के मादलिए में मंढाकर मस्तक के बांधे दे तो धीरे-धीरे स्त्री व धन आदि से मोह से छूटकर वैराग्य की ओर

उन्मुखता होगी । अन्ततः वह व्यक्ति योगी व सन्यासी बन जायेगा । देवदत्त के स्थान पर व्यक्ति का नाम लिखा जायेगा ।

पंचांगुली महा यन्त्र का फल

शुभ मुहूर्त में सफेद कपड़ा, सफेद आसन, से पूर्व की ओर मुंह करके, अनार की कलम से अष्ट गन्ध स्याही बनाकर भोज पत्र पर लिखे, फिर इस यन्त्र को ताम्र पत्र पर खुदवाकर, मन्त्र का लाख बार जप करे, फिर सर्वांग पर हाथ फेरे, इसके प्रभाव से हस्त रेखा विद की भविष्यवाणी सफल होगी, यह यन्त्र सौभाग्यशाली, रोग नाशक व भूत प्रेत, बाधा नाशक प्रभावापन्न यन्त्र है । मन्त्र यन्त्र के बाहर लिखा है ।

विशेष मन्त्र साधना ।

कार्तिक मास में जब हस्त नक्षत्र प्रारम्भ हो, उस दिन से मन्त्र की साधना प्रारम्भ करे । मार्ग शीर्ष के हस्त नक्षत्र में पूर्ण करे । प्रतिदिन एक माला का जाप करे । जप शुरू करने के पहले ध्यान मन्त्र का एक बार उच्चारण अवश्य करे ।

ध्यान मन्त्र :—ॐ पंचांगुली महादेवी श्री सीमन्धर शासने ।
अधिष्ठात्री करस्यासौ, शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः ॥

फिर जप शुरू करे, जाप के बाद निरय पंच मेवा को दस आहुतियों से अग्नि में हवन करे । इस प्रकार साधना करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । देवी का एक चित्र बाजोट पर रखकर उसके सामने बैठकर साधना करनी चाहिये । हस्त नक्षत्र रूप आधार पर स्थित हाथ की पांच अंगुलियों के प्रतीक स्वरूप देवी का एक चित्र बनवा लेना चाहिये ।

चित्र कल्पना

शनि की अर्थात् मध्यमा ऊंगली के प्रथम पोरवे के आधे भाग पर देवी का मुकुट सहित मस्तक होगा । उसके पीछे सूर्य मण्डल होगा । देवी के आठ हाथ होंगे, जिनमें दाहिनी तरफ पहला हाथ आशीर्वाद का हो, दूसरे हाथ में रस्सी, तीसरे में खड्ग, चौथे में तीर हो, बांई तरफ पहले हाथ में पुस्तक, दूसरे में घण्टा, तीसरे में त्रिशूल और चौथे में धनुष । गले में आभूषण, ललाट में तिलक, कानों में कुण्डल कमर में आभूषण व सुन्दर वस्त्र हो । पैर में मणिबन्ध रेखा के नीचे तक आयें । इस तरह देवी का चित्र बनाना चाहिये ।

फल :—जो भी व्यक्ति इसकी एक बार भी साधना करले। फिर नित्य ही हाथ को इस मन्त्र से सात बार मन्त्रित कर, उसे सर्वांग पर फेरे, तो इसके फलस्वरूप हस्तरेखा द्वारा जन्म कुंडली बनाने में हाथ देखकर, फल कहने में ही सदा सफल नहीं होता, अपितु उसके सूक्ष्म रहस्यों को भी जान लेता है। पंचांगुलिदेवी हस्तरेखाओं की अधिष्ठात्री देवी है।

देवीपंचांगुलीमहायंत्र

ॐ नमो पंचांगुली २ परशरी २ माताभयंगल वशीकरणी

८	१	६
३	५	७
४	९	२

८	७	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४१	४२	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

महायन्त्र का साधन व मन्त्र विधि पूर्वक

यंत्र रचना :—प्रथम अष्टदल का कमल बनावे, उसमें क्रमशः अर्हंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र लिखे। फिर उसके ऊपर अष्ट दल फिर बनावे उन

आठों ही दलों में अष्ट जया, विजया, अजिता, अपराजिता, जम्भे, मोहे, स्तम्भे, स्तम्भिनी, इन जयादि देवी को लिखे, फिर सोलह दल ऊपर और खींचे, उन सोलह दलों में क्रमशः रोहिणी, प्रज्ञप्ती वज्र श्रृंखला, वज्रांकुशी, अप्रति चक्रा, पुरुषदत्ता, कालि, महाकालि, गान्धारी, गौरि, ज्वालामालिनी, वैरोटि, अच्युता, अपराजिता, मानसि, महा मानसि, इन सोलह विद्या देवी को लिखे, फिर उसके ऊपर चौबीस दल और बनावे, उन चौबीस दलों में क्रमशः चौबीस यक्षिणीयों के नाम लिखे, चक्रेश्वरी आदि । फिर बत्तीस दल और बनावे, उन बत्तीस दलों में क्रमशः असुरेन्द्र, नागेन्द्र आदि बत्तीस इन्द्रों के नाम लिखे, उसके ऊपर चौबीस वज्राग्र रेखा बनावे, उन चौबीस वज्र रेखा पर क्रमशः चौबीस यक्षों के नाम लिखे, गौमुखादि । फिर ऊपर दश दिक्पालों के नाम लिखे, फिर नव ग्रहों के नाम लिखे । ऊपर से अनावृत मंत्र लिखे, ॐ ह्रीं आं क्रों हे अनावृत यक्षेभ्योनमः । यह हुई यन्त्र रचना चित्र देखें ।

यन्त्र व मंत्र की साधन विधि

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा मम सर्वोपद्रव शांति कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का साधक १०८ बार जाप जपे, यह मूल मन्त्र है ।

शान्ति कर्म

ज्वर रोग की शांति के लिए साधक, रात्रि के पिछले भाग में श्वेतवर्ण से इस महा यन्त्र को भोजपत्र या आम के पाटिया पर लिखे, फिर उस यन्त्र की पूजा करके, पश्चिम की ओर मुखकर, ज्ञान मुद्रा, धारण कर पद्मासन से बैठकर, सफेद माला से, १०८ बार जप करे। इस तरह करने से तीन दिन या, पांच दिन के भीतर ज्वर दूर हो जाता है । इसी तरह अन्य रोगों के लिये भी अनुष्ठान करे ।

पौष्टिक कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अस्य देवदत्त नामधेयस्य मनः पुष्टिं कुरु २ स्वाहा ।

इस तरह पौष्टिक कर्म में भी ऐसा ही करे । इतना विशेष है कि इस जप में उत्तर की ओर मुह करके बैठे ।

वशीकरण

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अमुं राजानां वश्यं कुरु २ वषट् ।

इस वश्य कर्म में, महायन्त्र को लाल रंग से बनावे, लाल पुष्पों से यंत्र की पूजा करे, स्वतीकासन से बैठे, पद्म मुद्रा जोड़े, उत्तर की ओर मुंह करे पूर्वान्ह के समय बांये हाथ से जाप १०८ बार करे।

आकर्षण कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा एनां स्त्रियां आकर्षय २ संवौषट्।

किसी का भी आकर्षण करना हो तो महायन्त्र को लाल वर्ण से यन्त्र बनावे, पूर्व दिशा में मुख करे, दण्डासन से बैठे, अंकुश मुद्रा जोड़े, और मन्त्र का १०८ बार जप करे, इसी तरह भूत प्रेत वृष्टि आदि का आकर्षण करे।

स्तम्भन कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा देवदत्तस्य क्रोधं स्तम्भय २ ठः ठः।

क्रोध स्तम्भन के लिए, महायन्त्र को हल्दी आदि पीले रंग से यन्त्र लिखे. पूजा सामग्री भी पीली बनावे, माला भी पीली हो, वज्रासन से बैठे, शंख मुद्रा जोड़े, मन्त्र का १०८ बार जप करे। इसी प्रकार सिंह आदि का क्रोध स्तम्भन करे।

उच्चाटन कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा देवदत्तं उच्चाटय २ हुं फट् २।

उच्चाटन कर्म में काले रंग की माला, काला रंग से ही महायन्त्र बनावे, दिन के पिछले पहर में, वायव्य दिशा की ओर मुंह करके कुक्कुटासन से बैठे, पल्लव मुद्रा जोड़े, नीली माला से या काली से मन्त्र १०८ बार जप करे। भूतादिक का उच्चाटन भी इसी प्रकार करे।

विद्वेष कर्म

मन्त्रः—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा यज्ञदत्त, देवदत्त नाम धेयोः परस्पर मतीव विद्वेषं कुरु हूं।

महायंत्र को काले रंग से यन्त्र बनावे, मध्यान्ह के समय, आग्नेय दिशा में मुंहकर, कुक्कुटासन से बैठे, पल्लव मुद्रा करे। काले जाप्य से मन्त्र १०८ बार जपे। किसी में भी विद्वेष करना हो तो इसी प्रकार करे।

महामंत्र १

अभिचार कर्म

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा अस्य एतन्नाम धेयस्य तीव्र ज्वरं कुरु २ घे घे ।

इस महायन्त्र को जहर से अथवा किसी मादक द्रव्य से मीश्रित काले रंग से यन्त्र लिखे, दोपहर के बाद, ईशान दिशा में मुख करके, काले वस्त्र, भद्रासन से बैठे, वज्र मुद्रा बनावे, खदिरमणि की जपमाला से मन्त्र का, जप १०८ बार करे तो ज्वर चढ़े शिरो रोग हो। आदि, मा० ।

महायन्त्र २

महायन्त्र का पूजा विधान

महायन्त्र का और जिन मूर्ति का पंचामृताभिषेक करके, महायन्त्र की पूजा, अष्ट द्रव्य से करे।

पूजा मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रः असि आउसा जलं चन्दनं आदि।

अष्ट द्रव्य से क्रमशः चढ़ावे।

फिर क्रमशः अर्हंतसिद्ध, आचार्य, उपाध्याय साधु दर्शन ज्ञान चारित्र का अर्घ चढ़ावे।

फिर द्वितीय वलय की जयादि देवियों का अर्घ चढ़ावे, फिर १६ विद्या देविओं का अर्घ चढ़ावे, फिर चौबीस यक्षिणीओं की अर्घ से पूजा करे, फिर बत्तीस इन्द्रों की पूजा करे, फिर चौबीस यक्षों की पूजा करे, फिर दश दिक्पाल को पूजा करे। फिर नवग्रह और फिर अनावृत यक्ष की पूजा करे। सबके पहले ॐ ह्रीं लगाना चाहिये।

इस प्रकार महायन्त्र की पूजा करके फिर मूलमन्त्र का १०८ बार जाप जपने से कार्य सिद्ध होता है। प्रत्येक कर्म में जो विधि लिखी है। उसी विधि के अनुसार साधन करे तो ही कार्य सिद्ध होता है। लेकिन ध्यान रखे कि साधन करने से पहले महायन्त्र की पूजा करना परम आवश्यक है।

॥ इति ॥

पद्मावती स्तोत्र को यंत्र मंत्र साधन विधान

प्रणिपत्य जिनं देवं श्री पार्श्वं पुरुषोत्तमम्।

पद्मावत्यष्टकस्याहं वृत्तिं वक्ष्ये समासतः॥

ननु किमिति। भवद्भिः। मुनिभिः सद्भिः पद्मावत्यष्टकस्य वृत्तिः विधयिते। यतः साविरता कथं तस्याः सम्बन्धिनोऽष्टकस्य। भवतां मुनिनां सतां वृत्तिः कर्तुं युज्यते। अत्रोत्तरमनुतरं वीतरागः यतः सा ति भगवतः। सर्वज्ञस्य तीर्थंकरस्य सर्वोपद्रव रक्षण प्रवीणस्य सकल कल्याणहेतोः श्री पार्श्वनाथस्य शासन रक्षण कारिणी सर्वसत्व भय रक्षण परायण अविरत कथा, सम्यग्दर्शनयुक्ता जिन मन्दिर प्रवर्तिनी सर्वस्यापि त्रिभुवनोदर विवरवर्तिनी लोकस्य मानसानंद विधायिनी। अष्टचत्वारिंश ,सहस्र परिवार समन्विता। एकावतारा श्रीपार्श्वनाथचरणार विंद समासाधनी। अतः कथमीदृशाया श्री पद्मावत्याः सम्बन्धिनोऽष्टकस्य वृत्तिम् पूर्वतां अस्माकं दूषणजालमारोप्यतो न भवता, तस्मान्नात्र दोषः अथैवं वदिष्यति। ज

(२) पर प्रयोजन । इस मन्त्र स्तोत्र की नई वृत्ति बनाना ।

(३) दोनों ही प्रकार प्रयोजन उभय, स्तोत्र का अर्थ स्मरण लक्षण हो है जिसका ऐसा ही स्व का प्रयोजन है । इसमें पर का प्रयोजन भी देखा जाता है । कोई मन्द बुद्धि वाला शिष्य है तो उसको भी इस वृत्ति से बोध हो सकता है । इसलिये हमारा उभय प्रयोजन है । इस कारण से हमारे द्वारा वृत्ति का करना प्रयोजन भी देखा जाता है ।

अथ श्री पद्मावती स्तोत्रम्

श्री मद्गीर्वाणचक्रस्फुट मुकुट तटी, दिव्य माणिक्य माला ।
ज्योतिर्ज्वाला कराला, स्फुरति मुकुरिका, घृष्टपादारविंदे ॥
व्याघ्रोरुल्का सहस्रज्वलदनलशिखा, लोलपाशांकुशाढये ।
आं क्रौं ह्रीं मंत्र रूपे, क्षपित कलिमले, रक्ष मां देवि पद्मे ॥१॥

व्याख्या—रक्ष पालय हे देवि, पद्मावती शासन देवि । कं. मां स्तुतिकर्तारं, कीदृशे देवि, श्रीमद्भिः पादारविंदे श्री विद्यते येषाम् ते श्रीमंतः श्रीमंतो गीर्वाणः श्रीमद्गीर्वाणचक्र स्फुटितानि च तानि मुकुटानि च स्फुटमुकुटानि । श्रीमद्गीर्वाणमुकुटानि तटे भवा तटि तेषां तटिः श्रीमदगीर्वाण चक्रस्फुट मुकुटतटि । दिव्यानि प्रधानानि माणिक्यानि दिव्यमाणिक्यानि तेषां माला, दिव्यमाणिक्यमाला । श्रीमद्गीर्वाण दिव्यमाणिक्यमाला । तस्य ज्योतिस्तेज-स्तस्या ज्वाला । श्रीमद्गीर्वाण ० माणिक्यमाला ज्योतिर्ज्वाला तया करालं स्फुरितमुकुरिका श्रीमद्गीर्वाण ० कराल स्फुरितमुकुरिका श्रीमद्गीर्वाण ० स्फुरित–मुकुरिका । श्रीमद्गीर्वाण ० मुकुरिकाया घृष्टपादवेवारविन्दे यस्या सा तस्याः संबोधनं श्रीमद्गीर्वाण ० घृष्टपादारविन्दे यथा त्रिदशनिकुरंबं स्पष्टकिरीट पर्यस्त–तटस्थ–प्रधानरत्न माला । व्याघ्रोरोल्कासहस्र ज्वलदनल शिखालोलपाशांकुशाढये । व्याघ्रोराश्च ता उल्काश्च, व्याघ्रोरूल्का तासाम् सहस्राणि ज्वलंश्चासावमलश्च ज्वलदनलस्तस्य शिखा ज्वलत् अनल शिखा, व्याघ्रोरोल्कासहस्राणि च ज्वलदनल शिखा च पाशश्च अंकुश च, पाशांकुशो लोले च, पाशांकुशे लोल पाशांकुशे ते च व्याघ्रोरोल्का लोल पाशांकुशा । तैराढ्य व्याघ्रो ० लोलपाशांकुशाढ्य तस्याः संबोधन व्याघ्रो ० पाशांकुशाढ्ये ।

तारापतनज्वाला सहस्रदेदीप्यमानानलधाराचंचल पाशकरिकलभकुंभविदारण प्रहरण इत्यर्थः । पुनरपि कीदृशे आं क्रौं ह्रीं मन्त्र रूपे । आं च, क्रौं च, ह्रीं च, आं क्रौं ह्रीं रूपा आं क्रौं

ह्रीं रूपो य एव मन्त्र तत्स्वरूपे । आं क्रों ह्रीं मन्त्र रूपे प्रतीते । पुनरपि को दृशे । क्षपित कलिमले ।

क्षपितः कलिमलः यया सा तस्याः संबोधनं । हे क्षपितकलिमले । विघटित-पाप मले । अस्य भाव माह ।

श्रीं कारं नाम गर्भं तस्य वाह्यपोडशदले लक्ष्मी बीजमालिख्य । निरंतरं ध्यानमानं गिगलादि द्रव्यैः सौभाग्यं भवति । द्वितीय प्रकारे षट्कोण अस्य चक्र मध्ये ह्रींकारस्य नामगर्भितस्य वाह्ये क्लींकारं दातव्यं । बहिरपि ह्रीं संलिख्य कोणेषु ॐ क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं संलिख्य मायाबीजे त्रिविधमावेष्टय निरंतरं सार्यमाणे वाचा शक्तिर्भवति ।

अथ तृतीय प्रकारः षट्कोणं चक्र मध्ये ऐं क्लीं ह्रीं नाम मध्ये ततः कोणेषु ॐ ह्रीं क्लीं द्रवे नमः ॐ ह्रीं क्लीं द्रावे नमः ॐ ह्रीं द्रंनमः ॐ ह्रीं उभाद्रं नमः ॐ ह्रीं द्रवे नमः ॐ ह्रीं द्रावे नमः ॐ ह्रीं पद्मिनी नाम मालिख्य बहिरष्टदलेषु मायाबीजं दातव्यम् बाह्येषु षोडशदलेषु कामाक्षरं बीजं दातव्यं । बाह्ये षुषोडशदलेषु ह्रीं संलिख्य बहिरष्टदलाग्रे माया बीजं संलिख्य मध्येषु ॐ आं क्रों ह्रीं जयायै नमः अजितायै नमः अपराजितायै नमः जयन्ती नमः विजयन्ती नमः भद्रायै नमः ॐ ह्रीं शांतायै नमः आलिख्य बाह्यमाया बीजं त्रिगुणं वेष्टयः माहेंद्र चक्रांकितचंडकोणेषु लकारं लेख्य । इदं चक्रं कुंकुम गोरोचनादि सुगंधद्रव्यैं भूर्जपत्रे संलिख्यास्या मूल विद्या—

ॐ आं क्रों ह्रीं धरणेंद्राय ह्रीं पद्म वती सहिताय क्रौं ह्रैं ह्रीं फट् स्वाहा ।

श्वेत पुष्पैर्पंचाशत् सहस्रैः (५००००) प्रमाणं एकांत स्थाने मौनेन जापेन दशांगहोमेन सिद्धिर्भवति । प्रथम वृत्तानंतरं माला मंत्रमनेक प्रकारं सप्त पंचमाह ।

यन्त्र का विवरण

(१) श्री कार में, देवदत्त, लिखकर सोलह दल वाले कमल की रचना करे श्री कार के ऊपर फिर उस सोलह दल वाले कमल में, प्रत्येक दल में, लक्ष्मी बीज की स्थापना करे । लक्ष्मी बीज याने (श्री) लिखे । यह यन्त्र रचना हुई । देखिये इस स्तोत्र के प्रथम काव्य का यन्त्र नं० १

विधि :—इस यन्त्र को सुगन्धित पीले रंग के द्रव्य से लिखकर, निरन्तर सामने रखकर यन्त्र का ध्यान करने से सौभाग्य की वृद्धि होती है । गोरोचन, कस्तूरी से यंत्र, भोज पत्र पर बनावें ।

(२) दूसरे प्रकार से :—प्रथम ऐं कार लिखें, ऐं, कार में देवदत्त लिखें, फिर उस ऐं कार ऊपर षट्कोणाकार रेखा खींचे। षट्कोण के प्रत्येक दल में क्लीं लिखें। फिर बाहर ह्रीं लिखें, फिर कोणों में ॐ क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं लिखकर माया बीज याने (ह्रीं) कार से तीन घेरा लगावें। देखिये यन्त्र नं० २।

विधि :—इस यन्त्र को भोज पत्र पर गोरोचन, कस्तूरी, केशर आदि सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर निरन्तर यन्त्र का ध्यान करने से, काव्य शक्ति बढ़ती है।

(३) तीसरे प्रकार से यन्त्र की रचना :— प्रथम षट्कोण बनाये, षट्कोण चक्र में, ऐं क्लीं ह्रीं तथा देवदत्त लिखें, उस षट्कोण के दलों में क्रमशः ॐ ह्रीं क्लीं द्रवे नमः ॐ ह्रीं क्लीं द्रावे नमः, ॐ ह्रीं क्लीं द्रे नमः, ॐ ह्रीं क्लीं उभाद्रे नमः, ॐ ह्रीं क्लीं द्रवे नमः, ॐ ह्रीं क्लीं द्रावे नमः, ॐ ह्रीं क्लीं से पश्चिमी लिखे। फिर उस षट्कोण पर वलयाकार बनावें, उस वलय को अष्ट दल बनावे, उन अष्ट दलों में माया बीज यानी (ह्रीं) बीज की स्थापना करें। फिर उसके ऊपर सोलह दल का कमल बनावें, उन सोला दलों में काम बीज यानी (क्लीं) बीज की स्थापना करे। उसके ऊपर एक सोलह दल वाला कमल और बनावें, प्रत्येक दल में (ह्रीं) बीज की स्थापना करे, फिर उसके ऊपर आठ दल वाला कमल बनावे, प्रत्येक दल में क्रमशः माया बीज (ह्रीं) लिखकर फिर क्रमशः ॐ आं क्रों ह्रीं जयायै नमः, ॐ आं क्रों ह्रीं विजयायै नमः, ॐ आं क्रों ह्रीं अजितायै नमः, ॐ आं क्रों ह्रीं अपराजितायै नमः, ॐ आं क्रों ह्रीं जयंती नमः, ॐ आं क्रों ह्रीं विजयंति नमः, ॐ आं क्रों ह्रीं भद्रायैनमः, ॐ आं क्रों ह्रीं शांतायैनमः, लिखें, फिर ऊपर से ह्रीं कार को तीन गुणा वेष्टित करके माहेन्द्र चक्रांकित चंड कोण में, (ल) कार की स्थापना करें। यह यन्त्र रचना हुई। देखें यन्त्र नं० ३।

विधि :— इस यन्त्र को भोज पत्र पर कुंकुम गोरोचनादि सुगन्धित द्रव्यों से लिखकर इस मन्त्र का जप करें।

मन्त्र :—ॐ आं क्रों ह्रीं धरणेंद्राय ह्रीं पद्मावती सहिताय क्रौं द्रें ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि :— सफेद फूलों से ५०००० हजार जप, एकांत स्थान में मौन से करें। दशांस होम करें तो सिद्ध होता है।

श्लोक नं० १

यंत्र नं० १

यंत्र नं० २

यन्त्र नं० ३

ह्रीं

ऐं क्लीं ह्रौं
देवदत्त

क्रौं

दैत्येन्द्रक्रू रदंष्टा, कट-कट घटितः स्पष्टभीमाट्टहासे ।
माया जीमूतमाला, कुहरितगगने रक्ष मा देवि पद्मे ॥२॥

रक्ष पालय हे देवी पद्मावती। शासन देवी। कं मां स्तुतिकर्त्तारं कीदृशी देवी, चल-चल चलिते चंचल गमने इत्यर्थः कि कृत्वा, भित्वा विदार्य किं पाताल मूलं पातालस्य मूलं असुर भुवन मूल मित्यर्थः पुनरपि कीदृशी व्याललीलाकराले। व्यालानां सर्पाणां लीला, व्याललीला, तया कराला, व्याललीला कराला, तस्याः संबोधनं हे। व्याललीला कराले। पुनरपि की दृशे। विद्युद्दंडप्रचंड प्रहरण सहिते विद्युद्दंडः तद्वत्प्रचंडं चतत् प्रहरणं च विद्युद्दंड प्रचंड प्रहरणं तेन सहितां विद्युद्दंडप्रचण्ड प्रहरण सहिता। तस्याः संबोधनं विद्युद्दंडप्रचण्ड प्रहरणसहिते सौदामिनीलकुट समर्थायुधयुक्तेत्यर्थः। तथा तर्जयंती ताडयंती कां दैत्येन्द्रं दानवेन्द्रं, कैः सद्भुजैः शोभनदोर्दण्डैः पुनरपि कीदृशे। क्रूरदंष्ट्राकटकटघटितः स्पष्ट भीमाट्टहासे क्रूरदंष्ट्रा कटकटघटितः स्पष्टश्चासौ भीमश्च स्पष्टभीमः स्पष्टभीमश्चासौ अट्टहासश्च स्पष्टभीमाट्टहासः क्रूरः दंष्ट्रा कटकटेन घटिते स्पष्ट—भीमाट्टहासो यया सा तस्य संबोधनं क्रूर दं० हासे पुनरपि कीदृशे। मायाजी मूत मालाकुहरित गगने। माया शब्दे ह्रीं कार बीजमुच्यते। ह्रींकार नामगर्भितं तस्य बाह्येषु षोडशदलेषु मायाबीजं संलिख्य धारयेत्। ततो माया शब्देन माया—बीजं ह्रींकार मुच्यते। तत्सप्तलक्षाणि जपेत्। सर्वकार्यसिद्धिर्भवति ॥ १ ॥

माया एव जीमूता मायाजीमूताः तेषां माला मायाजीमूत माला तया कुहरितं शब्दायमानं गगनं आकाशं यया सा तस्याः संबोधनं "मायाजीमूतमाला कुहरित—गगने" ह्रींकार जलधरस्य गर्जितां ब्रवे इत्यर्थः इदानी मायानाम गर्जितस्य बहिरष्ट—पत्रेषु ह्रींकारं दातव्यं, एतद्यंत्रम् कुंकुमगोरोचनया लिखित्वा हस्ते बंधात्सर्वजन प्रियो भवति ॥ २ ॥

पुनरेतद्यंत्रं कुंकुमगोरोचनया भूर्यपत्रे (भोजपत्रे) विलिख्य।
बाहौ धारणीयं सौभाग्यं करोति।

मंत्र—ॐ नमो भगवति पद्मावती सुधारिणी पद्मसंस्थितादेवि प्रचंडदौर्दंड खंडितरिपुचक्रे किन्नर कि पुरुष गरुड गंधर्व यक्ष राक्षस भूत, प्रेत, पिशाच महोरग—सिद्धि नाम मनुज पूजिते विद्याधर सेविते ह्रीं ह्रीं पद्मावती स्वाहा ॥

"ॐ एतन्मंत्रेण सर्षपममिमंत्र्य व्यदेकविंशतिवाराद् वाम हस्तेन् बंधनीयम् सर्वज्वरं नाशयति, भूतशाकिनी ज्वरं नाशयति ॥

"ॐ नमो भगवति पद्मावती अक्षिकुक्षिमंडिनीड त वासिनी आत्म रक्षा, पर रक्षा भूत रक्षा, पिशाच रक्षा, शाकिनी, चोर बंधामि (य) ॐ ठः ठः स्वाहा" ॥ १ ॥

१.	पूर्व द्वारं बंधामि	७.	उत्तरद्वारं बंधामि
२.	आग्नेयद्वारं ,,	८.	ईशानद्वारं ,,
३.	दक्षिणद्वारं ,,	९.	अधोद्वारं ,,
४.	नैऋतिद्वारं ,,	१०.	ऊर्ध्वद्वारं ,,
५.	पश्चिमद्वारं ,,	११.	वक्र ,,
६.	वायव्यद्वारं ,,	१२.	सर्वग्रहं (ग्रहान्) बंधामि।

चण्डप्रहरणसहिते सद्भुजैस्तर्ज्जयंति। दैत्येन्द्र क्रूर दंष्ट्रा कटकट घटित स्पष्ट—भीमाट्टहासे। मायाजीमूत माला कुहरित गगने रक्ष मां देविपद्मे। २ सर्व कर्म करी नाम विद्याज्वर विनाशिनी भवति।

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ज्वीं ज्वीं ला ज्वा प लक्ष्मी श्री पद्मावती आगच्छ २ स्वाहा।

एता विद्या अष्टोत्तर सहस्त्र श्वेत पुष्पैरष्टोत्तरशतं जप्य श्री पार्श्वनाथ चैत्ये जपितः सिद्धिर्भवति। स्वप्नमध्ये शुभाशुभं कथयति।

॥ ॐ नमः चंडिकायै ॐ चामुंडे उच्छिष्ट चंडालिनी अमुकस्य हृदयं भित्वा मम हृदयं प्रविशायै स्वाहा॥

ॐ उच्छिष्ट चंडालिनी ए...... अमुकस्य हृदयं पीत्वा मम् हृदयं प्रविशेत—क्षणा द्दानय स्वाहा॥

ॐ चामुंडे अमुकस्य हृदयं त्रिबामि। ॐ चामुंडिनी स्वाहा। सित्थय पडिमं काउं संपुणंति अटुण्णतावेव —या होमे—सर्वर सिणं वास कुणं॥ मन्त्र॥

ॐ उंतिम मातंगिनी अपद्रुपिस्सेपइ किंत्ति एइपत्तलग्नि चंडालि स्वाहा॥

ॐ ह्रं ह्रीं ह्रं ह्र।—एकान्तर ज्वर मंत्र्य तांबूलेन सह देयम्॥ ॐ ह्रीं ॐ नामाकर्षणं। ॐ गः मः ठः ठः गति वधः ह्रीं ह्रीं द्रं द्रः। ॐ देवु २ मुखबं बं २। ॐ ह्रीं फट् क्रौं प्रोच्छि भी ठः ठः ठः कुंडली करणं। ॐ लोलु ललाटः घट प्रवेश ॐ यः विसर्जनीयं ओष्ठ कंठ, जिह्वा, मुख - खिल्लउ तालुं खिल्लउं ॐ जिह्वा खिल्लउं ॐ खिल्लउं तालू हुंगय सुवहुः चचुं २ हेर ठः ठः महाकाली योग कालो कुयोगम्मूह सिद्ध उए—कु सप्प मुह बंधउं ठः ठः। इति सर्प मन्त्रः।

ॐ भूरिसि भूति धात्री विविध चूर्णरलंक्षता स्वाहा।

भूमि शुद्धिः।

शाकिनी मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय शाकिनी योगिनीनां—मंडल मध्ये प्रवेशय, आवेशय, सर्व शाकिनी सिद्धि सत्त्वेन सर्षपास्तारय स्वाहा। **इति सर्षप तारण मन्त्र।**

ॐ नमो सुग्रीवाय ह्रीं खट्वांग, त्रिशूल, डमरू हस्ते तिस्तीक्ष्णक कराले वटेलानल कपोले लुचितं केश कपाल वरदे । अमृत सिर भले । गंडे—सर्व डाकिनीनां वशंकराय सर्व मंत्रछिदनी निखये आगच्छ भवित—त्रिशूलं लोलय २ इ अरा डाकिनी बल ३ ।

शाकिनीनां निग्रह मन्त्र :—नरलइ किलइ फेत्कार मंडलि असिद्धि ह इ निवारइ द्रोसममै आउसिगइ सइहाल धूलिमाइ २ रक्त सो पुलग—समं न करसी ।

डाकिनी मन्त्र :

ॐ हूं सं बं क्षं कमल बजूं षुं भा ह्रीं ग्नां ज फट् ।

अश्वगंधापसव सर्षप कर्पासिकानि अभिमंत्र्य अवस्तूनि आलोते ऊखल मूसल वर्तिना वाला गरूडैः सिंदुरै स्ताडयेत् । शाकिनी प्रगटा भवति तं पात्रं मोचयति । शाकिनी मंत्रः । [illegible] तिलकं क्रियते । शाकिनीनां स्तंभो भवति । अतः परं प्रवक्ष्यामि । योगिनी क्षोभं मुक्तपरि—संमंत्र संसिद्ध श्री मत्सरैः प्रपूजितं ।।१।।

मन्त्र :—ॐ सुग्रीवाय जने वा तराय स्वाहा । डाकिनी दिशा बंध पुत्र रक्षा च प्रवश्यं ।

ॐ नमो सुग्रीवाय—भौ भी मल मातंगिनी स्वाहा । मुद्रिका मन्त्रः । चक मुद्रा प्रेषित व्याग्रह् गृहीतस्य [मुद्रा दर्शना दैवाग्रनिर्गच्छति ।। ॐ नमः सुग्रीवाय नमः चामुंडो तक्षिकालोग्रह् विसत् हन २ भंज २ मोहय २ रोषिणी देवी सुस्वाप स्वाहा ।। प्रोच्छादने विद्या । ॐ नमो सुग्रीवाय परमसिद्ध सर्व शाकिनीनां प्रमंदनाय—कुंट २ आकर्षय २ वाम देव २ प्रेतान् दहमममाहली रहि २ उसग्रत २ यसि २ ॐ फट् शूल चंडायनी विजयामामहन् प्रचंड सुग्रीवो सासपति स्वाहा ।। सर्व कर्म करो मन्त्रः ।

ॐ नमो सुग्रीवाय वार्षिके सौम्ये वचनाय गौरीमुखी देवी शूलिनीज्जं २ चामुंडे स्वाहा ।

अनया विद्यया सकलं परिजप्य कणवीरलतां सप्ताभिमंत्र्य उखलं मुशलेन ताडयेत् यथा २ ताडयति २ योगिनी भूस्ताडिता भवंति । प्रताडण विद्या अष्ट शतिको जापः । ॐ कारो नाम गर्भितो बाह्यश्च चतुर्दलमध्ये ॐ मुनिसुव्रताय संलिख्य बहि हर २ वेष्ट्यं । बहिः कमादिक्ष-कार पर्यंत वेष्टयं, मायाबीजं त्रिधा वेष्ट्यं । यथा द्वितीय वंकारं नामगर्भित बाह्यश्चतुर्दले बकारं दातव्यं, बहिरष्ट :—पत्रेषु उकारं देयं । यथा तृतीय मायाबीजं नामगर्भितं । बहिरष्टकारं वंकारं देयं । बहिरगारेषु माया देया । एतद्यंत्रं । कुकुमगोरोचनया भूर्ये संलिख्य दुष्ट—वश्योपसर्गो दोष-

मुपशमयति ह्रीं नाम गर्भितोऽयं वेष्ट्य :—माया त्रिधा वेष्टय बहिरष्टार्धे 'क्षं क्षीं क्षूं' ह्रीं संलिख्य विदिशिगेषु 'देवदत्त' देयं। द्वितीयं नामं गर्भिबहिः स्वरावेष्ट्याः बाह्ये—ॐ ह्रीं चामुंडे वेष्ट्यः बाह्य वलयं पूरयेत्। एत-यंत्र द्रय कुंकम—गोरोचनया भूर्ये संलिख्य सूत्रेण वेष्टय बाहौ धारणीयम्। प्रथमं मंत्र वंध्याया गुर्विणी मृतवत्सा धारयति। काकवंध्या प्रसवति।

सर्वभूतपिशाच प्रभृतीनां रक्षा बाल गृह रक्षणे रक्षा भवति।

मायानामगर्भितो बहिरष्टपत्रेषु रं देयं। यथा रक्षाद्वितीयप्रकारः।

मायानामगर्भितो बहिरष्टार्धे मायाबीजं देयं। यथा तृतीयं।

ह्रीं श्रीं देवदत्त ह्रीं श्री संलिख्य बाह्ये षोडशार्धे ह्रीं श्रीं देयम् एतद् यंत्र कुंकुम–गोरोचनया भूर्ये संलिख्य कुमारी सूत्रेण वेष्ट्य बाहौ धारणीय। बालानां शांतिरक्षा भवति। सर्वजनः प्रियः। दुर्भगास्त्रीणां सौभाग्यं भवति।

'क्ष ज ह स म म ल व य्यूं' एतानि पिंडाक्षराणि मध्ये नामगर्भितानि संलिख्य कुंकुम-गोरोचनया भूर्ये लिख्येत्। बाहौ धारणीयं, वश्यो भवति।

षट्कोण चक्रमध्ये माया नाम गर्भितं षट् कोणेषु 'ह्रीं' सं लिखेत। बाह्यं ह्रीं देयं। एतद्यंत्रं कुंकुम–गोरोचनया सराव संपुट मध्ये प्रक्षिप्य स्थाप्य वश्यो भवति।

माया श्री नाम गर्भितो बहिः माया वेष्टयं बहिरष्टार्धे माया देयम् कुंकुम–गोरोचनादिसुगंध द्रव्यैः भूर्ये लिखेत्। वस्त्रे कंठे बाहौ वा धारणीयं आयुर्वृद्धि अपमृत्युनाशं रक्षा, भूतपिशाच, ज्वरस्कंद, अपस्मारग्रह गृहीतस्य बंधितस्य तत्क्षणादेव शुभं भवति।

मायात्रिविधावेष्टयं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः यक्षः। षट्कोणं गर्भितं एतत् कोणेषु 'ह्रूं' ॐ ह्रूं ४ बाह्ये ह्रां ह्रीं स्वाहा एतद्यंत्रं नागवल्लिपत्रेषु चूर्णेन लिखेत्। सप्ताभिमंत्र्य एत द्दीयते। वेलाज्वरं नाशयति। अथवा—ह्रां ह्रीं ॐ शुभे द्रव्यैः भूर्ये संलिख्य माया त्रिविधा वेष्टयं एतद्यंत्रं गोरोचनया भूर्ये विलिखेत्। कंठे हस्त बध्वा चौरभयं न भवति। अमोघविद्यां करोति।

ह्रीं सं देव ह्रीं सं नामगर्भितो।

बहिश्चतुर्दलं ह्रीं ह्रां सं लिख्य एतद्यंत्रं गोरोचना नामिकारसेन भूर्ये संलिख्य एरंडनालिकायां प्रक्षिप्य राज महामात्य प्रभृतीनां वश्यं भवति। कालिका प्रयोग। ह्रीं द्र नय रं नृप क्षोभयति। यं नामगर्भितो बहिः ॐकारमयवेष्टयं बाह्ये षोडशार्धे माया बीजं बाह्ये माया त्रिवेष्टयं एतद्यंत्रं कुंकुम–गोरोचनादिशुभ द्रव्यै भूर्ये लिखेत्। कुसुमं रक्तसूत्रेण वेष्टयं रक्तकण

वीरपुष्पैरष्टोत्तरशतानि जापे क्रियमाणं पुरुषक्षोभो भवति । नामाक्षराणी नित्यं जपेत् । नृपं पुरं ग्रामं च क्षोभयति । षट् कोण चक्र मध्ये । यं नामगर्भितो बाह्य संपुटस्थकोणेषु रं देयं ज्वलन सहितं, एतद्यंत्रं स्मशानांगारे, काकपिच्छे स्मशाने कर्पटे वा लिखेत् स्मशाने निखनेत् सद्यः उच्चाटयति । अनेन मंत्रेण स्वप्नमभिमंत्र्य यत्कृत्वा निखनयेत् । ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं फट् वः नाम ह्रीं नामगर्भित ठ वेष्ठय बहिरष्ट—लं रीं रं रीं २ रें रः संलिख्य श्याम सरुधिरेण यस्य नामं लिखेत् स महाज्वरेण गृह्यते । षट्कोणमध्ये यं नामगर्भितो कोणेषु यं ६ बाह्ये निरंतरम् पूरयेत् । एतद्यंत्रं विषेण स्मशानांगारेण पादपांशुना सह भूर्ये यस्य नाम आलिख्येत् प्रेतवनं निर्जयंतम् । ॐ कारम् वेष्ट्य बहिरर्थ 'यः' देयं । एतद्यंत्रं विष, कतक, रसेन [illegible] यस्य नाम लिखित्वा स्मशाने निखनेत् उच्चाटयति । यस्य नाम मध्ये क्म्ल्व्र्यूं संपुटस्थ बहिश्चतुर्दल 'यं' देयं । एतद्यंत्रं स्मशानांगारेण निंबपत्ररसेन ध्वजकर्पटे लिखित्वा ध्वजाग्रे बन्धं उच्चाटयति । य कारं नाम अग्रेय मंडलम् कोणेषु 'रं देयं' । स्वस्ति कामानां भूषितं । इदं यंत्रं बिभीतकरसेन नाम मालिख्य खरमूत्रे स्थाप्यते सद्यः उच्चाटयति । देवदत्त प्रसाद ह्रींकारं च वारत्रयं च वेष्टय एतद्यंत्रं तालपत्र २ कंटकेन लेख्य कुंभमध्ये स्थाप्य कुंभे वसनेन आच्छाद्यते । मायाबीजो नामगर्भितो बहिरष्टार्धे माया देयं एतद्यंत्रं कुंकुमगोरोचनया भूर्ये लिख्य बाहौ धारणीयं । ग्रह, भूत, पिशाच, डाकिनी, प्रभृतीनां पीडा न भवति ।

मायाबीजं नामगर्भितो न द्विधा प्रमाणं ग्रग्रे वज्रांकितदिक्षु लकारं वौषट् मध्येषु ह्रींकार प्रत्येकम् लिखेत् । एतद्यंत्रं कुंकुम-गोरोचनया भूर्यपत्रे वा नाम—मालिख्य बाहौ धारणीयं । भूत, प्रेत, पिशाच डाकिनी, ज्वर, कम्प, विदाहो उपशामयति । सिद्धोपदेशः । मायाबीजं नामगर्भितो त्रेधावेष्ट्य सिकतामयीं प्रतिमां कृत्वा लिखेत् उपर्येतस्थाप्य मादनकंटके विद्धा सर्वा उनकटकेन लोहि शिलाकायां हारा बद्धा अंकरे स्थापयेत् ता । कुज० दिव्यं० भास्वद्दंडयदंडं वा आकर्षयति ॥२॥

श्लोक नं. २ के यन्त्र मन्त्र का विधान

(१) ह्रीं कार में देवदत्त गर्भित कर ऊपर सोलह पांखुड़ी का कमल बनावे, उन सोलह पांखुड़ी में माया बीज (ह्रीं) की स्थापना करदें । यह मंत्र रचना हुई । यंत्र नं० १ देखें ।

विधि :—इस यन्त्र को भोज पत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखकर, ॐ ह्रीं नमः । इस मन्त्र का सात लाख विधि पूर्वक जपे तो, सर्व कार्य सिद्ध होते हैं । मनवांच्छित फल की प्राप्ति होती है ।

(२) ह्रीं कार में देवदत्त गर्भित कर ऊपर अष्ट दल का कमल बनावे, उस कमल की पांखुड़ी में प्रत्येक में ह्रीं बीज की स्थापना करे। ये यंत्र रचना हुई। यंत्र नं० २ देखें।

विधि :—इस यन्त्र को भोज पत्र पर केशर गोरोचनादि सुगन्धित द्रव्यों से लिख कर हाथ में बाँधने से सर्व जन प्रिय होता है और सौभाग्य की वृद्धि होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति पद्मावति सुलधारिणी पद्म संस्थिता देवि प्रचंड़दोर्दंड खंडित रिपु चक्रे किन्नर किं पुरुष गरुड गंधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच महोरग सिद्धि नाग मनुज पूजिते विद्याधर सेविते ह्रीं ह्रीं पद्मावती स्वाहा ।।१।।

विधि :—इस मन्त्र से सरसों २१ बार मन्त्रीत कर वाम हाथ में बांधने से, सर्व ज्वर का नाश होता है और भूत, शाकिनी ज्वर का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति पद्मावति अक्षि कुक्षि मंडिनी उत वासिनी आत्म रक्षा पर रक्षा, भूत रक्षा, पिशाच रक्षा, शाकिनी रक्षा, चोर बंधामिय ॐ ठः ठः स्वाहा।

पूर्व द्वारं बंधामि
आग्नेय द्वारं बंधामि
दक्षिण द्वारं बंधामि
नैऋत्य द्वारं बंधामि
पश्चिम द्वारं बंधामि
वायव्य द्वारं बंधामि
उत्तर द्वार बंधामि
ईशान द्वारं बंधामि
अधो द्वारं बंधामि
ऊर्द्ध द्वारं बंधामि
चक्र द्वारं बंधामि
सर्व ग्रहं (ग्रहान्) बंधामि

सर्व कर्म करने वाली विद्या, सर्व ज्वर का नाश करने वाली है।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ह्रीं ज्वीं ज्वीं ला ज्वा प लक्ष्मी श्री पद्मावती आगच्छ २ स्वाहा।

विधि :—इस विद्या का १००८ श्वेत फूलों से श्री पार्श्वनाथ के चैत्यालय में भगवान के सामने जप करें, तो, सर्व मन्त्र विद्या की सिद्धि होती है। स्वप्न में शुभा शुभ होने वाले भविष्य को कहती है।

ॐ नमः चंडिकायै ॐ चामुंडे उच्छिष्ट चंडालिनी·········अमुकस्य हृदयं भित्वा मम हृदयं प्रविशायै स्वाहा।

ॐ उच्छिष्ट चंडालिनी ए .... अमुकस्य हृदयं पीत्वा मम् हृदयं प्रविशेत क्षणादा नय स्वाहा ।

ॐ चामुंडे अमुकस्य हृदयं पिबामि । ॐ चामुंडिनी स्वाहा ।

विधि : –बालू की मूर्ति बनाकर अरुणता से उपरोक्त मन्त्र का जप करे, फिर होम करे, सर्व रसिएवास कुणं ।

मन्त्र : –ॐ उंतिम मातंगिनी अप द्रुपिरसेपइ किंत्ति एइ पत्त लगिन चंडालि स्वाहा ।।

ॐ ह्रू ह्रीं ह्रं ह्र । एकान्तर ज्वर मंत्र्य तांबू लेन सह देयम् ।।

विधि :—इस मन्त्र से तांबूल (पान) को २१ बार मन्त्रीत कर रोगी को खिला देवे, तो एकांत ज्वर का नाश होता है ।

मन्त्र : ॐ ह्री ॐ नामाकर्षणं । ॐ ग: म: ठ: ठ: गति बध: ह्रीं ह्रीं द्रं द्र: ॐ देवु २ मुख बंध २ ॐ ह्री फट् क्रों प्रोच्छिर भी ठ: ठ: ठ: कुंडली करणं । ॐ लोलु ललाट: घट प्रवेश ॐ य: विसर्जनीयं ओष्ठ कंठ, जिह्वा, मुख—खिल्लउं तालु खिल्लउं ॐ जिह्वा खिल्लउं, ॐ खिल्लउ तालू हंगरू सुवहु: चंचु २ हेर ठ: ठ: महा काली योग काली कुयोगम्मूह सिद्ध २ उए कु सप्प मुह बंधउं ठ: ठ: ।

ॐ भूरिसि भूति धात्री बिविध चूर्णर लंक्षता स्वाहा । भूमि शुद्धि: ।

डाकिनी मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय शाकिनी योगिनी नां—मंडल मध्ये प्रवेशय २ आवेशय सर्व शाकिनी सिद्धि सत्वेन सर्वपास्तारय स्वाहा ।

सर्वपतारण मन्त्र : –ॐ नमो सुग्रीवाय ह्रीं खट् वांग, त्रिशूल, डमरू हस्ते तीस्तीक्षणक, कराले वटेला नल कपोले लुंचितं केश कपाल वरदे । अमृत शिर माले । गंडे । सर्व ड किनी नां वशंकराय सर्व मन्त्र छेदनी निरवये आगच्छ भवति—त्रिशूलं लोलय २ इ अरा डाकिनी रे ।

शाकिनी निग्रह मन्त्र :—नरलइ कि लइ फेरकार मंडलि असिद्धि हुइ निवारइ द्रोसम मैं आउ सि पइ स इ हाल धुलिमाइ २ रक्त सी पुतप—सम न करसो ।

डाकिनी मन्त्र :— ॐ हं सं वं क्षं कमल वर्जू षु भां ह्रीं म्नां ज फट् ।

विधि :— अश्व गंधापसव, सरसों, कपास को उपरोक्त मन्त्र से मन्त्रीत कर, अवस्तुनि आछोते ऊखल, मुसल, वर्तिना वाला गरूडै:, सिन्दूर से ताडित करे तो, शाकिनी प्रगट होती है, और उस पात्र को, यानी रोगी को छोड़ देती है ।

यन्त्र नं० १

यन्त्र नं० २

देवदत्त

देवदत्त
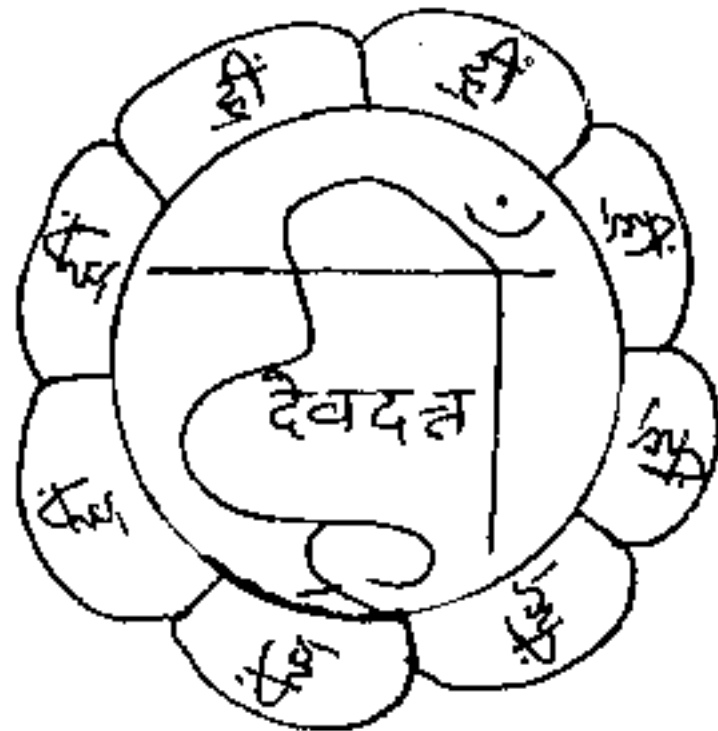
यन्त्र नं० ३

शाकिनी मन्त्र

विधि :— क्लिष्ट मूलं नंदु लोद केन गालयित्वा पात्रस्य तिलकं क्रियते। शाकिनीनां स्तंभो भवति। अतः परं प्रवक्ष्यामि। योगिनी क्षोभं मुक्तयंरि-संमंत्र संसिद्धं श्री मत्संघं: प्रपूजितं।

मन्त्र :—ॐ सुग्रीवाय जनेवहृतराय स्वाहा।

विधि :— इस मन्त्र को पढ़ने से डाकिनी की दिशा बन्ध होती है। और पुत्र की रक्षा डाकिनी से अवश्य होती।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय भौ भौ मत मातंगिनी स्वाहा। यह मुद्रिका मंत्र है।

विधि :—उपरोक्त मंत्र को चक्र मुद्रा बना कर रोगी को दिखावे और मंत्र का जप करे तो कोई भी प्रकार की भूत प्रेत ग्रह शाकिनी, डाकिनी आदि रोगी को छोड़ कर भाग जाती है।

मन्त्र :—ॐ नमः सुग्रीवाय नमः चामुंडो तक्षि कालोग्रहे विसत् हन २ भंज २ मोहय २ रोषिणी देवि मुस्वाय स्वाहा। प्रोच्छादने विद्या।

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय परम् सिद्ध सर्व शाकिनी प्रमर्दनाय, कुट्ट २ आकर्षय २ वामदेव २ प्रेतान ग्रह २ ममाहृलि रहि २ उस ग्रत २ यसि २ ॐ फट् शूल चंडायनो विजमामहन् प्रचंड सुग्रीवोसासपति स्वाहा। सर्व करो मंत्र :—

मन्त्र :—ॐ नमो सुग्रीवाय वार्षिके सौम्ये वचनाय गोरीमुखी देवी शूलनी ज्जं २ चामुंडे स्वाहा।

विधि :—उपरोक्त मंत्र से कनेर डाली को ७ बार मंत्रित कर, उखल में डाल कर मूसल से कूटे, जैसे २ कूटे, वैसे २ योगिनी भूत का ताडन होता है। लेकिन प्रताडन मन्त्र को १०८ बार जपना चाहिये।

यन्त्र रचना

(३) ॐ कार देवदत्त, गर्भित करके ऊपर चतुर्दल वाला कमल बनावे, उस चतुर्दल में ॐ मुनि सुव्रताय लिखे, ऊपर एक वलय बनावे, उस वलय को, हूर हूर से वेष्टित करे। ऊपर फिर एक वलय बनावे, उसमें क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व श ष स ह क्ष, लिखे। ऊपर से ह्रीं कार से यन्त्र को तीन घेरे से सहित बनावे। ये यंत्र रचना हुई। चित्र नं० ३ देखे।

(४) 'ग' कार में देवदत्त, गर्भित करे, ऊपर चार पांखुडी का कमल बनावे, उन पांखुडीओं में व कार की स्थापना करे। फिर ऊपर आठ दल का कमल बनावे, उन आठ दलों में उ कार की स्थापना करे। यह हुआ यंत्र का स्वरूप। यन्त्र नं० ४ देखे।

(५) ह्रीं कार में देवदत्त, गर्भित करे, फिर आठ दल का कमल बना कर उसमें व कार की स्थापना करे, ऊपर ह्रीं कार का तीन घेरा देवे। ये हुई यंत्र रचना यन्त्र नं० ५ देखे। इस प्रकार के यन्त्रों को, केशर, गोरचन से भोजपत्र पर लिख कर धारण करे तो दुष्ट लोगों के द्वारा किया हुआ वशीकर उपद्रव शांत होता है।

यन्त्र नं० ४
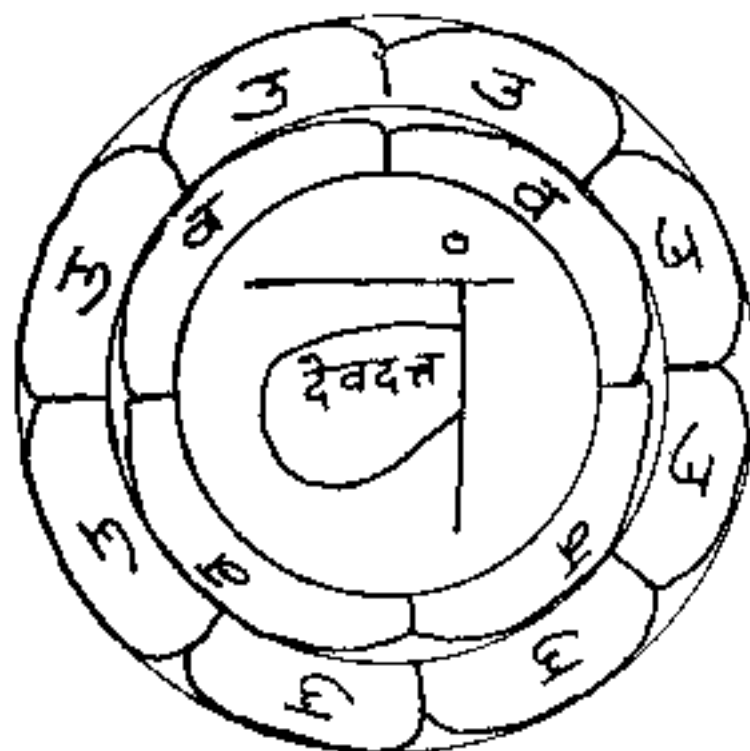
यन्त्र नं० ५
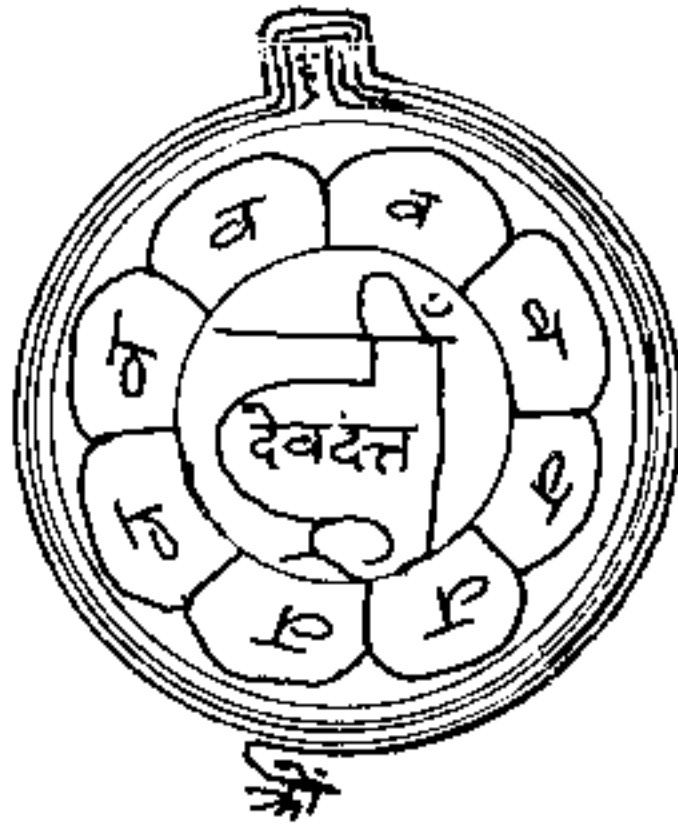
यन्त्र नं० ६

(६) ह्रीं कार में देवदत्त गर्भित करके, ऊपर अष्ट पांखुड़ी का, कमल बनावे, फिर प्रथम क्षां लिखे। फिर देवदत्त फिर क्षीं फिर क्षूं, फिर ह्रीं लिखे। फिर ह्रीं कार का तीन घेरे देवे। यह यंत्र का स्वरूप बना। यन्त्र नं० ६ देखें।

(७) देवदत्त लिखे, ऊपर एक वलय खींचे उस वलय में क्रमशः अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ये स्वर लिखे, फिर ऊपर से एक वलय और खींचे, उस वलय में ॐ ह्रीं चामुंडे, लिखे। ये हुआ यंत्र रचना। यन्त्र नं० ७ देखें।

विधि :—इन दोनों यंत्रों को केशर, गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर यंत्र को सूत्र से वेष्टित कर के हाथ में बांधने से बंध्या गर्भ धारण करती है और उसके गर्भ में मरे हुये बच्चे कभी नहीं होंगे। दूसरे यन्त्र के प्रभाव से काक बंध्या भी प्रसव धारण करती है। सर्व भूत, पिशाच, प्रभृतिकादिक से बालकों की रक्षा होती हैं।

(८) ह्रीं कार में देवदत्त लिख कर, ऊपर अष्ट दल कमल बनावे, उन आठों ही दलो में रं कार लिखे। देखें यन्त्र नं० ८ देखें।

(९) ह्रीं कार में देवदत्त लिखे, फिर चतुर्थ दल का कमल बनावे, उन चारों ही, दलों में माया बीज (ह्रीं) को लिखे। यन्त्र नं० ९ देखें।

इन दोनों ही यन्त्रों की विधि भी उपरोक्त ही है।

(१०) ह्रीं श्रीं देवदत्त ह्रीं श्रीं, लिख कर ऊपर अष्ट दल का कमल बनावे, उस कमल दल में प्रत्येक में क्रमशः ह्रीं श्रीं लिखे। यन्त्र रचना इस प्रकार हुई। यंत्र नं. १० देखें।

विधि :—इस यंत्र को केशर, गोरोचन से भोजपत्र पर लिख कर कुमारी कात्रीत सूत्र से यंत्र को वेष्टित करे, और भुजा में धारण करावे, बच्चों की तो शांति रक्षा होती है। और सर्व जन प्रिय होता है। दुर्भाग्य स्त्रियों का सौभाग्य होता है।

(११) देवदत्त लिख कर ऊपर आठ दल का कमल बनावे, फिर प्रत्येक दल में क्रमशः क्म्ल्व्यूं, ज्म्ल्व्यूं, झ्म्ल्व्यूं, स्म्ल्व्यूं, भ्म्ल्व्यूं, म्म्ल्व्यूं, ह्म्ल्व्यूं, ध्म्ल्व्यूं, लिखे यंत्र रचना इस प्रकार हुई। यन्त्र नं० ११ देखें।

विधि :—यंत्र को केशर गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर भुजा में धारण करे तो सर्वजन-वशी होते हैं।

(१२) ह्रीं कार में देवदत्त गर्भित करे, उसके ऊपर षट् कोण बनावे, षट कोण की कर्णिका के क्रमशः ह्रीं, सं, लिखे, बाहर ह्रीं २ लिखे। ये यंत्र रचना हुइ। यन्त्र नं० १२ देखे।

विधि :—इस यंत्र को केशर, गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर (सराव संपुट के अन्दर डालकर स्थापना करे तो सबका वशीकरण होता है।
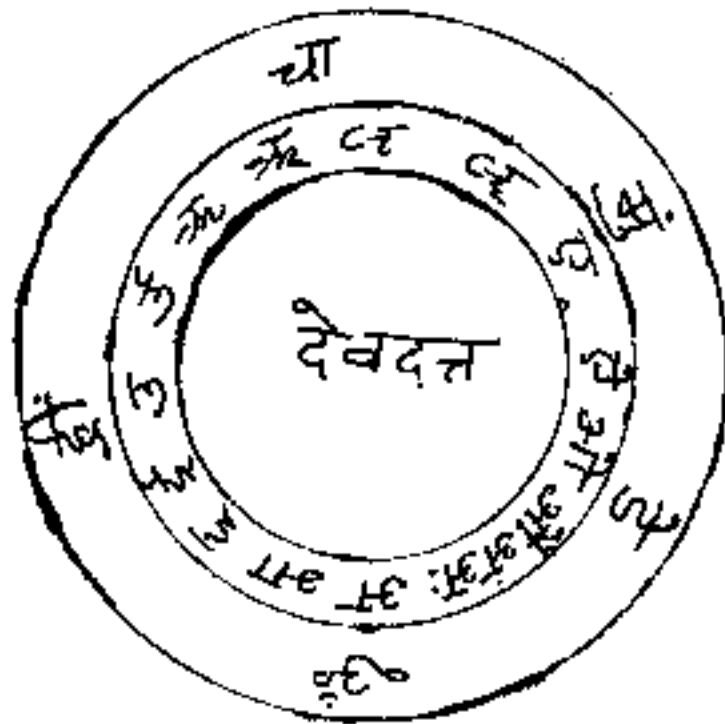
यन्त्र नं० ७

यन्त्र नं० ८
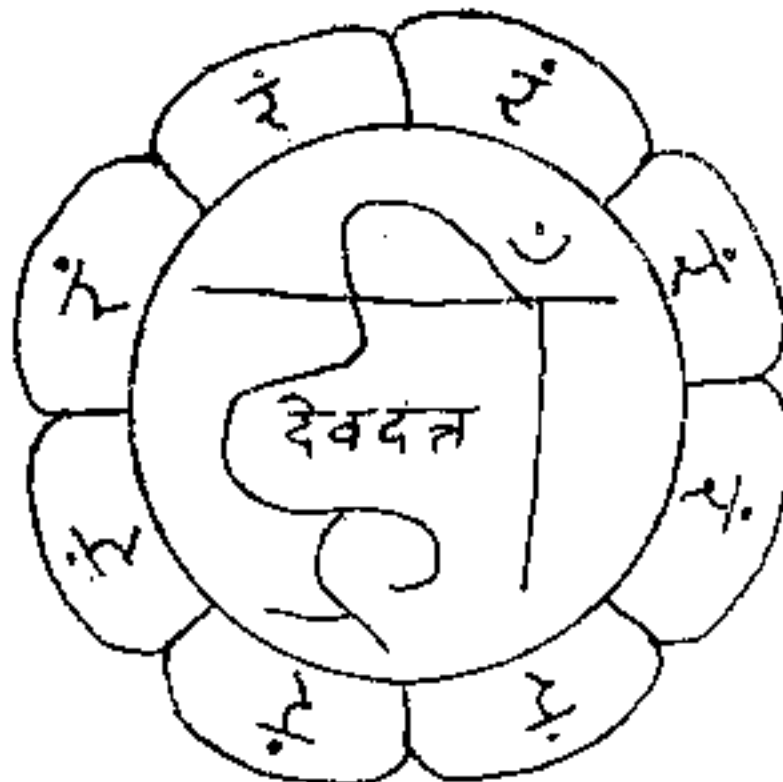
यन्त्र नं० ९
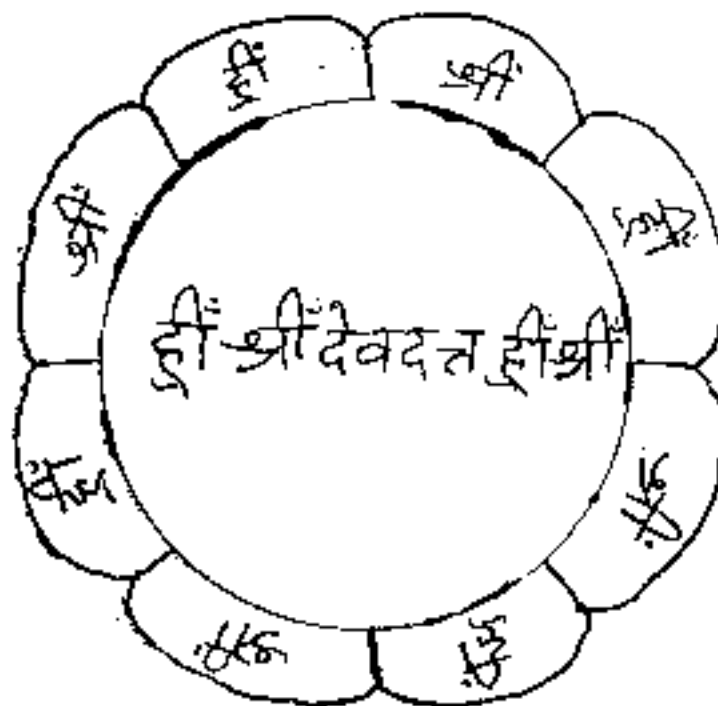
यन्त्र नं० १०

यन्त्र नं० ११
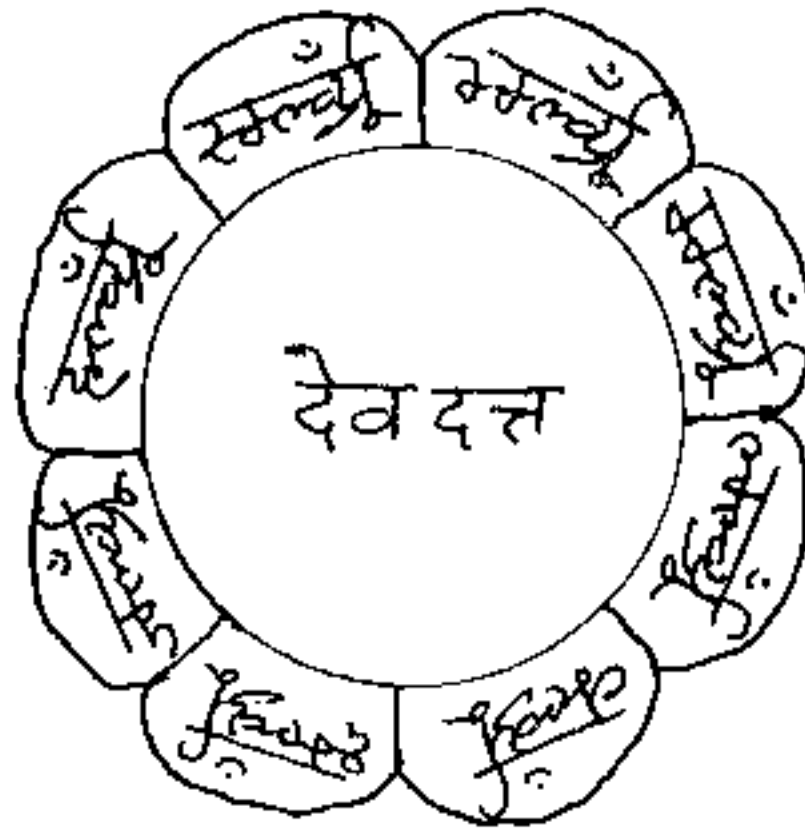
यन्त्र नं० १२

(१३) ह्रीं देवदत्त श्रीं लिखे, बाहर चार दल का कमल खींचे, उस कमल कर्णिका में ह्रीं कार की क्रमशः स्थापना करे। यन्त्र नं० १३ देखे।

विधि :—इस यन्त्र को केशर गोरोचनादि से भोज पत्र पर लिखे, यन्त्र को वस्त्र में लपेट कर, गले में अथवा हाथ में धारण करने से, आयु की वृद्धि होती है। अपमृत्यु नहीं होती है। भूत पिशाच, ज्वर स्कंध, अपस्मार ग्रह, से पीड़ित रोगी को तत्क्षण ही छुटकारा मिल जाता है। रोगी अच्छा हो जाता है।

(१४) देवदत्त, लिख कर षट् कोणाकार बनावे षट् कोण के कर्णिका में क्रमशः ह्रूं, ॐ, ॐ ह्रूं, ह्रूं ह्रूं ह्रूं लिखे, बाहर ह्रां ह्रीं स्वाहा लिखे, ऊपर एक वलयाकार बनावे उस वलयाकार में ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः यक्षः। ह्रीं कार का तीन घेरा लगावे। ये बना। यंत्र नं० १४ देखे।

विधि :—इस यन्त्र को नागर बेल के पत्ते पर, नागर बेल के पत्ते के रस से लिखें। उस पत्ते को रोगी को खिलाने से वेला ज्वर का नाश होता है। उस पत्ते रस को उपरोक्त मंत्र से ७ बार मंत्रित करे।

(१५) अथवा ह्रां, ह्रीं ॐ के बीच में देवदत्त लिखे, ऊपर से ह्रीं कार को वेष्टित कर दे। यंत्र नं० १५ देखे।

विधि :—इस यन्त्र को गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर, गले में या हाथ में बांधने से चौर भय कभी नहीं होगा। ये अमोघ विद्या है।

(१६) ह्रीं स्त्रं देवदत्त ह्रीं स्त्रं, लिखे, ऊपर चतुर्थ दल कमल बनावे। उस कमल की पांखुडी में क्रमशः ॐ ह्रां ह्रीं, स्त्रं, लिख दे। यह मंत्र रचना हुई। यंत्र नं० १६ देखें।

विधि :—इस यंत्र को गौरोचन और अपनी अनामिका अंगुली के खून से, भोज पत्र पर लिख कर एरंड की नली में डाले तो, राज मन्त्री आदि के वश में होते हैं।

मन्त्र :—ह्रीं द्रं नय रं, नृप (राजा को शोभित करता है।)

(१७) यं कार में देवदत्त लिख कर, उपर एक वलय बनावे, उस वलय में ॐ २ लिखे, उपर अष्ट दल का कमल बनावे, उन आठो ही दलों में ह्रीं कार आठ लिखे, उपर से ह्रीं कार का त्रिधा घेरा बनावे। यंत्र रचना हुई। यंत्र नं० १७ देखें।

विधि :—इस यंत्र को केशर, गौरोचनादि शुभ द्रव्य से भोज पत्र पर लिखे, कमल के धागे से यन्त्र को वेष्टित कर के, लाल कनेर के फूलों से १०८ बार जाप करने से, राजा पुरुष

आदि को भी शोभित करता है। नामाक्षर को नित्य ही जपे। नृप को, नगर को, गांव को शोभित करता है।

यन्त्र नं० १३

यन्त्र नं० १४

यन्त्र नं० १५

यन्त्र नं० १६
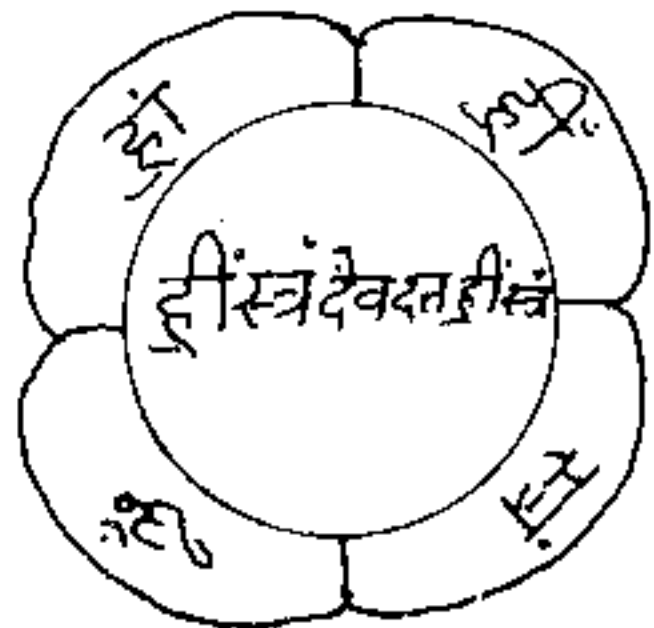
यन्त्र नं० १७
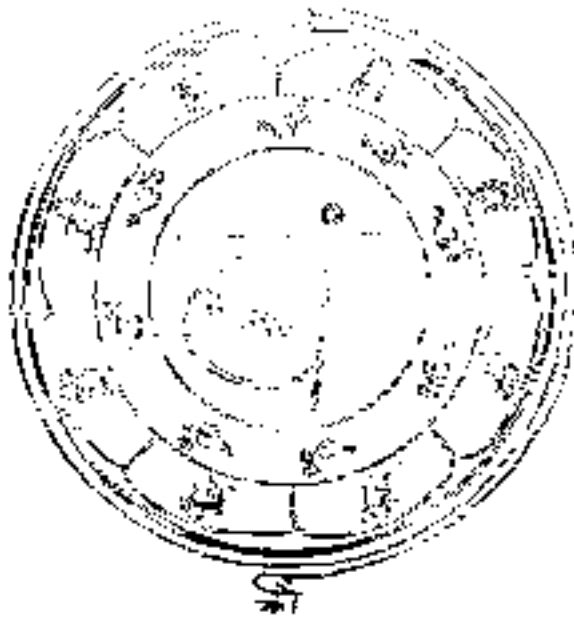
र में देवदत्त गर्भित करके, ऊपर षट कोणाकार बनावे, उस षट् कोण की कर्णिका
रं लिखे। उपर अग्नि मंडल बनावे। यंत्र नं. १८ देखे।

यंत्र को श्मशान के कोयले से, कौआ के पंख से कफन के टुकडे पर लिखे फिर
न में गाड देवे तो उच्चाटन होता है। यंत्र गाडने के समय मंत्र को सात बार
चाहिये।

कार में देवदत्त लिखे, ऊपर एक वलाया कार बनावे, उस वलय में क्रमशः ॐ ह्रां
ह्रं ह्रौं फट् व देवदत्त लिखे, फिर एक वलय और बनावे, उस वलय को 'ठ' कार
ष्टित करे, फिर आठ दल का कमल बनावे, उस कमल में लं रीं रं रों रों रैं रः
त्र रचना हुई। यन्त्र नं० १९ देखे।

यन्त्र को कौआ के रक्त से शत्रु के नाम सहित लिखे तो शत्रु को ज्वर पकड़ लेता है।
र में देवदत्त गर्भित करके, ऊपर षट् कोण बनावे, प्रत्येक षट्कोण की कर्णिका
र लिखें। यह प्रथम यंत्र रचना हुई। यन्त्र नं० २० देखें।

यंत्र को विष, श्मसान का कोयला, और शत्रु के पांव के नीचे की धूल, इस सब
ों से भोज पत्र पर शत्रु के नाम सहित लिखे तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

(१८) यं का
में रं

विधि : इस
श्मशा
जपना

(१९) ह्रीं क
ह्रीं ह
से वे
यह य

विधि :—इस

(२०) यं का
में यं

विधि :—इस
चीजों

(२१) यं कार में देवदत्त लिख कर ऊपर षट् कोण बनावे, उन षट् कोण के कर्णिका में यं २ लिखे. ऊपर एक वलय बनावे। उस वलय में ॐकार लिखे, फिर बाहर चार यः कार से वेष्टित करावे। यह हुई यंत्र रचना। यन्त्र नं० २१ देखे।

विधि :—इस यंत्र को विष कनक फल के रस से ध्वजा के कपड़े पर लिख कर, श्मसान में गाड़ देवे, तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है।

(२२) म्म्ल्व्र्यूं पीडाक्षर में देवदत्त, गर्भित करे ऊपर चतुर्थ दल का कमल बनावे, उन दलों में यं २ लिखे। ये हुई यंत्राकार की रचना। यन्त्र नं० २२ देखे।

विधि :—इस यंत्र को श्मशान के कोयले से नीम के पत्तों के रस से लिखे, कौवे के पंख की कलम से ध्वजा के कपड़े पर लिख कर; उस ध्वजा को बांस में लगा कर बांध देवे तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

(२३) य कार में देवदत्त नाम गर्भित करके, फिर ऊपर अग्नि मण्डल बनावे, उस अग्नि मंडल के तीनों कोण में रं कार लिखे,। बाहर तीनों ही कोणो में स्वस्तिक लिखे ३। यन्त्र नं० २२ देखो।

विधि :—इस यन्त्र को विभितक के (हर्रे के) रस से लिख कर गधे के मूत्र में क्षेपण करे तो शत्रु का उच्चाटन होता है।

यन्त्र नं० १८
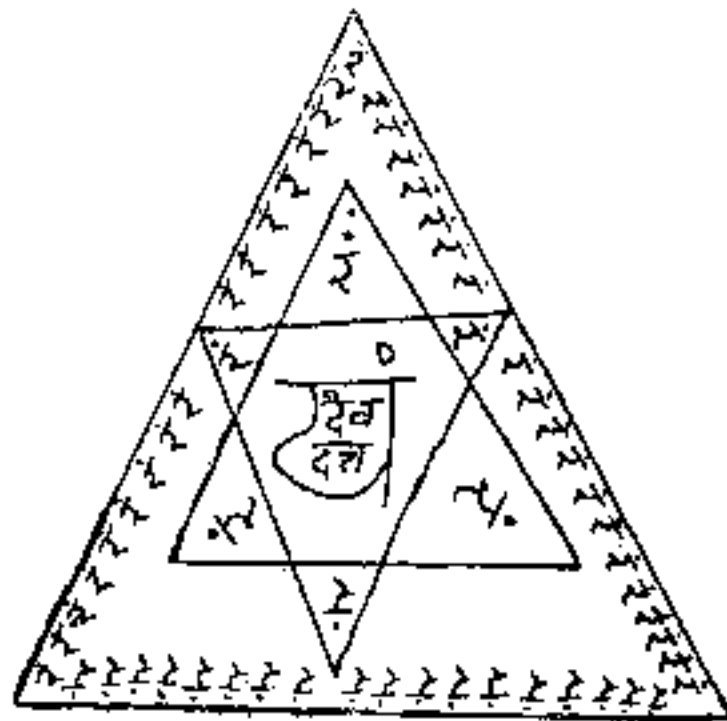
यन्त्र नं० १६

यन्त्र नं० २०
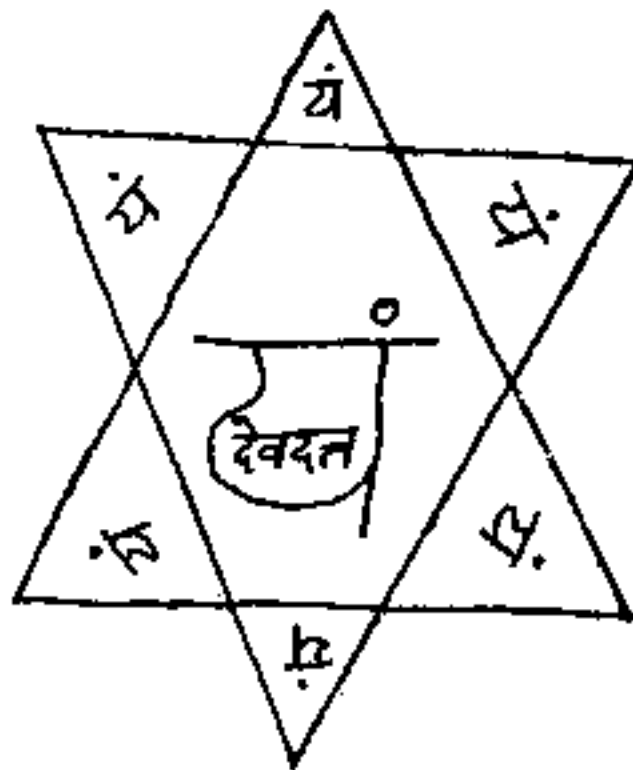
यन्त्र नं० २१

यन्त्र नं० २२
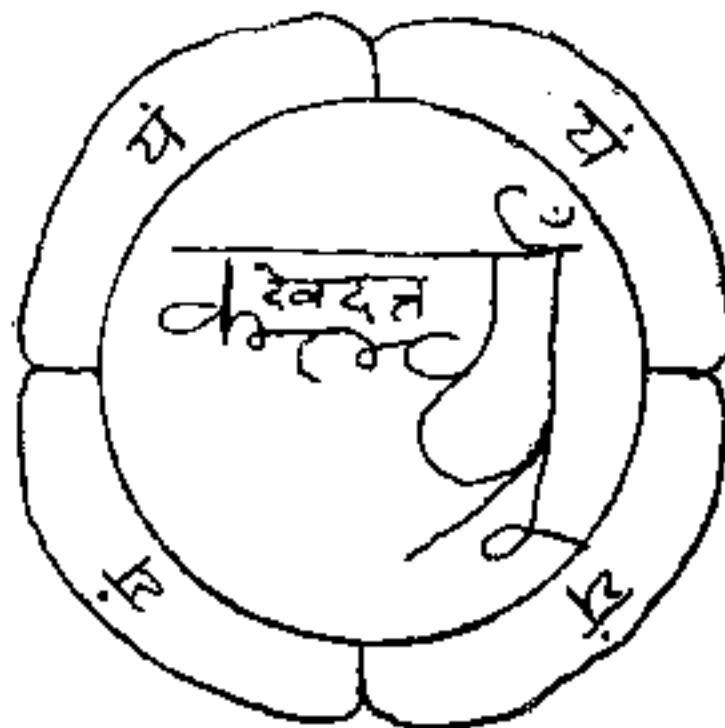
यन्त्र नं० २३
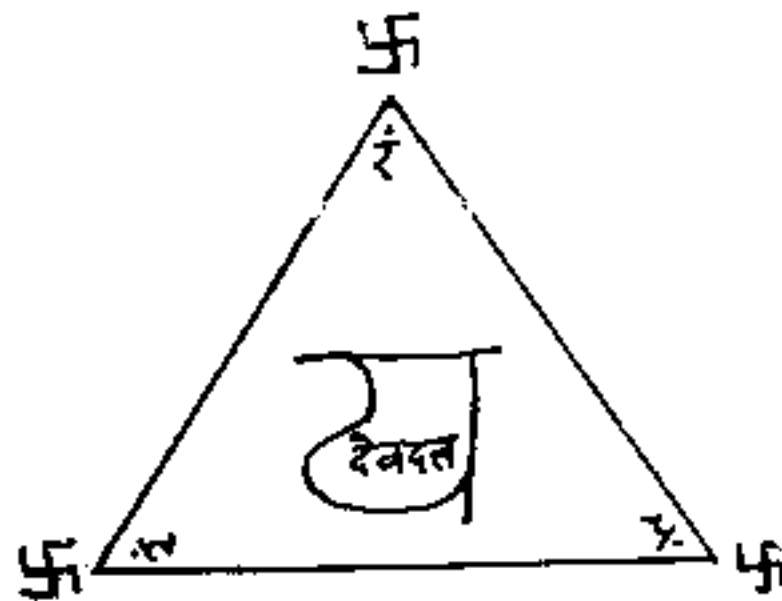
(२४) देवदत्त लिख कर ह्रीं कार को त्रिधा वेष्टय। ये यन्त्र हुआ। यन्त्र नं० २४ देखें।

विधि :—इस यन्त्र को ताल पत्र के रस से, ताल पत्र के कांटे की कलम से लिख कर घड़े में डाले। उस घड़े का मुंह कपड़े से ढक देवे तो उच्चाटन होता है।

(२५) ह्रीं कार में देवदत्त लिख कर, ऊपर चार दल का कमल बनावे, उन चारों ही दलों में ह्रीं, की स्थापना करे। यह हुआ यन्त्र का स्वरूप। यन्त्र नं० २५ देखें।

विधि :—इस यंत्र को केशर गोरोचन से भोजपत्र पर लिख कर हाथ में धारण करने से, ग्रह भूत, पिशाच, डाकिनी, प्रभृतिनां की पीड़ा नहीं होती है।

(२६) ह्रीं कार में देवदत्त लिखे. ऊपर गोलाकार बनावे. उस गोला कार के ऊपर आठ वज्र

यन्त्र नं० २४
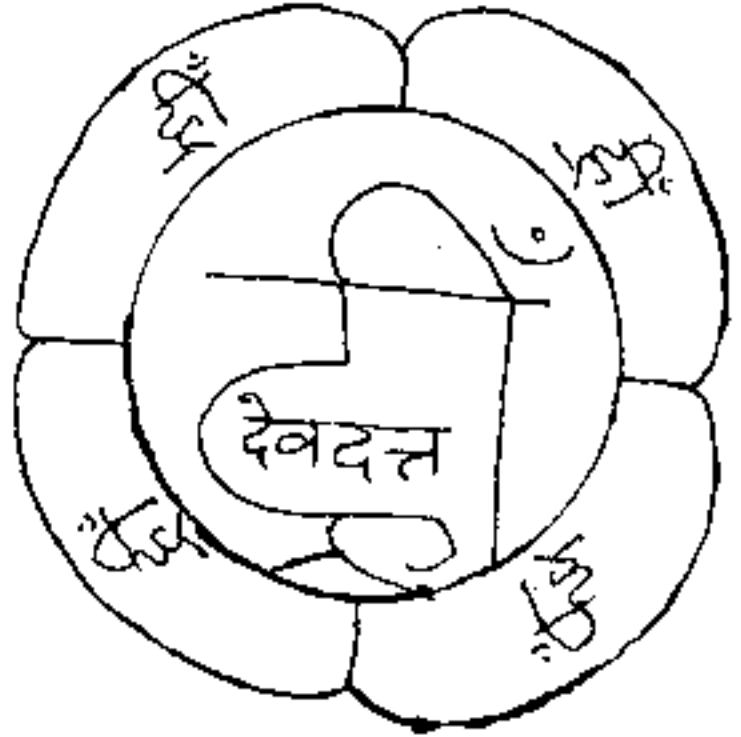
यन्त्र नं० २५
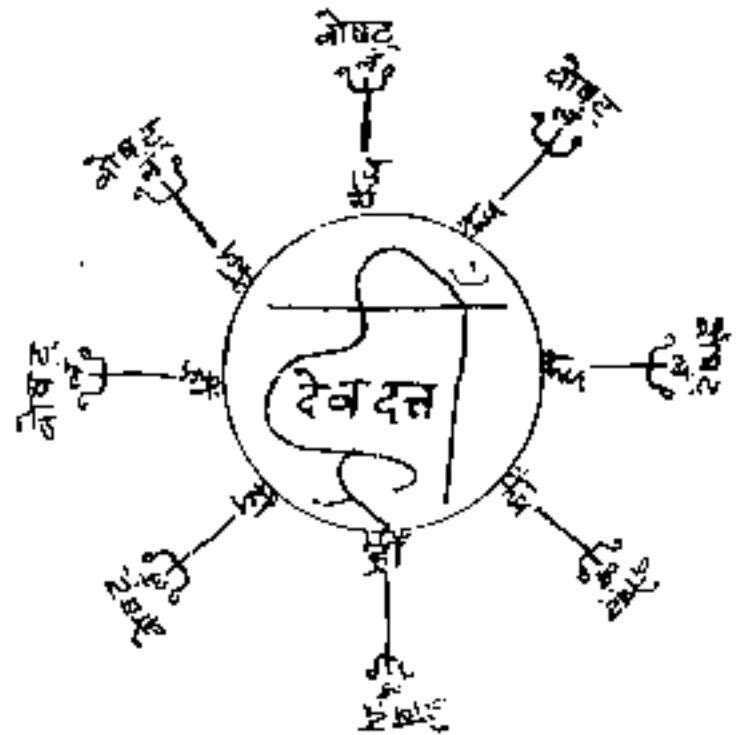
यन्त्र नं० २७

यन्त्र नं० २६

(२७) बालू की प्रसिमा बना कर उस प्रतिमा में ह्रीं कार देवदत्त सहित लिखे । माया (ह्रीं) बीज से त्रिधा वेष्टित करे । यहां विशेष कुछ समझ में नहीं आया है । अतः मंत्र शास्त्र के ज्ञाता विशेष समजे । यन्त्र नं० २७ देखो ।

"इदानीं प्रहरणमेकप्रकारं सप्रपंचमाह ।"

कूजत्कोदंडकांडो, डमरूविधुरितः क्रूरघोरोपसर्गा ।।

दिव्यं वज्रातपत्रं, प्रगुणमणिरणंकि किणीक्वाणरम्यं ।।

भास्वद्वैडूर्यदंडं, मदन विजयिनो, बिभ्रती पार्श्वभर्त्तुः ।।

सा देवी पद्महस्ता, विघटयतु महा, डामरं मामकीनम् ।। २ ।।

व्याख्या :—विघटयतु विनाशयतु काऽसौ कर्त्री देवी पद्मावती किम् तत्कर्मता पन्नं महाडामरं महा विघ्नं कथंभूतं मामकीनं मदीयं । कीदृशी देवी पद्महस्ता पद्मकराः किं कुर्वती बिभ्रती धारयंती किं कर्मतापन्नम् वज्रातपत्रं, वज्रं च आतपत्रं च वज्रातपत्रं कस्य पार्श्वभर्तुः पार्श्वाभिधानयक्षस्य पुनरपि किं कर्मतापन्नं 'कूजत्कोदंडकांडो डमरूविधुरितः क्रूरघोरो-पसर्गाः कोदंडश्च कांडश्च कोदंडकांडौ कूजंतौ, कोदंडकांडौ कूजत्कोदंडकांडौ तयोरू डमरः कूजत्कोदंड कांडोडमर क्रूरश्च घोरश्च क्रूरघोरौ, क्रूरघोरौ उपसर्गौ यस्यासौ क्रूरघोरोपसर्गाः कूजत्को दंड कांडो डमरेण, विधुरितः क्रू--घोरौ—तत् क्रूर घोरोपसर्गाः गदाधनुर्बाणोडमरुविधुरितः दुष्टरौद्रविघ्नं न केवलं बिभ्राणा किं तत् वज्रातपत्रं दिव्यं प्रधानं तथा बिभ्राणा किं तद्—भास्वद्वैडूर्य दंडं, भास्वान प्रभा पुंज सहितो वैडूर्य दंडो येनासौ भास्व द्वैडूर्य दंडः तं भास्वद्वैडूर्य दंड देदीप्यमान रत्न विशेषम् तेल्लगुडं कीदृशं प्रगुणमणिरणत्किंकिणी क्वाणरम्यं । प्रगुणाश्च ते मणयश्च, प्रगुण—मणयः रणंतश्च ताः किंकिण्यश्च रणत्किंकिण्यः प्रगुणमणि—रणत्किंकिणी नाम् क्वाणः प्रगुण मणि रणत्किंकिणी क्वाणः तेन रम्यं, प्रगुन मणिरणत्किं किणी क्वाण रम्यं । विशिष्टरत्ननिर्मितक्षुद्रघण्टि कारावरमणीयं । कीदृशस्य पार्श्वभर्तुः मदन विजयिनः कामजयिनः भावनाह् । एवा विद्यामार्गे भवे ७ सप्तवारान् अभिमंत्र्यायै धनुरा लिखेत्—चोरभयं न भवति ।

ॐ मदनबिजयिनो बिभ्रती पार्श्वभर्तुः सा देवी पद्म हस्ता विघटयतु महाडामरं मामकीनं । भृङ्गी काली कराली, परिजन सहिते, चंडि चामुण्डिनित्ये । क्षां क्षीं क्षौं क्षः क्षणार्धक्षतरिपुनिवहे ह्रीं महामंत्रवश्ये ।। १ ।।

।। नमो धरणेंद्राय खगविद्याधराय चल २ खड्ग गृण्ह २ स्वाहा ।। १ ।। अष्टोत्तर-सहस्त्रकरजापो मुख्यानि । वादिनः भयं सिद्धिः ।

खड्गस्तंभन मंत्र :—ॐ नमो कुबेर, अमुक चोरं गृण्ह २—स्थापितं दर्शय आगच्छ स्वाहा ।। १ ।।

भस्मना कटोरकं पूरयित्वा पूजयेत्—चौरं गृण्हापयति पूर्व सेवा दशलक्षाणि जपेत् ततः सिद्धो भवति ।। २ ।।

श्लोक ३

काव्य नं० ३ के यंत्र मन्त्र

मंत्र :—ॐ मदनवि : यिनो बिभ्रतोपार्श्वभर्तु : सादेवी पद्महस्ता विघटतु महाडामरं मामकीनं, भृंगी काली कराली परिजन सहिते चंडि चांमुडि नित्ये, क्षां क्षीं क्षौं क्षः क्षणार्ध क्षतरिपुनिवहे ह्रीं महामंत्र वश्ये।

विधि :—इस मंत्र को सात बार पढ़कर, मार्ग में धनुषाकार बना देवे, तो चौर भय नहीं होता है।

मंत्र :—ॐ नमोधरणेंद्राय खड्ग विद्याधराय चल २ खड्गं गृण्ह २ स्वाहा।

विधि :- इस मंत्र का १००८ बार जप करने से वादिओं को भय होता है।

खड्ग स्तंभनमंत्र :—ॐ नमो कुबेर .... अमुक चोरं गृण्ह २ स्थापितंवर्शाय आगच्छ २ स्वाहा।

विधि :—भस्म से कटोरा भरकर पूजा करे। चौर को पकड़ेगा। पहले मंत्र का दस हजार जप करे तब मंत्र सिद्ध हो जायगा।

"इदानीं अनेक प्रकारं शास्त्रं प्रतिपाद्य अधुना देवकुलरक्षाः स्तंभन, मोहन, उच्चारण, विद्वेषण, वशीकरण, भूत शाकिनी देवीनों अभिधानानि मंत्राणि विद्याश्च सप्रपंचमाह।"

भृंगी काली कराली, परिजन सहिते, चंडि चामुंडि नित्ये।
र्क्षां क्षीं क्षूं क्षों क्षणार्धक्षतरिपुनिवहे, ह्रीं महामंत्रवश्ये।
ॐ ह्रां ह्रीं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रूं भंग संग, भ्रकुटि पुटतटः, त्रासितोद्दा। सदैत्ये।
स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रौं (भ्रां भ्रीं भ्रू भ्रः) प्रचंडे, स्तुति शतमुखरे, रक्ष। मां देविपद्मे ॥ ४ ॥

व्याख्या :—रक्ष पालय हे देवी, पद्मे, पद्मावति। कं मां स्तुतिकर्तारम्कीदृशी स्तुतिः शतमुखरे, स्तुतयः श्री पार्श्वनाथ संबंधिन्यस्तासां शतानि तैः मुखराः वाचाला तस्याः संबोधनं, स्तुतिशत मुखरे कीदृशे। भृंगी, काली, कराली, परिजन सहिते, भृंगी च काली च कराली च, भृंगी काली कराली एवं परिजनः परिवारः तेन सहिते। संयुक्ते। पुनः कीदृशे। चंडि चामुंडि नित्ये। चंडिश्च चामुंडिश्च, चंडिचामुंडि चंडिचामुंडिभ्यां

नित्ये युक्ते--च ंडिचामु ंडिनित्ये, लोक प्रतीति । क्षां च क्षीं च क्षूं च क्षौं च, क्षां क्षीं क्षूं क्षौं एतैरक्षरैः क्षणस्यार्धं, क्षणार्ध तेन क्षणार्धेन क्षता हताः रिपूणां निवहः समूहाः यया सा तस्याः संबोधनं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षणार्धक्षतरिपुनिवहे । पुनः कीदृशे, ह्रीं महामंत्र वश्ये । ह्रीं लक्षणों यो महामन्त्रस्तस्माद्वश्या, ह्रीं महामंत्र वश्या तस्याः संबोधनं ह्रीं—महामंत्रवश्ये । भ्रुकुटीप्रभृतयः , पुनरपिकीदृशे : ॐ ह्रां ह्रीं भ्रू भंगः ॐ ह्रां ह्रीं भ्रूं भ्रू भंगस्य संगः ॐ ह्रां ह्रीं भ्रूं भ्रू भंग संगः भृकुटिपुटतटः । तेन भासिता उद्दामो दैत्याः यया सा । ॐ ह्रां ह्रीं भ्रूं भ्रू भंगसंगः भृकुटिपुटतटः त्रासितोद्दामदैत्या । तस्याः संबोधनं ।

ॐ ह्रां ह्रीं भ्रूं भ्रू भंग द्दामदैत्ये । विकटकटाक्षोच्चाटयेत् । दुष्टासुरे ।

पुनरपि कीदृशे—स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रौं प्रच ंड स्त्रां च स्त्रीं च स्त्रूं च स्त्रौं च एतैः प्रच ंडा सा तथोक्ता तस्याः संबोधनं, स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रौं प्रच ंडे समर्थेत्यर्थः अस्य भावतामाह । इदानीं ।। देव ग्रह यंत्र मंत्र ।। क्ष्म्ल्व्र्यूं—ह्म्ल्व्र्यूं—म्ल्व्र्यूं । एतत् हि अष्टदलेषु सर्वाणि पिंडाक्षराणि संलिख्य बहिरष्टदलेषु ॐ भृंगीं नमः ॐ कालीं नमः ॐ करालीं नमः ॐ चंडी नमः ॐ जंभायै नमः ॐ चामु ंडायै नमः ॐ अजितायै नमः ॐ मोहायै नमः । बाह्ये मायाबीजम् त्रिधावेष्टयं । पृथ्वी मंडल चतुष्कोणेषु क्षिकारवज्रांकित एतत् क्रमेण चक्रं कुंकुम—गोरोचनया कर्पूरादि सुगन्ध द्रव्यैः भूर्जपत्रे संलिख्य कुमारी सूत्रेण वेष्ट्यम् बाहौ धारणीयं सर्वभयरक्षा भवति । अथवा । एतद्य ंत्रं श्रीखंड—कर्पूरादिना संलिख्य श्वेत—पुष्पैः रष्टोत्तर शतैः पूजयेत् । षण्मासं यावद् लक्ष्मी सौभाग्यं सर्व कार्यं सिध्यति ।

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय सर्व लोकाभ्युदयकारिणी भृंगीदेवी सर्वसिद्धि विद्याबुधायिनी, कालिका सर्वविद्या, मंत्र, यंत्र, मुद्रा स्फोटना कराली, परद्रव्य योगचूर्ण रक्षणा जभाचरं मौन्य मर्दिनी,नमो दानदरोग नाशिनी सकलत्रिभुवनानंद कारिणी,भृंगी देवी सर्व सिद्ध विद्या बुधाइणी महामोहिनी, त्रैलोक्य संहारकारिणी चामु ंडा । ॐ नमो भगवति पद्मावती सर्वग्रह निवारय फट् २ कंप २ शीघ्रं चालय २ गात्रं चालय २ पादं चालय २ सर्वांग चालय २ लोलय २ धनु २ कंपय २ कंपावय २ सर्व दुष्टान विनाशय । जये विजये । अजिते । अपराजिते । जंभे । मोहे । अजिते । ह्रीं २ हन २ दह२ पच २ धम२ चल २ चालय२ आकर्षय २ आकंपय २ विकर्षय २ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः फट्२ निग्रहं ताडय२ क्ष्म्ल्व्र्यूं स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रौं क्षः २ हं २ सं २ धं २ सं २ म्ल्व्र्यूं ह्र २ घर २ ॐ ह्रां ह्रीं भ्रूं भ्रू भंग संग —भृकुटि ; द्दामदैत्ये । स्त्रां स्त्रीं स्त्रूं स्त्रौं प्रच ंडे । स्तुतिशत-

मुखरे। रक्ष मां देवि पद्मे। पर २ कर २ ॐ फट् शंखमुद्रया मारय २ गाह्य २ क्ष्म्ल्व्र्यू हर २ स्तुतिका मुद्रा ताडय २ र्म्ल्व्र्यू रपरा प्रज्वल २ प्रज्वालय २ धूमांधकारिणी रां २ प्रां२ क्लीं २ हः वं नद्यावर्तु मुद्रया त्रासय २ म्ल्व्र्यू खचक्रमुद्रया छिद २ म्ल्व्र्यू त्रिशूल मुद्रया छेदय २ पर मंत्रं भेदय २ म्ल्व्र्यू धम २ बंधय २ मोचय २ हल–मुद्रया द्रावय २ व २ यं २ कुरू २ वम्ल्व्र्यू २ भ्रां भ्रू भ्रीं भ्रः समुद्रे मज्झ २ क्ल्व्र्यू छ्रां छ्रीं छ्रौं छ्रः मंत्राणि छेदय २ परसैन्यमुच्चाटय २ पर रक्षां क्षः त्रकुत्र फट् २ परसैन्यम् - विध्वंसय २ मारय २ दारय २ विदारय २ गति स्तंभय २ म्ल्व्र्यू भ्रां भ्रीं भ्रू भ्रौं भ्रः श्रावय २ रम्ल्व्र्यू यः प्रेषय २ पंछेदय २ विद्वेषय २ स्म्ल्व्र्यू स्रां स्रीं स्रावय २ मम रक्षां रक्ष २ पर मंत्रं क्षोभ २ छेद २ छेदय २ भेद २ भेदय २ सर्वंजंभं स्फोटय २ भ २ म्ल्व्र्यू भ्रां भ्रीं भ्रू भ्रौं भ्रः जामय २ स्तंभय २ दुःखय २ रवाय २ र्म्ल्व्र्यू ब्रां ब्रीं ब्रू ब्रौं ब्रः हा ग्रीवां भांजय २ मोहय २ त्म्ल्व्र्यू त्रां त्रीं त्रू त्रौ त्रः – त्रासय २ नाशय २ क्षोभय २ स २ सर्वदिशि बंधय २ सर्व–विघ्न छेदय २ निकृंतय २ सर्वदुष्टान् ग्राह्य २ सर्वयंत्रान् स्फोटय् २ सर्व शृंखलान् त्रोट्य २ मोटय २ सर्व दुष्टान् आकर्षय हम्ल्व्र्यू ह्रां ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्रः शांतिम् कुरू कुरु–तुष्टि कुरू २ स्वस्तिं कुरू २ ॐ श्रीं ह्रीं ह्रौं पद्मावती आगच्छ २ सर्व भयं मम रक्ष सर्व सिद्धि कुरू २ सर्व रोगं नाशय २ किन्नर किं पुरूष गरूड गंधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच वैताल रेवती दुर्गा चंडी—कुष्मांडिणी त्रांध सरय २ सर्व शाकिनी मर्दय संयोगिनी गणं चूरय २ नृत्य २ गाय २ कल २ किली २ हिलि २ मिलि २ सुलु २ घुलु २ कुल २ पुरू २—अस्माकं वरदे पद्मावती हन २ पच २ सुदर्शन चक्रेण छिद २ ह्रीं क्लीं –

ह्रां ह्रीं स्त्रू द्रू भ्रू प्रू ॐ क्लीं प्लीं स्त्रां श्रीं वां भ्रीं ह्रीं २ पां २ प्रीं २ ह्रां २ पद्मावती धरणेंद्र प्रासादयति स्वाहा। एषः मंत्रः पठितः सिद्धः निरंतरं स्मर्यमाणेन सूत ग्रह ब्रह्मराक्षस वेताल प्रभृति–शाकिनी ज्वर रोग चोरारिमारि–निग्रहव्याल सर्प वृश्चिक मूषक लूत पातकं च शिररोगो नाशयति।

ॐ भृंगी रेटी किरेटी जंभय २ क्लीं पच २ धृत टं कं स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ चंडाली अमुकस्य रुधिर पितर २ सुहृदये भित्वा हिलि २ चंडालिनी, मातंगिनी स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवती काली महाकाली रुद्राकाली नमोस्तुते हन २ दह २ छिद २ छेदय २ भिद २ त्रिशूलेन हः २ स्वाहा ॥ ३ ॥ विद्यात्रयं सप्त वारानाभिमंत्र्य तद्दीयेत शूलं नाशयति ॥

ॐ नमो भगवती कराली महाकराली, ॐ महामोह संमोहनीयं महाविद्ये। जंभय २ स्तंभय २ मोहय २ मुच्चय २ क्लेदय २ आकर्षय २ पाताय २ कुनरे संमोहिनी। ऐं द्रीं श्रीं द्रीं

आगच्छ करालो स्वाहा ॥१॥ एषा विद्या निरंतरं द्वादश सहस्त्राणि (१२०००) कर जापे सिद्धः भवति । मोहनी विद्या ॥

ॐ क्रौं ह्रीं अजिताए आगच्छ ह्रीं स्वाहा । ॐ नमो जृंभे मोहे स्तंभे । स्तंभिनी स्वाहा । ॐ नमो भगवती गंगा देवी कालिका देवो आह्वाननः । ॐ महामोहे स्वाहा ।

ॐ नमो चंडिकायै योगवाहि प्रवर्तय महा मोहय योगमुखी योगीश्वरी महामाये । स्वंपर्णी महा हरिहर भूतत्रये । स्वः स्वार्थे पृथ्वालिखय जिह्वाग्ने सर्वलोकानां एव्य घुसरू २ दर्शय २ साधय स्वाहा ॥ २ ॥

हस्ताकर्षणी नदी द्रह तडागे वा आकाशे चंद्रमंडले वा खड्गे दीपशिखायां वा अंगुष्ठे, दर्पणे तथा । स्वप्ने, खड्गे तथा देवी अवतोर्य शुभाशुभं । एषा आकर्षणीविद्या ॥ २ ॥

ॐ नमो चंडिकायै योगं वाहि २ इयं वा । ॐ नमो चंडि वज्रपाणये महायक्ष सेनानां गाधिपतये वज्रको वा दौष्टोंकट भैरवा एतद्यथा ।

ॐ नमो अमृतकुंडली अमुकं स्वाहि २ ज्वल २ कदम २ बंध २ गंज २ सर्व विघ्नौध विनाशकाय महागणपति + + + अमुकस्य जीव हराय स्वाहा ॥ २ ॥

ज्वतेः प्रेषण मंत्र :—ॐ नमो भगवतिः रक्त चामुंडे मरप्रजापाले कट २ आकर्षय २ ममोपरि चितं भवेत फलं पुष्पं यस्य हस्ते ददामि स शीघ्रमागच्छतु स्वाहा ॥ ४ ॥ वश्याकर्षण वज्रपाणिमंत्रेण विशेषणं क्रियते । तस्यं सहस्त्रजापः ।

करोभ्यां शतपुष्पाणां सिद्धि भवति ।

प्रथम तावत् करन्यासः (हस्तन्यासः)

ॐ ठः ठः कराभ्यां शोधनीयं, तर्जनांगुलिना, प्रत्येकं संशोधनं कार्यं । तदंनतरं । क्षंपादाभ्यां स्वाहा । क्षं हृदये स्वाहा । क्षीं शिरसि स्वाहा । क्षूं ज्वलित शिखाग्रे वौषट् । क्षों कवचाय वषट् । हुं क्षं बाहुभ्यां स्वाहा । क्षैं स्कंधाभ्यां स्वाहा । क्षे नेत्राय वषट् । क्षौं कर्णाय वषट् । क्षं नेत्राय स्वाहा । क्षः अन्त्राय स्वाहा । दश दिशानां रक्षा करोति ।

ॐ बाहुबलि लम्ब बाहु क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षे क्षयुद्धं पुजं कुरु २ शुभाशुभं कथय २ स्वाहा ॥ १ ॥

एतन्मंत्रेण कार जापेन दश सहस्त्राणि (१००००) सिद्धि भंवति ।।

ॐ कट विकट कटे कटि धारिणी ठः ठः परि स्फुट वादिनी भंज २ मोहय २ स्तंभय २ वादी मुखं प्रति शल्य मुख कीलय २ पूरय २ भवेत् + + + अमुकस्य जयम् ।।२।। एप विद्या व्यवहार काले स्मर्यमाणा वादि मुखं स्तंभयति, विजयं प्रयच्छति ।।२।। अवश्य प्लवा सदा कंट कारी वृक्षाणां अष्ट सहस्त्रं (८०००) जपेतत: सिद्धो भवति । कंटकारि महा विद्या ।

अधुना नामादिना मूर्ति मध्ये षट्सु दिक्षु क्रौं विदिक्षु च क्लीं बहिर्बहि पुटं कोष्ठेऽष्टौ जंभे—मोहे समालिख्येत् । मोह विशत दष्टाग्रां ब्रह्माकार मास्थितः । ॐ ब्लें धी त्रै वषट् फट् बाह्ये क्षिति मंडलं अष्टर्वालांछणं च चंड कोणेषु लकार मालिख्य, फलके भूर्य पत्रे वा लिखित्वा कुं कुमादिभिपूंजयेत् । य सदा यंत्रं तस्य अवश्यं जगत सर्वं वश्यं भवति ।।३।।

।।ॐ ह्रीं क्लीं जंभे मोहे + + + अमुकं वश्यं कुरु २ ते से षवट्वश्यं यन्त्रम् ।। ॐ रम्ल्व्यूं र र व र स हा हां ॐ क्रौं क्षीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं पद्ममालिनी । ज्वल् २ हन २ दह २ पच २ इदं २ भूर्यं नि—र्दय २ धूम २ धूम्रांधकारिणी । ज्वलनशिखे हुं फट् २ यः त्रि मात्रां हुताशनि हिना ज्वाला मालिनो आज्ञा पयति ।। स्वाहा ।। मंत्रेण वेष्टयेत् ग्रोटयत् इदं पिंड ललाटे व्याधि दग्निवर्णं सिखांगे भूतं, ज्वरं — ग्रह दोष शाकिनी प्रभृत नाशयति ।।४।।

ॐ नमो भगवते एषु पतये नमो नमोऽधिपतये नमो रुद्राय ध्वंस २ खड्गरावण चलं २ विहरनृपे २ स्फोटय २ स्मशानभस्मनाचिता शरीर घंटा कपाल माला धरा यथा व्याघ्र भ्रम परिधानाय शशांकित शेखराय कृष्ण सर्प यज्ञोपवितायं चल २ चलाचल २ अनिवृत्तिक पिपीलिनी हन २ भूत प्रेत त्रासय २ ह्रीं मण्डलं मध्ये कंट २ बत्सं कुशेममानमत्र प्रवेशय आवह प्रचंडधारासि देव रुद्रो आपेक्षय महारुद्रो आज्ञापयति ठ अ स्वाहा ।। भूत मन्त्र ।। ४ ।।

।। ० ।।

श्लोक नं. ४ के यंत्र मंत्र

(१) देवदत्त लिखकर, प्रथम अष्ट दल का कमल बनावे, उन दलों में क्रमश- ह्म्ल्व्यूं म्म्ल्व्यूं, म्म्ल्व्यूं, र्म्ल्व्यूं, घ्म्ल्व्यूं, झ्म्ल्व्यूं, स्म्ल्व्यूं, रम्ल्व्यूं, ये पिंडाक्षर लिखे, ऊपर अष्ट दल का कमल बनावे, उन दलों में क्रमशः ॐ भृगी नमः, ॐ कोली नमः, ॐ करालीं नमः, ॐ चंडी नमः, ॐ जंभायै नमः, ॐ चामुंडायै नमः, ॐ अजितायै नमः, ॐ मोहायै नमः । फिर ह्रीं कार के तीन घेरे से यन्त्र को वेष्टित करे ।

ऊपर से पृथवी मण्डल में, क्षी कार वज्रांकित बनावे। ये हुआ यन्त्र का स्वरूप। यन्त्र नं० १।

यन्त्र नं० १
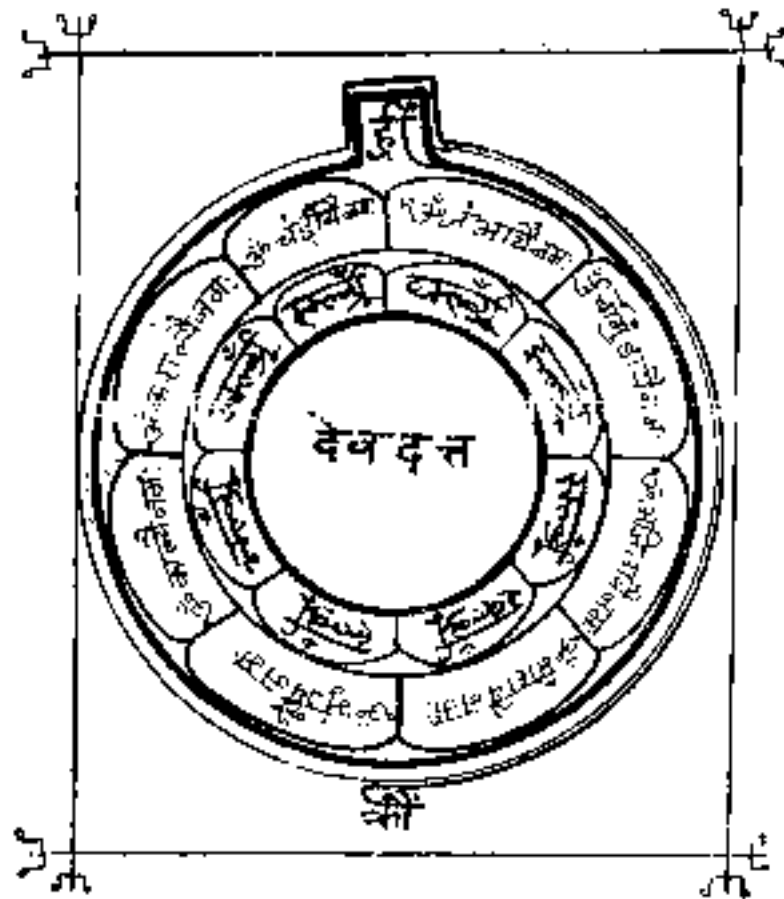
विधि :—इस यन्त्र को केशर, गोरोचन, कर्पूरादि सुगन्धित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिखे, फिर उस यन्त्र को कन्या कत्रित सूत्र से वेष्टित करके हाथ में धारण करने से, सर्व भय की रक्षा होती है। अथवा इस यन्त्र को श्री खंड कर्पूरादिक से लिख कर, सफेद फूलों से १०८ बार यन्त्र की पूजा, नित्य छह महीने तक करे, तो लक्ष्मी सौभाग्य की प्राप्ति, और सर्व कार्य की सिद्धि होती है।

माला मन्त्र

इस माला मन्त्र को पठित सिद्ध मन्त्र कहते हैं। इस मन्त्र को सिद्ध नहीं करना पड़ता है। नित्य ही पढ़ने मात्र से सिद्ध हो जाता है। नित्य ही पाठ मात्र करने से भूत ग्रह ब्रह्म राक्षस वेताल प्रभृति-शाकिनी ज्वर रोग चोरारि मारि का निग्रह होता है। व्याल, सर्प, वृश्चिक, मूषक, लूत, पातक आदि शिरोरोग का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ भृंगी रेटी किरेटी जंभय २ क्ली स्वां श्रीं वां भ्रों ह्रीं २ प्रां २ श्रीं २ ह्रां २ पद्मावती धरणेन्द्र प्रासादयति स्वाहा।

ॐ चंडाली अमुकस्य रूधिर पिवर २ सु हृदये भित्वा हिलि २ चंडालिनी मातंगिनी स्वाहा।

ॐ नमो भगवती काली महाकाली रूद्र काली नमोस्तुते हन २ दह २ छिंद २ छेदय २ भिद २ त्रिशूलेन हः २ स्वाहा।

विधि :—इन तीनों ही मन्त्रों को सात बार पढ़ कर पानी पिलावे तो शूल का नाश होता है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती कराली महाकराली, ॐ महा मोह संमोहनीय महा विद्ये जंभय २ स्तंभय २ मोहय २ मुच्चय २ क्लेदय २ आकर्षय २ पातय २ कुनरे संमोहिनी ऐं द्रीं त्रीं द्रौं आगच्छ कराली स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का बारह हजार जप करने से ये मन्त्र सिद्ध होता है ये मोहनी विद्या है।

मन्त्र :—ॐ क्रों ह्रीं अजिताए आगच्छ ह्रीं स्वाहा। ॐ नमो जृंभे, मोहे, स्तंभे स्तंभिनी स्वाहा। ॐ नमो गंगादेवी कालिका देवी आह्वाननः। ॐ महा मोहे स्वाहा। ॐ नमो चंडिकाये योग वाहि प्रवर्तय महा मोहय योग मुखी योगेश्वरी महा माये रूपिणी महा हरी हर भूति प्रिये स्वः स्वार्थं नृणातिशय जिह्वाग्ने सर्व लोकानां एष्य पुसरू २ दर्शय साधय स्वाहा। हस्ताकर्षणी नदी द्रह तडागे वा आकाशे चंद्र मंडलेवा [illegible]

[illegible]

विधि :—इस मन्त्र को [illegible] जाप कर, फिर [illegible] पुष्पों से जप कर फल अथवा पुष्प को मन्त्रित करे। फिर जिसको दिया जाय वह शीघ्र ही वश होता है।

[illegible]

शिखायै वौषट्। [illegible] कवचाय वषट्। [illegible] बाहुभ्यां स्वाहा। [illegible] स्कंधाभ्यां

स्वाहा। क्षें नेत्राय व षट् क्षौ कर्णाय वषट् क्षं नेत्राय स्वाहा। क्षः अस्त्राय स्वाहा।
दशो दिशाओं से रक्षा करता है।

मन्त्र :— ॐ ह्रीं बाहुबली लम्ब बाहु क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षश्चूर्द्धं पुजां कुरु २ शुभा शुभं कथय स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जाप करने से सिद्ध होता है।

मन्त्र :—ॐ कट विकट कटे कटिधारिणी ठः ठः परि स्फुट वादिनी भंज २ मोहय २ स्तंभय २ वादी मुखं प्रति शल्य मुखः कीलय २ पूरय २ भवेत् + + + अमुकस्य जय।

विधि :— इस विद्या को कार्य पर जप करने से वादि का मुख स्तंभित होता है। और विजय प्राप्त होती है।

काँटे वाले वृक्ष के नीचे इस मन्त्र को ८००० जपने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। इसको कंटकारि महा विद्या कहते हैं।

(२) देवदत्त की, मूर्ति का आकार बनावे, फिर छह दिशाओं में श्रीं लिखे, विदिशाओं में क्लीं लिखे, फिर ऊपर आठ कोठों में क्रमशः जृंभे, मोहे, आदि लिखे, मोह त्रिशत दष्टाग्रं ब्रह्मा कार मास्थितः। ॐ क्लें धी लं वषट् फट् बाह्ये क्षिति मंडलं अष्टवज्र लांछणं च चंड कोणेषु लकारं मालिख्य) इन पंक्तियों का अर्थ समझ में नहीं आया है, इसलिये यन्त्र रचना नहीं किया है।

विधि :—पाटे पर अथवा भोज पत्र पर यन्त्र लिखकर केशर पुष्पादि से पुजा करे, जो सदा इस यन्त्र की आराधना करता है, उसको तीनों लोक अवश्य ही वश में रहते हैं।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं क्लीं जंभे, मोहे + + + अमुकं वश्यं कुरु २ ते सेत्र वहश्यं यन्त्रम। ॐ र्म्ल्व्र्यूं र र व र स हा हां ॐ क्रों क्षीं क्लीं ब्लूं दां द्रीं पद्म मालिनी ज्वल २ हन २ दह २ पच २ इदं भूयं निर्दय धूम धूम्रांध कारिणी ज्वलन शिखे हुं फट् २ यः त्रिमात्रा हुतार्थान ह्निा ज्वाला मालिनी आज्ञा पयति स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर पास में रखने से, सिर दर्द मिटता है, भूत ज्वर, ग्रह दोष, शाकिनी, प्रभृति आदि नाश होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते पशुपतये नमो २ ऽधिपतये नमो रुद्राय ध्वंस २ खड्ग रावण चल २ विहर नृपे २ स्फोट्य २ श्मसान भस्मना चिता, शरीर घंटा कपाल मालाधर व्याघ्र भ्रम परिधानाय शशांकित शेखराय कृष्ण सर्प यज्ञोपवितोय चल २ चलाचल

२ अग्नि वृश्चिक पिपीलिनी हन २ भूत प्रेत नाशय २ ह्रीं मंडलं मध्ये कंट २ वस्सं कुशेममानमत्र प्रवेशय आवह प्रचंड धारासि देव रुद्रो—आपेक्षय महा रुद्रो आज्ञापयति ठ ठ स्वाहा ।

विधि :- इस मन्त्र से ताडन करने से भूतादिक दोष शान्त होते हैं।

इदानीं योगिनी चक्राणांतरं "कंदर्णत्रकं" सप्रपंचमाह ॥

चंचत्कांची कलापे, स्तनतन विलुठत्तार हारावलीके ।
प्रोत्फुल्ल पारिजात, द्रुमकुसुममहा, मंजरी पूज्यपादे ॥
ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं समेते, भुवन वशकरी, क्षोभिणी द्राविणी त्वं ॥
आं ईं ऊं पद्महस्ते, कुरु कुरु घटने, रक्ष मां देवि पद्मे ॥ ५ ॥

व्याख्या : रक्ष पालय कं मां स्तुतिकर्त्तारं, कीदृशे । चंचत्कांचीकलापे चंचत् देदीप्यमानः कांच्या कलापः कांचीकलापो मेखला यस्या सा तस्याः संबोधनं । चंचत्कांची-कलापे । पुनरपि कीदृशे स्तनतनविलुठत्तार हारावलीके, स्तनतने विलुठंति तारा समुज्जवला हारावली, मुक्तावली, पंक्तिर्यस्या सा तस्याः संबोधनं, स्तनतन० हारावली के । पुनरपि कीदृशे । प्रोत्फुल्ल पारिजातः द्रुमकुसुम—महामंजरी पूज्यपादे । प्रोत्फुल्लद्भिः विकसद्भिः पारिजात द्रुमाणां देवतरूणां व पारिजात नाम धेय कल्पवृक्षाणी कुसुमैः पुष्पै रूप लक्षिताभिः महामंजरीभिः पूज्यौपादौ चरणौं यस्या सा तस्याः संबोधनं प्रोत्फुल्ल पारि० पूज्यपादे । पुनरपि कीदृशे ?। भुवनवशकरी क्षोभिणी द्राविणी त्वं । त्रैलोक्यवश्यता धारिनी चालयंती अगं मोहयंती द्रावयंती तपयंती । पुनरपि कीदृशे । ह्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं समेते—ह्रां च ह्रीं च क्लीं च ब्लूं च यस्ते तानि तैः ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं समेतैः । एतावंत्येतानि बीजा-क्षराणि भावना क्लां क्लीं नाग गर्भितस्य लक्षकोणेषु रेफस्वस्तिका ज्वाला ज्ञातव्या-बहिः षोडश स्वरैः वेस्टनीय बहिरष्ट दलेषु कामिनी रंजिनी स्वाहा । ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं..........देवदत्ताभगं द्रावय २ मम वश्यमानय २ पद्मावति आज्ञापयति स्वाहा । अस्य वाम पाद पांशुः गृहीत्वा पुष्पं वाम करे मासेन दक्षिणे निजकरे लिखेत् । तस्य बामकरं पीडयेत् करंनिभवतीः । अद्युना—

ॐ चले चलचित्ते चपले मातंगी रेतं मुंच मुंच स्वाहा ॥

ॐ नमो कामदेवाय महानुभावाय कामसिरि असुरि स्वाहा ॥

अनेन मंत्रेणाभिमंत्र्य तांबूलं दन्तकाष्ठं पुष्पं फलं वार २१ परिजाप्य यस्य दीयते स वश्यो भवति। अनेन मंत्रेण रक्त कणवीर अस्टोत्तरशतं अभिमंत्र्य स्त्रिग्रायतोक्षेमयेत् सा क्षरति।

ॐ नमो भगमाल्लिनी भगावहे चल २ सर २ ।। अनेन मंत्रेण ७ वारानभिमंत्र्यं हस्तं स्त्रिया भगस्योपरि दद्यात् सा क्षरति प्रवासे। अष्टसहस्राणि जपेत् यः तद्दशांशे– नाशोककुसुमैः होमः। पुन की दृशे। आं इं उं पद्म हस्ते अं चं इं च उं च ते तथोक्ता मिति बीजाक्षराणि। भावनाहं हुंकारं नाम गर्भितस्य बाह्ये ककारं ते दातव्यं। बाह्ये षोडश स्वराणि वेष्टय, बाह्ये षोडश दलेषु ॐ क्षां गैं इं वां रें आं ग्लां लां वां उं छों मां जीं सीं मां-- संलिख्यदलाग्रे उं रां पुरयेत।

माया बीजं त्रिगुणी वेष्ट्य बहि भुंजंगद्वयमस्तके ग्रन्थः हृदये '' इं 'वां' संलिख्य एतद्यंत्रं कुंकुमादिसुगन्धद्रव्यैर्भूर्ये संलिख्य बाहौ धारणीयं सर्वभय रक्षा भवति। पद्मसदृशौ हस्तौ यस्या सा नमया [illegible]

[illegible]

मन्त्रः— ॐ ह्रीं [illegible]

और दक्षिण में

जिसका काम ... की मूर्ति को ग्रहण करके पुरुष के वाम हाथ में [illegible] (निज करे लिखेत) उसके वाम हाथ को दबावे तो (करोति भवति:)।

और भी

ॐ चले चलचित्ते चपले मातंगी रेत्त मुंच मुंच स्वाहा।

ॐ नमो कामदेवाय महानुभावाय कामसिरि असुरि स्वाहा।

मन्त्रीत करके

र को १०८

विधि :- इस मन्त्र से तांबुल अथवा दांतुन अथवा पुष्प अथवा फल को २१ बार जिसको दिया जाय तो वह वश्य हो जाता है। इस मन्त्र से लाल कने

बार मन्त्रात करके स्त्रियों के आगे (आमयेत) वह शरण को प्राप्त होती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगमालिनी भगावहे चल २ सर २।

विधि :—इस मन्त्र से हाथ को ७ बार मन्त्रीत करके स्त्री के भग पर रखे तों वह शरण को प्राप्त होती है। प्रवास में ८००० हजार जप करे। अशोक के फूलों से दशांस होम करे।

फिर कैसा है—

आं ई उं पद्महस्ते अं च इं च उं च वे बीजाक्षर हैं।

(१) भावना हं हुंकार में देवदत्त नाम गर्भित करके, बाहर में क, कार लिखे। ऊपर सोलह दल बनावे, उन सोलह दलों में सोलह स्वर लिखे, फिर सोलह दल बनावे, उन दलों में क्रमशः—ॐ क्षां गें इं वां रें ओं स्वां लां वां उं छ्रों मां जीं सीं मां लिख कर दल के अग्र भाग में उं रां, लिखे। ये यन्त्र स्वरूप बना। लेकिन हमको कुछ समझ में नहीं आया है, विशेषज्ञ समझें। इसलिए हमने यन्त्र छोड़ दिया हैं।

(२) माया बीज ह्रीं कार को त्रिगुणा वेष्टित करके, बाहर भुजंग, दो के मस्तक पर अन्थः हृदय पर 'इ' वां' लिखे।

विधि :—इस यन्त्र को केशरादि सुगन्धित द्रव्यों से भोजपत्र पर लिखकर हाथ मे धारण करने से सर्व भय रक्षा होती है।

> लीला व्यालोलं नीलोत्पलदल नयने, प्रज्वलद्वाडवाग्नि—
> त्रुट्यज्ज्वाला स्फुलिंगस्फुरदरूण करोदग्र वज्राग्रहस्ते ॥
> ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं हरंती हर हर ह ह ॐ कारगी मैक घोरे
> पद्मे, पद्मासनस्थे व्यपनये दुरितं देवि । देवेन्द्रवंधे ॥ ६ ॥

व्याख्या :—व्यपनय—स्फोटय। किं ? तत् दुरितं विघ्नं कीदृशे—लीला व्यालोलनीलोत्पल—दलनयने। लीलया व्यालोलं नीलोत्पलस्य दलं लीलाव्यालोलं चतत् नीलो-त्पलदलं च लीलाव्यालोल०—तत्सदृशे नेत्रे यस्या सा तत्संबोधनं—लीला० नीलोत्पलदल नयने। क्रीडाशोभमानेन्दीवर नयने। पुनः कीदृशे प्रज्वलद्वाडवाग्नि त्रुटयज्ज्वाला स्फुलिंगस्फुरदरूण करोदग्रवज्राग्रहस्ते। वाडवस्य अग्निः वाडवाग्निः प्रज्वलच्चासौ वाडवाग्निश्च प्रज्वलद्वाडवाग्निः त्रुट्यंती चासौ ज्वाला च त्रुट्यज्वालाः प्रज्वलद्वाडवाग्ने। प्रज्वलद्वाडवाग्निः त्रुट्यज्ज्वालाः तस्याः स्फुलिंगाः। तेषां

स्फुरंतश्च ते अरुणकराश्च तैरूदग्रं प्रचंडं यद्वज्रं तदग्रं हस्ते यस्या सा प्रज्वलद्वा-डवाग्निः । त्रुटयज्ज्वाला स्फुलिंगस्फुरदरूणकरोदग्र—वज्राग्रहस्ता, तस्याः संबोधनं—प्रज्वल० वज्राग्रहस्ते । जाज्वल्य मानवाडवज्वलत् ज्याला—कलाप-समानशतकोटिविभूषित हस्ताग्रे । पुनरपि कीदृशे --"ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं हरंती हर हर हह ॐ कार भीमैकनादे । ह्रौं चं ह्रीं च ह्रूं च ह्रां च हरंती हर हर हह ॐ कारास्तैर्भीमो भीषणम् । एकोऽद्वितीयो नादो यस्याः सा तस्याः संबोधनं--ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं भीमैकनादे ॥ सर्वाणि एतान्यक्षराणि माला मंत्र-यन्त्राणि सूचयति । लीला० ज्याला० वाडवाग्निः । त्रुटयज्ज्वाला वज्राग्रहस्ते ह्रां ह्रीं० भीमैकनादे यद्यथा—

(१) ॐ नमो भगवती, अवलोकित पद्मिनी, ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः वरांगिनी चिंतित पदार्थ साधनी दक्ष लोकोन्मादिनी, सर्वभूतवश्यंकरी, ॐ क्रौं ह्रीं पद्मावती स्वाहा ।

(२) ॐ नमो भगवती पद्मावती सप्त—स्फुट विभूषिता, चतुर्दशदंष्ट्राकराला वः नर २ रम २ फुर २ एकाह्निकं, द्वयह्निकं, त्र्यह्निकं, चतुर्थाह्निक ज्वरं चातु-र्मासिकं ज्वरं, अर्द्धमासिकं ज्वरं, संवत्सरं ज्वरं पिशाच ज्वरं भूतं ज्वरं, सर्वज्वरं, विषमज्वरं, प्रेतज्वरं, भूतज्वरं, ग्रहज्वरं, राक्षस ग्रहज्वरं, महाज्वरं, रेवती-ग्रहज्वरं, दुर्गाग्रहज्वरं, किंकिणीग्रह ज्वरं, त्रासय २ नाशय २ छेदय २ भेदय २ हन २ दह २ पच २ क्षोभय २ पार्श्वचन्द्राय ज्ञापयति, सर्वभयरक्षिणी २ ।

विद्या :—मन्त्र द्वयं एतदभ्यस्यते, ज्वरनाशो भवति । हरंति, नाशयंति, अस्य भावना । ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं आं क्रौं श्रीं प्लीं म्लें ग्लें सर्वांग सुन्दरी क्षोभि २ क्षोभय २ सर्वांग नाशय हूं फट् स्वाहा ।

एषा विद्या निरंतरं ध्यायमाना दुष्ट रोगं नाशयति । हर हर इति साधना । माया बीजं नामगर्भितस्य बहिश्चतुर्दलेषु पार्श्वनाथं संलिख्य बाह्ये हर हर वेष्टयं बहिः ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः बहिः ककारादि क्षकार पर्यंता मातृका संलिख्यते । बहिः भुजगपदा दातव्या एतद्यंत्रं कुंकुमगोरोचनया भूर्ये संलिख्यं—कुमारी सूत्रेण वेष्टयं निजभुजे धारयेत् । यः पुरुषः सः स्वजनवल्भो भवति । श्रीमान् –

अपुत्रो लभते पुत्रं निदवो जीवित प्रजाः ।
यन्त्र धारण मात्रेण दुर्भगा सुभगा भवेत् ॥ १ ॥

प्रभवंति विषं न भूतं सनिहांती पिटक भूताश्च ।
संस्मरणादस्य स्तुत्यां पापमार्यं विनाश मुपयांति ॥ २ ॥

द्वितीय :—हुकारं नाममभिंनस्य बहि क्षकारं वेष्टयं । बहि: षोडशदलेषु स्वरा: दातव्या: । बाह्य षोडशदलेषु—"ऐं ह्रां ह्रीं द्रां द्रीं क्लीं क्षः ब्लुं ब्लीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः ।"—आलिख्य बाह्यदलाग्रे ॐ कारं ह्रीं कार दातव्यं ।

एतद्यंत्रं कुंकुमगोरोचनया भूर्यपत्रे संलिख्य कुमारीकर्ततितसूत्रेण वेष्टय् मुच्यते । भीमैक घोरे प्रतीतनादप्रह्लादे । कीदृशे—पद्मे, पद्मावति देविइति संबंधः । पुनरपि कीदृशे । देवेन्द्रवद्यें । देवतानां इन्द्रा: देवेन्द्रास्तैर्वंद्या वंदनीया देवेन्द्रवंद्यास्तस्या संबोधनं देवेन्द्रवंद्ये ।

श्लोक न. ६ के यन्त्र मन्त्र

मन्त्र : ॐ नमो भगवती, अवलोकित पद्मिनी ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः वरांगिनी चिंतित पदार्थ साधनी दुष्ट लोकोच्चाटनी सर्व भूत वश्यं करी, ॐ क्रौं ह्रीं पद्मावती स्वाहा ।

ॐ नमो भगवती पद्मावती ... [illegible]

... ज्वर ... ज्वर ... ज्वर
ज्वर रेवती ग्रह ज्वरं दुर्गा ग्रह ज्वर
... २ हन २ दह २ पच २ क्षोभय २

...श होता है । हरण होता है । दोनों

...न्दरि क्षोभी २ क्षोभय २ सर्वांग

...ों का नाश होता है ।

...का कमल बनावे उन चारों दलों में
...र लिखे, फिर ऊपर में एक वलय
...ह्रों ह्रौं ह्र ह्रः लिखे, ऊपर एक वलय

... ज्वर ... ज्वर ... ज्वर ...
ज्वरं भूत ज्वरं ग्रह ज्वरं राक्षस ग्रह ज्वरं महा ...
किंकिणी ग्रह ज्वरं त्रासय २ नाशय २ छेदय २ भेद...
रायत्रैचंद्रायजापयति सर्व भय रक्षिणी ॥२॥

विधि :—इस मंत्रों को पढने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश ... मन्त्रों को पढना चाहिये ।

मन्त्र :—ऐं ह्रीं क्लीं ब्लूं श्रां क्रौं श्रीं प्लीं म्लें ग्लें सर्वांग ... भासय २ हूं फट् स्वाहा ।

इस विद्या का नित्य ही स्मरण करने से दुष्ट रोगों ...

(१) ह्रींकार में देवदत्त गर्भित करके, ऊपर चार दलों ... क्रमश: पार्श्वनाथं, लिखे ऊपर एक वलय में हुर ... और बनावे उस वलय में ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ...

और बनावें, उस वलय में क ख ग घ ङ इत्यादि क्ष कार प्रयंत लिखे, ऊपर भुजग पद लिखना। देखे यंत्र नं० १

यन्त्र नं० १

विधि :- इस यंत्र को केशर गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर, कन्या के हाथ से कता हुवा सूत्र से वेष्टित करके, अपने हाथ में धारण करे तो वह पुरुष स्वजन वल्लभ होता है। जिसको पुत्र नहीं है वह पुत्र प्राप्त करता है। निर्धनों को धन प्राप्त होता है।

यन्त्र के धारण मात्र से ही दुर्भगा सुभगा होता है।

विष का असर नही होता है। भूत प्रेत, पिटक, आदि कभी भी असर नहीं करता है। स्मरण मात्र से नाना प्रकार के पाप नष्ट होते है।

(२) हु कार में देवदत्त गर्भित करके बाहर क्ष कार वेष्टित करे, ऊपर सोलह दलों वाला कमल बनावें, उन सोलह दलों में सोलह स्वर लिखे, ऊपर सोलह दलों का एक और कमल बनावे, उनमें क्रमशः ऐं ह्रां ह्रीं द्रां द्रीं क्लीं क्षः ब्लूं ब्लीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः लिखकर बाहर ॐ कार और ह्रीं कार लिखना चाहिये।

विधि :- इस यन्त्र को केशर, गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर कन्या के हाथ से कता हुवा सूत्र से वेष्टित करके धारण करे।

इदानीं शांतिकं पौष्टिकं तुष्टिकं यन्त्रं विषहरयन्त्रं मन्त्रं सप्रपंच माह—

यन्त्र नं० २

कोपं वंझं सहंसः कुवलयकलितोद्दामलीला प्रबंधे ।
ज्वां ज्वीं ज्वः पक्षिबीजैः शशिकरधवले प्रक्षरत्क्षीरगौरे।।
व्यालव्याबद्धजूटे, प्रबलबलमहा, कालकूटं हरंती ।
हा हा हुं कारनादे कृतकर मुकुलं रक्षा मां देवि पद्मे ।।७।।

व्याख्या —रक्ष । पालय । कं मां कासौ कर्त्री पद्मावती देवी कीदृशां कृत–करं मुकुलं–विहितपाणि कमलमीलनं विहितकरकुड्मलं कीदृशं कोपं वंझं सहंसः । कोपं च, वंझं च, कोपंवंझं । सह हंसेन वर्तते यः–सहंसः । तत्रावजपदस्य भावना । ॐ कोपं वंझं हंसः वसह् मन्त्रः ॐ क्षां सां हूं ज्वीं स्वीं हं स चक्रमुद्रया प्र पुंजात । पु : कथं भूते कुवलयकलितोद्दामलीलाप्रबंधे । कुवलयं अथवा कुवलयै न लोत्पलैः कलितः स्वीकृतः उद्दामः स्फारो लीला प्रबन्धः क्रीडा समहो यस्याः सा तस्याः सम्बोधनम् कुवलय लीला प्रबन्धे । तस्य मन्त्रः - ॐ कुवलय हंसः कुसुममन्त्रः पुनरपि कथं भूते । शशिकर धवले । शशिनः कराः शशिकरा तद्वतधवलाः तस्याः संबोधनम्–शशिकर धवले । कैः कृत्वा ज्वां ज्वीं ज्वः पक्षि बीजैः कृत्वा ज्वां च ज्वीं ज्वः पक्षि बीजैः । अस्य पदस्य उपलक्षणत्वात चक्रं सूचयति तद्यथा–लं वं हुः पक्षिनां नामगर्भितस्य वेष्टय बहिः षोडश दल पमध्येअकार पर्यंतानि संलिख्य बहिः पकारं वेष्टय बहिः द्वादशदलेषु–ह् हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः बहिः ह कारद्वयसंपुटस्थं बहि क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः वेष्टयेत् । पुनः तद्वाह्ये एकारद्वय संपुटस्थम पुनर्मायबीजं त्रिगुणं वेष्टय मन्त्रमिदं एतद्वक्ष्यमाण यन्त्र द्वयं पूर्वोक्तं स्यात्

चैव यन्त्रस्य—

तद्यथा—क्रां खां गां घां चां छां ज्वीं ज्वीं नमः। गरुड़ध्वजो नाम मन्त्रः।

कर जाप सहस्त्रेण सिद्धि र्भवति। क्षि प ॐ स्वाहा। जी एकं अभिमन्त्रयेत् वारि पश्चात्, पातव्यं, अजीर्णं विषं नाशयति। ह्र ह्रा ह्रि ह्री ह्रु ह्रू ह्रे ह्रै ह्रो ह्रौ ह्रं ह्रः अनेन मन्त्रेणोदकं अभिमन्त्र्य श्रोत्राणि ताड़येत् अभिषिचयेत—निर्विषो भवति। जं च ज्वः पक्षि वां स्वीं हंस मन्त्र माराधयेत्। श्वेताक्षतैः श्वेत पुष्पैर्वा श्रीखंडादिभिः सुगंध द्रव्यै शराव संपुटे लिख्य, शांतिः पुष्टिः तुष्टिर्भवति। एतज्जल पूर्ण घटे प्रक्षिपेत्। शीत ज्वर वात ज्वरं नाशयति, ग्रह पीड़ा निवारयति। सर्व रोगा न प्रभवति। दृष्ट प्रत्यय मिदम्। पुनरपि कीदृशे।— प्रक्षरत् क्षीर गौरे, प्रक्षरत् च तद् क्षीरं च प्रक्षारत्क्षीरं तद्वद् गौरा, प्र क्षरत्क्षीर गौरा, तस्याः संबोधन प्रक्षरत्क्षीर गौरे प्रक्षरतदुग्ध पांडुरे।

ॐ कारे विकारै स र हं स अमृत हं स ॐ कोपं वं भं हं स ठः ठः ठः स्वाहा। सर्व विषत्यजन मन्त्रः—पुनरपि कीदृशे—व्यालव्याबद्ध जूटे। दंद शूक—बद्ध जोडके। "ॐ कुरु २ कुल्लेण उपरि मेरु बलि बिंदु—बिंदु पड मन्त्रु, गरुडा हि व हा हंस यक्ष मन्त्र। कोपं वं भं हं सः ॐ स्वाहा।" हा हंसः वृक्ष मन्त्रः। तथा किं कुर्वती। हरंती। कं—प्रबलबल

वेष्टय, दिशि विदिशि वज्राष्ट भिन्नं वज्रेण, ॐ कारं मध्ये सकारं सर्वत्र वज्रेषु द्रष्टव्यं ।

एतद्यंत्रं शुभैर्द्रव्यैः कांस पात्रे दर्भाग्रेण यंत्रमालिखेत् । यथाश्वेत पुष्पै रष्टोत्तरं शतं प्रमाण जापः क्रियतेऽनेन पर विद्या मन्त्र, यन्त्र रक्षा छेदनं करोति अधुना पूर्वोक्तं कांसपात्रे सुगंध द्रव्यैः ॐ कार नाम गर्भितस्य तस्य बाह्ये षोडश स्वरा वेष्टि तस्य बाह्ये ॐ कारं वेष्टयं बहिः ॐ कलि कुंडाय स्वाहा - लिखेत् तस्यैव यंत्रस्य श्वेत पुष्पै रष्टोत्तर सहस्त्र प्रमाणे रक्षतैर्बलिः धूप दीप प्रभृतिभिः गृहीतस्य पूर्वोक्तं कांस पात्र पानीयेन प्रक्षालयेत् । तत् पानीयं च भूतादि गृहीत रोगा क्रांतं चुलुकत्रिकं पायेत् । सर्व ग्रहरोग निर्मुक्तो भवति ।

श्लोक नं. ७ के यन्त्र मन्त्र

(१) लं वं हः पक्षिनां में देवदत्त गर्भित करके वेष्टित करे, फिर सोलह दलों वाला कमल बनावे, उन दलों में क्रमशः अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ ए ऐ ओ औ अं अः लिखकर बाहर वं कार से वेष्टित करे, फिर बारह दल का कमल बनावे । उन दलों में क्रमशः ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः बाहर लिखे । क्ष कार दोनों संपुट करे, बाहर क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः वेष्टित करे । फिर बाहर ए कार द्वय संपुटस्थ करके माया बीज को तीन गुणा वेष्टित करे । इस मन्त्र को कहा गया जो यन्त्र पूर्वोक्त है । उसी प्रकार क्रां खां गां घां चां छां ज्वीं ज्वीं नमः ।

इस मन्त्र को गरुड़ ध्वज मन्त्र कहते हैं । एक हजार जप से मन्त्र सिद्ध होता है ।

मन्त्र :—क्षिप ॐ स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र को पढ़कर पानी मन्त्रीत करके पिलाने से अजीर्ण विष नाश होता है ।

मन्त्र :—ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः ।

विधि :—इस मन्त्र से पानी मन्त्रीत करके उस पानी से कान को ताड़न करे, तो मनुष्य निर्विष होता है ।

मन्त्र : जंच ज्वः पक्षि वां स्वीं हं स । इस मन्त्र की आराधना करे ।

श्वेत अक्षत श्वेत पुष्प से श्री खंडादि सुगन्धित द्रव्यों से, सराव संपुट में लिखे तो शांतिः पुष्टिः तुष्टि होती है ।

इसको जल से भरे हुये घड़े में डालने से, शीत ज्वर, वात ज्वर, का नाश होता है ।

यन्त्र नं० १

ग्रह पीड़ा को निवारण करता है। सर्व रोग नहीं होता है। अनुभूत है।

मन्त्र :—ॐ कारं विक्र कारं स र हं सः अमृत हं स ॐ कोपं वं भं हं स ठः ठः ठः स्वाहा।
इससे सर्व प्रकार के विष नाश होते हैं।

(२) ङं कार में देवदत्त गर्भित करके तं कार वेष्टित करे, फिर बाहर एक वलय बनावे, उस वलय में सोलह स्वर लिखे, फिर बारह दल के कमल में क्रमशः ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः लिखे, बाहर ह कार संपुट देवे। उसके बाहर वलयाकार मध्ये वं भं हं सः लिखे, व कार द्वय संपुट करे।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवती पद्मावती स्वाहा। पक्षो हं सः विषं हरय २ प्लावय २ विषं हर २ स्वाहा।

विधि :—इस मन्त्र का निरंतर कान में जप करने से विष का नाश होता है।

यन्त्र :—ह कार में देवदत्त गर्भित करके बाहर हं सः वार तीन वेष्टित करे, हा मस्तक, हा अष्टांग न्यासः। तथा बाहर हंस हंस व र तीन लिखकर, स्वकीय मंडल में स्थापना करे।

मन्त्र :—ॐ क्षीं सां ह्लं ्ज्वीं क्षीं ह्लौं हं सः। ये विष हरण मन्त्र है।

(३) ॐ कार में देवदत्त गर्भित करके ॐ कार से संपुट करे। अष्ट वज्रांकित करके ॐ कार लिखे। वज्र पर्यंत ल कार को सब में लिखे।

और भी ॐ कार में देवदत्त गर्भित करके, उसके बाहर ॐ कार द्वय संपुट, उसके बाहर में स्वरों को लिखे, दिशा विदिशाओं में वज्राष्टिभिन वज्र के द्वारा, ॐ कार में सर्वत्र स कार वज्र ही दिखना चाहिए।

विधि :—इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से कंस पात्र में दर्भाग्र से लिखे। श्वेत पुष्पों से अष्टोत्तर-शत १०८ बार जप करने से, पर विद्या मन्त्र यन्त्र से रक्षा होती है और उनका छेदन करता है।

(४) ॐ कार में देवदत्त गर्भित करे, फिर उसके बाहर सोलह स्वर लिखे, उसके बाहर ॐ कार को वेष्टित करे, फिर बाहर ॐ कलि कुंडाय स्वाहा। लिखे।

विधि :—इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से कांसे के पात्र में लिखकर श्वेत पुष्पों से १००८ बार जपे, श्वेत पुष्प अक्षत (बलि) नैवेद्य धूप दीप प्रभृतिक से यन्त्र की पूजा करे। फिर उस यन्त्र को पानी से धोकर, उस पानी को भूतादिक से गृहीत रोगाक्रांत व्यक्ति को तीन अंजुली प्रमाण पिलावे। सर्व ग्रह रोग से निर्मुक्त होता है।

इदानीं पर विद्याछेदानंतरं चक्र प्रकार देव कुल माह।
प्रातर्बालार्करश्मिस्फुरित धन महा सांद्र सिन्दूर धूलीः ॥
संध्या रागारुणांगीः त्रिदशवरवधूवंद्यपादार विंदे ॥
चंचच्चंडासि धारा प्रहतरि पुकुले, कुंडलोद्घृष्टगल्ले ॥
श्रां श्रीं श्रूं श्रौं स्मरंतो, मदगजगमने रक्ष मां देवि पद्मे ॥८॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] प्रातर्बालार्क रश्मि स्फुरितो घनो बहुः महास्सांद्रो निबिडो यः सिंदूर नस्य धूलिः चूर्णं सन्ध्याया रागः संध्या रागः प्रातर्बालार्करश्मयश्च घनमहासांद्र-सिंदूरधूली च सन्ध्यारागश्च ते प्रातर्बा० तद्वदरुणं। रक्तवर्णं अंगो यस्याः सा, प्रातर्बा० सन्ध्यारागा रूणांगी। पुनरपि कीदृशे। त्रिदशवरवधूवंद्यपादार विंदे दराश्च ता वध्वश्च वरवध्वः त्रिदशानां

देवानां वरवध्वः त्रिदशवरवध्वः ताभिरभि–वंद्ये पादारविंदे यस्याः सा तस्याः सम्बोधनं त्रिदशवरवधू वंद्य पादार विंदे । अमर वरांगनानमस्यमान चरणपंकेरूहे । कीदृशे । चंचच्चंडासिधारा प्रहतरि पुकुले । चंडाचासौअसिधारा चंच्चंडा॰ सिधारा चंचती चासौ चंडा सिधारा च चंचच्चंडासिधारा तया प्रहतं विनाशितं रिपुकुलं शत्रु समूहं यया सा चंचच्चंडा॰ रिपुकुलः तस्याः सम्बोधनं, चंचच्चंडा रिपुकुले देदीप्यमान प्रचण्ड मण्डलाग्रधारा व्यापादित पुनरपि कीदृशे । कुंडलोद्घृष्ट गल्ले । कुंडलाभ्या उद्घृष्टौ गल्लौ गंडौ यस्याः सा तस्या संबोधनम् कुंडलोद्घृष्ट गल्ले । कर्ण वेष्ट कोदघृष्टमाणं गंडस्थले । पुनरपि कीदृशे श्रां श्रीं श्रूं श्रौं स्मरती श्रां च, श्रीं च श्रूं च श्रौं च तानि स्मरंती ध्यायंती एतेषाम् पचाक्षराणां मंत्रं दर्शयन्नाह् क्म्ल्व्र्यूं नामगर्भितस्य बाह्ये घ्म्ल्व्र्यूं वेष्टयं च बाह्ये षोडश स्वरान् लिखेत् । बहिरष्ट दलेषु क च छ य ट र भ म ल ब यूं पिंडाक्षराणि दातव्यानि बहिः क्म्ल्व्र्यूं च्म्ल्व्र्यूं छ्म्ल व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं ट्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं अष्ट दलेषु ब्रह्माणी १ कुमारी २ ऐंद्राणी ३ माहेश्वरी ४ वाराही ५ वैष्णवी ६ चामुंडा ७ गांधारी ८ ॐ कार पूर्व मंत्रमालिख्यते । बाह्ये स्म्ल्व्र्यूं ह्रा हं हः आं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं पद्मावती श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः हुं फट् स्त्रीं स्वाहा । एषा विद्या अष्टोत्तर सहस्त्र प्रमाणं काजापेन क्रियमाणेन दशदिनपर्यंते सर्वकार्याणि सिद्धयन्ति । पुनरपि कीदृशे मदगजगमने मदनोपल क्षितो गजो मदगजः तद्वदमनं गतिर्यस्या सा तस्याः संबोधनं मदगज गमने ॥८॥ सांप्रतसुपसंहरन्नाह ॥

श्लोक नं० ८ के यन्त्र मन्त्र

(१) क्म्ल्व्र्यूं में देवदत्त गभित करके, बाहर घ्म्ल्व्र्यूं वेष्टित करे, ऊपर वलय बनावे । उस वलय में सोलह स्वर लिखे, ऊपर से एक अष्ट दल का कमल बनावे, उन दलों में क्रमशः क्म्ल्व्र्यूं च्म्ल्व्र्यूं छ्म्ल्व्र्यूं झ्म्ल्व्र्यूं ट्म्ल्व्र्यूं र्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं लिखे । ऊपर से अष्ट दल का कमल और बनावे, उसमें भी क्रमशः ब्रह्माणी, कुमारी ऐंद्राणी, माहेश्वरी, वाराही, वैष्णवी, चामुंडा, गांधारी, लिखे । ॐ कार पहले मन्त्र को लिखे । बाह्य में स्म्ल्व्र्यूं ह्रा हं हः आं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं पद्मावती श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः हुं फट् स्त्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस मन्त्र विद्या को एक हजार आठ प्रमाण जप, नित्य दस दिन तक करने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

दिव्यं स्तोत्रं पवित्रं पटुतरपठतां, भक्ति पूर्वं त्रिसंध्यम्।
लक्ष्मी सौभाग्य रूपं दलितकलिम लं, मंगलं मंगलानाम्।
पूज्यं कल्याणमान्यं, जनयति सततं पार्श्वनाथप्रासादात्।
देवी पद्मावती सा प्रहसित वंदना या स्तुता दानवेंद्रैः ।।६।।

व्याख्या : जनयति उत्पादयति कासौ कर्त्री इयं देवी पद्मावती कीदृशी ? प्रहसित वदना प्रहृष्टानना कस्मात् पार्श्वनाथ प्रसादात् या स्तुताः कैः ? दानवेंद्रैः दैत्य पुरुहूतैः किं जनयति लक्ष्मी सौभाग्य रूपं कीदृशं तत् दलित कलिमलं निर्दलित पाप मलं। तथा मगलं जनयति। केषाम् मंगलानां निःश्रेयसानामपि मध्ये विशिष्टं निःश्रेयसं जनयति इत्यर्थः। पुनरपि कथंभूत पूज्यं अर्च्यं पुनरपि कीदृशं कल्याण मान्यं, कुशल-युतं। कथं ? सततं निरतरं केषु ? पटुतर पठतां स्पष्टतरं भूर्णतां पठेतां कथं ? भक्ति पूर्वं बहुमानपूर्वं न केवलं भक्ति पूर्वं त्रिसंध्यं च, किं कर्म भी मतं स्तोत्रं स्तवनं कीदृशं ? दिव्यं प्रधानं पुनरपि कीदृशम् पवित्रम्।

अस्यां पार्श्वदेव मणि विरचितायां पद्मावत्यष्टक वृत्तौ यत् किमपि कंथं पठितं तत्सर्वं सर्वाभिर्क्षन्तव्यं। देवताभिरपि।

वर्षाणां द्वादशकैः शतैः गतैः श्रुतेरैरियं वृत्तिः १२०३ वैशाखे सूर्ये दिने समथिता शुक्ल पंचम्यां, ।।१।। अस्पाक्षरस्य गणनाम् पंचशतानि द्वाविंशदक्षराणि च सदनुष्टुप छंदसां प्राप ।।२।। इति श्री पार्श्व देवमणिविरचिता पद्मावत्यष्टक वृत्तिः संपूर्ण ।।

संवत् १९२२ रा मिती ज्येष्ठ वद १३ कुजवासरे योधपुर नगरे लिपि कृतं पं० राम चन्द्रेण स्वात्मार्थे।

।। इति ।।

श्लोक नं० ९

इस दिव्य पवित्र स्तोत को बुद्धिमान, तीनों संध्याओं में भक्ति पूर्वक पढ़ता है। उसको लक्ष्मी की प्राप्ति सौभाग्य, की प्राप्ति, होती है। मंगलों में मंगल होता है। कलीमलों का

नाश होता है । जो देवी प्रहसत वदन हैं । क्योंकि जिनका मन पार्श्व जिनेन्द्र की भक्ति में ही रत हे । इसलिये, दानव इन्द्रों के द्वारा वंदित हैं । इसलिए सब को कल्याणकारी हैं ।

इस स्त्रोत जो की आ. पार्श्वदेव मणि विरचित पद्मावती अष्टक वृत्ति को जो कोइ भी वंधन करता है, पढ़ता है वह सर्व प्रकार के सर्व अभिसिप्त प्राप्त करता है ।

इति श्री आ० पार्श्व देवमणि विरचित पद्मावत्याष्टक वृत्ति संपूर्ण ।

॥ ० ॥

॥ ॐ ह्रीं नमः ॥

श्री पद्मावती देवी स्त्रोत यन्त्र मन्त्र विधि सहित

काव्य नं० १

श्री मद् गीर्वाण चक्रस्फुट मुकुट तटि दिव्य माणिक्यमाला।
ज्योति ज्वाला कराला स्फुरित मुकुरिका घृष्ट पादार विन्दे ॥
व्याघ्रो रूल्का सहस्र स्फुरज्ज्वलन शिखालोल पाशां कुशाढ्ये।
आं क्रों ह्रीं मन्त्र रूपे क्षपित कलि मले रक्षमां देवि पद्मे ॥१॥

यन्त्र रचना

चतुर्थ दल कमलं कृत्वा, तन्मध्ये ह्रीं बीजं लिखेत दल मध्ये ॐ आं क्रों ह्रीं नमः एतत्मंत्र लिखेत् तदुपरि ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महा लक्ष्मं नमः लिखेत् तदुपरि काव्यं लिखेत् अयं प्रकारेण यन्त्रं कृत्वा पार्श्वे रक्षणीयात् राज्य भयादि नश्यन्ति।

फल

प्रथमं काव्यस्य ह्रीं बीजं षडाक्षरं मन्त्र, ॐ आं क्रों ह्रीं नमः अथवा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महा लक्ष्मं नमः, अनेन मन्त्रेण पूर्वं दिग मुखं शुक्लासन शुक्ल माला, अष्टोतर शत जाप्यं कृत्वा, गुगलस्य धूपं दत्वा दीपं घृतस्य धृत्वा जाप्यं कुर्यात जाति पुष्पेन जाप्यं, तर्हि राज्य भय, दुष्टादि भय, अग्नि भय, कुर्यात् नश्यन्ति।

इस काव्य के यन्त्र मन्त्र को पास में रखने से व मंत्र का १०८ बार पूर्व दिशा में मुख करके और सफेद आसन, सफेद माला अथवा जाइ (चमेली) के फूल से गुगुल का धूप घी का दीपक रख कर जाप करने से राज्य भय, दुष्टादि भय, अग्नि भय, आदि नाश होते हैं। लक्ष्मी लाभ होता है।

मन्त्र :—ॐ आं क्रों ह्रीं नमः ।

काव्य नं० १

यन्त्र नं० १
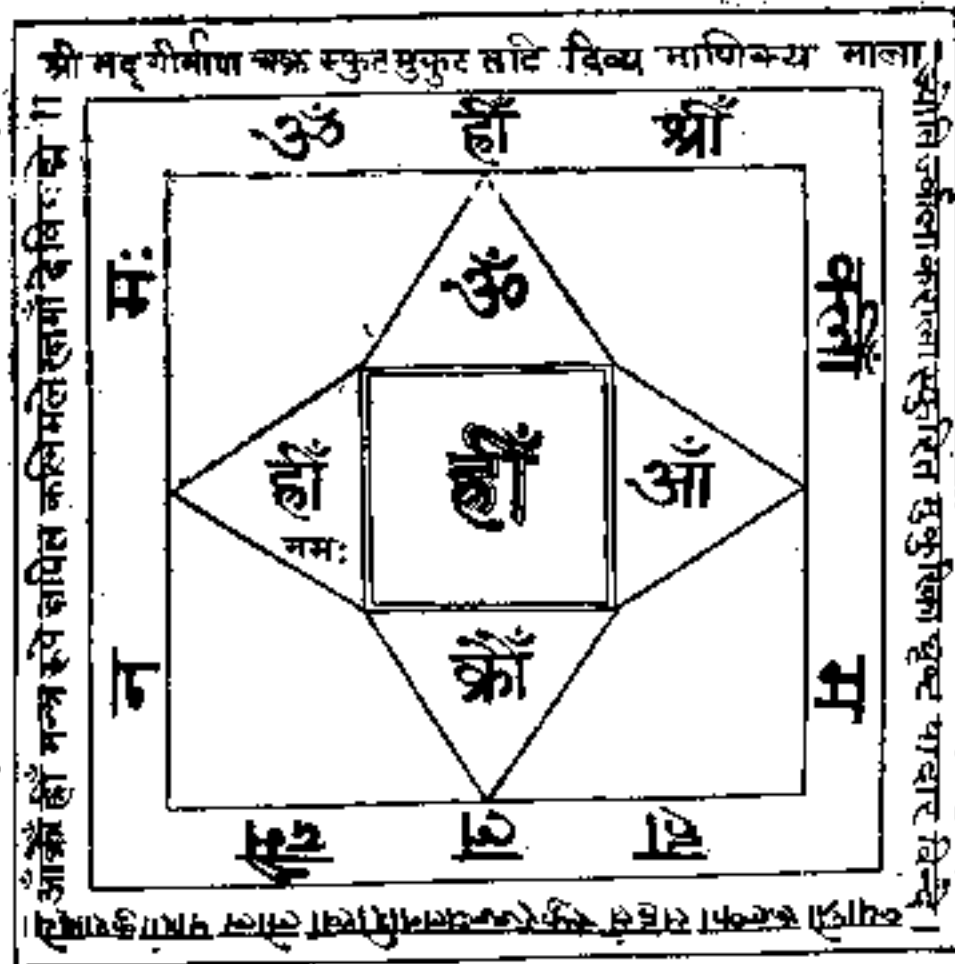
काव्य नं० २

भित्वापातालमूलं चल चलिते व्याल लीला कराले ।
विद्युद्दण्ड प्रचन्ड प्रहरणसहितैः सद्भुजैस्तर्जयन्ति ।
दैत्येन्द्रं क्रूरदंष्ट्राकिटकिट घटिते स्पष्ट भीमाट्टहासे ।
माया जी मूत माला कुहरित गगने रक्षमांदेवी पद्मे ॥ २ ॥

यंत्र नं० २
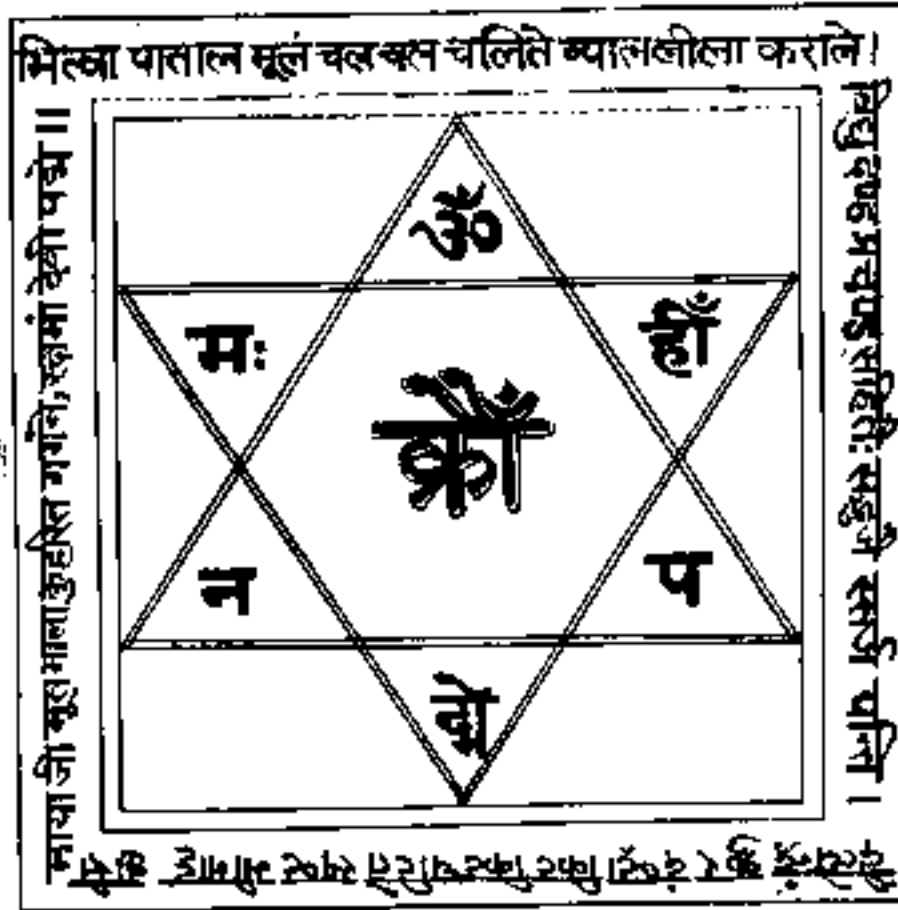
यन्त्र रचना

षट्कोण आकारं कृत्वा, तन्मध्ये क्रौं बीजं लिखेत्, पदुपरि प्रत्येक कोणेमन्त्राक्षरं लिखेत् ॐ ह्रीं पद्मे नमः एतत् मंत्रं लिखेत् तदुपरि काव्यं लिखेत् । पश्चातपार्श्वं रक्षणियात ।

फल

द्वितीय काव्यस्य क्रौं बीजं, षडाक्षरं मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्मे नमः अनेन् मंत्रेण कुबेरदिग् मुखं कृत्वा रक्तपुष्पेन् अष्टोतर शतं (१०८) जाप्यं कृत्वा, लक्ष्मी लाभं तथा चिंतित कार्यस्य सिद्धि र्भवति, यन्त्रस्य रक्त पुष्पेन् पूजां कुर्यात् ।

इस यन्त्र मन्त्र काव्य को भोजपत्र वा सोना, चाँदी, ताँबा, के पत्र पर लिखकर लाल पुष्प से पूजा करे । मन्त्र का १०८ बार जाप करे तो लक्ष्मी का लाभ होता है । चिंतित कार्य की सिद्धि होती है । भोज पत्र पर यन्त्र लिखना हो तो, सुगन्धित द्रव्य से लिखे ।

जपने का मन्त्र - ॐ ह्रीं पद्मे नमः । इस मन्त्र की १ माला उत्तर दिशा में मुख करके नित्य फेरे—

श्लोक नं० ३

कूजत्को दंड कांडो डमर विधुरित क्रूर घोरोप सर्ग ।
दिव्यं वज्रातपत्रं प्रगुण मणि रणत्किंकिणी क्वाणरम्यं ।
भास्वद्वैडूर्य दंडं मदन विजयिनो बिभ्रतीपार्श्वभर्तु ।
सादेवी पद्म हस्ता विघटयतु महा डामरं मामकीनं ॥ ३ ॥

यन्त्र विधि अस्य काव्यस्य, श्रीं बीजं, अष्टाक्षरै मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्म वज्रे नमः । अनेन मन्त्रेण एकशत जाप्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखं, रुद्राक्षमाला जाप्यं कृत्वा, घोरोपसर्ग नाशनं भवति: अष्टदल कमलं यंत्रं कृत्वा, तन्मध्ये श्रीं बीजं लिखेत् । ॐ ह्रीं पद्म वज्रे नमः, अनेन मन्त्रेण अक्षर यन्त्र स्थाप्यं । पीत पुष्पेन यन्त्र पूजनं कृत्वा नमस्कारं कुर्यात ।

यंत्र नं० ३
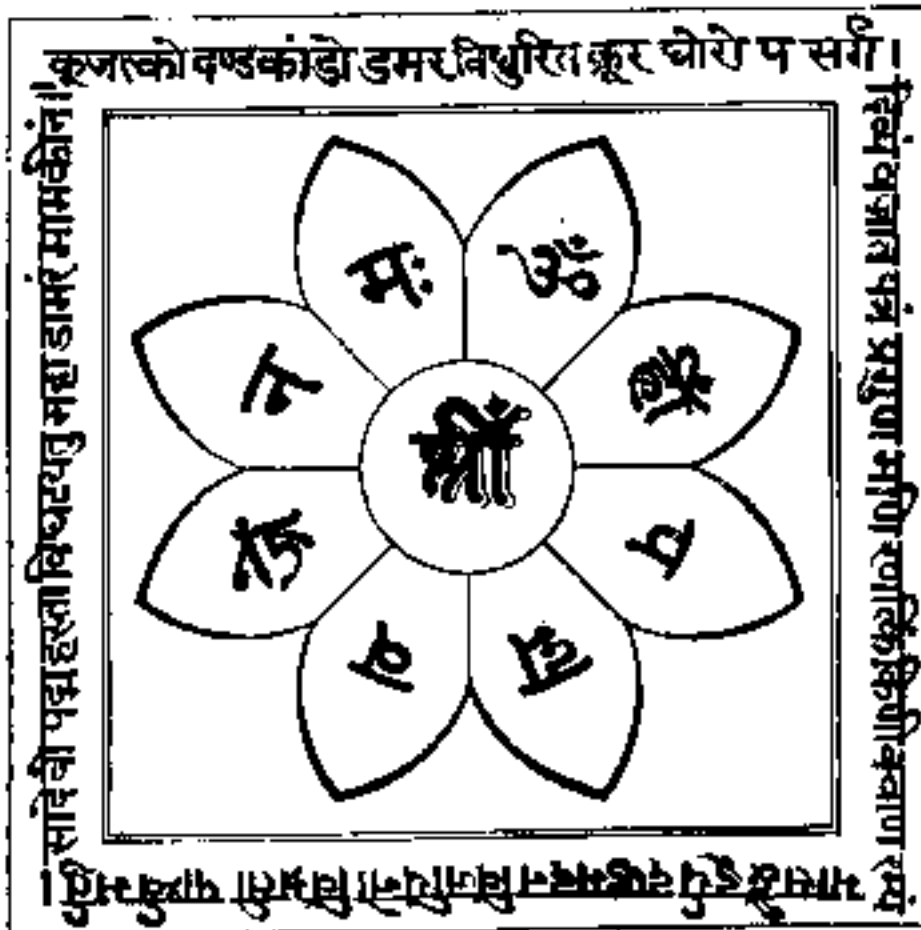
उपर्युक्त विधि के अनुसार सोने अथवा तांबे अथवा चाँदी वा भोजपत्र पर सुगन्धित द्रव्य से यन्त्र लिख कर, ॐ ह्रीं पद्म वज्रे नमः इस मन्त्रको १०८ बार नित्य जपे, रूद्राक्ष की माला से दक्षिण की ओर मुख कर जपने मे और यन्त्र मन्त्र को पास में रखने से सर्व घोरोपसर्ग दूर होवे, सुख हो महाभय दूर हो।

श्लोक

भृंगी काली कराली परिजन सहिते चण्डि चामुण्डि नित्ये।
क्षां क्षीं क्षूं क्षः क्षणार्द्धे क्षतरिपुजिवहे ह्रीं महामन्त्र रूपे।
[illegible]

टीका
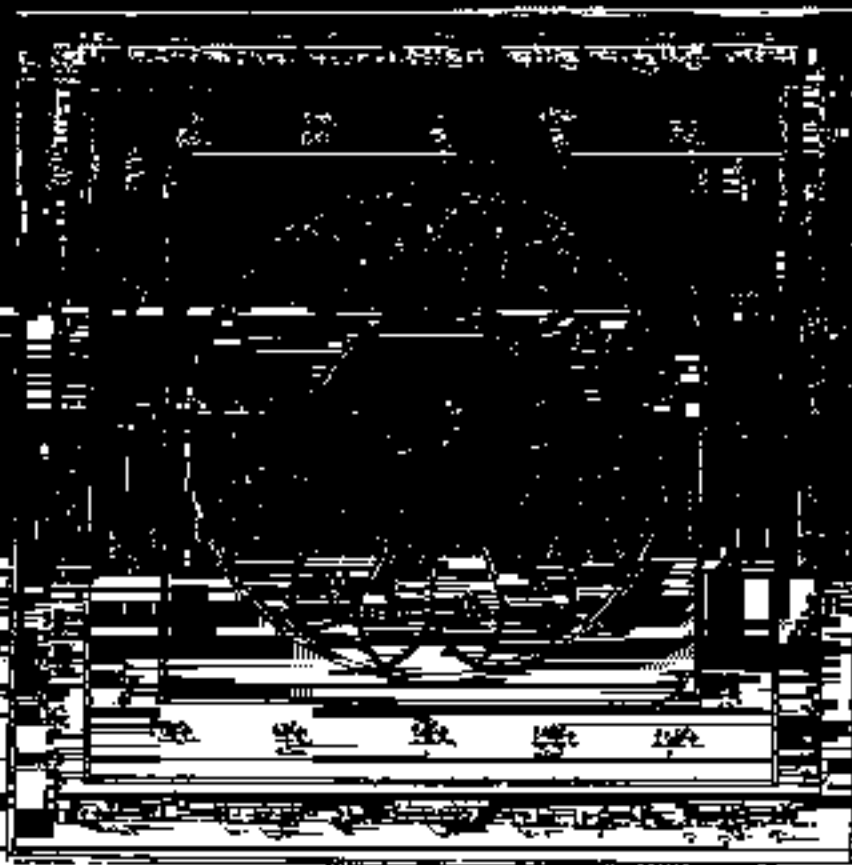
चतुर्थ काव्यस्य, भ्रौं, बीजं षोडशा क्षरे मन्त्र। ॐ ह्रीं भ्रां ह्रीं पद्मे षोडश भुजे

प्रौं ह्रू ह्रू नमः, अनेन मन्त्रेण पूर्वादि ग् मुखम्, रक्तासन, रक्तमाला १०८ शत जाप्यं कृत्वा स्थान लाभं भवति ।

यन्त्र रचना

षोडशदल कमलं कृत्वा तन्मध्ये, प्रौं, बीजं लिखेत्, दल मध्ये क्रमशः, ॐ ह्रीं श्रां ह्रीं पद्मे षोडश भुजे प्रौं ह्रू ह्रू नमः, एतत्मन्त्रं लिखेत् तदुपरि पूर्वे क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षः, पश्चिमे श्रां श्रीं श्रूं श्रें श्रः, दक्षिणे म्रौं म्रीं म्रूं म्रें म्रः, उत्तरे ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रः लिखेत्, अयं प्रकारेण यंत्रं कृत्वा । काव्य मन्त्र यन्त्र पार्श्वे रक्षणात्, राजा प्रसन्न भवति शत्रु नाशनं भवति, स्त्री पुरुष वश्यं भवति ।। ४ ।।

इस चतुर्थ काव्य के यन्त्र मन्त्र व काव्य को सुगन्धित द्रव्य से लिखे, भोज पत्र अथवा सोना चाँदी ताँबा के ऊपर लिख कर पास में रखने से स्थान लाभ होता है, राजा प्रसन्न होता है, शत्रु का नाश होता है और स्त्री पुरुष वश्य होते हैं। मन्त्र का १०८ बार जाप पूर्व दिशा में मुख कर लाल माला से, लाल आसन पर बैठ कर जाप करे।

काव्य नं० ५

चंचत्कांची कलापे स्तन तट विलुठ त्तार हारा वली के ।
प्रोत्फुल्ल त्पारिजात द्रुम कुसुम महा मंजरी पूज्यपादे ।
द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं द्रीं समेते भुवन वसकरी क्षोभिणी द्राविणीत्वं ।
आं ऐं औं पद्महस्ते कुरु २ घटने रक्षमां देवी पद्मे ।। ५ ।।

यन्त्र लेखन विधि

षोडश दल कमलं कृत्वा, तन्मध्ये, क्लां बीजं दलेषु । ॐ ह्रीं श्रीं हसक्लीं त्रिभुवन वस्य कराय ह्रीं नमः, एतन्मन्त्र लिखेत् तदुपरि द्रां द्रीं द्रूं द्रें द्रः एतत्पंच वर्णं पूर्वे लिखत् । क्लीं ब्लूं क्लीं ब्लूं क्लीं उत्तरेलिखेत् । आं ईं आं ईं आं, दक्षिणं लिखेत्, ॐ ॐ ॐ रक्षः पश्चिमोलिखेत्, अनेन् प्रकारेण यंत्रं कृत्वा, नाना प्रकारं पुष्पं अष्टद्रव्ये पूजनं कार्यं ।

फल

क्लीं बीज षोडसा क्षरैः मंत्र । ॐ ह्रीं श्रीं ह् स्क्लीं त्रिभुवन वश्य कराय ह्रीं स्वाहा । अनेन मन्त्रेण उत्तराभि मुखंकृत्वा, कमल विजस्य मालास्तु कमलासनं कृत्वा शुद्ध वस्त्रं तु जाप्यं द्वादश सहस्त्रेण् १२००० जाप्यं कृत्वा, सर्वजन प्रीतिर्भवति, राजसभा सर्वजन वश्यं भाग्यं सर्व लक्ष्मी लाभो भवति यन्त्र मन्त्र काव्य प्रभावात्सुखं भवति ।

इस यन्त्र को सुगन्धी द्रव्य से भोज पत्र पर लिख कर अथवा सोने चाँदी वा ताँबे के पत्रे पर लिख कर मन्त्र का १२००० जाप करे । उत्तर की तरफ मुख करे, कमल बीज की माला और कमलासन शुद्ध वस्त्र से मन स्थिर करके, जाप करने से और यन्त्र की पुष्पों से और अष्ट द्रव्य से पूजा करने से सर्वजन प्रिय होता है । राजसभा में सर्व जन वश्य होते हैं । भाग्यं खुलता है । लक्ष्मी का लाभ होता है । जपने वाला मन्त्र—ॐ श्रीं ह्रीं ह् स्क्लीं त्रिभुवन वश्यंकराय ह्रीं स्वाहा ॥ ५ ॥

काव्य नं० ६

लीला व्यालोल नीलोत्पल दलनयने प्रज्वल द्वाड वाग्नि: ।
उद्यज्ज्वाला स्फुलिंग स्फुरु दरुण कल्दग्र वज्रांग हस्ते ।।
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: ह'रति हर हर हर हुं कार भीमैक नादे ।
पद्मे पद्मासनस्थे व्यय नय दुरितं रक्षमां देवी देवेन्द्र बंघे ।।६।।

यन्त्र रचना विधि

एकोन विंशति दलं कमलं कृत्वा, तन्मध्ये ल्यौं बीजं लिखेत् दले अष्टादशा क्षरं मन्त्रलिखेत् । ॐ नमो पद्मावती सर्व कामनां सिद्धि ह्रां ह्रीं नमः, लिखेत्, तदुपरि ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्र: हर हर हुं आँ क्रों नमः, एतत् अक्षराणां यन्त्र वेष्टयेत् अष्ट द्रव्येन पूजनं कृत्वा मन्त्र जाप्यंकुर्यात् ।।

यन्त्र नं० ६

फल
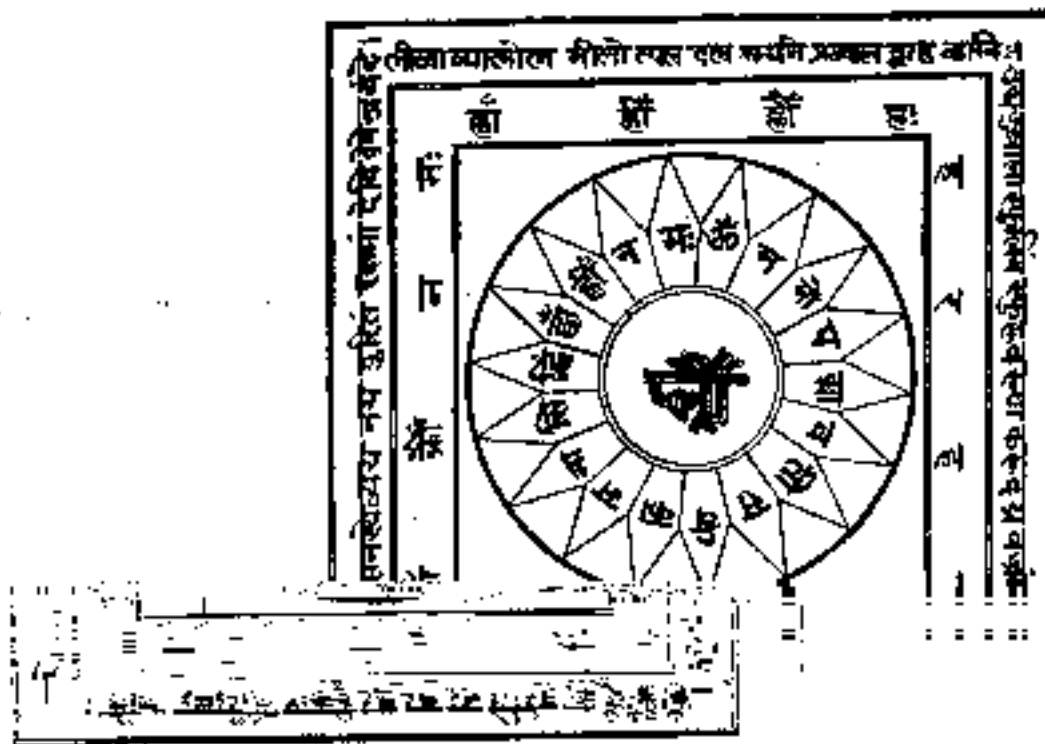
षष्टम् काव्यस्य ल्यौं बीजं, अष्टादशाक्षरं मन्त्र, अनेन मन्त्रकाव्य यन्त्र प्रभावेन

विद्या सिद्धि भंवति सर्प विष शत्रु भय नाशनं भवति, अनेन मन्त्रेण पूर्वाभिमुखं कृत्वा तथा रक्त माला रक्तासन अष्टोत्तर सतं जाप्य कुर्यातविद्यासि द्धिर्भवति ।

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अथवा सोना चाँदी, ताँबे के पत्रे के ऊपर लिख कर सुगंधित द्रव्य से लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे। १०८ बार मन्त्र का जाप करे तो विद्या सिद्ध होती है सर्प विष शत्रु भय नाश होता है। मन्त्र पूर्व दिशा में मुख कर, लाल आसन पर बैठ कर लाल माला से जाप करे जाप का मन्त्र - ॐ नमो पद्मावती सर्वकामनां सिद्धि ह्रां ह्रीं नमः ।

काव्य नं० ७

कोपं वं जं स हं सः कुवलय कलितोद्दाम लीला प्रबंधे ।
झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रः पवित्र शशिकर धवले प्रक्षरक्षीर गौरे ।
व्याल व्याबद्ध जूटे प्रबल बल महाकाल कूटं हरंति ।
हा हा हूँ कार नादेकृत कर कमले रक्षमां देवी पद्मे ।। ७ ।।

यन्त्र रचना

सप्तम काव्यस्य, क्ष्म्ल्व्र्यूं बीजं, अष्टादशा क्षरै मन्त्र, ॐ ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावति विद्या सिद्धि

यन्त्र नं० ७
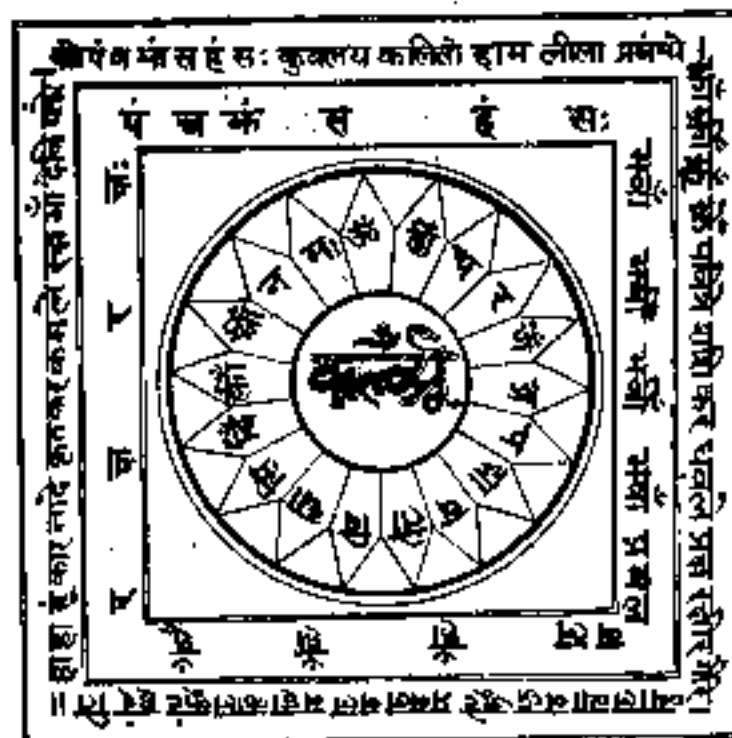
क्लीं श्रीं नमः। अनेन मन्त्रेण पूर्वदिग् तथा उत्तराभिमुखं कृत्वा, माला सहस्त्र जाप्यं कृत्वा। बुद्धि प्रबल भवति सौभाग्य विस्थाप्य, दलेषु अष्टा दशाक्षरं। ॐ ह्रीं धरणेंद्र पद्मावति विद्या सिद्धि क्लीं श्रीं नमः, लिखेत्, तदुपरि पं च भं स हं सः क्ष्वां क्ष्वीं क्ष्वां क्ष्वां प्रबल बल ह्रीं ह्रीं ह्रूं रक्ष रक्ष, एतत् अक्षरेन वेष्टयेत्।

फल

यन्त्र रचना सात मोयन्त्र अष्ट द्रव्येन पूजनं कृत्वा, काव्य यन्त्र मन्त्र प्रभावात् राज कोपरोगादि भय व्यंतरादि दोष उच्चाटनादि भय नष्टं भवति बंदि मोक्ष बल पराक्रमस्य बृद्धि भवति।

इस यन्त्र के प्रभाव से राज्य का कोप मिटे। रोगादि भय नाश होय। व्यंतरादि दोष का और उच्चाटनादि दोष का भय दूर हो। बंदिखाना से छुटे। बल पराक्रम की वृद्धि होय। इस यन्त्र को सुगंधित वस्तुओं से लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे।

काव्य नं० ८

प्रतवलिा वर्तरस्मिच्छुरित घन महा सांद्रसिंदूर धूली।
संध्या रागारुणांगी त्रिदश वर बधू वंद्य पादार बिंदे।
चंचच्चंडासिधारा प्रहतरिपु कुलेकुं डलो घृष्ट गंडे।
श्रां श्रीं श्रूं श्रः स्मरंति मद गज गमने रक्षमां देवी पद्मे ॥ ८ ॥

यन्त्र रचना

दशदल कमलं कृत्वा तन्मध्ये म्ल्व्र्यूं स्थाप्यं, कमलेषु, ॐ ह्रीं पद्मे श्रां श्रीं श्रूं श्रः नमः, एतत् मंत्र लिखेत् तदुपरि चतुर्दश क्रों कारेन वेष्टयेत् तदुपरि काव्य लिखेत् तत्पश्चात् अष्ट द्र येन पूजनं कृत्वा, काव्य, मन्त्र, यन्त्र, पार्श्वे रक्षणात् अस्य प्रभावेन् सर्वलोके पूजनीकं भवति, धन धान्यसस्य बृद्धिभवति सर्व भयं नश्यति, देव सममुत्रि भवति।

फल

अष्टम काव्यस्य म्ल्व्र्यूं बीजं, दशाक्षरं मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्मे श्रां

अनेन् मन्त्रेण, अष्टोत्तर शत् १०८ दिने कमल पुष्प मध्ये बीजाक्षरं मन्त्राक्ष कर्पूर कस्तूरिकायां, प्रात समये भक्षणं कृत्वा, तस्य पुरुषस्य आयुचिरं भवति निश्चयेनः।

यंत्र नं० ८
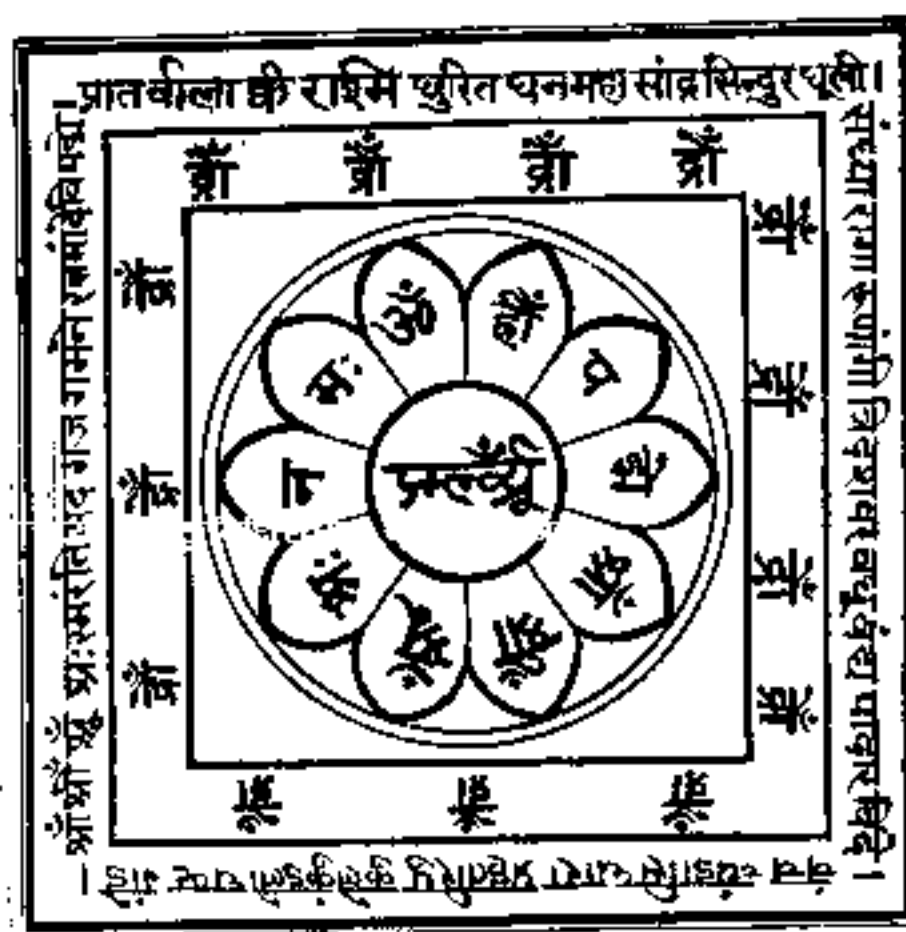
इस यन्त्र मन्त्र काव्य को सुगन्धि द्रव्य से लिख कर, फिर अष्ट द्रव्य से यन्त्र की पूजा कर, पास में रक्खे, यन्त्र को ताँबे अथवा चाँदी सोना वा भोजपत्र पर लिख कर पास में रक्खे तो, सर्वलोक में पूजा को प्राप्त होता है। यश की प्राप्ति होती है, धन धान्य की वृद्धि होती है। देवता समान पूजा को प्राप्त होता है, सुखी होता है, और किसी भी बात का भय नहीं रहता है।

विशेष मन्त्र ॐ ह्रीं पद्मे श्रां श्रीं श्रूं श्रः नमः इस मन्त्र को १०८ दिन में, कमल पुष्प के अन्दर बीजाक्षर और मन्त्राक्षर कर्पूर और कस्तूरी से १०८ दिन तक लिखे फिर प्रातः समय १०८ दिन तक भक्षण करे तो उस पुरुष की आयु बढ़ती है। लक्ष्मी लाभ होता है, राज-द्वार में मान्यता मिलती है। और अत्यंत सुखी होता है।

नोट - जहाँ आयु बढ़ाने की यन्त्र विधि लिखी है उस विधि में ऐसा भी अर्थ बनता है, कि कर्पूर कस्तुरी को भक्षण करके १०८ दिन, में बीजाक्षर सहित मन्त्र को कमल पुष्प के अन्दर १०८ दिन तक प्रतिदिन लिखे।

काव्य नं० ९

विस्तीर्णे पद्मपीठे कमल दल निवासोचिते काम गुप्ते ।
लां तां श्रीं श्रीं समेते प्रहसित वदने दिव्यहस्ते प्रशस्ते ।
रक्ते रक्तोत्पलाङ्गि, प्रतिवहसि सदावाग्भवं काम बीजं ।
हंसा रूढ़े, त्रिनेत्रे भगवति वरदे, रक्षमां देवी पद्मे ।। ९ ।।

यन्त्र रचना

विंशति दलं कमलं कृत्वा, तन्मध्ये क्लौं बीजं स्थाप्य, दल मध्ये, ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावति बल पराक्रमाय नमः एतत्मन्त्र लिखेत् । तदुपरि ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावति लां तां श्रीं श्रीं क्रीं द्रीं रं रीं क्ष्रौं क्ष्रीं ह्लीं ह्लां ह्लीं वाग्भवे नमः, एतत् अक्षरेन यन्त्र वेष्टयेत् यन्त्रस्य अष्ट द्रव्येन पूजनं कुर्यात् । काव्य यन्त्र मन्त्र प्रभावात् सर्व क्षेम कुशलं भवति ।

यन्त्र नं० ९
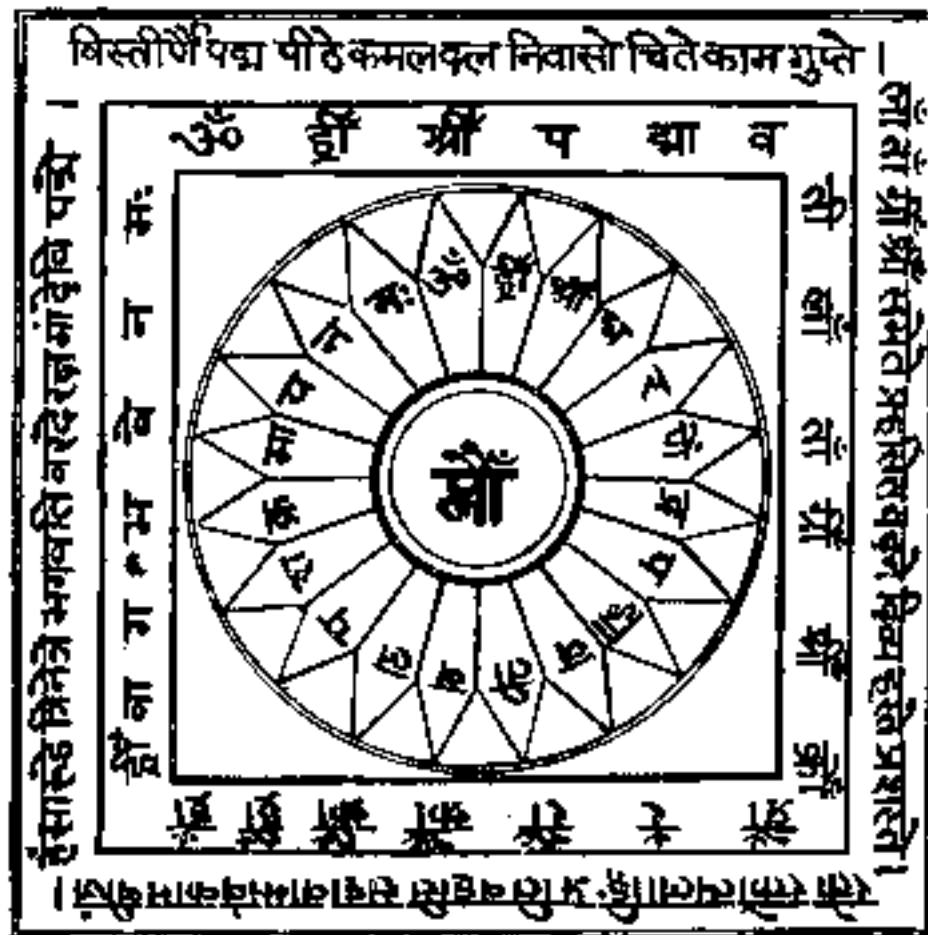
फल

नवम काव्यस्य प्लौं बीजं विसत्यक्षरं मन्त्र। ॐ ह्रीं श्रीं धरणेंद्र पद्मावति बल पराक्रमाय नमः। अनेन् मन्त्रेण पूर्वाभि मुखं पीत वस्त्र, पीतासने सहस्त्र द्वयं जाप्यं कृत्वा एक विंशति दिने मन्त्र सिद्धि भवति, सर्व स्थानलाभं भवति।

इस यन्त्र के मन्त्र को पूर्व में मुख करके पीला वस्त्र पहन कर पीली माला से दो हजार जाप पीले आसन पर बैठ कर २१ दिन तक करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है फिर यन्त्र पास में रक्खे। यन्त्र सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर लिखे और यन्त्र की अष्ट द्रव्य से पूजा करे। काव्य मन्त्र यन्त्र का नित्य ही स्मरण करे, तो नया स्थान का लाभ हो और नाना प्रकार की संपदा का लाभ होता है। शत्रु तो सन्मुख भी इस यन्त्र के प्रभाव से नहीं आवे। मन्त्र जपने का—ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावति बलपराक्रमाय नमः।

काव्य नं० १०

षट्कोणे चक्रमध्ये प्रणव वरयुते वाग्भवे। काम राजे।
हंसारूढे सबिन्दो बिकसित कमले कर्णिकाग्रे निधाय।
नित्ये क्लिन्ने मदाद्रे द्रवयसि सततं सां कुसे पास हस्ते।
ध्यानात् संक्षोभयन्ति त्रिभुवन वशकृद् रक्षमां देवी पद्मे॥ १०॥

यन्त्र रचना

षट कोण यंत्रं कृत्वा, ऐं बीजं मध्ये स्थापयेत, तत्पश्चात् क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं नमः स्थापयेत् तदुपरि षट् कोणें एकविंशति क्लीं कारेन वेष्टयेद् अष्ट द्रव्येन पूजनं कृत्वा एकाग्रचित्तेन साधयेत्। काव्य यन्त्र मन्त्र प्रभावात् तथा यन्त्र पार्श्वे रक्षणियात् अस्य प्रभावेन लक्ष्मी लाभो भवति राजा प्रसन्नं भवति, देव आशीर्वादं ददाति प्रत्यक्षं भवति अस्य प्रभावात्।

फल

दशम काव्यस्य ऐं बीजं वाग्भव शक्तिः दशाक्षरं मन्त्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं नमः, अनेन् मंत्रेण जाप्यं कृत्वा बृहस्पति समानं भवति द्वादश सहस्त्रं श्वेत जाति पुष्पेन् जाप्यं कृत्वा। बृहस्पति समबुद्धि भवति। एक त्रिंशदिन मध्ये ब्रह्मचर्यात् जाप्यं कुर्यु एक स्थाने स्थित्वा, एकासनं कृतत्वा द्वादश सहस्त्र जाप्यं कृत्वा।

यन्त्र नं० १०
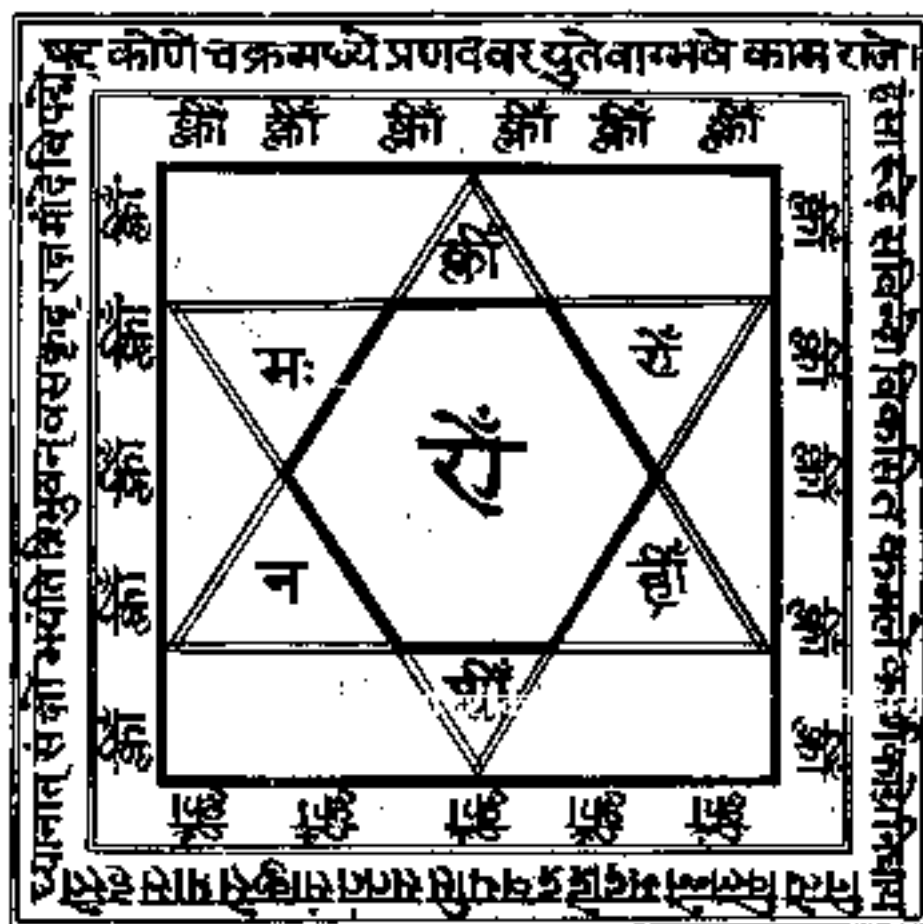
इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर लिखे अथवा सोना, चाँदी, ताँबा के पत्रे पर लिख कर अष्ट द्रव्य से यन्त्र की पूजा करे फिर मन्त्र का जाप ३१ दिन में १२००० (बारह हजार) जाप एकासन करता हुआ दीप धूप विधान से ब्रह्मचर्य रखता हुआ जाति पुष्प (जाइ) फूल से करे तो बृहस्पति समान बुद्धि होती है। यन्त्र को पास में रखने से अत्यंत लक्ष्मी लाभ होता है। राजा प्रसन्न होता है। देव प्रत्यक्ष होकर वरदान देता है।

काव्य नं० ११

आं क्रों ह्रीं पंच वर्ण लिखित प्रवर षट् चक्र मध्ये हंस क्लीं।
क्रों क्रौं पक्षां तराले स्वरपरि कलिते वायुना वेष्टि तांगी।
ह्रीं वेष्टयां रक्तपुष्पै र्जपित दल महा क्षोभणी द्राविणीत्वं।
त्रैलोक्यं चालयंति सपदि जनहिते रक्षमां देवी पद्मे ॥ ११ ॥

यन्त्र रचना

षट दल कमलं कृत्वा पं बीजं, मध्ये स्थापयेत् षट अरे ह स क्लीं क्रों क्रों ह्रीं बीजा क्षरैन् वेष्टयेत् आं क्रों ह्रीं श्रीं पद्मे एतत् अक्षरेन् षट् दल कमलं मध्ये लिखेत्। तदुपरि षोडश ह्रीं कारेन् वेष्टयेत् वायुतत्व मध्ये, यंत्रं साधयेत् रक्तपुष्प अष्ट द्रव्येन पूजनं कृत्वा यन्त्र मन्त्र साधनात चितित कार्यस्य सिद्धि भवति, शत्रु क्षयंयाति लक्ष्मी लाभो भवति, सद्गति प्राप्ति भवति।

यन्त्र नं० ११

फल
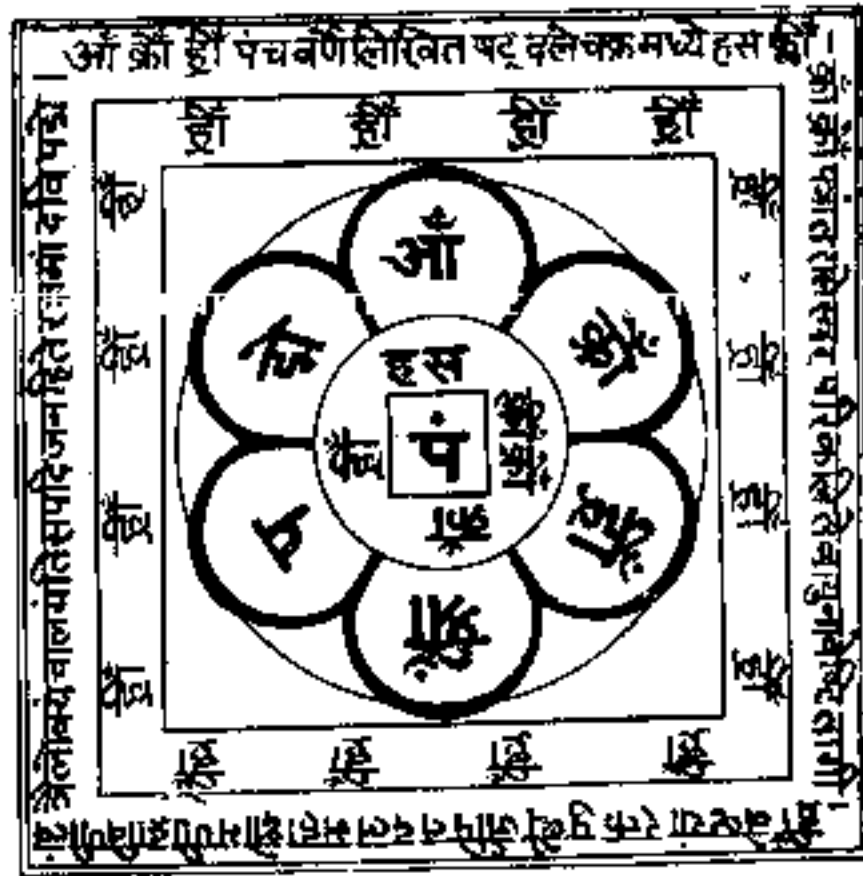
एकादशम काव्यस्य पं बीजं, ह्रीं, शक्ति षोडशाक्षरं मन्त्र, ॐ ह्रीं श्रीं आं क्रों ह्रीं क्लीं क्रों ह्रीं ऐं पद्मावती नमः, अनेन मंत्रेण पूर्व दिशा मुखं कृत्वा द्वादश सहस्त्र जाप्य १२००० रक्त पुष्पेन् कृत्वा, मन्त्र सिद्धिर्भवती मन्त्र प्रभावात् सर्व जनप्रियो भवति, अस्य प्रभावात् चक्रवति समानं भवति, सर्व जन वशी भवति। भाग्योदयं भवति।

इस यन्त्र को भोज पत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखे, अथवा सोना, चांदी, तांबा, के पत्रें पर अष्ट द्रव्य से खुदवा कर और लाल पुष्प से यन्त्र की पूजा करे तो, चिंतित कार्य की सिद्धि होती है। शत्रु नाश को प्राप्त होता है। लक्ष्मी का लाभ होता है। सद्गति की

प्राप्ति होती है। ॐ ह्रीं श्रीं श्रां क्रों ह्लीं क्लीं क्रों ह्रीं एं पद्मावति नमः, इस मन्त्र को पूर्व दिशा में, मुख करके बारह हजार लाल फूल से जाप करे तो मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के प्रभाव से समस्त पृथ्वी के लोग चरणों में आकर पड़े, चक्रवर्ति के समान भाग्यो दय करता है।

काव्य नं. १२

ब्रह्माणी कालरात्री भगवती वरदे चंडि चामुंडि नित्ये।
मात गांधारि गौरी धृति मति विजये कीर्ति ह्रीं स्तुत्य पद्मे।
संग्रामे शत्रु मध्ये ज्वलद नल जले वेष्टि तैर्स्यैः सुरास्त्रैः।
क्षां क्षीं क्षुं क्षः क्षणार्द्धे क्षतरिपु निवहे रक्षमां देवी पद्मे॥ १२॥

यन्त्र रचना

षोडश दल कमलं कार्यं, मध्ये क्ष्म्ल्व्र्यूं स्थाप्य, दले षोडश देव्याः। ॐ ब्रह्माणी ॐ कालरात्री, ॐ भगवते, ॐ सरस्वती, ॐ चंडी, ॐ चामुडायै, ॐ नित्यायै, ॐ मातायै, ॐ गांधारी, ॐ गौरी, ॐ धृति, ॐ मति, ॐ विजयं, ॐ कीर्ति, ॐ ह्रीं नमः, ॐ पद्मावत्यै नमः, लिखेत् पश्चात् यन्त्रस्योपरि चतुर्कोणे क्षां क्षीं क्षूं क्षः, लिखेत् तदुपरि काव्यं लिखेत् यन्त्रस्य अष्ट द्रव्येन् पूजनं कृत्वा, काव्यं, यन्त्र, मन्त्र, पठनात् शत्रु भयं न भवति, शत्रु उन्मतं भवति नाशं भवति शत्रुस्य मरणं भवति यन्त्र साधन प्रभावात मन्त्रात् मिरचशायां मंत्रित्वा होमं कुर्यात् शत्रुस्य निश्चयेन मरणं भवति।

फल

द्वादश काव्यस्य क्ष्म्ल्व्र्यूं बीजं, माया शक्तिः पंचविंशति अक्षरै मंत्र ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं क्लीं क्रौं पद्मावति धरणेंद्र सहिताय क्षां क्षीं क्षूं क्षः नमः अनेन् मन्त्रेण, हस्तार्के, वा मूलार्के वा पुष्यार्के दिने पंचविंशति सहस्त्रेण २५००० दक्षिणदिशां साधनं कृत्वा कृष्ण पुष्पेन होमं, कृष्ण माला जाप्यं कृत्वा, शत्रुस्य मरणं भवति, संग्राम विषये जयं भवति।

इस यन्त्र को भोज पत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखें अथवा सोना, चांदी, तांबा के पत्रा पर खुदवा कर यन्त्र की अष्ट द्रव्य से पूजा करे फिर मन्त्र की साधना करे, मन्त्रः—ॐ ह्रीं श्रीं प्रीं प्रीं क्लीं क्रौं पद्मावती धरणेन्द्र सहिताय क्षां क्षीं क्षूं क्षः नमः इस मन्त्र को काली

यन्त्र नं० १२

माला से और काले पुष्प से पचीस हजार (२५०००) रविहस्त नक्षत्र में अथवा रविमूल नक्षत्र में वा रवि पुष्यामृत दिन में जाप करे काले फूल से होम करे, तो शत्रु मरे और संग्राम में जय हो। काव्य, यन्त्र, मन्त्र, के पढ़ने से और पूजन करने से शत्रु मरे वा भ्रष्ट होय, शत्रु पागल हो जाय, और मन्त्र से मिर्च मंत्रीत कर होम करे, तो शत्रु का मरण हो जावे।

काव्य नं. १३

खड्गं को दंड कांडं मुसल हलधरं बाण नाराच चक्रं।
शक्त्या सल्य त्रिशूलं वर फरा ससरं मुद्गरंमु ष्टि दंडं।
पासैपाषाण वृक्षं वर गिर सहितैरिष्ट शस्त्रै र्माल्यैः।
दुष्टानां दारयंति वर भुज ललिते रक्षमां देवी पद्मे ।। १३ ।।

यन्त्र रचना

अष्टदल कमलं कृत्वा भ्म्ल्व्र्यूं मध्ये स्थाप्य, अष्टाक्षर मन्त्र, ॐ ऐं द्रां ह्रीं भ्रां झ्रीं ह्रूं लिखेत् तदुपरि, ॐ शक्ति नमः, ह्रीं शक्ति नमः, श्रीं शक्ति नमः क्लीं शक्ति नमः, चतुर्दिक लिखेत्, अष्ट द्रव्येन च रक्त पुष्पैः यन्त्रस्य पूजनं कृत्वा, एकाग्रचित्तेन् यन्त्र मन्त्र साधनं कुर्यात, अस्य प्रभावात् सर्व वांछासिद्धि भवति दिव्य दृष्टि भवति सर्व लोकस्य वशीकरणं भवति।

यन्त्र नं० १३
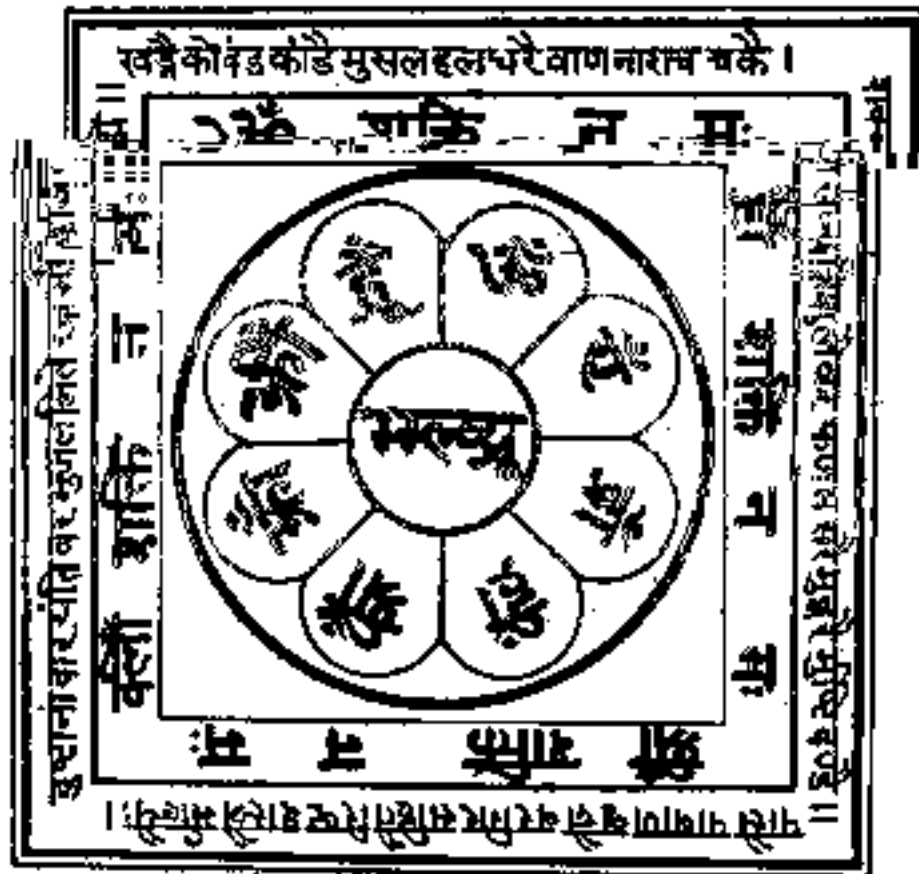
मन्त्र साधन विधि

त्रयोदशम काव्यस्य भ्म्ल्व्र्यूं बीजं, दंड शक्ति चतुर्विंशति अक्षरे मन्त्र, ॐ ह्रीं पद्मावति उपसर्ग भय निवारय ह्रां प्रौं क्लीं ह्रीं नमः, अनेन मंत्रेण द्वादश सहस्त्रेन १२००० उत्तरदिशा जाप्यं कृत्वा हीखणीस्य— होमं कुर्यात्तर्हि विद्या सिद्धि भवति, चिंतित कार्यं भवति, होमस्य भस्मं तथा मिष्ठान्नसह खादयेत् तर्हि स्त्री पुरुष वश्यं भवति।

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर लिख कर लाल फूल और अष्ट द्रव्य

से पूजन करे। एकाग्र मन से मन्त्र की साधना करे तो मन वांछित कार्य की सिद्धि होय। दिव्य दृष्टि होय वशीकरण होय।

ॐ ह्रीं पद्मावति उपसर्ग भयं निवारय ह्रां प्रौं क्लीं ह्रीं नमः, इस मन्त्र का बारह हजार उत्तर दिशा में मुख करके जाप करे (हीखणी) का होम करे तो विद्या सिद्धि होय। मन में चिन्तन करे तो कार्य होय, मिष्ठान्न और होम की राख दोनों मिलाकर जिसको खिलावे, पुरुष वा स्त्री वश्य होय।

नोट—इस यन्त्र मन्त्र की विधि में हीखणी द्रव्य का होम करे, लिखा है सो (हीखणी) क्या वस्तु है सो अर्थ समान में नहीं आया है। इसमें भी जैसा था, वैसा लिख दिया है।

(हीखणी) शब्द का अर्थ मेवाड़ी भाषा में नाशिका सुंगने वाली को कहते हैं। और गुजराती भाषा में हीरवणी कपास होता है। यहां हीरवणी कपास ही होता है। उसका होम करे।

काव्य नं. १४

यस्या देवै नरेंद्रै र मरपतिगणैः किन्नरै दानवेंद्रैः।
सिद्धै र्नागेन्द्र यक्षै र्वर मुकुट तटै घृष्ट पादारविंदे।
सौम्ये सौ भाग्य लक्ष्मी दलित कलिमले पद्म कल्याणमाले।
अंबे काले समाधि प्रकट्य परमं रक्षमां देवी पद्मे॥ १४॥

यन्त्र रचना

एक विंशति दल कमलं त्रित्वा, मध्ये, क्ष्म्ल्व्र्यूं स्थाप्य, कमल दले, ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावती सर्व कल्याण रूपे रां रीं द्रां द्रीं द्रौं नमः लिखेत्, तदुपरि षोडश श्रीं कारवेष्टयेत् तदुपरि काव्यं लिखेत्, न नाप्रकारेन् अष्ट द्रव्यै यन्त्र पूजनं कृत्वा, बीज मन्त्र यन्त्र प्रभावात् स्वर्ग लोकस्य, यक्ष, किन्नर, देव, भूत भैरवादि सिद्धि भवति, राजा प्रजा, स्त्री, पुरुषादिक सर्व वश्यं भवति, सौभाग्य लक्ष्मीं ददाति। वृद्धि मोक्ष भवति॥ १४॥

फल व साधन विधि

चतुर्दश काव्यस्य क्ष्म्ल्व्र्यूं बीजं, माया शक्तिमेएक विंशति अक्षरैं। मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावति सर्व कल्याण रूपे रां रीं द्रां द्रीं द्रौं नमः। अनेन मंत्रेण एक विंशति सहस्त्रेण २१००० जाप्य कृत्वा, उत्तर दिशा मुखं कृत्वा, पीत वस्त्र परिधानः। पीत पुष्पे सरसपं च घृत

संयुक्तं होमयेत् सहस्त्र एक विंशति । ४६ दिन मध्ये विद्या सिद्धि भवेत् । अस्य विद्याः प्रभावात् देवाः प्रसन्नं भवति सौभाग्य, लक्ष्मी, प्राप्ति भवति ।

इस यन्त्र को सुगंधित द्रव्य से भोज पत्र पर लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे अथवा सोना, चांदी, तांबा के पत्रे पर यन्त्र लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे तो मन्त्र मन्त्र के प्रभाव से स्वर्ग लोक के देवता यक्ष, किन्नर, देव, भूत, भैरव की सिद्धि होय। राजा, प्रजा, स्त्री, पुरुषादिक सर्व वश्य होय, सौभाग्य, लक्ष्मी की प्राप्ति हो, बंधिखाने से छूटे ।

ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावति सर्व कल्याण रूपे रां रीं द्रां द्रीं द्रौं नमः । इस मन्त्र का २१००० (हजार जाप उत्तर दिशा में मुंह करके पीले वस्त्र पहन कर जाप करे, पीली सरसों, पीले फूल और घी मिला कर २१००० हजार मन्त्र से होम ४६ दिन तक करे तो विद्या की सिद्धि होती है। प्रसन्न होय, सौभाग्य लक्ष्मी की प्राप्ति होय ।

यन्त्र नं० १४
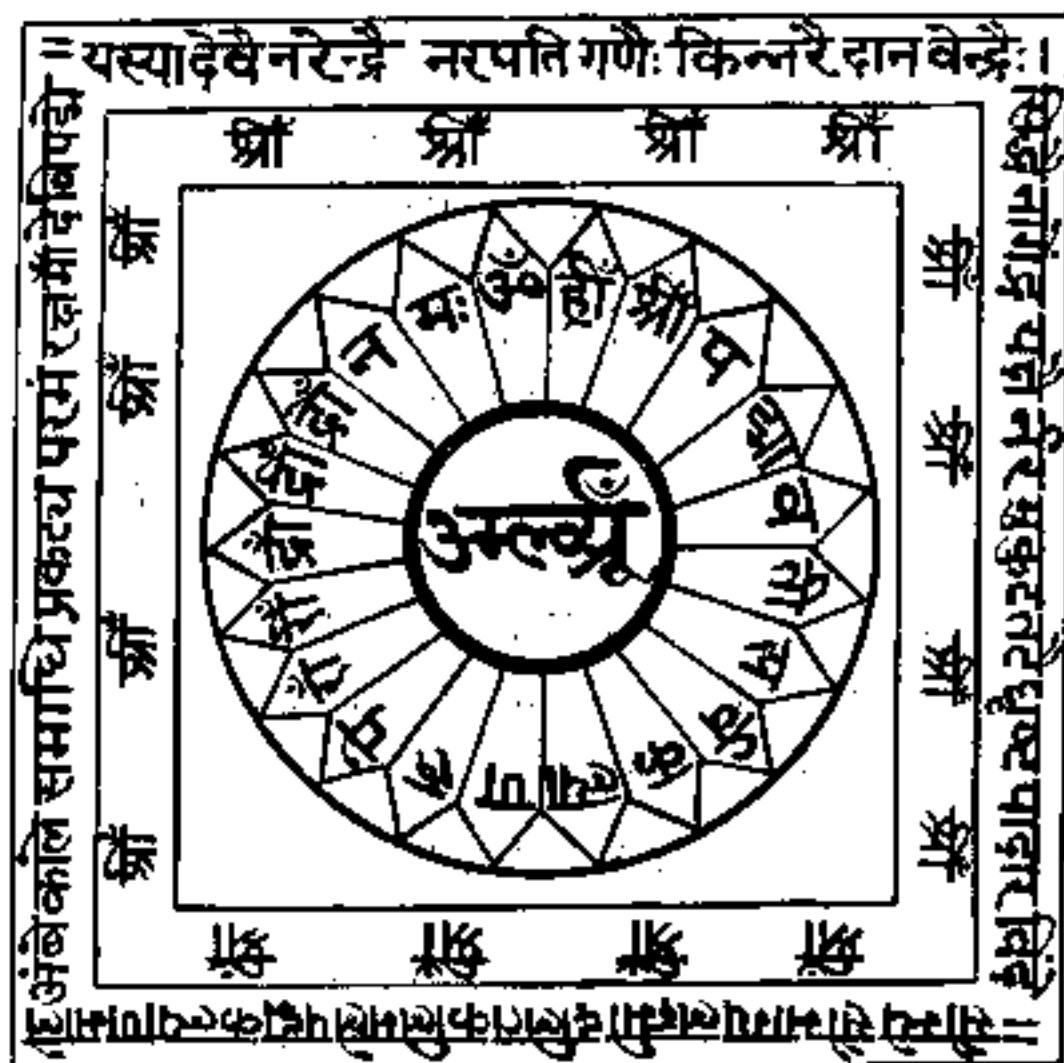
काव्य नं १५

धूपै श्चंदन तंदुलै शुभ महागंधैश्च मन्त्रालिकः ।
नानावर्ण फलैः विचित्र सरसैः दिव्यं मनो हारिभिः ।
दीपैर्नै वेद्य वस्त्रैर नुभवनु करै भक्ति युक्तं प्रदत्वा ।
राज्यं हेल्वां ग्रहाण भगवति वरदे रक्षमां देवी पद्मे ।। १५ ।।

यन्त्र रचना
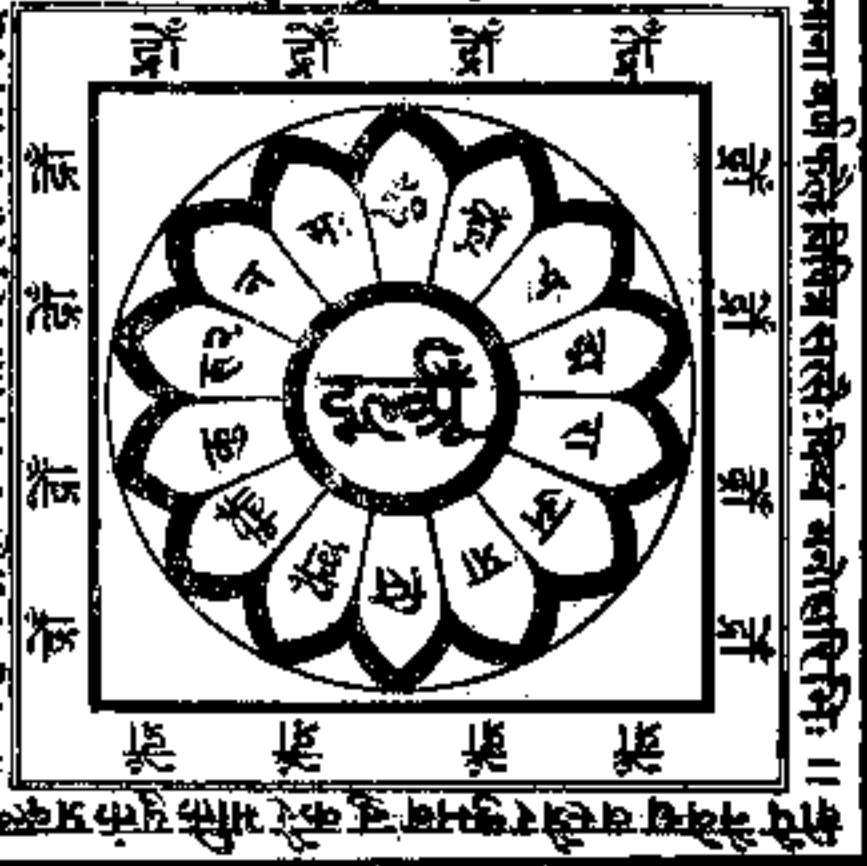
चतुर्दश दल कमलं कृत्वा ह्म्ल्व्र्यूं बीजं मध्ये, स्थाप्य दलेषु मन्त्र । ॐ ह्रीं पद्मे

मन्त्र:—ॐ ह्रीं पद्मे राज्य प्राप्ति ह्रीं क्लीं कुरु २ नमः । अनेन् मन्त्रेण षोड़श सहस्त्र जाप्यं साधयेत, द्विमास द्वयेन राज्य प्राप्ति भवति ।

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर बा सोना चांदी के पत्रे पर लिख कर धूप दीप नैवेद्य पुष्पों से यन्त्र की पूजा करे, तो राज्य का लाभ, संतान की प्राप्ति होती है। और मन्त्र का जाप सोलह हजार करके मन्त्र सिद्ध कर लेवे, तो दो मास में राज्य की प्राप्ति होती है।

काव्य नं. १६

गर्ज्जन्नीरद गर्भ निर्गत तडित् ज्वाला सहस्त्र स्फुरित् ।
सद्वज्रांकुश पास पंकज करा भक्त्या मरै रचिता: ।
सद्यपुष्पित पारिजात रूचिरं दिव्यं वपु बिभ्रति: ।
सामांपातु सदा प्रसन्न वदना पद्मावती देवता ।। १६ ।।

यन्त्र रचना

पंचविंशति दल कमलं कृत्वा, क्ष्म्ल्व्र्यूं मध्ये स्थाप्य, बीजं दल मध्ये मंत्राक्षरं । ॐ नमो धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं क्षां क्षीं प्रों ह्रीं नमः लिखेत् । तदुपरि षोडश ॐ कारेन वेष्टयेत् पश्चात ऊपरि काव्यं वेष्टयेत् वेष्टनं कृत्वा । अष्ट द्रव्येन पूजनं कुरू, यन्त्र, मन्त्र, प्रभावात् कुबुद्धिनाशं भवति तथा पर कृत मारण, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषनादिक कर्मनष्टं भवति दुष्टानां नाशं भवति ।

मन्त्र साधन व फल

षोडशम काव्यस्य क्ष्म्ल्व्र्यूं बीजं, श्रीं शक्ति, पंचविंशति मंत्राक्षरैः । ॐ नमो भगवते धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं क्षां क्षीं प्रों ह्रीं नमः । अनेन मंत्रेण, अष्टादश सहस्त्रेन १८००० जाप्यं कृत्वा श्वेत पुष्प श्वेत, सिद्धार्थ, व नारिकेल संयुक्त दिने होमं कृत्वा, तत्मंत्र सिद्धि भवति, तस्य प्रभावेन, वंध्या पुत्रवति भवति, नवं प्रकारेन् वह्निभयं न भवति ।

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्य से लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे। अथवा सोना, चांदी, व तांबा, के ऊपर खुदवा कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे । तो दुर्बुद्धि का नाश होता है। और परकृत मारण, मोहन, उच्चाटनादिक कर्म का नाश होता है और दुष्टों का नाश होता है।

यन्त्र नं० १६
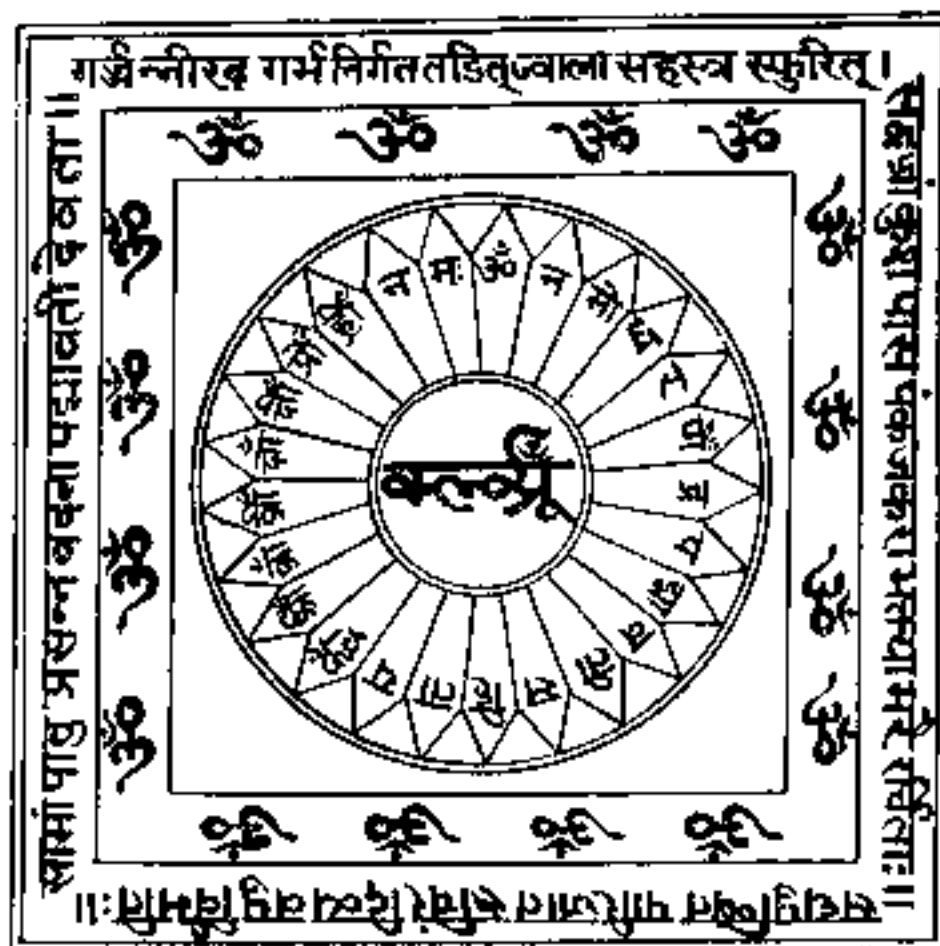
मन्त्र का जाप अठारह हजार (१८०००) जाप करके फिर सफेद फूल और सफेद सरसों और नारियल का गोला तीनो को मिलाकर होम करे, तो मन्त्र की सिद्धि होती है। मन्त्र के प्रभाव से बंध्या स्त्री पुत्रवान होती है, और नो प्रकार की अग्नि का नाश होता है। यन्त्र मन्त्र और काव्य को पास में रखे।

काव्य नं. १७-१८

तारात्वं सुगता गमे भगवती गौरीति शैवागमे ।

वज्रा कौलिक शासने जिनमते पद्मावति विश्रुता ।

गायत्री श्रुत शालिन प्रकृति रित्युक्तासि सांख्यागमे ।
मातर्भारति किं प्रभूत भणितै व्याप्तं समस्तं त्वया ॥ १७ ॥
संजप्ता कणवीर रक्त कुसुमैः पुष्पेश्चिरं सचितैः ।
सम्मिश्रै घृत गुग्गुलोत्म मधुभिः कुंडेस्त्रिकोणी कृतः ।
होमार्थं कुत षोडशांगुल शताम वन्ही दशांसं जपेत् ।
तं वाचं वदसिह देवी सहसा पद्मावति देवता ॥ १८ ॥

अस्य काव्यस्य, ह्रां, शक्ति, म्ल्व्यूं बीजं एकोन विंशति क्षरैः । मन्त्रः— ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं ह्रां ह्रीं आं क्रौं पद्मावति रक्त रूपे नमः । अनेन मन्त्रेण सवालक्ष १२५००० जाप्यं कृत्वा, अष्टांग धूप, दीप, नैवेद्येन ।

यन्त्र रचना

पद्मावति स्वरूप रक्त वर्णं चतुर्भुजा, पद्मासना, अंकुश त्रिशूल, पास, कमल, हस्ते, देव्यापरि नवदल कमलं कृत्वा, तत कमल परिदेष्यादलैः । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रां ह्रीं ह्रः रः लिखेत् । अनेन मन्त्रेण, ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं ह्रां ह्रीं आं क्रौं पद्मावति रक्त रूपे नमः वेष्टयेत् तत् अग्ने होम कुडं कृत्वा दशांस होमं कुरू ।

इस यन्त्र को पद्मावति के आकार का बना कर ऊपर नौ कमल दल बनावे । उसमें

काव्य नं० १७ व १८ का यंत्र

काव्य नं० १९-२०

पाताले कृसता विषं विषधरा धूर्मंति ब्रह्मांडजा ।
स्वर्भूमी पति देव दानव गणा सूर्येन्दु जोतिर्गणा ॥
कल्पेन्द्रास्तुत पाद पंकज नता मुक्तामणि श्चूंबिता ।
सार्थं लोक्य नताः मितिस्त्रि भुवनस्तुत्यास्तुना सर्वदा ॥१९॥

ह्रीं कारे चन्द्रमध्ये पुनरपि वलये षोडशावर्त्त पूर्णं ।
बाह्ये कंठेर वेष्टयां कमलदलयतम् मूल मन्त्रं प्रयुक्तं ।
साक्षात् त्रैलोक्य वश्यं पुरुष वसकृतं मंत्रराज्येंद्र राज्यं ।
एतत्तत्वं स्वरूपं परम पदमिदं पातुमां पार्श्वनाथ ॥२०॥

अस्य द्वय काव्यस्य, रम्ल्व्यूँ बीजं सं शक्ति, त्रिशत् अक्षरेन् मन्त्र ।
ॐ ह्रीं ऐं धरणेन्द्राय विषहर पन्न गरूपाय श्रां श्रीं श्रूं हर हर ह्रां ह्रूं ह्रैं नमः ।

इस विद्या मन्त्र का एक लाख (१०००००) जाप पूर्व की तरफ मुख करके बहुत्तर (७२) दिन तक जाप करे, मन्त्र सिद्ध हो जायगा । मन्त्र सिद्ध होने के प्रभाव से साधक को पाताल वासी विषधर, देव, भूमिजा स्वर्गादि देव, दानव, यक्ष, राक्षस, कल्पेन्द्र, सूर्यादि ग्रह गण, समस्त साधक के चरण कमलों की पूजा करते हैं ।

यन्त्र रचना

करयं देवा, धरणेंद्र देवेन कथं भूतं धरणेन्द्रादि विष हर पन्नग पुरुषाकार स्वरूप द्विभुजा सर्पाकार मस्तके अर्द्ध चन्द्राकार, तन्मध्ये ह्रीं कारे स्थाप्य, पुनरपि षोडश वर्णेन मन्त्रेना ॐ ह्रीं विषहर पन्नग धरणेन्द्राय नमः लिखेत् कंठ देशे रविकारी स्थाप्य मूर्ति अष्टदल कमल मन्त्रेन ॐ ह्रीं ऐं धरणेन्द्राय विष हर पन्नग रूपाय श्रां श्रीं श्रूं हर हर ह्रां ह्रूं ह्रैं नमः वेष्टयेत् अनेन प्रकारेन धरणेन्द्र स्वरूपं कृत्वा ।

ये यन्त्र साक्षात् पुरुष त्रैलोक्य को वशी करता है । मन्त्र का राजा धरणेन्द्र है । लक्ष्मी मनोकामना को देने वाला है ।

नोट :—इस १९-२० के श्लोक की विधि में हमें कुछ अशुद्ध पाठ नजर आता है । क्योंकि जहां

श्लोक में—"बाह्ये कंठेर वेष्टयां कमल दल युतं मूल मन्त्रं प्रयुक्तं।" ऐसा पाठ है। किन्तु हमारी समझ से तो यहाँ— बाह्ये ठं कार वेष्टयं होना चाहिये। समझ में नहीं आता कि कहाँ पाठ बदल गया है। जब तक पूर्ण प्रमाण नहीं मिले तब तक पाठ बदलना ठीक नहीं जमता है। हमने जैसा पाठ था वैसा ही यन्त्र बना दिया। विशेष विद्वान लोग समझें। जितने आजकल उपलब्ध पाठ हैं, उसमें ऐसा ही पाठ है।

काव्य नं० २१

क्षुद्रोपद्रव रोग शोक हरनी दारिद्र विद्रावनी।
व्याल व्याघ्र हरा फण त्रय धरा देह प्रभा भ सुरा॥
पातालाधिपते प्रिया प्रणयती चिंतामणि प्राणिनां।
श्रीमत्पार्श्वजिनेश शासन सुरी पद्मावती देवता॥२१॥

इस काव्य का पाठ करने से क्षुद्रोपद्रव, रोग, शोक, दारिद्र, दुख, दुर्बुद्धि, व्याध्र, सर्प, विष, राज भय, दुष्ट कर्म, मारण, उच्चाटन इत्यादिक, धरणेन्द्र पद्मावती, जो पाताल वासी देव हैं, वह दूर करते हैं।

भक्तयानां देहि सिद्धिं मम सकल कलिमलं देवि दूरी कुरुत्वं।
सर्वेषां धार्मिकानां सतत नियमितं वांछितं पूरयस्व॥
संसाराब्धौ निमग्नं प्रगुण गुण युत जीवराशिं च त्राहि।
श्री ज्जैनेन्द्र धर्म्मं प्रगटय विमलं देवि पद्मावति त्वं॥२२॥

मातः पद्मनि पद्मराग रुचिरे पद्मप्रसूनानने।
पद्मे पद्म वनस्थिते परि लसत्पद्माक्षि पद्मालये॥
पद्मा मोदिनी पद्मराग रुचिरे पद्म प्रसूनार्चिते।
पद्मोल्लासिनि पद्म नाभि निलये पद्मालये पाहिमां॥२३॥

दिव्य स्तोत्रं पवित्रं पटुतर पठितं भक्तिपूर्वं त्रिसंध्यं।
लक्ष्मी सौभाग्य रूपं दलित कलिमलं मंगलं मंगलानां॥
पूज्या कल्याण मालां जनयति सततं पार्श्वनाथ प्रसादात्।
देवी पद्मावती नः हसित वदना संस्तुता दानवेंद्रैः॥२४॥

काव्य यंत्र नं० १९-२०

नोट:-कंठ में अष्ट दल कमल है इसमें ये मंत्र लिखें-ॐ ह्रीं ऐं धरणेंद्राय -

श्री चक्रेश्वरी देवी

या देवि त्रिपुरा पुराश्रयगता शीघ्रासि शीघ्रप्रदा ।
या देवी समया समस्त भुवने संगीयते कामदा ॥
तारामान विमर्दनी भगवति देवी च पद्मावती ।
सास्ता सर्वगतास्त्वमेव नियतां मातेति तुभ्यं नमः ॥२५॥

पद्मासना पद्मदलाय ताक्षी पद्मानना पद्म करा हि पद्मा ।
पद्म प्रभा पार्श्व जिनेन्द्र यक्षा पद्मावती पातु फणीन्द्र पत्नी ॥२६॥

पठितं भणितं गुणितं जय विजय पराजितं धनं परमं ।
जयं च सर्व व्याधि हरं जयति श्री पद्मावती स्तोत्रं ॥२७॥

प्रथमं हरति घोरोपद्रवं दुर्न्निवारं ।
द्वितीय मपि च हन्या घातिघातं समस्तं ॥

तृतिय हरति मारीं तुर्यकं शत्रु शोकम् ।
शर जकुनवशकारी षष्ट कोच्चाटनघ्नं ॥२८॥

मुनि युग विष नाशं चाष्मो द्वे गहन्यात् ।
मन वच वपु गुह्या भावयुक्तेन नित्यं ॥२९॥

स्मरति न मति पादयो विदध्यात् त्रिकालं ।
स भवति मति पूर्णः पापपंकं विमुक्तः ॥३०॥

[illegible]
[illegible] देवि ध्यानाद् भवन्ति ॥३१॥

सद्ध्यानाद् देवि जालादिपुर नर भुजगैश्वर्य मारोग्य मुक्त ।
नागेन्द्रे स्तं, ग देहं मदं गलति कटं कोप मुक्तं द्विरेफैः ॥३२॥

वाजिनां द्वंद्व वृंदैर्जल भुवि खचरं वायु वेगं मनोज्ञं ।
तारुण्यं दिव्य रूपं सुर युवतिनिभं भक्त चेतोनुगम्यं ॥३३॥

त्वत्ना मस्मरणाद् भवन्ति भुवने वागीश्वराणां विभुः ।
लक्ष्मी निर्भर माप्नुवंति च यशोहंसाज्ज्वल निर्म्मल ॥३४॥

त्वत्पादार्चनया नमन्ति च स्वयं भूमिश्वराणां प्रभुः ।
पुत्राप्तिर्वर बन्धु गोत्र विमल वस्त्रं च नाना विधं ॥३५॥
त्वन्नाम स्मरणाद् ब्रजंति नितरां हारंति च दुर्जनाः ।
भूत प्रेत पिशाच राक्षस सुराः दुष्टाग्रहा व्यन्तराः । ३६ ।
डाकिन्योऽसुर दुष्ट शाकिनी गणाः सिद्धादयश्चोरगोः ।
दन्ती वृश्चिक दुष्ट कीटक रुजाः दुर्भिक्ष दावानलः ॥३७॥
त्रुटयंति शृंखल बन्धनं बहुविधैः पाशैश्च सन्मोचनं ।
स्तम्भे शत्रु जलाग्नि दारुण महि नागारि नाशेभयम् ॥
दारिद्रय ग्रहरोग शोक शमनं सौभाग्य लक्ष्मीप्रदं ।
ये भक्त्या भुवि संस्मरन्ति मनुजास्ते देवि नाम महत् ॥३८॥
यां मन्त्रागम बुद्धिमान वितनोल्लास प्रसादार्पणां ।
यां दुष्टाशय क्लृप्त कार्मणगण प्रध्वंस दक्षाङ्कुशां ॥
आयु वृंद्धिकरां जरामय हरां सर्वार्थ सिद्धि प्रदां ।
सद्य प्रत्यय कारिणीं भगवती पद्मावतीं संस्तुवे ॥३९॥
आह्वानं नैव जानामि न जानामि विसर्जनं ।
पूजामर्चां न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि ॥४०॥
अपराध सहस्राणि क्रियान्ते नित्य शोमया ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देविप्रसीद परमेश्वरी ॥४१॥
आज्ञा हीनं क्रिया हीनं मन्त्र हीनं च यत्कृतं ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरी ॥४२॥
॥ इति ॥

ॐ

श्री चक्रेश्वरीदेवी स्तोत्र यन्त्र मन्त्र (हिन्दी) विधि सहित

स बीज मन्त्र यन्त्र गभित चक्रेश्वरी स्तोत्रं लिख्यते ॥

श्री चक्रे चक्र भीमे ललित वर भुजे लीलया लालयन्ती ।

चक्रं विद्युत्प्रकाशं ज्वलित शत शिखे खे खगेन्द्राधिरूढे ॥
तत्त्वै रूद्भूत भासा सकल गुण निधे मन्त्र रूप स्वकान्ते ।
कोट्यादित्य प्रकाशे त्रिभुवन विदिते त्राहि मां देवि चक्रे ॥१॥

टीका :—हे चक्रे 'देवि' त्वं 'मां' त्राहि रक्ष पालय, कथं भूतं हे चक्रे, श्री चक्रे 'चक्रेण भीमे, भयंकरे पुनर्ललित वर भुजे, चक्रं 'लीलया' लालयन्ती, कथं भूतं, चक्रं, विद्युद्वत्प्रकाशा, यस्य तत्, पुनर्ज्वलित, शतशिखं, ज्वलिता दीप्ताः, शतशिखां, शतानि, शिखा, यस्मिन्, तत् पुनः कथं भूते, देवि खे, आकाशे, कोट्यादित्य प्रकाशे, कोटि सूर्यं प्रकाशे पुनः खगेन्द्राधिरूढे, गरुडा रूढे, पुन, स्तत्त्वै, स्सप्त तत्त्वं रूद्भुताया भास, स्तया सकलगुण निधे, हे मन्त्र रूप स्वकान्ते, हे त्रिभुवन विदिते त्रिलोक प्रसिद्धे त्वं 'मां' त्राहि योजनीयं चेति पदार्थः ।

शान्ति कर्म

॥ यन्त्रोद्धार ॥

अस्य 'तत्वं' समुद्ध्रियते 'श्रीचक्रे' अंतश्चक्रे, अभ्यंतर कर्णिकायां 'खे' चक्र भीमा गरुडा रूढा भुजे 'चक्रं' लालयन्ती इ 'रूपा' लक्ष्मी रूपा त 'तत्वं श्रीचक्रे अष्टार चक्रे श्री बीजं लेखनीयं चक्रशब्देनाष्टार चक्रं—गृह्यते पुनस्तत्त्वै स्सप्त तत्वं बीजैं रूद्भूता 'या' कान्ति, स्तया, सकल गुण निधे, रितिपदेन कलाभिः षोडश कलाभिः गुणैरष्ट बीजाक्षरै स्तथा निध्याक्षरै स्तथा, मूल मंत्रेण रूपं वेष्टियित्वा ध्यातव्या ।

अस्य मन्त्र :

ॐ ऐं श्रीं चक्रे चक्रभीमे ज्वल २ गरुड पृष्ठि समारूढे ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

विद्युद्बीजं 'ऐं' तत्वानि आमादीनि चेतिज्ञेय ॥

अथ विधि :

पूर्वादिक् 'आसन' 'पद्मासनं' प्रभातः कालः वरद मुद्रा इत्यादि को ज्ञेयः । शान्तिः कर्मणः फलं सकल गुण लाभो निधि लाभश्चेति ज्ञेयः ।

यन्त्र नं० १

बीजोत्पत्ति समुद्देशः

सूच्यते 'बीज कोशतः, विज्ञानार्थं प्रतीत्यर्थं', फलं, तेषां, पृथक २ तत्वानि, कामी' सप्तैव, आं वां ह्रां तां रां लां धां इति च भवन्ति, गुणा अष्टौ वे असि आउसा ह्रीं श्रीं क्ष्वीं गुण अष्टौ प्रकीर्त्तिताः इत्युक्तं नव निध्यक्षराणि इह कानि संति जिनागमे गूढानि, चान्य शास्त्रेषु विना विद्यानुशासनात् । ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं आं क्रों क्षीं, एतानि नव बीजानि निधिनां चार्थ संज्ञया नव भेदाः प्रणीताः स्यु, कर्म्मणां च पृथक प्रदा इत्युक्ते कान्ति बीजं (क्लीं) भवेच्च सर्व कामार्थं साधकं च चक्र बीज माख्यातं चक्रे चक्रे पृथक २ इत्युक्ति गूढा अर्थतेषां फलोदश माह आकारः सूरि वर्गस्यात् मकारः साधुवर्गं तत्संयोग भवा सिद्धिः प्रथमे तत्व बीजके ।१।

सरस्वति देव्यो 'जैनाः' शासन भाक्तिकाः शक्ति रूपा एक रूपा ध्यातव्या वर देवता यासां प्रतीति सिद्धयर्थं पुरु नैश्यत्य सम्मतीः इति विद्यानुशासनोक्तः मल्लिषेणाचार्यः ।।

क्लीं क्रोधीशो बल भेदी च धूम्रं भैर व्यल क्रमः नाद बिन्दु समायुक्तः कामराजः परः स्मरः । क्रोधीशः ककारा बलभेदी 'लकारः' ब्लू व भयं करो बलभिलंदा युक्तो नाद युतो भवेत् विदारी भूषितो भूतः संज्ञया द्रावणो मनः ।

द्रां द्रीं द्वयं काम युगं रति काम द्वयं प्रदं उत्पति बीज कोशाच्च मोहने कर्म्मणि स्मृता ।४।

आ 'बीजं' पाश बीजं स्यात् क्रों बीजं त्वं कुशाह्वयं क्षीं बीजं पृथ्वी बीजं त्रिण्यापि प्रीति कारणं ।

चण्डेन 'कविना' प्रोक्ता निधियो' 'नव' किं न च, लिखितारचेति प्रश्नेचोत्तरं शृणत भाक्तिकाः ।

ह्रां ह्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षें ह्रूं ह्रौं ह्रः इत्येता निधियो मताः । वश्याकर्षण उन्मादोच्चाटन स्थम्भनानि च तुष्टि पुष्टि शरीरस्य धातु वर्द्धनं कारिकाः, इत्युक्ते स्ताः कथं ने 'त्युरमाहा, काव्येऽस्मिन नव कर्माणि नोक्तान्य स्मात् कृतानि च, मोहना कर्पणं शान्ति पुष्टि मुख्यान सन्ति चातः पृथक, उक्तानि, इति संक्षेपतो बीज विषयं फलं प्रथम काव्यस्य गतं ।।

यन्त्र रचना

यन्त्र रचना इस प्रकार करे । वलया कार छ घेरे बना कर बीच कर्णिका में, गरुडारूड अष्ट भुजा वाली चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति बना कर अष्ट दल वाला प्रथम वलय में कमल बनावे । और कमल के प्रत्येक दल में श्रीं, बीज की स्थापना करे, आठों ही दल में आठ श्रीं बनावे । द्वितीय वलय में क्रमशः आं वां ह्रां तां रां लां धां की स्थापना करे । तृतीय वलय में अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः, इन सोलह स्वरों की स्थापना करें । चौथा वलय मे क्रम से, असि आउसा ह्रीं श्रीं क्ष्वीं, इन बीजाक्षरों को लिखे । पंचम वलय में ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं द्रूं (ह्रूं) आं क्रों क्षीं इन नों नीधि रुप बीजाक्षरों को लिखे, फिर सप्तम वलय में मूल मन्त्र इस श्लोक का है वह लिखे ।

मूल मन्त्र :— ॐ ऐं श्रीं चक्रे चक्र भीमे ज्वल २ गरुड पृष्टि समा रूढे ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा ।

इस मन्त्र को लिखे। इस स्तोत्र के प्रथम काव्य का यह नं० १ यन्त्र का स्वरूप बना।

इस प्रकार के यन्त्र को तांबा, सोना, चांदी, अथवा भोज पत्र के ऊपर खुदवा कर यन्त्र सामने रख कर, मूल मन्त्र का पूर्व दिशा में पद्मासन से प्रातः काल, वरद मुद्रा से साढ़े बारह हजार जप करे, यन्त्र पास में रखे तो सर्व शांति होती है, सर्व गुणों का लाभ होता है और नाना प्रकार की निधि का लाभ होता है। धन की वृद्धि होती है। भोज पत्र पर यन्त्र लिखना हो तो सुगन्धि द्रव्य से लिख कर पास रखे, ताबीज में धारण करे।

मूल मन्त्र :—ॐ ऐं श्रीं चक्रे चक्र भीमे ज्वल २ गरूड पृष्टि समारूढे ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

इसी मूल मन्त्र का साढे बारह हजार जप करना है।

अथः द्वितीय श्लोक

क्लीं क्लीन्ने किल प्रकीले किलि-किलि त खे दुंदभिध्वाननादे।
श्रां हुं क्षुं ह्रीं सु चक्रे क्रमसि जगदिदं चक्र विक्रान्त कीर्त्तिः॥
क्षां श्रां ऊं भासयंति त्रिभुवन मखिलं सप्त तेजः प्रकाशे।
क्षां क्षीं क्षूं विस्फुरन्ति प्रबल बल युते त्राहि मां देवि चक्रे।२।

टीका :—हे चक्रे, देवि, त्वं मां त्राहि रक्ष २ कथं भूते चक्रे क्लीं क्लिन्ने क्लीमित्यस्य 'कोर्थः' नित्ये काम साधिनि पुनः कथं भूते क्लिन्ने काम रूपे मनोभिष्ट साधिनि पुनः कथं भूते किल प्रकीले मुखात् किलं प्रकथके थ 'त' एव किलि-किलि त खे सज्ञा शब्दः किलकिलोति संज्ञा रूपः संजातो यस्मिन् सः किलकिल तो र वः शब्दा यस्याः पुनः कथं भूते दुंदुभि ध्वान नादे, दुंदुभि ध्वानवत् नादो यस्याः सा त्वं चक्र विक्रान्त कीर्तिः दश दिशा व्याप्त कीर्ति श्रां हुं क्षुं ह्रीं सु चक्रे इदं जगत क्रमसि है सप्त तेजः प्रकाशे बल वीर्य पराक्रम द्युति मति पुष्टि तुष्टि सप्त तेजांसि तेषांप्रकाशे क्षां श्रां उँ त्रिभि र्बीजैं स्त्रि भुवनं "भाष्यन्ति ई रूपा" सि क्षां क्षीं क्षूं प्रबल बलयुते विस्फुरन्ति दर्शी 'त्वं' म सीत्यर्थः—

अथ यन्त्रोद्धार

चक्र विक्रान्त कीर्ति रिती पदेन षट् कोण चक्रे कर्णिकायां समूर्तिःकीर्तिः। कोणेषु षट् सु श्रां हुं क्षुं ह्रीं चक्रे इति षट् बीजानि उपरी किल क्लिन्ने किल नित्ये किलि किलि इति क्षां

आं उँ इति दक्षिणे उत्तरे सप्त तेजांसि लेख्यानि अधः क्षां क्षीं क्षूं प्रवल वलेति पदानि चेत्यु-द्धारः।

अथ मन्त्रोद्धारः

ॐ क्लीं क्लिन्ने क्लि नित्ये नमः १ उँ आं हुं क्षुं ह्रीं नमः २ ॐ क्षां आं ॐ नमः ३ ॐ चक्रे क्षां क्षीं क्षूं प्रबल बल स्वाहा ४

एतानि मन्त्राणि चत्वारि अस्मिन् काव्ये सन्ति।

अथ विधि

पुष्टि कर्मणः सप्त दश नियमा ज्ञातव्याः फलं च तेजः प्रताप वृद्धि दिव्य वाचा लाभ श्चेति ज्ञेयः।

अथ बिजोत्पत्ति

क्लीं स्वरूपं क्रोधीशं वल भी संस्थ धूम्र भैरव्य लं कृत 'विद्विंदु संयुतं' बीजं द्रावणं क्लेदनं स्मृतं इति।

प्रथमस्य काम बीजस्य किल 'क्रोधीशं' बल भी संस्थं रुद्र भैरव्य लं कृतं विद्विन्दु संयुतं बीजं चंड कर्म फलं स्मृतं, इकारो गर्ज्जिनी चण्डा तथा च रुद्र भैरवी त्युक्तेः प्रेत्यस्य मकारस्तु कपर्द्दी स्यात् 'र कार' क्ष तेजो भवेत्।

संयोगेन भवे द्वश्य कारी प्रो बीज उत्तमः किलि २ क्रोधीशो, वज्र भेदी, चण्डी, बीजेण संयुतः फलेन काम रूपत्व मोहने वश्य कर्मणि, इत्युक्ते, आकारे नाम सौ काले नाद विन्दु समा-श्रिते, पाश बीजं फलं दुष्ट निग्रहः प्रति पादित मित्युक्तो हूं थ्यंमास्यं काल वज्राढ्यं नादिनी बिन्दु संयुतं, हूँ फलं निधि प्रदानं च 'क्षं' त्रैलोक्य ग्रसनं बीजं काल वक्त्रान्वितं परं क्षुं बीजं साद्धं विद्धि कं फलं च कर्षणं परं चेति 'ह्रीं' युक्त फलं त्रैलोक्य ग्रसनं ध्येयं, पाश बीज समन्वितं तेजः प्रताप सिद्धयर्थं पाश, प्रणवः, संयुत सप्त तेजां सिरं बीज सप्तकं वा थ वेदकं तस्यां पि सप्त कं बोध्यं शं अं वं रं तं कं गं इति क्षां क्षीं क्षूं आं काल रात्रिः ई धूम्र भैरवी 'ऊ' विदारी च संयोगात् फलानि च 'तेजः' प्रतापादिव्य वाचा लाभश्चेति बोध्यं।

मूल मन्त्र :—ॐ क्लिं क्लिन्ने क्लिं नित्ये नमः।१।

ॐ आं हुं क्षुं ह्रीं नमः।२।

ॐ क्षां आं ॐ नमः ।३।

ॐ चक्रे क्षां क्षीं क्षूं प्रबल बल स्वाहा ।४।

इस श्लोक में व यन्त्र में, ये चार प्रकार का मन्त्र पाया जाता है। इन मन्त्रों का जाप पुष्टि कर्म के लिए जपना चाहिये। इसके लिये १७ प्रकार के नियम जानना चाहिए।

यंत्र नं० २
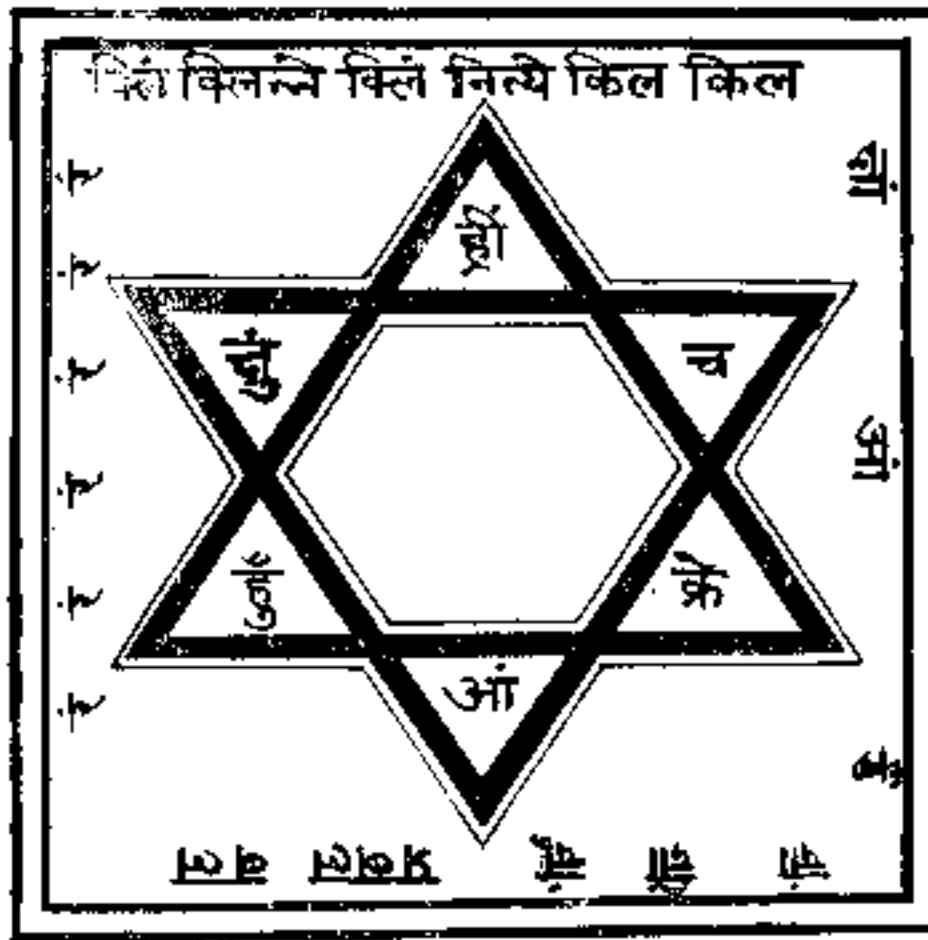
यन्त्र लेखन विधि

पहले षट् कोणा कार बनावे। बीच में चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति का आकार बनावे, फिर षट्कोण की कणिका में क्रमशः नीचे वाली प्रथम कणिका में आं लिखे फिर दूसरी कणिका में 'हुं' लिखे, तृतीय कणिका में 'क्षुं' लिखे, चतुर्थ कणिका में 'ह्रीं' लिखे, पंचम कणिका में 'च' लिखे, छठी कणिका में 'क्रे' लिखे। षट् बीजों के ऊपर किल किलन्ने किल निल्ये किलि किलि, लिखे, क्षां आं ॐ लिखे, दक्षिण में और उत्तर में सात रं रं रं रं रं रं रं कार तेज बीज को लिखे, नीचे क्षां क्षीं क्षूं प्रबल बल लिखे। ये यन्त्र रचना इस प्रकार हुई।

इस यन्त्र को तांबा, सोना या चांदी पर खुदवा कर, पास रखने से, वाक् सिद्धि (वचन सिद्धि) होती है। तेज बढ़ता है। प्रताप बढ़ता है।

मूल मन्त्र जो उपरोक्त चार प्रकार के हैं, उनका जप पुष्टि कर्म के लिए विधि पूर्वक करना चाहिये। जप करते समय गुरु से पूछ कर पूर्ण विधि विधान ज्ञात कर जप करे। प्रत्येक मन्त्र का सवा सवा लाख जप करने से, तेज व प्रताप बढ़ेगा और दिव्य वचन का लाभ होगा।

अथ तृतीय काव्य

मोहन कर्म

श्रूं श्रौं द्रूं प्रूं प्रसिद्धे सुजन जन पदानां सदा कामधेनुः।
ग्रूं क्ष्मीं श्रीं कीर्ति बुद्धि प्रथयति वरदे त्वं महा मन्त्र मूर्ते।
त्रैलोक्यं क्षोभयंति कुरु कुरु हरहं नीर नाद प्र घोषे।
क्लीं क्लि ह्रीं द्रावयन्ती द्रुत कनक निभे त्राहि मां देवि चक्रे ॥३॥

टीका :—हे चक्रे देवि त्वं 'मां' त्राहि रक्ष रक्षेति श्रूं श्रौं द्रूं प्रूं इति मन्त्रेण। 'प्रसिद्धे' हे चक्रे देवि त्वं सुजन जन पदानां सुष्ट जनाः सुजनाः स्तेषांये जन पदाः देशाः तेषां त्वं सदा सर्व स्मिन् काले 'काम धेनु रसि' पुनः कथं भूते, हे वरदे हे महा मन्त्र रु मूर्ते त्वं ग्रूं क्ष्मीं श्रीं इति त्रिभिर्म्मंत्र बीजाक्षरैः श्री कीर्ति बुद्धि प्रथयसि 'पुनः' कथं भूते हे नीर नाद प्रघोषि जलद् नाद शब्दे कुरु २ हर हं इति मन्त्रेण त्रैलोक्यं क्षोभयंती हे द्रुत कन कनि भे द्रुत तप्त षोडश वर्णिक स्वर्ण कान्ते क्लीं किल ह्रीं स्त्री द्राव यन्ति त्यसि चास्मिन् काव्ये चतुर्भिः पादै काम धेनु त्वं प्रथम पदेन मनोभिप्सित कार्ये साधने द्वितीय पदेन श्री कीर्ति बुद्धि प्रथनत्वं तृतीय पदेन त्रैलोक्य क्षोभणत्वं तुर्ये पदेन स्त्री द्रावण त्वं सूचित मित्यर्थः।

अथ यन्त्रो द्धार

षट कोण चक्रं स मूर्तिकं पूर्ववत् कृत्वा पश्चादुपरि श्रूं श्रौं द्रूं प्रूं लिख्यते ग्रूं क्ष्मीं श्रीं दक्षिणे उत्तरे हर हं कुरु २ अधः क्लीं किल ह्रीं चक्रे इति यन्त्रो द्धारः।

अथ- मन्त्रो द्धार

ॐ श्रूं श्रौं द्रूं प्रूं ग्रूं क्ष्मीं श्रीं कुरु २ हर २ हं क्लीं किल ह्रीं चक्रे स्वाहा।

मोहन कर्मणः सर्वों ज्ञातव्यः फलं श्री कीर्ति बुद्धि विस्तृति, क्षोभण, द्रावण, वशी करणानि च ज्ञातव्यम् ।

अथ बीजोत्पत्ति

भ्रूं शरचंडीश रः क्षतजः ॐ विदारी 'मः' महाकालः चतुः संयोग फलं वशीकरणं भ्रौं भ्रूः बाल मुखः रः क्षतजः ॐ डाकिनी मः महाकालः' चतुः संयोग फलं डाकिनी तिरस्कारः दः वलिः रक्षतजः ॐ विदारांमः 'काल' इति चतुः संज्ञः काम बीजात् द्रावणं फलं पः 'कपर्दी' रः क्षतजः ॐ विदारी मः महाकाल इति चतुः संयोगात् ग श्वंडः ॐ विदारी मः महाकालः त्रि संयोगात् वर सिद्धि फलं, क्षः त्रैलोक्य (ग्रसितं) ग्रसनं मः महाकालः ई धूम्र भैरवी 'मः' महा कालः क्ष्मी शत्रु संहारः फलं श्रीं लक्ष्मीं बीजं साधनं पूर्व मुक्तं हः शून्यं रः अग्नि बीजं हं व्योम वक्त्र' फल हर हैं त्रयाणां, ओंः शून्यं 'फल' क्लं। किंः ह्लौं पूर्व मुक्त फल साधना । इति :—

यंत्र नं० ३

अथ मन्त्रः

ॐ क्षु द्रां ह्रीं असि आउसा क्ष्वीं क्लीं ब्लीं मोहय २ मोहिनी स्वाहा ॐ असि आउसा क्ष्वीं ब्लीं कर्माणि शोषय २ र्रं र्रं र्रं र्रं र्रं धग २ ज्वालय २ स्वाहा।

'ॐ श्लीं श्लीं श्लें श्लैं विजये जये रौद्र मूर्त्ते त्रिनेत्रे स्वाहा। ॐ वज्र क्रोधे चक्रेसु भीमे भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः चक्रं भ्रामय २ स्वाहा। इत्येवं चत्वारि मंत्राणि मोहन शोषण विजयो उच्चाटनानां पंचमो वरदः विधि पञ्च कर्मणां ज्ञेयः फलं लिखित मेव।

अथ बीजोत्पत्ति

ॐ अ अरिहंत अ शरीर 'अ' आचार्य 'आ' स वर्ण दीर्घ त्वा 'दा' उपाध्यायस्य ऊ पदेन ओ इति मुने मंकारस्य अनुस्वारेण कृते, सिद्ध फल मिति मोक्ष रूपं क्षः त्रैलोक्यग्रसनं उं काल त्रयश्च क्षोभणं, फलं द्रां काम बीजं 'ह्रीं' मोहन बीजं (श) स्वंडीशः सः लः बल भेदी 'ए' ऊर्द्ध केशी ऐ उग्र भैरवो श्लें श्लैं फलं आलिंगनादि करणत्वं फलं रः क्षत जः काल

यन्त्र नं० ४

वक्त्रा 'ऊ' विदारी ऊ डाकिनी बीजं एतत्त्रयं मोहन बीजं रू शोषण बीजं रू उच्चाटन बीजं रौं हुः सकल शून्यं। 'इति' च फलं।

पूर्वोक्त प्रकार से षटकोणाकार यन्त्र रचना करे। षट्कोण के प्रथम कर्णिका से क्रमशः आं, हुं, क्षुं, ह्रीं, च, क्रे, लिखे, फिर यन्त्र के चारों तरफ मूल मन्त्र लिखे।

ॐ क्षुं द्रां ह्रीं मोहय २ मोहनी। श्ली श्लीं श्लें श्लं विजये जय जय। ह्रूं ह्रूं रौं ह्रः कराले वरदे रक्ष २। भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः चक्रं भ्रामय २।

इन बीजाक्षरों को षट् कोण यन्त्र के चारों तरफ लिखे।

इस यन्त्र को चांदी के ऊपर खुदवा कर, मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप यन्त्र के सामने जप करे, प्रत्येक कार्य के लिये प्रत्येक मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप करे तो क्रमशः मोहन, शोषण, विजय उच्चाटन, होता है। मन्त्र पहले इसी काव्य में लिखा है।

अथ पंचम काव्य वशीकरणार्थं

ॐ ह्रीं हुं हुं सुहर्षे हं ह ह ह हिम कुन्देन्दु सं काश बीजैः।
ह्रां ह्रीं ह्रू क्षः सुवर्णैः कुवलय नयनेद्विद्रु मा द्रावयन्ती॥
हं ह्रौं ह्रः क्ष स्त्रिलोकी ममृत जलधरा वारुणैः प्लावयन्ती।
भ्रां भ्रां ह्रूं सः सु बीजैः प्रबल बल भया त्राहि मां देवि चक्रे॥५॥

टीका :—हे देवि चक्रे त्वं मां त्राहि 'रक्ष २' कस्मात् भयात्। कथं भूते भ्रां भ्रां ह्रूं सः प्रबल बलेति सु बीजैः भय—नाशके पुनः कथं भूते चक्रे हिम कुन्देन्दु संकाश बीजै ध्यातैः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं लक्षणैः सुहर्षं 'पुनः' कथं भूते, ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षः सुवर्णं द्वि द्रुं द्रुं द्रूं द्रूं सर्व जनान योषि तश्च आद्रावयन्ती मोहयन्तीं 'पुनः' कथं भूते हं ह्रौं ह्रः क्षः पदां कितैः अमृत जलधरा वारुणैः त्रिलोकी प्लावयंती त्वं रक्षत्यर्थः।

अथ यन्त्रोद्धार:

पूर्ववत् स मूर्तिकं षट् कोणं चक्रं मारभ्यः स बीजं कृत्वा, ऊपरि ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह ह ह हेति विलिख्य दक्षिणे ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षं द्रुं द्रूं चेति विलिख्य 'उत्तरे' च, हं ह्रौं ह्रः क्षः त्रिभुवन बीजानि च अधश्च भ्रां भ्रां ह्रूं सः प्रबल बलेति चेति संलिख्य अमृत बीजेन वेष्टयित्वा जलधरा वारुणे प प्लावयन्ती तिध्यातव्येत्यर्थः।

मन्त्रोद्धार:

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह ह ह ह द्रूं ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षः द्रावय २ मोहय २ स्वाहा।

ॐ हं हां हीं हः क्षः भ्रां भ्रां हं सः प्रबल बल चक्रे स्वाहा ।

वशीकरण विषयोऽपिसर्वों विधि र्बोधव्या फलं च द्रावण आकर्षण मोहन वशीकरणा-निचेति संबोध्यं ।

अथ बीजोत्पत्ति

ॐ अ विद्युजिह्वा 'उ' काल वक्त्रा सयोगे द्वयोः उईति मः महाकालः उं इति शत्रु
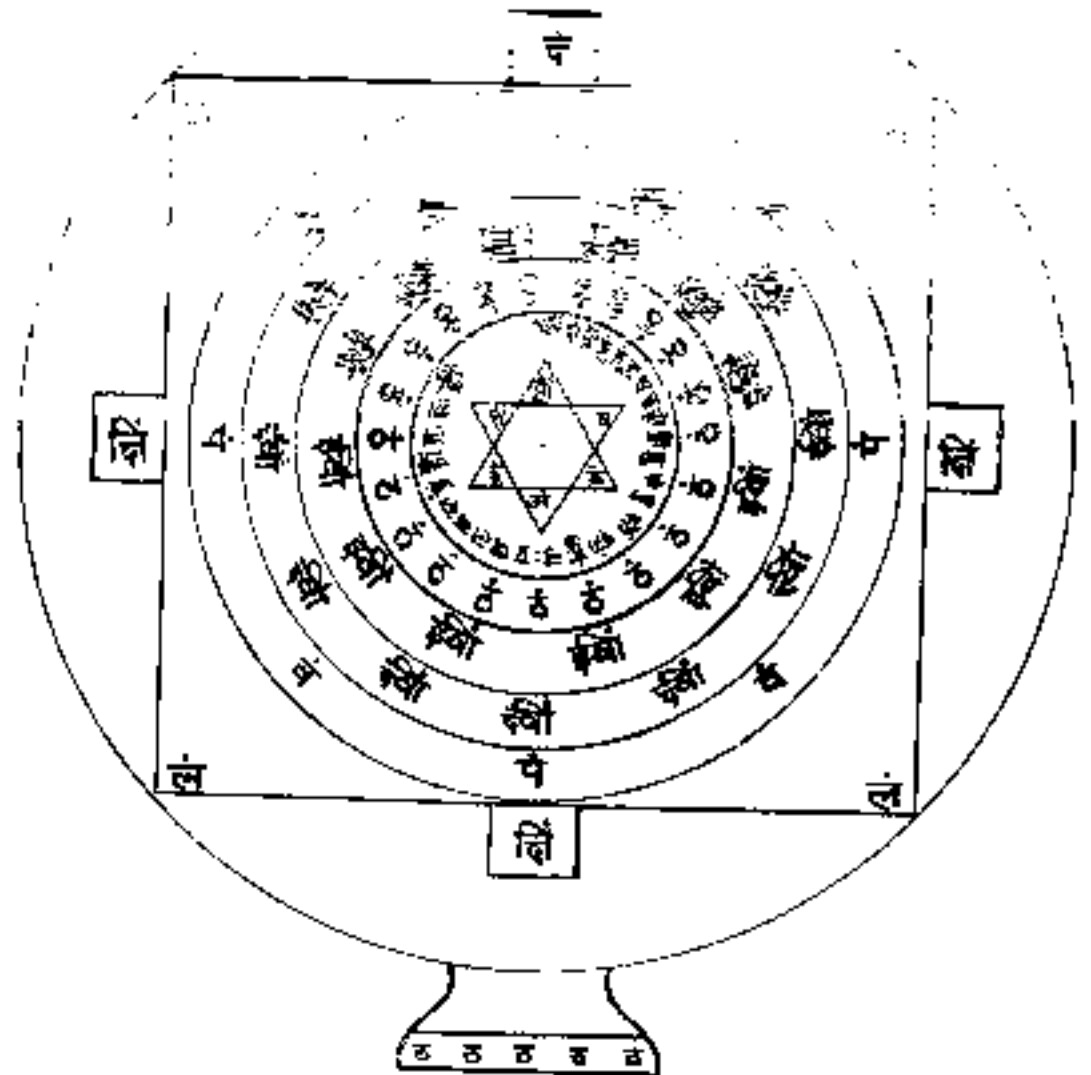
समायुक्त बीजं प्राथमिकं स्मृतं, षट् कर्म सिद्धि करणं फलं ज्ञेयं । हुं काल वक्त्र यु

च स्तम्भन ज्ञेयं र कारं तदा कर्षणं हूं मोहनात्मकं विदारी युक्त व्योमास्यं रूद्र डाकिन्यं

कफलं

ल कृतं

नाद बिन्दु समायुक्तं ह्रं ह्रं बीजद्वयं भवेत् । चतुः शून्यं हकारः स्यात्फलं क्रोधाग्नि वारुण विषानां स्तंभ करणं विज्ञेय विजकोशतः द्रु द्रु कामरतीख्याले ह्रां ह्रीं ह्रूं क्षः उक्तफलाः हं ह्रीं हः रुद्र डाकिनी भीमाक्षी चण्डिका संयोगात् त्रिलोक वशीकरणात्मकाः भ्रां भ्रां ह्रूं सः भ्रौं धालमुखः आ कालरात्रीः तत्फलं बलभय हरणं भ्रौं बालमुखः रं क्षतजः आ काल रात्रीः फलं रोगः हरणं ह्रूं फलमाकर्षणं सः धूम ध्वजः स विसर्गस्तत्फलं परदेश गमनं फलं इति ।

इस यन्त्र को तांबे के पत्रे पर या चांदी सोने के पत्रे पर खुदवा कर पूजन करें पश्चात् ऊपर लिखित दोनों मन्त्रों का पृथक २ जप करे, जिसका कार्य के लिये जपना है। वशीकरण विधि में भी सर्व प्रकार की विधि जानना चाहिये । इन दोनों मन्त्रों को अलग २ जप साढ़े बारह हजार करने से द्रावण, आकर्षण, मोहन, वशीकरण आदि होता है । जप विधि पूर्वक करना चाहिए ।

शोभनार्थं षष्टम काव्यम

आं क्रों ह्रीं क्षुयुतांगे प्रलय दिन करास्तस्य कोटि प्रकाशे ।
अष्टौ चक्राणि धृत्वा विमलः निज भुजैः पद्ममेकं फलं च ।।
द्वाभ्यां 'चक्रं' करालं निशित चल शिखं तार्क्ष्यं रूढा प्रचण्डा ।
ह्रां ह्रीं ह्रौं क्षोभ कारी र र र र रमणे त्राहि मां देवि चक्रे ।।६।।

हे चक्रे देवित्वं मां त्राहि 'रक्ष रक्ष' कथं भूते आं क्रों ह्रीं क्षु युतान्यंगानि यस्य आं क्रों ह्रीं क्षुं युतांगे आनाभ्युः परि 'क्रों' ललाटे ह्रीं 'ह्रार्दं' क्षुं कर्ण द्वय पुनः कथंभूते प्रलया चल संबंध्यऽस्ताचलस्य कोटि दिन कर प्रकाशे पुनः कथं भूते विमल निज भुजैरष्टभिः अष्टौ चक्राणि धृत्वा पद्मकं नवम् भुजे दशम भुजे प्यकं फलं द्वाभ्यां एकादश द्वादश भुजाभ्यां 'कराल" विकरालं निशिता तीक्ष्णा 'चला' चंचला शिखायस्य तत ईदृशं चक्रं धृत्वा प्रचण्डाऽसि पुनः कथं भूता तार्क्ष्यं रूढ़ा गरुडा गरूढ़ा पुनः कथं भूते चक्रे ह्रां ह्रीं ह्रौं क्षोभकारी र र र रमणो हे 'चक्रे' देवित्वं मां रक्ष रक्ष रक्ष इत्यर्थं ।

अथ यन्त्रोद्धार

द्वादश भुजां चक्रेश्वरी लिखित्वा गरुढारूढां उक्त स्थानेषु बीजानि संलेख्य ह्रां ह्रीं ह्रौं इति त्रिभि र्बीजै र्वेष्टयेत् पश्चात् रं रं रं रं बीज त्रय वेष्टितेऽग्नि पुटेस्थाप्य ध्यातव्येत्युद्धारः ।

अथ मन्त्र :– ॐ आँ क्रौं ह्रीं क्षुं ह्रौं ह्रीं ह्रीं स्वाहा। इति मन्त्र।

विधि :—क्षोभ कर्मणः सर्वोज्ञेयः फलं च त्रैलोक्य क्षोभितं नाम संज्ञेयम्।

अथ बीजोत्पति :—आं आ काल रात्रिः शत्रु संहार कारिका कः क्रोधीशः रः क्षतज औं 'संयोगात्' विद्वेषण फलं ह्रीं मित्युक्त फलं क्षः त्रैलोक्य प्रसनात्मकः 'उ' 'उ' काल वश्यामः महाकालः त्रिशोगी क्षुं फलंचाकर्षण करं ज्ञेयं ह्रां ह्रीं ह्रौं आ काल रात्रीः ई गर्ज्जनी औं डाकिनी शेष पूर्ववत् फलं च क्षोभणं र र र र चतुष्कस्य फलं चाग्नि बीजं चतुष्कं तु शत्रु क्रोध जलानलोच्चाटन फलं सिद्धं।

यन्त्र नं० ६
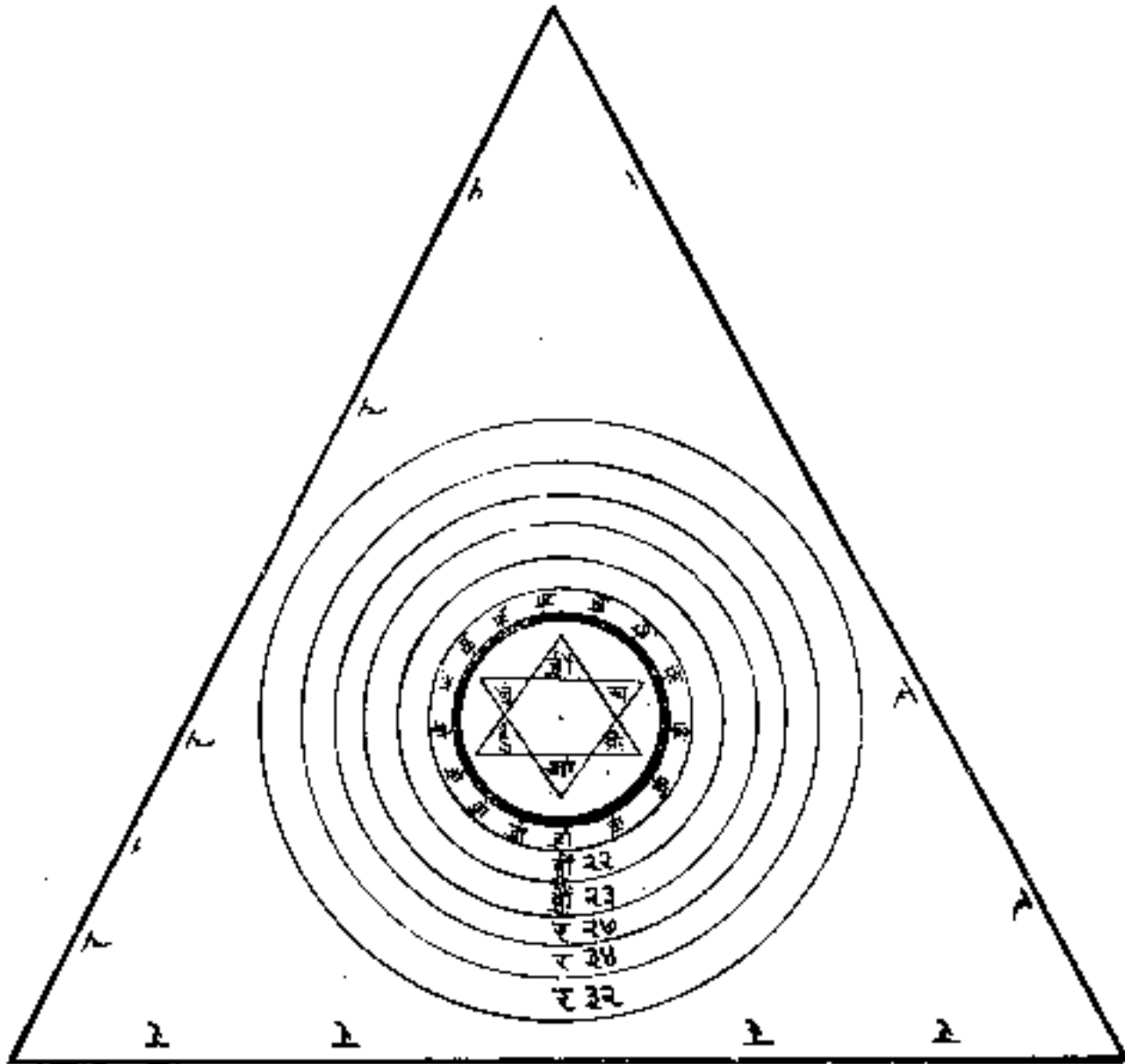
इस यन्त्र को इस प्रकार बनावे। प्रथम षट् कोणाकार बनावे। षट् कोण के प्रथम

कर्णिका में श्रां, द्वितीय में हु', तीसरे में क्षु', चौथे में ह्रीं, पंचम में च, छट्टे में क्रो लिखे फिर, षट्कोण के बीच में चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति लिखे। षट् कोण के ऊपर ६ वलय खेंचे। प्रथम वलया कार में १४ ह्रां, लिखे। द्वितीय वलय में २२ ह्रीं लिखे। तीसरे वलय में २३ ह्रौं लिखे। चौथे वलय में २७ र कार लिखे। पंचम में २४ र, कार लिखे। छट्टे में ३२ र कार लिखे। फिर वलया कार पर त्री कोण रेखा खींचे। त्री कोण के अन्दर १२ र कार खींचे। इस प्रकार यन्त्र बनावे।

सुगन्धित द्रव्य से भोज पत्र पर यन्त्र लिखे, चांदी अथवा तांबे के ऊपर खुदवा कर यन्त्र सामने रख कर मन्त्र का विधि पूर्वक जप करे, साढ़े बारह हजार तो, तीनों लोक में क्षोभ होता है। ये यन्त्र मन्त्र त्रैलोक्य क्षोभन है।

तुष्टि कर्मणार्थ सप्तम काव्यम्

स्ॢं क्षुं हुं क्षुं विचित्रे त्रि नयन नयने नाद बिन्दूग्र नेत्रे।
चं चं चं वज्र धारा ल ल ल ल ललिते नील के शालि केशे।
चं चं चं चक्र धारा चल चल चलिते नू पुरे लेलि लीले।
श्रीं स्ॢं ह्रां ह्रीं सु कीर्तिः सुर वर नमिते त्राहि मां देवि चक्रे ॥६॥

टीका :– हे चक्रे देवि त्वं मां त्राहि रक्ष २ रक्ष कथं भूते चक्रे स्लु क्षुं हुं क्षुं विचित्रे पुनः कथं भूते त्रि नयने स्त्रिभि लोचने नयनं वस्तु प्रापणं यस्याः सापुनः कथं भूते नाद बिन्दूग्र नेत्रे अर्द्ध चन्द्राकार बिन्दुभिः रूग्र नेत्रे चं चं चं वज्रधारी ल ल ल ल ललिते नूपुर विराजमाने पुनः कथं भूते नूपुरैः चं चं चं चक्र धारया चल चलिते पुनः कथं भूते लोल [illegible]

[illegible]

[illegible]

षट्कोणे चक्रमध्ये पूर्वस्तु मूर्ति विलिख्य ऊपरि स्ॢं श्रीं हुं [illegible] लिखेत [illegible] [illegible] ल ल ल इति उत्तरे [illegible] चल चल। इति [illegible] श्री स्ॢं ह्रां ह्रीं इति विलिख्य पश्चात् नूपुरं विलिख्य वज्रोपरि ल ल ल ल इति लिखेत्।

मूल मन्त्रो द्धारः :—ॐ स्ॢं क्षुं हुं क्षुं श्रीं स्ॢं ह्रां ह्रीं नमः स्वाहा।

विधि :—अस्य तुष्टि कर्मणोऽबोध्यः फलं यशो लाभोऽभ्युदयश्चेति बोधव्यः।

अथ बीजोत्पत्ति :—स्नूं क्षुं हुं हुं संस्तु धूमध्वजो, 'रः' क्षतजः उ काल वामयामः महाकाल: स्रूं दहन बीजं 'फलं' शत्रु दहनादि क्षः क्षितिबीजं 'उ' काल वक्त्रा संयोगात् 'व्यापकत्वं' फलं क्षुं क्षः त्रैलोक्य ग्रसनं बीजं संयोगात् दां कुष्टि कुत्फलं च 'त्रयस्य' फलं क्षेयं ज्वल ज्वल ज्वलेति च ज्वाला मुख संज्ञात्वात् ल ल ल ल चतुष्कस्य फलं प्रबल प्रबल इति चतुष्कं लस्य बल भेदि संज्ञात्वात् चं चंड रूपं पुनश्चं काल रूपं पुनश्चं चामुण्डा रूपं सिंह वाहनत्व श्रीं लक्ष्मी बीजं 'स्रूं' दहन बीजं ह्रां आर्ष बीजं ह्रीं मूल बीजं ।इति। श्रीं स्रूं ह्रां ह्रीं ।।इति।। रत्न चतुष्कं विख्यातं बीजकोशात् परिज्ञेयं ।

षट् कोण चक्र में चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति लिख कर, फिर षट् कोण चक्र की कर्णिका में क्रमशः आं, हुं, क्षुं, ह्रीं, च, क्रे लिखे, फिर, षट् कोण चक्र के ऊपर चतुष्कोण रेखा खींचे। ऊपर आधा इंच का अंतराल छोड़ कर एक रेखा चतुष्कोण और खींचे, दोनों रेखाओं के बीच में ऊपर स्नूं क्षुं हुं क्षुं लिखे। दक्षिण में चां चां चां चां ल ल म ल लिखे। उत्तर में चां चां चां चल चल लिखे, नीचे 'श्व' श्रीं स्रूं ह्रां ह्रीं लिखे। फिर भू पुर को लिख कर वज्र के ऊपर ल ल ल ल लिखे।

यन्त्र नं० ७
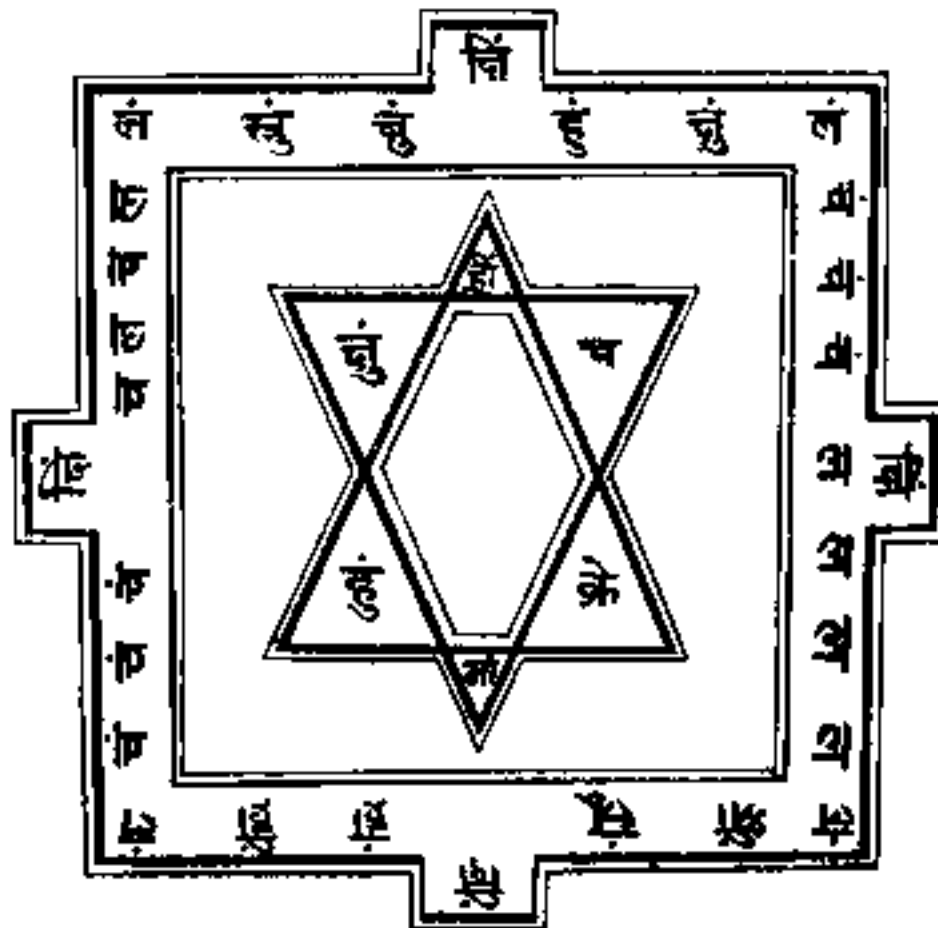
इस यन्त्र को चांदी के ऊपर खुदवा कर पास में रखे । और मन्त्र का सवा लक्ष जप विधि विधान पूर्वक करे तो यश का लाभ, अभ्युदय की प्राप्ति होती है ।

ये तुष्टि कर्म के लिए है ।

वश्य, मोहनार्थं अष्टम काव्य

ॐ ह्रीं फट्कार मन्त्रे हृदय मुपगते रूंधि वश्याधिकारे
ह्रां ह्रीं क्लीं क्लि सु घोषे प्रलय घन घटा टोप शब्द प्रनादे ।।
वां फां क्रोध मूर्ते धगधगित शिखे ज्वालिनि ज्वाल माले ।
रौद्रे हुंकार रूपे प्रकटित दर्शने त्राहि मां देवि चक्रे ।।८।।

टीका :—हे चक्रेदेवित्वं मां त्राहि रक्ष रक्ष कथं भूते चक्रे ॐ ह्रीं फट् कार मन्त्रे हृदय सुपगत रूंधि वश्याधिकारे ॐ ह्रीं फट् इत्येनेन रूंधो त्यनेना कर्षण वशीकरणाधि कारे ह्रां ह्रीं क्लीं क्लि सुघोषे सु शब्दे पुनः कथं भूते प्रलय घन घटा टोप शब्द वन्नादे पुनः कथं भूते वां फां क्रोधमय मूर्त्ते प्रनः कथं भूते धग ध्यगिताऽग्निसिखे हे ज्वालिनि हे ज्वाला माले हे रौद्रे हुंकार रूपे हूं वेष्टित मन्त्र 'रूप प्रकटित दर्शने' प्रकटित दंते हे चक्रे देवित्वं मां त्राहि रक्षत्येर्थः ।

अथ मन्त्रोद्धारः :—अस्मिन् अभ्यन्तरे ॐ ह्रीं फट् इति लिखेत् तदुपरि मूर्ति प्रलिख्य तदुपरि ह्रां ह्रीं क्लीं क्लि लिख्यते दक्षिणे वां फां ह्रीं लिखेत् उत्तरे च धग धग ज्वल ज्वल रुद्रे अधश्च ज्वालिनि दहर हुं हुं इति विनिस्याऽग्नि मण्डलं कृत्वा ध्यायेदित्युद्धारः ।

मूल मन्त्र :—ॐ ह्रीं फट् इति मन्त्र

वश्ये ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं क्लि वां फां ह्रीं धग २ ज्वालिनि ज्वल २ रुद्रे हुं फट् चक्रे स्वाहा ।

विधि :—अत्र वश्य मोहनाकर्षणानां कर्मणां बोध्यः ।
कल मपि तदात्मक मेव संबोध्यं इति ।

अथः बीजोत्पति :— अ विद्युत 'उ' कालः मः महाकालः ॐ सिद्धं फलं शत्रु क्षयः ह्रीं हः व्योम र मग्निः ई धूम्र भैरवी संयोगात् ह्रीं वश्याधिकारे फट् इति वश्य बीजं ह्रां

आर्ष बीजं फल मोहनं ह्रीं मूल बीज माया मायाफलं क्लीं काम बीज क्लि क्लिन्ना बीज फलं वश्य द्रावणोचेति व भयंकरः 'ग्रा' काल रात्रिमः पूर्व संज्ञा फलं मारण फलं ह्रीं हकारः शून्य रकारः दहनं हंकारः धूम्रः भैरवी तत्संयोगात् 'तदेव' पूर्ववत् णग फलं इत्यस्य मध्येच इत्यस्य उग्र शूल सज्ञाग इत्यस्य चंड संज्ञा णग इत्यनेनापि दह्लुलं फलं बोध्यं हूं विद्वेषऽपि फट् वश्यात्म के जयं शत्रु क्षय करोऽपिचेति बोध्यं इत्येवं बीज निष्पत्ति क्वेद्धिष्या बीज कोशतः परतः स्वेन किं प्रोच्यं तदेकान्वय युक्तितः।

यः स्तोत्रं रूपं पठति निज मनो भक्ति पूर्व शृणोति त्रैलोक्यं तस्य वश्यं भवति बुध जने वाक्य पटुत्वं च दिव्यं । सौभाग्यं स्त्रिषु मध्ये खगपति गमन गौरवंत्वत् प्रशादात् । डाकिन्यो गुह्य कावा विदधति न भयं चक्र देव्या स्तवेन ।

यन्त्र नं० ८
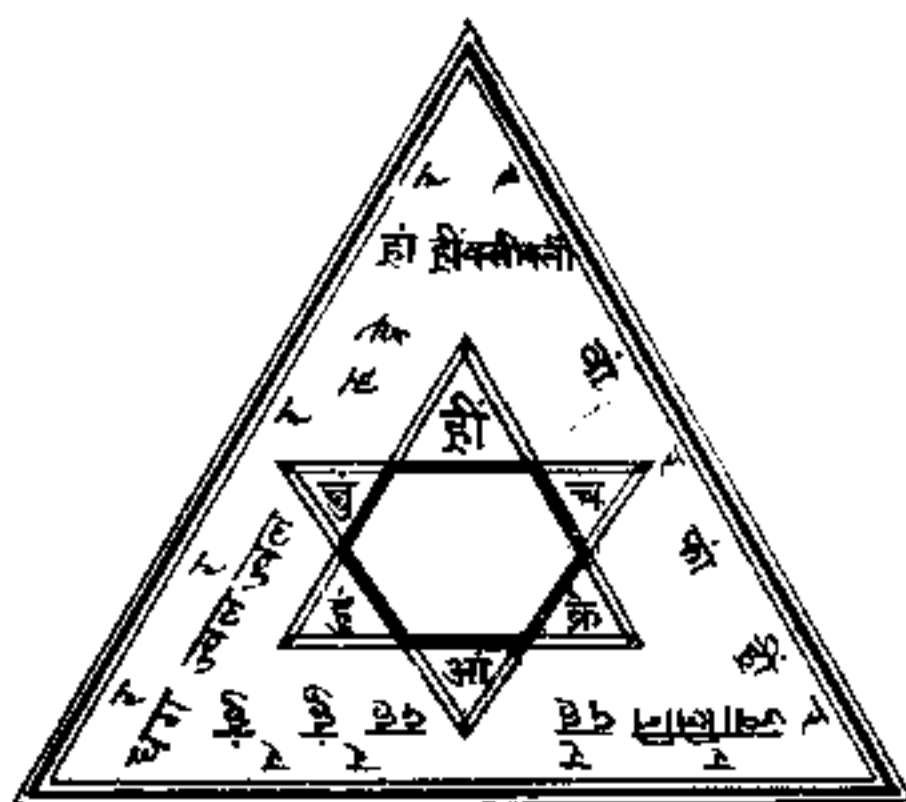
इस यन्त्र को प्रथम षट् कोण कार खीचे, षट् कोण में चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति के उदर पर ॐ ह्रीं फट् लिखें। षट्कोण की कर्णिका में क्रमशः ओं हूं क्षुं ह्रीं, चक्रे लिखे। षट्कोण के ऊपर ह्रां ह्रीं क्लीं क्लि, लिखे दक्षिण में वां पां ह्रीं लिखे, उत्तर में धग ज्वल २ रूद्रे लिखे,

और नीचे ज्वालिनि दह् दह् हुं हुं लिखे, पश्चात् अग्नि मन्डल बनावे याने ऊपर त्री कोणाकार रेखा खींच कर अन्दर तीनों तरफ र, कार लिखे। करीब तीनों तरफ मिला कर बारह, र, लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को सोना, चांदी, व तांबें के पत्रे पर खुदवा कर शुद्धि करवा कर, मन्त्र का सवा लक्ष जप करके यन्त्र पास रखे तो सर्व जन वश्य होय और सर्व कार्य सिद्ध होता है। बस बड़ा मन्त्र भी है। सो बड़ा मन्त्र का साडे बारह हजार जप करना चाहिए। उससे भी वशी करण होता है। ये दोनों ही मन्त्र अन्तिम श्लोक के मूल मूल हैं।

इस स्तोत्र रूपी काव्य को जो कोई पढ़ता है, अपने मन में, भक्ति पूर्वक सुनता है उस पुरुष के तीनों लोक वशी हो जाते है। बुद्धिमान पुरुषों के सामने देवों के समान वाक् पटुता होती है। सौभाग्य की प्राप्ति होती है। स्त्रियों में विद्या घरों के समान गौरव का प्राप्त होता है। चक्रेश्वरी देवी के स्तवन से शाकिनी डाकिनी आदि का भी भय नहीं होता है।

विभिन्न प्रकार के रोग एवं कष्ट निवारण हेतु यन्त्र

यन्त्र नं० १

२६	३६	२	७
६	३	३३	३२
३५	३०	८	१
४	५	३१	३४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिख कर पास में रखने से दुष्ट मनुष्य का मुख स्तंभन होता है ॥ १ ॥

यन्त्र नं० २

४२	४६	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर पास में रखे तो स्त्री का गर्भ अधुरा नहीं गिरे ॥ २ ॥

यन्त्र नं० ३

४१	४६	२	७	४०	१७
४२	६७	६७	३७	७६	४२
०८	३७	६७	३८	देवदत्त	४ २२
४६	७२	७३	४६	४	५

इस यन्त्र को रविवार के दिन अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर ताबीज में डाल कर गले में पहने तो मृत वत्सा गर्भ रहे ॥ ३ ॥

यन्त्र नं० ४

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

इस यन्त्र को लिख कर जो, सुपारी, घृत, अजवाइन, इन चिजों सहित कुलड़ी (छोटा मीट्टी का घड़ा) के अन्दर रख कर गद्दी के नीचे गाडे और ऊपर बैठकर व्यापार करें तो व्यापार अधिक चलता है ॥ ४ ॥

यन्त्र नं० ५

१०	१०	१०	१०
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

इस यन्त्र को रविवार के दिन रोटी बनाकर, उस रोटी पर यन्त्र लिखे, धान में उस रोटी को रखदो तो अनाज कभी भी नहीं सड़ता है ॥ ५ ॥

यन्त्र नं० ६

६	१३	२	७
६	३	१०	९
१२	७	८	१
४	५	८	११

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर स्त्री के गले में बांधे तो रक्त स्त्राव रुक जाता है ॥ ६ ॥

यन्त्र नं० ७

इस यन्त्र को लिख कर लोहे की कील से ठोके तो दाढ दुखती अच्छी हो जाती है ॥ ७ ॥
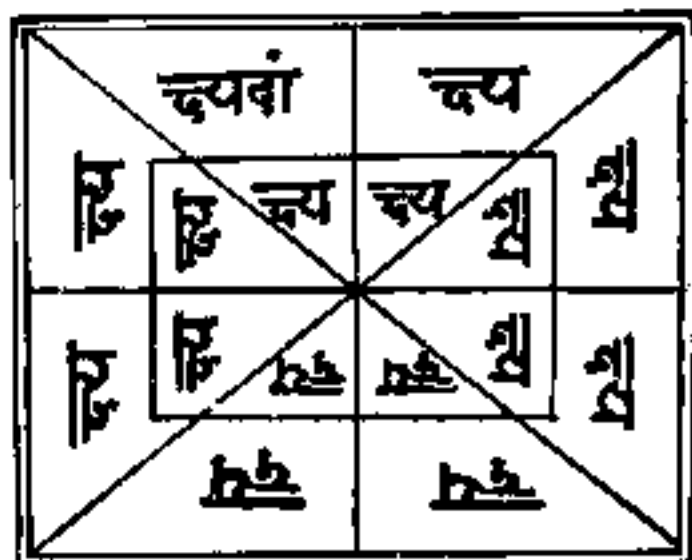
यन्त्र नं० ८

इस यन्त्र को सूत कातने वाले रेहंटीये में (चरखा) बांध कर उल्टा १०८ बार घुमावे परदेश गया शीघ्र आवे ॥ ८ ॥

यन्त्र नं ९

इ कु	है	आ फ	का स्त्री स्त	ह म
४४ आंका	क्के सि	४५ अ ब क	४ व इ	म श्री

इस यन्त्र को बसुले पर (लकड़ी काटने वाले बसुले) लिख कर यन्त्र के दोनों बाजु जिनमें झगड़ा करवाना हो उनका नाम लिखे फिर उस बसुला को आग में तपावे, तो दोनों की जुदाई होती है। याने मन मुटाव हो जाता है। अथवा बंध्या स्त्री को पुत्र पैदा होता है ॥ ९ ॥

यन्त्र नं० १०

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ट ॐ	[illegible]	ट २	[illegible]
६ ६	[illegible]	उ	३२

इस यन्त्र व सोला उपरि लिखी अग्नि मध्ये धमोजे पड़े उपरिति राध कारा वो बंध्या छूटइ: ।। १० ।।

यन्त्र नं० ११

७	४	७	४
६	६	ऽ।	ऽ।
७७	७	५	ऽ।
६२	ऽ।	७	२१

इस यन्त्र को वसोला पर लिखि कर अग्नि मध्ये धमीजै स्त्री बंध्या छुट्इ । याने पुत्र होगा ।। ११ ।।

यन्त्र नं० १२ ।।

इस यन्त्र को लिख गले में बांधे तो मृगी रोग जाय ।। १२

यन्त्र नं० १३

२७	२०	२५
२२	२४	२६
२३	२८	२१

इस यन्त्र २० से लिखना शुरु करे। क्रम २ से संख्या बढ़ाते हुवे लिखो तो डाकिनी शाकिनी दोष दूर होता है ।। १३ ।।

यन्त्र नं० १४

७५	७५	११	११	११	११	११	११
१५	३५	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११
११	११	११	११	११	११	११	११

इस यन्त्र को लिख कर धान के अंदर डाल कर रक्खे, तो धान सुलता (सड़ता) नहीं है ।।१४।।

यन्त्र नं० १५

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर गले में बांधने से डाकिनी शाकिनी दोष दूर होता है, और दृष्टिदोष निकल जाता है ।। १५ ।।

यन्त्र नं० १६

१०	१७	२	७	लं
६	३	१४	१४	लं
१६	११	८	१	लं
४	५	१२	१५	लं

इस यन्त्र को केशर से थाली में लिखकर धोकर पिलाने से कष्टि स्त्री, कष्ट से छूट जाती है, याने प्रसूती अच्छी तरह हो जाती है ।। १६ ।।

यन्त्र नं० १७

६	१३	२	७
६	३	१०	९
१२	७	८	१
४	५	८	११

इस यन्त्र को लिख कर ताबिज में डालकर गुगुल का धूप लगाकर, माथे पर धारण करने से, मार्ग में किसी प्रकार का भय नहीं होता है ॥ १७ ॥

यन्त्र नं० १८

४२	४६	२	७
२१	३	४६	४४
४८	४३	८	१
४	५	४१	४७

इस यन्त्र को लिख कर पशुओं के गले में बांधने से पशुओं को किसी प्रकार का रोग नहीं होता है ॥ १८ ॥

यन्त्र नं० १९

१२	२४	२	७
६	३	२१	२०
२३	१८	८	१
४	५	१९	३३

इस यन्त्र को लिख कर गले में बांधने से दृष्टि दोष, शाकिनी, भूत:, प्रेत:, डाकिनी: सिहारी सर्व दोष मिटे ॥ १९ ॥

यन्त्र नं० २०

२८	७	४	३३
३५	२	५	३०
६	३१	३४	१
३	३२	२९	८

इस यन्त्र को लिख कर माथे पर रखो तो झगड़े पर, विजय हो और नामर्द मर्द होई ॥ २० ॥

यन्त्र नं० २१

क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं
क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं
देवदत्त	देवदत्त	देवदत्त	देवदत्त	देवदत्त
क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं
क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं	क्ष्म्ल्व्र्यूं

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोज पत्र पर लिखकर पास रखे तो डाकिन्यादि सर्व रोग जाता है ।। २१ ।।

यन्त्र नं० २२

क्लीं क्लीं

क्लीं ८	क्लीं १	क्लीं ६
क्लीं ३	क्लीं ५	क्लीं ७
क्लीं ४	क्लीं ९	क्लीं २

क्लीं क्लीं

ह्रीं यंत्र नं० २३ ह्रीं

ह्रीं ८	ह्रीं १	ह्रीं ६
ह्रीं ३	ह्रीं ५	ह्रीं ७
ह्रीं ४	ह्रीं ९	ह्रीं २

ह्रीं संकट निवारण ह्रीं

श्रीं यंत्र नं० २४ श्रीं

श्रीं ८	श्रीं १	श्रीं ६
श्रीं ३	श्रीं ५	श्रीं ७
श्रीं ४	श्रीं ९	श्रीं २

श्रीं रोजगार कर श्रीं

इन तीनों यन्त्रों में से जिसका जो काम हो वह यन्त्र भोज पत्र पर अष्ट गंध से लिख कर हाथ या भुजा में बांधे तो उसका वह कार्य सिद्धि होती है ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥

यंत्र नं० २५
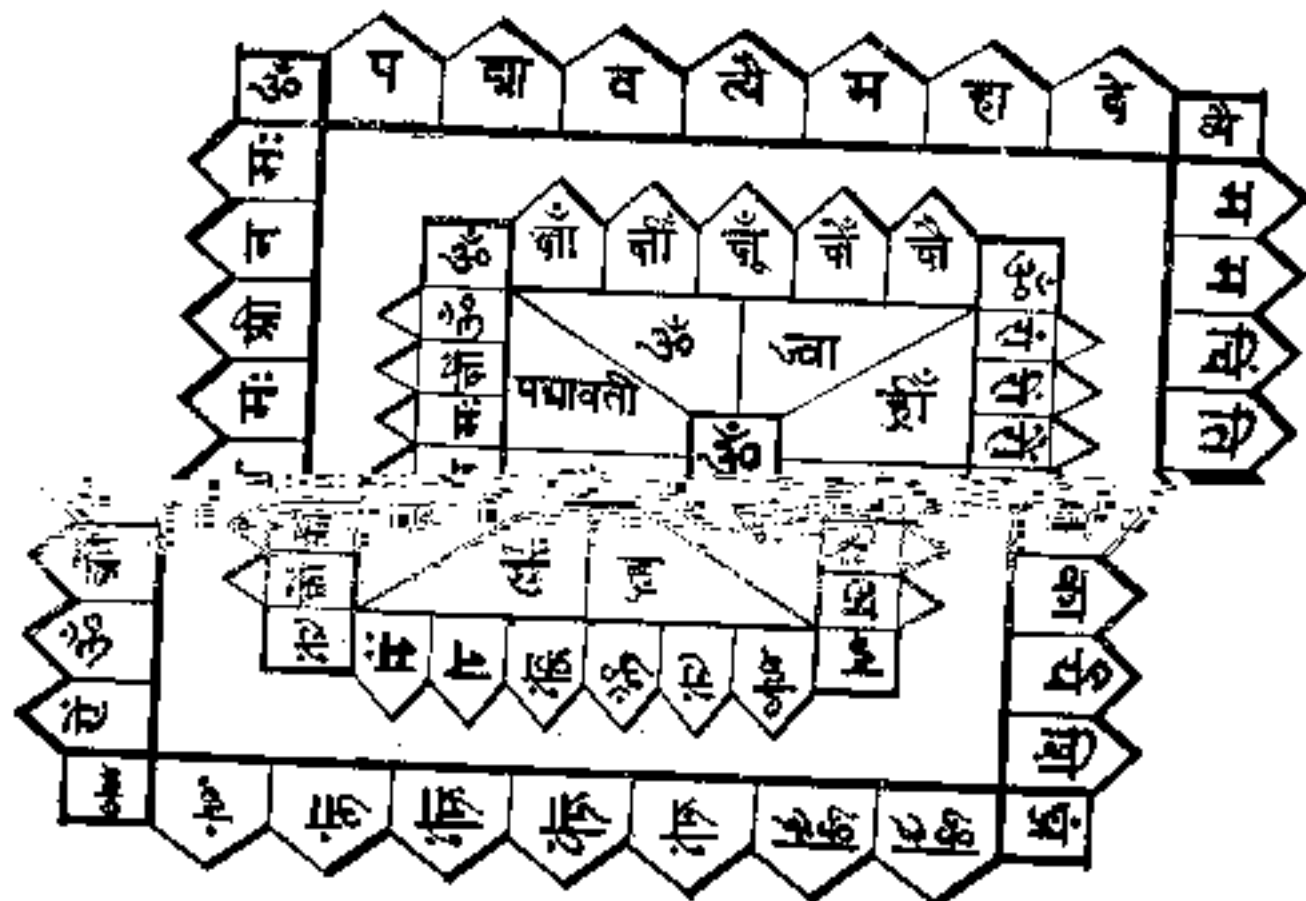
इदं यंत्रं श्री चिन्तामणि सर्व कार्य-कर्म करं । इदं यंत्रं सुरभि कर्पूर कस्तूरी, केशर, गोरोचनादि लिख्यते । सुवर्ण रूप मृदंगेन मिवेष्टितं कृत्वा मस्तके अथवा बाहु धारयते । सदा सर्व जन प्रयो भवति । सर्वेपि वशी स्यात् । यस्य कस्यापि कार्मणन प्रभवन्ति । नागवली पत्रेण चंदनेन यंत्रं लिखित्वा बन्ध्या स्त्री दीयते ऋतु वेलायां प्रत्रो प्रसूति गर्भ धारयति । नान्यथा पश्चात् गौ दुग्ध चांवल दीयते, दृष्ट प्रत्ययः आत्म पार्श्वे स्थाप्यते, सकल जन मोहोत्या धतः । ॥ इति श्री चिन्तामणि यंत्र प्रभाव सत्य छै ॥ यस्य कस्याऽपि न दातव्यं ॥ २५ ॥

पंदरिया यन्त्र विधि

इस १५ मां यन्त्र को शुभ तिथि, शुभ वार देख कर पुरुष ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम देहि वाञ्छितं स्वाहा ।

यन्त्र नं० २६

६	७	२
१	५	९
८	३	४

ब्राह्मण के लिये भोजपत्र पर, वैश्य के लिए ताडपत्र पर, अथवा कागज पर लाल चन्दन, कस्तूरी आदि से लिखना। वश करने के लिए लाल चन्दन से लिखना, दुकान के लिए कस्तुरी से, स्तम्भन के लिए हल्दी से, देव दर्शन के लिए केशर से, मारण के लिए धतूरे से, उच्चाटन के लिए श्मसान के कोयले से, विद्वेषण के लि! सफेद चन्दन से, शांति के लिए दिव्य रस से .... कलम मुसल स्याही से लिख, सब काम ऊपर एक अंगुल प्रमाण ५ अंगुल प्रमाण, दो अंगुल प्रमाण, आठ, तीन, दस, चार तथा १५ अंगुल प्रमाण कलम होनी चाहिये । सोना की १, चांदी की २, साँभर पक्षी के पंख की ३, कौवा के पंख की ४, लौह की ५-६ ।

विधि :—लाल आसन, लाल वस्त्र, लाल पुष्प, लाल चन्दन, ब्रह्मचर्य से रहना, जमीन पर सोना, लोभ छोड़ना । मोक्ष के लिए १० हजार जप करना, नष्ट राज्य की प्राप्ति के लिये २० हजार जाप करना, जीतने के लिए ३० हजार जप करना, पाप दूर करने के लिये तीन सौ चालीस हजार या पचास हजार से वचन सिद्धि, ६० हजार से जल में प्रवेश, ७० हजार से सर्व वश होय, सवा लक्ष (सवा लाख) से मनुष्य शिव सुख के समान हो ।

अंक भरने की विधि : लाभ तथा सुख के लिए १ अङ्क से भरना, जीतने के अर्थ भरे तो २ से भरना, क्षय करना हो तो ३ अंक से भरना, वश करने के लिये ४ अंक से भरना । परदेश से बुलाना हो तो ५ के अंक से भरना, उच्चाटन करना हो तो ६ के अंक से भरना, मोहन करना हो तो ७ के अंक से भरना, सर्व कार्य सिद्धि के लिये ८ से और संतान तथा गर्भ स्तम्भन, रोग दूर करना हो तो ६ के अंक से भरना ॥ २६ ॥

बीसा यन्त्र कल्प

यन्त्र नं० २७
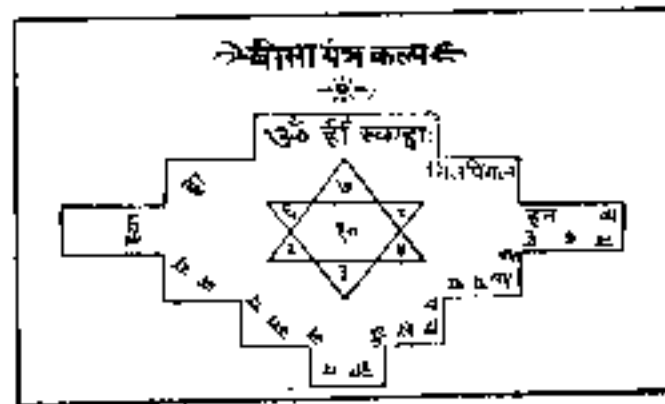
बीसा यन्त्र :—बीसा यन्त्र कल्प जिसके साथ विधान, यन्त्र और मन्त्र का मिलना भाग्योदय से होता है । यन्त्र के साथ मन्त्र होने से आराधना करने वाले को जल्दी सिद्धि होती हैं । पहले यन्त्र बना देते हैं । यन्त्र को ठीक प्रकार से समझ लेना चाहिये । ऊपर बताये हुये यन्त्र का आलेखन अष्ट गन्ध से करना चाहिये । और जब सब कोठे तैयार हो जायें । तब बीच में जो यन्त्र हो, खुणिया बताया है । उनमें प्रथम बाँयी तरफ के कोठे में दो का अंक लिखना, फिर तीन का, चार का, छै, सात,

आठ और दस का अङ्क लिख, यन्त्र लेखन को पूरा करने के बाद बाजू में मन्त्र लिखना चाहिये।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं चित पिंगल दह् २ ज्ञापन, हन २, पच २ सर्व सापय स्वाहा: ।

विधि :—इस मन्त्र को प्रथम ऊपर कोठे में से प्रारम्भ कर बताये मुताबिक लिखे, जैसे—ॐ ह्रीं लिखा, बाद में दूसरे कोठे में चितपिंगल, तीसरे के नीचे कोठे में दह, चौथे के बांयी तरफ के कोठे में ज्ञापन लिखें, और नीचे दाहिनी ओर के कोठे में हन २ लिखे, नीचे बायीं ओर के कोठे में, के कोने में पच २ लिखे, सर्व भी लिखे, ऊपर के बांयी ओर के कोठे में सापय लिखना, और ऊपर के दाहिनी ओर के कोने में स्वाहा लिखे। इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर खुदवाना चाहिये। यन्त्र को सिद्ध करते समय किसी एकान्त जगह में निर्जन्तुक स्थान को देखे, जो पीपल पेड़ के नीचे हो, वहां अखण्ड दीपक जलाकर यन्त्र सिद्ध करे। तुम्हारे यन्त्र सिद्ध करने में किसी प्रकार की बाधा नहीं आवे, इसलिये दो नोकर साथ में ले जाना चाहिये। इस यन्त्र को पीपल के पत्ते पर १०८ बार लिखना चाहिये, लिख कर उन पत्तों में पीपल की लकड़ी से घी लगावे, फिर रख देवे, मन्त्र का जप प्रारम्भ करना, मन्त्र साढे बारह हजार करना, फिर जप किया हुआ मन्त्र का दशांस होम करना, होम करते समय, पीपल की लकड़ी के साथ, जो पीपल के पत्ते पर यन्त्र लिखे थे, उन पत्तों को भी एक २ मन्त्र के साथ आहुती देते जाना, पीपल की लकड़ी के साथ, कपूर, दशांग, धूप, भी लेना आवश्यक है। इस तरह से ४० दिन तक १०८-१०८ बार क्रिया करना, खाना में केवल चालीस दिन तक दूध या दूध की वस्तु ही बनी हुई, गरम पानी ठण्डा कर पीये, भूमि शयन, ब्रह्मचर्य पाले, उनके वस्त्र पर शयन करे, पिछली रात्रि में जप करे, वैसे मन्त्र जप त्रिकाल कर सकते हैं। संध्या के समय बराबर साधना और देव की, फल, नैवेद्य से नित्य ही पूजा करे, पुष्प गुलाब के या मालती के चढाना, इस तरह करते समय रात्रि में जब स्वप्न आवे उसका ध्यान रखना। जब सिद्धि प्राप्त हो तब यन्त्र सामने रख कर, मन्त्र की एक माला फेर कर सो जाने से स्वप्न में शुभाशुभ मालूम होगा। व्यापार के अर्थ अंक भी स्वप्न में मालूम होगा। कुछ यन्त्र भोजपत्र पर या कागज पर सिद्ध करते समय सामने रखना चाहिये। भोजपत्र पर लिखे हुये में से १ यन्त्र अपने पास रख कर व्यापार करने से बहुत लाभ होगा। बाकी यन्त्र

दूसरों को भी दे सकते हैं। उपकारार्थ। धर्म, नीति, न्याय, श्रद्धा को नहीं छोड़े, धर्म से विजय पा सकते हैं ॥ २७ ॥

यन्त्र नं० २८

	ह्रीं	
ह्रीं	इ क	ह्रीं
	ह्रीं	
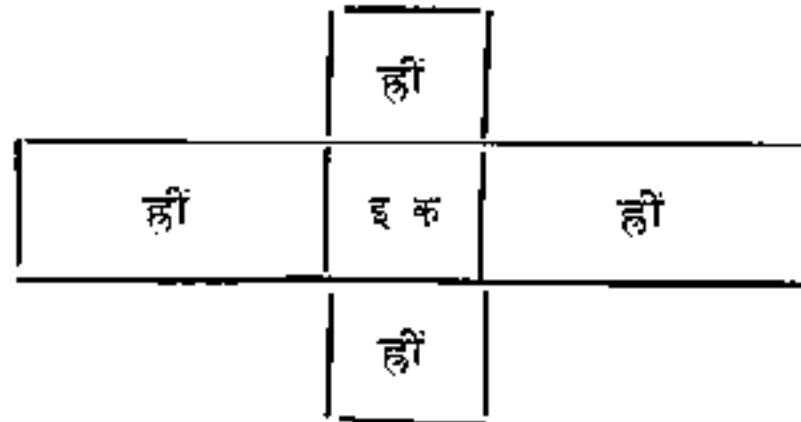
इस यन्त्र को लिखकर शत्रु के सोने की जगह पर गाढ देवे, तो शत्रु का उच्चाटन हो जाता है ॥ २८ ॥

यन्त्र नं० २९
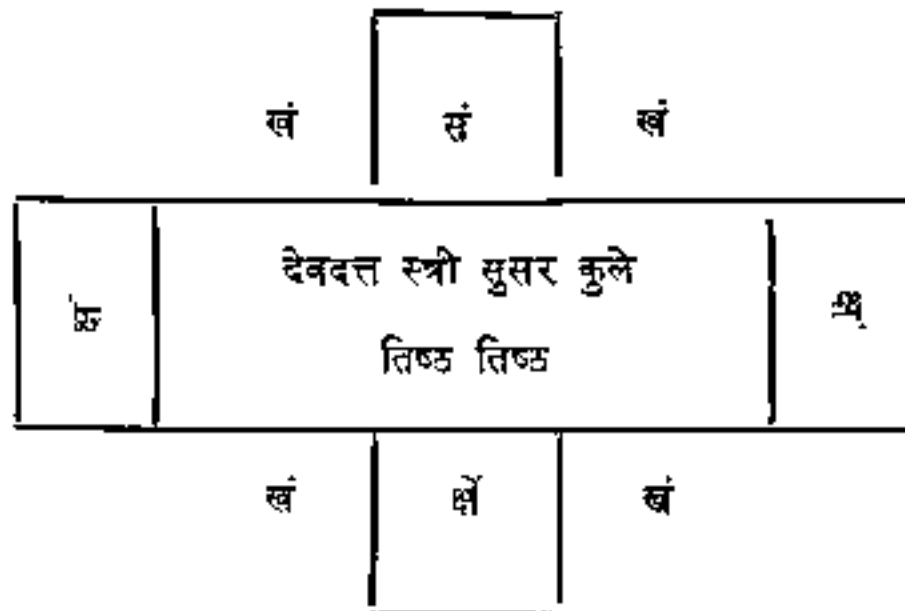
इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से लिख, तावीज में डाल कर गले में बांधे, तो स्त्री सासरे में रहती है ॥ २९ ॥

यन्त्र नं० ३०

ह्लः	स्रः	फः	ग्रः
नूः	ङु	ग्रं	क्लीं
ह्लीं	ह्लीं	श्रीं	क्लीं
जुं	ग्रं	घः	स्प्रं

इस यन्त्र को हिंगुल से लिखकर साथ में नाम भी लिखकर, कमर में बांधने से कूखि बांधे: ॥ ३० ॥

यन्त्र नं० ३१

ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	क्लीं	ब्लीं

पाक के अन्दर अधोमुख रखिए, यन्त्र को कोरी ठीकरी ऊपर रविवार को लिखकर रखे तो शत्रु का मुख स्तम्भन होता है ॥ ३१ ॥

यन्त्र नं० ३२

२६५	५२	[illegible]	[illegible]
१०२	[illegible]	५०२	५२
१५५	[illegible]	५२	५२
१५०७	०३१२	[illegible]	[illegible]

यन्त्र नं० ३५

२५	८०	हँ	१५	५०
२०	४५	र	३०	७४
स	र	ह्रीं नाम	सुँ	सः
७०	३५	हूं	६०	५
५०	२३ ७८	हः	६५	४०

इस यन्त्र को सुरभि द्रव्यों से लिखकर पास में रखने से शत्रु वश में होता है। और डाकिनी शाकिनी आदि दोष दूर होते हैं। और चोर भयादिक नहीं होते हैं ॥३५॥

यन्त्र नं० ३६

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिखकर सोने के मादलिया में डालकर, अथवा चांदी के मादलिया में डालकर पास रखे, फिर ११ सेर आटे की रोटी बना कर कुत्तों को खिलावे, देव गुरु के पांव पूजे तो राजा वश होय, ॥३६॥

यन्त्र नं० ३७

७१	४०	२५	४६	६	१२
८०	७७	८८	६६	६०	१४
१५	१८	२०	२७	२६	४४
४६	५५	५७	३४	४५	४८
क	स्वा	श्रीं	ऐं	न	ह्रीं
२१	३१	६०	६०	१५	५७
२४	४४	६७	६२	६६	६६

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं द्राय आसन वज्र डं डं सही करि । सिद्धं सुखं फुट् स्वाहा नमः । इदं यन्त्र मन्त्र भोज पत्रे रवि दिन में अष्ट गन्ध से लिखकर पास रखे तो शत्रु स्वयं का दास होता है ॥३७॥

इस यन्त्र को अपने पहनने के कपड़े पर, नाम सहित लिख कर, कपड़ा जलावे, फिर उसकी राख (भस्म) को खिलावे तो वश्य होय ॥३९॥

यन्त्र नं० ४०

तं	थं	दं	लं
लं	तं	पं	दं
दं	पं	तं	दं
तं	पं	दं	लं

इस यन्त्र को बाँस की कलम से जमीन पर लिखे, तो मित्र समागम होता है ॥४०॥

यन्त्र नं० ४१
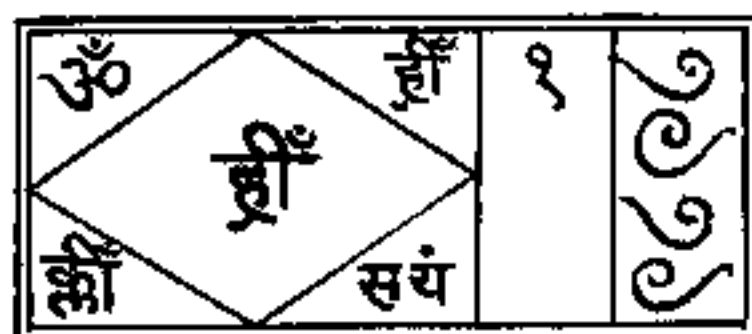
इस यन्त्र को गेहूँ की रोटी पर लिखकर काली कुत्ती को खिलावे, तो सासु वश में होती है। काले कुत्ते को खिलाने से ससुर वश में होता है ॥४१॥

यंत्र नं० ४२

२	६	२१
२१	३१	३
ज	२५	छ
स	स्त्र	भा
ज	स्व	स्त्र

इस यन्त्र को चन्दन, सिन्दुर, से भोजपत्र पर लिखकर पास में रखे तो बाण, (तीर) नहीं लगता है। केशर किस्तुरी से लिखे, तो सर्व वश होते हैं ॥४२॥

यन्त्र नं० ४३

१	१५१	३५	२३
३१॥	२७॥	३॥५	॥३६
१॥	६॥	२४॥	१४॥
२४	३४॥	५॥	४॥

रा	३८	ॐ
॥	ॐ	ह
छ	छ	श्री

इस यन्त्र को बच्चों के गले में बांधने से दांत सुख पूर्वक आते है ॥४३॥

यन्त्र नं० ४४
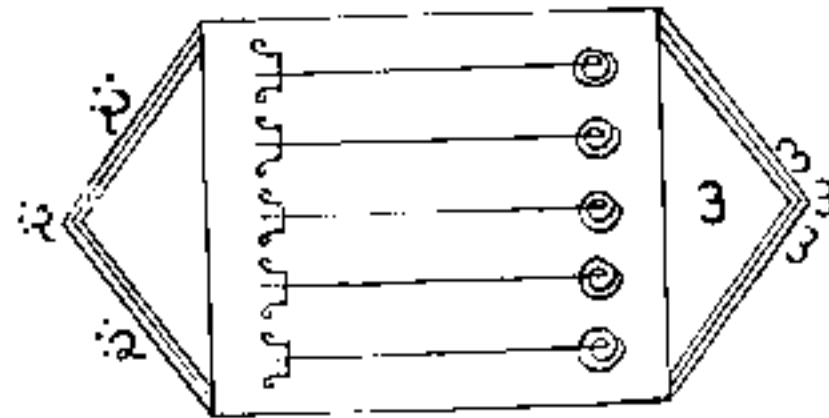
इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर पास रक्खे, तो भूत प्रेत हा हा कार करके भाग जाये। (अग्नि सु जाय सूघ ले) ॥४४॥

यन्त्र नं ४५
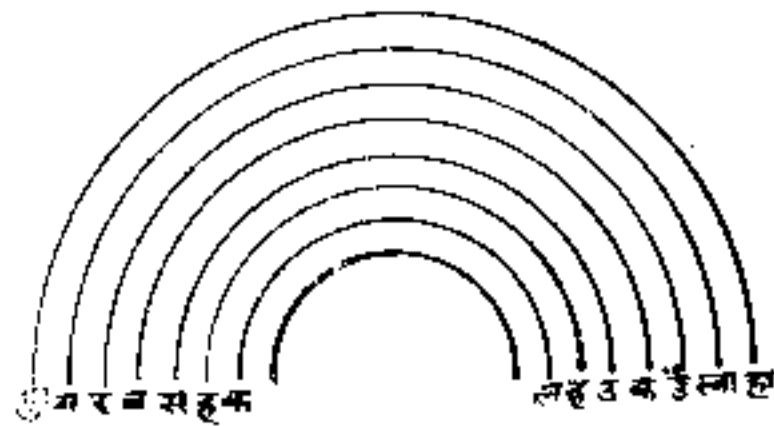
इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर कमर में बांधने से गर्भ का स्थंभन होता है ॥४५॥

यंत्र नं० ४६

इस यन्त्र को अष्ट गन्ध से भोज पत्र पर लिख कर सिर पर धारण करे, तो राजा वश में होता है ।।४६।।

यन्त्र नं० ४७
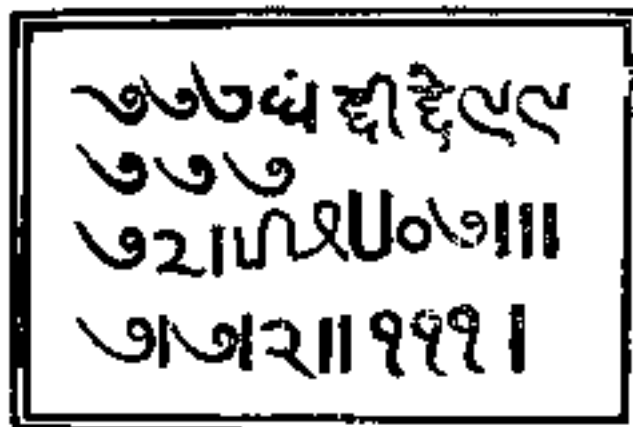
इस यन्त्र को रविवार के दिन घी से कागज पर लिखे, फिर दीपक में यन्त्र को जलावे तो नर वश्य में होता है। तस्य (उसके) कपड़े पर तेल, मीश्री, मोठा (नमक) से लिख कर प्रतिदिन १ जलावे, तो परस्पर का स्नेह नाश होता है। अगर पूरे ही साल दिन जलावे तो शत्रु का क्षय होता है। किन्तु ऐसा करे नहीं ।।४७।।

यन्त्र नं० ४८

इस यन्त्र को अर्क (आकडा) के पत्ते पर लिख, ऊपर नीचे पत्थर से दबावे याने एक पत्थर के नीचे रखे फिर ऊपर यन्त्र रखे, फिर यन्त्र के ऊपर पत्थर रखे देवदत्त की जगह शत्रु का नाम लिखे शत्रु का नाश हो किन्तु ऐसा करे नहीं महान हिंसा का दोष लगेगा ।।४८।।

यन्त्र नं० ४९
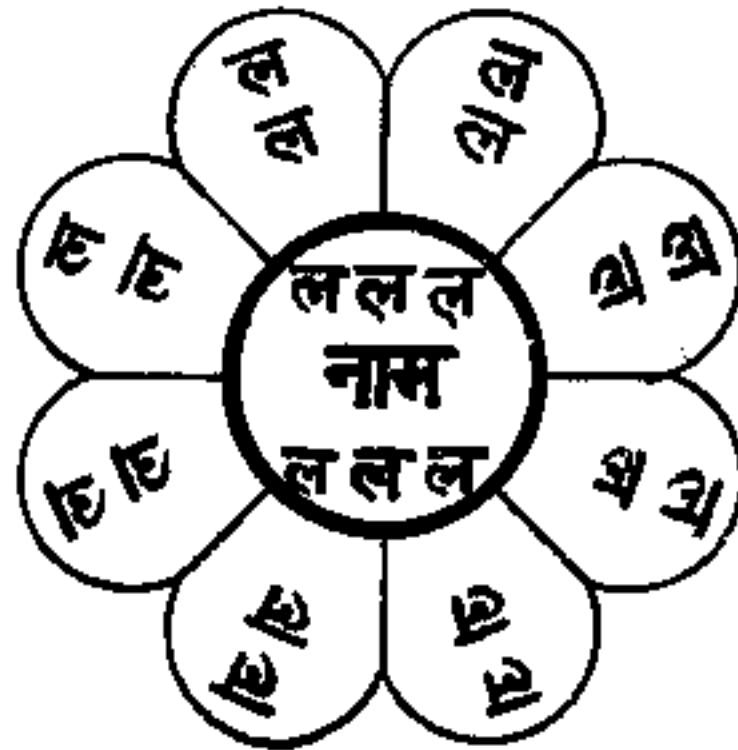
इस यन्त्र को हल्दी से लिख, शिला संपुट कर अधोमुख कर के रखे, तो शत्रु का मुख स्थम्भन होता है ॥४९॥
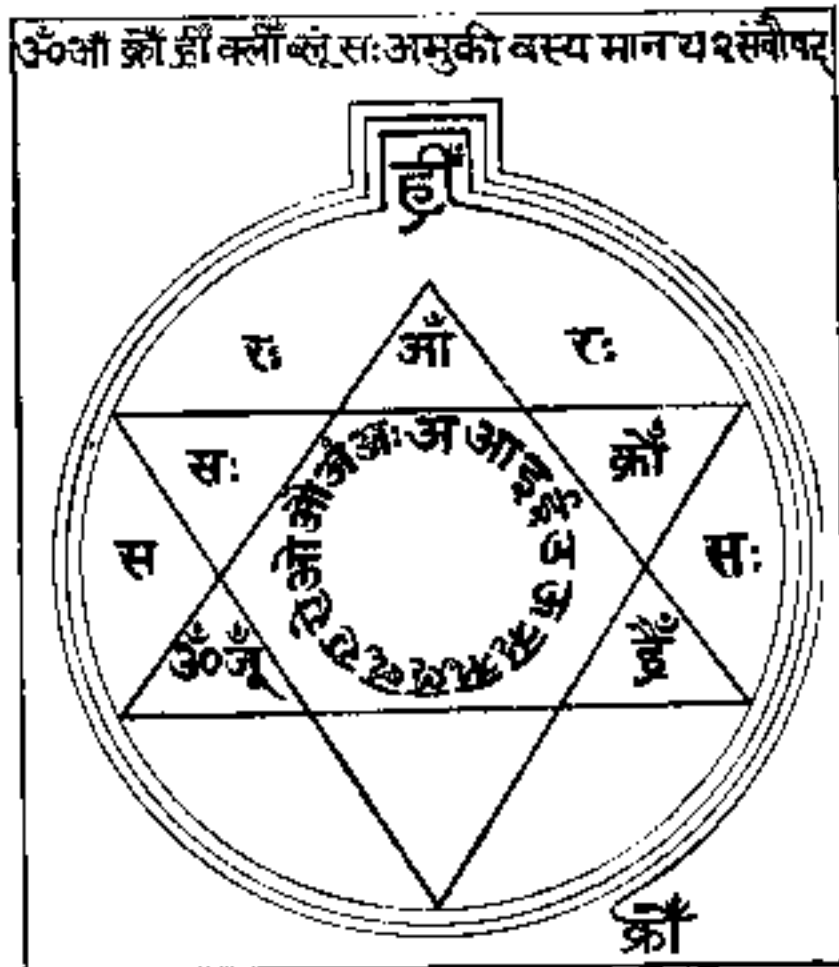
यन्त्र नं० ५०

इस यन्त्र को नागरवेल के पत्तें पर आक के दूध में अखरोट ३ पीस कर साथ में राइ भी मिलावे, और यन्त्र इससे लिख कर दीप शिखा में दिन तीन तक जलावे तो रम्भा भी वश से हो जाय। तो अन्य स्त्री की तो बात ही क्या ? दृष्ट प्रत्यक्ष ।।५०।।

यन्त्र नं० ५१

इस यन्त्र को आक के पत्ते पर अष्ट गन्ध से लिखकर ऊपर शीला, नीचे शीला, बीच में यन्त्र रखना, तो शत्रु वश्य होता है ।।५१।।

यन्त्र नं० ५२
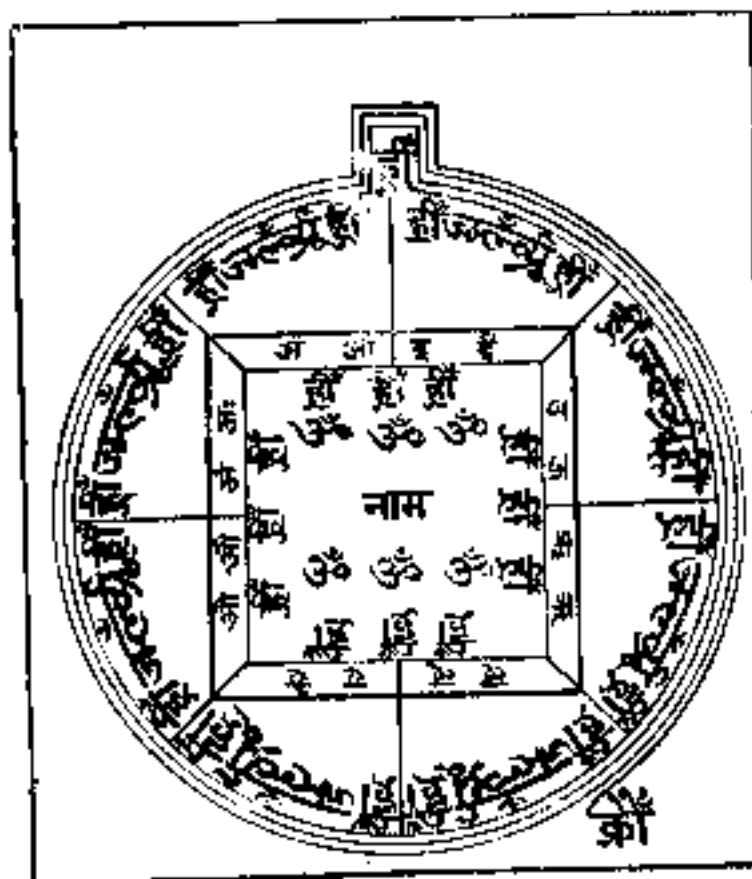
इस यन्त्र को थाली के अन्दर सुगन्धित द्रव्यों से लिख कर ३ दिन त्रिकाल पूजा करके, चौथे दिन दूध से थाली धोकर पीये तो स्त्री के निश्चय से गर्भ रहे ॥५२॥

यंत्र नं० ५३
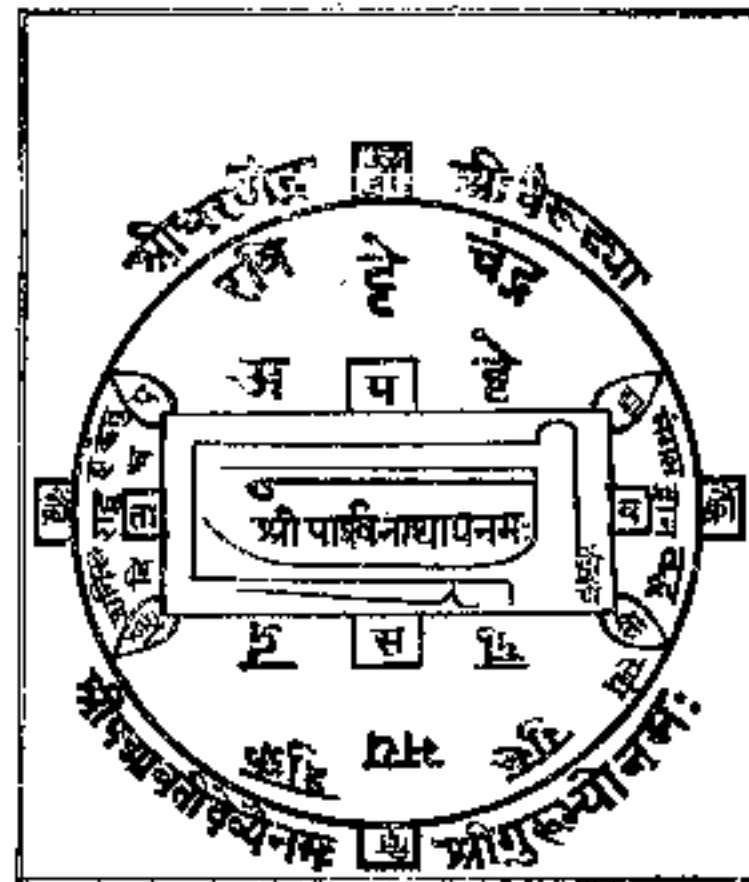
इस यन्त्र का मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय, अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षिप्रं क्षुद्रान् स्थंभय २ जुंभय २ स्वाहा।

विधि :— इस यन्त्र को शुभ दिन में पवित्र होकर सुगन्धित द्रव्यो से लिखे, फिर सफेद वस्त्र पहन कर पूर्व दिशा व उत्तर दिशा में बैठकर पद्मासन से बैठकर १२००० हजार सफेद पुष्पों से जप करे, यन्त्र पार्श्व नाथ पद्मावती के सामने स्थापित करके जप करे। रविवार से लेकर रविवार तक, १३०० जाप नित्य करे, तब मंत्र सिद्ध होता है। जब कार्य पड़े तब इस प्रकार करे, प्रथम शांतिक, पौष्टिक, मंगलीक, कार्य में सफेद माला, सफेद धोती, सफेद फूल सुगन्धित से, दिन में १०८ बार जपे तो कार्य सिद्ध होता है। शुक्ल ध्यान करे।

लक्ष्मी प्राप्त पर जरद धोती, जरद माला, जरद आसन, जरद फूल, पद्मासन से बैठ कर उत्तर दिशा में मुंह करके श्री पार्श्वनाथ प्रभु के सामने चंपा के पुष्प १०८ से जप करे, रविवार से लेकर आठ दिन पर्यंत नित्य ही केशर, चन्दन, अगर कपूर से यन्त्र पूजा करे, लक्ष्मी लाभ होगा, पीत वर्ण का ध्यान करे।

वश्य करने के लिये लालासन, लाल माला, लाल कपड़ा, पूर्व दिशा में मुख या उत्तर दिशा में मुख पद्मासन से पार्श्व प्रभु के सामने रविवार से लेकर आठ दिन पर्यन्त, कनेर के १०८ फूलों से जाप करे, सर्ववश्य होगा, फूल नित्य ही ताजा चूने हुये होने चाहिये। लाल ध्यान करे।

भूत प्रेत, शाकिनी, डाकिनी का उपद्रव हटाने के लिए, काला आसन, काला कपड़ा, काली माला, पंच वर्ण के पुष्पों से लोह रक्षा करते हुए, षटकोण यन्त्र, सामने रख कर, पूर्व दिशा में बैठकर १०८ बार २ जप आठ दिन पर्यन्त नित्य जप करे। भूतादि दोष नष्ट होते हैं ॥५३॥

परविद्या छेदन **कलि कुंड यन्त्र**

यन्त्र नं० ५४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर केशर से लिख कर गले या हाथ में बांधे, तो परकृत विद्या, मूठ, कामण, से रक्षा होती है। यन्त्र में लिखे हुये मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप करे, और तदशांस होम करे ॥५४॥

यंत्र नं० ५५

ज्वरोपशम
कुलिकुंड
यन्त्र
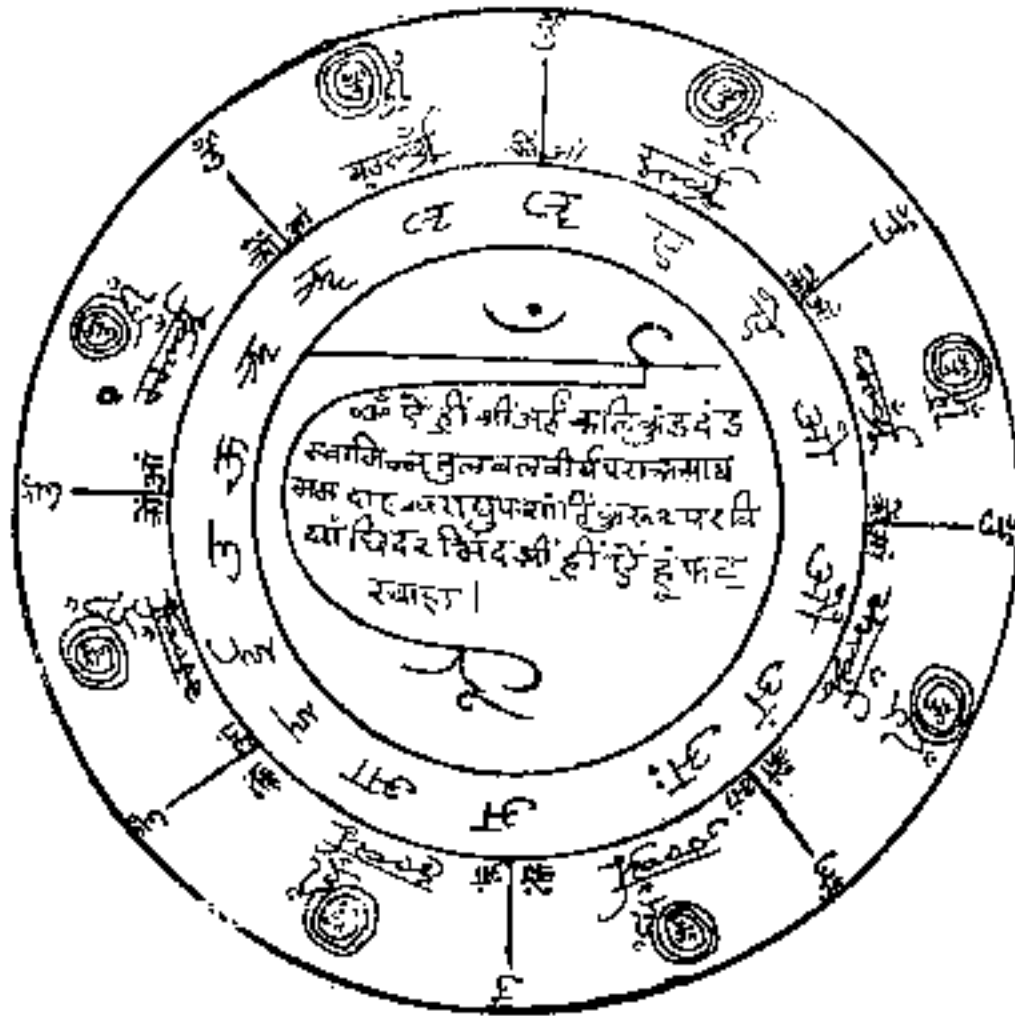
यंत्र नं० ५६
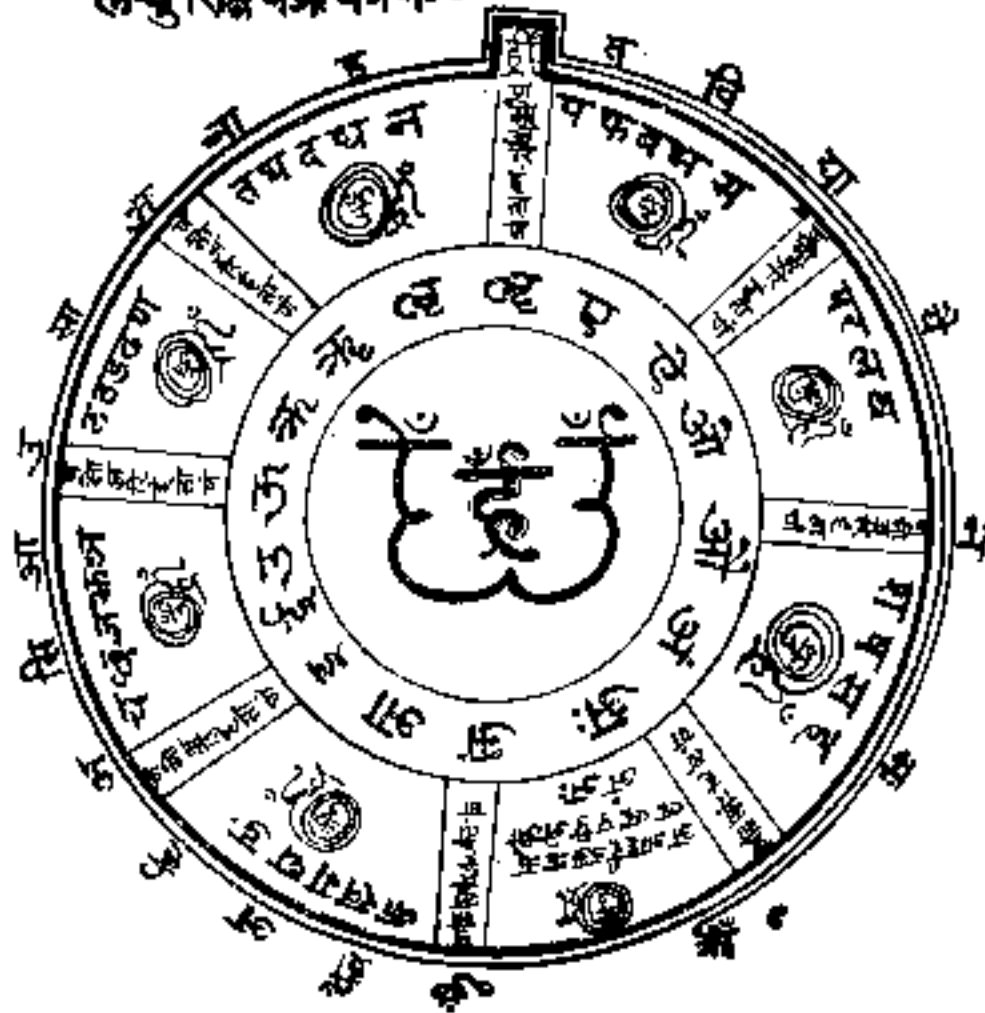
शाकिन्यादि निवारण कलि कुण्ड यन्त्र यंत्र नं० ५७
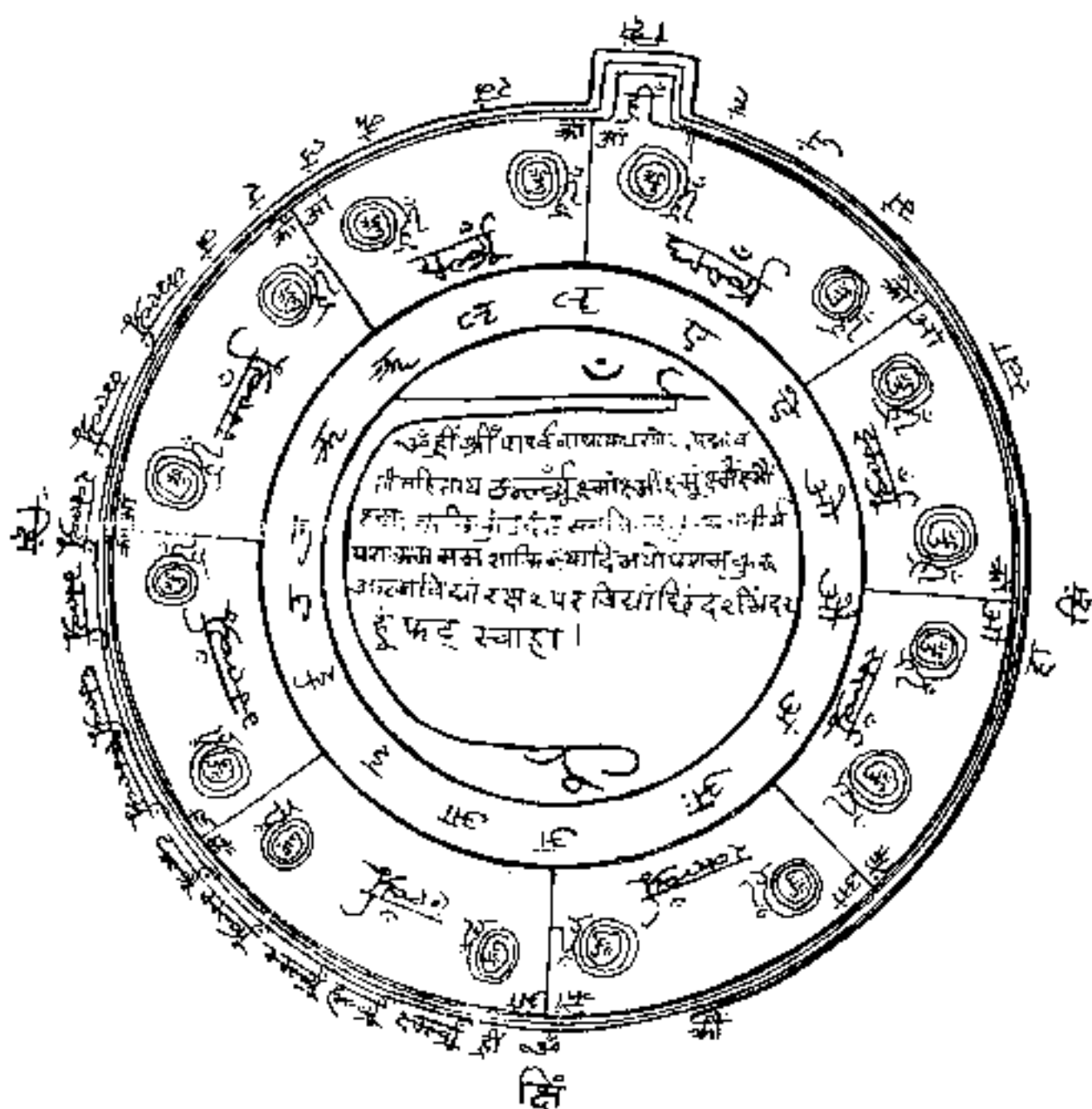
इस यन्त्र को तांबे के पत्रे पर खुदवा कर प्रतिष्ठा करवा ले, फिर किसी भी प्रकार के ज्वर से आक्रान्त रोगी के सिरहाने गरम पानी में डालकर यंत्र रक्खे तो शीत ज्वर जाता है और ठंडे पानी में डालकर सिरहाने रक्खे तो ताप ज्वर जाता है। ५५।

इस लघु सिद्ध यन्त्र को तांबे के पत्रे पर खुदवा कर यन्त्र पर लिखा हुआ मन्त्र का सवा लक्ष जप कर एक यन्त्र भोज पत्र पर लिखकर पास में रक्खे, दशांस होम करे, तो सर्व कार्य सिद्ध होता है, सर्व रोग दूर होते हैं, सर्व प्रकार की परविद्या का छेदन होता है। लक्ष्मी लाभ होता है। चिंतित सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। यह यन्त्र मन्त्र चिंता मणि है। इसके प्रभाव से मोक्ष लाभ होता है। ५६।

इस शाकिन्यादि को दूर करने के यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पर लिखकर उस यन्त्र को एक चोकी पर स्थापन कर, विधि पूर्वक यन्त्र में लिखे हुये मन्त्र का साढ़े बारह हजार जप करे यन्त्र की पूजन नित्य करे, जब जप पुरे हो जाय तब दशांस आहुती देवे, यन्त्र को गले में या हाथ में बांधने से भूत, प्रेत, राक्षस, शाकिनी, डाकिनी की बाधा दूर होती है । ५७ ।

अथ घन्टा कर्ण मन्त्र संक्षेप विधि

ॐ घंटाकर्णो महावीर सर्व व्याधि विनाशकः, विस्फोटक भयं प्राप्ते, रक्ष २ महाबल यत्र त्वं तिष्ठ से देव लिखितो क्षर पंक्ति भिः रोगास्तत्र प्रणश्यंति वातपित्त कफोद्भवा । तत्र राज भयं नास्ति, याति कर्णे जपा क्षयं, शाकिनी, भूत, वैताला, राक्षसा प्रभवंति न ॥३॥ ना काले मरणं तस्य न च सर्पेण डस्यते । अग्नि चौर भयं नास्ति ॐ घंटा कर्णो नमोस्तुते ।

विधि :—शुभ दिन देखकर रवि पुष्य या रवि मूल या और कोई शुभ दिन में कोरे धुले हुये कपड़े पहन कर महावीर प्रभु को प्रतिमा के आगे दीपक जलाकर नैवेद्य चढ़ाकर [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] कर [illegible] तो [illegible] भय [illegible] नहीं होता है।

[illegible] पानी को इस मन्त्र से २१ बार मन्त्रीत कर छांटा देने पर, अग्नि नहीं [illegible] । [illegible] गाय के दूध को २१ बार मन्त्रीत कर छांटा देवे तो अग्नि बुझे [illegible]ी । मन्त्र को कागज पर लिख कर घंटा में बांधे नो और घंटा बजावे तो जहां [illegible] आवाज जाय वहां २ के उपद्रव सब मिटते हैं । कन्या कवौत सूत्र में ७ गांठ [illegible] २१ बार [illegible] गले में बांधने से [illegible] नहीं लगता। [illegible]न्या कवौत सूत्र को २१ बार मन्त्रीत कर धूप देकर हाथ में बांदे तो एकांतरा [illegible]जाता है ।

[illegible] मन्त्र की दूसरे प्रकार से विधि कहते हैं :—

[illegible]ली की रात्री तथा शुभ मुहुर्त में प्रारंभ कर भगवान महावीर के सामने ब्रह्मचर्य [illegible] करते हुये पूर्वोक्त विधि से १२ दिन में साढ़े बारह हजार जप पूरा करे। [illegible] गुग्गुल आढ़ाई पाव, लाल चन्दन, घृत, बिनौला (कपास के बीज), तिल, राई [illegible], दूध, दही, गुड़, रक्त कनेर के फूल, सब चीजों को मिलाकर, साढ़े बारह [illegible] गोली बनाना फिर एक २ मन्त्र के साथ एक २ गोली आग में खेवना, इस [illegible] साढ़े बारह हजार जप पूरा कर, फिर दशांस होमकरना, तब मन्त्र सिद्ध [illegible] नित्य ही भगवान की पूजा करना, माला लाल चन्दन की होनी चाहिए ।

राज द्वार में जाते समय मन्त्र को तीन बार पढ़कर मुख पर हाथ फेरे, राज सभा वश में होती है। खाने की वस्तु को २१ बार मन्त्रीत कर जिसको खिलावे वह वश होता है। पिछली पहर को गुग्गुल खेय कर मन्त्र १०८ बार पढ़कर मुख पर हाथ फेरे तो वाद विवाद झगड़े, आदिक में वचन ऊंचे रहे, माने सब उसकी ही बात माने। पहले गुग्गुल आदिक को १०८ बार मन्त्रीत कर होम करना, फिर रोगी को काढा देना तो भूत प्रेत सर्पादि दोष सर्व जाते रहते हैं। विशेष विधि घंटा कर्ण कल्प में देखे।

ज्वाला मालिनी यन्त्र ५८

द्म्ल्व्र्यूं द्म्ल्व्र्यूं द्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः दें दौं दीं दः दुष्टान् वारय वारय स्वाहा श्रीं नमः	ह्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं ह्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः ह्रों ह्रीं ह्रूं ह्रः सर्व दुष्ट जीवान् वश्यं कुरु कुरु फट् स्वाहा	क्ष्म्ल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं क्ष्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः क्षक्षा क्षिक्षी क्षुक्षू क्षेक्षै क्षोक्षौ क्षंक्षः सर्व जन वश्यं दुष्ट जन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा
भ्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं भ्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः भभा भिभी भुभू भेभै भोभौ भंभः सर्व जन वश्यं दुष्ट जन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा श्रीं नमः	म्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं म्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः ममा मिमी मुमू मे मैं मो मौ मं मः सर्व जन वश्यं दुष्ट जन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा श्रीं नमः	ज्म्ल्व्र्यूं ज्म्ल्व्र्यूं ज्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः जजा जिजी जुजू जेजै जोजौ जंजः सर्व जन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा श्रीं नमः
य्म्ल्व्र्यूं य्म्ल्व्र्यूं य्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः यया यियी युयू येयै योयौ यं यः सर्व जन वश्यं दुष्ट जन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा श्रीं नमः	घ्म्ल्व्र्यूं घ्म्ल्व्र्यूं घ्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं घ्रौं घ्रें घ्रूं घ्रैं घ्रौं दुन घ्रौं घ्रः शणष्टान् लेय रे य य न न श्री मौरा क्षेयम सुरस्य नमः स्वाहा	क्म्ल्व्र्यूं क्म्ल्व्र्यूं क्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः दुष्टा घ भन् रे पर्व अन्ध पराण् नीट ॐ फुट् स्वाहा।
छ्म्ल्व्र्यूं छ्म्ल्व्र्यूं छ्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः छ्रौं छ्रें छ्रैं छ्रौं छ्रः दुष्ट जनान् वश्यं जट नम नाशी भंजय रे स्वाहा कुरुश्य नमः	च्म्ल्व्र्यूं च्म्ल्व्र्यूं च्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः चां चीं चें चूं चैं चौं दुष्टान् क्रूर जलामान् मथ रे छेदय रे ॐ ह्रीं फुट् स्वाहा श्रीं नमः	ढ्म्ल्व्र्यूं ढ्म्ल्व्र्यूं ढ्म्ल्व्र्यूं क्रौं क्रौं क्रौं ज्वाला मालिनी देवी नमः ढ्रां ढ्रें ढ्रौं ढ्रों ढ्रं ढ्रः दुष्टा नानि वदना विद्ध वर रम काय कार फुट् रे स्वाहा श्रीं नमः

लक्ष्मी: इदं यन्त्रम् । विधि :—दीप मालिकायां कृष्ण चतुर्दश्यां षष्ठ व्रत तत: कृत्वा पवित्री भूत्वा अष्टा गन्ध केन अगुरु धूपोत्क्षेपण पूर्वकं सदश पीताम्बरं परिधाय स्वर्ण लेखिन्या लिखनीयम् । ततः षट्कोणांक कुण्डं कृत्वा अष्टोत्तर शत संख्येयनालीकेर पूर्गाल वंग जाती फल एलादिक पञ्चा मृतं सार्द्ध पञ्च पञ्च सेर संख्याकं अग्नौजुहुयात् ।

इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर विधिवत् पूजा करने से और यन्त्र पास में रखने से मन चिंतित सर्व कार्य की सिद्धि होती है । शरीर निरोग रहता है । परकृत दुष्ट विद्या का परकोप नहीं होता । डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, व्यंतरादिक की पीड़ा शांत होती है । लक्ष्मी का लाभ होता है ॥ ५८ ॥

ज्वर नाशक यन्त्र नं० ५९

इस यन्त्र को लिखकर गर्म पानी में डालकर रखने से, शीत ज्वर शांत होता है । ठण्डे पानी में डाल कर रखने से उष्ण ज्वर शांत होता है ॥ ५९ ॥

नोट :— जहां बीच में देवदत्त लिखा है, उस जगह 'स' लिखकर फिर बीच में देवदत्त लिखें ।
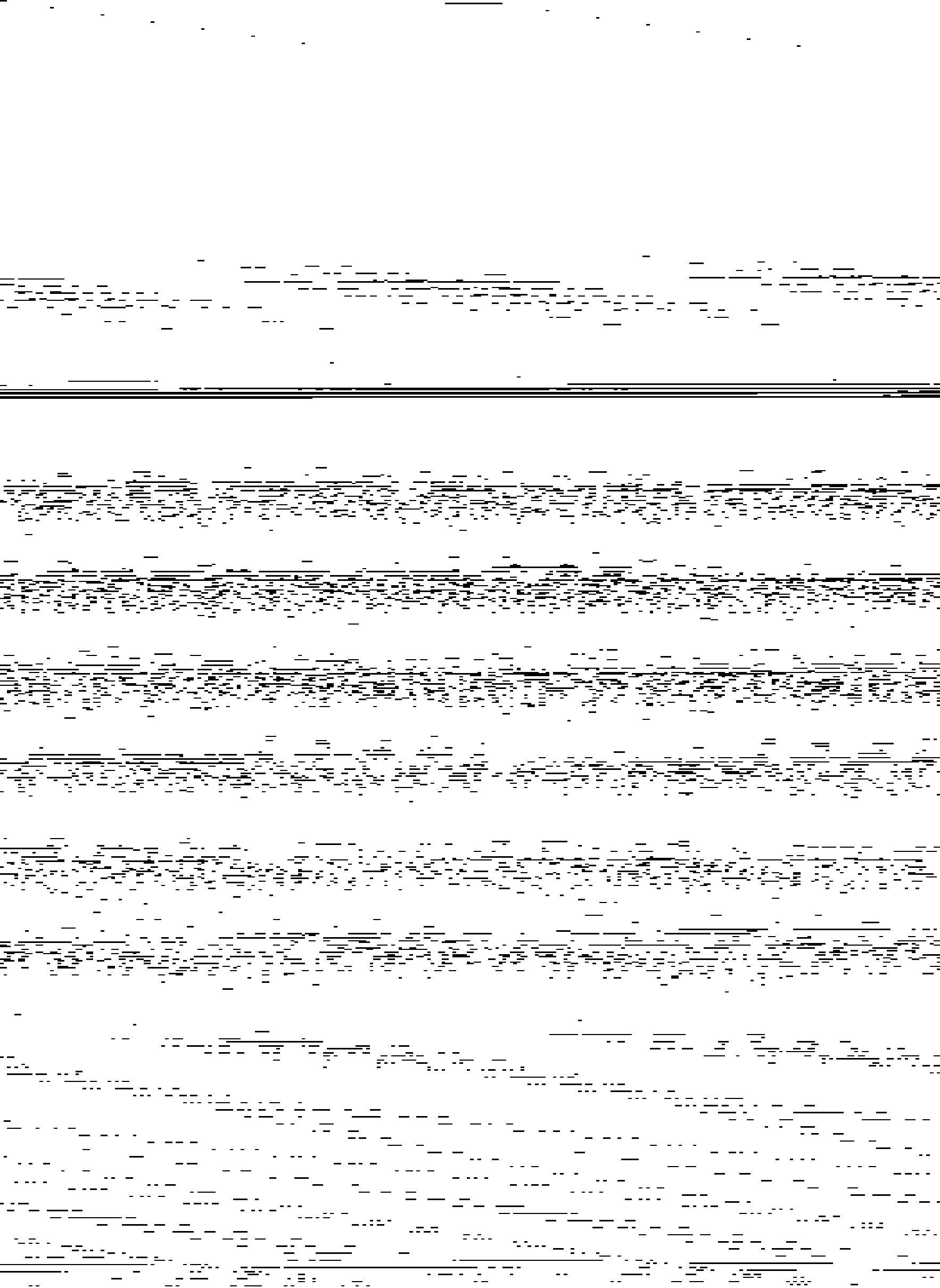
इस यन्त्र को कपूर, अगरू, कस्तुरी, कुंकुम आदि सुगन्धित द्रव्यों से जाइ की कलम बना कर शुभ समय में लिखे। कन्या कत्रित सूत में यन्त्र को लपेट कर हाथ में बांधने से सौभाग्य आदि सुखों की प्राप्ति होती है ।। ६१ ।।

यंत्र नं० ६२
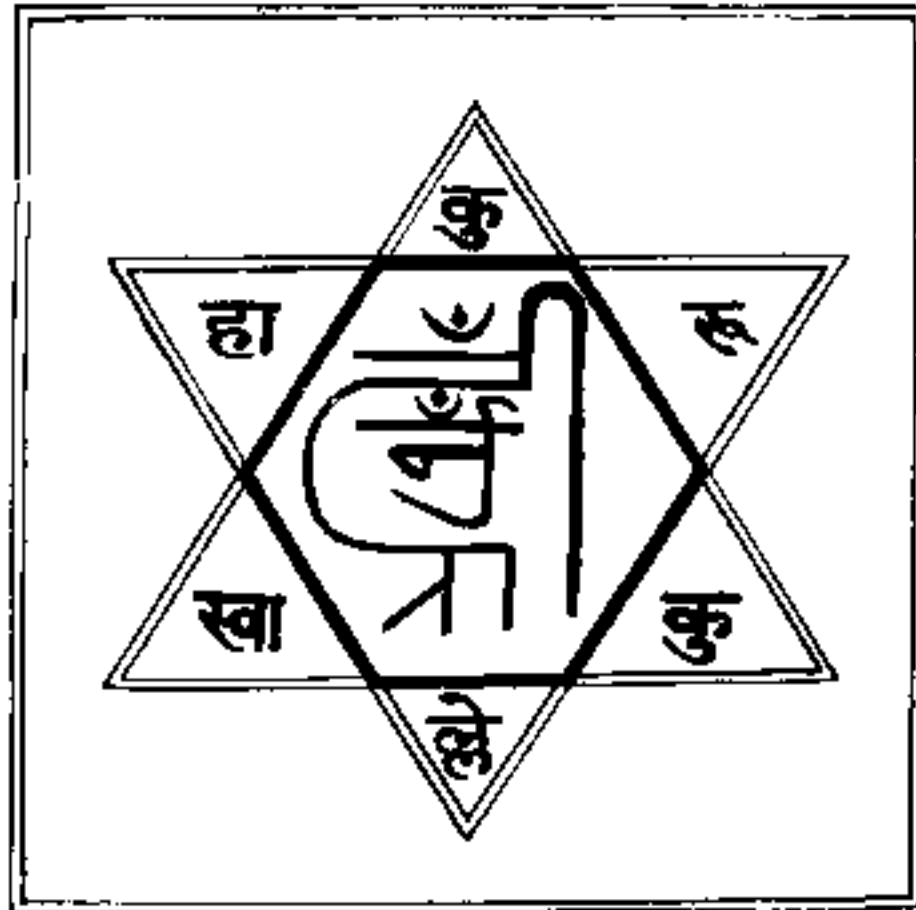
इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर, ॐ ह्रीं देवी कुरू कुल्ले अमुकं कुरू २ स्वाहा। इस प्रकार के मन्त्र का १०८ बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है, इस मन्त्र का जप करने के लिये, अच्छा दिन, अच्छा योग, चन्द्र बल, वगैरह का निर्णय करके जप करे, अष्ट द्रव्य से यन्त्र पूजा करे तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

इस मन्त्र के प्रभाव से कोढ रोग का नाश होता है। कुए का खारा पानी मीठा अमृत जैसा बन जाता है। सर्प, फूल की माला जैसा बन जाता है। भाला का अग्र भाग फूल जैसा हो जाता। अग्नि, पानी की बाढ़ के समान बन जाती है। विष, अमृत के समान बन जाता है। गर्मी के दिन, शरद ऋतु जैसे बन जाते हैं। सूर्य चन्द्रमा के समान लगता है। नित्य ज्वर, एकांतर, और तीसरे दिन आने वाला बुखार ठीक हो जाता है। विषेले जन्तु तो आज्ञा मात्र से ही दूर हो जाते हैं ।। ६२ ।।

यंत्र नं० ६३

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिख कर, सुगन्धित द्रव्यों से पूजा करें, फिर कन्या कत्रीत सुत में लपेट कर हाथ में बांधे तो, भूत वगैरह दोषों को दूर करता है। स्त्रियों को सन्तान की प्राप्ति कराता है। सौभाग्य वगैरह गुणों को देने वाला है॥ ६३॥

यंत्र नं० ६४

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

इस यन्त्र को लिखते समय, प्रथम १ कलश पानी से भर कर विधि से रक्खे, फिर आम के पत्ते पर कुंकुम बिछा कर अनार की कलम से यंत्र लिख कर अष्ट द्रव्य से पूजा करे। मन में कामेश्वरी देवी का ध्यान करे, यन्त्र को लिखते समय ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय नमः। यन्त्र लेखन कार्य जब पूरा हो जाय तब पूजन करने के उपरांत इस मन्त्र का जप करता रहे ।

ॐ नमो कामदेवाय महाप्रभाय ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा ।

इस मन्त्र का ७२ बार जप करे, मन्त्र जपने के बाद लिखा हुआ यन्त्र मिटा दे, इस प्रकार पुनः लिखे पुनः मिटाये प्रतिदिन, इस तरह २४ यन्त्र लिखे। २४ वे यन्त्र के बाद मन्त्र की २१ माला जपे, प्रतिदिन इसी नियम से करता रहे। एक दिन के लिखे यन्त्र को गेहूं के आटे में थोड़ा सा मीठा (मिश्री) मिलाकर घी, और बुरा मिलाकर गोली बांध कर नदी में बहादे। साधक जो कि रोटी, बथुआ के साग को खाये। पृथ्वी पर शयन करे, तथा ब्रह्मचर्य पालन करे, सत्यादि निष्ठा से रहे। ७२ दिन तक इसी क्रिया को करता रहे। और इसी अवधि में सवालक्ष जप पूरा करे। जब जप पूरा हो जाय, तब दशांस होम करे। यतीओं को दान दे। उसके बाद प्रतिदिन एक २ यन्त्र लिख कर उस यंत्र की पीठ पर ७२ टके चलन बाजार दे। उसे अपने बैठने के आसन पर रख कर ७२ यंत्र जप ले। ७२ टके बाजार मिले तो किसी से कहे नहीं, कहेगा तो देना बंध हो जायगा। यदि आसन के निचे नहीं आयेंगे तो किसी तरह से कुटुम्ब के पालन के लायक खर्च करने को धन प्राप्त होता रहेगा। इसके उपरांत यन्त्र को आसन के नीचे से उठाकर पगड़ी में रखले तथा दूसरे दिन गोली बनाकर नदी में बहादे। जो यन्त्र किनारे पर आ जाये, उसे एक आले में रख दे तथा उस पर सफेद वस्त्र का पर्दा डाल दे और प्रति दिन पुष्प चढ़ाकर धूप दे दिया करे ।। ६४ ।।

पंचांगुली यन्त्र व मन्त्र की साधन विधि, यन्त्र नं० ६५ की विधि

प्रथम-मन्त्र :—ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी देवदत्तस्य आकर्षय २ नमः स्वाहा ।

विधि :—इस यन्त्र को अष्ट गंध से लिख कर, मध्य में देवदत्त का नाम लिख कर, फिर उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे, फिर बड़े बांस की भोंगली के अंदर यन्त्र डाले, तो ४१ दिन के अन्दर हजार गउ मे मनुष्य अथवा स्त्री का आकर्षण होता है। शुक्ल पक्ष की अष्टमीं से आरंभ करे।

द्वितीय मन्त्र—ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी अमुको अमुकी मम वश्यं श्रं श्रां श्रीं स्वाहा ।

विधि :—इस यन्त्र को देवदत्त के कपड़े पर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को हिंगुल, गौरोचन, मूग के

नमः स्वाहा
म. स्वाहा
स्वाहा

पानी के साथ स्याही बना कर लिखे। लाल चन्दन का धूप जलावे, दीपक में घी जलावे, फिर इस यन्त्र को मकान के ऊपर में अथवा छत में बांधे, सोने के समय उपरोक्त मन्त्र १०८ बार १३ दिन तक, जपे, फिर (उवात्रण हावरणीनी मारवो) मन की इच्छा पूर्ति हो। इच्छित व्यक्ति वश में हो।

तृतीय-मन्त्र— ॐ ह्रीं क्लीं क्षां क्षं फुट् स्वाहा।

विधि :—इस यन्त्र को शत्रु के वस्त्र पर, रजेकरी श्मशान के कोयले से लिख कर फिर इस मन्त्र का १०८ बार जप करे, धूप श्मसान रक्षा डोडडोषापट जाग पंख, उल्लु का पंख, लेकर हवन करे, इन चीजों से करके यन्त्र काले कपड़े में बांधकर, एक पत्थर में बांधे, फिर उसको कुए में प्रवेश करा देवे याने कुऐं में डाल देवे, फिर नित्य १०८ बार जपे ४१ दिन तक उपरोक्त धूप जलावे तो विद्वेषण होगा।

चतुर्थ मन्त्र—ॐ ह्रों पंचांगुलि मस्य उच्चाट्य २ ॐ क्षं क्लीं क्षं घे २ स्वाहा।

विधि :--इस यन्त्र को धतुरे के रस से लिख कर पृथ्वी मध्ये कोयला से ये उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करता हुआ यन्त्र को पृथ्वी में गाड़े, और उस यन्त्र के ऊपर अग्नि जलावे। दिन ७ के अंदर उच्चाटन होता है। भूत प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, चुड़ेल चुंडावली, जींद, झोटींग, के लिये इस यन्त्र को विष से लिख कर कटि में बांधे तो सर्वबाधा का नाश होता हैं। सर्व गुणों की प्राप्ति होती है।

पंचम मन्त्र – ॐ ह्रीं थ्रां थ्रीं थ्रूं थ्रौं थ्रः मम शत्रुन् मारय २ पंचांगुली देवी चूसय २ नीराघात वज्रेनपातय २ फुट् २ घेघे।

विधि :—मारण कर्म के लिये इस यन्त्र को काले कपड़े पर श्मसान के कोयले से लिखे, ॐ कार के नीचे शत्रु का नाम लिखे। संध्या में इस मन्त्र का जप करे १०८ बार, धूप भैसा गुग्गुल का जलावे (आ यन्त्र गरीयल डोरे) फिर इस यन्त्र को रेशमी डोरे से लपेट कर एकांत स्थान में गाढ देवे, तीर्थ की धारा छोड़े, धूप गुग्गुल का जलावे, जिस जगह यन्त्र गाढ़ा हो, उस कोने में उपरोक्त मन्त्र का जाप करे १०८ वखत, शत्रु के पांव के नीचे की धूल, और गुग्गुल, के साथ में जलावे, २१ दिन तक करने से शत्रु का नाश हो जायगा। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन करे। अगर शत्रु परेशान होकर पांवों में आकर पड़े, तब गढ़ा हुआ यन्त्र को निकाल कर, दूध में उस यन्त्र को भीगो-

कर दी, धूप जलाता हुआ ॐ ह्रीं पंचांगुली रक्ष २ स्वाहा। इस मन्त्र का जप १११ वार करे तो शत्रु को फिर से शांति मिले, सर्व विघ्न दूर हो।

बाकी के तीन मन्त्र और यन्त्र के बीच में और आजु बाजु लिखे हुये हैं। उन मन्त्रों के फल भी जैसा मन्त्र में शब्द विवरण आया हुआ है वैसा ही समझना।

पंचांगुली मूल मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं पंचांगुली देवी मम सरीरे सर्व अरिष्टान् निवारणाय नमः स्वाहा, ठः ठः।

इस मूल मन्त्र का पूर्ण विधि विधान से सवालक्ष जप करे तब पंचांगुली देवी सिद्ध होगी, सर्वकार्य की सिद्धि होती है।। ६५ ।।

ज्वाला मालिनी यंत्र विधि

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं चंद्र प्रभु स्वामित्र पादपंकज निवासिनी ज्वाला मालिनी स्वाहा नित्यं तुभ्यं नमः।

इस यन्त्र को सुगन्धित द्रव्यों से भोज पत्र पर लिख कर, उपरोक्त मन्त्र का जप सवा लक्ष विधि विधान से करे तब सर्व कार्य की सिद्धि हो, सर्व रोग शांत हो, महादेवी श्री ज्वाला मालिनी जी का वरदान प्राप्त होता है। पश्चात विशेष कर्म के लिये अलग २ पल्लव जोड़ कर मन्त्र का जप करने से वैसाही कार्य सिद्ध हो। एक यन्त्र तांबा, अथवा चांदी, अथवा सोना, अथवा कांसे पर खुदवा कर यन्त्र प्रतिष्ठा करके घर में स्थापित करने से सर्व विघ्न बाधा दूर दूर हो। जो भोज पत्र पर लिखा हुआ यन्त्र है उसको स्वयं के हाथ में तावीज में डाल कर बांधे, सर्व कार्य सिद्ध हो।। ६६ ।।

मृत्यु जय ज्वाला मालिनी यन्त्र मन्त्र की विधि

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ह्रां आं क्रौं क्षीं ह्रौं क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ज्वाला मालिनी सर्वग्रह उच्चाटय २ दह २ हन २ छिन्न २ हूं फट् घे घे।

विधि :—उपरोक्त मन्त्र का जप सवालक्ष, प्रमाण विधि विधान से करे पश्चात ज्वाला मालिनी विधान मंत्र का दशांस होम करने से सर्व प्रकार की अपमृत्यु का नाश होता है। यन्त्र भोज पत्र अथवा कोई भी धातु के पत्रे पर खुदवा कर, प्रतिष्ठा करके घर में स्थापित करने से यन्त्र को धोकर पीने से, सर्वरोग शोक शांत होते हैं।। ६७ ।।

यंत्र नं० ६६

ज्वाला मालिनी यंत्र नं

श्री महा मृत्यु जय ज्वाला मालिनी यंत्र नं० ६७
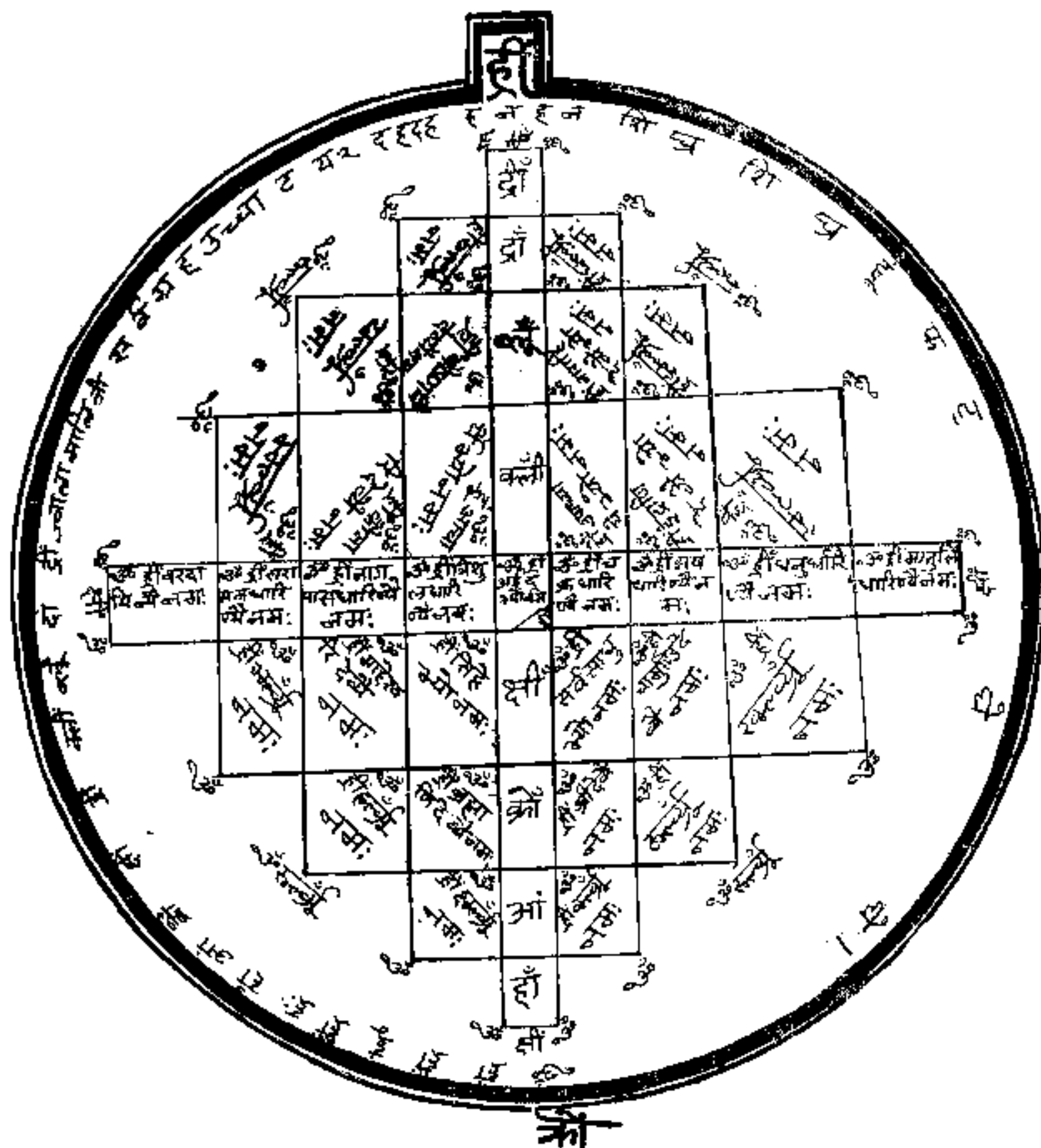
यन्त्र में लिखित मंत्र का सवालक्ष प्रमाण विधि पूर्वक जप करने से सर्व प्रकार की अपमृत्यु का नाश होता है।

यंत्र नं० ६८
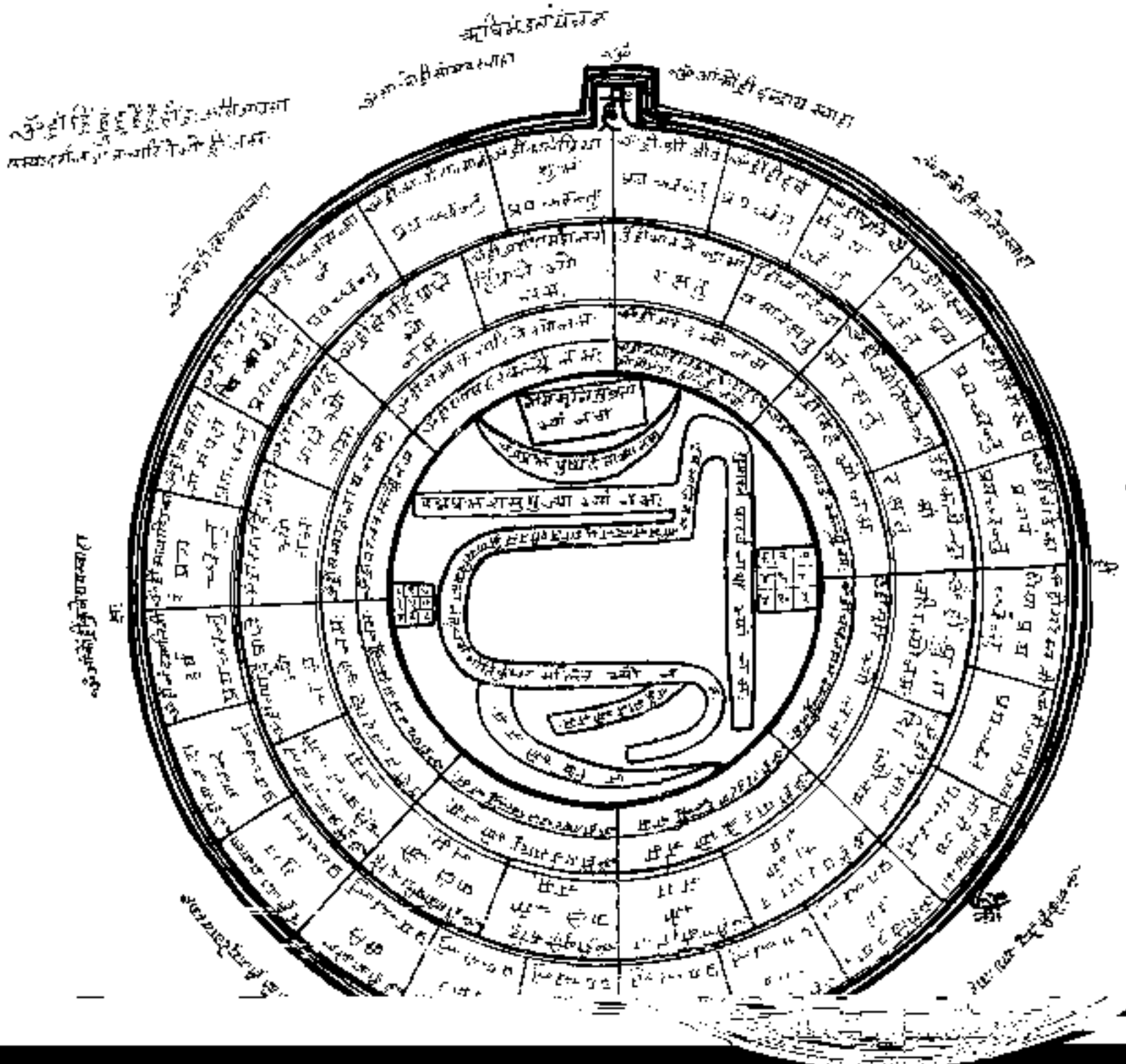
ऋषि मण्डल यन्त्र विधि

मन्त्र :—ॐ ह्रां ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असि आउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रे भ्यो ह्रीं नमः ।

विधि :—ऋषि मण्डल यन्त्र को भोजपत्र पर सुगन्धित द्रव्य से लिखकर हाथ या गले में बांधने से सर्व प्रकार के रोग, शोक, ऊपरी हवा नष्ट होती है। परकृत विद्या का नाश होता है। सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। किन्तु प्रथम ऋषि मण्डल मन्त्र को विधि-विधान पूर्वक सिद्ध करे, जैसे प्रथम एक ताम्र पत्र पर अथवा सुवर्ण पत्र पर अथवा चांदी के पत्रे पर अथवा कांसे के पत्रे पर मन्त्र खुदवा कर शुद्ध करावे, फिर उस यन्त्र को एक सिंहासन पर विराजमान करके, सामने दीप, धूप रखकर उपरोक्त मन्त्र का ८००० हजार जप करे, आठ दिन में, संयम से रहे, आचाम्ल तप करे, ब्रह्मचर्य पाले, मन्त्र का जप समाप्त होने के बाद शुभ दिन मुहूर्त में ऋषि मण्डल विधान करके दशांस आहुती देवे तो मन्त्र के प्रभाव से मन चिंतित कार्य सिद्ध हो। सर्व उपद्रव मिटे। लक्ष्मी लाभ हो, विशेष मन्त्र का छह महीने तक नित्य ही आचाम्ल तप पूर्वक आराधना करने से स्वयं के मस्तक पर अर्हंत बिंब दिखेगा। जिसको अर्हंत बिम्ब दिख जायगा। उसको निश्चय ही सातवें भव में मोक्ष हो जायगा। साधक को किसी प्रकार का भय, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत, परकृत विद्या, इन चीजों का उपद्रव कभी नहीं होगा। वैसे मन्त्र की एक माला फेर कर, स्त्रोत का पाठ करने से ही सर्व प्रकार के रोग, शोक बाधाऐं मिटती हैं। इस काल में ये मन्त्र, यन्त्र की साधना कल्प वृक्ष के समान चिंतित पदार्थ को देने वाला है। विशेष क्या कहें ॥ ६८ ॥

यंत्र नं ६९
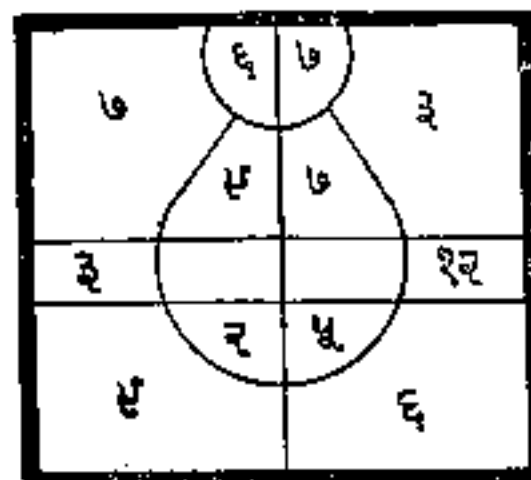
इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर बांधने से मूंठ नहीं लगती। इस यन्त्र को होली की रात्रि में नंगे होकर धतूरे के रस से लिखना चाहिये ॥६९॥

छुहारा गुण यन्त्र

जिस छुहारे में दो गुठली हों उसे उठाकर रखले, फिर दीवाली के दिन अनार की कलम से, इस यन्त्र को पहले १०८ बार पृथ्वी पर लिख कर, सिद्ध करे,

यन्त्र नं० ७०

८	१	६
३	५	७
४	६	२

तत्पश्चात् भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजनकर छुहारे की दोनों गुठली को यन्त्र के साथ लपेट कर चांदी के ताबीज में मंढवाकर रखले। कार्य पड़े तब ताबीज को धोकर पिलाने से कष्टी स्त्री का कष्ट दूर होता है। रोगी का रोग दूर होता है। बांझ स्त्री के कमर में बांधने से गर्भ रहता है। पास में रख कर राज दरबार में जाने से सम्मान प्राप्त होता है। यन्त्र के प्रभाव ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होकर सभी इच्छायें पूरी होती हैं॥ ७० ॥

यंत्र नं० ७१

२	१०	२	८
७	३	८४	२४
३६	८१	६	१
४	६	२२	२५

इस यन्त्र को लिखकर, खेत में गाड़ देने से तथा क्षेत्रपाल की पूजा करने से, खेत में अधिक अन्न उत्पन्न होता है ॥ ७१ ॥

यन्त्र नं० ७२

८३	८६	२	७
६	७६	७९	७८
८५	७५	८	१
४	५	७७	८२

इस यन्त्र को आश्लेषा नक्षत्र में शत्रु की हाट में लिखने से हाट उजड़ जाती है ॥ ७२ ॥

यंत्र नं० ७३

६४	६१	२	८
७	३	६८	६८
७०	६५	९	१
४	६	६६	६९

इस यन्त्र को कौंच के बीज से लिख कर घर में रखने से चूहे कपड़े को नहीं काटते है ॥ ७३ ॥

यन्त्र नं० ७४

७९	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	९	१
४	६	७३	७६

इस यंत्र को थूहर के रस में (दूध) स्वाति नक्षत्र में लिख कर, पुरुष अपनी कमर में धारण करे तो शुक्र का स्तम्भन होता है ।। ७४ ।।

यन्त्र नं० ७५

१९	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
१	६	२१	२३

इस यंत्र को सेही के कांटे से, पशु के खूंटे पर लिख देने से तथा खूंटे को गाढ़ देने से गया हुआ पशु वापस लौट आता है ।।७५।।

यन्त्र नं० ७६

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२	७	९	१
४	६	९	९

इस यंत्र को केवड़े के रस से लिख कर, सिरहाने रखकर सोने से स्वप्न में भूत ही भूत दिखाई पड़ते हैं ॥७६॥

यंत्र नं० ७७

७७	८४	२	८
७	३	८१	८३
७४	७८	९	१
४	६	७९	८५

[illegible]
[illegible]

यन्त्र नं० ७८

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
६१	७६	९	१
४	६	७७	८०

इस यंत्र को पुष्य नक्षत्र में लिखकर स्वयं के पास रखने से भोग इच्छा खत्म हो जाती है ॥७८॥

यन्त्र नं० ७९

७९	७६	२	७
६	३	८३	८४
८५	८०	८१	१
४	५	८१	८४

इस यन्त्र को कुम्हार के आवे की ठीकरी पर लिख कर, किसी के घर में डाल देने से, उस घर में कलह होना प्रारम्भ हो जाता है ॥७९॥

यन्त्र नं० ८०

४१	४२	२	७
६	३	४५	४०
४७	४३	८	१
४	५	४३	४०

इस यन्त्र को शत्रु के नाम सहित गधे के मूत्र से लिख कर, ऊपर से जूता मारने से शत्रु का मुँह सूज जाता है ।८०।।

यन्त्र नं० ८१

६६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

इस यन्त्र को कुलिंजन के रस से लिख कर ताबीज में मंढ़वा कर पास रखने से वचन सिद्धि होती है ।।८१।।

यन्त्र नं० ८२

४१	१८	११
१०	२०	३०
१६	२३	३२

इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर से लिखकर सरसों के तेल में जलाने से परस्पर की प्रीति नष्ट होती है ॥८२॥

यन्त्र नं० ८३

तं	तं	तं	तं
तं	तं	तं	तं
तं	तं	तं	तं
तं	तं	तं	तं

इस यन्त्र को श्मसान के कोयले से शत्रु के वस्त्र पर लिखने से उसको परदेश भाग जाना पड़ता है ॥८३॥

यन्त्र नं० ८४
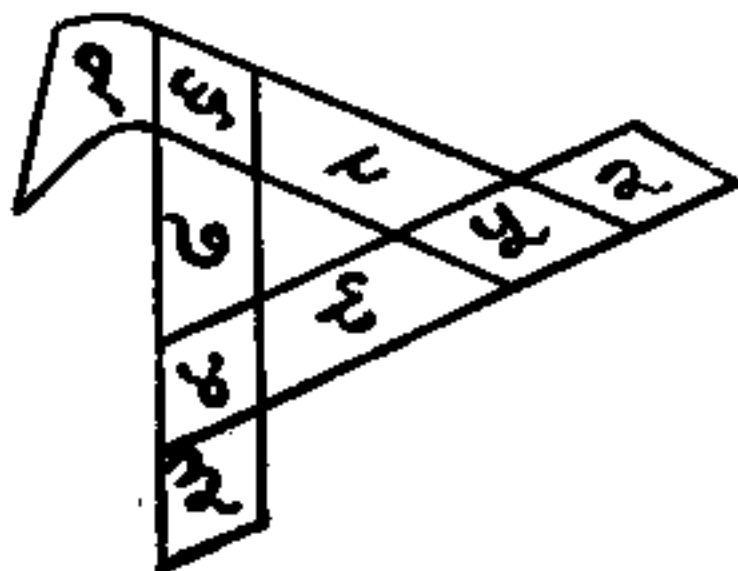
इस यन्त्र को लक्ष्मी पूजा के दिन बसने बदलने के दिन बही खातों पर हल्दी से यन्त्र मन्त्र लिखे, तो लक्ष्मी लाभ होगा। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः। इस मन्त्र का १०८ बार नित्य जप करे ॥८४॥

यन्त्र नं० ८५

८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७
८	३३४	३३४	३३४	७

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर गले में बांधने से मसान का रोग शांत होता है ॥८५॥

यंत्र नं० ८६

हं	सं	खं	फं
षं	दं	धं	झं
नं	पं	मं	दं
र्चं	यं	जं	दं

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर सोते समय सिरहाने रख लेने से बुरे स्वप्नों का दिखना बन्द हो जाता है ॥८६॥

यन्त्र नं० ८७
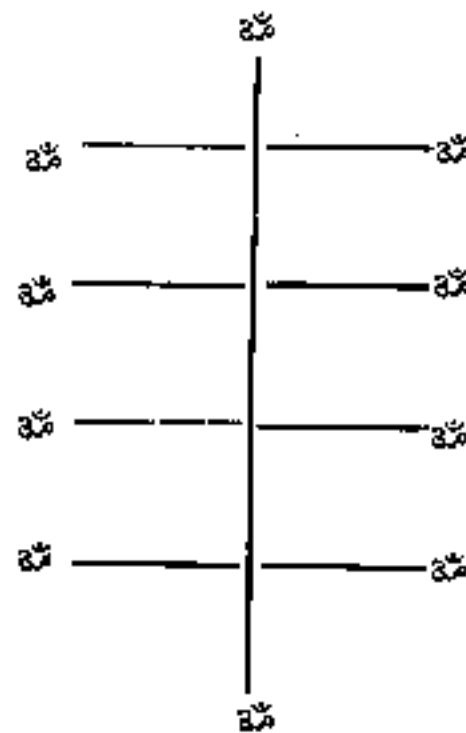
इस यन्त्र को कागज पर लिखकर लोबान की धूप देकर, ओखली में धर कर कूटे। डाकिनी का मस्तक फूट जायेगा और वह चिल्लाकर सब कुछ बताने लगेगी और रोगी को छोड़ कर भाग जायगी ॥८७॥

यंत्र नं० ८८

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

नगे खप्पर पर खडिया मिट्टी से यन्त्र को लिख कर पुष्पादि से पूजा कर धूलि से पूर्ण अग्नि में रखकर खप्पर को अग्नि से प्रज्वलित करे। इस यन्त्र के प्रभाव से भूतादिक, रोते कांपते हुये बालकादिक को अथवा कोई भी हो छोड़ कर भाग जाते हैं। उस देश में ही बास नहीं करते हैं ॥८८॥

यन्त्र नं० ८९

१	४	४४	८
४५	७	२	४६
६	४२	४६	३
४८	४	५	४३

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर, भुजा में बांधने से दोनों प्रकार के खूनी और बादी बवासीर दूर हो जाता है ॥८९॥

यन्त्र नं० ६०

१२	११
३	३

इस यन्त्र को कागज पर लिख कर लपेट कर रोगी को धुंआने पर तथा इस यन्त्र में राई भर कर जलने से भूत जिन्न उतर जाते हैं ॥६०॥

यन्त्र नं० ६१

श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर गले में बांधने से शीतला (चेचक) नहीं निकलती है। जिसको निकली है उसकी शांत होती है ॥६१॥

यन्त्र नं० ६२

७१	७१	७१
७१	७१	७१
७१	७१	७१

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर दांयीं भुजा में बांधने से, तिजारी बुखार दूर हो जाता है ।।६२।।

यन्त्र नं० ६३

७२	७९	२	७
६	३	७६	७५
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

इस यन्त्र को मार्ग की बालू पर लिख कर ऊपर कोड़ा मारने से, गया हुआ मनुष्य घर लौट आवे ।।६३।।

यन्त्र नं० ९४

२२	२९	२	८
७	६	१६	२५
२८	२६	९	१
३	६	२४	२१

इस यन्त्र को अनार के रस से लिखकर कान में बांध देने से, कान में दर्द नहीं है ॥ ९४ ॥

यन्त्र नं० ९५

=		=	III
—	b	=	≡
II	IIII	≡	IIII
IIII	IIII	=	III

इस यन्त्र को आम वृक्ष के नीचे बैठकर सवा लक्ष लिखने से अम्बिका देवी प्रसन्न होती है ॥९५॥

यन्त्र नं० ९६

गं	ठं	जं	चं
छ्लं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	चं
नं	छ्लं	जं	टं

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर, गुगुल का धूप देकर, गले में धारण करने से दुष्ट स्वप्नों का दीखना बन्द हो जाता है।९६।

यन्त्र नं० ९७

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

इस यन्त्र को केशर, गोरोचन अथवा रोली से भोजपत्र पर लिखकर, गाय के गले में और भैंस के सींग में गुगल की धूप देकर बांधने से वह बच्चे को लगाने तथा बहुत दूध देने लगती है।९७।

यन्त्र नं० ९८
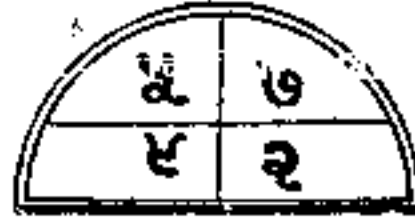
इस यन्त्र को कागज पर लिख कर, रविवार के दिन, सूर्य के सामने पानी में धोकर पीने से वायु गोला का दर्द तुरन्त दूर हो जाता है।९८।

यन्त्र नं० ९९
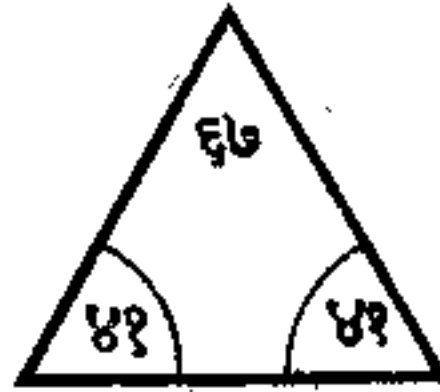
इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर रखने से कुत्ते का विष दूर होता है।९९।

यन्त्र नं० १००

६२३	१ स	८६
७ सी	५ पू	३७
२ म	९८	४ स

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर कमर में बांधने से धरन ठिकाने पर आ जाती है।१००।

यन्त्र नं० १०१

६	७	२
१	५	९
८	३	४

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर घोड़े के गले में बांधने से उसका पेट दर्द दूर होता है। पेशाब बन्द हो जाय, तो होने लगता है। सर्व कष्ट दूर हो जाता है। १०१।

यन्त्र नं० १०२

४	५	७४	७७
७९	७२	८	१
६	३	७६	९५
७२	३८	२	८

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर कमर में बांधने से नपुंसक व्यक्ति की नपुंसकता दूर होती है।१०२।

यन्त्र नं० १०३

इस यन्त्र को अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर मस्तक पर बांधने से पीलिया रोग दूर होता है।१०३।

॥ यन्त्राधिकार इति ॥

भगवान महावीर के अहिंसा का सार :—

"तुम स्वयं जीओ और जीने दो।"

पढ़ लेने से धर्म नहीं होता, पोथियों और पिच्छी से भी धर्म नहीं होता, किसी मठ में भी रहने से धर्म नहीं है और केशलोंच करने से भी धर्म नहीं कहा जाता। धर्म तो आत्मा में है उसे पहचानने से धर्म की प्राप्ति होती है।

❖ भजन ❖

संकलनकर्त्ता—शान्ति कुमार गंगवाल

महावीर कीर्त्ति गुरु स्वामी, दुःख मेटो जी अन्तरयामी ।। टेर ।।

(१) रतनलाल के पुत्र कहाये, बूंदा देवी जी के जाये ।

सबसे नेहा तोड़ा, जग से मुँह को मोड़ा, दीक्षा धारी—दुःख... ....

(२) वीर सागर से क्षुल्लक दीक्षा धारी,

आदी सागर से मुनि दीक्षा धारी ।

शेढवालमे आ, सबसे आग्रह पा,

पदवी आचार्य की पाई दुःख... ....—मेटो जी अन्तरयामी

(३) पाँचों रस का तो त्याग किया है

त्याग स्वारथ को भी कर दिया है ।

अठारह भाषा के ज्ञाता, सारे शास्त्रों के वेत्ता,

गुरु स्वामी—दुःख....... मेटो जी अन्तरयामी

(४) लाखों बार तुम्हें शीश नवाऊं,

मुनीराज दरश कब पाऊं ।

सेवक व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया,

लागे नाहीं—दुःख....... मेटो जी अन्तरयामी

❖ भजन ❖

सारे जहाँ से न्यारे, मुनिराज है हमारे ।

झांको तो इनके अन्दर, तन–मन से ये दिगम्बर,

वैभव के हर नजारे, इनको लुभा के हारे—सारे जहाँ से ....

इनको न मोह मठ से, रखते न पर से यारी,

धूणी न ये रमाते, होते न जटाधारी ।

टीका तिलक से हटकर, इनके स्वरूप न्यारे—सारे जहाँ...........

सेवक से न खुश हो, दुश्मन से न द्वेष करते ।

कोई भी फिर सताये, ये क्षमा भाव धरते ।

हर क्षण क्षमा का दरिया, बहता है इनके द्वारे—सारे जहाँ से.......

।। समाप्त ।।

इस खण्ड में (४—१ से ४—२४)

प्रत्येक तीर्थंकर के काल में उत्पन्न शासन रक्षक
यक्ष यक्षणि के चित्र सहित स्वरूप
व होम विधान

- २४ तीर्थंकरों के यक्ष व यक्षणि का नाम व स्वरूप १
- अष्ठ मातृका स्वरूप वर्णन, अष्ट जयाद्या देवता स्वरूप ६
- सोलह विद्या देवियों के नाम चतुः षष्टि योगिनियों के नाम १०
- यक्ष अथवा यक्षिणीयों की पंचों पचारी पूजा का क्रम, होम विधि ११
- अथ पीठिका मंत्रा १६
- अथ पूर्ण आहूति २०
- अथ पुन्याह् वाचन २१
- मंत्र जप के बाद दशांस होम करने के लायक २३
- होम कुण्डों का नक्शा २४

चतुर्थाधिकार

प्रत्येक तीर्थंकर के काल में उत्पन्न शासन

रक्षक यक्ष यक्षिणी के

चित्र सहित स्वरूप व होम विधान

(१) श्री आदिनाथ जी (बैल का चिन्ह)

गौ मुख यक्ष—स्वर्ण के समान, कांति वाला, गौ मुख सदृश वाला, वृषभ वाहन वाला, मस्तक पर धर्म चक्र, चार भुजा वाला ऊपर के दाहिने हाथ में माला, बांए हाथ में फरसा तथा नीचे वाले दाहिने हाथ में वरदान, बांऐ हाथ में बिजोरे का फल धारण करने वाला होता है। (चित्र नं० १)

"चक्रेश्वरी यक्षिणी" (अप्रतिहत चक्रा) :—स्वर्ण के जैसे वर्ण वाली, कमल पर बैठी हुई गरुड़ की सवारी, १२ भुजा वाली, दोनों हाथों में दो वज्र, दो तरफ के चार चार हाथों में आठ चक्र, नीचे के दाहिने हाथ में वरदान धारण करने वाली, नीचे के बांऐ हाथ में फल। प्रकारान्तर से चार भुजा वाली भी मानी है। ऊपर के हाथों में चक्र, नीचे के बाऐ हाथ में बिजोरा, दाहिने हाथ में वरदान धारण करने वाली है। क्षेत्रपाल ४ जय, विजय, अपराजित, माणि भद्र। (चित्र नं० २)

(२) श्री अजितनाथजी (हाथी का चिन्ह)

"महायक्ष"—जिन शासन देव—स्वर्णसी कांति वाला, गज की सवारी चार मुख व आठ भुजा वाला है। बांऐ चारों हाथों में चक्र, त्रिशूल, कमल और अंकुश तथा दाहिने चारों हाथों में तलवार, दंड फरसा और वरदान धारण करने वाला है। (चित्र नं० ३)

"रोहणि यक्षिणी"—स्वर्ण समान कांति वाली, लोहासन पर बैठने वाली चार भुजा

वाली हाथों में शंख, चन्द्र अभय और वरदान युक्त है। (चित्र नं० ४)

क्षेत्रपाल—४ क्षेम भद्र, क्षांति भद्र, श्री भद्र, शान्ति भद्र।

(३) श्री संभवनाथजी (घोड़े का चिन्ह)

"**त्रिमुख यक्ष**"—कृष्ण वर्ण वाला, मोर वाहन वाला, तीन नेत्र व तीन मुख वाला, छह भुजा वाला, बांएे हाथों में चक्र, तलवार व अंकुश और दाहिने हाथों में दंड, त्रिशूल, और तीक्षण कतरनी को धारण करने वाला है। (चित्र नं० ५)

"**प्रज्ञप्ति यक्षिणी**"—श्वेत वर्ण, पक्षी की सवारी छह हाथ वाली हाथ में अर्द्ध चन्द्रमा, फरसा, फल तलवार, तूम्बी और वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र नं० ६)

क्षेत्रपाल—४ वीर भद्र, वलि भद्र, गुण भद्र, चन्द्राय भद्र।

(४) श्री अभिनन्दन नाथजी (वानर का चिन्ह)

"**यक्षेश्वर यक्ष**"—कृष्ण वर्ण वाला, गज की सवारी, चार भुजा वाला, बांएे हाथ में धनुष और ढाल, दाहिने हाथ में बाण और तलवार धारण करने वाला है। (चित्र नं० ७)

"**वज्र शृंखला यक्षिणी**"—स्वर्ण सी कांति वाली, हंस वाहिनी, चार भुजा वाली, हाथों में नाग पाश, बिजोरा फल, माला और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र नं० ८)

क्षेत्रपाल—४ महा भद्र, भद्र भद्र, शत भद्र, दान भद्र।

(५) श्री सुमतिनाथजी (चकवे का चिन्ह)

"**तुम्बरु यक्ष**" —कृष्ण वर्ण वाला, गरुड़ की सवारी और यज्ञोपवित धारण करने वाला, चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनों हाथों में सर्प, नीचे दाहिने हाथ में वरदान तथा बांएे हाथ में फल धारण करने वाला है। (चित्र नं० ९)

"**पुरुष दत्ता यक्षिणी**"—(खड्गवरा) स्वर्ण के वर्ण तथा हाथी की सवारी करने वाली, चार भुजा वाली है। हाथों में [illegible], [illegible], और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र नं० १०)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रतिष्ठा कल्प मेर भुजा वाला) है। दाहिने हाथ में माला व वरदान तथा बाऐं हाथ में ढाल और अभय को धारण करने वाला है। (चित्र नं० ११)

"मनोवेगा (मोहनी) यक्षिणी"—स्वर्ण वर्ण तथा अश्व वाहन वाली, चार भुजा वाली है। हाथों में वरदान, तलवार, ढाल और फल को धारण करने वाली है। (चित्र नं १२)

क्षेत्रपाल—४ कालाचन्द्र, कल्पचन्द्र, कुमुत चन्द्र, कुमुद चन्द्र।

(७) श्री सुपार्श्वनाथजी (स्वस्तिक का चिन्ह)

"मातङ्ग यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला, सिंह की सवारी करने वाला, टेढ़ा मुंह वाला, दाहिने हाथ में त्रिशूल, बाऐ हाथ में दण्ड को धारण करने वाला है। (चित्र नं० १३)

"काली देवी (मानवी) यक्षिणी" यक्षिणी—श्वेत वर्ण वाली, बैल की सवारी करने वाली चार भुजा वाली है। हाथों में घंटा, फल, त्रिशूल और वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र नं० १४)

क्षेत्रपाल—४ विद्याचन्द्र, क्षेमचन्द्र, विनयचन्द्र।

(८) श्री चन्द्र प्रभुजी (चन्द्रमा का चिन्ह)

"श्याम यक्ष"—कृष्ण वर्ण, कबूतर (कपोत) की सवारी करने वाला, तीन नेत्र तथा चार भुजा वाला है। बाऐ हाथ में फरसा और फल, दांऐ हाथ में माला और वरदान युक्त है। (चित्र नं० १५)

"ज्वाला मालिनी (ज्वालिनी) यक्षिणी"—श्वेत वर्ण भैंसा (महिष) की सवारी करने वाली तथा आठ भुजा वाली है। हाथों में चक्र, धनुष नाग पाश, ढाल, बाण, फल, चक्र, और वरदान है। (चित्र नं० १६)

क्षेत्रपाल —४ सोम कांति, रविकांति, शुभ्र कांति, हेम कांति।

(९) श्री पुष्पदन्तजी (मगर का चिन्ह)

"अजित यक्ष"— श्वेत वर्ण वाला, कछुआ की सवारी तथा चार हाथ वाला है। दाहिने हाथों में अक्ष माला है और वरदान तथा बाऐ हाथों में शक्ति और फल को धारण करने वाला है। (चित्र नं १७)

"महाकाली (भ्रकुटि) यक्षिणी"—कृष्ण वर्ण वाली, कछवा की सवारी तथा चार

भुजा वाली है हाथों में वज्र, फल, मुग्दर और वरदान युक्त है। (चित्र नं० १८)

क्षेत्रपाल—४ वज्रकांति, वीरकांति, विष्णुकांति, चन्द्रकांति।

(१०) श्री शीतलनाथजी (कल्प वृक्ष का चिन्ह)

"ब्राह्म यक्ष जिन शासन देव"—श्वेत वर्ण, कमल आसन, चार मुख और आठ हाथों वाला है। बाऐं हाथ में धनुष, दण्ड, ढाल और शंख तथा दाहिने हाथ में बाण, फरसा तलवार और वरदान को धारण करने वाला है। (चित्र नं० १९)

"चामुण्डा देवी (मानवी चामुण्डी) यक्षिणी"—हरे वर्ण वाली, काले सूवर की सवारी, चार भुजा वाली है, हाथों में मछली माला, बिजोरा फल और वरदान धारण करने वाली है। (चित्र नं० २०)

क्षेत्रपाल—४ शतवीर्य, महावीर्य, बलवीर्य, कीर्तिवीर्य।

(११) श्री श्रेयांसनाथजी (गैंडे का चिन्ह)

"ईश्वर यक्ष"—श्वेत वर्ण, बैल की सवारी करने वाला, त्रिनेत्र तथा चार भुजा वाला है। बाऐं हाथ में त्रिशूल और दण्ड तथा दाहिने हाथ में माला और फल को धारण करने वाला है। (चित्र नं० २१)

"गौरी यक्षिणी"—स्वर्ण वर्ण तथा हरिन की सवारी करने वाली, चार भुजा वाली है। हाथों में मुग्दर, कलश, कमल, और वरदान को धारण करने वाली है। (चित्र नं० २२)

क्षेत्रपाल—४ तीर्थ रुचि, भाव रुचि, भव्य रुचि, शान्ति रुचि।

(१२) श्री वासुपूज्यजी (भैंसे का चिन्ह)

"कुमार यक्ष"—श्वेत वर्ण तथा हंस की सवारी करने वाला है। त्रिनेत्र और छह भुजा वाला है। बांए हाथ में धनुष, नोलिया और फल तथा दाहिने हाथों में बाण गदा और वरदान को धारण करने वाला है। (चित्र नं० २३)

"गान्धारी (विद्युन्मालिनी) यक्षिणी"—हरित वर्ण, मगर वाहिनी तथा चार भुजा वाली है। ऊपर के दोनो हाथ में कमल, फल, वरदान युक्त है। (चित्र नं० २४)

क्षेत्रपाल—४ लब्धि रुचि, तत्व रुचि, सम्यक्त रुचि, तूर्य वाद्य रुचि।

(१३) श्री विमलनाथजी (सूवर का चिन्ह)

"चतुर्मुख यक्ष"—वर्ण मुख, हरित वर्ण वाला, मोर की सवारी करने वाला चार

गौमुख यक्ष नं. १

चक्रेश्वरी यक्षणी नं. २

महायक्ष नं. ३

रोहिणि यक्षणी नं. ४

त्रिमुख यक्ष नं. ३

प्रज्ञप्ति देवी नं. ३

यक्षेश्वर यक्ष नं. ४

वज्रश्रृंखला यक्षी नं. ४

मातंग यक्ष नं. ७

काली यक्षी नं. ७

श्याम यक्ष नं. ८

ज्वाला मालिनी यक्षणी नं. ८

अजितयक्ष नं. १७

महाकाली यक्षणी नं. १८

ईश्वर यक्ष नं-११

गौरी देवी नं-११

कुमार यक्ष नं-१२

गान्धारी यक्षणी १२

षणमुख यक्ष नं. २५

वैराटी यक्षी नं. २६

पाताल यक्ष नं. २७

अनन्तमती यक्षी नं. २८

किन्नर यक्ष नं. २९

मानसी यक्षणी नं. ३०

गरुड़ यक्ष नं. ३१

महामानसी यक्षणी नं. ३२

मुख, बारह भुजा वाला है। ऊपर के आठ हाथों में फरसा तथा बाकी के चारों हाथों में तलवार, ढाल, माला और वरदान धारण करने वाला है। प्रतिष्ठा तिलक में छह मुख वाला है। (चित्र नं० २५)

"वैराटी देवी यक्षिणी"—हरे वर्ण वाली सर्प वाहिनी, चार भुजा वाली है। ऊपर के दोनों हाथों में सर्प, नीचे के दाहिने हाथ में बाण बांऐ हाथ में धनुष को धारण करने वाली है। (चित्र नं० २६)

क्षेत्रपाल—४ विमल भक्ति, आराध्य रुचि, वंद्य रुचि, भावस्य वंद्य वाद्य रुचि।

(१४) श्री अनन्तनाथजी (सेही का चिन्ह)

"पाताल यक्ष" लाल वर्ण तथा मगर की सवारी करने वाला और तीन मुख वाला, मस्तक पर सर्प की तीन फणि को धारण करने वाला तथा छह भुजावाला है दाहिने हाथ में अंकुश त्रिशूल और कमल तथा बांऐ हाथ में चाबुक हल और फल धारण करने वाला है। चित्र नं० २७।

"अन्नतमति यक्षिणी" स्वर्ण वर्ण वाली, हंस वाहनी, चार भुजा वाली है हाथों में धनुष, बीजोरा फल बाण और वरदाम धारण करने वाली है। चित्र नं० २८।

क्षेत्रपाल ४ स्वभाव नामा, पर भाव नामा, अनौपम्य, सहजानन्द।

१५. श्री धर्मनाथजी (वज्र का चिन्ह)

"किन्नर यक्ष"—मूंगे (प्रवाल) के वर्णमाला मछली की सवारी करने वाला, त्रिमुख और छह भुजा वाला है बांए हाथों में फरसा वज्र और अंकुश तथा दाहिने हाथ में मुग्दर माल, और वरदान को धारण करने वाला है। चित्र नं० २६।

"मानसी यक्षिणी"—मूंगे जैसी लाल कांति वाली व्याघ्र की सवारी करने वाली, छह भुजा वाली है। हाथों में कमल, धनुष वरदान, अंकुश बाण और कमल को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३०।

क्षेत्रपाल – ४ धर्मंकर, धर्माकारी, सांतकर्मा (सातु कर्मक) विनय नाम।

१६. श्री शान्तिनाथजी (हरिन का चिन्ह)

"गरूड़ यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला टेढ़ा मुख वाला (सूवर का सा मुंह वा ा) सूवर की सवारी करने वाला चार भुजा वाला है। नीचे के दोनों हाथों में कमल और फल तथा ऊपर के दोनों हाथों में वज्र और चक्र लिए हुये हैं। चित्र नं० ३१।

"**महामानसी (कंदर्पा) यक्षिणी**"—मयूर वाहिनी चार भुजा वाली तथा स्वर्ण के समान वर्ण वाली है। हाथों में चन्द्र, फल, वज्र और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३२।

क्षेत्रफल—४ सिद्धसेन, महासेन, लोक सेन, शिवकेतु।

१७. श्री कुन्थनाथ जी (बकरे का चिन्ह)

"[illegible] यक्ष"—[illegible] चार भुजा [illegible] हाथों में [illegible] चित्र नं० ३३।

"[illegible] यक्षिणी—[illegible] करने वाली [illegible] को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३४।

क्षेत्रपाल ४ [illegible]नाथ, भूमिनाथ, देशनाथ, अवनिनाथ।

१८. श्री अरहनाथजी (मत्स्य का चिन्ह)

"**खगेंद्र यक्ष**"—शंख की सवारी करने वाला त्रिनेत्र तथा छह मुख वाला है बांए हाथों में क्रमशः धनश, कमल, माला, बीजोराफल, बड़ी यक्ष माला और अभय को धारण करने वाला है। चित्र नं० ३५।

"**तारावती यक्षिणी**"—स्वर्ण वर्ण वाली हंस वाहनी, चार भुजा वाली है। हाथों में सर्प हरिण वज्र और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ३६।

क्षेत्रपाल ४ गिरिनाथ, गह्वरनाथ, वरुणनाथ मैत्रनाथ।

१९. श्री मल्लिनाथजी (कलश का चिन्ह)

"**कुबेर यक्ष**"—इन्द्र धनुष जैसे वर्ण वाला, गज वाहिनी चार मुख आठ हाथ वाला है।

"**अपराजिता देवी यक्षिणी**" हरित वर्ण वाली, अष्टापद की सवारी करने वाली चार भुजा वाली, हाथों में ढाल फल तलवार और वरदान को धारणा करने वाली है। चित्र नं० ३८।

क्षेत्रपाल—४ क्षितिप, भवप, क्षांतिप, क्षेत्रप (यक्षप)।

२०. श्री मुनिसुव्रतनाथजी (कच्छप का चिन्ह)

"वरूण यक्ष"—श्वेत वर्ण तथा बैल की सवारी करने वाला जटा के मुकुट वाला, आठ मुख वाला, प्रत्येक मुख तीन तीन नेत्र वाला और चार भुजा वाला है। बांए हाथ में ढाल और फल तथा दाहिने हाथ में तलवार और वरदान है। चित्र नं० ३९।

"बहुरुपिणी (सुगन्धनी देवी) यक्षिणी"—पीत वर्ण, कृष्ण सर्प की सवारी करने वाली और चार भुजा वाली है हाथों में ढाल फल तलवार और वरदान धारण करने वाली है। चित्र नं० ४०।

क्षेत्रपाल—४ चंद्रराज, गुणराज, कल्याणराज, भव्यराज।

२१. श्री नमिनाथजी (नील कमल का चिह्न)

"भ्रकुटि यक्ष"—रक्त वर्ण वाला, बैल की सवारी करने वाला चार मुख तथा आठ हाथ वाला, हाथों में ढाल, तलवार, धनुष, बाण, अंकुश कमल चक्र और वरदान है। चित्र नं० ४१।

"चामुण्डा (कुसुममालनि) यक्षिणी"—हरित वर्ण वाली मगर की सवारी करने वाली चार भुजा वाली, हाथों में दण्ड, ढाल, माला और तलवार है। चित्र नं० ४२।

क्षेत्रपाल ४ कपिल, बटुक, भैरव, भैरव, सल्लाकारव्य।

२२. श्री नेमिनाथजी (शंख का चिन्ह)

"गोमेद यक्ष"—कृष्ण वर्ण वाला तीन मुख तथा पुष्प के आसन वाला मनुष्य की सवारी करने वाला और छह हाथ वाला है हाथों में मुग्दर फरसा, दण्ड, फल, चक्र और वरदान है। चित्र नं० ४३।

"आम्रा (कुष्माण्डनी) यक्षिणी"—सिंह वाहनी आम की छाया में रहने वाली दो भुजा वाली हैं बांए हाथ में प्रिय पुत्र की प्राप्ती के लिए आम्रा की लूम को धारण करने वाली है तथा दाहिने हाथ में शुभकर पुत्र को धारण करने वाली है। चित्र नं० ४४

क्षेत्रपाल ४ कौकल, खगनाम, त्रिनेत्र कलिंग।

२३. श्री पार्श्वनाथजी (सर्प का चिन्ह)

"धरणेन्द्र यक्ष" आकार के समान नीले वर्णवाला, कछुआ की सवारी करने वाला,

मुकुट में सर्प का चिन्ह और चार भुजा वाला है। ऊपर के दोनों हाथों में सर्प और व नीचे के बांऐ हाथ में नागपाश और दाहिने हाथ में वरदान को धारण करने वाला है। चित्र नं० ४५।

"पद्मावती देवी यक्षिणी"—कमल (आशाधर पाठ में कुक्कुट)सर्प की सवारी करने वाली कमलासानी माना है मस्तक पर सर्प के तीन फणों के चिन्ह वाली माना है। मल्लि-षेणाचार्य कृत पद्मावती कल्प में चारों हाथों में पाश फल वरदान को धारण करने वाली भी माना है। प्रकारान्तर में छह और चोबीस भुजा वाली भी माना है। छह हाथों में पाश, तलवार, भाला बाल चन्द्रमा गदा और मूसल को धारण करती है। तथा २४ हाथों में शंक तलवार, चक्र, बाल चन्द्रमा, सफेद कमल, लाल कमल, धनुष, शक्ति, पाश, अंकुश, घंटा, बाण, मूसल, ढाल त्रिशूल, फरसा वज्र, माला, फल, गदा पान नवीन, पत्तों का गुच्छा और वरदान को धारण करने वाली है। चित्र नं० ४६।

क्षेत्रपाल ४ कीर्तिधर, स्मृतिधर, विनयधर, अञ्जधर (अञ्जारव्य)।

२५. श्री महावीरजी (सिंह का चिन्ह)

"मातंग यक्ष"— मूंगे के जैसे वर्ण वाला, गज वाहन मस्तक पर धर्म चक्र को धारण करने वाला और दो भुजा वाला है। बांयें हाथ में विजोराफल, दाहिने हाथ में वरदान है। चित्र नं० ४७।

"सिद्धायिक यक्षिणी"—स्वर्ण के समान वर्ण वाली भद्रासनी, सिंहवाहनी, दो भुजा वाली बांयें हाथ में पुस्तक व दाहिने हाथ में वरदान युक्त है। चित्र नं० ४८।

क्षेत्रपाल ४ कुमुद, अंजन, चामर, पुष्पदंता।

॥ इति ॥

कुबेर यक्ष नं. ३७

अपराजिता देवी नं. ३८

वरुण यक्ष नं. ३९

बहुरूपिणी यक्षी नं. ४०

भ्रकुटी यक्ष नं. ४१

चामुण्डा यक्षणी नं. ४२

गोमेध यक्ष नं. ४३

[illegible] यक्षी नं. ४४

धरणेन्द्र यक्ष नं. ४५

पद्मावती देवी यक्षणी नं. ४६

मातङ्ग यक्ष नं. ४७

सिद्धायिका देवी नं. ४८

अष्ठमातृका स्वरूप वर्णन

१–(ब्रह्माणी) देवी पद्मराग वर्णवाली, पद्मवाहन, मूसल का आयुध धारण करने वाली है।

२–(माहेश्वरी देवी) सुकर का वाहन, दंड और वरदान, आयुध को धारण करने वाली और श्वेतवर्ण वाली है।

३–(कौमारिदेवी) विद्रुम वर्ण वाली, मयुर का वाहन (खड्ग) तलवार का आयुध धारण करने वाली है।

४–(वैष्णविदेवि) इन्द्रनील वर्ण वाली, चक्रायुध धारण करने वाली, और गरूड वाहन वाली है।

५–(वाराहिदेवी) नील वर्ण वाली, वराहका (सुकर) वाहन वाली, हल का आयुध धारण करने वाली है।

६–(इन्द्राणि देवी) सुवर्ण वर्ण वाली, वज्रायुध धारण करने वाली, हाथी का वाहन वाली है।

७–(चामुंडिदेवी) अरूण वर्ण वाली, व्याघ्र वाहन वाली, शक्ति आयुध को धारण करने वाली है।

८–(महालक्ष्मीदेवी) सर्वलक्षणों से पूर्ण गदा का आयुध, चूहें का वाहन, और श्वेत वर्ण।

अष्टजयाद्यादेवता स्वरूप

१–(जयादेवी) पाश, असि, खेटक, और फल, सोने के समान वर्ण वाली, पीतांबर को धारण करने वाली, फूल की माला पहने हुये, चार भूजा वाली।

२–(विजयादेवी) छः हाथ वाली कोदंड, बाण, असि, गदा, सरोज, फल, के आयुध धारण करने वाली रक्त वर्ण वाली, रक्ताम्बर वाली।

३–(अजितादेवी) श्वेत वर्ण वाली, सुवर्ण वस्त्र, मत्स्य का वाहन, दो भुजा वाला, एक हाथ में कृपाण एक हाथ फल।

४–(अपराजितादेवी)कृष्ण वर्ण वाली, कृष्णांबर धारण करने वाली ६ भुजा वाली खेट, कृपाण रूचक, अभय, गदा, पाश, के आयुध को धारण करने वाली।

५–(जंभादेवी) लाल वस्त्र को धारण करने वाली, श्वेत वर्ण वाली, अष्ट भुजा वाली, धनुष, बाण, कृपाण, गदा, वर, माला, फल, अंबुरूह।

६–(मोहादेवी) रक्तवर्ण वाली, श्वेत वस्त्र को धारण करने वाली, सिंहाधिरूढ, चार भुजा वाली, माला, अभय, अंभोज, (कमल), वरद, को धारण करने वाली है।

७–(स्तंभादेवी) सुवर्ण वर्ण वाली, लाल वस्त्र को धारण करने वाली, हाथी की सवारी, छह हाथ वाला, खड्ग, त्रिशूल, उत्पल, मातुलिंग, वरद, अभय के आयुध वाली हैं।

८–(स्तंभिनीदेवि) रक्तवर्ण वाली, लाल वस्त्र को धारण करने वाली, ४ भुजा वाली, फल, असि, पुत्रीपरिका, अभय के आयुधों को धारण करने वाली, द्विरदाधि रूढ।

सोलह विद्या देवियों के नाम

रोहिणी १ प्रज्ञाप्ते २ वज्र शृंखला ३ वज्रांकुशे ४ अप्रतिचक्रे ५ पुरूषदत्ता ६ कालि ७ महाकालि ८ गान्धारि ९ गौरि १० ज्वालामालिनि ११ वैरोटि १२ अच्युते १३ अपराजिते १४ मानसि १५ महामानसि १६।

सोलह विद्या देवियों के वाहन व आयुध २४ यक्षिणीयों अन्तर्गत ही है इसलिये अलग से नहीं दिया है। २४ यक्षियों के चिन्ह सहित वर्णन कीया है।

चतुःषष्टि योगिनीयों के नाम

दिव्ययोगिनी १ महायोगिनी २ सिद्धयोगिनी ३ जिणेश्वरी ४ प्रेताक्षी ५ डाकिनी ६ काली ७ कालरात्रि ८ निशाचरी ९ हुंकारी १० सिद्धवैताली ११ ह्रींकारी १२ भूतडामरी १३ ऊर्ध्वकेशी १४ विरूपाक्षी १५ शुक्लाङ्गी १६ नरभोजिनी १७ षट्कारी १८ वीरभद्रा १९ धूम्राक्षी २० कलहप्रिया २१ राक्षसी २२ घोररक्ताक्षी २३ विश्वरूपा २४ भयंकरी २५ वैरी २६ कुमारिका २७ चण्डि २८ वाराही २९ मुण्डधारिणी ३० भास्करी ३१ राष्ट्रटंकारी ३२ भीषणी ३३ त्रिपुरान्तका ३४ रौरवी ३५ ध्वंसिनी ३६ क्रोधा ३७ दुर्मुखी ३८ प्रेतवाहनी ३९ खट्वाङ्गी ४० दीर्घलंबोष्ठि ४१ मालिनी ४२ मन्त्रयोगिनी ४३ कालिनी ४४ ग्राहिनी ४५ चक्री ४६ कंकालि ४७ भुवनेश्वरी ४८ कटी ४९ निकटी ५० माया ५१ वामदेवाकपर्दिनी ५२ केशमर्दी ५३ रक्ता ५४ रामजंघा ५५ महर्षिणी ५६ विशाली ५७ कार्मुकी ५८ लोलाकाक

४. वज्रांकुशा (दिग०)

४. वज्रांकुशा (श्वे०)

५. जाम्बूनदा (दिग०)

५. अप्रतिचक्रा (श्वे०)

६. पुरुषदत्ता (दिग०)

६. पुरुषदत्ता (श्वे०)

७. काली (दिग०)

७. काली (श्वे०)

८. महाकाली (दिग०)

८. महाकाली (श्वे०)

९. गौरी (दिग०)

९. गौरी (श्वे०)

१०. गांधारी (दिग०)

१०. गांधारी (श्वे०)

११. ज्वालामालिनी (दिग०)

११. ज्वाला (श्वे०)

१२. मानवी (दिग०)

१२. मानवी (श्वे०)

१३. वैरोटी (दिग०)

१३. वैरोट्या (श्वे०)

१४. अच्युता (दिग०)

१४. अच्छुप्ता (श्वे०)

१६. महामानसी (दिग०)

१६. महामानसी (श्वे०)

इष्टि रक्षोमुखी ५६ मडोग्रधारिणी ६० व्याघ्री ६१ भूतादिप्रेत नाशिनी ६२ भैरवी, महामाया ६३ कपालिनी वृथाङ्गनी ६४।

यक्ष अथवा यक्षिणीयों की पंचोपचारी पूजा का क्रम

प्रथम सकलीकरण करे, फिर अष्टद्रव्य सामग्री शुद्ध अपने हाथ से धोकर, यक्ष अथवा यक्षिणी की पंचोपचारी पूजा भक्ति से श्रद्धानपूर्वक करे।

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु भगवति अमुक यक्ष अथवा अमुक यक्षिणी एहि २ संवौषट्।

इति आह्वान मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु, भगवती, अथवा, भगवते, अमुक यक्ष, अथवा अमुक यक्षिणी, तिष्ठ २ ठः ठः

इतिस्थापन मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु भगवति, अथवा, भगवते, अमुक यक्ष, अथवा अमुक यक्षिणी, ममसन्निहिता भव २ वषट्।

इति सन्निधीकरण मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु भगवति अथवा भवावते, अमुकयक्ष अथवा अमुक यक्षिणी, जल-गंध अक्षत् पुष्पादिकान् गृण्हु २ नमः।

उपरोक्त मंत्र से प्रत्येक द्रव्य को चढ़ाते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करे। प्रत्येक द्रव्य से पूजा हो जाने के बाद विसर्जन करे।

इति द्रव्य अर्पण मंत्र

ॐ आं क्रों ह्रीं नमोऽस्तु, भगवति अथवा भगवते, यक्ष, अथवा अमुक, यक्षिणी स्वस्थानं गच्छ २ जः जः जः।

इति विसर्जन मंत्र

इस प्रकार यक्ष अथवा यक्षिणी की पूजा करनी चाहिये।

होम विधि

पहले शकली करण के बाद होम शुरू करे

तद्यथा—ॐ ह्रीं क्ष्वीं भु स्वाहा पुष्पाञ्जलिः ॥ १ ॥

इस तरह के मन्त्र जाप के विधान को पूर्ण कर दशांस अग्नि होम करे इसका विधान इस प्रकार है।

"ॐ ह्रीं क्ष्वीं" इस मन्त्र का उच्चारण कर पुष्पांञ्जलि क्षेपण करे ।। १ ।।

ॐ ह्रीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ।। क्षेत्रपालबलिः ।। २ ।।

इस मन्त्र का उच्चारण कर क्षेत्रपाल को बलि देवे ।। २ ।।

ॐ ह्रीं वायु कुमाराय सर्व विघ्नविनाशनाय महीं पूतां कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा ।। भूमि सम्मार्जनम ।। ३ ।।

इस मन्त्र को पढ़कर भूमिका सम्मार्जन-सफाई करे ।। ३ ।।

ॐ ह्रीं मेघ कुमाराय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं सं तं पं स्वं झं झं यं क्षः फट् स्वाहा ।। भूमि सेचनम् ।। ४ ।।

यह मन्त्र पढ़कर भूमि पर जल सींचे ।। ४ ।।

ॐ ह्रीं अग्नि कुमाराय ह्म्ल्व्र्यूं ज्वल ज्वल तेजः पतये अमित तेज से स्वाहा ।। दर्भाग्निप्रज्वालम ।। ५ ।।

यह मन्त्र पढ़कर दर्भ से अग्नि सुलगावे ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं क्रों षष्ठि सहस्त्र संख्येभ्यो नागेभ्यः स्वाहा नागतर्पणम ।। ६ ।।

इस मन्त्र का उच्चारण कर नागों की पूजा करे ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं भूमिदेवते इदं जलादिकमर्चनं गृहाण स्वाहा । भूम्यर्चनम् ।। ७ ।।

यह मन्त्र पढ़कर भूमि की पूजा करे ।। ७ ।।

ॐ ह्रीं अंह क्षं वं वं श्रीं पीठ स्थापनं करोमि स्वाहा ।। होम कुण्डाऽग्व्यक पीठ स्थापनम ।। ८ ।।

इस मन्त्र का उच्चारण कर होम कुण्ड से पश्चिम की ओर पीठ स्थापन करे ।। ८ ।।

ॐ ह्रीं समग्दर्शनज्ञानः चारित्रेभ्यः स्वाहा ।। श्री पीठार्चनम ।। ९ ।।

इस मन्त्र को पढ़कर पीठ की पूजा करे ।। ९ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अंर्ह जगतां सर्व शान्ति कुर्वन्तु श्री पीठे प्रतिमास्थापनम् करोमी स्वाहा ।। श्री पीठे प्रतिमास्थापनम् ।। १० ।।

यह मन्त्र पढ़कर श्री पीठ पर प्रतिमा स्थापन करे ।। १० ।।

ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमः परमात्मकेभ्य स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनादिनिधनेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं नमो नृसुरासुर पूजितेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्तज्ञानेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्त दर्शनभ्यः स्वाहा ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽअनन्तवीर्येभ्य स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अर्हं नमोऽनन्त सौख्येभ्यः स्वाहा इत्यष्टभिर्मन्त्रैः प्रतिमार्चनम् ।। ११ ।।

इन आठ मन्त्रों का उच्चारण कर प्रतिमा की पूजा करना चाहिये ।। ११ ।।

ॐ ह्रीं धर्म चक्रायां प्रतिहत तेज से स्वाहा ।। चक्रत्रयार्चनम ।। १२ ।।

इस मन्त्र को पढ़कर तीनों मन्त्र से चक्रों की पूजा करे ।। १२ ।।

ॐ ह्रीं श्वेतच्छत्रत्रयश्रियै स्वाहा ।। छत्रत्रय पूजा ।। १३ ।।

इस मन्त्र का उच्चारण कर छत्र त्रय की पूजा करे ।। १३ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ह्रसौ २ सर्व शास्त्र प्रकाशनि वद् वद् वाग्वादिनी अवतर अवतर। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः संनिहिता भव भव वषट् क्लूं नमः सरस्वत्यै जलं निर्वपामि स्वाहा ।। एवं गन्धा क्षत पुष्प चरु दीप धूप फल व स्त्राभरणादिकम् । प्रतिमाग्रे सरस्वती पूजा ।। १४ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं इत्यादि मन्त्र पढ़कर सरस्वती का आह्वान स्थापन और सन्निधिकरण करें "क्लूं" इत्यादि पढ़कर जल गन्ध अक्षत पुष्प नवैध दीप धूप फल और वस्त्राभरणादिकसे प्रतिमा के सामने सरस्वती की पूजा करे ।। १४ ।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र पवित्रतरगात्र चतुर शीन लक्षण गुणाष्टा दश सहस्त्र शील गणधरचरणाः आगच्छत २ संवौषट इत्यादि गुरु पादुका पूजा ।। १५ ।।

"ॐ ह्रीं" इत्यादि पढ़कर गणधरो की पादुका की पूजा करे ।। १५ ।।

ॐ ह्रीं कलियुग प्रबन्ध दुर्मार्ग विनाशन परम सन्मार्ग-परिपालन भगवन् यक्षेश्वर जलार्यनं गृहाण गृहाण इत्यादि जिनस्य दक्षिणे यक्षार्चनम ।। १६ ।।

"ॐ ह्रीं" इत्यादि पढ़कर जिन भगवान के दक्षिण की ओर यक्षों की पूजा करे ।। १६ ।।

ॐ ह्रीं कलियुग प्रबन्ध दुर्मार्ग विनाशिनि सन्मार्ग प्रवर्तिनि भगवती यक्षी देवते जलाद्यर्चनं गृहाण गृहाण । इत्यादि वामे शासन देवतार्चनम ।। १७ ।।

यह मन्त्र पढ़कर जिन भगवान की बाईं ओर शासन देवताओं की पूजा करे ।। १७ ।

ॐ ह्रीं उपवेशनभूः शुध्यतु स्वाहा ।। होम कुंड पूर्व भागे दर्भपूलेनोपवेशन भूमि शोधनम् ।। १८ ।।

यह मन्त्र पढ़कर होम कुंड के पूर्व भाग में दर्भ के पूले से बैठने की जमीन को शुद्ध करे ।। १८ ।।

ॐ ह्रीं पर ब्रह्मणे नमों नमः ब्रह्मासने अहमुपविशामि स्वाहा । होम कुण्डाग्रे पश्चिमाभिमुखं होता उपविशेत ।। १९ ।।

यह मन्त्र पढ़कर होता (होम करने वाला) होम कुंड के अग्र भाग में पश्चिम की ओर मुख करके बैठे ।। १९ ।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये पुण्याहकलशं स्थापयामि स्वाहा ।।
शाली पुञ्जोपरि फल सहित पुण्याह कलश स्थापनम् ।।२० ।।

यह मन्त्र पढ़कर चावलों के ढ़ेर पर पुण्याहवाचन के कलश स्थापन करे और उनके ऊपर नारियल आदि कोई सा फल रक्खे ।। २० ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहा पद्मतिगींछ्छ केसरि पुण्डरिक महापुंडरिक गंङ्गा सिन्धु रोहिद्रोहिता स्याहरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नर कान्ता सुवर्ण रूप्य कूलारक्तारक्तोदा पयोधि शुद्ध जल सुर्वण घट प्रक्षालित वर रत्न गन्धाक्षत पुष्पा र्चितमा मोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं भ्रौं भ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः इति जलेन प्रसिञ्चय जल पवित्री करणम् ।। २१ ।।

यह मन्त्र पढ़कर जल सींचकर पूजा करने के जल को पवित्र करे ।। २१ ।।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं नेत्राय संवौषटम ।। कलशार्चनम ।। २२ ।।

यह मन्त्र बोलकर कलशों की पूजा करे ।। २२ ।।

ततो यजमानाचार्यः वाम हस्तेन कलशं धृत्वा सव्यहस्तेन पुण्यहवाचनां पठित्वा कलशं कुंडस्य दक्षिणे भागे निवेशयेत् ।। २३ ।।

इसके बाद यजमान आचार्य बांये हाथ में कलश लेकर दाहिने हाथ से पुण्याहवाचन को पढ़ता हुआ भूमि का सिंचन करे ॥ २३ ॥ और पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां इत्यादि पुण्याहवाचन को पढ़ता हुआ कलश को कुण्ड के दाहिने भाग में स्थापन करे ॥ २३ ॥

ततः ॐ ह्रीं स्वस्तये मङ्गलकुंभ स्थापयामि स्वाहा वामे मङ्गलकलश स्थापनं तत्र स्थालि पाक प्रोक्षण पात्र पूजाद्रव्य होम द्रव्य स्थापनम् ॥ २४ ॥

इसके बाद "ॐ ह्रीं स्वस्तये" इत्यादि पढ़कर कुंड के बांये भाग में कलश स्थापन करे और वहीं पर स्थालीपाक गन्ध पुष्प अक्षत फल इत्यादि को से सुशोभित पांत्र पंच पात्री प्रोक्षणपात्र, पूजाद्रव्य और होम द्रव्य को स्थापन करे ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं परमेष्ठिभ्यो नमो नमः इति परमात्म ध्यानम् ॥ २५ ॥

इसे पढ़कर परमात्मा का चिन्तवन करे ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ध्यातृ भिरभीप्सित फलदेभ्यः स्वाहा परम पुरुष स्यार्घ्यं प्रदानम् ॥ २६ ॥

यह पढ़कर परमात्मा को अर्घ्य दे ॥ २६ ॥

तत इदं यन्त्रं कुण्ड मध्ये लिखेत् ॐ ह्रीं नीरज से नमः ॐ दर्पमथनाय नमः । इत्यादि ॥ जलंदर्भै गंधाक्षतादिभि होम कुण्डार्चनम ॥ २७ ॥

[illegible]

ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं वं मं हं सं तं पं द्रां [illegible]

नम ॥ ३० ॥

यह मन्त्र पढ़कर आचमन करे ॥ ३० ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः असि आ उ सा अर्हं प्राणायामं करोमि स्वाहा ॥ त्रिरुच्चार्य प्राणायाम् ॥ ३१ ॥

इस मन्त्र का तीन बार उच्चारण कर प्राणायामः करे ॥ ३१ ॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते सत्यवचनसन्दर्भाय केवल ज्ञान दर्शनप्रज्वलनाय पूर्वोत्तराग्रं दर्भ परिस्तरणमुदुम्बर समित्परिस्तरणं च करोमि स्वाहा ॥ होम कुण्डस्य चतुर्भुजेषू पञ्च पञ्च दर्भ वेष्टितेन परिधि बन्धनम् ॥ ३२ ॥

"ॐ नमोऽर्हते" इत्यादि पढ़कर कुंड के चारों कोनों पर पांच पांच दर्भ को एक साथ बांधकर परिस्थापन करे, दक्षिण और उत्तर के कोने पर रक्खे हुये दर्भों की नौंके पूर्व दिशा की ओर करे और पूर्व पश्चिम के कोने पर रक्खे दर्भों की नोंकें उत्तर की ओर करे ॥ ३२ ॥

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्निकुमार देव आगच्छागच्छ इत्यादि ।

इत्यादिदेव माहूय प्रसाद्य तन्मौल्युद्भूवस्याग्नेरस्य गार्हपत्येनामधेयमन्त्र संकल्प्य अर्हद्दिव्यमूर्तिभावनया श्रृद्धानरूपदिव्य शक्ति समन्वित सम्यग्दर्शन भावनया समभ्यर्चनम ॥ ३३ ॥

"ॐ ॐ ॐ ॐ" इत्यादि मन्त्र पढ़कर अग्नि देव (अग्निकुमार) का आह्वान करे उसे प्रसन्न करे, अर्थात् अग्नि जलावे, 'गार्हपत्य' इस नाम की कल्पना करे और अर्हन्त भगवान की दिव्य मूर्ति की तथा श्रद्धान रूप दिव्य शक्ति युक्त सम्यग्दर्शन की भावना कर पूजा करे ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं प्रशस्त वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधूचिन्ह सपरिवाराः पञ्चदश तिथिदेवताः आगच्छत आगच्छत इत्यादि कुण्डस्य प्रथम-मेखलायामं तिथि देवतार्चनम ॥ ३४ ॥

"ॐ ह्रीं क्रौं" इत्यादि मन्त्र को बोलकर कुंड को प्रथम मेखला पर पन्द्रह तिथि देवताओं की पूजा करे ॥ ३४ ॥

"ॐ ह्रीं क्रौं" प्रशस्तवर्णसर्व लक्षणसम्पूर्णस्वायुध वाहन वधू चिन्हस परिवारा नवग्रह देवता आगच्छत आगच्छतत्यादि । उर्ध्वमेखलायां द्वात्रिंशदि दिन्द्रार्चनम ॥ ३५ ॥

यह मन्त्र पढ़कर तीसरी मेखला पर बत्तीस इन्द्रों की पूजा करे ॥ ३५ ॥

ॐ ह्रीं क्रौं स्वर्ण सुवर्णवर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहनवधू चिन्ह सपरिवार इन्द्रदेव आगच्छ अगच्छेत्यादि इन्द्रार्चनम ॥ ३६ ॥

एवं लघ पीठेषु दशदिक्पाल पूजा करे ॥ ३६ ॥

ततः ॐ ह्रीं स्थालिपाक मुपहयमि स्वाहा । पुष्पाक्षतैरुपहार्यं स्थाली पाक ग्रहणम ॥ ३७ ॥

इसके बाद "ॐ ह्रीं स्थालीपाक मुपहयामि स्वाहा" यह पढ़कर पुष्पअक्षतों से भरकर स्थालि पाक को अपने पास रखे ॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं होम द्रव्य मादधामि स्वाहा । ॥ होम द्रव्याधानम्॥३९॥

इसे पढ़ कर होम द्रव्य अपने पास रखे ।

ॐ ह्रीं आज्यपात्रस्थापनम् ॥४०॥

यह पढ़ कर होम करने के घी को अपने पास रखे स्थापन करे ॥४०॥

ॐ ह्रीं स्वमुपस्करोमि स्वाहा ॥ स्रुवस्तापनं मार्जनं जलसेचन पुनस्तापनमग्रे निधापनं च ॥४१॥

यह मन्त्र पढ़ कर स्रुक (सूचो) अर्थात् घी होमणे के पात्र का संस्कार इस प्रकार करे कि प्रथम उसे अग्नि पर तपावे, सेकें इसके बाद उसे पोंछे इसके बाद उस पर जल सींचे पुनः अग्नि पर तपावे और अपने सामने रखे ॥४१॥

ॐ ह्रीं स्रुग्मुपस्करोमि स्वाहा ॥ स्रुपस्थापनं तथा ॥४२॥

यह मन्त्र बोलकर स्रुव अर्थात् होम सामग्री को होमने के पात्र की सूचो की तरह संस्कार करे, स्थापना करे ॥४२॥

ॐ ह्रीं आज्यामुद्वासयामि स्वाहा ॥ दर्भपिण्डोज्वलेन आज्यस्यो द्वासन मुत्पाचनमवेक्षणंम च ॥४३॥

यह मन्त्र पढ़ कर घी को तपावे वह इस तरह कि दर्भ के पूले को जलाकर घी को उठावे उत्पाचन (तपावे) और अवेक्षण (देखे) करे ॥४३॥

ॐ श्रीं पवित्रतर जलेन द्रव्यशुद्धि करोमि स्वाहा होम द्रव्या प्रोक्षणम ॥४४॥

यह मन्त्र पढ़ कर द्रव्य शुद्धि करे ॥४४॥

ॐ ह्रीं कुशमाददामि स्वाहा । दर्भपूलमादाय सर्वद्रव्य स्पर्शनम ।।४५।।
यह मन्त्र पढ़ कर दर्भ के पूले को उठाकर सब द्रव्य से छुवावे ।।४५।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय स्वाहा ।। अनामिकांगुल्यां पवित्रधारणं ।।४६।।
यह मन्त्र पढ़ कर अनामिका उंगली में पवित्र पहिने ।।४६।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राय स्वाहा ।। यज्ञोपवीतधारणम् ।।४७।।
यह मन्त्र पढ़ कर यज्ञोपवित पहने ।।४७।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमाराय परिषेचनं करोमि स्वाहा । अग्निपर्युक्षणम् ।।४८।।
यह मन्त्र पढ़ कर कुंड के चारों ओर पानी की धार छोड़े ।।४८।।

ततः ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिकेवलिभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं पञ्चदशतिथि-देवेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं नवग्रहदेवेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं दशलोकपालेभ्यः स्वाहा ।। ॐ ह्रीं अग्नीन्द्राय स्वाहा षड़ेतान् मन्त्रानष्टादशकृत्वः पुनरावर्तनेनोच्चारयन् स्त्रुवेणप्रत्येक माज्याहुति कुर्यादित्या-ज्याहुतयः ।।४९।।

इसके बाद "ॐ ह्रीं अर्हं" इत्यादि छह मंत्र को अठारह बार दोहरा कर बोले प्रत्येक मन्त्र को बोल कर सूची घृताहुति करे। इस तरह एक सौ आठ आहुति हो जाती है इसे घृता-हुति कहते हैं ।।४९।।

ॐ ह्रां अर्हत्परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ।। ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिनस्तंप-यामि स्वाहा ।। ह्रौं उपाध्यायपरमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ।। ॐ ह्रः सर्वसाधुपर-मेष्ठिनस्तंपयामि स्वाहा ।। अवांतरे पंचतर्पणानि "ॐ ह्रां" इत्यादि मन्त्र पढ़ कर मध्य में पांच तर्पण करे ।।५०।।

यह तर्पण हर एक द्रव्य का हो और होम हो चुकने के बाद किया जाता है । इसलिये

अब समिधाहुति कहते है। "ॐ ह्रां" इत्यादि मन्त्र के द्वारा हाथ से समिधा की एक सौ आठ आहुतियां देवे। मन्त्रोच्चारण भी एक सौ आठ बार करे, इसके बाद पूर्वोक्त छह घृताहुति देवे। पाँच तर्पण करे और अग्नि पर्युक्षण करे। अग्नि के चारों ओर दूध की धार देने को पर्युक्षण कहते है ॥५२॥

अथ लवंगाद्याहुय: ॥ ॐ ह्रां अर्हद्भ्य स्वाहा। ॐ ह्रीं सिद्धेभ्य: स्वाहा ॐ ह्रूं सूरभ्य स्वाहा। ॐ ह्रौं पाठकेभ्य: स्वाहा ॐ ह्र: सर्व साधुभ्य: स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं जिन धर्मभ्य: स्वाहा ॐ ह्रीं जिनागमेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं जिनालयेभ्य स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यकज्ञानाय स्वाहा। ॐ ह्रीं सम्यकचारित्राय स्वाहा। ॐ ह्रीं जया धृष्ट–देवताभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं षोडश विद्यादेवताभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिय क्षीभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं चतुदर्शभवन वासिभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं अष्टविधव्यन्तरेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं चतुर्वि–ध्योतिरिन्द्रेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं द्वादशविधकल्पवासिभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं अष्टविधकल्पवा–सिभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं नवग्रहेभ्य: स्वाहा। ॐ ह्रीं अष्टविध कल्पवासिभ्य स्वाहा। ॐ ह्रीं अग्निद्राय स्वाहा। ॐ स्वाहा भू: स्वाहा। भुव: स्वाहा स्व: स्वाहा। एतान् सप्तविंशन्ति मन्त्रारचतुबारानुच्चार्य प्रत्येक लवंग गन्धाक्षतगुग्गुलुतिलशालिकुङ्कुमकर्पूरलाजा गुरु शर्करामि राहुति: सरुचा जुहुयात् इति लवङ्गाद्याहुतय: ॥

"ॐ ह्रीं अर्हद्भ्य" इत्यादि सताइस मन्त्रों का चार-चार बार उच्चारण कर हर एक मन्त्र को लौंग गन्ध अक्षत–गुग्गुल–कुंकम–कर्पूर लाजा (भुने चावल) अगुरु और शक्कर इनकी सूची से आहुतियाँ देवे। इस प्रकार १०८ आहुति देवे ॥५३॥

॥ पूर्ववत् षडाज्याहुति पञ्चतर्पणैकपर्युक्षणानि ॥५४॥

इसके बाद पहिले की तरह छह घृताहुति पंचतर्पण और एक पर्युक्षण करे इनके करते समय पूर्वोक्त मन्त्रो को बोलता जावे ॥५४॥

॥ अथ पीठिका मन्त्रा: ॥

ॐ सत्यजाताय नम:। ॐ अर्हज्जाताय नम:। ॐ परमजाताय: नम:। ॐ अनुपम–जाताया नम:। ॐ स्वप्रधानाय नम:। ॐ अचलाया नम: ॐ अक्षयाय नम:। ॐ अव्या-बाधाया नम:। ॐ अनन्तज्ञानाय नम:। ॐ अनन्तदर्शनाय नम:। ॐ अनन्तवीर्याय नम:। ॐ अनन्तसुखाय नम:। नीरज से नम:। ॐ निर्मलाय नम:। ॐ अच्छे-द्याय नम:। ॐ अभेद्याय नम:। ॐ अजराय नम:। ॐअपराय नम: ॐ अप्रमेयाय नम:। ॐ गर्भ-

वासाय नमः । ॐ अविलीनाय नमः ॐ परमनाथाय नमः । ॐ लोकाग्रनिवासने नमः । ॐ परमसिद्धेभ्य नमः ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः । ॐ केवलि सिद्धेभ्य नमः ॐ अनन्तकृत्सिद्धेभ्य नमः । ॐ परंपरासिद्धेभ्य नमः । ॐ अनादिपरमसिद्धेभ्यः नमः । ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्य नमः । ॐ सम्यक्दृष्टे आसन्नभव्य निर्वाणपूजार्ह अग्निन्द्राय स्वाहा ।। सेवाफलंषट परम स्थानं भवतु अपमृत्युनाशनं भवतु ।। पीठिकामन्त्रा ।। पीठिकामन्त्रैरेतैः षट्त्रिंशभेदभिन्नैः प्रतिमन्त्रं त्रिवारमुच्चारितैः शाल्यन्नक्षीरघृत–भक्ष्यपायस शर्करारम्भाफलैर्मिलितैरन्नाहूति । स्त्रुचा जुहुयात पुनराज्याहुतितर्पणपर्युक्षणानि ।।५५।।

"ॐ सत्यजाताय नमः" इत्यादि छत्तीस पीठिका मन्त्रों का हर एक का तीन तीन बार उच्चारण करे प्रत्येक के अन्त में, शाली, अन्न दूध, घी, दूसरे खाने के पदार्थ, खोवा, शक्कर और केले इन सबको मिलाकर सूची के द्वारा अन्नाहूति देवे यह भी १०८ बार हो जाती है इसके बाद जीतने मन्त्र जप किया हो उसका दशांस होम लवंगादि द्रव्य से करे फिर छह घृताहूति, पांच तर्पण एक पर्युक्षण करे ।

।। अथ पुर्ण आहूति ।।

ॐ तिथि देवाः पञ्चदशधा प्रसीदन्तु, नवग्रह देवा प्रत्यवायहरा भवन्तु । भावनादयो द्वात्रिंशं देवा इन्द्राः प्रमोदन्तु । इन्द्रादयो विश्वे दिक्पालाः पालयन्तु । अग्निन्द्रामौल्य द्भवाद्यानि देवताः प्रसन्ना भवतु । शेषाः सर्वेऽपि देवा एते राजानं विराजयन्तु दातारं तर्पयन्तु संघ श्लाघयन्तु वृष्टिं वर्धयन्तु । विघ्नं विघातयन्तु मारीं निवारयन्तु । ॐ ह्रीं नमोऽर्हते भगवते पूर्ण ज्वलित ज्ञानाय सम्पूर्ण फलार्घ्यां पुर्णाहुति विदंध्महे ।।इति पुर्णाहूतिः ५६।।

"ॐ तिथि देवाः" इत्यादि मंत्रों के द्वारा पुर्णाहूति देवे । पुर्णाहूति मे फल और पूजा का द्रव्य होना चाहिए । पुर्णाहूति के मन्त्र पूर्ण हो, वहां तक बराबर एक सरीखी घी की धार छोड़ता रहे ।।५६।।

ततो मुकलित कर :—ॐ दर्पणो धोत ज्ञान प्रज्वलित सर्व लोक प्रकाशक भगवन्नर्हन् श्रद्धां मेधां प्रज्ञां बुद्धि श्रियं बलं आयुष्यं तेज आरोग्यं सर्व शान्ति । विधेहि स्वाहा । पुन पठित्वा सम्प्रार्थ्य शान्ति धारां निपात्य पुष्पांजलि प्रक्षिप्य चैत्यआदि भक्ति त्रयं चतुर्विंशति स्तवनं वा पठि त्वा पञ्चांग प्रणभ्य तदिव्य भस्म समादाय ललाटा दौ स्वयं धृत्वा अन्यानपि दधात् ।।५७।।

इसके बाद हाथ जोड़कर "ॐ दर्पणो धोत" इत्यादि मन्त्र पढ़, प्रार्थना कर, शान्ति धारा दे पुष्पांजलि क्षेपण करे चैत्यलय वगैरह की तीन भक्ति अथवा चौबीस तीर्थकरों की स्तुति

पढ़े और पचांग नमस्कार कर होम की दिव्य भस्म को लेकर ललाट वगैरह स्थानों पर लगावे, और औरों को भी देवे ।।५७।।

शांति धारा शान्ति पूर्वक भक्ति से पढ़े। फिर पहले स्थापित कलश लघू पुण्याह वाचन कर, स्थापित जिनेन्द्र प्रभु की मूर्ति को स्वस्थान पर विराजमान करके मंगल कलश को बाजे, गाजे के साथ अपने घर में ले जावे।

। इति होम विधान ।

अथ पुन्याह वाचन

ॐ स्वस्ति श्री यजमा[illegible]र्य प्रभृति समस्त भव्यजनानां सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभि वृद्धिरस्तु ।

अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्री मदादि ब्रह्मणो मते त्रैलोक्य मध्यं मध्यासीने मध्य लोके श्री मदनावृत यक्ष सं सेव्य माने, दिव्य जम्बू वृक्षोपलक्षित, जंबू द्वीपे, महनीय महामेरो-र्दक्षिण भागे, अनादि काल सं सिद्ध भरत नाम धेय प्रविराजित षट् खण्ड मण्डित भरत क्षेत्रे, [illegible]

[illegible]

[illegible]

व्यवहारे, श्री वृषभ स्वामी [illegible] महापुरुष [illegible]

वृषभ सेन सिंह सेन, चारु सेनादि गणधर स्वामी निरूपित विशिष्ट धर्मोपदेशे, दु[illegible]

मानंतर प्रवर्तमान कलियुगा पर नाम धेय दुःखमाभिधान पंचम काल प्रथम पादे, महति

वर्द्धमान तीर्थंकरोपदिष्ट सधर्म व्यति करे, श्री गौतम स्वामी प्रतिपादित सन्मार्ग प्र[illegible]

श्रेणिक महा मंडलेश्वर समा चरित सन्मार्गा विशेषं, विक्रमांक नृपाल पालित प्रवृत्त[illegible]

कूल शक नृप काले……… वर्षसंमिते, प्रवृतमान……… संवत्सरे, अमुक मासे अ[illegible]

अमुक तिथौ, अमुक वासरे, प्रशस्त तारका योग करणद्रे काण होरा मुहूर्त लग्न युक्त[illegible]

महा प्रातिहार्य शोभित श्री मद अर्हत्परमेश्वर सन्निधौ श्री शारदा सन्निधौ, राजा[illegible]

ब्रह्मर्षि सन्निधौ, विद्वत्सामाज सन्निधौ, अनाधि श्रोतृ सन्निधौ, देव ब्राह्मण सन्निधौ,

सन्निधौ, याग मंडल भूमि शुद्धयर्थं, द्रव्य शुद्धयर्थं, पात्र शुद्धयर्थं, क्रिया शुद्धयर्थं, मंत्र[illegible]

महा शांति कर्म सिद्ध साधन यंत्र मंत्र तंत्र विद्या प्रभाव सं सिद्धि निमित्त विधियैं मान[illegible]

क्रिया महोत्सव समये, पुण्याह वाचनं करिष्ये। सर्वैः सभाजनैरनु ज्ञायतां विद्वद्भिशिष्ट जनैरनु ज्ञायतां, महाजनैरनु ज्ञायतां तद्यथा।

प्रस्थमात्र तंदुलोपरि ह्रीं कार संवेष्टित स्वस्तिक यन्त्रे मन्त्र परिपूजित मणिमय मंगल कलशं संस्थाप्य, यजमानाचार्यो ऽपसव्य हस्तेन् धृत्वा पुण्याहमन्त्रमुच्चारन् सिचेत्। ॐ स्वस्तिक कलशं स्थापनं करोमि।

पास में छपे हुये यन्त्रानुसार करीब एक सेर चावल लेकर जमीन में यन्त्र बनावें, फिर उसके ऊपर जल से भरा हुआ कलश रखकर उसमें नागर वेल का पत्ता रखें और पुण्यहवाचन पढ़ते जावे और कलश का पानी उस पत्ते से दाहिने हाथ से छिड़कते जावे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते समस्त गंगा सिध्वादि नदी नद तीर्थ जलं भवतु स्वाहा। जलपवित्री करणं।

ॐ ह्रीं पुण्याह कलशार्चनं करोमि स्वाहा।

साथिया के ऊपर के कलश में अर्घ चढ़ावे।

ॐ पुण्याह २ प्रियंतां २ भगवंतोऽर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः त्रिलोकनाथाः त्रिलोक प्रद्योतनकराः वृषभ अजित-संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चन्द्रप्रभ पुष्पदंत, शीतल श्रेयो वासुपूज्य विमल अनंत धर्म शांति कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रत नमि नेमि पार्श्व श्री वर्द्धमानाः शांताः शांतिकराः सकलकर्मरिपु विजय कांतार दुर्गविषयेषु रक्षंतु नो जिनेंद्राः सर्वविदश्च ।। श्री ह्री धृति कीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मे धाविन्यः सेवा कृषि वाणिज्य वाद्य लेख्य मन्त्र साधन चूर्णिप्रयोग स्थान गमन सिद्धि साधन अप्रतिहत शक्तयो भवंतु नो विद्यादेवताः। नित्यमर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु वश्च भगवंतो नः प्रियंतां २ आदित्य सोमांगार बुद्ध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु ग्रहाश्च नः प्रियंतां २। तिथि करण मुहूर्त लग्न देवताः इहचान्य ग्राम नग रादिषु अपि वास्तु देवताश्चताः सर्वागुरु भक्ता अक्षिण कोष कोष्ठागारा भवेयुर्दान तपोवीर्यं नित्यमेवास्तु नः प्रियंतां २ मातृपितृ भ्रातृ सुत सुहृत्स्व जन संबंधी बंधुवर्ग सहितानां धनधान्यैश्वर्य द्युति बलयशो वृद्धिरस्तु। प्रमोदोस्तु शांति भवतु पुष्टि भवतु सिद्धि भवतु काम मांगल्योत्सवाः संतु शाम्यंतु घोराणि शाम्यंतु पापानि पुण्य वर्द्धताम् धर्मोवर्द्धताम् श्रायुषोवर्द्धताम् कुलंगोत्रं चाभिवर्द्धताम् स्वस्ति भद्रं चास्तु नः हता स्तेपरिपंथिनः शत्रवः

शमंयतु । निष्प्रति घमस्तु । शिव मतुलमस्तु । सिद्धाः सिद्धि प्रयच्छंतु नः । ॐ कर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंतु इति प्रार्थयेत् । प्रार्थितविप्राः पुण्याहं कर्मणोऽस्तु " इतिब्रूयुः । ॐ कर्मणेस्वस्ति भवंतो ब्रुवंतु । स्वस्ति कर्मणेऽस्तु कर्मऋद्धिं भवंतो ब्रुवंतु " कर्मऋद्धिस्तु ।

विशेष : —अगर होम नहीं करना है तो जितना जप किया, उतने जप का दशांस, जप चौगुना जप, ज्यादा कर लेना चाहिये । जैसे—एक हजार जप का दशांस १०० जप हुआ, उस १०० जप को चौगुना जपने से, याने ४०० बार जप कर लेने पर होम की पूर्ति हो जाती है । फिर अग्नि होम करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है ।

मन्त्र जप के बाद दशांस होम करने के लायक होम कुण्डों का नक्शा

होम कुण्ड नीचे दिये गये नक्शे के मुताबिक बनावे, और होम कुण्ड के लिये ईंटें कच्ची होनी चाहिये । वध, विद्वेषण, उच्चाटन कर्म में आठ अंगुल लम्बी समिधा ले (लकड़ी) । पुष्टि कर्म में नौ अंगुल, शान्ति, आकर्षण, वशीकरण में, स्तम्भन, कर्म में बारह अंगुल की लकड़ियाँ हों । लकड़ियाँ दूध वाले वृक्ष की हों ।

तीर्थंङ्कर कुण्ड (१)
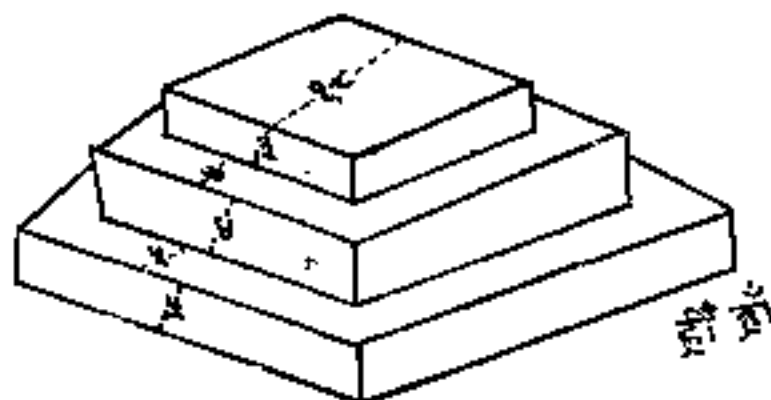
गार्हपत्याग्नि

गणधर कुण्ड (२)
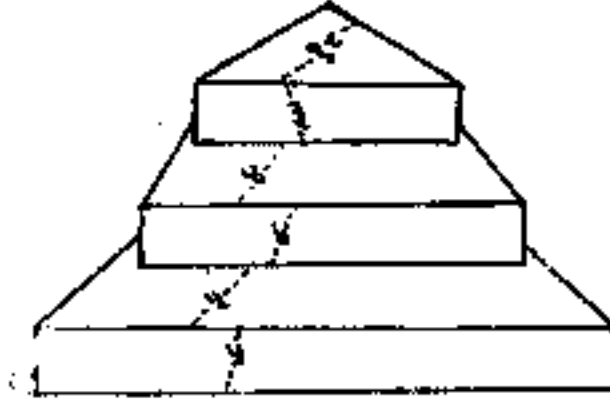
आहवनीय

केवली कुण्ड (३)

दक्षिणाग्नि
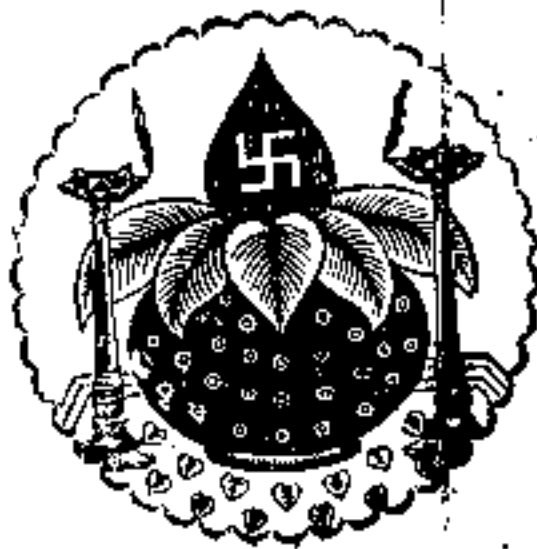
लघु विद्यानुवाद
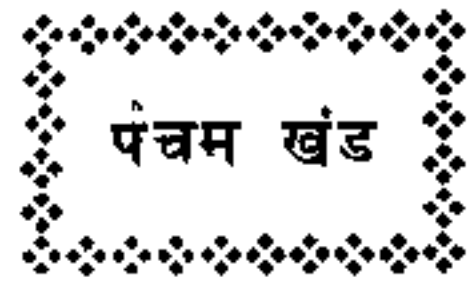
इस खण्ड में

(५—१ से ५—५६)

तन्त्राधिकार

- विभिन्न जड़ी बूटियों के प्रयोगों से कष्टों का निवारण की विधियां — १
- नागार्जुन प्रणित अंतर्ध्यान विधि — ६
- वंदा कल्प नंदिषेणाचार्य कृत — १०
- अथ कलकोश प्रवक्ष्यामि धन्वंतरी कृत — १२
- अथल जालु कल्प — १३
- अथ श्वेत गुंजा कल्प — १४
- सर पूंखा कल्प एवं पमाड कल्प — १५
- अथ रक्त गुंजा कल्प — १६
- एकांक्षी नारियल कल्प — २८
- दक्षिणा वर्त शंख कल्प — २९
- गौरोचन कल्प, तन्त्राधिकार रुद्राक्ष कल्प — ३०
- बहेड़ा कल्प, निर्गुण्डी कल्प — ३४
- हाथा जोड़ी कल्प, विजया कल्प — ३५
- यक्षिणी कल्प — ३६
- रत्न, उपभोग, फल व विधि — ३९
- श्वेतार्क कल्प — ४२
- ह्रीं कार कल्प — ४४

रक्त ह्रीं कार के ध्यान का फल ४५
पीत वर्णी ह्रीं कार के ध्यान का फल ४५
श्याम वर्ण ह्रीं के ध्यान का फल ४६
कुडली स्वरूप ह्रीं के ध्यान का स्वरूप ४६
कि मन्त्र यन्त्रै विविधाः गमोलै दुः साध्यर्स
नीति फलाल्पलाभिः ४७
सोना चांदी बनाने के तंत्र ४९
पारास्तंभन का तंत्र ५४
पूज्य पाद स्वामी कृत ५५
चांदी बनाने का तंत्र, सोना बनाने का तंत्र
हीरा बनाने की विधि ५६

पंचम तंत्राधिकार

अश्विनी नक्षत्र में अर्द्ध रात्रि को नग्न होकर अपामार्ग की जड़ को लावे, फिर कण्ठ में धारण करे तो राज सभा वश होय। १।

भरणी नक्षत्र में संखा होली की जड़ लावे, तावीज में रक्खे (पर) स्त्री वश में होय। २।

कृत्तिका नक्षत्र में रोहिस की जड़ लावे, पास रक्खे तो अग्नि नहीं लगे। ३।

रोहिणी नक्षत्र में अर्द्ध रात्रि में नग्न होय, नेगद बावनी की जड़ लावे और पास रक्खे तो वीर्य चाले नहीं। ४।

मृगशिर नक्षत्र में महुवा की जड़ लावे तो रात्रि में चोरी नहीं होय। ५।

आर्द्रा नक्षत्र में अर्क की जड़ लाय, तावीज में डालकर पास रक्खे तो, झूंठी बात सच होय। ६।

पुनर्वसु नक्षत्र में मेंहदी की जड़ को लेकर पास रक्खे तो अपने शरीर में अच्छी सुगन्ध आती है। ७।

पुष्य नक्षत्र में नागरवेल की जड़ लेकर पास रक्खे तो, दुष्ट वाक्य से कभी भय नहीं होता है। ८।

आश्लेषा नक्षत्र में धतूरा की जड़ लेकर देहली में रक्खे तो, सर्प घर में आने का भय नहीं रहता है। ९।

मेघा नक्षत्र में पीपल की जड़ लेकर पास रक्खे तो रात्रि में दुस्वप्न नहीं आते हैं। १०।

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में आम की जड़ लाकर दूध में घिस कर पिलाने से बांझ स्त्री को पुत्र की प्राप्ति होती है। ११।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में नीम की जड़ को लाकर पास रक्खे तो लड़की से लड़का होता है। १२।

हस्त नक्षत्र में चम्पा की जड़ लाकर गले में बांधने से भूत प्रेत नहीं लगता है। १३।

चित्रा नक्षत्र में गुलाब की जड लेकर पास रक्खे तो शरीर में नष्ट नहीं होता है। १४।

स्वाति नक्षत्र में मोगरा की जड लेकर भैंस के दूध में घिस कर पीने से काले से गोरा होता है। १५।

विशाखा नक्षत्र में बबूल की जड को लाकर पास में रक्खे तो नित्य ही चोरी करने पर प्रकाशित नहीं होता है।

अनुराधा नक्षत्र में चमेली की जड को लाकर सिर पर रक्खे तो शत्रु मित्र हो जावे। १७।

जेष्ठा नक्षत्र में जामुन की जड़ को लाकर पास रक्खे तो राजा के द्वारा सन्मान को प्राप्त हो। १८।

मूल नक्षत्र में गूलर की जड़ लेकर पास रक्खे तो दूसरे का द्रव्य मिले। १९।

पूर्वाषाढा नक्षत्र में शहतूत की जड लेकर स्त्री को पिलावे तो योनि संकोच होती है। २०।

उत्तराषाढा नक्षत्र में कलगरामां की जड लेकर हाथ में बाँधे तो पहलवान से युद्ध में जीते। २१।

श्रवण नक्षत्र में आंबली की जड, नागरवेल के रस में पीवे तो स्त्री नव यौवनवान हो। २२।

धनिष्ठा नक्षत्र में बबूल की पत्ती अंजन आँख में करे तो सोना, चांदी की परीक्षा में सफल होय, याने परख ज्यादा करे। २३।

शतभिषा नक्षत्र मे केले की जड़ लेकर शहद के साथ पीवे तो ताप न होय। २४।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र मे तुलसी की जड़ लेकर मस्तक पर रक्खे तो मुरदा कभी नहीं जलता है। २५।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में पीपल की जड लेकर पास रक्खे तो चतुर मनुष्य युद्ध में जीत कर आता है। २६।

रेवती नक्षत्र में वड की जड लेकर माथे पर रक्खे तो दृष्टि चौगुनी होय। याने अगम दृष्टि होती है। २७।

हिंगुल १८ तोला, अभ्रक ३२ तोला एकत्र कर रूद्रवती के रस में घोट कर चांदी के पत्रे पर लेप कर पुट दीजे तो सुवर्ण होता है। २८।

स्वर्ण माक्षिक ८ माशा, पारा ४ माशा, तांबा ४ माशा, सुहागा ४ माशा, इन सब चीजों को एक साथ गलाने से शुद्ध चांदी होती है। २९।

शुद्ध गन्धक को प्याज के रस में १०८ बार तपा कर भुजावे तो, फिर उस गन्धक को चांदी के पत्रे पर गलावे तो सोना होता है। ३०।

मेनशिल, सिंधब, गोरोचन, भृंगराज के रस में इन चीजों को घिस कर बाम हाथ पर, जिसको वश करना चाहे, उसका नाम लिखे, फिर अग्नि में तपावे तो वशी होता है। ३१।

हस्त नक्षत्र रविवार के दिन अंधाहुली को लेकर राजा के माथे पर डाले तो राजा वश होता है और दुष्ट व्यक्ति भी स्नेह करने लगता है। ३२।

अधोमुखा च जला च स्वेता च गिरि कर्णिका गोरोचन समीयुक्तं, तिलकं विश्व मोहनं। ३३।

चिता भस्मं बिषं युक्तं, धतुरं चूर्णं मिश्रितं, यस्यांगे विक्षिप्ते सद्योयातीय मालयम। ३४।

मनुष्य की हड्डि का चूर्ण, जिसको पान में रखकर खिला देवे तो, मनुष्य मर जाता है। ३५।

भरणी नक्षत्र मंगलवार को चिता की लकड़ी लेकर आवे, शत्रु के दरवाजे पर गाड़ देवे तो शत्रु शीघ्र मर जाता है। ३६।

काले सांप की वसा, कांचली की बत्ती बनाकर धतूरे के तेल में भिगोकर, दीपक जलावे फिर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल उपाड कर और चिता की भस्म, पांच प्रकार का निमक इन सब चीजों को सम भाग मिला कर जिसके ऊपर डाल देवे वह मर जावे। ३७।

बीछू का मांस और कंटक का चूर्ण कर जिसके ऊपर डाल देवे वह मर जायेगा। अमावस के दिन चिता की भस्म से यन्त्र लिखकर चिता में ही डाल देवे तो शत्रु मर जाये। ३८।

उल्लु की विष्टा और विष को मिला कर जिसके अंग पर डाल देवे वह शीघ्र मर जाता है।३९।

गधे का विष्टा और विष दोनो को जिसके ऊपर डाल देवे वह, शीघ्र मर जावे।४०।

शत्रु की विष्टा मनुष्य की खोपड़ी में भर कर एकान्त वन में गाड देने से ज्यों ज्यों गडी विष्टा सुखेगी त्यों २ शत्रु मरेगा ।।४१।।

ककलास की वसा का तेल १ बींदु भी जिसके ऊपर डाल दिया जाय वह मर जायगा ।४२।

तुलसी के बीज का चूर्ण सहदेवी की जड के रस में रविवार के दिन घिस कर तिलक लगाने से मोहित होता है ।४३।

हरिताल, और असगंध को केला के रस में गौरोचन सहित घिस कर तिलक लगाने से मोहित होता है ।४४।

भृंगी, चन्दन, बच, कूट, ये चारों चीज की धूप बनावे फिर अग्नि में उस धूप को डाल कर अपने शरीर में धुआं लगावे और अपने मुख में भी धुआं लगाने से और वस्त्र में धुआं लगाने से राजा प्रजा पशु पक्षी जो देखे सर्व मोहित हो ।४५।

पान की जड का तिलक करने से मोह नहीं होता है ।४६।

मैनसिल, कपूर, कोकेला के रस में घिस कर स्नान करे तो मोह नहीं होय ।४७।

सेंदुर, बच, असगंध, पान के रस में घिस कर स्नान करे और तिलक करे तो मोह न होय ।४८।

भंगरईया, चिचिड़ा, छुइमुइ, सहदेई, इन चारों चीजों का तिलक लगाने से मोह न होता है ।४९।

डमरू के फूल की बाती नैनु के साथ रात्रि को जलाय काजल उपाड कर अंजन करे तो मोह न होता है ।५०।

सफेद गुंघची का रस ब्रह्मदंडी की साथ घिस कर शरीर में लेप करने से मोह नहीं होता है ।५१।

सफेद दुब के रस में हरिताल को घिस कर तिलक लगाने से मोह नहीं होता है ।५२।

सफेद अकुआ की जड़ और सफेद चन्दन को घिस कर तिलक लगाने से मोह न होता है ।५३।

बेलपत्र छाया में सुखा कर, कपिला गाय के दुध में घिस कर तिलक लगाने से मोह नहीं होता है ।५४।

भांग के पत्ते, सफेद सरसों, इन दोनों को कुट कर शरीर में लेप करने से मोह नहीं होता है ।५५।

तुलसी के पत्ते को छाया में सुखा कर चूर्ण करे, असगंध, और भांग का बीज सम भाग मिला कर कपिलाधाय के दूध में घिस कर गोली बनावे, उस गोली का तिलक लगाने से मोह नहीं होता है और उस गोलीको शस्त्र में लेपन करने से शत्रु की सेना उस शस्त्र को देख कर ही भाग जाती है ।५६।

विष्णु कांता का बीज में से तेल निकाले यन्त्र से, फिर उस तेल में विष भी मिलावे तेल, और अफीम, गधे का पेशाब, धतुरे का बीज का चूर्ण, हरताल, मेनसील, गन्धक, इन सब को लेकर घोटकर पांच छटांक का गोला बनाकर रख लेवे जब युद्ध का काम पड़े तब अपने शस्त्र पर उस गोले का लेप कर युद्ध मे जावे तो शत्रु की सेन्य उस शस्त्र को देखते ही भय-भीत होकर भाग जावे, और अपने पर दूसरों का शस्त्र चल नहीं सकता है ।५७।

श्मशान की राख को १ मिट्टी के बर्तन में भर कर शत्रु का नाम लेकर नील के रंग में रंगे हुये डोरे से उस बर्तन को बांध कर गाड देवे तो शत्रु की सेन्य का स्तंभन हो जाता है ।५८।

ऊंट की हड्डी ४ अंगुल प्रमाण कील जहाँ गाडे वहाँ गाय भैंस नहीं जाती है, उनका स्तंभन हो जाता है ।५९।

रजस्वला स्त्री का कपड़ा और गोरोचन, दोनों चीज को लेकर शत्रु का नाम लेकर गड्ढे में डालने से शत्रु का स्तंभन हो जाता है ।६०।

दो ईंट श्मशान की आग सहित लेकर जंगल में गाड देवे तो मेघ का स्तंभन होता है ।

मूलं गृन्हाति मधुकं, पिष्टानिशि समाचरेत् । निद्रास्तंभन मेतद्धि, मूल देवेन भाषितं ।
भरवा क्षीर काष्टाना कील पंचांगुलिक्षिपत्नौकास्तंभन मेतन्मूलदेव न भाषितं ।

रविवार के दिन सती होने वाली स्त्री की चिता में ईंट धर आवे फिर तीसरे रवि-वार जाकर उस ईंट को ले जिसके घर में डाल दें अथवा खोद दें तो उसके घर में पत्थर बरसने लगते हैं ।

उल्लू का पित्तो और काक्षि जो, मशान की भस्म, गाय की लूणी, इन सब चीजों को मिला कर गोली बनावे उस गोली को सोने या चांदी के तावीज में भर कर पास रखे तो अदृश्य होता है । स्वयं सबको देखता है और स्वयं को कोई नहीं देख पाता ।

एक वर्ण का काला कुत्ता को पकड़ कर उपवास करावे, स्वयं भी उपवास करे, दूसरे दिन दूध, और काला तिल, उस कुत्ते को खिलावे, जब कुत्ता टट्टी करेगा, उस टट्टी मे

से काले तिल को निकाल कर तिल में से तेल निकाल कर यन्त्र में नहीं गया, कपास की बत्ती बना कर उस बत्ती को डाल कर दीपक जलावे और काजल पाडकर आंख में अंजन करे तो मनुष्य अदृश्य हो जाता है।

धौली (सफेद) चिणोठी, (गुंजा) सफेद रीगणीं, (सफेद भट कटैंआ) की जड लेकर चूर्ण करे फिर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल उपाड कर नेत्र में अंजन करने से अदृश्य होता है।

नागार्जुनप्रणित अंतंध्यान विधि:

सफेद सुरमा १, सेवार कंटक १, सोना मुखी १, जेठी मध १, ये चारों वस्तु बरा बर लेकर कन्या के प्रथम मासिक धर्म का रक्त में गोली बनावें, उस गोली को सोना, चांदी के ताबीज में डाल कर उस ताबीज को मुंह में रखे तो मनुष्य अदृष्य होता है।

शुक्ल एक रंग की बिल्ली को तीन दिन भूखी रख कर चौथे दिन कपिला गाय के घी को खिलावे, तब बिल्ली तत्काल उल्टी करेगी उस घी को लेकर, कपास के फल में से रुइ निकाल कर उसकी बत्ती बनावे दीपक जलावे मनष्य की खोपडी पर काजल उपाडकर नेत्र में अंजन करे तो अदृश्य होता है।

शिवालयेतु कन्यार्क, शिलायांशिलया सह:, ललाटे तिलकं दत्वा, दृश्यो भवति तत्क्षणं।

लोद्र विभितिक, आमलक, वा रुइ के फूल, इन सबको चतुर्थांस जल घोटे और आंख में अंजन करे तो आंख में फूला का नाश होता है। रात्रिघता का नाश होता है।

पिंडी, तगर की जड़, गोरोचन के साथ ताम्बे के बर्तन में रगड़ कर आंख में आंजने से अक्षिपुष्पं नाशयति) याने आंख का फुला नष्ट हो जाता है।

लाल चन्दन, मिरच, सम भाग लेकर पानी में पीस कर लेप करने से विस्फोटक का नाश होता है।

गडुची, हरिद्रा, दुर्वा, चूर्ण से, समभाग, गुटिका क्रियते से सर्व व्रणोपशमं करोति प्रलेपन।

रवि के दिन सफेद कनेर की जड़ को लेकर कुसुम्भ डोरे से बांध कर वाम हाथ में बांधने से (मर्कटिका।) का नाश होता है।

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े की पांव की हड्डी ४ अंगुल प्रमाण शत्रु के घर में फेंकने से शत्रु के कुल का उच्चाटन हो जाता है।

उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र स्वान (कुत्ते) की पांव की हड्डी अंगुल पांच जिसके घर में डाल दिया जाय वह चक्षुहीन हो जाता है।

वालउनागवोक्षिन पुनः पत्राणि ग्राह्याणि जलेन घृष्टवापीयते भ्रूणो न भवति।

हींग, सिधव, का काढा बना कर पीने से (गर्भो न भवति)।

श्वेतगिरि कर्णिका की जड को योनी में डालने से गर्भ का नाश होता है।

मधु, कर्पूर, पदैः पूगीफलं पूरयित्वा सुरत समयेभक्षयेत (पुत्रो भवति)

पार्श्वपिप्पल फलानि एक वर्ण गो दुग्धेन प्रस्तावे स्त्रियः पानेदात व्यानि (पुत्रोत्पत्ति कृत)

काक जंगा की जड को एक वर्ण की गाय के दूध में पीवे, निश्चित ही गर्भ रहे।

भृगराज रस, पली १ (एक छंटाक) कांच कर्पूर गटियाणउ १ (कपूर) गांटियउ १ ऋतु स्नाने दिन त्रयंस्त्रीपास्यतेतस्त्रिनत्रये श्वेत वर्ण गो दुग्धक्षीरेयी भोजनं कार्यं अन्यकेकिमपिन भोक्तव्यं पुत्रोत्पत्तिर्भवति दृष्टप्रत्ययः।

मातुलिंग (बिजोरा) के बीज की दूध के साथ २ खीर बनाकर घी के साथ पीवे तो स्त्री को निश्चित ही गर्भ रहे किन्तु ऋतु समये तीन दिन खाना चाहिये।

गेरू, (ह्री-डमीस) विडंग, पीपली, समभाग लेकर पीसे फिर संभोग के समय पान करने से स्त्री गर्भवान होती है।

रविवारे अष्टमी निशीथ समसे वाटिकायां जाती पत्र सरडक मेकं गृहीत्वा एक वर्ण गोक्षीरेण सहपीयतेरितु समये गर्भंधारयति।

वासकं, त्रिफला, शर्करा, मुलेठी, को समभाग लेकर पीसकर रितु समय में यदि स्त्री पीये तो गर्भवान हो।

श्वेत रींगणी मूलं पुष्य नक्षत्र में लेकर एक वर्ण की गाय के दुध में पीवें तो वन्ध्या भी पुत्रवान होती है।

मयुरशिखा की जड को दिन ३ दुध के साथ पीने से स्त्री पुत्रवान होती है। लक्ष्मणा भाग ३ उभयलिंगी भाग ४ बिरहाली भाग ६ सब एकत्र करके गाय के दुध में पीसकर ऋतु समय में स्त्री को पीलाने से पुत्र होता है।

श्वेत पुनर्नवा मूल को दूध के साथ पीस कर पिलाने से स्त्री को गर्भ रहता है।

(पद्विद्र: प्राणिविशेष:) तथा हल्दी दोनों का चूर्ण कर बकरे के मूत्र में भावना देकर मनुष्य को खिलाने से नपुंसक हो जाता है।

तिल चूर्ण गोक्षुर चूर्णपत्तो समभाग करके बकरे के मूत्र में क्वाथ करे जब क्वाथ ठंडा हो जाय तब माक्षिक के साथ खिलाने से नपुंसकता का नाश हो जाता है।

उदस्ट्र हवड मध्ये मानुषास्थि प्रक्षिप्य मिथुनस्य शिरोदेशे स्थापयेत् रेतः स्तंभी-भवति।

यस्यलिंगे पाषाण निरोधोभवति (जिसके मूत्राशय में पथरी हो) तस्य (कालानमक) कृष्णलवणेन सहसुरापानं दीयते मार्म्यंत्र जनि।

अपकतिल नाल भस्म गृहीत्वा दुग्धेन माक्षिकेन सहपान दीयते न पत्र पाषाणान लिंग पीडां नाशयति।

संखाहुली की जड और गाय का श्रृंग (सींग) को बांधने से स्तन रोग का नाश होता है। काक जंगा की जड और उपलउ (पाषाण) दोनों को जल के साथ पीस कर नस्य दे अथवा पिलावे तो सर्प का जहर उतर जाता है।

कविट्ठ की जड, नमक, और तेल, इनको पीलाने से बिच्छु का जहर उतर जाता है। तिल की जड़, अनार की छाल, समभाग लेकर ठंडे जल से पीस कर गुटीका बनावे पीलावे बीछु के जहर का नाश करता है।

वंध्याकर्कोटिका सर्प दृष्टस्य जलेन धर्षयित्वामध्येपानं तस्य च देयं भद्रो भवति।

गुंगची की जड को (पायं तरे) बांधे तो व्यवहार में अपराजित होता है याने उसको कोइ जीत नहीं सकता है।

कुंदमूलं पुष्येणोत्पाद्य प्रसार के धत्तं व्य प्रभूतक्रिया भवंति।

कृष्णा निर्गुंडी का मूलं मागसिर मघि पुष्यार्के उत्पाद्य तस्मिन्नवदिने मूले श्वेत सर्प पाश्व ग्रंथो वध्यतेहृदेव्यवहारो धनो भवति दृष्ट प्रत्यय।

काक जंगाहाथ में बांधने से सर्व प्रकार के ज्वर का नाश होता है।

पिटारी. (कांकश्री) की जड को संध्याकाल में लेकर कमर में बांधने से हर्ष रोग (मस्सा। का नाश होता है लेकिन जड को चौदश के दिन दीप धूप विधान से लेवे।

उपरोक्त औषधि की लकड़ी अठारह अंगुल प्रमाण लेकर (दंतपवनेन) तो सर्वप्रकार के ज्वर का नाश करता है।

विशाखा नक्षत्र मे पिंडी तगर की जड को चांवल के पानी के साथ पीवे से स्त्रियों का रक्त स्त्राव, बन्ध हो जाता है।

इमली के बीज २ बहेडा के बीज २ हरडे का बीज २ इन तीनों की गुटिका बनाकर पानी के साथ आंख में अंजन करे तो (तिमिरंगच्छति) ज्योति ज्यादा बढ़ती है।

काक, पारावत, मयुर, कपोतनां, विष्टागृह्यते, तत्पश्चात, खर, (गधा) रूधिर सहिता निगडानि लपयेत् तत्क्षणत्रुटयंति।

सियाल के आंख का चूर्ण अपने आंख (नेत्र) में अंजन करने से रात्रि में बड़े बड़े भूत नजर आते हैं उन भूतों से नहीं डर कर जो उनसे इच्छा करे वही चीज वो भूत लोग लाकर देते हैं।

मनुष्य करोडि मध्ये अर्कतूल सलकदीवरि महिषी सत्क नव नीतं दीपे प्रज्वाल्य मीषपाततेह जेक्रियतेऽहश्यो भवति।

बिल्ली की जरा को (जो बच्चा पेदा होने के समय निकलती है) त्रिलोह के ताबिज में डाल कर पास रखे तो अदृश्य होता है।

मूले निलोत्पल नाल, केशरंश्वेत पद्मिनिपुष्पं मधु शर्कराघृतेन नाभिलेपोदीयतेवीर्य-स्तम्भ छीत प्रोइ गृहीत्वा छो हरि दुग्धेन भावयित्वा पादौलेपयेत् वीर्य स्तम्भः।

श्वेतसर पंखा की जड को नाभि पर लेप करने से वीर्य का स्तंभ होता है।

मयणु मयण हलु मणसिल एकीकृत्य लिगं लेपयेत वीर्यं स्तंभो भवति।

श्वेतसरपंखा की जड को कमर में बांधने से और दक्षिण जंघाप्रदेश में स्थापित करने से वीर्य का स्तंभन होता है।

श्वेतपुनर्नवा की जड को दूध के साथ घिस कर पिलाने से स्त्रियों को गर्भ रहताहै। सांबलि (साल्मली) (सेमर) काष्टपादुका: त्रियंते वज्रापरिवृते मूत्रवाग्गिमध्ये प्रक्षिप्य लेपोदिय ते अलग पादुकाभि: चंक्रम्यते।

सफेद कनेर की जड को रविवार के दिन ला कर कुसुंभ रंग के डोरे में वामहस्त में बांधने से (मर्कटिका) रोग नष्ट होता है

कोलिका गृहद्वय मुत्पाद्य सूक्ष्म च स्त्रेण वेष्टियित्वा तैलेन स्निग्धं कृत्वा कोरक शरावे (कोरामिट्टी का घडापर) कज्जलं पात्यते तेनाक्षि अंजयेत् एकांतर, द्वयंतर चातुर्थिक ज्वराना-शयति। गोमूत्रेन दीपकं दाउश्यं तस्य दीपकस्य शिखायां सूचीकापोइ (सुइपोरोना) अरीवादह्

नीयं, गोसत्क माषुअरीवा घर्षणीय जीरकं मगध, पिपल, नमक सेंधा, मध्ये घषणीयं ताम्र भाजने घर्षण कर्तव्यं अक्षिरोगो नश्यति ।

सरसों, हिंगुल, नीम के पत्ते, वच, सांप की कांचली, को धूप बनाकर खेने से शाकिनी का उच्चाटन होता है और सर्व प्रकार की ऊपर की बाधाएँ दूर होती हैं ।

वणिमूलं, हिंगुल, सुंठि, इन सब चीजों को बराबर मात्रा में लेकर पानी के साथ पीसकर सुंघाने से शाकिन्यो नश्यंति ।

बहेड़ाबीज, सैंधव, शंखनाभि समभाग चूर्णेन अक्षिभरणं चक्षुफुल्लोपशमः ।

वंदा कल्प

नंदिषेणाचार्य कृत

वंदाकल्पं प्रवक्ष्यामि नन्दिषेण मुनि भाषितं, यस्यविज्ञान मात्रेण, सर्वसिद्धिः प्रजायते । अश्विनी नक्षत्रे पलास (ढाक) वंदा संगृह्यहस्ते बध्वा सर्पभयंनिवारयति । भरणी नक्षत्रे आंबिली (इमली) वा आंवल, वंदा संगृह्य हस्ते बध्वा संग्रामे राजकुले अपराजितो भवति सर्वजन प्रियोभवति और इसी नक्षत्र को, कुश, वंदा संगृह्यद्रव्य मध्येधान्य राशौवाक्षियते अक्षयो भवति ।

कृतिकानक्षत्रे बंध्या कर्कोटी मूलं उत्तराभिमुखोभूय उत्पाद्यते हस्तेवध्यते सर्व प्रकारस्य ज्वरंयांति । और इसि नक्षत्रको तुंबरि (उंबरि) वंदा संगृह्य दुग्धेन सहपिबेत् महापुष्टिकारकः भवति ।

रोहणी नक्षत्रे बिल्ववंदागृह्यहस्ते बध्यते सर्वदोषग्रहान् निवारयति । मृगशिरनक्षत्रे शंखपुष्पिमूलं दक्षिणाभिमुखीभूत्वा उत्पाट्य कर्णे दत्वाफूंकिते वृश्चिकविषं नाशयति ।

आद्रानक्षत्रे जातीमूलं (　　　) वायव्याभि मुखीभूय उत्पाट्य हस्ते बध्वा सर्वजन प्रिय भवति । इसी नक्षत्र में जाति मुलं वाय व्याभि मुखं भूय उत्पादय लिहसोडा वंदा संगृह्य द्रव्यमध्ये धान्यराशौवा स्थापयेत् अक्षयो भवति ।

पुनर्वसु नक्षत्रे मंदार (आकौआ) वंदा संगृह्य हस्तेवंध्वा सर्व ज्वरं नाशयति । इसी नक्षत्र में कंटिका मूलनैऋत्याभिमुखी भूय उत्पाट्यते धीदंकुवा हस्ते बध्वा सर्व जनप्रियो भवति । इसी नक्षत्र में वट वंदा बीजं कृत्वाया स्त्रीअपुत्रिणी भवति स तस्याः पुत्रो भवति । पुष्य

नक्षत्रे श्वेतार्कमूल संगृह्य राजा सन्मुखंराई सहित सहस्त्र जाप कृत्वाऽग्नि मध्येहोमं कारयेत् सप्तरात्रेण उच्चाटयति ।

इसी नक्षत्र में कुशवंदा संगृह्य कटिबध्वा षोडश कन्या रमते ।

अश्लेषा नक्षत्रे पुनर्नवा मूलं ईशानदिशाभिमुखी भूय उत्पाद्यते बीजं क्रियत सर्व कर्माणि करोतिविषं नाशयति ।

मघानक्षत्रे मदारक मूलं पूर्वाभिमुखी भूयोत्पाद्यते सर्वकर्माणि करोति । यदाविनाय क्ल्ृ करिमस्तके प्रक्षिप्यते पूज्यते, तदा मनश्चिन्तितंकार्यं भवति ।

मघानक्षत्रे मघुवंदा संगृह्य क्षेत्र मध्ये तथा चतुःकोणं स्थापयेत् मूपकायांति ।

पूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रे दाडिम (अनार) वंदाहस्ते बध्वाज्वरं नाशयति ।

उत्तराफाल्गुनि नक्षत्रे उंबरि मूलं (तुंबरि) उत्तराभिमुखो भूयत्पाद्यते हस्तेबध्वा सर्वकार्याणि करोति ।

चित्रानक्षत्रे बदरी (बैर) वंदाहस्तेबद्धा संग्रामे राजकुले अपराजितो भवति ।

स्वातिन नक्षत्रे धातकी वंदा हस्ते बध्वा यास्त्री रमते सा वश्या भवति ।

विशाखा नक्षत्रे बोरि वंदा संग्रह्यवणिजे, द्यूते, (जुएमें) अपराजितो भवति ।

अनुराधा नक्षत्रे आंविली (इमली) वंदा संगृह्य यंस्पृशेत् सवश्यो भवति ।

ज्येष्टानक्षत्रे मधूक, निंव, कपिथ, वंदा संगृह्य यः स्पर्शते सवश्यो भवति ।

मूलन क्षत्रे खदीर वंदाय हस्य गृहे ध्रियते सवश्यो भवति ।

पूर्वाषाढा नक्षत्रे अमिलोडवंदा अजाक्षिरेण सह यःपिवतितस्य वातरोगंनाश यति ।

उत्तराषाढा नक्षत्रे मंदारक वंदाहस्ते बध्यते सर्व जनप्रियो भवति ।

श्रवणनक्षत्रे कमोलिवंदाहस्ते बध्वा सर्वेषां विषं नाशयति ।

धनिष्ठा नक्षत्रे बबूल वंदा कटि बध्वा हरिषां (बवासिर) नाशयति ।

शतभिखा नक्षत्रे कंकोलिका वंदा अजाक्षीरेण सहपीवेत् कुष्टंयाति । इसी नक्षत्र में शंखपुष्पी मूलं उत्तराभिमुखी भूयोत्पाद्यते पीष्यते स्त्री रितुकाले दिन ३ क्षीरेण सहपीवति सा स्त्री पुरूष संग में गर्भवति भवति ।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे चंपकवंदा (चंपा) संगृह्य तिलकं कृत्वा यं इच्छति तंभवति । उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे पलासवंदा (ढाक) संगृह्य क्षीरेण सहपीवति वंध्या पुत्रं प्रसवति ।

रेवति नक्षत्रे अश्वत्थ वंदकं संगृह्य हस्ते बध्वा लोकेश्वर पुत्रं जनयंति ।

॥ इति ॥

अथ कलकोशं प्रवक्ष्यामि
धन्वंतरी कृत

श्वेत् अपराजिता, मूलं नाश्यदेयं सर्वग्रहं नाशयति ।

बंध्या ककोडी मूलं तंदुलोद केनसहा पीषयेत् सर्वविषं नाशयति ।

श्वेतगिरो कणिकामूलं नाश्यदेयं शिरोरोगं नाशयति ।

मयुरशिखा मूलं कर्णेबिध्वा चक्षुरोगं नाशयति ।

अपामार्ग मूलं भृगाराज संयुक्तं हस्तेवध्वा सर्व जनप्रियो भवति ।

शरपंखा मूलं हस्ते बध्वा सर्वज्वरं नाशयति ।

कासमद्दकामूलं तंदुलोद के नसह पीवेत् नीद्रा नाशयति ।

अपामार्गं मूलं तंदुलोदकेन सहपिवेत काम्बलं नाशयति ।

तुलसीमूलं कर्णवध्वा चक्षुरोगं नाशयति ।

मूंडिमूलं कर्णबध्वा शिरलेपोदीयते शिरवायो नाशयति ।

वालामूलं हस्ते बध्वारात्रि ज्वरं नाशयति ।

सिवलमूलं कर्णबध्वा एकोत्तशत्त ज्वरं नाशयति ।

बहेडामूलं कर्णवध्वा सर्व ज्वरं नाशयति ।

श्वेतार्कमूलं कर्णबध्वा सर्वविषं नाशयति ।

संखपुष्पिका मूलं पुष्य नक्षत्रे उत्पाट्य हस्तेबध्वा सर्वज्वरं नाशयति ।

श्वेतगुंजा मूलं मुखे प्रक्षेप्यः कालसर्पोवारयति ।

गुडोचीमूलं हस्तेवध्वा सर्व सहस्त्रांक्षी भवति ।

उंट कटालां मूलं मूखेप्रक्षेप्यं सर्वलोकानां स्तंभयति ।

च मूलं गुर्विणी संपेठ उत्परे धारयति सुखं शीघ्रं प्रसवोभवति ।

दूधिका मूलं कर्णबध्वा वेलाज्वरं नाशयति ।

गोखुरीका मूलंकंठे बध्वा उष्ण वातं नाशयति ।

मुहंजण मूलं कर्णबध्वा वेलाज्वरं नाशयति ।

कटशेलुवा मूलं बध्वा ज्वरं नाशयति ।

दम्पणा मूलं कर्णे बध्वा अग्नि उद्दीपयति ।

श्वेरऐरंड मूलं कटिबध्वा शुकं नाशयति ।

जोडासीयनी चूर्णं कृत्वा मुखेपीणंदीयते मरी नाशयति ।

सतावरी मूलं हस्ते बध्वा महाबलं भवति ।

उंट कटाला मूलं तंदुलोदकेन लेपोददाति गंडमाला नख प्रमाणे नाशयति ।

काक जंगामूलं करे बध्वा क्षयं नाशयति ।

कंठ सेलुआ मूलं करे बध्वापीत ज्वरं नाशयति ।

श्वेत कटाइ मूलं पुष्य नक्षत्रे उत्पाटयेत् एक वर्ण गोक्षिरेण सहपिबेत वंध्यायापुत्रो भवति ।

पलास मूलं खारहरिताल चूर्णं, प्रलेयेत् रोमनाशयति ।

जाती मूलं, तंदुलोदकेन, सहपिबेत्, वातज्वरं नाशयति ।

आत्मश्रुक्रेण स्त्रिया वामपादं लिप्यतेस शीघ्रं वशो भवति ।

॥ ० ॥

अथलजालु कल्प

शनिवार सध्या को जहां छुइमुइ (लजालु) का पेड हो वहां जाकर १ मुट्ठी चावल, सुपारी रक्खे, फीर उस पेड़ को मोली धागा बांधे, अपनी छाया पेड़ पर नहीं पड़ने दे, सवेरे तुमको अपने घर ले जायेंगे, ऐसा कहे । फिर प्रभात की पिछली रात को जाकर छायारख कर उस पेड़ को उखाड़ लावे, उखाडते समय इस मंत्र को २१ बार पढ़े ॐ भूर्भुव मम कार्यं प्रत्यक्षी भवतु स्वाहा । फिर जिसको वश करना हो उसके घर में रखवादे तो वह वश में हो जाता है । लजालु पंचांग १ छटांक, घी २ छटांक, भिरकं रणी छटांक ३ संखा होली छटांक ३ सब चीज एकत्र कर गोली बनावे, फिर जिसको वश करना हो उसके खाने पीने की चीजों में

मिलाकर खिला देवे तो वश होता है। वाद, विवाद, झगड़े आदिक में पास रख कर जावे तो सब लोग उसकी बात मानते हैं। गोरोचन के साथ घिस कर तिलक करे तो राजा प्रजा सर्व-लोक वश होते हैं।

॥ ० ॥

अथ श्वेतगुंजाकल्प

शुक्ल पक्ष में श्वेतगुंजा को दशमी के दिन पूरी जड़ सहित ले, पंचांग ले, फिर उसकी जड़ को पान के साथ जिसको खाने देवे वह वश होय स्त्री वश हो। पानके साथ में घिस कर गोरोचन से टीका करे, फिर जिसका नाम ले, वह वश में होता है अथवा गुंजा चंदन मणसिल से तिलक करे जिसका नाम लेवे वह वश में होता है। गुंजा प्रियंगु, सरसों इन चीजों को जिसके माथे पर डाले वह वश में होता है, गुंजा की जड़ को पीसकर लगावे अथवा पीवे तो वातरोग का नाश होता है। गुंजा की जड़ को पानी के पीने से मूत्र कृच्छ नहीं होता है। गुंजा की जड़ को घिस कर पानी के साथ पिलाने से वा लगाने से सांप, बिच्छुवा अन्य विषैले जन्तुओं के द्वारा काटने से विष फैल जाता है उस विष को दूर करती है। गुंजा की जड़ को गोरोचन के साथ घिस कर तिलक करने से जो २ देखता है वह वश में होता है। गुंजा की जड़ को स्त्री के कमर में बांधने से सुख से प्रसव होता है। गुंजा की जड़ को घटके मुखेक्षिपत जयंभवति। पास रखकर राजा के पास जावे तो राजसभा वश होती है।

॥ ० ॥

सरपूंखा कल्प

पुष्य नक्षत्र में सूर्य उदय के समय नग्न होकर सरपंखा को ले, फिर उसको छाया में में सुखावे, जड़सहित उखाड़े,(मासाश्वेरीत जड़ लिजइ) अथ पंचांग लीजई। छाया में सुकावे। फिर उसका चूर्ण करके दूध के साथ अपने शरीर में लेप करे तो सर्व शत्रुओं का स्तंभ न होता है। सरपंखा के तिल का गोरोचन के साथ तिलक करे तो राजप्रजा सर्व वश होते हैं। दुकान पर बैठे तो व्यापार अधिक चले। सरपंखा के पंचांग की गोली को गाय के दूध के साथ २१ दिन तक पिलावे तो गर्भ धारण करे।

शुभ मुहूर्त में सोने या चांदी के तावीज में रखकर बांधे तो शस्त्रादिक की धार बंद हो। श्वेत सरपंखा को लेने के समय २ आदमी हाथ में नंगी तलवार लेकर खड़े रहे एक

आदमी दीपक लेकर खड़ा रहे १ आदमी तीर छोड़े, जब तक तीर जमीन पर न गिरने आवे तब तक सरपंखा को उठाले और घर लेकर आजावे छाया में सुका देवे।

॥ ० ॥

पमाड कल्प

अश्वनी नक्षत्र में उत्तर दिशिमुख करके पवित्र हो सूर्योदय पहले पमाडीये की जड़ लेना, नग्न होकर, छाया पड़ने नहीं देवे, घर लाकर, कपूर, कस्तूरी, केशर, के साथ अपने पास रखना राजा प्रजा सर्व वश होते हैं सर्व कार्यों की सिद्धी होती है। जिसके हाथ में बांधे, उसका बेलाज्वर, तीजारी ज्वर आदिक नष्ट होते हैं और मक्खन के साथ जिसको खाने को देवे वह वश में होता है।

॥ ० ॥

तार ताम्र सुवर्णं च इंदु अर्क षोडशभी।
पुष्यार्के घटिता मुद्रा हृ दारिद्र नाशिनी।

३ रत्ती सोना, १२ रत्ती, तांबा १६ रत्ती चांदी, सब मिला ले। २९ रत्ती हुआ, इनकी अंगुठी बनवावे रविवार पुष्य नक्षत्र के योग में, उसी रोज बनवाना, उसी रोज पार्श्व प्रभु का पंचा मृत अभिषेक करके उसमें वह अंगुठी धोकर, याने गंधोदक से धोकर धूप खेवे, फिर अंगुठे के पास वाली तर्जनी अंगुली में पहने तो तीर्व दारिद्र का नाश होता है, लक्ष्मी का लाभ होता है। अंगुठी जमणे हाथ में पहनना चाहिये। भोजन करते समय अंगुठी को नीकाल देना, फिर पहन लेना। ध्यान रहे उसी रोज अंगुठी बने उसी रोज अंगुली में पहन लेना चाहिये। भक्तामर जी के प्रथम काव्य के मंत्र का १०८ बार जप करे।

॥ ० ॥

बिल्ली के ऊपर की दाड़ और कुत्ते के नीचे की दाड़ को, भक्तामर के काव्य का नंबर वाला मंत्र से मंत्रीत करके शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु का घर टुट जाता है महान उत्पात होता है।

सफेद सरसों सफेद चंदन, उपलेट (   ) वच तथा कपुर, इन सबको दूसरा रविपुष्य के दिन इकट्ठा करके गोली बनाकर रक्खे. जब जरूरत पड़े तब उस गोली को घोस-कर तीलक करे तो दृष्टि दोष का नाश होता है। पशुओं के आंख में अंजन करने से दृष्टिदोष दूर होता है।

अथ रक्त गुंजा कल्प

पुष्प होय आदित्य को, तब लीजिये यह मूल।
सुकर वारी रोहड़ी, ग्रहण होय अनुकूल ॥ १ ॥
कृष्ण पक्ष की अष्टमी, हस्त नक्षत्र जो होय।
चौदह स्वाति शत भिषा, पूनों को लेय सोय ॥ २ ॥
अर्द्ध निशा कारज सरे, मन की संज्ञा खोय।
धूप दीप कर लीजिये, धरे धूल लो सोय ॥ ३ ॥
जो काहू नर नारी कूं विष कोई को होय।
विष उतरे सब तुरंत ही, जड़ी पिलावे धोय ॥ ४ ॥
जो तिलक लगावे भाल पर, सभा मध्य नर जाय।
मान मिले स्तुति करे, सब ही पूजे पाय ॥ ५ ॥
हांजी हांजी सब करे, जो वह कहे सो सांच।
एक जड़ी के जुगत से, सब नचावें नाच ॥ ६ ॥
ताके मूल मढ़ाये के, बांधे कमर के सोय।
नव मासे व नारी के, निश्चय बेटा होय ॥ ७ ॥
ऋतुवती के रक्त सो, अंजन आंजे कोय।
देखत भाजे सेन सब, महा भयानक हो ॥ ८ ॥
काजल सूं घिस आंजिये, मोहे सब संसार।
गाली दे दे ताडिये, तोय लगा रहे लार ॥ ९ ॥
मधु सुं अंजन आंजिये, देखे वीर वैताल।
जो मंगावे वस्तु कू, ले आवे सो हाल ॥ १० ॥
जो घिस कर लेपन करे, दूध संग सब अंग।
भूत प्रेत सब यक्ष गण, लगे फिरत सब संग ॥ ११ ॥

घिसके रुई लगाइये, बती घरे बनाये ।
फिर भिगोवे तेल में, दीपक देय जलाय ।। १२ ।।
करे अच मों सब नमें, घर श्मसान दरसाय ।
सात महल के बीच सूं लावे पलंग उठाये ।। १३ ।।
जो घृत में घिस के करे, लेप मूत्र नर ताय ।
भोग शक्ति बाढ़े अमित, मन अति मोद उठाय ।। १४ ।।
अजा मूत्र में रगड़कर, बेंदा दे जो हाथ ।
करे दूर की बात यों, रहे यक्षणि साथ ।। १५ ।।
गोरोचन के साथ घिस, लिखिये जाको नाम ।
मृत्यु होय वाकी तुरंत, नहीं देर को काम ।। १६ ।।
लिंग पत्र के अर्क सु, घिसिये केवल नाम ।
भूत प्रेत व डाकिनी, देखस नसे तमाम ।। १७ ।।
स्याउ संग वा रगड़ के, तलुवे तले लगाये ।
आँख मीच के पलक में, सहस, कोस उड़ जाय ।। १८ ।।
जो घिस आंजे पीस के, बंदी छोड़ कहाय ।
बन्दी पड़े छुटे सभी, बिना किये उपाय ।। १९ ।।
जो गुलाब संग याहि घिस, नाड़ी लेप कराय ।
घड़ी चार कूं जी पड़े, मुरदा सहज सुभाय ।। २० ।।
फेर अंकोल के तेल में, घिस के आंजे कोय ।
धन दीखे पाताल को, दिव्य दृष्टि जो होय ।। २१ ।।
जो वाघिन के दुध में, घिस चौपड़े सब अंग ।
सर्व शस्त्र लागे नहीं, वद कर जीते जग ।। २२ ।।
घिस कर तिल के तेल में, मर्दन करे शरीर ।
दीखे सब संसार कू, महावीर रणधीर ।। २३ ।।

जो अलसी के तेल में, घिसिये हुतश मिलाय ।
कोढ़ि के लेपन करे, कंचन तन हो जाय ॥ २४ ॥
जो कोई संसार में, अंधा आवे जे कोय ।
सात दिवस तक आंजिये, दृष्टि चौगुनी होय ॥ २५ ॥
श्याम नगद संग रगड़ के, बीसो नख लिपटाय ।
जो नर होय कुमारजो, देखत वश हो जाय ॥ २६ ॥
कस्तूरी सू आंजिये, प्रात समय लो लाय ।
मौत जो लिखिये सवन की, काल पुरुष दरशाय ॥ २७ ॥
गंगाजल सू आंजिये, दोनों नेत्र जु मांही ।
बरसा बरसे धूल की, या में संशय नाही ॥ २८ ॥
जो आंजे निज रक्त सू भर ले दोऊ कोय ।
देखे तीन लौक कूं, अपनी आंखन सोय ॥ २९ ॥
जो आंजे निजरक्त, खुले रागनी राग ।
जो घिस पावे दूध सू, होय सिद्ध सू भाय ॥ ३० ॥
रक्त गुंजा यह कल्प हैं, सूक्ष्म कहियो बनाय ।
जो सीधे सो सिद्ध हो, या मे संशय नाय ॥ ३१ ॥

नोट : -इस रक्त गुंजा कल्प के दोहे का अर्थ इतना सरल है कि कम पढ़ा लिखा हुआ व्यक्ति भी अच्छी तरह जान लेता है। इसलिए यहां पर इसका हिन्दी अनुवाद करना उचित नहीं है।

॥ इति ॥

मनुष्य की खोपड़ी पर, रक्तांजन, भीमसेन कपूर, तथा रविपुष्य के रोज जिस स्त्री के पहली बार प्रसुति में लड़का पैदा हुआ हो उस स्त्री के दूध में रवि पुष्य के दिन गोली बनावे, काम पड़े तब तीन दिन आंख में अंजन करने से, आंख का सर्व रोग नाश को प्राप्त होते हैं।

शरद पूर्णिमा को ब्राह्मी का रस, वच, और कपिला गाय का घी इन तीनों चीजों को बराबर २ लेकर, कांसे की थाली में इन चीजों को खूब गाढ़ा २ लगावे, फिर उसमें भक्तामर का ६ नं० का यन्त्र लिखे, उपर अष्टगन्ध से ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं वद् वद् वाग्वादिनी लिखे, फिर चन्द्रमा के प्रकाश में रात्रि भर उस थाली को एक ऊंचे पाटे पर विराजमान कर रक्खे, सवेरे एक २ अक्षर को खावे, तो सरस्वती वश में होती है। महान् बुद्धिमान होता है।

ब्रह्म दंडी को शनिवार के दिन श्याम को अक्षत, सुपारी, को रखकर कुंकुम के छींटे लगाकर नोत दे, फिर रविवार की शाम को नग्न होकर धूप खेवे, फिर ब्रह्मदन्डी का पंचाग ले, फिर कपड़े पहनकर घर ले आवे, उस ब्रह्म दन्डी को कैसा भी घाव हो, व्रण हो, किसी भी प्रकार का गडगुमड हो, उसके उपर लेप करने से शीघ्र ही आराम हो जाता है।

रवि पुष्य के दिन जिस स्त्री को पुत्र पैदा हुआ हो, उस स्त्री की जेर, लेकर छाया में सुखा देवे। एकान्त में फिर उस जेर को रूई के अन्दर लपेटकर बत्ती बनावे। दीपक में रख कर जलावे, तो घर में मनुष्य ही मनुष्य ही दिखते हैं। चोर चोरी नहीं कर सकते हैं।

रवि पुष्य को (लजालु) छुइमुइ का पंचांग को ग्रहण करके छाया में सुखाले, फिर जो मनुष्य कई दिनों से खो गया है, उस मनुष्य के कपड़े में लजालु को बाँध कर, त्रिकाल उस वस्त्र में कोडा लगावे तो खोया हुआ मनुष्य शीघ्र ही आता है।

१२ भाग तांबा, १६ भाग चांदी, १० भाग सोना, इन तीनों का प्रथक २ तार खिचवा कर, रविपुष्य या गुरुपुष्यामृत योग रहते २ अंगुठी बनवाना और पंचामृत से जिनेन्द्र प्रभु का अभिषेक करके, उस अभिषेक में उस अंगुठी को धोकर सीधे हाथ की तर्जनी अंगुली में पहनना चाहिये, जिससे सर्व प्रकार का त्रिव दारिद्र नाश होता है। किन्तु रवि या गुरू पुष्यामृत योग में ही अंगुठी बनवाना चाहिये और उसी ही योग के रहते २ ही पहन लेना चाहिये। तब ही कार्यकारी हो सकती है। आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी इस दारिद्र

...ता, कीटक का मल, और

मयूर शिखा, सफेद गुञ्जा, गोरंगा (गोभी) आक का प

अपने पांचों मलों का चूर्ण। इन सब चीजों को जिस स्त्री को खिला दिया जाय वह वश में हो जाती है।

कान, आंख, दांत, जीभ, तथा वीर्य को पंच मल कहते हैं।

लाल कनेर के पुष्प, भूर्जगाक्षि जटा, ब्रह्मदण्डी, इन्द्रायन, गोवन्धनी (अधो पुष्पिया प्रियंगु) लज्जावती के चूर्ण की गोलियां बनावे, उन गोलियों को बराबर नमक सहित एक बर्तन में डालकर अपने मूत्र में पकावे। इन गोलियों को भोजन आदि के साथ खिलाने से स्त्री वश में होती है।

बड़, गूलर, पीपल, पिलखन, अंजीर के दूध तथा पंडुकी (पोतकी) के अंडे के रस में कपास, आक, कमल सूत्र, सेमल की रूई, सन की बनी हुई बत्ती को भावना देकर काले तिलों का दीपक जलाने से तीनों लोक वश मे होते हैं।

निगुण्डी और सफेद सरसों घर के द्वार पर अथवा दुकान के द्वार पर रखी जावे तो अच्छा क्रय विक्रय होता है।

जो स्त्री कांचिका (सौवीर) के साथ जवे के फूल को मल कर ऋतु काल में पीती है। वह फिर मासिक से नहीं होती है यदि हो भी जावे तो गर्भ धारण तो कभी भी नहीं करती है।

लज्जारिका, और मेंढक की चरबी को हाथ पर लगा लेने से अग्नि का स्तम्भन होता है, और श्वास निरोध से तुला दिव्य का स्तम्भन होता है।

उत्तर दिशा में उत्पन्न होने वाली कौंच की जड़ को गो मूत्र में पीस कर उसका मस्तक पर तिलक करने से शाकिनी उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखती है।

रवि पुष्यामृत के योग में ब्राह्मी, शतावरी, शंखा होली, अधा जारा, जावत्री, केशर मालकांगणी, चित्रक, अकलकरो और मिश्री का चूर्ण करके सब सम भाग लेकर, सवेरे १४ कोमल अदरख के रस में २१ दिन तक खाने से बुद्धि की वृद्धि होती है।

पुष्यार्क योग में काला धतूरे की जड़ अथवा सफेद धतूरे की जड़ शनिवार को निमन्त्रण देकर, रविवार को संध्या काल में नग्न होकर ग्रहण करे, फिर कन्या कत्रीत सुत लपेट कर, धूप खेवे, फिर उस जड़ को अपने कमर में बांधने से स्वप्न में वीर्य का कभी स्खलन नहीं होता है।

पुष्यार्क अथवा हस्तार्क में रूद्रवंति और (   ) का पंचांग लेकर पानी में गोली बनाकर रक्खे, जब कार्य पड़े तब अपने शरीर में लेप करने से अग्नि शीतल के समान लगती है। याने अग्नि में नहीं जलता है।

मूलार्क योग में सर पंखा का पंचांग, बीसखपरा का पंचांग, इन्द्रवारूणी का पंचांग शिव लिंगी का पंचांग, इन सब को एकत्र करके पेट पर लेप करने से उदर रोग शांत होते हैं।

पुष्यार्क योग मे लज्जालु पंचांग, शंख पुष्पी पंचांग, (   ) पंचांग लक्ष्मरणा पंचांग, श्वेत गुंजा पंचांग इन सब चीजों को ग्रहण करके गोली बनावे, जब कार्य पड़े तब स्वयं के थूक में उस गोली को घिस कर तिलक करने से पर विद्या का छेदन होकर, आजीविका की प्राप्ति होती है।

रवि पुष्य मूल योग में दुब पंचांग का रस लाकर अष्ट गंध मिलाकर दायां हाथ की अनामिका अंगुली से माथे पर निरन्तर तिलक करने से सर्व जन वश में होते हैं।

पुष्यार्क योग में जाइ पुष्प का पंचांग और समुद्र फेन, गधेडा के मूत्र में गोली करके आंख में अंजन करने से भूत प्रेत, व्यंतरादि सर्व दोष का नाश करता है। स्त्रियों के भग पर लेपन करने से सुभागी हो जाता है।

पुष्यार्क में धन्वंतरि पंचांग, लक्ष्मणा पंचांग, शिवलिंगी पंचांग इन तीनों का चूर्ण करके सूंघने से आधा शीशी तथा सूर्य वात का नाश होता है।

पुष्यार्क योग में एक डंडी पंचांग, पुत्र जारी पंचांग को तीन धातु के तावीज में डालकर हाथ में बांधने से, सर्व जाति की अग्नि ठंडी हो जाती है।

पुष्यार्क योग में मुरगे की विष्टा, मयुर की विष्टा लोमड़ी की विष्टा, चोमगादड की विष्टा और चतुष्पद पशुओं रज, सब को इकट्ठा करके शत्रु के माथे डालने से उसका नाश होता है।

पुष्यार्क योग में सरपंखा पंचांग, चक्रांग पंचांग, मयुर शीखा पंचांग इन सब चीजों को पानी के साथ पिलाने से सब जाति के विष से कभी मरण नहीं होता है।

पुष्यार्क योग में चक्रांग पंचाग, काक जंघा पंचांग, पिलाने से अन्दर गांठ और गोलादिक शुल की शांति होती है।

पुष्यार्क में सहदेवी का पंचांग तीन धातुओं के तावीज में डालकर धारण करने से असमय में गर्भपात कभी नहीं होता है।

पुष्यार्क में सूअर की विष्टा जमीन पर नहीं गिरे, उसके पहले ही ग्रहण करके मिष्टान्न के साथ में हाथी को खिलाने से हाथी वश में होता है।

पुष्यार्क योग में सफेद अकोआ जड़की, की जो गणेशाकार होती है उसको लाकर द्रव्य के साथ में रखने से अष्ट सिद्धि और नव निधि की प्राप्ति होती है।

गंगा पार की ताम्बा लाकर चने में मिलावें और कूट कर गुदा में धूनी दे तो बवासीर का रोग शांत होता है।

सर्प की केंचुली को मस्से के नीचे बांधे तो बवासीर ठीक होता है।

दांये हाथ की बीच की अंगुली में लोहे की अंगूठी पहनने से पथरी रोग शांत होता है।

सुबह के समय दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके हाथ में गुड़ की डली लेकर उसे दांतो से काट कर चौराहे पर फेंक देने से आधा सीसी का रोग शांत होता है।

गाय के घी में सोरा मिलाकर सूंघने से आधा सीसी रोग दूर हो जाता है।

दूध के दांत जिसके गिरे हो उस दांत को तावीज में मडवा कर पास रखने से दांत पीडा शांत होती है।

रेशम के डोरे में जायफल की माला गूंथ कर रोगी के गले में बांधने से मृगी रोग शांत होता है।

गाय के बांये सींग की अंगूठी बनवा कर, दांये हाथ की कनिष्ठा अंगुली में पहनने से मृगी का दौरा आना जल्दी बन्द हो जाता है।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दक्षिण की ओर वाले पवित्र स्थान से. व्याघ्र नखी, बूटी की जड़ उखाड़ लावे और उसे स्त्री के कमर में बांधने से प्रदर रोग शांत होता है।

काली मूसली की जड़ को हाथ वा पांव में बांधने से रुका हुआ गर्भ गिर जाता है।

जेष्टा नक्षत्र में अडुसे की जड़ लाकर उसे धूप देकर स्त्री की कमर में बांधने से नष्ट पुष्पा स्त्री ३० दिन के भीतर फिर. रजस्वला होने लगती है।

नीम की जड़ ब्रह्मदण्डी की जड़, मुलहठी, काली मिर्च और पीपल इन सबको जौ कुट का काढा बनाकर पीने से बन्द मासिक धर्म फिर से होने लगता है।

शिव लिंगी के बीज को गुड़ के साथ गोली बना कर ऋतु स्नान के बाद तीन दिन खाकर मैथुन करने से गर्भ ठहर जाता है।

निर्गुण्डि के रस में गोखरू के बीज डालकर सात दिन तक पीने से स्त्री गर्भ धारण करती है।

श्रवण नक्षत्र में काले एरण्ड की जड़ लाकर, उसे धूप, दीप देकर वन्ध्या स्त्री के गले में बांधने से वन्ध्यात्व दोष दूर हो जाता है। वह गर्भ धारण करती है।

नींबू के पुराने वृक्ष की जड़ को दूध में पीसकर घी में मिला कर पीने से दीर्घ जीवी पुत्र की प्राप्ति होती है।

रजो धर्म से निवृत होने के बाद पांच दिन तक, जो स्त्री पान की जड़ को घोट कर पी लेती है। उसे गर्भ नहीं रहता है।

स्त्री की योनि पर हाथी की लीद रखने से गर्भ नहीं रहता है।

रवि पुष्या मृत में धतूरे की जड़ को लाकर रख ले, कार्य पड़े तब गर्भवती स्त्री के कमर में बांध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

सफेद सांठ की जड़ को गर्भिणी स्त्री के योनि में रखने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

गर्भिणी स्त्री के हाथ में चुम्बक पत्थर रख देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

स्त्री के कमर में बांस की जड बांधने से प्रसव सुख से होता है।

नीम की जड़ स्त्री के कमर में बांधने से प्रसव सुख पूर्वक होता है।

उत्तर दिशा में उत्पन्न ईख की जड़ को स्त्री के नाप के डोरे में बांध कर कमर में बांधने से प्रसव सुख पूर्वक होता है।

आंवला और मूलहठी को गाय के दूध के साथ पीने से गर्भ स्तंभन होता है।

धतूरे की जड़ को कमर में बाँधने से गर्भ स्त्राव नहीं होता है।

अकरकरा को सूत में लपेट कर बच्चे के गले में बांधने से मृगी रोग शांत होता है।

दूध पिलाने वाली मां अथवा धाय के कपड़े में से एक टुकड़ा फाड़ कर, पानी में भिगोवे, फिर बच्चे के माथे पर रख देने से हिचकी रोग शान्त हो जायगा।

कपूर के डलिओं की माला बनाकर बच्चे को पहनाने से सुखपूर्वक दांत आयेंगे।

बच्चे के हाथ में लोहे अथवा तांबे का कड़ा पहनाने से दांत सुखपूर्वक आवेंगे और बच्चे को दृष्टि दोष नहीं होगा।

काली सरसों और काली मिर्च को पीसकर अंजन करने से भूत बाधा नष्ट होती है।

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के खुर का नख लेकर रखले, उस नख को अग्नि में डाल कर धूनी देने से भूत प्रेत आदिक भाग जाते हैं।

अनार का बांधा ज्येष्ठा नक्षत्र में लाकर घर के दरवाजे पर बांध देने से बालकों के दुष्ट ग्रहों का निवारण हो जाता है।

काशीफल के फूलों के रस में हल्दी को पीस कर पत्थर के खरल में खूब घोट कर अंजन बनाले। इस अंजन को आँख में लगाने से भूतादि की बाधा अवश्य दूर हो जाती है।

रविवार के दिन सफेद कनेर की जड़ को दांये कान पर बांधने से विषम ज्वर दूर होता है और दांयी भुजा में बांधने पर शीत ज्वर दूर होता है।

चौलाई की जड़ सिर में बांधने से विषम ज्वर दूर हो जाता है।

मकड़ी के जाले को गले में लटकाने से ज्वर उतर जाता है।

रविवार के दिन आक की जड़ को उखाड़ कर कान मे बांधने से सभी तरह के ज्वर दूर हो जाते है।

नारियल की जड़ को (लांगली मूल) को गले में बांधने से महा ज्वर दूर हो जाता है।

बृहस्पति की जड़ को मस्तक पर रखने से, बांधने से महा ज्वर नष्ट होता है।

अपा मार्ग की जड़ को रोगी के भुजा में बांधने से भूत ज्वर नाश होता है।

रीठे के फल को धागे में गूंथ कर बच्चे के गले में बाँधने से उसे नजर नहीं लगती तथा हिचकी रोग शान्त होता है।

भेड़िये के दांत को बालक के गले में बांधने से बालक का अपस्मार रोग शांत होता है।

कबूतर की बीट को शहद के साथ पीने से स्त्री रजस्वला हो जाती है।

घूंघची की जड़ को कान मे बांधने से दाड़ के कीडे झड़ जाते हैं।

रविवार के दिन सर्प की केंचुल लाकर थोड़े से गुड़ में १ रत्ती भर केंचुलि मिला कर देने से नाहरू रोग शांत हो जाता है।

सूखी मिट्टी का डला सूंघने से नाक का रक्त बन्द हो जाता है। नकसीर ठीक होती है।

प्याज की माला को कंठ में धारण करने से तिल्ली और जिगर दूर हो जाता है।

आंबा हल्दी, सेंधा नमक, कूठ को सम भाग लेकर नींबू के रस में पीस कर लेप करने से मुंह के धब्बे दूर होते हैं।

तज, धनिया और लोध को सम भाग पीस कर मस्सों तथा मुंहासों पर लेप करने से वे दूर हो जाते हैं।

सरसों, सेंधा नमक, लोंग और बच—इन सबको कूट कर मुंह पर लेप करने से मुंह पर होने वाली छोटी २ कीलें फुन्सियां ठीक होती हैं।

सफेद सांठी की जड़ को घी में पीस कर आंखों में अंजन करने से बहता हुआ पानी रुक जाता है।

बादाम, कपूर, आधी २ रत्ती लेकर खूब महीन पीस ले, फिर अंगुली से अंजन करने पर दुखती हुई आंखें ठीक हो जाती हैं।

रांगे की अंगूठी मध्यमा उंगली में पहनने से मोटापा कम हो जाता है।

सोते समय सूखा नमक पिसा हुआ शिर में मलने से झड़ते हुए शिर के बाल बन्द हो जायेंगे।

शुभ नक्षत्र में (अपामार्ग अथवा अघाभार) की जड़ लाकर व्यक्ति के बांये कान में बांधने से सर्प-बिच्छू का जहर उतर जाता है।

सर्प के काटे हुए स्थान पर सफेद सोंठ की जड़ का लेप करने से जहर उतर जाता है।

मयूर के साबूत पङ्ख को चिलम में भर कर फूंक लेने से तुरन्त सर्प का जहर उतर जाता है। किन्तु इस प्रयोग को छः-सात बार करना चाहिये, सर्प दष्टा व्यक्ति अगर बेहोस हो गया हो तो अन्य व्यक्ति स्वयं फूंक लेकर सर्प दष्टा के नाक में जोर से धुंआ फेंकने से विष उतर जायगा।

ऊंट के बालों की रस्सी बनाकर, अपनी जांघ में बांध ले तो जब तक उस रस्सी को नहीं खोलेगा तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।

कमल गट्टे को शहद के साथ पीस कर नाभि पर लेप करने से वीर्य स्खलित नहीं होगा।

पुष्य नक्षत्र में आक और धतूरे का ऊपरी भाग एवं कटेली की जड़ लाकर, सबको मिलाकर चूर्ण करे, इस चूर्ण को जिसके शिर पर डाल दिया जाय, उससे इच्छित वस्तु प्राप्त की जा सकती है।

भूत लग जाता है। चन्दन खस माल कांगनी, तगर, लाल चन्दन और कूठ को एक में पीस कर शरीर में लेप करने से भूत उतर जाता है।

शुभ तिथि, शुभ वार के नक्षत्र को काली गाय के दूध को जीभ पर रखे और उसके घी को दोनों आँखों में अंजन करे तो पृथ्वी में गड़ा हुआ द्रव्य दिखेगा।

जहां पर कौए मैथुन करते हों और सिंह आकर बैठता हो वहां अवश्य ही धन गड़ा हुआ है समझना।

बहेड़े के वृक्ष को साम को नोत आवे, सबेरे उसका पत्ता लाकर पांव के नीचे दबा कर भोजन करने से बीस तीस आदमी का भोजन अकेले ही खा जाता है।

बहेड़े का पत्ता तथा सफेद कुत्ते का दांत इन दोनों को कमर में बांध कर खाने बैठने से बहुत भोजन करता है।

भैंस के दूध में तथा घी में अपा मार्ग के बीजों की खीर बना लर खाने से १ महीने तक भूख नहीं लगती हैं।

पमार के बीज, कसेरू तथा कमल की जड को गाय के दूध मे पका कर खाने से एक महीने तक भूख नहीं लगती।

गोरोचन तथा केशर को महावर के साथ घिस कर, उसके द्वारा भोज पत्र के ऊपर शत्रु का नाम लिख ने से उसका स्तम्भ न हो जाता हैं। और वह सदैव वश में रहता है।

पके और सुखे हुए लभेडे (लिहसौड़े) के फल को खूब महीन पीस कर पानी में डालने से पानी बंध जाता है।

दो हांडियों में श्मसान के अंगारे भर कर दोनों का आपस में मुंह मिला कर जंगल में गाड़ देने से मेघ का स्तंभन हो जाता है।

चौलाइ की जड को चान्दी के तावीज में डाल कर अपने मुंह में रखने से शत्रु का मुख स्तंभित रहता है।

ऊंट के रोमों को किसी पशु पर डाल देने से वह जहां का तहां ही स्तंभित हो जाता है। कटेली की जड को और मुलहठी को समभाग लेकर पीसे, फिर नाक में सुंघने से निद्रा का स्तंभन हो जाता है।

ऋतुमती स्त्री की योनि के वस्त्र पर जिस मनुष्य का नाम गोरोचन से लिख कर घड़े में बन्द कर दिया जाय, उसका स्तंभन हो जाता है। फिर वह चल फिर नहीं सकता है, एक ही स्थान पर पड़ा रहता है।

जलते हुए भट्टे में घोड़े का खुर और बेत की जड़ को डाल दिया जाय तो अग्नि का स्तंभन हो जाता है। फिर खाली धुंआ उठता रहता है।

रविपुष्यामृत नक्षत्र में सफेद आकड़े की जड़ को लेकर दांई भुजा में बांधने से व्याघ्र का स्तंभन होता है।

ऊंट की हड्डी को जिस व्यक्ति का नाम लेकर पृथ्वी में गाड़ दिया जाय तो, उस मनुष्य की गति स्तंभित हो जाती है।

एकाक्षी नारियल कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं एकाक्षाय श्रीफलाय भगवते विश्वरूपाय सर्व योगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकार्य प्रदाय नमः।

पूजन विधि : प्रथम हस्त में पानी लेकर संकल्प करे—अद्याद्य संवत् मिलाब्दे महामांगलाय फलप्रद - अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरे इष्ट सिद्धये बहुधन प्राप्तये एकाक्षि श्रीफल पूजन महं करिस्यमि। इस प्रकार कह कर पानी छीटे फिर उपर्युक्त मन्त्र को बोलते हुये श्रीफल का पंचामृताभिषेक करे, अष्ट द्रव्य चढ़ावे रेशमी वस्त्र ओढ़ाए, पूजन करे। उसके बाद सोने की वा मूंगेकी अथवा रूद्राक्ष की माला से जप शुरू करे। जप १२५०० हजार हो जाय, फिर नित्य प्रति एक माला फेरे, दीवाली, सूर्यग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय पूजन करे।

मन्त्र :—ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मी स्वरूपाय एकाक्षिनालिकेराय नमः सर्व सिद्धि कुरु २ स्वाहा।

यह मन्त्र रेशमी कपड़े पर अष्ट गंध से अथवा केसर से लिखा। अनार की कलम से उस वस्त्र के उपर एकाक्षि श्रीफल रखा मन्त्र से प्रातः और संध्या को अष्ट द्रव्य से पूजा करे, मूल मन्त्र की एक माला फेरे।

मन्त्र :—ॐ ऐं ह्रीं ऐं ह्रीं श्रीं एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इस मन्त्र की एक माला फेरे गुलाब के फूल १०८ चढ़ावे।

मन्त्र :—ॐ ह्रीं ऐं एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इस मन्त्र की १० माला पांच दिन तक प्रति दिन फेरे। तथा कनेर के २१ फूल चढाए। जिज्ञासित का स्वप्न में उत्तर प्राप्त होगा।

फलप्राप्ति :—

इस श्रीफल सुंघाने मात्र से स्त्री गर्भ, के कष्ट से छुटे, तुरंत प्रसव हो।

वंध्या स्त्री को ऋतु स्नान के बाद घोल कर पानी पिलावे तो संतान हो।

श्री फल को सात बार पानी में डुबो कर सात बार ही मन्त्र पढ़े, फिर उस पानी को घर में छींटने से भूत- प्रेत, का उपद्रव शांत होता हो।

लाल कनेर का फूल लेकर, दक्षिण दिशा में बैठकर शत्रु का नाम लेते हुए एक माला फेरे, फूल शत्रु के सामने फेंके तो शत्रु का नाश हो।

दक्षिणावर्त शंख कल्प

शंख ३ तोले का उत्तम २५ तोले का अत्युत्तम है। शंख शुक्ल वर्ण का ही उत्तम माना गया है।

यदि शंख को पानी में नमक डाल कर उस पानी में डाल दे, फिर सात दिन तक पानी में ही रहने दे, अगर शंख फटे नहीं तो समझो असली शंख है नहीं तो नकली है।

प्रयोग फल :—

शंख में पानी भर कर मस्तक पर नित्य हो छींटे तो पाप का क्षय हो।

शंख में पानी लेकर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

पूजन के पश्चात् शंख में दूध भर कर वन्ध्या स्त्री पिए तो उसके सन्तान होती है।

जिस घर में शंख हो उस घर में सर्व मंगल होता है। रोग शोक मोह का नाश, प्रतिष्ठा बढ़ती है। मान सम्मान राज्य में होता है।

पूजन विधि :—

स्नान करके, सफेद वस्त्र धारण करे, प्रतिदिन दूध से फिर पानी से शंख को स्नान करावे। फिर चांदी, अथवा सोने के पत्र पर उस शंख को सोने में मढ़ाना चाहिये, फिर अष्ट-द्रव्य से सोडसो प्रचार पूजन करना चाहिए,। पूजन करने के पहले संकल्प करें।

ॐ अद्य अमुक वर्षे अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ मम मनोवांछित कार्यसिद्धये ऋद्धि सिद्धि प्राप्त्यर्थं महं दक्षिणा वर्त शंखस्य पूजनं करिष्याम।

पूजन मन्त्र :—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थायपयोनिधि जाताय श्री दक्षिणवर्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः।

इस मन्त्र को पढ़ते हुए अष्ट द्रव्य से सुगन्धित इत्र चढ़ाए, नैवेद्य चांदी के बरतन में रखे, उसमें दूध, चीनी, केशर, कस्तूरी बादाम, इलायची डाले, साथ में केला रखे, जो भोजन शाला में वस्तु बनी हो उसे चढ़ाए, कपूर से आरती उतारे।

ध्यान मन्त्र :—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीधर करस्थाय पयोनिधि जाताय लक्ष्मी सहोदराय चिन्तितार्थ संपादकाय श्रीदक्षिणावर्त शंखाय श्री कराय, पूज्याय क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ नमः सर्वाभरण भूषिताय प्रशस्यायंङ्गोपाङ्गसंयुताय कल्पवृक्षाय स्थिताय कामधेनु चिन्तामणिनव नीधिरूपाय चतुर्दश रत्न परिवृताय अष्टादश महासिद्धि सहिताय श्रीलक्ष्मी देवता श्री कृष्णदेव करतल लालिताय श्रीशंख महानिधये नमः।

जप मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिण मुखाय शंखनिधये समुद्रप्रभवाय शंखाय नमः। प्रतिदिन एक या दसमाला फेरे। जप करने के बाद मन्त्र के साथ पानी आकाश की ओर छांट दे।

गौरोचन कल्प

मन्त्र :—ॐ ह्रीं हन हन ॐ ह्रीं हन ॐ ह्रीं ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रों ह्रौं ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि :—गौरोचन की टिकड़ी बनाये—२१ उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके शुद्ध जगह रख दें, जब भी जरूरत हो उपरोक्त मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके प्रयोग में लावे, गुगुल का धूप खेवे।

प्रयोग :—१. ललाट पर तिलक कर राज्य सभा में राज्य प्रमुख के पास व सरकारी किसी भी कार्य के लिए जावे तो मनोकामना सफल हो।

२. हृदय पर तिलक करके जहाँ भी जावे, तो मनोकामना सफल हो, किसी स्त्री के पास जावे, तो वश में हो।

३. मस्तक पर तिलक करके जावे तो रास्ते में सिंह, व्याघ्र, चोर आदि का भय मिटे, स्त्री-पुरुष सब वश हो, लोक प्रिय हो।

तंत्राधिकार : रुद्राक्ष कल्प

भोग और मोक्ष की इच्छा रखने वाले चारों वर्णों के लोगों को रुद्राक्ष धारण करना चाहिये। उत्तम रुद्राक्ष असंख्याय समूहों का भेदन करने वाला है। जाति भेद के अनुसार

रुद्राक्ष ४ तरह के होते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। उन ब्राह्मणादि जाति के रुद्राक्षों के वर्ण श्वेत, रक्त पीत तथा कृष्ण जानना चाहिये। मनुष्यों को चाहिये कि वे क्रमशः वर्ण के अनुसार अपनी जाति का ही रुद्रास धारण करें। जो रुद्राक्ष आंवले के फल के बराबर होता है। वह समस्त अनिष्टों का विनाश करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष बेर के फल के बराबर होता है, वह उतना छोटा होते हुए भी लोक में उत्तम फल देने वाला तथा सुख सौभाग्य वृद्धि करने वाला होता है। जो रुद्राक्ष गुंजाफल के समान बहुत छोटा होता है वह सम्पूर्ण मनोरथो और फलों की सिद्धि करने वाला होता है। रुद्राक्ष जैसे-जैसे छोटा होता है वैसे-वैसे अधिक फल देने वाला होता है। एक-एक बड़े रुद्राक्ष से एक-एक छोटे रुद्राक्ष को विद्वानों ने दस गुना अधिक फल देने वाला बतलाया है। अतः पापों का नाश करने के लिए रुद्राक्ष धारण करना आवश्यक बताया है। रुद्राक्ष के समान फलदायिनी कोई भी माला नहीं है। समान आकार प्रकार वाले चिकने, मजबूत, स्थूल, कण्टक युक्त (उभरे हुए छोटे २ दानों वाला) और सुंदर रुद्राक्ष अभिलंबित पदार्थों के दाता तथा सदैव भोग और मोक्ष देने वाले हैं। जिसे कीड़ों ने दूषित कर दिया हो, जो टूटा फूटा न हो जिसमें उभरे हुए दाने न हो, जो व्रण युक्त हो तथा जो पूरा पूरा गोल न हो इन पांच प्रकार के रुद्राक्षों को त्याग देना चाहिये। जिस रुद्राक्ष में अपने आप ही डोरा पिरोने योग्य छिद्र हो गया हो, वही उत्तम माना गया है, जिसमें मनुष्य के प्रयत्न से छेद किया गया हो, वह मध्यम श्रेणी का होता है। ग्यारह सौ रुद्राक्ष धारण करने वाला मनुष्य जिस फल को पाता है उसका वर्णन सैकड़ों वर्षों में भी नहीं किया जा सकता; भक्तिमान पुरुष साढ़े पांच सौ रुद्राक्ष के दानों का सुन्दर मुकुट बनाले और उसे सिर पर धारण करे तीन सौ साठ दानों के लम्बे सूत्र में पिरोकर एक हार बना ले। वैसे-वैसे तीन हार बनाकर भक्ति परायण पुरुष उनका यज्ञोपवीत तैयार करे और उसे यथा स्थान धारण किये रहे।

कितने रुद्राक्ष की माला—कहाँ धारण की जाऐ—छः रुद्राक्ष की माला कान में, बारह की हाथ में, पन्द्रह की भुजा में बाईस की मस्तक में सत्ताईस की गले में, बत्तीस की कंठ में (जिससे भूल कर वह हृदय को स्पर्श करती रहे) धारण करनी चाहिये।

कौनसा रुद्राक्ष कहां धारण करना चाहिए—छः मुखा रुद्राक्ष दाहिने हाथ में, सात मुखा कंठ में, आठ मुखा मस्तक में, नौ मुखा बांये हाथ में, चौदह मुखा शिखा में, बारह मुखा वाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश में धारण करना चाहिये। इसके धारण करने से आरोग्य लाभ सात्विक प्रवृति का उदय, शक्ति का अविर्भाव और विघ्ननाश होता है।

रुद्राक्ष के मुखों के अनुसार उसका फल निम्न प्रकार से है—

(१) एक मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भोग व मोक्ष रूप फल प्रदान करता है। जहाँ इसकी

पूजा होती है, जहाँ से लक्ष्मी दूर नहीं जाती। उस स्थान में सारे उपद्रव नष्ट हो जाते हैं तथा वहाँ रहने वाले लोगों की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होती हैं

(२) दो मुख वाला रुद्राक्ष देव देवेश्वर कहा गया है। वह सम्पूर्ण कामनाओं और फलों को देने वाला है। गर्भवती महिलाओं की कमर या बांह पर सूत से बांध देने पर गर्भावस्था नौ महिने के अन्दर किसी भी प्रकार की बाधा, भय, बेहोशी, हिस्टीरिया, डरावने स्वप्न आदि दोष नहीं होंगे साथ में एक रुद्राक्ष बिस्तर पर तकिए के नीचे एक डिबिया में रख देना चाहिये।

(३) तीन मुख वाला रुद्राक्ष सदा साक्षात् साधन फल देने वाला है, उसके प्रभाव से सारी विद्यायें प्रतिष्ठित होती हैं तीन दिन के बाद आने वाला ज्वर इसके धारण करने से ठीक हो जाता है।

(४) चार मुख वाला रुद्राक्ष के दर्शन और स्पर्श से शीघ्र ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि देने वाला है इससे जीव हत्या का पाप नाश हो जाता है।

(५) पांच मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् कालाग्नि रूप है वह सब कुछ करने में समर्थ है सब कष्टों से मुक्ति देने वाला तथा सम्पूर्ण मनोवांछित फल प्रदान करने वाला है उसके तीन दाने धारण करने से लाभ होता है।

(६) छः मुखो वाला रुद्राक्ष यदि दाहिनी बाह में उसे धारण किया जाये तो धारण करने वाला मनुष्य विद्याओं का स्वामी होता है और पापों से मुक्त हो जाता है यह विद्यार्थियों के लिए उत्तम है।

(७) सात मुख वाला रुद्राक्ष अनंग स्वरूप और अनंग नाम से ही प्रसिद्ध है उसको धारण करने से दरिद्र भी ऐश्वर्य शाली हो जाता है। सभी रोगों का नाश होता है।

(८) आठ मुख वाला रुद्राक्ष अष्ट मूर्ति भैरव रूप है। असत्य भाषण का पाप नष्ट करता है। उसको धारण करने से मनुष्य पूर्णायु होता है और मृत्यु के पश्चात् शूल धारी यक्ष हो जाता है।

(९) नौ मुख वाले रुद्राक्ष को भैरव का प्रतीक माना गया है अथवा नौ रूप धारण करने वाली माहेश्वरी दुर्गा उसकी अधिष्ठात्री देवी मानी गई है जो मनुष्य अपने बांये हाथ में इसको धारण करता है वह सर्वेश्वर हो जाता है।

(१०) दस मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् भगवान रूप है। उसको धारण करने से मनुष्य की

सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण हो जाती है वह भूत प्रेत बाधा तथा सभी प्रकार की बीमारियों को हरण करने वाला है।

(११) ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष रुद्र रूप है, उसको धारण करने से सर्वत्र विजयी होता है इसे पूजा गृह अथवा तिजोरी में मंगल कामना के लिए रखना लाभ दायक है यह सबको मोहित करने वाला है।

(१२) बारह मुख वाले रुद्राक्ष को केश प्रदेश में धारण करे, उसको धारण करने से मानो, मस्तक पर आदित्य विराजमान हो जाते हैं।

(१३) तेरह मुख वाला रुद्राक्ष विश्व देवों का स्वरूप है, उसको धारण करके, मनुष्य सम्पूर्ण अभिष्ठों को पाता है तथा सौभाग्य और मंगल लाभ प्राप्त करता है।

(१४) चौदह मुख वाला रुद्राक्ष परम शिव रूप है, उसे भक्ति पूर्वक मस्तक पर धारण करे, इससे समस्त पापों का नाश होता है। इस तरह मुखों के भेद से रुद्राक्ष के मुख्यतः चौदह भेद बताये गये हैं।

रुद्राक्ष धारण करने के मन्त्र निम्नलिखित रूप में है।

१–४–५–१०–१३ इन पाँचों का मन्त्र—ॐ ह्रीं नमः हैं।

२–१४ इन दोनों का मन्त्र—ॐ नमः। है।

३–इसका मन्त्र—क्लीं नमः। है।

६–६–११ इन तीनों का मन्त्र—ॐ ह्रीं हूं नमः। है।

७–८ इन दोनों का मन्त्र—ॐ हुं नमः। है।

१२–इसका मन्त्र—ॐ क्रौं क्षौं रौं नमः। है।

उपरोक्त चौदह ही मुखो वाले रुद्राक्षों को अपने अपने मन्त्र द्वारा धारण करने का विधान है रुद्राक्ष की माला धारण करने वाले पुरुष को देखकर भूत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी तथा द्रोहकारी राक्षस आदि सर्व दूर भाग जाते हैं।

एक मुखी रुद्राक्ष को साधने का मन्त्र :—

श्री गौतम गणपति जी को नमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एक मुखाय भगवते-ऽनुरूपाय सर्व युगेश्वराय त्रैलोक्य नाथाय सर्व काम फलं प्रदाय नमः।

विधि :—चैत्र शुक्ला अष्टमी को १०८ रक्त वर्ण के पुष्पों से पूजन करे। धूप, दीप, प्रसाद करे केशर चन्दन कपूर का तिलक करे। प्रत्येक पुष्प पर एक मन्त्र पढ़े। फिर इसी तरह

दीपावली के दिन करे तत्पश्चात् तिजोरी में रख दे या सोने में मड़ा कर गले में धारण करे।

जिनमें एक मुखी रुद्राक्ष जिसका मूल्य ५–१० हजार रुपये तक भी हो जाता है। विशेष रूप से नकली आते हैं। लेते समय सावधानी रखनी चाहिए। किसी विज्ञ व्यक्ति से पहचान करवा कर लेना चाहिये।

वहेड़ा कल्प

शनिवार की संध्या को वृक्ष के पास जावे, "मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" इस मन्त्र का उच्चारण करे, चन्दन, चांवल, पुष्प, नैवेद्य धूप, दीप द्वारा उसका पूजन करे व मोली बांध कर आ जावे। दूसरे रोज रविवार पुष्य नक्षत्र के दिन सूर्योदय से पहले जावे और निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर मूल व पत्ते ले आवे।

मन्त्र :—ॐ नमः सर्व भूताधिपतये ग्रस शोषय भैरवोऽवाज्ञापयति स्वाहा।

घर पर लाकर पंचामृत से धोकर अच्छी तरह स्थापना कर, उपरोक्त मन्त्र से फिर अभिमन्त्रित करना चाहिये तत्पश्चात् प्रयोग में लाया जा सकता है।

जैसे : (१) दाहिनी जांघ के नीचे रखकर भोजन करे, तो अपनी खुराक से बीस गुना ज्यादा भोजन कर सकता है।

(२) तिजोरी में रखे तो अटूट भंडार रहे।

निर्गुण्डी कल्प

विधि : रात्रि के समय अकेला निर्गुण्डी वृक्ष के पास जावे और २१ प्रदक्षिणा निम्नलिखित मन्त्र को बोलते हुये सात रात्रि तक बराबर दे, तो वृक्ष सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र :—ॐ नमो गौतम गणेशाय कुबेरये कद्रि के फट् स्वाहा।

तत्पश्चात् सातवें रोज वृक्ष का पंचांग ले आवे। फिर धूप दीप से पूजन करे। पंचामृत से धो कर शुद्ध जगह रखकर उपरोक्त मन्त्र की एक माला से अभिमन्त्रित कर निम्नलिखित प्रयोगों से काम ले

जैसे :—(१) पुष्य नक्षत्र में निर्गुण्डी और सफेद सरसों, दुकान के द्वार पर रखी जाये, तो अच्छा क्रय विक्रय होता है।

(२) दुध की आंख का चूर्ण, जीरे का चूर्ण सम भाग आठ दिन तक सेवन करने से हर प्रकार का ज्वर दूर हो जाता है।

(३) एक महीने तक सेवन करने से भूमिगत द्रव्य दिखाई देता है।

(४) चालीस दिन तक सेवन करने से आयुष्य में वृद्धि होती है।

(५) पचास दिन तक सेवन करने से शरीर में बल अत्यन्त बढ़ता है। मृत्यु पर्यन्त निरोग रहता है इसका सेवन करते समय हल्का भोजन, खिचड़ी आदि खाना चाहिये।

हाथा जोड़ी कल्प

शुभ दिन शुभ योग में लें, और निम्नलिखित मन्त्र का १२५०० जाप करके इसको सिद्ध कर ले।

मन्त्र :—ॐ किलि किलि स्वाहा।

योग :—(१) किसी भी व्यक्ति से बातें करने में साथ रखे, तो बात माने।

(२) जिसको भी वश करना हो उसका नाम लेकर जाप करे तो इसके प्रभाव से वह व्यक्ति वशीभूत होगा।

(३) प्रयोग के बाद चांदी की डिबिया में सिन्दूर के साथ रखे।

विजया कल्प

इसका भिन्न भिन्न मास में भिन्न भिन्न अनुपान से सेवन करने से अलग अलग फल हैं जो निम्न प्रकार से हैं :—

१ चैत्र मास में पान के साथ खाने से पंडित बने।

२ वैशाख मास में अकलकरा के साथ खाने से जहर नहीं चढ़ेगा।

३ ज्येष्ठ मास में नींबू से खाने से, तांबे के से रंग का शरीर हो।

४ आषाढ़ मास में चित्र बल से खाने से, केश काला हो।

५ श्रावण मास में शिवलिंगी से खाने से, बलवान बने।

६ भाद्र मास में रुद्रवंती से खाने से, सबका प्रिय होता है।

७ आश्विन मास में माल कांगनी से, खाने से असरी उतरे स्वस्थ हो।

८ कार्तिक मास में बकरी के दूध के साथ खाने से, संभोग शक्ति बढ़े।

९ मार्ग शीर्ष मास में गाय के घृत के साथ खाने से, दृष्टि दोष मिटे।

१० पोष मास में तिलों के साथ खाने से जल के भीतर की वस्तु भी दृष्टि गोचर हो
११ माघ मास में मोथा की जड़ के साथ खाने से शक्तिशाली हो।
१२ फाल्गुन मास में आंवला के साथ खाने से पैदल यात्रा की शक्ति बढ़े।

यक्षिणी कल्प

(१) विचित्रा (२) विभ्रमा (३) विशाला (४) सुलोचना (५) माला (६) मदना (७) धूम्रा (हंसनी) (८) मानिनी (९) शतपत्रिका (१०) मेखला (११) विकला (१२) लक्ष्मी (१३) काल कर्णी (१४) महाभय (१५) माहिन्द्रीका (१६) श्मसानी (१७) वट यक्षिणी (१८) चन्द्रिका (१९) चक्रपाली (घंटा कणि) (२०) भीषणा (२१) जनरंजिका (२२) विशाला (२३) शोभना तथा (२४) शंखिनी।

विचित्रा—मन्त्र :—ऐं विचित्रे विचित्र रूपे सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि :—वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करने से, विचित्रा नामक यक्षिणी सिद्धि होती है।
प्राप्ति :— अजरामरत्व का वरदान देती है।

विभ्रमा—मन्त्र :—ॐ ह्रीं भर भर स्वाहा।

विधि :—एक लाख जाप करे तथा तीन कोनों का यज्ञ कुंड बनाकर उसमें दुग्ध, घृत व मधु से दशांस हवन करे तो विभ्रमा नामक यक्षिणी सिद्ध होती है।
प्राप्ति :— साधक के स्त्री रूप में रहती है तथा चिंतित अर्थ देती है।

विशाला—मन्त्र :—ऐं विशाले ह्रीं ह्रीं क्लीं एहि एहि ह्रां विभ्रम भुये स्वाहा।

विधि :—श्मसान में दो लाख जाप करे। गुग्गुल व घृत का दशांग हवन करे।
प्राप्ति :— साधक के स्त्री के रूप में रहे। ५०० व्यक्तियों तक का भोजन दे। साधक अन्य स्त्री के साथ संगम न करे।

सुलोचना—मन्त्र :—ॐ लं लं सुलोचने सिद्धं देहि-देहि स्वाहा।

विधि :—पर्वत पर या नदी के किनारे तीन लाख जाप करें। घृत से दशांस हवन करे, तो सुलोचना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।
प्राप्ति :—आकाश गामिनी दो पादुकाएं भेंट करें जिससे जहाँ चाहे जा सके।

मदना—मन्त्र :—ऐं मदने मदन विटंबिनी आत्मीय मम देहि २ श्रीं स्वाहा।

विधि :—राज द्वार पर एक लाख जाप करे तथा जाति पुष्प व दूध से दशांस हवन करे तो मदना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—एक गुटिका भेंट करे, जिसे मुंह में रखने से अदृश्य हो जाने की शक्ति प्राप्ति होती है।

मानिनी—मन्त्र :—ऐं मानिनी ह्रीं ऐहि-एहि सुन्दरि हस-हस समीह में सगमकं स्वाहा।

विधि :—जहाँ चौपाये जानवर रहैं। वहाँ बैठकर १,२५,००० जाप करे व लाल फूल व तीन मधुर वस्तुओं से दशांस होम करें, तो मानिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—साधक के पास स्त्री रूप में आकर उससे संभोग करें। उसके बाद एक तलवार भेंट दें। जिससे वह विद्याधर बनने की शक्ति प्राप्त करें।

हंसिनी—मन्त्र :—हंसिनी हंसयति क्लीं स्वाहा।

विधि :—नगर द्वार पर एक लाख जाप करें व कमल पत्र से दशांस हवन करें तो हंसिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—साधक को अंजन भेंट करें, जिससे पृथ्वी के अन्दर की वस्तुयें देखी जा सके।

शतपत्रिका—मन्त्र :—शतपत्रिके ह्रां ह्रीं ध्वीं स्वाहा।

विधि :—वट वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करें व घृत से दशांस हवन करे, तो शतपत्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—पृथ्वी में गड़े खजाने को बताये।

मेखला —मन्त्र :—हं मम मेखले ग ग ह्रीं स्वाहा।

विधि :—पलाश वृक्ष के नीचे १४ दिन तक जाप करें, तो मेखला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—प्रतिदिन ५०० रुपये तक भेंट दे।

विकला—मन्त्र :—विकले ऐं ह्रीं श्रीं हं स्वाहा।

विधि :—घर में तीन मास तक जाप करे, तो विकला नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—अणिमा (छोटा होना) आदि विद्या दे।

लक्ष्मी —मन्त्र :—ऐं कमले कमल धारिणी हंस स्वाहा।

विधि :—लाल कनेर के फूलों से एक लाख जाप करें। कुंड में गग्गुल से दशांश हवन करें। इससे लक्ष्मी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—पांच विद्या दे तथा मनवांछित धन दे।

कालकर्णि—मन्त्र :—क्लौं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा।

विधि : ब्रह्म वृक्ष के नीचे एक लाख जाप करें, मधु-मिश्रित दशांश हवन करें, तो कालकर्णि नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति : –सैन्य स्तंभन, अग्नि-स्तंभन, मधु-स्तंभन तथा गर्भ-स्तंभन की विद्या दे।

महाभय—मन्त्र :—ह्रीं महाभय एहि स्वाहा।

विधि :— श्मशान में जहाँ मुर्दा जलाया गया हो, वहाँ बैठकर एक लाख जाप करे तो महाभय नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :— [illegible] दे, [illegible] दूर हो जायें।

माहिन्द्री—मन्त्र—माहिन्द्री कुल-कुल चुल-चुल स्वाहा।

विधि :—इन्द्र धनुष के उदय के समय निर्गुण्डी वृक्ष के नीचे बैठ कर १२,००० जाप करें, तो माहिन्द्री नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—आकाश गामिनी, पाताल गामिनी, नगर प्रवेश, वचन सिद्ध, देव, भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, वेताल, सोटिंग, आदि को दूर करने की शक्ति दे।

श्मसानी मन्त्र :—ह्रां ह्रीं स्रु: श्मशान वासिनी स्वाहा।

विधि :- श्मशान में नग्न हो कर ४ लाख जाप करें, तो श्मसानी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—एक पट्ट दे, जिससे अदृश्य होकर तीनों लोकों में घूम सकें।

वट्यक्षिणी मन्त्र :—ऐं कपालिनी ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं हंस हम्ब्लीं फुट् स्वाहा।

विधि :— वट वृक्ष के नीचे बैठ कर चांदनी रात में तीन लाख जाप करे, तो वट नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—साधक की स्त्री के रूप में रहकर वस्त्र, अलंकार, स्वर्ण, गन्ध व पुष्प आदि दे।

चन्द्रिका मन्त्र : ॐ नमो भगवती चन्द्रिकाय स्वाहा।

विधि :—शुक्ल पक्ष की रात्रि में एक लाख जाप करें, तो चन्द्रिका नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति : अमृत रसायन दे, जिससे हजार वर्ष तक जीवित रहने की शक्ति प्राप्त हो।

घंटाकर्णि मन्त्र :—ऐं घंटे पुर क्षोभय राजा नाम क्षोभय क्षोभय भगवती गंभीर: स्वरग्लौं स्वाहा।

विधि :— बजते हुये घण्टे के साथ बीस हजार जाप करें, तो घंटाकर्णि यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति:— इतनी शक्ति दे कि पूरे नगर को भयभीत कर सकें।

भोक्षणा : जनरंजिका विशाला।

मन्त्र :—भीषणा क्षपेत माता छिते चिरं जीवितं कर्मध्या, साधकेन भगिन्या जन-रंगिनी कालोंजन रंगि के स्वाहा ।

विधि :—एक लाख जाप से भीषणा सिद्ध हो जायेगी। उसी के सिद्ध होने से जनरंजिका सिद्ध हो जायेगी। ५० हजार और अधिक जाप से विशाला सिद्ध हो जायेगी।

प्राप्ति : विशाला स्त्री के समान तथा जनरंजिका, दासी के समान रहेगी तथा भीषणा इन दोनों के पांच की स्थिति में रहेगी।

शोभना मन्त्र :—ॐ अशोक पल्लवा काटकर तले श्रीं क्षः स्वाहा ।

विधि :—लाल वस्त्र व माला से तीनों समय १४ दिन तक जाप करें, तो शोभना नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—साधक की स्त्री के समान रहेगी।

शंखिनी मन्त्र :—ॐ शंख धारिणी शंखा भरणे ह्रां ह्रीं क्लीं ग्लीं श्रीं स्वाहा ।

विधि : सूर्योदय के समय शंख माला से १० हजार जाप करें, कनेर के फूल, सफेद गाय के घृत तथा आठ प्रकार के धान्य सहित दशांश हवन करे, तो शंखिनी नामक यक्षिणी सिद्ध हो।

प्राप्ति :—अन्न व पाँच रुपये प्रतिदिन दें।

रत्न, उपभोग, फल व विधि

भारत में भिन्न २ ग्रहों की दशा में भिन्न भिन्न रत्नों को धारण करने का विधान है। इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें विशेष रूप से ज्ञातव्य हैं।

माणिक्य (मानिक) कौन धारण करें :—माणिक्य सूर्य का रत्न है। यदि किसी के जन्म के समय सूर्य अनिष्टकारी हो तो उसे माणिक्य धारण करना चाहिये।

धारण विधि :—कम से कम ३ रत्ती का माणिक्य होना चाहिये। अपने जन्म मास की १, ६, १० या २८ वीं तारीख को या रविवार को प्रातःकाल ग्रीवा, भुजा, या अंगुली में इसे धारण किया जाता है। लालडी (सूर्य मणि) को भी चांदी में जड़वाकर रविवार को मध्यान्ह में धारण किया जाता है।

माणिक्य को धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

मोती कौन धारण करें :— मोती चन्द्रमा का रत्न है। यदि किसी को जन्म के समय चन्द्रमा निर्बल है तो उसे मोती धारण करना चाहिये।

धारण विधि :—२, ४, ६, ११ रत्ती का मोती होना चाहिये। ७ या ८ रत्ती का मोती नहीं पहनना चाहिये। मोती को चांदी में जड़वा कर शुक्ल पक्ष, सोमवार को संध्या के समय ग्रीवा, भुजा, या अंगुली में धारण करना चाहिये। इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय

महते ज्येष्ठाय महते जान राज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय,

इम मनुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रमष्यै विष एष वोऽमी

राजा सोमोऽस्मांक ब्राह्मणानां राजा।

मूंगा कौन धारण करें :—मूंगा मंगल ग्रह का रत्न है। अतः मंगल ग्रह की दशा में इसे धारण करना चाहिये।

धारण विधि :— जन्म कुंडली में मंगल ग्रह ४, ८ या १२ वें स्थान पर हो तो ८ रत्ती का मूंगा, सोने की अंगूठी में पहनना चाहिये। चन्द्र मंगल के योग में चांदी में, मूंगा जड़वाकर पहनना चाहिये। ५ या १४ रत्ती का मूंगा कभी नहीं होना चाहिये। मंगलवार के दिन सूर्योदय से एक घंटा पश्चात् ग्रीवा, भुजा या तीसरी अंगुली में इसे धारण करना चाहिये।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ अग्निमूंर्द्धा दिवः ककुत्पत्तिः पृथिव्या अयम्।

अपां रेतांसि जिन्वति।

पन्ना कौन धारण करें :—पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। अतः बुध की दशा में ५ केरेट का पन्ना धारण करना चाहिये।

धारण विधि :—पन्ने को स्वर्ण को में जड़वाकर अपने जन्म मास की ५, १४ या २३ तारीखको या बुधवार के दिन सूर्योदय के दो घंटे पश्चात् ग्रीवा, भुजा, या मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिते।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्व मिष्टापूर्त संसृजेथामयं च । अस्मि-न्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।

पुखराज कौन धारण करें :—पुखराज गुरु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। गुरु की दशा में पुखराज धारण करना चाहिये।

धारण करने की विधि :—७ या १२ कैरट का पीला पुखराज सोने की अंगुठी में जड़वाकर गुरुवार को सायं सूर्यास्त से एक घंटे पूर्व ग्रीवा, भुजा या तीसरी अंगुली में धारण करना चाहिये। ६, ११, १५ रत्ती का पुखराज कभी धारण नहीं करना चाहिये।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ बृहस्ते अति यदिर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवश ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नीलम कौन धारण करें :—नीलम शनि ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। शनि की दशा में नीलम धारण करना चाहिये।

धारण विधि :—४ या ७ रत्ती का नीलम धारण करना चाहिए। शनिवार को सूर्योदय से दो घंटे पहले से [illegible] मिनट बाद तक इसे एक नीले कपड़े में बांध कर भुजा पर धारण कर, तीन दिन परीक्षा करनी चाहिये यदि अनुकूल सिद्ध हो, तो धारण किये रहना चाहिये। [illegible] धारण करने से यह अपनी शक्ति प्रदान करता है।

इसे धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु, पीतये शंयो रभिस्रवन्तु नः ।

गोमेद कौन धारण करें :—गोमेद, राहु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। राहु की दशा में इसको धारण करने से लाभ होता है।

धारण विधि :—गोमेद ६, ११ या १३ कैरट का होना चाहिये। ७, १० या १६ रत्ती का कभी नहीं होना चाहिये। इसे धारण करने का समय सायंकाल के अनन्तर दो घंटे रात तक है।

गोमेद को धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदा वृधः सखा कया शचिष्ठया वृता।

लहसुनिया कौन धारण करें :—लहसुनिया, केतु ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। केतु की दशा में इसे धारण करना लाभ प्रद है।

धारण विधि :—३, ५ या ७ कैरट का लहसुनिया धारण करना चाहिये। २, ४, ११ या १३ रत्ती का निषिध है। इसको चांदी में जड़वाकर अर्द्ध रात्रि में धारण करना चाहिये।

लहसुनिया को धारण करने का निम्नांकित मन्त्र है :—

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्या अपेषसे। समुषद्भिरजायथाः।

॥ ० ॥

श्वेतार्क कल्प

विधि :—शनिवार के दिन वृक्ष के पास न्यौता देने जाये तो सर्वप्रथम 'मम कार्यं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा" यह मन्त्र वृक्ष के सामने हाथ जोड़कर बोले और चंदन, चांवल, पुष्प, नैवेद्य से पूजन करे, धूप दे और मोली बांधकर आ जाये। दूसरे रोज रवि पुष्य नक्षत्र को सुबह से पहले २ वृक्ष के पास नहा धोकर शुद्ध वस्त्र पहनकर जावें और निम्न मन्त्र बोलकर वृक्ष की जड़ को घर ले आवे। जड़ पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके लेनी चाहिये।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः ॐ संजु स्वाहा।

इस मन्त्र से मूल को लाकर पंचामृत से धोकर ऊंचे व शुद्ध स्थान पर रख दे, तत्पश्चात् पुष्य नक्षत्र रहते उस जड़ से भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति बनावे व निम्नलिखित मन्त्र से पूजा करे। इससे श्री गौतम गणेशजी की मूर्ति भी बनाई जाती है।

मन्त्र :—ॐ नमो भगवति शिव चक्रे ! मालिनी स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर फिर किसी भी कार्यवश साथ में लेकर जायें, तो अवश्य सफल हो इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें और ज्ञातव्य है।

(१) जहां सफेद आक होता है कहते हैं कि वहां आसपास गडा हुआ धन होना चाहिए।

(२) सातवीं ग्रन्थि में ऐसी गांठ पड़ती है कि उससे गणेश जी कि सूंडवाली आकृति बनती है। यदि दक्षिणावर्ती सूंडवाली आकृति के श्री गणेश मिल जाये, तो बहुत चमत्कारी होती है।

(३) पुरुष के दाहिने हाथ और स्त्री के बांये हाथ में इसे बांधने से सौभाग्य व लाभ होता है। ऐसा माना जाता है।

(४) वंध्या [illegible] की कमर में बांधने से संतान की प्राप्ति होती है।

(५) मूल को ठण्डे पानी में घिसकर लगाने से बिच्छू आदि का जहर व हर प्रकार का जहर उतरता है।

(६) मूल में गोरोचन मिलाकर गुटिका कर तिलक करे तो सर्वजन वश हो।

(७) यह मूल, वच, हल्दी तीनों बराबर मिलाकर तिलक करें, तो अधिकारी वश में हो।

(८) मूल, गोरोचन, मैंनासिल भृंगराज चारों मिलाकर तिलक करे, तो अधिकारी वश में हो।

(९) मूल, हल्दी, कुंकुम (लाख कुरी) इनरक्त से भोज पत्र पर लिखकर हाथ में बांधे, सर्वजन वश हो।

(१०) मूल, वीर्य भृंगराज, मिलाकर अंजन करे, तो अदृश्य हो।

(११) मूल का मेघा नक्षत्र में कस्तूरी में अंजन करे, तो अदृश्य हो।

(१२) मूल का वच के साथ घिसकर हाथ के लेप करे तो हाथ नहीं जले।

(१३) मूल को छाया में सुखाकर, चूर्ण कर घृत के साथ आधा रत्ती की मात्रा में खाने से भूत, प्रेत दूर होते हैं। स्मरण शक्ति बढ़ती है। देह की कांति कामदेव के समान हो जाती है। ४० दिन थोड़ी मात्रा में सेवन करे। ऊष्णता का अनुभव हो, तो छोड़ दें।

पंचांग :– फल, फूल, जड़, पत्ते व छाल को पंचांग कहते हैं।

पंचमैल :– कान, दांत, आंख, जिह्वा, और स्ववीर्य को पांच प्रकार का मैल कहते हैं।

मूल :– किसी भी पेड़ की जड़ को मूल कहते हैं।

बंदा :—एक वृक्ष पर दूसरा वृक्ष निकल आता है। उसे बंदा कहते हैं। उन वृक्ष की गांठ लेना चाहिये।

अपनी मा का नाम कागज पर लिखकर, मस्तक के नीचे दबाकर सोने से स्वप्न दोष कभी नहीं होता है। और यह रोग मिट जाता है।

काले धतूरे की जड़ ६ मासा प्रमाण चूर्ण कर कमर में बांधने से, स्वप्न दोष कभी नहीं होता है और बवासीर रोग ठीक होता है।

ह्रीं कार कल्प

सवर्ण पार्श्वं लय मध्य सिद्ध मधिश्वरं भास्वर रूप भासम् ।

खन्डेन्दु बिन्दु स्फुट नाद शोभं, त्वां शक्ति बीज प्रमना प्रणौमि ॥१॥

अर्थ :—जिसके पार्श्व में (स) वर्ण है (ऐसा, 'ह') 'ल' और 'य' के मध्य में सिद्ध विराजमान है। ऐसा 'र' उसके अन्दर ई स्वर है जिसकी कान्ति देदिप्यमान सूर्य के जैसी है, और जो अर्थ चन्द्र (कल) बिन्दु और स्पष्ट नाद में शोभा पा रहा है। ऐसा यह शक्ति बीज है। मैं तुमको उल्हासपूर्वक मन में भावपूर्वक स्तुति करता हूं ॥१॥ नमन करता हूं।

ह्रीं कार मेकाक्षर मादि रूपं, मायाक्षरं कामद मादि मंत्रम् ।

त्रैलोक्य वर्ण परमेष्ठि बीज, विज्ञाः स्तुवन्तीशभवन्त मित्यम ॥२॥

अर्थ :—हे ईश ह्रीं कार आपको विद्वान पुरुष ह्रीं कार, एकाक्षरी, आदि रूप मायाक्षर कामद, आदि मन्त्र, त्रैलोक्य वर्ण और परमेष्ठि बीज, ऐसे विशेषणों से स्तुति, करते हैं।

शिष्यः सुशिक्षां सु गुरोर वाप्य, शुचिर्वशी धीर मनाश्च मौनी ।

तदात्म बीजस्य तनोतु जाप मुपांशु नित्यं विधिना विधिज्ञः ॥३॥

अर्थ :—सद्गुरु के पास पूर्ण आज्ञा प्राप्त करके, विधि को जानने वाले शिष्य को पवित्र होकर, सर्व इन्द्रियों को वश में कर पूर्ण रूप से, मन मे धैर्य धारण कर, मौन रखकर इस आत्म बीज ह्रीं कार का विधियुक्त उपांशु जाप नित्य करना चाहिये ॥३॥

विशेष —ह्रीं कार के जाप व ध्यान करने वाले को प्रथम गुरु से आज्ञा प्राप्त करना चाहिए। फिर स्वयं पूर्णरूपेण शुद्ध होकर धैर्यपूर्वक इन्द्रियों को वश में करता हुआ मौन से उपांशु जाप करे। जाप करने के पहले सकलीकरण करना परम आवश्यक है। यहां उपांशु जाप का अर्थ है कि बिना बोले मन्त्र पढ़ना, जिस में होंठ हिलते रहें। जाप १ लक्ष करना चाहिये। जाप करने का स्थान श्वेत खड़ी से रंगा हुआ मकान हो, सफेद ही कपड़ा हो, सफेद ही अन्न का भोजन करे, सफेद ही माला हो, जाप करने वाले को अपने शरीर में सफेद चंदन का विलेपन करना चाहिये। पक्ष भी शुक्ल हो, पहले एक ताम्र पत्र अथवा सोना, चाँदी या कांसे के ऊपर ह्रीं कार खुदवा ले, फिर ह्रीं

कार यंत्र का पंचामृत अभिषेक कर के, उत्तमोत्तम अष्ट द्रव्यों से पूजा करे, फिर ॐ ह्रीं नमः की आराधना शुरू करे। जाप करने वाले को एकासन अथवा उपवास करना जरूरी है। उपवास कृष्णपक्ष की अष्टमी वा चतुर्दशी को करके विद्या आराधना करे शुक्ल पक्ष में भी कर सकते हैं। षट् कर्मों के लिये कोष्टक को देख लेवें। उपवास करने वाले साधक को दस हजार जाप से भी विद्या सिद्ध हो जाती है। विद्या सिद्ध हो जाने के बाद इस माया बीज ह्रीं कार को कौन-कौन कार्य के लिये किस किस वर्ण का ध्यान करना चाहिये सो कहते हैं। ("सफेद रंग का ह्रीं" का ध्यान करने का फल")।

त्वांचिन्तयन् श्वेत करानुकारं, जोत्स्नामयीं पश्यतिया स्त्री लोकोत्मा।

(म) श्यन्ति तत्लक्षणतोऽनवद्य विद्या कला शान्तिक पौष्टिक कानि ॥४॥

अर्थ :—चन्द्रमा के समान उज्ज्वल ह्रीं का ध्यान करने वाले को सर्व विद्याए, सर्व कलाए और शांतिक पौष्टिक कर्म तत्क्षण सिद्ध हो जाते हैं। जो ह्रीं को तीनों लोक में प्रकाशमान होता हुआ ध्यान करता है। और शुक्लवर्ण का ध्यान करता हैं। उसकी विपत्ति का नाश होता है। अनेक रोगों का नाश, लक्ष्मी और सौभाग्य की प्राप्ति, बंधन से मुक्ति। नये काव्य की रचना शक्ति प्राप्त होती है। नगर में क्षोभ पैदा करना व सभा में क्षोभ पैदा करने की शक्ति और आज्ञा ऐशवर्यफल की प्राप्ति होती है ॥४॥

"रक्त ह्रीं कार के ध्यान का फल"

त्वामेव बालारुणमण्ड लाभं स्मृत्वा जगत् त्वत्कर जाल रुद्धोम्।

विलोक तेयः किल तस्य विश्व विश्वं भवेद्वश्यम वश्यमेव ॥५॥

अर्थ—हे ह्रीं कार तुम उदित हुए बाल सूर्य की कान्ति के समान अरुण हो। आपके अरुण मण्डल में सारा संसार विहित है। जो इस रूप में आपका ध्यान करता है उसके वश में समस्त संसार अवश्य हो जाता है। अन्य आचार्यों के मतानुसार लाल वर्ण के ह्रीं कार का ध्यान करने से संमोहन, आकर्षण और क्षोभ भी होता है ॥५॥ स्त्री आकर्षण के लिए स्त्री के योनि के मध्य में ध्यान करना।

पीतवर्णी ह्रीं कार के ध्यान का फल

यस्तप्त चामी कर चारु दीपं, पिङ्ग प्रभं त्वां कलयेत् समन्तात्।

सदा मुदा तस्य गृहे सहेलि, करोतिकेलि कमला चलाऽपि ॥६॥

अर्थ :—जो पीले कान्ति सहित तुमको तप्त सुवर्ण के समान सुन्दर सर्वत्र प्रकाशमान ध्यान करता है। उसके घर में चलायमान लक्ष्मी भी आनन्द और लीला सहित क्रिडा करती है। वह स्तंभन कार्य और शत्रु के मुख बन्धन में उत्तम कार्य करता है ॥६॥

'श्याम वर्ण ह्रीं के ध्यान का फल'

यश्यामल कज्जलमेचकाभ, त्वां वीक्षतेवा तुष धूम धूम्रम

विपक्ष पक्षः खलु तस्यवाना, ततोऽभ्रवद्या त्यचिरेण नाशम् ॥७॥

अर्थ :—जो साधक ह्रीं कार मायाबीज को काला काजल के समान श्याम वर्ण रूप अथवा छिलके के धुंआ के समान ध्यान करता है। उसके शत्रु समूह क्षण भर में नाश को प्राप्त हो जाते है। जैसे पवन से मेघ बिखर जाते है। निःसन्देह शत्रु को मरण प्राप्त करा देता है। और नील वर्ण का (ह्रीं) तुम्हारा ध्यान करने से विद्वेषण और उच्चाटन करता है ॥७॥

कुडली स्वरूप ह्रीं के ध्यान का स्वरूप

आधार कन्दोद्गत तन्तु सूक्ष्म लक्ष्यद्भेद ब्रह्म सरोज वासम्।

यो ध्यायति त्वां सर्व इन्दु बिम्बा मृतं स च स्यात् कवि सर्व भौमः ॥८॥

अर्थ : जो मूलधार कन्द में से निकलता हुआ तन्तु के समान सूक्ष्म सुषुम्ना नाडी में रहने वाले लक्ष्यों (चक्रों) को भेद कर ऊपर जाता हुआ अन्त में सहस्रार कमल में रह स्थिर हो कर वहाँ चन्द्रमा के बिम्ब के समान अमृत भर रहा हो ऐसा ह्रीं कार माया बीज का ध्यान करता है वह साधक कविओं में श्रेष्ठ चक्रवर्ति होता है ॥८॥

फल श्रुति षड् दर्शनि स्व स्व मतावलंबेः स्वे 'दैवते त (त्व) त्मय बीज मेव। ध्यात्वा तदाराधन वैभवेन. भवदे जेयः परिवारि वृन्दैः ॥९॥

अर्थ :—षड्दर्शन के जान कार अपने अपने इष्ट देवता ह्रीं कार बीज का ध्यान करके वे आराधना के वैभव से प्रविष्ट होकर वादिओं के समूह से अजेय बन जाते हैं। ऐसा इस माया बीज का अतिशय है।

किं मन्त्र यन्त्रै विविधागमोलैः दुःसाध्यसं
नीति फलाल्प लाभैः

सुसेव्यः वः (सद्यः सुसेव्यः) फलचिन्तितार्थाश्रिक प्रदश्च (त) सिन्नेत्व मेकः ॥१०॥

अर्थ :—साधक के हृदय में एक ह्रीं कार अगर विद्यमान है, तो अन्य यन्त्र मन्त्र जिनका कि अल्पफल हैं और दुःसाध्य है, ऐसे मन्त्रो अथवा यन्त्रों का क्या प्रयोजन है। अन्यत्र आगम में जिनका वर्णन है ॥१०॥

चौरारि-मारि-ग्रह-रोग, लूता भूतादि दोषा नल बन्ध नोत्थाः ।

भियः प्रभावात् तव दूर मेव नश्यन्ति पारीन्द्रखारि वेभा ॥११॥

अर्थ : जैसे वनराज सिंह की गर्जना से हाथी दूर भाग जाते हैं, वैसे ह्रीं कार तुम्हारे प्रभाव से चोर, शत्रु मारी, ग्रह, रोग लूता रोग तथा भूत, व्यन्तर, राक्षस, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी [illegible]

[illegible]

[illegible]

दुःखी सुखी दासः प्रभुः किं किं, न (त्व) [illegible] ॥१२॥

अर्थ :—चिन्तामणि समान तुम्हारे रूप का चिन्तन करने से क्या क्या प्राप्त नहीं होता ? जिसको पुत्र नहीं है उसको पुत्र की प्राप्ति होती है, जिसके पास लक्ष्मी नहीं है उसको लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। सेवक भी स्वामी बनता है दुःखी भी अत्यंत सुखी होता है ॥१२॥

विशेष—इस ह्रीं कार को साधक सालंबन ध्यान से निरालंबन ध्यान करे फिर निरालंबन ध्यान में से पराश्रित ध्यान करे, उसके बाद उल्टा पराश्रित ध्यान में से निरालंबन और निरालंबन में से सालंबन ध्यान करे, इस प्रकार ध्यान करने से अनेक सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। सलंबन बाह्य पर आदि आलंबन सहित ध्यान ॥ निरालंबन – बाह्य आलंबन बिना केवल मन के द्वारा ह्रींकार की आवृत्तिका ध्यान करना। पराश्रित ह्रीं कार से वाच्य ऐसे परमात्मा के गुणादिका ध्यान करना।

पुष्पादि जापामृतहोम पूजा, क्रिया धिकारः सकलोऽस्तुदूरे ।

य केवल ध्यायति बीज मेव, सौभाग्य लक्ष्मी वृणुंत स्वयंतम् ॥१३॥

अर्थ :—पुष्प वगैरह के जाप से क्या, घी के होम से भी क्या, पूजा वगैरह समस्त क्रियाओं का अधिकार दूर रहा, किन्तु केवल तुम्हारे बीज रूप ध्यान से समस्त सौभाग्य रूपी लक्ष्मी स्वयं वरण, करती है ॥१३॥

महिमा :—

त्वत्तोऽपि लोकः सु कृतार्थ काम, मोक्षान पुमर्भा श्चतुरो लभन्ते ।
यास्यन्ति याता अथ यान्तिये ते, श्रेय परं त्वंमहिमा लवः सः ॥१३॥

अर्थ :—तुम्हारे प्रभाव से लोक धर्म, अर्थ, काम और मो क्ष चार पुरुषार्थो की प्राप्ति करते हैं। जो मोक्ष का स्थान है उसको प्राप्त कर रहे हैं, कर गये है और आगे भी करेंगे। वे सब तुम्हारी महिमा का अंश मात्र है। क्योंकि एक ह्रीं कार माया बीज के अन्दर चौबीस तीर्थंकर, चौबिस यक्ष, चौबीस यक्षिणी, समाविष्ट है। ह्रींकार को सिद्ध परमेष्ठि वाचक भी कहा है, और इस ह्रीं कार में धरणेन्द्र पद्मावती पार्श्वनाथ प्रभू का भी वास है। मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक को ह्रीं कार का कैसे स्थान चाहिये सो बताते है।

वृक्ष, पर्वत, शिलाओं से रहित क्षीर समुद्र के समान जो सम्पूर्ण बाधाओं से रहित आनन्द दायक शांत अद्वितीय क्षीर से परिपूर्ण जैसे क्षीर का महासागर हो ऐसी इस पृथ्वी का चिंतवन करे। फिर ऐसी पृथ्वी के बीच अष्ट दल कमल, कमल दल पर ह्रीं कार उसके बीच कर्णिका में स्वयं मैं उज्ज्वल कान्तिमान पद्मासन लगा कर बैठा हूं ऐसा चिंतवन करे। फिर स्वयं को चतुर्मुख तीर्थंकर, के समान समवसरण सहित ध्यान करे, चारों गतियों का विच्छेद करने वाला सर्व कर्मो से रहित पद्मासन से बैठा हुआ श्वेत स्फटिक के समान शोभा को प्राप्त कर रहा हूं उसके बाद ब्रह्मरंघ्र में स्थापन किया हुआ स्फटिक के समान वर्णवाला ह्रीं कार के बीच अपनी आत्मा को बैठा हुआ देख फिर ह्रीं कार के प्रत्येक अंग से अमृत झर रहा है। और उस अमृत से मेरी आत्मा का सिंचन हो रहा है, ऐसा चिंतवन करे, ऐसा ध्यान करने से साधक तद भव मोक्ष सुख पा लेता है, अथवा तीन चार भव में नियम से मोक्ष पा लेता है।

विद्यामयः प्राक प्रणवं नमाऽन्ते, मध्येक (च) बीजनतु जगनपाति
तस्यैक वर्णा वितन्योतय वन्ध्मा, कामार्जु मी कामित केव विद्या ॥१४॥
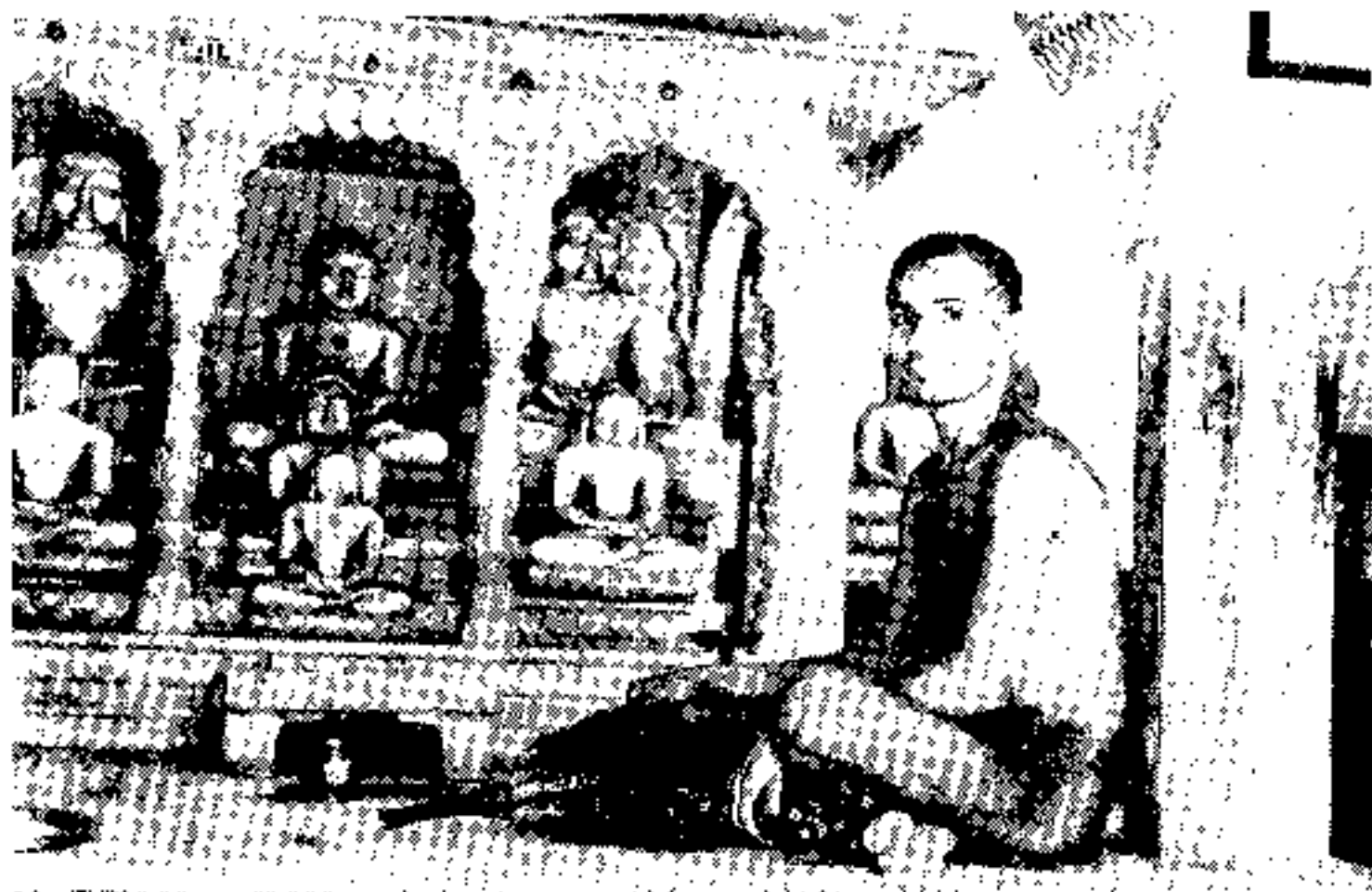
जयसिंहपुरा खोर (कालीखोह) के दिगम्बर जैन मन्दिर की मूल वेदी में—
१०८ आचार्य गणधर श्री कुन्थुसागर जी महाराज

[illegible]

मार्गदर्शक : आचार्य श्री सुविधिसागर
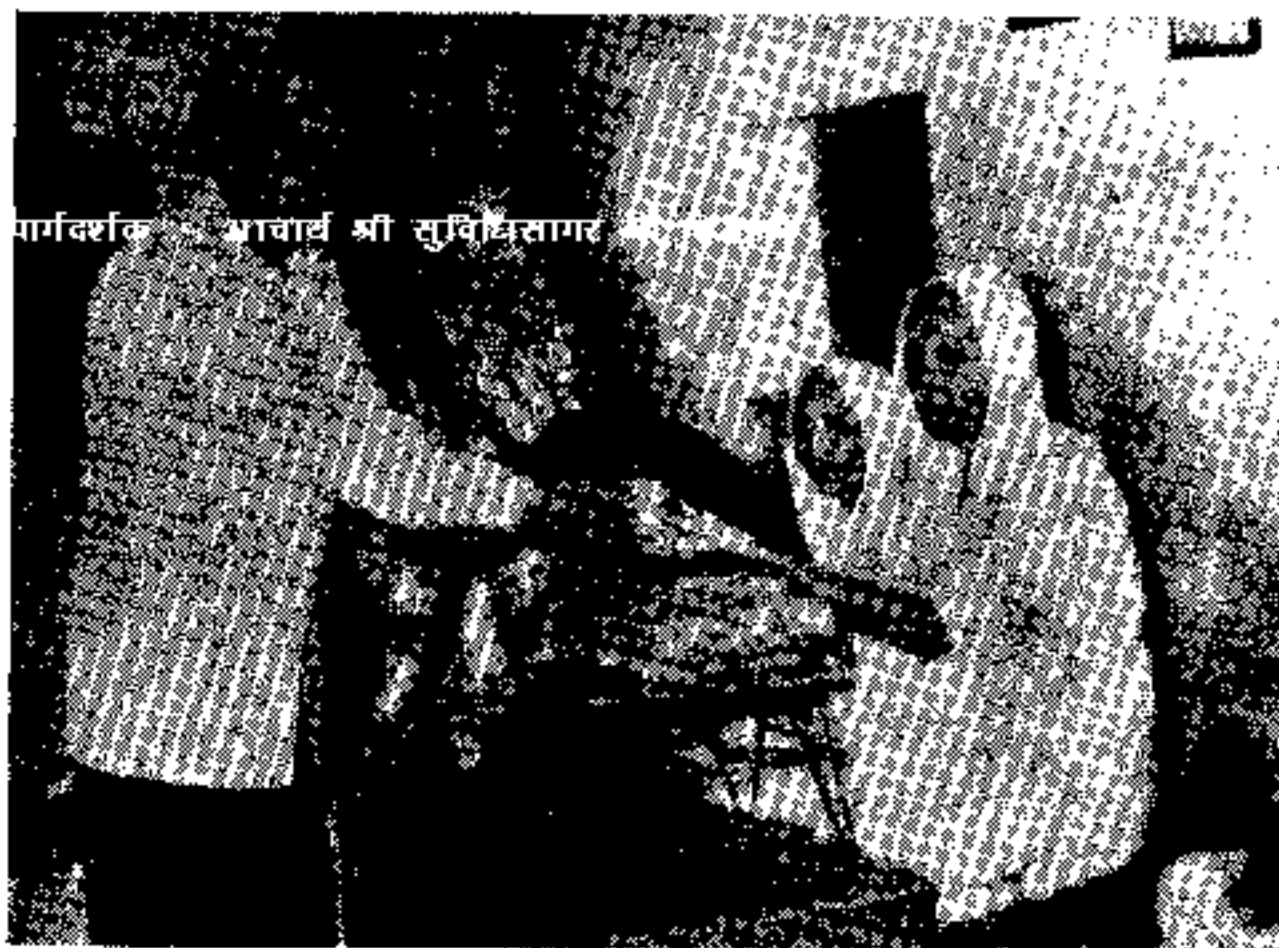
जयपुर निवासी गुरु भक्त संगीताचार्य श्री शान्तिकुमार गंगवाल आचार्य श्री के चातुर्मास अकलूज जिला सोलापुर (महाराष्ट्र) में माताजी के केश लोंचन समारोह के बाद अपने परिवार जनों के साथ पिच्छी व ग्रन्थ भेंट करते हुए ।

अर्थ :—जो साधक पहले प्रणव "ॐ" और अन्त में "नमः" मध्य में अनुपम बीज "ह्रीं" कार का बार बार जाप करता है, उसके सर्व मनवांछित कार्य एक वर्नवाही अवश्य और कामधेनु के समान ह्रीं कार विद्या विस्तारनी है, इसको एकाक्षरी विद्या कहते हैं ॐ ह्रीं नमः ।१५।

नोट :—ध्यान रहे कि शुक्ल ध्यान का ह्रीं को छोड़ कर बाकी पिली, लाल, काली, जो भी वर्ण का ध्यान करने का आया है, उस उस वर्ण के ह्रीं, को शत्रु के हृदय में ध्यान करे मारण कर्म के लिये शत्रु के नाभि में ध्यान करें।

मालामिमा स्तुतिमयीं सुगुणां त्रिलोकी ।

बीजस्य यः स्वहृदये निधयेत् क्रमात सः ।।

अष्टाङ्ग सिद्धिर वशा लुठतोह तस्य

नित्यं महोत्सव पदं लभते क्रमात् सः ।।१६।।

अर्थ :—जो मनुष्य त्रैलोक्य बीज का अच्छे गुण वाली स्तुति रूपी इस रूपी इस माला को तीनों काल अपने हृदय में धारण करता है, उसके गोद में आठों सिद्धियां अवश्य बन कर नित्य ही आती है और क्रम से मोक्ष पद की प्राप्ति कराती है।१६।

सोना चांदी बनाने के तन्त्र

(१) स्वर्ण माक्षिक ८ मासा

पारा ४ मासा

तांबा ४ मासा

सुहागा ४ मासा

इन सबको मिला कर 'कुप्पी' में डाले 'फिर अग्नि में गलावे' तो शुद्ध चांदी हो।

(२) गंधक को ओटा कर (गर्म कर) प्याज के रस में भुजावे १०८ बार, फिर उस गंधक को चांदी के साथ गलावे तो सोना होता है।

(३) हिंगुल शुद्ध १८ तोला, अभ्रक ३२ तोला को एकत्र करके रुद्रवन्ति के रस में घोट कर, चांदी के पत्ते पर लेप करके पुट देवे, तो सोना हो।

(४) भांग भीज एक जात की जड़ी होती है। उसके पत्तों की लुगदी में तांबा रख कर अग्नि

नागण होइ सुवर्णं धमंत पुण्ण जोगेण ।।

समयसार जयसेनाचार्य की टीका में ।

अर्थ :—नागफणी की जड़ लेना, चांदी गलाइ हुई लेना, उसमें सिन्दूर मिला कर घोटना फिर उस द्रव्य को अग्नि में धोंकना तो सोना बनता है, यदि पुण्ययोग हुआ तो।

(६) शुद्ध हिंगुल का एक तोले का डला लेकर उस हिंगुल के डले को गोल बेंगन काला वाला को चीर कर उसमें उस हींगुल को रख कर उपर से कपड़ा लपेट कर, फिर मिट्टी का उस बेंगन पर खूब गाढ़ा लेप करे, फिर उस बेंगन को जंगली कंडों के अन्दर रख कर जलावे, जब कण्डों की अग्नि जल कर शांत हो जावे तब उस बेंगन को निकाले। बेंगन के अन्दर से उस हिंगुल के डले को निकाल लेवे। इसी तरह क्रमशः १०८ बेंगन में उस हिंगुल के डले को फूंके। यह रसायन तैयार हो गई। इस रसायन में से एक रत्ती लेकर एक तोला तांबे के साथ मिला कर कुप्पी में गलावे तो १ तोला सोना तैयार हो जायगा, लेकिन णमोकार मन्त्र का सतत जप करना होगा ।।

(७) लोहे के लुपा खेउधा चेपक्का सेर दुधाचेमा लोल सारख त्याल सेराचा दुधत्या भर मिलउन संख्या समोल तोले ६ आंत घालणें वोंडयाची चूल करणे वर लोट के ठेव ने शनसेनी अग्नि देवी रुचिक आटवने मगपुरे करनो म्हण जे कल्क झाला जतन ठेवणे तोला १ लोंथा चेपानी करणे रसफिरो लागलाम्हण जे सामर्थ्ये अर्द्ध मासा कलं कणे काटकाणे समरस करणे हालवने भुसीस वमकव ने से नाचे मुसील बोलने घंड भा ल्यावर काढ़ने म्हण जे शुद्ध धवल होय ।।इति।।

(८) कई होय अर्द्ध मेला होय मागुनो पानी कर ने एक तोल मास दाने तोले रूप मिलविणे धवल शुद्ध होय हा एक तोल्या चा अनुपान।

(९) लाल फूल बटो लागान बहुत होय है रानोरान जड़मूल का किया थाना। नाथ कहे कथील हुआ रूपा बटोल पान सफेद फूले येफें ल.सब ही रात एक थेंब से पारा मारू नाथ कहे कंचन रूप।

(१०) जस्त तोला १ पांढ्या व सूच्या भावना सात देणे मग पत्र करणे कंटक वेधनी ताडन रसान सिजवे म्हण जे एक फुट जाले मागु ते लाडन सिजवने म्हण जे पुटि र भाले मागुते लाडन एसे पुट सात देणे मगपुरे करणे मग एक मुसीत घालोन कोलसा वर ढेऊन कोल से पेटवा वे त्याचे पानी करणे रस बरापि घलला म्हण जे मग कांही थोड़ी

बहुत मूस थोड़ी बहुत थंड झाल्या वर रस जो मुसीत हने सरल तो त्या मध्ये पारा तोला १ में लवने पार। व जस्त तत क्षण एक होनी मग ते खला मध्ये बारीक करून ठेवणे म्हण जे कलंक सिद्ध साध्य झाला एक करून ठेवणे तांब पत्र कंटक वेधनी करून मग रूई वेताना चा रस काढुन हे वण मग तांम्र पत्र लाऊन रूई रसात सिजवने एसेपुट ७ देणे मगपुरे करणे मग श्वेत झालीया एक मुसीत घालणे त्याचे पानी करणे ।। इति ।।

शुल्वस्य भाग श्रतय नेकैकं नाग वेगयो: ।। ११ ।।
समावर्त्यं विचूरायार्थं सिद्ध चूर्णेन पूर्ववत् ।
नागमेक द्वयंशु ल्वंषद् शुल्वं चैकं पन्नगं ।। १२ ।।
रूध्वाधियातंतु तच्चू हेमगेरिकं ।। १३ ।।
रूध्वाध्मातं पुनश्चूर्णं सिद्ध चूर्णे न पूर्ववत् ।
गंध केनहृतं शुल्वं माक्षि कं कंच समं समं ।। १४ ।।
हंस पाच्यि श्रक द्रावै दिन मेकं विमर्दयेत् ।
तेनैव तार पत्राणिलिप्त्वा रूध्वा पुटेप चेत् ।। १५ ।।
समुद्ध पुटा त्पश्चा त्कृत्वा पत्राणि लेपयेत ।
पूर्वक ल्केन रूध्वाथपुटं दत्वा समुद्धरेत् ।। १६ ।।
इत्येवं सप्तधा कुर्यात्तार मायाति कांचनम् । इति ।
राजावर्त्तं च पारापत मलं समं ।। १७ ।।
असित्यसेन कुरू तेस्वर्ण रौप्यं च पूर्ववत् । इति ।
रसं शिरीष पुष्पस्य आर्द्र कस्य रसं समं ।। १७ ।।
भावयेत्सम वाराणि राजावर्तसु चूर्णितं ।
तेनैव शत स्वर्णं तार द्रुतं समं ।। १८ ।।
वेधयेत् सर्व मांशेन वत्सिद्धं दिव्यं भवति कांच नं । इति ।
कुंकुमं विमलं ताप्यं रस कंद रदं शिला ।। २० ।।
राजावर्तं प्रवालं च राजी गैरिक टंकणं ।
सैंधवं चूर्ण ये त्तुल्यंम शीत्यंशेन वेधयेत ।
काच माच्या द्रवैः समं ।। २१ ।।

घर्मं मर्दयेत् तेऽच्छा आरण्योत्पल कं पुटेत् ।
इत्येवं तुत्रिधा कुर्यान्मर्दितं पुट पाचितं ।। २२ ।।
तद्धं हिंगुलं शुद्ध क्षिप्त्वा तस्मिन्वि मर्दये रकांजि कं घर्मि मात्रंहि पुटे

नै केन पाचयेत् ।। २३ ।।
अस्य कल्कस्य भागंकं भागा श्चत्वारिहाटकं ।
अंधमुर्वाग तंध्मातं समावाय विचूर्णयेत् ।। २४ ।।
पूर्ववत्पूर्व वत्कल्केन रुध्वा दंयं पुटे पुनः ।
अनेन षोडशां शेनसित वर्णं वेध येत ।। २५ ।।
सेचये रकांगुणी तैलं रक्त वर्णन भावितं ।
पुनर्वेध्य पुनः सेच्य षोडशांशेन बुद्धिमानं ।। २६ ।।
एवं वार त्रयं वेध्यं दिव्यं भवति कांच नं । इति ।
ताम्र तुल्य स्य नागस्य शोध येत् ध्यमनेन च ।
ताम तुल्यं शुद्ध हेम समा वर्त्य लिपत्रयेत् ।। ३२ ।।
इष्टि का तुवरी चैव स्फटिका लवणं तथा ।
गैरिकं भाग वृद्धं शं मारना लेन पेषयेत् ।। ३३ ।।
तेनलिप्तवा पूर्व पत्रं रुध्वा मज पुटे पचेत् ।
एवं पुनः पुनः पाच्यं यावत्स्वर्णं विशेषितं ।। ३४ ।।
तत्स्वर्णं ताम्र संयुक्तं समावर्त्या तुपत्रयेत्पूर्वं वत्पुट पाकेन पचेत्स्वर्णं

विशेषितं ।। ३५ ।।
इत्येवं षड्गुणं ताम्र स्वर्णं वाह्य क्रमेण तत् ।
तत्स्वर्णं जायते दिव्यं पद्मराग समः प्रभः ।। ३६ ।।
षड्त्रिंशेन ते नैवमष्ट वर्णंतु वेध येत् ।
तत्सर्वं जायते दिव्यं दशवर्णं न संशयः ।। २७ ।। इति ।
समं ताप्यं ताम्र चूर्णं ताप्यार्द्धं लोह चूर्णकं ।
कन्या द्रावैं क्षणं मर्द्यं तै रे व मर्दयेत् ।। ३६ ।।

एवं वाराश्च तुषष्टि त तः शुष्कं विचूर्णयेत् ॥

अञ्ज [illegible] तनैव [illegible] तु बधयेत् ॥ ८०- [illegible]

तत्स्वर्ण जायते दिव्यं दश वर्ण न संशयः ।इति ।

गंधकेन हृत स्वाल्वं ददार्द्ध युत सुतकम् ।

मन शिले समायुक्तं मातुलिंगेन मर्द ते ॥

नाग पत्र प्रलेपानां त्रिपुटं कुंक मारुन सन्नभम् ॥

तार वेदश्य त्रिगुणं द्यं तं तारामयात कंचनम् ॥ १ ॥

गंधक लेके बाटे पानी से तांबे मे तगड को लेप करे। अग्निदेय ताम्र मरेनंतर हिंगुल जस्त मनशिल समभाग लेय वा ताम्र मरलेला एकम् करिनिंबू रस से खरल करे दिन इनंतर सीस को पत्र करीते बाट लेली जिनक तेपत्रास लेप करे मग रान गोविरी की अंगार कापुटनी न देय। तर ते शीश मरेना नंतर ३ भाग चांदी १ भाग ते नाग भस्म मुसमे गलावे वगु थाय ॥ इति॥

गन्धकेन हृले सुल्वं दर देन समान मिता ॥

तत समा मनि शिला युक्तं मातु लिंगेन मर्दताम् ॥

त्रिषष्ट पुट नं नागं कु कुमारुन सन्न भम् ॥

षोडशं शतार वेदांत एवं भव नु कांचनम् ॥ २ ॥

गंधक से तां बामारे हिंगुल क दोई समान मन शिल लेप निंबू रस में मर्दन करे शीशे पतरा को लेप करे नंतर रान गोबि रोके छपुट दे अग्नि को भूनर कुंकम सारभस्म होय षोडश भाग चांदी एक भाग ते भस्म एक भाग मुसमे गलावे पीत ॥ इति ॥

गंधिकं मधु संयुक्तं हरि वीर्येन मर्दताम ॥

भूमिस्ता मास मेकं तारा मयात कंचनम् ॥ ३ ॥

गन्धिक मद्दपारा एकत्र करी खल करें दिवस २ शीशी में भरे। उकरडा में गाढे मास १ मग काढुन तोला चां दीमु मारादेय वसु ॥ इति ॥

हार मेकं मर्थ तीरं तार तीक्षण चतुर्गठां ॥

चतुरष्ट मष्टवंगं च वंगं स्थंभन रौषधंम् ॥ ४ ॥

पीतल चांदी पौलाद रेत ४ कथील भाग ८ एकत्र मुस मेंगलावे, एक मेक होय जाय

तब निकाल लेय ते जिनस घट होय नंतर वारीक वांटी तोला कथील को पानी करी एक मासा कथीला सी देय रजत ॥ इति ॥

हिंगुलक उत्तम लेय तोला १ खड़ा करके बैंगन में भरें। फिर बैंगन को ऊपर मिट्टी का लेप करें। अग्नि में देय जब बैंगन पक जाय, ठंड भये काटे। ऐसे १०८ बैंगनमें पकावें। एप्रमाण करें भस्म होय ते भस्म तोला तांबे को गूंज देय अमु ॥

मन्त्र :—ॐ नमो अरिहंताणं रसायनं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र का जाप्य ४५०० करें ॥ इति ॥

जूनी ईंट लेय १ राखे दश बाटे ४ के समभवी खड्डा करके खड्डी में पारा भरे तोला २ मग जरताकी वाटी तो पांच की ऊपर बांधी देवे। पारा का ऊपर मग भौताल वाटी की संधी (सांठ) गुड़ चूना ओमू से मग तीन पत्थर के ऊपर ईंट चढ़ावे। नीचे अंग र नर बेर की लकड़ी की देय प्रहर १६ मग्ने सारी ऊपर हजार नींबू का रस लेप चो बांदे सोलह प्रहर मग ठंडी भवे निकारे नारियल फोड़े।

मन्त्र जप :—ॐ नमो भवावते अर घटे मम रसायनं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॥

जप १०,००० नंतर ते भस्म पर को तोला तांबे को गूंज १ देय उत्तम पीत। जस्त भस्म देय तर मध्यम भंगार ॥ इति ॥

पारास्तंभन का तंत्र

मन्त्र :—अल बांधो, थल बांधो, बांधो जल का नीरा, सात कोस समुंदर बांधो, बांधो बावन वीरा, लंका ऐसो कोट, समुंदर ऐसा खाड, पारा तेरा उड़ना बांधो, शिव तोर थी जाई बंध जा पारवती की दोहाइ ॐ ठः ठः स्वाहा ।

विधि : इस मन्त्र को कमलाक्ष की माला से पूर्व को तरफ मुख करके चौरासी हजार जप करे, दशांस अग्नि में आहुति देवे, होम द्रव्य, खोवा, १ सेर, शहद १ सेर, गोंप १ सेर, दूध १ सेर, घी १ सेर, आम की लकड़ी। तब मंत्र सिद्ध होता है।

मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद पारा एक रुपया भर से लेकर नोसों भर पारा तक एक पात्र में धर, छोटा वरि म्यारी बूटी का दो चार पत्र डारि, इसी मन्त्र को १०८ अथवा तीन, अथवा सात, अथवा एक इस बार मन्त्र पढ़ि २ पारा कूं फूंक के ढांक ले जाना, मन्त्र पढ़ते जाना, अच्छी भांति ढांकी के गोबरे (कंडे) सेर २ सेर के अग्नि में कपरोटी करके डार देना, पारा की चांदी हो जायगी। यह सिद्ध सांबर मन्त्र है रसायन का।

(१) गंधक एक भाग, पारा दो भाग, हरताल भाग तीन, सिंगरफ भाग चार, पीला वंधारी याने पीले नीलबनी उसके रस में खरल कर तांबे को पुट देने से सुवर्ण के समान पीत होता है। **सिद्धम्** इति।

(२) हरण खुरीनाङ्के रस में घुमाना चाहिये। तांबे में पारा भस्म अथवा शिशभस्म प्रथमतः डाले उसके बाद रस में घुमावे। सिद्धम्।

(३) कल्हेरा मंशिल पनोला उसका रंग कनेर के फुल जैसा रहता है। १ तोला कथिल का पानी करना। उसमें एक रती गुंजा मंसिल डालना। उसमें शुद्ध शुभ्र होता है।

(४) काला पारा सेर ७७२ काले पत्थर के खल में उसको घोटना। सफेद रिंगणी उसके फूल सफेद होते है उसको तोड़कर उसके बाद भूजा शाला पाला घिसकर उसका रस बनाना। रेमेट खल में डालकर उसको खलना। पारा मक्खन जैसा बनता है। कुम्भार से एक बेलनी लाना। उसमें खल किया हुआ पारा डालना। एक बीतभर खड्डा खनना। कंडा का भट्टी जलाना। उसपर बेलनी रखना। उसमें रिंगणी का रस डालना। बेलणी आदि का पाक करना। पारा और रस ओटने के बाद पुरा पारा पीता है।

(५) समभाग सोना भाग १ सज्जी खार भाग १ फटकडी भाग १ सोरा कलमी भाग १ संखा समीन्द १ नवसागर रुनी सीसा कज्जकली ६ वटिका करना। उस पर पुट देते जाना, आठ बार पुट देना। सोना धवल शुद्ध होता है।

(६) सफेद फुलोंका कोहला लेकर उसका ऊपरी हिस्सा निकालना। उसकी शाक पकाना। उसमें कथील डालना। पकने बाद ठंडा होने के बाद निकालना। शुभ्र धातु होय।

पूज्यपाद स्वामी कृत

सोना बनाने की विधि :—

श्लोक :—पारदं पलमेकं च हरितालं च तत्समम्।
गंधकं च तयो तुल्यं मर्दनीयं विशेषतः।
दिनेकं सूर्य दुग्धेन पश्चात् छाया विशेषतं।
कोपिको दुरे विनिक्षिप्य मुखं रूध्वा विपाचितं।
रतिमात्र प्रयोगेन दिव्यं भवति कांचनम्।

अर्थ :—पारद १ पल, हरताल १ पल, और गंधक १ पल, इन द्रव्यों को लेकर विशेष रूप से मर्दन करे, आकड़े के दूध में, फिर छाया में सुखा कर उसको साने गलाने की कुप्पी में डालकर मुख को रूध करे, फिर अग्नि में फूके तब एक रसायन तैयार हो जायगा, उस रसायन को १ रती, तोला तांबे के ऊपर प्रयोग करे तो शुद्ध सोना होता है।

गंधक से तांबा को मारकर हिंगुलक दोई समान, मनशिल लेप नींबू रस में मर्दन करे, शीसा के पतरा पर लेप करे, फिर रानगोबिरो के ६ पुट देवे अग्नि में तो कुंकुमसार भस्म हो जायगा। सोलह भाग चांदी पर वह एक भाग रसायन भस्म, लेकर कुप्पी में गलावे तो सोना होता है।

ग्रंथ प्रकाशन कार्य में दान दाताओं की सूची

लघु विद्यानुवाद ग्रन्थ प्रकाशन कार्य में निम्न महानुभाओं से आर्थिक सहायता प्राप्त हुई है :—

६००१) श्रीमान् दानवीर सेठ पन्नालालजी सेठी आसाम (नागालैण्ड)
४००१) गुप्तदान
४००१) गुप्तदान
१५०१) श्री माणकचन्दजी मोतीचन्दजी अकलूज सौलापुर (महाराष्ट्र) वाले (स्वर्गीय श्री गंगाराम जी दोशी की पुण्य स्मृति में)
२८०६) अकलूज जैन निवासियों से प्राप्त राशि
११५१) श्री जौहरी लालजी मोतीलालजी, छिन्दवाड़ा
१००१) श्री हीराचन्दजी खेमचन्दजी फडे अकलूज,
१००१) श्री मियाचन्दजी रतुचन्द फडे अकलूज
१००१) श्री ताराचन्दजी जैन कार्य पालन मंत्री पी. डब्लु. डी. भिंड
१००१) श्री बुलचन्दजी देवचन्दजी दोशी अकलूज
१००१) श्री अभयकुमारजी रूपचन्दजी फडे अकलूज
१००१) श्री महावीर मोतीचन्दजी शाह अकलूज
१००१) डा० सुरेशकुमार जैन इलाहबाद
५०१) श्रीमती चतुराबाई सुन्दरलाल चक्रेश्वरा
५०१) श्री शांतिलालजी गुलाबचन्दजी गांधी अकलूज
५०१) श्री जयकुमारजी खुशालचन्दजी गांधी अकलूज
५०१) श्री दीपचन्द जी लालचन्द जी फडे अकलूज
५०१) श्री प्रेमचन्दजी गुलाबचन्दजी गांधी अकलूज (श्री कांतिलालजी प्रेमचन्दजी कपुनी य स्मृती में)
५०१) श्रीमती चंचल बाई हीरचन्द गंगाराम भम्मडूकर अकलूज
५०१) श्री अनंतलालजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१) श्री बापूचन्दजी वीरचन्दजी दोशी अकलूज
५०१) श्री बापूचन्दजी मोतीचन्दजी अकलूज
५०१) श्री प्रेमचन्दजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१) श्री नेमीचन्दजी फूलचन्दजी फडे अकलूज
५०१) श्री मान् सेठ सम्पत कुमार जी कटक
५०१) श्रीमान् सेठ विजय कुमार जी कटक
१५०१) श्री भाग चन्दजी छाबडा जयपुर
१००१) श्री हरक चन्दजी पाण्डया (गोहाटी वाले) जयपुर
१००१) श्री मोतीलालजी छाबडा, जयपुर

१००१) श्री मोतीलालजी जौहरीलालजी, खड़गपुर
१००१) श्री महावीर कुमारजी सौगंया, जयपुर
१००१) श्री शांतिकुमारजी गंगवाल जयपुर
५०१) श्री मोतीलालजी हाड़ा जयपुर
५०१) श्री रतनलालजी गिरराज जी राणा
५०१) श्री गुलाबचन्दजी चौमू वाले फर्म (रामसुख चुन्नीलाल) जयपुर
५०१) श्री चिरंजी लालजी महावीर कुमारजी सोगाणी जयपुर
५०१) श्री सुन्दर लालजी गप्पूलालजी पापड़ीवाल, जयपुर
५०१) श्री कपूरचन्दजी पाण्डया, जयपुर
५०१) श्री हीरालालजी सेठी जयपुर
५०१) श्री कमल चन्दजी चिंतामणीजी बज जयपुर
५०१) श्री हरिश्चन्द्रजी पाटनी, जयपुर
५०१) श्री प्रेमचन्दजी अनिलकुमारजी काला, जयपुर
५०१) श्री रामअवतारजी राजकुमारजी, जयपुर

"कुंथु विजय ग्रंथ माला" समिति उपरोक्त सभी महानुभाओं का आभार प्रकट करती है कि समिति के द्वारा भविष्य में जब २ भी इस प्रकार के अद्भुत अलभ्य ग्रंथों का प्रकाशन होगा, सहयोग मिलता रहेगा।